वाक्यरचना बोध

(संस्कृत वाक्यरचना बोध)

युवाचार्य महाप्रज्ञ

संपादक :
मुनि श्रीचन्द्र 'कमल'
मुनि विमलकुमार

वाक्यरचना बोध

(संस्कृत वाक्यरचना बोध)

युवाचार्य महाप्रज्ञ

संपादक

मुनि श्रीचन्द 'कमल'

मुनि विमलकुमार

© जैन विश्व भारती
लाडनूं (राज०)

प्रथम संस्करण : फरवरी, १९९०

मूल्य : सौ रुपये/प्रकाशक : जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज०)/ मुद्रक : मित्र परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं-३४१३०६ ।

VAKYARACHANA BODH

Yuvacharya Mahaprajna

Rs. 100.00

आशीर्वचन

लगभग चार दशक पूर्व हमारे धर्मसंघ में साधु-साध्वियों के लिए एक नया पाठ्यक्रम बना। योग्य, योग्यतर और योग्यतम—इन तीन श्रेणियों में सात वर्षों के प्रशिक्षण का क्रम निर्धारित हुआ। इस क्रम से अनेक साधु-साध्वियों ने अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। अध्ययनकाल में कुछ ऐसे पाठों की अपेक्षा का अनुभव हुआ, जो संस्कृत भाषा सीखने में उपयोगी हो। इस अपेक्षा की पूर्ति के लिए मुनि नथमलजी (युवाचार्य महाप्रज्ञ) को निर्देश दिया गया। उन्होंने काम हाथ में लिया और तत्परता के साथ उसे पूरा कर दिया।

उस समय तैयार की गई वह कृति संस्कृत पढने वाले विद्यार्थी साधु-साध्वियों के काम आती रही। इस वर्ष मुनि श्रीचन्द और मुनि विमलकुमार ने उसको समीचीन रूप से सम्पादित कर दिया। अब वह 'वाक्यरचना बोध' नाम से संस्कृत पाठकों के हाथ में पहुंच रही है। संस्कृत भाषा के जिज्ञासु विद्यार्थी इसका उपयोग कर पूरी तरह से लाभान्वित होंगे, ऐसा विश्वास है।

जैन विश्व भारती, लाडनूं
गणतंत्र दिवस १९९०

आचार्य तुलसी

प्रस्तुति

संस्कृतवाक्यरचना एक बड़ा ग्रन्थ बन गया। बहुत पुरानी बात है। आज से बयालीस वर्ष पूर्व जो सन्त पढते थे उनकी उपयोगिता के लिए इस ग्रन्थ का निर्माण किया। उस समय इसका आकार छोटा था। कभी उसका उपयोग होता रहा और कभी वह अनुपयोग की अवस्था में भी रहा। दो वर्ष पूर्व इसकी उपयोगिता के विषय में चर्चा चली। मुनि श्रीचंदजी 'कमल' और मुनि विमलकुमार जी ने इसके संपादन का कार्य हाथ में लिया। दो वर्ष के कठोर श्रम और सतत अध्यवसाय के बाद यह कार्य सम्पन्न हुआ। आकार भी बढा है और प्रकार भी बढा है, उपयोगिता भी बढी है। मुनिद्वय का श्रम इसमें स्पष्ट मुखर हुआ है। संस्कृत विद्यार्थी के लिए यह एक स्वात्मनिर्भर ग्रन्थ बन गया है। इसके परिशिष्टों की तालिका भी लम्बी है।

प्रथम परिशिष्ट में शब्दरूपावली।
दूसरे परिशिष्ट में धातुरूपावली।
तीसरे परिशिष्ट में जिन्नन्त आदि की धातुओं के रूप।
चौथे परिशिष्ट में प्रत्ययरूपावली।
पांचवें परिशिष्ट में उपसर्ग से धात्वर्थपरिवर्तन।
छट्ठे परिशिष्ट में एकार्थ धातुएं।

बयासी पाठों में विभक्त यह ग्रन्थ संस्कृतबोध की संहिता के रूप में प्रयुक्त हो सकता है। हमारे धर्म संघ में संस्कृत आज भी जीवित भाषा है। सैकडों साधु-साध्वियां, समणियां और मुमुक्षु इसका अध्ययन करते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने इसके पल्लवन में अपनी सक्रिय प्रेरणा से रुचि ली है हमारी अपनी उपयोगिता के लिए लिखा हुआ ग्रन्थ दूसरों के लिए उपयोगी बन सकता है। यह योगक्षेम वर्ष का एक उपहार है संस्कृत में रुचि रखने वालों के लिए।

२१ जनवरी १९९०
जैन विश्व भारती
लाडनूं

युवाचार्य महाप्रज्ञ

संपादकीय

तेरापथ धर्मसंघ में ५८ वर्ष पूर्व एक सर्वांगीण व्याकरण भिक्षुशब्दानुशासन की रचना हुई। उसकी प्रक्रिया कालुकौमुदी पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भागों में वि० सं० २००८ में प्रकाशित हुई। इस धर्मसंघ में सभी साधु-साध्वियां इसी के माध्यम से संस्कृत भाषा का अध्ययन करते रहे। इससे पूर्व वि० सं० २००४ में वाक्य रचना का निर्माण हुआ। यह मुनि श्री नथमलजी (वर्तमान में युवाचार्य महाप्रज्ञ) की कृति थी। उसके तीन विभाग थे। साधु-साध्वियों के पाठयक्रम में यह थी। उसमें अक्षरज्ञान से लेकर कृदन्त के प्रत्ययों तक का संक्षिप्त बोध था। उसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियां आज भी उपलब्ध है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं तीन भागों का ही विस्तृत रूप है। इसमें ८२ पाठ हैं। अक्षर, व्यंजन, वाक्य, विभक्ति बोध, पुरुष-वचन, वर्तमान, भूत, भविष्यत्काल के ३ पाठ, धातु, वाच्य, लिंगबोध के २ पाठ, विशेषण और विशेष्य, संख्यावाची शब्द, स्त्रीप्रत्यय के २ पाठ, कारक के ७ पाठ, समास के ७ पाठ, तद्धित के १५ पाठ, क्रियाविशेषण, अिन्नन्त, सन्नन्त, पदव्यवस्था और विभक्त्यर्थ प्रक्रिया के दो-दो पाठ, कृदन्त के प्रत्ययों के १८ पाठ हैं। इन पाठों में अक्षर बोध से लेकर कृन्दत के प्रत्ययों तक की विस्तृत जानकारी है। कालु कौमुदी का पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध इसमें समाविष्ट है। पूर्वार्द्ध का शब्दसिद्धि-कारक षट्लिंग और धातुसिद्धिकारक १० गण इसमें नहीं हैं। शब्दसिद्धि के स्थान पर शब्दरूपावली और धातु के १० लकारों की सिद्धि के स्थान पर धातुरूपावली दी गई है। विद्यार्थी को शब्दसिद्धि और धातुरूपसिद्धि के प्रपंच में फंसाया नहीं गया है, सिद्ध किया गया रूप उसके सामने प्रस्तुत है। वह सुगमता से उसका प्रयोग कर सकता है। इस पुस्तक में श्री भिक्षु शब्दानुशासन के सूत्रों का प्रयोग किया गया है। इसकी संज्ञाएं पाणिनीय व्याकरण से भिन्न है। तिबादि आदि विभक्ति और कृदन्त के प्रत्ययों की संज्ञा के साथ पाणिनीय व्याकरण की संज्ञाएं भी दी गई हैं, जिससे अन्य पाठकों को भी कठिनाई की अनुभूति न हो। इसमें सूत्रों को नियम की संज्ञा दी गई है। सूत्र के आगे भिक्षुशब्दानुशासन व्याकरण के प्रमाण हैं। सूत्रों की वृत्ति न देकर उसका हिन्दी अर्थ दिया गया है, जिससे पाठक को समझने में सुगमता हो। कहीं-कहीं पर उदाहरण और प्रत्युदाहरण भी दिए गए हैं। कालु कौमुदी के (पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध) सूत्रों के अतिरिक्त अनेक सूत्र इसमें दिए गए हैं, जो विषय को स्पष्ट करते हैं। पांचों संधियों के सूत्रों को पाठ के

अन्तर्गत 'सन्धि विचार' नामक शीर्षक में दिया गया है। प्रत्येक पाठ में संधि के ३ से लेकर ७ सूत्र तक दिए गए हैं, जो एक विषय से संबन्धित हैं। संधि के सूत्रों को खोल कर इतना स्पष्ट किया गया है कि विद्यार्थी सुगमता से संधि को समझ सकता है। १४ पाठ तक संधि के सूत्र दिए गए हैं। तीसरे पाठ से तीसवें पाठ तक शब्दरूपावली के शब्दों को याद कराया गया है। प्रत्येक पाठ में एक या दो शब्दों के रूप याद कराए गए हैं। रूपों की समानता होने से कहीं-कहीं चार शब्दों को भी याद कराया गया है। उसकी तरह चलने वाले अन्य शब्दों का संकेत भी दिया गया है। इसी प्रकार गण की धातुओं के रूप तीसरे पाठ से लेकर बावनवें पाठ तक याद कराए गए हैं और अन्य धातुओं की सदृशता का निर्देश भी साथ में दिया गया है। उससे अगले पाठों में शब्द तथा धातु के रूपों को लिखवाया गया है जिससे रूप स्मृति में स्थिर हो जाएं। चौथे पाठ से शब्दसंग्रह प्रारंभ होता है जो अन्तिम पाठ बियासीवें तक चलता है। प्रत्येक पाठ में १५।२० शब्दों को अर्थ सहित दिया गया है, जिससे शब्दकोश समृद्ध बनता है। चौथे पाठ से चौबीसवें पाठ तक अव्ययों को दिया गया है। प्रत्येक पाठ में ४।५ अव्ययों को हिन्दी अर्थ सहित दिया गया है। पाठ में प्रयुक्त होने वाले अव्ययों तथा धातु रूपों को 'प्रयोगवाक्य' शीर्षक के अन्तर्गत संस्कृत में उनका वाक्य बनाकर दिया गया है। 'संस्कृत में अनुवाद करो' के अंतर्गत विद्यार्थी से संस्कृत में वाक्य बनाए गए हैं। प्रत्येक पाठ के अभ्यास शीर्षक में पाठ में पठित सामग्री के विषय में प्रश्न किए गए हैं। इस प्रकार एक शब्द का दो-तीन प्रकार से प्रयोग होने से वह स्थिर हो जाता है। कारक की सात विभक्तियों को सात पाठों में विस्तार से समझाया गया है। अव्ययीभाव समास के अव्ययों के अर्थ देकर, समास की पूर्व अवस्था सहित समास कर दिखाया गया है। १५ पाठों में तद्धितप्रत्ययों को विस्तार से समझाया गया है। प्रत्येक प्रत्यय को समझने के लिए पर्याप्त अवकाश दिया गया है। इसी प्रकार कृदन्त के प्रत्ययों को विस्तार से व्याख्या सहित समझाया गया है। प्रत्ययों के रूपों को बनाने की सरल विधि भी समझाई गई है। प्रथम परिशिष्ट में ७६ शब्दों के रूप दिए गए हैं। पहले तेरापंथ सम्प्रदाय में प्रचलित शब्दरूपावली सश्लोक दी गई है। उसके बाद कालुकौमुदी में समागत शब्दों के रूप अतिरिक्त शब्दावली के नाम से दी गई है। परिशिष्ट २ में १३२ धातुओं के सम्पूर्ण रूप तथा लगभग ४३१ धातुओं के १० लकारों के एक-एक रूप दिया गया है। परिशिष्ट ३ में लगभग ३९५ धातुओं के जिन्नन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त और भावकर्म के तिबादि और द्यादि के एक-एक रूप दिए गए हैं। इनके प्रत्येक के एक-एक धातु के आत्मनेपद और परस्मैपद के सारे रूप दिए गए हैं। परिशिष्ट ४ में चार सौ से ऊपर धातुओं के क्त, शतृ, शान आदि १३ प्रत्ययों के रूप हैं।

परिशिष्ट ५ में १२५ धातुओं को उपसर्ग से होने वाला अर्थ परिवर्तन के साथ दिया गया है। परिशिष्ट ६ में एक अर्थ में होने वाली अनेक धातुओं को अकारादि क्रम से दिया गया है। परिशिष्ट २, ३ और ४ में प्रयुक्त धातुओं को संस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित अकारादि क्रम से "अकारादि धातुओं की अनुक्रमणिका" के नाम से दी गई है। वह परिशिष्ट २ से पहले है। अन्त में दृष्टिदोष और प्रेसदोष की अशुद्धियों के लिए शुद्धिपत्र है। इस प्रकार वाक्य-रचना के लिए पर्याप्त सामग्री इस पुस्तक में है।

दो वर्ष पूर्व आचार्यश्री तुलसी ने मुझे (मुनि विमल कुमार को) 'वाक्य रचना' के संपादन का आदेश देते हुए कहा—उसकी हस्तलिखित प्रति खोज-कर संपादन करो। उसकी एक प्रति लेकर जब मैंने दिखाई तो आपने कहा—मूल प्रति खोजो। संघपरामर्शक मुनिश्री मधुकरजी ने मूल प्रति खोजकर मुझे दी। मूल प्रति की प्राप्ति पर आचार्य श्री ने प्रसन्नता व्यक्त की। मैंने आचार्य श्री के आदेश को युवाचार्य श्री से निवेदन किया। उन्होंने भी सहमति व्यक्त की। ४-५ मास में संपादन कर मैंने युवाचार्य श्री को दिखाया। संशोधन के लिए आपने मुनिश्री श्रीचन्दजी का नाम सुझाया। फिर हम दोनों ने यथाशक्ति संपादन किया जिसका फलित रूप यह पुस्तक है।

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी प्रेरणा देते हैं, मार्ग दर्शन देते हैं और गति भी देते हैं। आपकी दृष्टि में सृष्टि है। आपने प्रेरणा दी उसी की परिणति यह पुस्तक है। श्रद्धापूरितमानस से वंदन कर हम यही मांगते हैं कि आप समय-समय पर प्रेरणा देते रहें।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने हमारी परीक्षा ली है, जो अक्षर बोध हमने सीखा था। परीक्षा-परीक्षा ही होती है। सरल दीखने वाला प्रश्न भी कभी-कभी परीक्षक की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। हमने परीक्षा दी है। उत्तीर्णता आपके हाथ में है। युवाचार्य श्री समय-समय पर कार्य की प्रगति की जानकारी लेकर हमारी गतिशीलता में त्वरता भर देते। किन शब्दों में हम आपकी कृतज्ञता ज्ञापित करें। शब्दों की सीमित शक्ति कृतज्ञता का स्पर्श मात्र करती है। सभक्ति वंदन कर हम आप से यही चाहते हैं कि ऐसी परीक्षा बार-बार हो, जिससे ज्ञान को खोलने का अवसर मिले और शक्ति का उपयोग हो। हम कृतज्ञ हैं मुनिश्री दुलहराजजी के जिन्होंने संपादन में हमारा सहयोग किया और अमूल्य सुझाव भी दिए। हम आभारी हैं संघपरामर्शक मुनिश्री मधुकरजी के जिन्होंने मूल प्रति प्राप्त कराई और समय-समय पर आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई। मुनिश्री हीरालालजी और मुनिश्री विनयकुमार जी के भी हम आभारी हैं जिन्होंने हमारे प्रतिदिन के कार्य में हाथ बंटाकर हमारा सहयोग किया। गवर्नमेण्ट संस्कृत कॉलेज बीकानेर के पूर्व प्राचार्य पं० विश्वनाथ मिश्र ने

पुस्तक को आद्योपान्त पढकर संशोधन सुझाया और अपना पूर्वमत लिखकर दिया। उनका यह सहयोग भुलाया नहीं जा सकता। भाषातत्त्वविभाग कलकत्ता विश्वविद्यालय के अध्यापक श्री सत्यरंजन वन्द्योपाध्याय ने अपना पूर्वमत लिखकर हमारा उत्साह बढाया है। भाई जगदीश के सहयोग से यह पुस्तक इतनी जल्दी पाठक के हाथों में है। उन सभी लेखकों का हम आभारी हैं जिनकी पुस्तकों का हमने सहयोग लिया है। पाठकों से निवेदन है कि वे इस पुस्तक पर अपना अमूल्य अभिमत व सुझाव दें जिससे भविष्य में और अधिक हृदयग्राही बन सके। पाठकों से एक सुझाव हमारा भी है कि शुद्धिपत्र से अशुद्धियों को दूर कर पढें जिससे शंका पैदा ही न हो।

मुनि श्रीचंद 'कमल'
मुनि विमलकुमार

पुरोमत

युवाचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित 'वाक्यरचना बोध' नामक पुस्तक का आद्योपान्त अवलोकन किया। संस्कृत व्याकरण में प्रवेश के इच्छुक व्यक्तियों के उद्देश्य से लिखी गई यह पुस्तक अपने उद्देश्य की पूर्ति में सर्वथा उपयोगी है। संस्कृत की व्याकरण लिखना कठिन कार्य है। इसके लिए व्यापक वैदुष्य के साथ प्रयोग क्षेत्र का विस्तृत ज्ञान अपेक्षित है। यह बात विकल्पातीत है कि युवाचार्य महाप्रज्ञ का व्यापक वैदुष्य इस कार्य के लिए सर्वथा उपयुक्त है।

अक्षर विज्ञान से इस पुस्तक का आरंभ किया गया है। वर्णों के सम्प्रयोगजन्य विकृतियों का परिचायक सन्धिप्रकरण का प्रस्तुतीकरण, उदाहरण और प्रत्युदाहरण के माध्यम से इस प्रकार किया है जिससे जिज्ञासु व्यक्ति सन्धि के नियमों को सुगमता से हृदयंगम कर लें।

वर्ण सम्बन्धी विचार के अनन्तर वर्णसमूह पदों की निष्पत्ति की प्रक्रिया को बडे सरल ढंग से समझाने का प्रयास किया गया है। सूत्रों का उल्लेख और उनका अर्थ बता कर पद की निष्पत्ति करके तत्सम पदान्तर का मार्ग यहां सुगम बना दिया गया है।

क्रिया वाक्यप्रयोग का प्रधान साधन है। क्रिया की निष्पत्ति धातु से होती है। गणभेद से क्रिया नानारूपवती होती है। प्रस्तुत पुस्तक में सारे गणों का प्रस्तुतीकरण जिस सरल प्रणाली से किया गया है वह अपने में अपूर्व हैं। व्याकरण के क्षेत्र में ण्यन्त, सन्नन्त आदि प्रक्रिया भाग का विवेचन बहुत कठिन समझा जाता रहा है। किन्तु इस पुस्तक में उस कठिन भाग को समझाने का जो प्रयास किया गया है वह सर्वथा श्लाघ्य है। प्रत्येक पाठ के बाद अभ्यास का जो क्रम यहां अपनाया गया है, वह विषय को सरल बनाने तथा उसके दृढ़तर संस्कार के लिए नितान्त उपयोगी है। पुस्तक की भाषा हिन्दी होने के कारण प्रतिपाद्य विषयों की सुबोधता सहज ही हो गई है। उदाहरण और प्रत्युदाहरणों के माध्यम से प्रयोगों की शुद्धाशुद्धि का परिज्ञान इसका स्तुत्य प्रयास है। आधुनिक व्यावहारिक शब्दों के लिए संस्कृत शब्दों का चयन तथा उनकी निर्मिति इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। इस पुस्तक में जिन नियमों का उल्लेख किया गया है उनके आधार भिक्षु शब्दानुशासन के सूत्र हैं। तथापि प्रतिपादनशैली इतनी सरल है कि यह पुस्तक अन्य व्याकरण के पाठकों के लिए भी सर्वथा उपयोगी है। इस पुस्तक की अपनी एक विशेषता

यह भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें उपसर्ग से धातुओं के परिवर्तित अर्थ, १३२ धातुओं के पूरे रूप तथा ४३१ धातुओं के दस लकारों के एक-एक रूप दिये गए हैं। यह कार्य सर्वथा नवीन है। इन सब उपयोगी चीजों को देखते हुए यह निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि यह पुस्तक अद्यावधि प्रकाशित व्याकरण ज्ञानोपयोगी समस्त पुस्तकों में सर्वाधिक उपयोगी है। यह न केवल व्याकरण शास्त्र की पुस्तक है अपितु जैसा कि इसका नाम है यह पुस्तक संस्कृत वाक्य रचना के लिए बहुत ही उपयोगी है।

इस पुस्तक के सम्पादन में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' तथा विमल मुनिजी का श्रम सर्वथा श्लाघ्य है। व्याकरण जैसे कठिन और शुष्क विषय को उपयोगी एवं सर्वग्राह्य संस्करण को बनाने हेतु मुनिद्वय के श्रम की जितनी प्रशंसा की जाये वह थोडी है। जिज्ञासु व्यक्तियों को संस्कृत वाङ्मय में प्रवेश के लिए यह पुस्तक अजिह्मा राजपद्धति है। इसके विश्वजनीन प्रसार की कामना के साथ।

विश्वनाथ मिश्र
पूर्व प्राचार्य
गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज
बीकानेर
जैन विश्व भारती लाडनूं

२१ जनवरी, १९९०
जैन विश्व भारती
लाडनूं

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा रचित मुनि श्रीचन्दजी और मुनि विमल कुमारजी द्वारा सम्पादित 'वाक्यरचना बोध' नामक संस्कृत ग्रन्थ आधुनिक शैली में लिखा गया है। प्रारम्भिक संस्कृत ज्ञान के लिए व्याकरण के उन सभी बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है जिनके द्वारा विद्यार्थी सरलता से संस्कृत भाषा में योग्यता प्राप्त कर सकता है।

साधारणतः संस्कृत व्याकरण लिखते समय विद्वानों को काफी चिन्तन-मनन करना पडता है। इसमें मन का तात्त्विक रूप से भी चिन्तन रहता है। व्याकरण और भाषातत्व का ज्ञान करते समय कुछ बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना होता है।

भाषा पढते समय हम व्याकरणांश को चार श्रेणी में विभाजित करते हैं।

प्रथम विभाजन—जिसका नाम है ध्वनि तत्त्व। ध्वनि-तत्त्व में ध्वनियां कितनी, ध्वनि का उच्चारण, रीति, ध्वनि का स्वरूप-विश्लेषण आदि का उल्लेख किया जाता है।

द्वितीय विभाजन में रूपतत्त्व पर प्रकाश डाला जाता है। रूपतत्त्व का अर्थ है शब्द की गठन प्रणाली का स्वरूप विश्लेषण। इसमें शब्द-रूप, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया, क्रियाविशेषण, उपसर्ग, संयोजक और मनोभाव

प्रकाशक शब्द का स्वरूप विश्लेषण करना पडता है ।

तीसरा विभाजन है वाक्यरीति—किसी भी भाषा में वाक्य रचना कैसे की जाती है, इसका स्वरूप विश्लेषण किया जाता है । कर्त्ता, कर्म, क्रिया का सम्यक् संयोजन करने के सन्दर्भ में व्यवस्थित चर्चा की जाती है । चतुर्थ विभाजन में शब्दार्थतत्त्व यानी शब्द के अर्थ का स्वरूप विश्लेषण होता है ।

इस प्रकार चार विभाजन व्याकरण में रहते हैं । परन्तु हर भाषा के लिए विभाजन का अनुसरण करना जरूरी नहीं होता । सिर्फ व्याकरणकर्त्ता के लिए यह ध्यान रखना जरूरी है कि विद्यार्थी वर्ग को भाषा-ज्ञान सीखाते समय कौन-सा विषय अधिक जरूरी है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ 'वाक्यरचना बोध' इसी ढंग से लिखा गया है । एक सामान्य बुद्धि वाले विद्यार्थी के लिए भी यह ग्रन्थ व्याकरण और भाषातत्त्व का ज्ञान आसानी से कराने में उपयोगी सिद्ध होगा ।

ग्रन्थ का वैशिष्टय इस बात में निहित है कि अक्षर वर्ण से शुरू होकर व्याकरण सम्बन्धी सभी विषयों को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है । पाठांशों का क्रम भी सीखने की दृष्टि से व्यवस्थित है ।

वाक्य के विश्लेषण बिना भाषा सीखी नहीं जा सकती, इसलिए वर्ण-विश्लेषण के बाद वाक्यरीति का क्रम रखा है । वाक्य प्रयोग में विभक्ति आवश्यक है, इसलिए वाक्य के बाद विभक्ति प्रकरण का उल्लेख है । क्रिया के बिना वाक्य पूरा नहीं बनता, अतः क्रिया के विषय में ज्ञान कराया गया है । इसी तरह यथाक्रम से काल, वाच्य, लिंग, संख्यावाची शब्द, स्त्री प्रत्यय, कारक, समास, शतृ-शानच्, उपसर्ग, तद्धित, णिजन्त, सन्नन्त, यङप्रत्यय आदि सभी का विश्लेषण व्याख्यायित है ।

सम्पूर्ण ग्रन्थ की रचना, उसमें किए गए विभाजित पाठ, अभ्यास-अनुशीलन विद्यार्थी वर्ग के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे, ऐसी आशंसा करता हूं । मैं चाहता हूं कि इस ग्रन्थ का प्रचार-प्रसार भी अधिक से अधिक किया जाए ।

श्री सत्यरंजन वन्द्योपाध्याय
अध्यापक, कलकत्ता विश्व विद्यालय
भाषातत्त्व विभाग २९-१०-८९

विषयानुक्रमणिका

१. अक्षर और वर्ण	१
२. व्यञ्जन	४
३. वाक्य	७
४. विभक्तिबोध	९
५. पुरुष, वचन	१३
६. काल १ (वर्तमानकाल)	१५
७. काल २ (भूतकाल)	१८
८. काल ३ (भविष्यत्काल)	२१
९. धातु	२५
१०. धातु प्रकरण	२८
११. वाच्य	३२
१२. लिंगबोध (१)	३६
१३. लिंगबोध (२)	४०
१४. विशेषण और विशेष्य	४३
१५. संख्यावाची शब्द	४७
१६. स्त्रीप्रत्यय (१)	५१
१७. स्त्रीप्रत्यय (२)	५४
१८. कारक प्रकरण (कर्ता)	५८
१९. कर्म	६१
२०. साधन	६६
२१. दानपात्र	७०
२२. अपादान	७४
२३. संबंध	७७
२४. आधार	८०
२५. कर्ता का क्रिया के साथ अन्वय	८४
२६. निमित्तार्थक क्रिया	८८
२७. पूर्वकालिक क्रिया	९१
२८. शतृ और शान प्रत्यय (१)	९४
२९. शतृ, शान (२)	९७
३०. समास (१) अव्ययीभाव	१००

३१. समास (२) तत्पुरुष	१०५
३२. समास (३) बहुव्रीहिसमास	११०
३३. समास (४) द्वन्द्वसमास	११५
३४. समास (५) अलुक्समास	१२०
३५. समास (६) एकशेष	१२२
३६. समासान्त प्रत्यय	१२५
३७. उपसर्ग	१२८
३८. तद्धित (१) अपत्य	१३१
३९. तद्धित (२) समूह	१३५
४०. तद्धित (३)	१३८
४१. तद्धित (४)	१४१
४२. तद्धित (५) शेषाधिकार (१)	१४५
४३. तद्धित (६) शेषाधिकार (२)	१४९
४४. तद्धित (७) इकण् अधिकार	१५३
४५. तद्धित (८) भाव	१५६
४६. तद्धित (९)	१६०
४७. तद्धित (१०) प्रमाण	१६३
४८. तद्धित (११) संख्या	१६६
४९. तद्धित (१२) मत्वर्थप्रत्यय	१७०
५०. तद्धित (१३) स्वार्थिकप्रत्यय	१७४
५१. तद्धित (१४) तर, तम, इष्ठ, ईयस्	१७७
५२. तद्धित (१५) ईषदसमाप्त, अभूततद्भाव आदि	१८१
५३. क्रियाविशेषण	१८५
५४. जिन्नन्त (१)	१८७
५५. जिन्नन्त (२)	१९२
५६. सन्नन्त (१)	१९५
५७. सन्नन्त २ (उ, अ प्रत्यय)	१९९
५८. यङ्प्रत्यय	२०२
५९. यङ्लुगन्त	२०६
६०. नामधातु	२०८
६१. पदव्यवस्था प्रक्रिया (१)	२११
६२. पदव्यवस्था प्रक्रिया (२)	२१४
६३. विभक्त्यर्थ प्रक्रिया (१)	२१७
६४. विभक्त्यर्थ प्रक्रिया (२)	२२०
६५. तव्य, अनीय प्रत्यय	२२३

६६. य, क्यप् प्रत्यय	२२६
६७. घ्यण् प्रत्यय	२२९
६८. अच् आदि प्रत्यय	२३२
६९. णक, तृच्, तृन् प्रत्यय	२३५
७०. ख, प्रत्यय	२३८
७१. खश् और णिन् प्रत्यय	२४१
७२. क्त, क्तवतु प्रत्यय	२४४
७३. क्वसु, कान प्रत्यय	२४९
७४. शीलादि प्रत्यय (१)	२५१
७५. शीलादि प्रत्यय (२)	२५४
७६. शीलादि प्रत्यय (३)	२५७
७७. भाव	२६०
७८. भावाकर्त्रो (१)	२६३
७९. भावाकर्त्रो (२)	२६६
८०. अनट्, खल प्रत्यय	२६९
८१. एककर्तृकपूर्वकालिक क्रिया (१) क्त्वा, णम्	२७२
८२. पूर्वकालिक क्रिया (२) क्त्वा, णम्	२७५
० परिशिष्ट १ शब्दरूपावली	२८१
धातु की अकारादि अनुक्रमणिका	२९६
परिशिष्ट २ धातुरूपावली	३२०
परिशिष्ट ३ अिन्नन्तसन्नन्तादि धातुरूपावली	४९८
परिशिष्ट ४ प्रत्ययरूपावली	५५८
परिशिष्ट ५ उपसर्ग से धातु का अर्थपरिवर्तन	५९४
परिशिष्ट ६ एकार्थ धातुएं	६०९
शुद्धिपत्र	६२३

पाठ १ : अक्षर और वर्ण

अक्षर—जिसके दो टुकडे न हो सके उसे अक्षर कहते हैं। जैसे—अ, इ, उ, ऋ, ऌ।

वर्ण—प्रत्येक पूर्ण (स्वर सहित) ध्वनि को वर्ण कहते हैं। जैसे—क, ख, ग·····। संस्कृत में कुल ४७ वर्ण हैं। उनमें १४ स्वर और ३३ व्यंजन हैं।

स्वर

स्वर—अन्य वर्ण की सहायता के बिना जिसका उच्चारण हो सके उसे स्वर कहते हैं। अ, आ, इ, ई, उ,ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ—ये स्वर हैं।

उत्पत्ति के अनुसार स्वरों के दो भेद हैं—शुद्धस्वर और संधिस्वर।

शुद्धस्वर—जो स्वर बिना किसी संयोग के बनता है उसे शुद्ध स्वर कहते हैं। अ, इ, उ, ऋ, ऌ—ये पांच शुद्धस्वर हैं। शुद्धस्वर को मूल स्वर या ह्रस्व स्वर कहते हैं।

संधिस्वर—दो स्वरों के संयोग से जो स्वर बनता है उसे संधिस्वर कहते हैं। संधिस्वर के दो भेद हैं—१. दीर्घ संधिस्वर

२. संयुक्त संधिस्वर

दीर्घ संधिस्वर—एक जैसे स्वरों के मेल से जो स्वर बनता है उसे दीर्घ संधिस्वर कहते हैं। जैसे—

अ+अ मिलकर आ बनता है।
अ+आ मिलकर आ बनता है।
इ+इ मिलकर ई बनता है।
इ+ई मिलकर ई बनता है।
उ+उ मिलकर ऊ बनता है।
उ+ऊ मिलकर ऊ बनता है।
ऋ+ऋ मिलकर ॠ बनता है।
ऋ+ॠ मिलकर ॠ बनता है।
ऌ+ऌ मिलकर ॡ बनता है।
ऌ+ॡ मिलकर ॡ बनता है। (देखें पृष्ठ ३ नियम १)

संयुक्त संधिस्वर—विभिन्न स्वरों के मेल से जो स्वर बनता है उसे संयुक्त संधिस्वर कहते हैं। जैसे—

अ + इ मिलकर ए बनता है।
आ + इ मिलकर ए बनता है।
अ + ए मिलकर ऐ बनता है।
आ + ए मिलकर ऐ बनता है।
अ + उ मिलकर ओ बनता है।
आ + उ मिलकर ओ बनता है। (देखें पृष्ठ ३ नियम २)

स्वरों के ३ भेद हैं—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत। ह्रस्व की १ मात्रा, दीर्घ की २ मात्रा और प्लुत की ३ मात्रा होती है। प्लुत के आगे ३ लिखकर उसका संकेत करते हैं। जैसे आ ३। यहां आ दीर्घ नहीं, प्लुत है।

जाति के अनुसार स्वरों के दो भेद हैं—सवर्ण और असवर्ण अर्थात् सजातीय और विजातीय।

सवर्ण—जिन वर्णों का स्थान और आभ्यन्तरप्रयत्न एक होता है, उन्हें सवर्ण कहते हैं। अ, आ परस्पर सवर्ण हैं। इसी प्रकार इ, ई तथा उ, ऊ सवर्ण हैं।

असवर्ण—जिन वर्णों का स्थान और आभ्यन्तरप्रयत्न समान नहीं होता उन्हें असवर्ण कहते हैं। अ और इ, अ और उ असवर्ण हैं।

उच्चारण के अनुसार स्वरों के दो भेद और हैं—सानुनासिक और निरनुनासिक।

सानुनासिक—जिन वर्णों का उच्चारण मुख और नासिका के संयोग से होता है, उन्हें सानुनासिक कहते हैं।

जैसे—अं, आं, ईं आदि। ङ, ञ, ण, न, म अनुनासिक ही होते हैं।

निरनुनासिक—जिन वर्णों का उच्चारण नाक की सहायता के बिना होता है, उन्हें निरनुनासिक कहते हैं। जैसे—अ, आ, इ आदि।

यदि मुंह से पूरा-पूरा श्वास निकाला जाये तो शुद्ध निरनुनासिक ध्वनि निकलती है। किन्तु यदि श्वास का कुछ भी अंश नाक द्वारा निकाला जाये तो अनुनासिक ध्वनि निकलती है। अनुनासिक स्वर का चिह्न चन्द्र-बिंदु (ँ) है।

स्वरजन्य अक्षर—स्वरों से बने हुए अक्षर को स्वरजन्य अक्षर कहते हैं। जैसे—

इ अथवा ई स्वर अ के साथ मिलकर य बनता है।
उ अथवा ऊ स्वर अ के साथ मिलकर व बनता है।
ऋ अथवा ॠ स्वर अ के साथ मिलकर र बनता है।
ऌ अथवा ॡ स्वर अ के साथ मिलकर ल बनता है।

(देखें पृष्ठ ३ नियम ३)

संधिविचार

नियम १—(समानानां सवर्णे दीर्घः सह १।२।१२) अ, इ, उ, ऋ, ऌ के आगे इनके ही सवर्णिक वर्ण परे होने पर वे परस्पर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे—दण्ड + अग्रम् = दण्डाग्रम्। श्री + ईशः = श्रीशः। भानु + उदयः = भानूदयः। होतृ + ऋकारः = होतॄकारः। होतृ + ऌकारः = होतॡकारः। ऋ और ऌ परस्पर विकल्प से सवर्णिक होते हैं।

नियम २—(अवर्णस्येवर्णादावेदोदरलः १।२।१३) अवर्ण के आगे इवर्ण, उवर्ण, ऋवर्ण और ऌवर्ण होने पर अवर्ण सहित इवर्ण को ए, उवर्ण को ओ, ऋवर्ण को अर् और ऌवर्ण को अल् हो जाता है। जैसे—जिन + इन्द्रः = जिनेन्द्रः। नव + उदकम् = नवोदकम्। रमा + उपमा = रमोपमा। जिन + ऋद्धिः = जिनर्द्धिः। तव + ऌकारः = तवल्कारः।

नियम ३—(इवर्णादीनां स्वरे यवरलाः १।२।१) इवर्ण, उवर्ण, ऋवर्ण और ऌवर्ण के आगे असवर्ण स्वर होने पर इवर्ण को य्, उवर्ण को व्, ऋवर्ण को र्, और ऌवर्ण को ल् हो जाता है। जैसे—गौरी + अत्र = गौर्यत्र। मधु + अत्र = मध्वत्र। पितृ + अर्थः = पित्रर्थः। ऌ + अनुबन्धः = लनुबन्धः।

अभ्यास

१. अक्षर और वर्ण में क्या अन्तर है ?
२. शुद्धस्वर और संयुक्तस्वर कौन-कौन से हैं ?
३. किन स्वरों के योग से कौन-सा संयुक्तस्वर बनता है ?
४. किन दो स्वरों के योग से कौन-कौन सा अक्षर बनता है ?
५. ऋवर्ण के आगे असवर्ण स्वर हो तो क्या रूप बनता है ? तीन उदाहरण दो।
६. इवर्ण के आगे समान स्वर और असवर्ण स्वर होने से क्या-क्या रूप बनता है ? तीन-तीन उदाहरण देकर समझाओ ?
७. प्लुत किसे कहते हैं ? उसका संकेत क्या है ?
८. नीचे लिखे शब्दों की संधि करो—

धन + आगमः	रत्न + अतुलः
दिन + ईशः	गिरि + ईशः
सूर्य + उदयः	मधु + उदकम्
राम + ऋद्धिः	पितृ + ऋणम्
विद्या + आलयः	रवि + अस्तम्
पाठशाला + अत्र	साधु + अयम्

पाठ २ : व्यञ्जन

व्यञ्जन—जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं उन्हें **व्यंजन** कहते हैं। व्यंजन ३३ हैं, वे ये हैं—क्,ख्,ग्,घ्,ङ्,च्,छ्,ज्,झ्,ञ्,ट्,ठ्,ड्,ढ्,ण्,त्,थ्, द्,ध्,न्,प्,फ्,ब्,भ्,म्,य्,र्,ल्,व्,श्,ष्,स्,ह्।

संयुक्तव्यंजन—दो व्यञ्जनों के संयोग से जो वर्ण बनता है उसे संयुक्तव्यंजन कहते हैं। जैसे—

क् और ष् मिलकर क्ष् बनता है।
ज् और ञ् मिलकर ज्ञ् बनता है।
क् और व् मिलकर क्व् बनता है।
र् और म् मिलकर र्म् बनता है।
म् और र् मिलकर म्र् बनता है।
त् और र् मिलकर त्र् बनता है।
द् और र् मिलकर द्र् बनता है।
त् और य् मिलकर त्य् बनता है।
प् और त् मिलकर प्त् बनता है।
ल् और ल् मिलकर ल्ल् बनता है।
ह् और य् मिलकर ह्य् बनता है।
व् और र् मिलकर व्र् बनता है।
क् और र् मिलकर क्र् बनता है।
म् और न् मिलकर म्न् बनता है।
स् और र् मिलकर स्र् बनता है।
ब् और द् मिलकर ब्द् बनता है।
द्+र् और य् मिलकर द्रय् बनता है।
प्+त् और य् मिलकर प्त्य् बनता है।
श्+र् और य् मिलकर श्र्य् बनता है।

व्यंजनों में दो वर्ण और हैं जो अनुस्वर और विसर्ग कहलाते हैं। अनुस्वार का चिह्न स्वर के ऊपर एक बिन्दु (ं) है और विसर्ग का चिह्न स्वर के आगे दो बिन्दु (:) है—अं, अः। व्यंजनों की तरह इनके उच्चारण में भी स्वर की आवश्यकता होती है। अन्तर यह है कि स्वर इनके पहले आता है और व्यंजनों के बाद में आता है।

उच्चारण के अनुसार व्यंजनों के दो भेद हैं—अल्पप्राण और महाप्राण।

महाप्राण—जिन वर्णों में 'ह' की ध्वनि का प्राण मिलता है वे महाप्राण कहलाते हैं। जैसे—क+ह=ख, च+ह=छ। इस प्रकार के व्यंजन महाप्राण कहलाते हैं। ये १४ हैं—वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ अक्षर ख,घ,छ, झ,ठ,ढ,थ,ध,फ,भ और श,ष,स,ह।

अल्पप्राण—जिन वर्णों में 'ह' की ध्वनि का प्राण नहीं मिलता वे सब अल्पप्राण कहे जाते हैं। ऊपर के कहे गये १४ व्यंजनों को छोडकर शेष १९ व्यंजन अल्पप्राण हैं। वे ये हैं—क,ग,ङ, च,ज,ञ, ट,ड,ण, त,द,न, प,ब,म,य,र, ल,व।

श,ष,स,ह को ऊष्म वर्ण भी कहा जाता है, क्योंकि इनके उच्चारण में विभिन्न स्थानों का परस्पर संघर्ष होता है और भीतर से श्वास जोर से लेना पडता है।

पांच वर्गों के २५ व्यंजनों को स्पर्शवर्ण भी कहते हैं, क्योंकि इनके उच्चारण में जोभ, कण्ठ, तालु आदि का स्पर्श होता है।

य,र,ल,व को अन्तस्थ कहते हैं।

ङ्,ञ्,ण्,न्, और म् को अनुनासिक कहते हैं। प्रत्येक वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर तथा श,ष,स और विसर्ग को अघोष या परुषव्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण तथा य,र,ल,व,ह को घोष या मृदुव्यंजन कहते हैं।

संधिविचार

नियम ४—(कुचुटुतुपु वर्गाः १।१।१)

कुवर्ग में क,ख,ग,घ,ङ, व्यंजन होते हैं।

चुवर्ग में च,छ,ज,झ,ञ व्यंजन होते हैं।

टुवर्ग में ट,ठ,ड,ढ,ण व्यंजन होते हैं।

तुवर्ग में त,थ,द,ध,न व्यंजन होते हैं।

पुवर्ग में प,फ,ब,भ,म व्यंजन होते हैं।

नियम ५—(आद्यन्ताभ्यां प्रत्याहारे १।१।५)

प्रत्याहार में दो वर्णों का उल्लेख होता है। उसमें आदि के वर्ण से लेकर अन्त तक के वर्ण ग्रहण किये जाते हैं। प्रत्याहार के वर्णों की रचना इस प्रकार है—

अइउऋलृ-एऐओऔ-हयवरल-ञमङणनम-झढधघभ-जडदगब-खफछठथ-चटतकप-शषस।

जैसे—अस प्रत्याहार में अ से लेकर स तक के सारे वर्ण और झभ

प्रत्याहार में झ से भ तक के वर्ण ग्रहण किए जाते हैं।

नियम ६—(अन्त्यस्वरादिष्टिः १।१।३४) अन्तिम स्वर से लेकर आगे के वर्णों की टिसंज्ञा होती है। राजन् में अन् की टिसंज्ञा है।

नियम ७—(अन्त्यात् पूर्व उपधा १।१।३५) अन्तिम वर्ण (चाहे स्वर हो या व्यंजन) से पहले वर्ण की उपधासंज्ञा है।

'राजन्' में अन्तिम वर्ण न् है। उससे पहला वर्ण ज का अ है। इसलिए अ की उपधासंज्ञा है।

नियम ८—(आदैदौदारो वृद्धिः १।१।३६) आत्, ऐत्, औत्, आर् इनकी वृद्धिसंज्ञा है।

नियम ९—(एदोदरो गुणः १।१।३७) एत्, ओत्, अर् इनकी गुणसंज्ञा है।

नोट—वर्ण के आगे त् या कार लगाने से उस मात्रा का ही बोध होता है। जैसे—अत्, आत्, ककार।

स्वर के आगे वर्ण शब्द लगाने से ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीनों ग्रहण किए जाते हैं। जैसे—अवर्ण—अ, आ, आ ३।

अभ्यास

१. व्यंजन किसे कहते हैं ? वे कौन-कौन से हैं ?
२. अनुस्वार और विसर्ग क्या व्यंजन हैं ? यदि हां तो दूसरे व्यंजनों से इनमें क्या अन्तर है ?
३. महाप्राण और अल्पप्राण में क्या भेद है ? वे कौन-कौन से हैं ?
४. घोष या अघोष संज्ञा किन-किन वर्णों की है ?
५. टुवर्ग में कौन-कौन से वर्ण होते हैं ?
६. प्रत्याहार का क्या तात्पर्य है ? इसका प्रयोग क्यों किया जाता है ? झस प्रत्याहार में कौन-कौन से वर्ण ग्रहण किये जाते हैं ?
७. हस, अल और जब प्रत्याहार में कौन-कौन से वर्ण हैं ?
८. कार, त् और वर्ण ये शब्द वर्ण के आगे लगाने से किसका बोध होता है ?
९. टिसंज्ञा और उपधासंज्ञा किसे कहते हैं ? दो-दो उदाहरण दो।
१०. वृद्धि और गुण संज्ञा किन-किन स्वरों की है ?

पाठ ३ : वाक्य

विचार व्यक्त करने का साधन भाषा है। भाषा वाक्यसमूह से बनती है। वाक्यसमूह शब्द और क्रियावाची शब्द समूह से बनता है। शब्द अक्षर या उनके समूह से बनते हैं। इसको दूसरे शब्दों में ऐसा भी समझा जा सकता है—अक्षर या अक्षरसमूह से शब्द बनता है। शब्दसमूह से वाक्य बनता है। वाक्यसमूह से भाषा बनती है।

वाक्य में कम से कम एक कर्त्ता और एक क्रिया होती है। उसमें कर्त्ता के अतिरिक्त कर्म, साधन आदि भी हो सकते हैं। वाक्य में कर्ता, कर्म, साधन आदि के विशेषण और क्रियाविशेषण भी हो सकते हैं। उसमें क्रिया के साथ अर्धक्रिया का भी प्रयोग हो सकता है। जैसे—

१. रामः गच्छति—यहां रामः कर्ता है और गच्छति क्रिया है।

२. रामः कटं करोति—यहां रामः कर्ता है, करोति क्रिया है और कटं कर्म है।

३. रामः लेखन्या लिखति—यहां रामः कर्ता है, लिखति क्रिया है और लेखन्या साधन है।

४. रामः साधुभ्यो भिक्षां ददाति—यहां रामः कर्ता है, भिक्षां कर्म है, ददाति क्रिया है और साधुभ्यो संप्रदान है।

५. रामः अश्वात् पतति—यहां रामः कर्ता है, पतति क्रिया है और अश्वात् अपादान है।

६. रामस्य पुस्तकं सुन्दरं अस्ति—यहां पुस्तकं कर्ता है, सुन्दरं पुस्तक का विशेषण है, रामस्य सम्बंध है और अस्ति क्रिया है।

७. रामः कटे शेते—यहां रामः कर्ता है, शेते क्रिया है और कटे आधार है।

कर्ता आदि के विशेषण और क्रिया का विशेषण 'विशेषण और विशेष्य' पाठ १४ में देखें।

एक वाक्य में क्रिया के साथ अर्धक्रिया का भी प्रयोग हो सकता है। धातु में तुम्, क्त्वा, यप् आदि प्रत्यय लगाकर अर्धक्रिया का रूप बनाया जाता है। अर्धक्रिया का कर्म अलग होता है। उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

१. सः पाठं पठितुं विद्यालयं गच्छति।

२. गां आनेतुं धनपालः अरण्यं गच्छति।

३. रामः पुस्तकं पठित्वा गृहं गच्छति।

४. सः लेखं लिखित्वा गृहं गच्छति ।

५. बालं विहाय इन्दुबिम्बं ग्रहीतुं कः इच्छति ।

नोट—जिन शब्द के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या १) । पुंल्लिग में अकारान्त शब्दों के रूप जिन की तरह चलेंगे ।

भू धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या १)

संधिविचार

नियम १०—(अवर्जानामिनः १।१।८) अवर्ण को छोडकर इवर्ण; उवर्ण, ऋवर्ण, ऌवर्ण, ए, ऐ, ओ, औ और प्लुत स्वरों की नामिसंज्ञा होती है ।

नियम ११—(ऌदन्ताः समानाः १।१।९) अ, इ, उ, ऋ, ऌ—इनके ह्रस्व और दीर्घ स्वरों की समानसंज्ञा होती है ।

नियम १२—(एऐओऔ सन्ध्यक्षराणि १।१।१०) ए, ऐ, ओ, औ ये सन्ध्यक्षर स्वर हैं ।

नियम १३—(ह्रस्वो लघुः १।१।१३) ह्रस्व स्वरों की लघुसंज्ञा होती है ।

नियम १४—(दीर्घः १।१।१५) दीर्घ स्वरों की गुरुसंज्ञा होती है ।

नियम १५—(संयोगे गुरुः १।१।१४) संयोग आगे होने पर पूर्व के ह्रस्व स्वर की गुरुसंज्ञा होती है ।

नियम १६—(स्वरानन्तरिता हसाः संयोगः १।१।१७) दो-तीन आदि हसों के बीच में कोई स्वर न हो तो उनकी संयोगसंज्ञा होती है । संयोग से पूर्व ह्रस्व स्वर की गुरुसंज्ञा होती है । जैसे—वत्स । यहां त् और स् के बीच में स्वर न होने से त्स् की संयोगसंज्ञा है ।

अभ्यास

१. शब्द किससे बनता है ?

२. वाक्य में कम से कम क्या होना चाहिए ?

३. वाक्य में क्या-क्या हो सकते हैं ?

४. समानसंज्ञा में कौन-कौन से वर्ण होते हैं ?

५. संयोगसंज्ञा किसकी होती है ? संयोगसंज्ञा से क्या कार्य होता है ?

६. नीचे लिखे शब्दों में किन-किन वर्णों की संयोगसंज्ञा है—
वत्स, विद्या उज्ज्वल, धर्मात्मा, मिथ्यात्व, विद्वज्जन्य ।

७. नामिसंज्ञा के पांच उदाहरण लिखो ।

८. राम घर को जाता है । उसके पास पुस्तक नहीं है । इनमें अक्षर, शब्द और वाक्य कौन-कौन हैं ?

९. सध्यक्षर स्वरों के ४ शब्द लिखो ।

१०. गुरुसंज्ञा और दीर्घसंज्ञा में क्या अन्तर है ?

पाठ ४ : विभक्तिबोध

शब्दसंग्रह

सर्वः (सब)। विश्व (सब)। उभौ (दोनों)। उभयौ (दोनों)। अन्यः (दूसरा)। अन्यतरः (दोनों से एक)। इतरः (दूसरा)। कतरः (कौनसा—दो में से कोई)। कतमः (कौनसा—तीन या उससे अधिक संख्या में से कोई)। स्यः (वह)। सः (वह)। यः (जो)। असौ (वह)। अयं (यह)। एषः (यह)। एकः (एक)। द्वौ (दो)। त्वं (तू)। अहं (मैं)। भवान् (आप)। कः (कौन)।

ये सर्वनाम शब्द हैं। तीनों लिंगों में इनका प्रयोग होता है। यहां पुल्लिग में उनका रूप दिया गया है।

धातु—पां—पाने (पिबति) पीना। घ्रां—गन्धोपादाने (जिघ्रति) सूंघना। म्नां—अभ्यासे (मनति) अभ्यास करना। दां—दाने (यच्छति) देना।

अव्यय—स्वर् (स्वर्ग), अन्तर् (बीचमें), प्रातर् (सुबह), पुनर् (बार-बार)।

सर्व और पूर्व शब्द के रूप पुल्लिग में याद करो। इनके रूप जिन शब्द की तरह चलते हैं, कुछ भिन्नता है। (देखें परिशिष्ट १ संख्या २,४४)।

पा और घ्रा धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या २,३)। आकारान्त धातुओं के रूप प्रायः पा की तरह चलते हैं। संयोग आकारान्त धातुओं के रूप घ्रा धातु की तरह चलेंगे।

विभक्तिबोध

जो नाम या क्रियाएं हमारे व्यवहार में आती हैं उन सबके अन्त में विभक्ति लगी हुई होती है। विभक्ति का अर्थ है—विभाजन करने वाला प्रत्यय। जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध होता है उसे विभक्ति कहते हैं। विभक्तियां नाम और क्रियाओं की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को, भिन्न-भिन्न काल को सूचित करती हैं। नाम के अन्त में सात विभक्तियां लगती हैं। सि आदि में होने के कारण उनकी संज्ञा स्यादिविभक्ति है। इनका स्पष्ट विवेचन आगे कारक प्रकरण में मिल सकेगा। यहां केवल उनका स्थूल अर्थ बताना ही उपयुक्त है।

१. कर्त्ता में प्रत्यय होने से कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। वर्तमान काल में इसका चिन्ह क्रिया के आगे 'है' होता है। जैसे—शिष्य पढता है—शिष्यः पठति। कहीं-कहीं इसका चिन्ह नाम के आगे 'ने' भी होता है। जैसे—महावीर ने कहा—महावीरोऽवदत्। उसने कहा—सोऽवदत्।

२. कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। इसका चिन्ह 'को' है। जैसे—वह गांव को जाता है—सः ग्रामं गच्छति। कहीं-कहीं 'को' चिन्ह द्वितीया विभक्ति में नहीं भी मिलता है। जैसे—वह पुस्तक पढता है—सः पुस्तकं पठति।

३. साधन में तृतीया विभक्ति होती है। इसका चिन्ह 'से और द्वारा' है। जैसे—लक्ष्मण ने बाण से रावण को मारा—लक्ष्मणः बाणेन रावणं जघान। वह रजोहरण से पूंजता है—सः रजोहरणेन प्रमार्जति।

४. सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसका चिन्ह 'के लिए' और 'को' है। जैसे—राम साधु को भिक्षा देता है—रामः साधुभ्यो भिक्षां ददाति।

५. अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसका चिन्ह 'से' है। जैसे—मोहन गांव से आता है—मोहनः ग्रामात् आगच्छति।

६. सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'का, के, की' है। जैसे—मोहन का पुत्र—मोहनस्य पुत्रः।

७. अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसका चिह्न 'में' या 'पर' है। जैसे—वन में सिंह है—वने सिंहः अस्ति।

८. संबोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—हे जिन।

सर्वनाम के शब्दों में संबोधन विभक्ति नहीं होती है।

कर्त्ता आदि कारकों के चिह्न, विभक्ति और वचनों को इस रूप में याद कर सकते हैं—

कारक	चिह्न	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१. कर्त्ता	है, ने	प्रथमा	सि	औ	जस्
२. कर्म	को	द्वितीया	अम्	औ	शस्
३. साधन	से, द्वारा	तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
४. सम्प्रदान	के लिए, को	चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
५. अपादान	से	पंचमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
६. सम्बन्ध	का, के, की	षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
७. अधिकरण	में, पर	सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

संधिविचार

नियम १७—(ऋणे प्रवसनकम्बलदशार्णवत्सरवत्सतरस्यार् १।२।१४) प्र, वसन, कम्बल, दश, ऋण, वत्सर, वत्सतर शब्दों के आगे ऋण शब्द होने

पर इनके अवर्ण को ऋण के ऋ सहित आर् हो जाता है। जैसे—प्र+ऋणम्=प्रार्णम्। वसन+ऋणम्=वसनार्णम्। कम्बल+ऋणम्=कम्बलार्णम्। ऋण+ऋर्णम्=ऋणार्णम्। वत्सर+ऋणम्=वत्सरार्णम्। वत्सतर+ऋणम्=वत्सतरार्णम्।

नियम १८—(ऋत्युपसर्गस्य १।२।१६) ऋकार आदि वाली धातु परे होने पर उपसर्ग के अवर्ण को धातु के ऋ सहित आर् हो जाता है। जैसे—प्र+ऋच्छति=प्रार्च्छति।

नियम १९—(एदोतोऽतः पदान्ते १।२।३२) पदान्त में स्थित एत् और ओत् से आगे यदि 'अ' हो तो उसका लोप हो जाता है और 'अ' के स्थान पर ऽ चिह्न लिखा जाता है। जैसे—ते+अत्र=तेऽत्र। पटो+अत्र=पटोऽत्र।

अभ्यास

१. विभक्ति किसे कहते हैं ? वे कितनी हैं ?
२. विभक्तियों के चिह्न (पहचान) का सरल तरीका क्या है ?
३. अकार के आगे ऋण का ऋकार होने पर क्या बनता है तथा किन शब्दों से बनता है ?
४. उपसर्ग के अवर्ण को आर् कहां होता है ?
५. साधो+अयम्—यहां सन्धि करने से क्या रूप बनेगा और किस नियम से बनेगा ?
६. संधि विच्छेद करो—
वसनार्णम्, ऋणार्णम्, कम्बलार्णम्, केऽत्र, लोकेऽस्मिन्, उपार्च्छति, परार्च्छति।
७. संधि करो—
प्र+ऋणम्, वत्सर+ऋणम्, हरे+अव, अधीते+अधुना, अपवरके+अस्मिन्, विद्यालये+अस्मिन्, प्र+ऋच्छति।
८. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
दूसरा, वह, तुम, जो, दोनों में एक, दो, सब।
९. जिन शब्द के रूप लिखो।
१०. भू धातु के १० लकारों के रूप लिखो।

पाठ ५ : पुरुष और वचन

शब्दसंग्रह

सः (वह) । तौ (वे दोनों) । ते (वे सब) । त्वम् (तू) । युवां (तुम दोनों) । यूयं (तुम सब) । अहं (मैं) । आवां (हम दोनों) । वयं (हम सब) । अर्भकः (बालक) । नृपः (राजा) । नरः (मनुष्य) । कुर्कुरः (कुत्ता) ।

नाम के आगे स्यादिप्रत्यय लगते हैं वैसे ही क्रिया के आगे तिप् आदि प्रत्यय लगते हैं । इन्हें तिबादिप्रत्यय कहते हैं ।

सोमपा और दन्त शब्द के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट १ संख्या ४५, ४६) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन—	भवति	भवसि	भवामि
द्विवचन—	भवतः	भवथः	भवावः
बहुवचन—	भवन्ति	भवथ	भवामः

इसी तरह पठ्, लिख्, गम् (गच्छ), धाव् आदि धातु के तिबादि के रूप चलेंगे । इंक् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या १३)

पुरुष, वचन

कर्ता तीन भागों में विभाजित किये जाते हैं—प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुष । प्रथमपुरुष को अन्यपुरुष भी कहते हैं । संस्कृत में प्रत्येक पुरुष के तीन-तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन और बहुवचन । जहां एक का बोध कराना हो वहां एकवचन, जहां दो का बोध कराना हो वहां द्विवचन और जहां दो से अधिक का बोध कराना हो वहां बहुवचन का प्रयोग किया जाता है । नीचे लिखे चार्ट से सरलता से समझा जा सकता है—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष—	वह	वे दोनों	वे सब
मध्यम पुरुष—	तुम	तुम दोनों	तुम सब
उत्तम पुरुष—	मैं	हम दोनों	हम सब

जहां क्रिया का सम्बन्ध कर्ता से होता है वहां क्रिया के रूप कर्ता के वचन के अनुसार चलते हैं । कर्ता में एकवचन हो तो क्रिया में भी एकवचन, कर्त्ता में द्विवचन हो तो क्रिया में भी द्विवचन और कर्ता में बहुवचन हो तो

तो क्रिया में भी बहुवचन आता है।
जैसे—

सः गच्छति—वह जाता है।
तौ गच्छतः—वे दोनों जाते हैं।
ते गच्छन्ति—वे सब जाते हैं।
त्वं गच्छसि—तू जाता है।
युवां गच्छथः—तुम दोनों जाते हो।
यूयं गच्छथ—तुम सब जाते हो।
अहं गच्छामि—मैं जाता हूं।
आवां गच्छावः—हम दोनों जाते हैं।
वयं गच्छामः—हम सब जाते हैं।

इन तीनों पुरुषों के अतिरिक्त जितने भी नाम हैं उनके साथ अन्य-पुरुष की क्रिया आती है। जैसे—

रामः गच्छति—राम जाता है।
वृक्षः अस्ति—वृक्ष है।
अश्वः गच्छति—घोडा जाता है।
श्रीः वर्धते—लक्ष्मी बढती है।

संधिविचार

नियम २०—(एदैतोरयायौ १।२।३) एकार और ऐकार के आगे स्वर होने पर एकार को अय् और ऐकार को आय् आदेश हो जाता है। जैसे—ने+अनम् = नयनम्। नै+अकः=नायकः।

नियम २१—(ओदौतोरवावौ १।२।४) ओकार और औकार के आगे स्वर होने पर ओकार को अव् और औकार को आव् आदेश हो जाता है। जैसे—भो+अनम् = भवनम्। पौ+अकः=पावकः।

नियम २२—(एदैतोरैत् १।२।१९) अवर्ण के आगे एकार और ऐकार होने पर अवर्ण सहित एकार और ऐकार को ऐकार हो जाता है। जैसे—तव+एषा = तवैषा। जिन+ऐश्वर्यम्=जिनैश्वर्यम्।

नियम २३—(ओदौतोरौत् १।२।२२) अवर्ण के आगे ओकार और औकार होने पर अवर्ण सहित ओकार और औकार को औकार हो जाता है। जैसे—श्रमण+ओघः=श्रमणौघः। चैत्र+औत्कण्ठ्यम्=चैत्रौत्कण्ठ्यम्।

प्रयोग वाक्य

सः पठति। तौ पठतः। ते पठन्ति। त्वं लिखसि। युवां लिखथः। यूयं लिखथ। अहं गच्छामि। आवां गच्छावः। वयं गच्छामः। अर्भकः लिखति। अर्भकौ पठथः। अर्भकाः गच्छन्ति। सर्वे दुग्धं पिबन्ति। उभौ तिष्ठतः। अन्यः

गच्छति। त्वं मनसि। अहं तस्मै पुस्तकं यच्छामि। एषः पठति। अयं लिखति। असौ धावति। अमी धावन्ति। कतमः पठति ? कतरः लिखति ? कतरः सुन्दरं लिखति ? यः पिबति सः कोस्ति ? वयं गृहं गच्छामः। बालकः दुग्धं कथं न पिबति ? तत्र पुनः पुनः कथं गच्छति अर्भकः। प्रातः नृपः-पत्रं पठनि।

संस्कृत में वाक्य बनाओ

वह पढता है। वे दोनों लिखते हैं। वे सब जाते हैं। तूं लिखता है। तुम दोनों जाते हो। तुम सब पढते हो। मैं जाता हूं। तुम दोनों पढते हो। हम सब लिखते हैं। मनुष्य जाते हैं। बालक पढते हैं। राजा लिखता है। कुत्ता दौडता है। दो कुत्ते दौडते हैं। कौन पानी पीता है ? वह फूल को सूंघता है। वे दोनों स्कूल जाते हैं। दोनों में से एक पढता है। कौन सा लडका तेज दौडता है ? जो दान देता है वह कौन है ? दोनों में से कौनसा बालक पाठ का अभ्यास करता है ? यह पुस्तक किसकी है ? आप कौन हैं ?

अभ्यास

१. पुरुष के तीन प्रकार कौन-कौन से हैं ?
२. प्रत्येक पुरुष में कितने वचन होते हैं ? वे कौन-कौन से हैं ?
३. क्रिया का प्रयोग किसके अनुसार होता है ?
४. एकार और ऐकार से आगे स्वर होने पर क्या बनता है ?
५. अव् और आव् किस स्वर से परे कौन सा स्वर होने से बनता है ?
६. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
   बालक, राजा, मनुष्य, कुत्ता, वे दोनों, हम सब।
७. सर्व और पूर्व शब्द के रूप लिखो।
८. गम् और पठ धातु के तिबादि के रूप लिखो।
९. पा धातु के णबादि, क्यादादि और ह्यादि के रूप लिखो।

पाठ ६ : काल १ (वर्तमान काल)

शब्दसंग्रह

मुनिः (मुनि) । तरणिः (सूर्य) । ऋषिः (मुनि) अरिः (शत्रु) । अग्निः (आग) । कविः (कवि) । भूपतिः (राजा) । नृपतिः (राजा) । यतिः (संन्यासी) । गिरिः (पहाड) । मरीचिः (किरण) । सेनापतिः (सेनापति) । रविः (सूर्य) । कपिः (बन्दर) । शकुनिः (पक्षी) । पतिः (पति) । सखिः (मित्र) ।

धातु—जि—जये (जयति) जीतना । क्षि—क्षये (क्षयति) क्षय होना । इं—गतौ (अयति) जाना । दुं—गतौ (दवति) जाना । सुं—प्रसवैश्वर्ययोः (सवति) उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना ।

अव्यय—सत्यम् (सत्य), नक्तम् (दिनरात), दिवा (दिन), दोषा (रात्रि) ।

मुनि शब्द के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ३)

इकारान्त पुल्लिग शब्दों के रूप मुनि की तरह चलेंगे । पति, सुधी और सखि शब्द के रूप 'मुनि' शब्द से कुछ भिन्न चलते हैं । उन्हें परिशिष्ट १ संख्या ४७,४९,४८ को देखकर याद करो ।

जि और दु धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ४,५)

'क्षि' धातु तक के रूप परस्मैपद में 'जि' की तरह और उकारान्त धातुओं के रूप 'दु' की तरह चलते हैं । 'इं' धातु के रूप कुछ भिन्न चलते हैं । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ४१)

वर्तमान काल

काल के स्थूल रूप से तीन विभाग हैं—वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यत्काल ।

इन तीनों कालों की संस्कृत में दस विभक्तियां होती हैं । वे ये हैं—(१) तिबादि (२) यादादि (३) तुबादि (४) दिबादि (५) द्यादि (६) णबादि (७) क्यादादि (८) तादि (९) स्यत्यादि (१०) स्यदादि ।

वर्तमानकाल में प्रथम तीन विभक्तियों का प्रयोग होता है ।

१. तिबादि (प्रारब्धः अपरिसमाप्तश्च कालो वर्तमानः) जो काल प्रारम्भ हो गया है, समाप्त नहीं हुआ है उसे वर्तमानकाल कहते हैं—ऐसा व्याकरणाचार्यों का कथन है । तिबादि विभक्ति का प्रयोग वर्तमानकाल में

होता है। जैसे—शैक्षः पठति—शैक्ष पढता है। शिशुः हसति—शिशु हंसता है। रामः गच्छति—राम जाता है। सः वदति—वह बोलता है।

२. **यावादि**—इसका प्रयोग कर्तव्य का उपदेश, क्रिया की प्रेरणा और संभावना में होता है। जैसे—

कर्तव्य का उपदेश—प्राणिनो न हिंस्यात्—प्राणियों की हिंसा नहीं करनी चाहिये।

क्रिया की प्रेरणा—प्रतिक्रमणमवश्यं कुर्यात्—प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिए।

भोजनं कुर्यात्—भोजन करना चाहिए।

दशवैकालिकं अधीयीत—दशवैकालिक पढना चाहिए।

अत्र आसीत—यहां बैठें।

अत्र शयीत—यहां सोवें।

व्रतं रक्षेत्—व्रत की रक्षा करें।

३. **तुबादि**—इसका प्रयोग किसी को आशीर्वाद देने, विधि और संभावना में होता है। जैसे—

आशीर्वाद—त्वं सुखी भव—तुम सुखी बनो।

,, चिरं जीवतु भवान्—आप चिरकाल तक जीएं।

विधि— त्वं पाठं पठ—तुम पाठ पढो।

प्रसीदन्तु गुरुपादाः—गुरुदेव प्रसन्न हों।

संभावना—अत्र आस्ताम्—यहां बैठो।

अत्र शेताम्—यहां सोवो।

व्रतं रक्षतु—व्रत की रक्षा करो।

संधिविचार

नियम २४—(एदोतोरुपसर्गस्य लोपः १।२।२६) उपसर्ग के अवर्ण का लोप हो जाता है धातु का एकार और ओकार आगे हो तो। प्र+एजते=प्रेजते। उप+ओषति=उपोषति।

नियम २५—(नैत्येधत्योः १।२।२७) एति और एधते धातु का एकार परे हो तो उपसर्ग के अवर्ण का लोप नहीं होता। प्र+एति=प्रैति। प्र+एधते=प्रैधते।

नियम २६—(एवेऽनवधारणे १।२।२९) अवर्ण का लोप हो जाता है अनिश्चय अर्थ में एव शब्द पर हो तो। अद्य+एव=अद्येव गच्छ। निश्चय अर्थ में हो तो—अद्य+एव=अद्यैव।

नियम २७—(ओष्ठौत्वोः समासे वा १।२।३१) समास में अवर्ण से परे ओष्ठ और ओतु शब्द परे हो तो अवर्ण का लोप विकल्प से होता है।

बिम्ब+ओष्ठी=बिम्बोष्ठी, बिम्बौष्ठी। स्थूल+ओतुः=स्थूलोतुः, स्थुलौतुः।

प्रयोग वाक्य

मुनिः क्रोधं जयेत्। तरणिः अस्तं अयति। भूपतिः अरिं क्षयति। कवयः कवितां कथं न लिखेयुः? गिरौ रवेः मरीचयः पतन्ति। सेनापतिः कपीनां सहयोगेन जयति। माता सुतं प्रसवति। महिषी कदा प्रसोष्यति?

संस्कृत में अनुवाद करो

राजा शत्रु को जीतता है। कवि लिखता है। पहाड पर बन्दर है। संन्यासी आगम पढता है। सेनापति घर जाता है। राजा शत्रु का क्षय करता है। संन्यासी को क्रोध जीतना चाहिए। सेनापति को घर जाना चाहिए। उसे लिखना चाहिए। हमें आगम पढना चाहिए। मुझे क्रोध जीतना चाहिए। तुम लिखो। तुम दोनों आगम पढो। तुम दोनों घर जाओ। सेनापति घर जाए।

अभ्यास

१. वर्तमान काल में कितनी विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है?
२. यादादि विभक्ति का प्रयोग किस अर्थ में किया जाता है? दो-दो वाक्य बनाओ।
३. तुबादि विभक्ति किस अर्थ में और किस काल में प्रयोग की जाती है?
४. तुबादि और यादादि विभक्ति एक ही है या दोनों में भिन्नता भी है, है तो कहां?
५. दु धातु के रूपों की समानता किस धातु से कर सकते हैं?
६. संधि करो और बताओ किस नियम से ऐसा किया गया है—
प्र+एलयति। इहेव तिष्ठ। इहैव तिष्ठ। परा+एति। उप+एधते। प्र+एजते।
७. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
मुनि, सूर्य, राजा, पहाड, किरण, सेनापति, पक्षी।
८. सोमपा और पाद शब्द के रूप लिखो।
९. जि और दु धातु के तिबादि, यादादि, क्यादादि के रूप लिखो।

पाठ ७ : काल २ (भूतकाल)

शब्दसंग्रह

साधुः (साधु) । भानुः (सूर्य) । गुरुः (गुरु) । सूनुः (पुत्र) । तरुः (वृक्ष) । वायुः (हवा) । इषुः (बाण) । इन्दुः (चन्द्रमा) । शिशुः (बालक) । रिपुः (शत्रु) । पशुः (पशु) । सिन्धुः (समुद्र) । आखुः (चूहा) ।

धातु—स्मृं—चिन्तायाम् (स्मरति) याद करना । स्वृं—शब्दोपतापयोः (स्वरति) शब्द करना, दुःख करना । सृं—गतौ (सरति) जाना । ऋं—प्रापणे (ऋच्छति) प्राप्त करना । तॄ—प्लवनतरणयोः (तरति) प्लवन करना, तैरना ।

अव्यय—ह्यस् (बीता हुआ कल), शम् (सुख), भृशम् (बहुत), सपदि (शीघ्र), आशु (शीघ्र) ।

साधु और स्वयंभू शब्द के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ४,५०) उकारान्त पुल्लिग शब्दों के रूप साधु की तरह चलते हैं ।

स्मृ धातु के रूप याद करो । ऋकारान्त धातुओं के रूप प्रायः 'स्मृ' की तरह चलेंगे । (परिशिष्ट २ संख्या ६) 'ऋ' धातु के रूप कुछ भिन्न चलते हैं । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ८) । तॄ धातु के रूप याद करो । ऋकारान्त धातुओं के रूप तॄ की तरह चलेंगे (देखें परिशिष्ट २ संख्या ७) ।

भूतकाल

जो काल बीत गया उसे भूतकाल कहते हैं ।

भूतकाल में तीन विभक्तियों का प्रयोग होता है—

(१) दिबादि (२) द्यादि (३) णबादि

दिबादि—इसका प्रयोग अनद्यतनभूत में होता है । अद्यतन का अर्थ है—आज होने वाला । आज से पहिले हो चुका वह अनद्यतनभूत है । इसकी व्याकरणाचार्यों द्वारा की गई मर्यादा यह है कि बीती हुई रात के बारह बजे से आज की रात के बारह बजे का काल अद्यतन है और उससे पहला काल अनद्यतनभूत है । दिबादि विभक्तियां इसी 'अनद्यतन' भूत के अर्थ में प्रयुक्त होती हैं । जैसे—सः दिनद्वयात् प्रागेव अतः अगमत्—वह दो दिन पहले ही यहां से चला गया ।

आचार्यप्रवरा: एकमासात् प्राग् अत्र आगमन्—आचार्यप्रवर एक मास पहले यहां आये थे।

परश्व: तव पुत्र: अभवत्—परसों तुम्हारे पुत्र हुआ था।

ह्य: मम उपवास: अभवत्—कल मेरे उपवास था।

पूर्वे मंगलवारे त्वं किं अकथय:—पूर्व मंगलवार को तुमने क्या कहा था ?

द्यादि—इसका प्रयोग सामान्यभूत में होता है। जैसे—अहं तत्र अगमम्—मैं वहां गया था।

स: लेखं अलेखीत्—उसने लेख लिखा था।

राम: कार्यं अकार्षीत्—राम ने कार्य किया था।

गोष्ट्यां कुमारप्रशान्त: निबंधं अपठीत्—गोष्ठी में कुमार-प्रशान्त ने निबन्ध पढा था।

णबादि—इसका प्रयोग परोक्षभूत अर्थात् अपनी अवस्था से पहले जो हो गया हो उसमें होता है। जैसे—भिक्षु: बभूव—भिक्षु स्वामी हुए थे।

भरतं विजिग्ये बाहुबली—बाहुबली ने भरत को जीता था।

पार्श्वनाथ: चतुर्यामं धर्मं व्याजहार—पार्श्वनाथ ने चतुर्याम धर्म कहा था। तीर्थंकर: धर्मं दिदेश—तीर्थंकर ने धर्म की देशना दी थी।

संधिविचार

नियम २८—(असंधिरदसोमुमी १।२।३५)—अदस् शब्द के रूप के अन्त में जहां मु, मी हो जाते हैं उनकी स्वर परे होने पर भी संधि नहीं होती है। जैसे—अमुमु + ईचा = अमुमु ईचा। अमी + अश्वा: = अमी अश्वा:।

नियम २९—(ईदूदेद् द्विवचनं स्वरे १।२।३६)—जिन शब्दों के द्विवचन के अंत में ई, ऊ, और ए होते हैं उनसे आगे स्वर परे होने पर भी संधि नहीं होती है। जैसे—मुनी + एतौ = मुनी एतौ। साधू + इमौ = साधू इमौ। माले + आनय = माले आनय। पचेते + अत्र = पचेते अत्र।

नियम ३०—(मणीवादीनां वा १।२।३७) मणि, रोदसी, दंपती आदि द्विवचनान्त शब्दों की स्वर परे होने पर संधि विकल्प से होती है। जैसे—मणी + इव = मणीव, मणी इव। दंपती + इव = दंपतीव, दंपती इव। रोदसी + इव = रोदसीव, रोदसी इव।

नियम ३१—(ओन्निपात: १।२।३८) जिन निपात शब्दों के अन्त में 'ओ' हो तो उनसे परे स्वर होने पर भी संधि नहीं होती। जैसे—अहो + अत्र = अहो अत्र। उताहो + अत्र = उताहो अत्र।

नियम ३२—(धावोदितौ १।२।४२) संबोधन में 'ओ' अन्तवाले

शब्दों से आगे 'इति' शब्द हो तो संधि विकल्प से होती है। जैसे—साधो+ इति = साधविति, साधो इति।

प्रयोगवाक्य

गुरुः शिष्यमस्मरत्। दिनेशः गुरुमस्मार्षीत्। मुनिः भगवन्तं महावीरं सस्मार। विहगः अस्वरत्। सः पुस्तकमपठत्। अहं व्याकरणमपाठिषम्। किं भिक्षुस्वामी संस्कृतं पपाठ? सर्पः असरत्। धनपालः लेखनीं आच्छर्त्। रामः विजयं आर। नदीमतरत् हरिषेणः। हनुमानः सिन्धुं ततार। तुरगः अधावत्। कुक्कुरः नीरमपात्। नृपः रिपुमजयत्। भोजः कालिदासाय धनं ददौ।

संस्कृत में अनुवाद करो

तुमने क्या याद किया? रमेश ने कल क्या पढा था? युधिष्ठिर ने सत्य का पाठ पढा। किसने स्वर किया? किस लडके ने कल नदी को तैरा? कल का पाठ किसने शीघ्र याद किया? कवि को क्या मिला? उसने सुख के लिए जिनेश्वरदेव को याद किया। वह अभी गया। वृक्ष पर पक्षी बोले। हेमचन्द्राचार्य ने भगवान का स्मरण किया। उसने बच्चे को क्या कहा? क्या भिक्षु स्वामी ने दूध पीया था? मोहन ने पुस्तक कब पढी? भारमल स्वामी ने सब कुछ सहा। राम ने गंगा को कब तैरा?

अभ्यास

१. भूतकाल में कौन-कौन सी विभक्तियां प्रयोग में आती हैं?
२. अनद्यतनभूत का समय कौन सा है?
३. दिबादि और द्यादि में क्या अन्तर है?
४. णबादि विभक्ति का प्रयोग कहां होता है?
५. कौन-कौन से नियम से इन की संधि होती है और क्या रूप बनेगा?
   उताहो+इदम्, पटो+इति, अहो+ईशाः, कुण्डे+अत्र, अथो+अस्मै, अमू+इति, अघो+एहि।
६. स्मृ और तॄ धातु के दिबादि और णबादि के रूप लिखो।
७. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
   हवा, बाण, चन्द्रमा, बालक, समुद्र, चूहा, सूर्य।
८. मुनि, पति और सखि शब्दों के रूप लिखो।

पाठ ८ : काल ३ (भविष्यत् काल)

शब्दसंग्रह

पितृ (पिता) बाप। वप्तृ (वप्ता) बाप। मातृ (माता) मां। भ्रातृ (भ्राता) भाई। स्वसृ (स्वसा) बहिन। पितृष्वसृ (पितृष्वसा) भूआ। नप्तृ (नप्ता) पोता। भर्तृ (भर्ता) पति। देवृ (देवा) देवर। यातृ (याता) देवरानी, जेठानी। ननान्दृ (ननान्दा) ननंद। दुहितृ (दुहिता) लडकी। जामातृ (जामाता) जमाई। मातृष्वसृ (मातृष्वसा) मौसी। सवितृ (सविता) सूर्य। त्वष्टृ (त्वष्टा) बढई। अग्रजः (बडा भाई)। अनुजः (छोटा भाई)। जनकः (बाप)। पितामहः (दादा)। प्रपितामहः (परदादा)। मातामहः (नाना)। प्रमातामहः (परनाना)। पितृव्यः (चाचा)। पितृव्यपुत्रः (चचेरा भाई)। सहोदरः (सगा भाई)। भ्रातृव्यः (भतीजा)।

हृ॒न्—हरणे (हरति, हरते) हरण करना। भृ॒न्—भरणे (भरति, भरते) भरना। धृ॒न्—धारणे (धरति, धरते) धारण करना। डुकृ॒ञ्—करणे (करोति, कुरुते) करना।

अव्यय—श्वस् (आनेवाला कल), ओम् (स्वीकार करना), अथ (इसके बाद), अकस्मात् (अचानक), अग्रतः (आगे), इव (तरह)।

कर्तृ और पितृ शब्दों को याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ६,५) कृ धातु और हृ धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ९,१०)। धृ के रूप हृ की तरह चलेंगे।

भविष्यत्काल

आगे होने वाले काल को भविष्यत्काल कहते हैं।

भविष्यत्काल में चार विभक्तियों का प्रयोग होता है—

(१) क्यादादि (२) तादि (३) स्यत्यादि (४) स्यदादि।

क्यादादि—इसका प्रयोग आशीर्वाद देने के अर्थ में होता है। जैसे—

त्वं पंडितो भूयाः—तुम पंडित होवो।

भवान् चिरंजीवो भूयात्—आप चिरंजीवी हों।

त्वं विद्वान् भूयाः—तुम विद्वान् होवो।

भवान् श्रमणो भूयात्—आप श्रमण बनो।

सा विदुषी भूयात्—वह विदुषी बने।

सीता भावितात्मा भूयात्—सीता भावितात्मा बने।

तादादि—इसका प्रयोग अनद्यतनभविष्यत् अर्थात् एक दिन के बाद में होने वाली क्रिया में होता है।

अहं श्वः इदं पाठं पठितास्मि—मैं कल यह पाठ पढ़ूंगा।

श्वः भविता आचार्यपदारोहणं दिवसः—कल आचार्य का पदारोहण दिवस होगा।

पंचदिवसपश्चात् आचार्याः अत्र आगन्तारः—पांच दिन के बाद आचार्य यहां आयेंगे।

आदित्यवारे परीक्षापरीणामः आगन्ता—सोमवार को परीक्षा परिणाम आयेगा।

परश्वः सः उपवासं कर्ता—परसों वह उपवास करेगा।

स्यत्यादि—इसका प्रयोग सामान्यभविष्यत् के अर्थ में होता है। जैसे—

अहं परीक्षायामुत्तीर्णो भविष्यामि—मैं परीक्षा में उत्तीर्ण होऊंगा।

मासेन सः आगमिष्यति—वह एक मास से आयेगा।

रामः कार्यं करिष्यति—राम कार्य करेगा।

मोहनः पाठं पठिष्यति—मोहन पाठ पढेगा।

त्वं किं करिष्यसि—तुम क्या करोगे ?

स्यदादि—जहां एक काम के न होने से भविष्य में होने वाले दूसरे कार्य का अभाव दिखाना हो वहां क्रियातिपत्ति का प्रयोग किया जाता है। क्रियातिपत्ति का अर्थ है—एक क्रिया के हुए बिना दूसरी क्रिया का न होना। क्रियातिपत्ति में स्यदादि विभक्ति होती है।

क्रियातिपत्ति को सूचित करने के लिए यत्, चेत् आदि शब्दों का प्रयोग करना होता है। जैसे—

सः चेत् अभ्यासं अकरिष्यत् तर्हि उत्तीर्णः अभविष्यत्—यदि वह अभ्यास करता तो उत्तीर्ण होता।

यदि सः गुरूनुपासिष्यत तदा शास्त्रान्तरगमिष्यत्—यदि वह गुरु की उपासना करता तो शास्त्र के भीतर चला जाता।

यदि सुवृष्टिरभविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत्—यदि अच्छी वर्षा होती तो सुकाल होता।

संधिविचार

नियम ३३—(झसा जबाः २।१।१०८) यदि पद के अन्त में झस प्रत्याहार हो तो उसे जब (वर्ग का तीसरा अक्षर) हो जाता है। जैसे—वाक्+ईशः=वागीशः। षट्+अत्र=षडत्र।

नियम ३४—(अमे जबा अमा वा पदान्ते १।३।१) पदान्त में स्थित

वर्तमान जब प्रत्याहार को जश परे हो तो जश (वर्ग का पांचवां अक्षर) विकल्प से होता है। जैसे—एतद्+मुरारिः=एतन्मुरारिः, एतद्मुरारिः। वाग्+मधुरा=वाङ्मधुरा, वाग्मधुरा।

नियम ३५—(प्रत्यये १।३।२) पद के अन्त में जब प्रत्याहार हो तो उसको नित्य जश होता है, यदि प्रत्यय का जश आगे हो तो। षड्+नाम्= षण्णाम्। वाङ्मयम्।

नियम ३६—(जबाद्धो झभाः १।३।४) यदि पद के अन्त में जब प्रत्याहार हो, उससे आगे 'ह' हो तो उसे झभ (वर्ग का चौथा अक्षर) विकल्प से हो जाता है। नजदीक में जिस वर्ग का जब हो उसी वर्ग का झभ हो जाता है। जैसे—तत्+हितम्=तद्धितम्, तद्हितम्। वाक्+हरिः=वाग्घरिः; वाग्हरिः।

प्रयोग वाक्य

पिता नीरं पास्यति। भ्रातरौ गृहं गमिष्यतः। जामातारः किं करिष्यन्ति? भर्ता किं लेखिष्यति? त्वष्टा धनं हरिष्यति। नप्ता गृहे स्थास्यति। भूपतिः शत्रून् जेता। सविता तमः हर्ता। याता कूपात् नीरं भर्ता। क्रीडाक्षेत्रे किं भविता? मातृष्वसा मह्यं किं दाता? यदहं गृहं अगमिष्यम् तदा पुस्तकं प्राप्स्यम्। राजपुरुषः यच्चौरान् न्यग्रहीष्यत् तदान्यायोऽन्तमगमिष्यत्। अग्रजः चेत् तथाविधां चेष्टां नाकरिष्यत् तदा नैवंविधो विद्वान् अभविष्यत्। यदि सहोदरः श्रमं अकरिष्यत् तदाऽवश्यं सफलोऽभविष्यत्।

संस्कृत में अनुवाद करो

मेरा छोटा भाई कविता करेगा। मां तप करेगी। राजा शत्रु को जीतेगा। देवर पुस्तक पढेगा। ननंद वस्त्र धारण करेगी। पिता पुत्र को याद करेगा। वृक्ष पर पक्षी बोलेंगे। तुम्हारा चचेरा भाई लेख लिखेगा। गुरु दुःख का हरण करेंगे। नाना प्रातः गुरु का स्मरण करेंगे। परनाना खेत में पानी देंगे। यदि तुम भगवान् का स्मरण करते तो स्वस्थ हो जाते। यदि दादा क्रोध को जीत लेते तो सफल हो जाते। यदि वह धर्म करता तो सुखी होता। यदि परदादा विद्वान् होते तो अभिमान नहीं करते। यदि मेरा भाई नम्र होता तो मूर्ख नहीं रहता। यदि वर्षा होती तो सुकाल होता।

अभ्यास

१. संधि करो—एतत्+हि, कतिचिद्+नियमाः, अवदीद्+निकषात्मजन्मा, तद्+माधुर्यम्, असकृद्+निषिद्धः, वाग्+नयति, ककुब्+हासः।

२. संधि विच्छेद करो—
किन्नाम, मधुरवाङ्निकरः, ककुब्भिः, षड्भिः ।
३. किस नियम से बने हैं—
वाङ्मात्रम्, षड् ढलानि, तन्नयनम्, एतन्मुरारिः ।
४. पितृ, मातृ और कर्तृ शब्द के षष्ठी और तृतीया के रूप लिखो ।
५. पशु, शिशु, सेनापति, कवि, पति, शकुनि इनके रूप किस शब्द की तरह चलेंगे ?
६. हृ और कृ धातु के ह्यादि, णबादि और स्यदादि के रूप लिखो ।
७. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
भूआ, पति, ननंद, जमाई, मौसी, दादा, नाना, चाचा, भतीजा ।
८. साधु और स्वयंभू शब्दों के रूप लिखो ।

पाठ ६ । धातु

जितने भी नाम हैं वे धातुओं के प्रत्यय लगाने से ही बनते हैं। जितनी भी क्रियाएं हैं वे भी धातु के प्रत्यय लगाने से बनती हैं। नाम और क्रिया दोनों की जननी धातु है, इसलिए धातु को समझना अत्यावश्यक है। पहचान और व्यवस्था की दृष्टि से धातुओं को १० गणों में विभक्त किया गया है। उनकी पहचान के लिए धातु के अन्त में अक्षरों का अनुबन्ध जोडा जाता है।

अदादयः कानुबन्धा, श्चानुबन्धाः दिवादयः।
स्वादयस्तानुबन्धाः स्युर्जानुबन्धास्तुदादयः ॥१॥
रुधादयो रानुबन्धाः, वानुबन्धास्तनादयः।
क्रयादयः शानुबन्धा स्यु र्णानुबन्धाश्चुरादयः ॥२॥

(१) भ्वादिगण—कोई अनुबन्ध नहीं है। जैसे—भू सत्तायाम्।
(२) अदादिगण—क अनुबन्ध। जैसे—पांक् रक्षणे।
(३) दिवादिगण—च अनुबन्ध। जैसे—दिवुच् क्रीडायाम्।
(४) स्वादिगण—त अनुबन्ध। जैसे—षुंनूत् अभिषवे
(५) तुदादिगण—ज अनुबन्ध। जैसे—तुदंन्ज् व्यथने।
(६) रुधादिगण—र अनुबन्ध। जैसे—रुधूंन्र् आवरणे।
(७) तनादिगण—व अनुबन्ध। जैसे—तनुन्व् विस्तारे।
(८) क्र्यादिगण—श अनुबन्ध। जैसे—ग्रहन्श् उपादाने।
(९) चुरादिगण—ण अनुबन्ध। जैसे—चुरण् स्तेये।
(१०) कण्ड्वादिगण—कोई अनुबन्ध नहीं। जैसे—कण्डून् गात्रविघर्षणे।

गण की आदि धातु के आधार पर गण का नामकरण हुआ है। व्यवस्था की दृष्टि से गण की धातुओं को भिन्न-भिन्न प्रत्यय व कार्य होते हैं।

(१) भ्वादिगण—शित् संज्ञक प्रत्यय परे होने पर धातु से अप् प्रत्यय होता है।
(२) अदादिगण—अप् प्रत्यय का लुक् होता है।
(३) दिवादिगण की धातुओं को यन् प्रत्यय होता है।
(४) स्वादिगण की धातुओं को नु प्रत्यय होता है।
(५) तुदादिगण की धातुओं को अन् प्रत्यय होता है।
(६) रुधादिगण की धातुओं को नम् प्रत्यय होता है।
(७) तनादिगण की धातुओं को उप् प्रत्यय होता है।
(८) क्र्यादिगण की धातुओं को ना प्रत्यय होता है।

(९) चुरादिगण की धातुओं को स्वार्थ में णिच् प्रत्यय होता है।

(१०) कण्ड्वादिगण की धातुओं को स्वार्थ में यक् प्रत्यय होता है।

धातु के आगे 'ङ्' आत्मनेपद का प्रतीक है। जैसे—'पूङ्' पवने। धातु के आगे 'न्' उभयपद का परिचायक है। जैसे—लषन् कान्तौ। धातु के आगे कुछ न लगा हो वह परस्मैपद का प्रतीक है। जैसे—णट नृत्तौ। परस्मैपदी धातु के परस्मैपद के प्रत्यय और आत्मनेपदी धातु के आत्मनेपद के प्रत्यय लगते हैं।

नोट—विद्वस्, पुंस्, चंद्रमस् शब्दों के रूप याद करो। (देखें परिशिष्ट १ संख्या १४,५६,१५)।

तिबादि प्रत्यय (लट्)

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	प्रथमपु०	मध्यमपु०	उत्तमपु०	प्रथमपु०	मध्यमपु०	उत्तमपु०
एकवचन	तिप्	सिप्	मिप्	ते	से	ए
द्विवचन	तस्	थस्	वस्	आते	आथे	वहे
बहुवचन	अन्ति	थ	मस्	अन्ते	ध्वे	महे

यादादि प्रत्यय (विधिलिङ्)

यात्	यास्	याम्	ईत	ईथास्	ईय
याताम्	यातम्	याव	ईयाताम्	ईयाथाम्	ईवहि
युस्	यात	याम	ईरन्	ईध्वम्	ईमहि

तुबादि प्रत्यय (लोट्)

तुप्	हि	आनिप्	ताम्	स्व	ऐप्
ताम्	तम्	आवप्	आताम्	आथाम्	आवहैप्
अन्तु	त	आमप्	अन्ताम्	ध्वम्	आमहैप्

दिबादि प्रत्यय (लङ्)

दिप्	सिप्	अमिप्	त	थास्	इ
ताम	तम्	व	आताम्	आथाम्	वहि
अन्	त	म	अन्त	ध्वम्	महि

द्यादि प्रत्यय (लुङ्)

दि	सि	अम्	त	थास	इ
ताम्	तम्	व	आताम्	आथाम्	वहि
अन्	त	म	अन्त	ध्वम्	महि

णबादि प्रत्यय (लिट्)

णप्	थप्	णप्	ए	से	ए
अतुस्	अथुस्	व	आते	आथे	वहे
उस्	अ	म	इरे	ध्वे	महे

क्यादादि प्रत्यय (आशीर्लिङ्)

क्यात्	क्यास्	क्यासम्	सीष्ट	सीष्ठास्	सीय
क्यास्ताम्	क्यास्तम्	क्यास्व	सीयास्ताम्	सीयास्थाम्	सीवहि
क्यासुस्	क्यास्त	क्यास्म	सीरन्	सीध्वम्	सीमहि

तादि प्रत्यय (लुट्)

ता	तासि	तास्मि	ता	तासे	ताहे
तारौ	तास्थस्	तास्वस्	तारौ	तासाथे	तास्वहे
तारस्	तास्थ	तास्मस्	तारस्	ताध्वे	तास्महे

स्यत्यादि प्रत्यय (लृट्)

स्यति	स्यसि	स्यामि	स्यते	स्यसे	स्ये
स्यतस्	स्यथस्	स्यावस्	स्येते	स्येथे	स्यावहे
स्यन्ति	स्यथ	स्यामस्	स्यन्ते	स्यध्वे	स्यामहे

स्यदादि प्रत्यय (लृङ्)

स्यत्	स्यस्	स्यम्	स्यत	स्यथास्	स्ये
स्यताम्	स्यतम्	स्याव	स्येताम्	स्येथाम्	स्यावहि
स्यन्	स्यत	स्याम	स्यन्त	स्यध्वम्	स्यामहि

अभ्यास

१. किस गण की धातुओं का क्या अनुबन्ध जाता है ?

२. रुधादिगण, दिवादिगण, चुरादिगण की धातुओं से कौनसा प्रत्यय होता है ?

३. अप्, नु, अन्, उप् ना प्रत्ययों का आगम किन-किन गण की धातुओं को होता है ?

४. आत्मनेपद और परस्मैपद की धातुओं की क्या पहचान है ?

५. तिबादि के आत्मनेपद के, द्यादि के परस्मैपद के और णबादि के सब प्रत्यय लिखो।

६. कर्तृ और पितृ शब्दों के रूप लिखो।

पाठ १० : धातुप्रकरण

अकर्मक धातुएं

लज्जासत्तास्थितिजागरणं, वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् ।
शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्थं, धातुगणन्तमकर्मकमाहुः ।।

धातु—व्रीडच् (व्रीड्यति) लज्जा करना। लज, लस्ज (लजते, लज्जते) लज्जा करना। भू (भवति) होना। अस् (अस्ति) होना। ष्ठा (तिष्ठति) ठहरना। आसङ्क् (आस्ते) बैठना। जागृक् (जागर्ति) जागना। वृधुङ् (वर्धते) बढना। बिभींक् (बिभेति) डरना। क्षि (क्षयति) क्षय होना। जीव (जीवति) जीना। मृंज् (म्रियते) मरना। रुचङ् (रोचते) प्रिय लगाना, अच्छा लगना। दीपीङ्च् (दीप्यते) दीप्त होना। भांक् (भाति) दीप्त होना।

शब्दसंग्रह

मातुलः (मामा)। मातुलपुत्रः (मामा का बेटा)। पुत्रः (बेटा)। स्वस्रीयः (भानजा)। भागिनेयः (भानजा)। दौहित्रः (लडकी का बेटा)। पौत्रः (पोता)। प्रपौत्रः (प्रपोता)। मातृष्वस्रीयः (मौसेरा भाई)। श्वसुरः (ससुर)। ज्येष्ठः (जेठ)। श्यालः (शाला)। मातृष्वसृपतिः (मौसा)। पितृष्वसृपतिः (फूफा)। भगिनीपतिः (बहनोई)। पैतृष्वस्रीयः (फूफेरा भाई)।

अव्यय—अत्र (यहां), कुत्र (कहां), यत्र (जहां), तत्र (वहां), सर्वत्र (सब जगह)।

गो, दण्डिन् और पथिन् शब्दों के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ७,९,५१)।

धातु—ष्ठा धातु के रूप याद करो। (देखें परिशिष्ट २ संख्या ११)

धातुप्रकरण

क्रियावाची शब्दों को धातु कहते हैं। धातु के सामान्यतया दो भेद हैं—अकर्मक और सकर्मक।

अकर्मक—जहां क्रिया का व्यापार और उसका फल एक निष्ठ होते हैं, उस क्रिया को अकर्मक कहते हैं। जैसे—रमणः हसति (रमण हंसता है)। यहां हंसने की क्रिया और उसका विनोद रूप फल दोनों 'रमण' नामक एक व्यक्ति में ही होते हैं इसलिए यह अकर्मक क्रिया है। अकर्मक धातु को पहचानने

का मुख्य लक्षण यही है कि जिसके उच्चारण करने पर कर्म की आवश्यकता न जान पड़े अर्थात् 'क्या' ऐसा प्रश्न न उठे वह क्रिया अकर्मक होती है। जैसे—आचार्याः तिष्ठन्ति—आचार्य विराजते हैं। धनं वर्धते—धन बढता है। इसमें कहां, किसलिए आदि प्रश्न हो सकते हैं किन्तु क्या ऐसा प्रश्न नहीं होता है।

सकर्मक—जहां क्रिया का व्यापार और फल दो वस्तुओं के आश्रित होते हैं वह सकर्मक क्रिया होती है। सकर्मक धातु को पहचानने का मुख्य लक्षण यही है जिसका उच्चारण करते ही 'क्या' का प्रश्न उठे। जैसे—शैक्षः पठति। सः पश्यति। नवदीक्षित पढता है, वह देखता है, जब हम ऐसा उच्चारण करते हैं तो उसी समय यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि क्या पढता है, क्या देखता है। इस प्रश्न को समाहित करने के लिए हमें कहना होगा कि 'दशवैकालिक' पढता है, सूर्य को देखता है। यहां कर्म की अपेक्षा है अतः धातु सकर्मक है।

सकर्मक धातुओं के तीन भेद हैं—एककर्मक, द्विकर्मक और अविवक्षित कर्म।

एककर्मक—जिस वाक्य में धातु से एक ही कर्म आता हो वह एक-कर्मक धातु है। जैसे—त्वं पानीयं पिब। यहां पानीयं (पानी) कर्म है। त्वं नमस्कारं कुरु। त्वं विद्यां पठ। सः कटं करोति।

द्विकर्मक—जिस वाक्य में धातु से दो कर्म आते हैं वह द्विकर्मक धातु कहलाती है। द्विकर्मक धातुओं का विस्तृत वर्णन आगे के पाठों में किया जायेगा।

अविवक्षितकर्म—जिस वाक्य में धातु सकर्मक हो और कर्म आ सकता हो पर उसकी विवक्षा न करें उसे अविवक्षितकर्म कहते हैं। जैसे—अहं गच्छामि। त्वं कुरु। भवान् गच्छतु। गौः चरति। इन वाक्यों में कर्म की विवक्षा न होने के कारण ये सब अविवक्षित कर्म हैं अर्थात् इनमें कर्म की विवक्षा नहीं की गई है। अविवक्षितकर्म का प्रयोग एक अच्छा और सम्बन्धात्मक प्रयोग माना जाता है। जैसे—दो मनुष्यों के बीच यह बातचीत हुई कि मैं कल अमुक गांव जाऊंगा और वह ठीक उसी निर्दिष्ट गांव को जा रहा है, तब उसे इतना ही कहना पर्याप्त है कि मैं जाता हूं। अमुक गांव आदि कहने की जरूरत नहीं। चालू प्रकरण में कर्म का प्रयोग न करने पर भी कहने वाले का भाव समझ में आ जाता है।

संधिविचार

नियम ३७—(स्तोः श्चुभिः श्चुः १।३।५)—शकार और चवर्ग का योग होने पर सकार और तवर्ग के स्थान पर शकार और चवर्ग हो जाता है। सकार को शकार और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। जैसे—कस् + शेते =

कश्शेते । तत्+चित्रम्=तच्चित्रम् । भवान्+शेते=भवाञ् शेते ।

नियम ३८—(शात् १।३।९) शकार से परे तवर्ग को चवर्ग नहीं होता । प्रश्नः, विश्नः ।

नियम ३९—(ष्टुभिः ष्टुः १।३।६) षकार और टवर्ग से परे सकार और तवर्ग में से कोई हो तो सकार को षकार और तवर्ग को टवर्ग हो जाता है । कष्षष्ठः, कष्टीकते, तट्टीकते, तण्णकारेण, ईट्टे ।

नियम ४०—(न पदान्ताट्टोरनाम्नवतिनगरीणाम् १।३।७) पद के अन्त में टवर्ग हो, उससे आगे सकार तथा तवर्ग हो तो स को ष और तवर्ग को टवर्ग नहीं होता, नाम्, नवति और नगरी शब्दों को छोडकर । षड्नयनम्, षट् सीदन्ति । तीन शब्दों को होता है—षण्णाम्, षण्णवतिः, षण्णनगर्यः ।

नियम ४१—(तोः षि १।३।८) षकार परे हो तो तवर्ग को टवर्ग नहीं होता । भवान् षष्ठः ।

नियम ४२ क—(लि लः १।३।१०) तवर्ग से परे लकार हो तो तवर्ग को लकार हो जाता है । तल्लुनाति, विद्वाल्लिखति । नकार को सानुनासिक लकार हो जाता है ।

ख—(सँषाढ्से लोपः १।३।६०) स और एष से परे विसर्ग का लोप हो जाता है, हस परे हो तो । सः+याति=स याति । एषः+गच्छति= एष गच्छति ।

ग—सन्धिरेकपदे नित्यो, नित्यो धातूपसर्गयोः ।।
नित्यः समासे वाक्ये तु, स विवक्षामपेक्षते ।।१।।

एक पद में, धातु और उपसर्ग में, समास में सन्धि नित्य होती है । वाक्य में इच्छानुसार है । संधि कर भी सकते हैं और नहीं भी ।

प्रयोगवाक्य

स खल्वन्यायकर्मणि लज्जते अत एव महान् अस्ति । साधुसंगतौ तिष्ठति यः स जागर्ति नक्तं दिवा स्वं प्रति । न्यायो वर्धते, अन्यायो क्षयति, एतादृशः कः समयः ? यो बिभेति स जीवन्नपि न जीवति अपितु म्रियत एव । यः शेते मोहनिद्रायां प्रतिपलं क्रीडति च, स नास्ति महान् । यस्मै रोचते योगः स भासते भुवि भानुमानिव ।

संस्कृत में अनुवाद करो

पिता रात को जागता है । देवरानी जेठानी से लज्जा करती है । भुआ बहन के साथ बैठती है । लडकी और जंवाई (जामाता) दोनों को दूध प्रिय लगता है । दादा, दादी और बडा भाई मामा के पास क्यों गये ? भानजा किससे डरता है ? शाला और श्वसुर क्या कहते हैं ? फूफे का लडका कब यहां से चला गया ? पति और बहनोई व्यापार साथ में करते हैं । मामा गाय

से डरता है । जेठ जेठानी को प्रिय लगता है । नाना अच्छी तरह जीता है पर नानी मर रही है । दादा और पोता घूमने जाते हैं । बहू ससुर से लज्जा करती है । वहां जाने से क्या होगा ? मोहन रात्रि में किसलिए जगा था ? वृक्ष क्यों नहीं बढता है ? तुम क्यों डरते हो ? मुझे चावल अच्छे नहीं लगते । मनुष्य की आयु प्रतिदिन क्षीण हो रही है । पिता पुत्र को देखता है । मदन कल घर गया था ? जो राग और द्वेष को जीत लेता है वह जिन होता है ।

अभ्यास

१. नियमपूर्व संधि करो—
जलाशयात्+जलम् । तत्+जलम् । कियत्+च । तत्+चेतः । तत्+जयति । भवान्+जातः । भवान्+शयानः ।
२. अकर्मक धातु किसे कहते हैं ?
३. अकर्मक और अविवक्षित कर्म में क्या अन्तर है ? अकर्मक, द्विकर्मक और अविवक्षितकर्मक के दो-दो वाक्य बनाओ ।
४. अकर्मक धातुएं कौन-२ सी हैं, श्लोक लिखो ?
५. भगिनी और पति के रूप किस शब्द की तरह चलेंगे ?
६. डरना, मरना, जीना, बढना, बैठना, प्रियलगना—इन अर्थों में कौन-कौन सी धातु हैं ?
७. विद्वस्, पुंस्, चंद्रमस् और अनडुह् शब्दों के रूप लिखो ।

पाठ ११ : वाच्य

शब्दसंग्रह

नदी (नदी) । नारी (स्त्री) । पत्नी (पत्नी) । जननी (माता) । पृथ्वी (पृथ्वी) । पुत्री (लडकी) । पितामही (दादी) । मातामही (नानी) । प्रमातामही (परनानी) । पितृव्यपत्नी (काकी, चाची) । भातृपुत्री (भतीजी) । मातुलानी (मामी) । पौत्री (पौती) । प्रपौत्री (प्रपोती) । भगिनी (बहिन) । श्याली (शाली) । ज्येष्ठानी (जेठानी) । देवराणी (देवरानी) । सौभाग्यवती (सुहागिन स्त्री) । भातृजाया (भाभी) । स्नुषा (पुत्रवधू) । विधवा (विधवा) । निशा (रात्री) । निलयनक्रीडा (आंखमिचौनी) । रथ्या (सडक) ।

धातु—धेंट्—पाने (धयति) पान करना । ध्यैं—चिंतायाम् (ध्यायति) चिंतन करना । ग्लैं, म्लैं—हर्षक्षये (ग्लायति, म्लायति) थकना, मुरझाना । गैं—शब्दे (गायति) गाना । दैंप्—शोधने (दायति) शोधन करना । ष्ट्यैं, स्त्यैं—संघाते (ष्ट्यायति, स्त्यायति) जमना । ष्णैं—वेष्टने (स्नायति) वेष्टित करना । धेंट् और ध्यैं धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या १२,१४) ।

एकारान्त धातुओं के रूप धेंट् की तरह और ऐकारान्त धातुओं के रूप प्रायः ध्यैं की तरह चलते हैं ।

आत्मन्, राजन्, युवन् और मरुत् शब्दों के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट १ संख्या ५२,१०,५३,११) ।

वाच्य

जो हम कहना चाहें उसे वाच्य कहते हैं । वाच्य के तीन प्रकार हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य ।

जिस प्रकार नाम के आगे 'सि' आदि विभक्ति आती है वैसे ही धातु के आगे 'तिप्' आदि विभक्ति (प्रत्यय) आती हैं । धातु के आगे जो प्रत्यय आते हैं उनके आधार पर वाच्य के तीन नामकरण किए गए हैं । यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि जिसमें प्रत्यय आता है उसकी प्रधानता हो जाती है । प्रत्यय कर्त्ता, कर्म, साधन आदि कारकों में आता है ।

कर्तृवाच्य—जहां धातु से प्रत्यय कर्त्ता में होता है उसे कर्तृवाच्य कहते हैं । कर्तृवाच्य में कर्त्ता में प्रत्यय होने के कारण कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है । क्रिया कर्त्ता के अनुसार चलती है । जैसे—छात्रः पाठं पठति ।

छात्रौ पाठं पठतः । छात्राः पाठं पठन्ति । त्वं पाठं पठसि । अहं पाठं पठामि ।

कर्मवाच्य—जहां धातु से प्रत्यय कर्म में होता है उसे कर्मवाच्य कहते हैं । कर्मवाच्य में कर्म में प्रत्यय होने के कारण कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है । क्रिया कर्म के अनुसार चलती है । जैसे—छात्रेण पाठः पठ्यते । छात्रेण पाठौ पठ्येते । छात्रेण पाठाः पठ्यन्ते । तेन विद्या पठिता । तेन रत्नं गृहीतम् ।

भाववाच्य—भाव का अर्थ है क्रिया । जहां धातु से प्रत्यय क्रिया में ही होता है उसे भाववाच्य कहते हैं । क्रिया में प्रत्यय होने से क्रिया का संबंध कर्ता आदि कारकों से नहीं रहता । कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है । कर्ता में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन होने पर क्रिया में कर्त्ता का कोई प्रभाव नहीं रहता । कर्ता के सब पुरुषों में और सब वचनों में क्रिया का रूप एक समान रहता है । भाववाच्य में कर्म नहीं हो सकता । जहां कर्म रहेगा वहां भाववाच्य नहीं होगा, वह कर्मवाच्य बन जाएगा । जैसे—तेन गम्यते । ताभ्यां गम्यते । तैः गम्यते । त्वया गम्यते । युवाभ्यां गम्यते । युष्मामिः गम्यते मया गम्यते । आवाभ्यां गम्यते । अस्माभिः गम्यते ।

भाववाच्य में क्त आदि प्रत्यय होने से क्रिया में नपुंसकलिंग और एकवचन होता है । जैसे—मया गतम् । तेन गतम् ।

(संधिविचार)

नियम ४३ (उदः स्थास्तम्भोः सः १।३।६४) उद् उपसर्ग से परे स्था और स्तम्भ धातु के स् का लोप हो जाता है । उत्थानम्, उत्तम्भनम्

नियम ४४ (खसे चपा झथानाम् १।३।४०) खस परे होने पर झथ प्रत्याहार के स्थान पर चप हो जाता है । जैसे—तत्+शान्तिः=तच् शान्तिः ।

नियम ५५ (चपाच्छश्छोऽमे वा १।३।३) पद के अंत में चप हो और सामने शकार हो तथा उससे आगे अम प्रत्याहार हो तो शकार को छकार विकल्प से होता है । जैसे तत्+शान्तिः=तच्छान्तिः, तच्शान्तिः । वाक्+शूरः=वाक्शूरः, वाक्छूरः ।

नियम ४६ (ङ्णनो ह्रस्वाद् द्विः स्वरे १।३।२२) ह्रस्व स्वर से परे पद के अंत मे ङ्, ण्, न् हो और सामने स्वर हो तो ङ्, ण्, न्, द्वित्व हो जाते हैं । जैसे, प्रत्यङ्+इदं=प्रत्यङ्ङिदम् । सुगण्+इह=सुगण्णिह । कुर्वन्+आस्ते कुर्वन्नास्ते ।

नियम ४७ (स्वरात् १।३।२५) स्वर से परे छकार द्वित्व हो जाता है । तवच्छत्रम्, वृक्षच्छाया, आच्छादयति, माच्छिदत्, ह्रीच्छति, गच्छति, म्लेच्छति ।

नियम ४८ (अनाङ्माङो दीर्घाद् वा छः १।३।२३) आङ्, माङ् को

छोड़कर दीर्घ स्वर पदान्त में हो तो छकार विकल्प से द्वित्व हो जाता है। लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया। वधूच्छत्रम, वधूछत्रम्। नौच्छाया, नौछाया, कुटीच्छाया, कुटीछाया।

प्रयोगवाक्य

बालकः निलयनक्रीडां करोति। योगिनः सवितारं पश्यन्ति। शिष्यौ गुरुं प्रणमतः। विनीतः पूर्वजान् अनुहरति। युवां पाठं पठथ। गुरुणा त्वं कथ्यते। बालकेन निलयनक्रीडा क्रियते। शिष्याभ्यां गुरुः प्रणम्यते। योगिनः सविता दृश्यते। गुरुणा विनेयौ उपदिश्येते। विनीतेन पूर्वजाः अनुह्रियन्ते। मातुलेन भागिनेयः अपाठि। प्रपोत्र्या भगिनी भीयते। पितामहेन पुत्री स्मर्यते। मातृ-स्वसृपत्या स्वश्वसुराय पुस्तकं दीयते। भागिनेयेन पौत्रः जागर्यते। छात्राभ्यां पठ्यते। छात्रैः पठ्यते। त्वया पठ्यते। आवाभ्यां पठ्यते। अस्माभिः पठ्यते। शुक्लपक्षे चन्द्रमसा वर्द्धर्यते।

संस्कृत में अनुवाद करो

बहिन नदी तैरती है। सीता राम की पत्नी थी। पृथ्वी पर कौन बैठा है। सीता जनक की पुत्री थी। मेरी दादी प्रतिपल प्रभु का चिंतन करती है। कर्मवाच्य में परिवर्तन करो—

परदादी क्यों दुखी है। भतीजी क्या गाती है। मामी जैनागमों का अभ्यास करती है। पौत्री पाठ पढती है। जेठानी की बहन घर जाती है। देव-रानी देवर से पूछती है। दादी पत्र लिखती है। भाभी बार-बार फूल सूंघती है। सुहागिन स्त्रियां पानी पीती हैं। वैद्य रोग की चिकित्सा करता है।

अभ्यास

१. कर्तृवाच्य किसे कहते हैं? कर्त्ता में कौन सी विभक्ति होती है।
२. कर्त्ता में प्रथमा और तृतीया विभक्ति किस वाच्य में होती है।
३. कर्म में द्वितीया और प्रथमा विभक्ति कहां-कहां होती है।
४. कर्ता और कर्म को गौण करने वाला कौन सा वाच्य है। उसमें क्या किया जाता है।
५. संधिकरो—

सूर्य+छाया। तेन+छन्नम्। यावत्+शक्यः।
काचित्+शिक्षा। अस्मिन्+अस्ति।
भवान्+अयम्। भवन्+एषा। इयत्+शीतलम्। एतस्मिन्+अक्षवाटे।

६. संधि विच्छेद करो—

उत्थानम्, कियच्छीतलम्। कस्यचिच्छ्रेष्ठिनः।
गृहमेतच्छोभते, एतच्छक्तिः। तच्छक्तिः।

७. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
काकी, मामी, पौती, शाली, भाभी, जेठानी, पुत्रवधू आखमिचौनी, सड़क ।

८। भवत्, महत् और पठत् शब्द के पंचमी और सप्तमी के रूप लिखो ।

९. घेंट् और ध्यें धातु के यादादि और तुबादि के रूप लिखो ।

१०. गो, दण्डिन् और पथिन् शब्दों के रूप लिखो ।

पाठ १२ : लिंगबोध (१)

शब्दसंग्रह

गौः (गाय) । ग्लौः (चन्द्रमा) । कटः (चटाई) । सूदः (रसोइया) । कोषः (खजाना) । तन्तुवायः (जुलाहा) । आपणिकः (दुकानदार) । हस्तिपकः (महावत) । भारकः (कुली) । आखेटकः (शिकारी । प्रस्तरः (पत्थर) । मशकः (मच्छर) । कार्षापणः (पैसा) । कुड्मलः (कली) । बुद्धिः (बुद्धि) । मतिः (बुद्धि) । भूमिः (भूमि) । पङ्क्तिः (पंक्ति) । औषधिः (दवा) । श्रेणिः (कक्षा) । प्रीतिः (प्रेम) । अनुरक्तिः (अनुराग) ।

[illegible] (तकति) हंसना । णट—नृतौ (नटति) नाचना । शठ—कैतवे (शठति) कपट करना । गद—व्यक्तायां वाचि (गदति) बोलना । णद—अव्यक्ते शब्दे (नदति) अव्यक्त शब्द करना । रद—विलेखने (रदति) खोदना, उखाडना । चल—कम्पने (चलति) कम्पित होना । ज्वल—दीप्तौ (ज्वलति) जलना ।

अव्यय—अलं (बस) । किं (क्या) । न (नहीं) । च (और) । पुनः (फिर) । एकदा (एक दिन) ।

सीता और नदी शब्दों के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट १ संख्या १७, १९) स्त्रीलिंग में आप् अन्तवाले शब्द सीता की तरह और ईकारान्त शब्द नदी की तरह चलते हैं ।

पठ धातु के रूप याद करो । देखें (परिशिष्ट २ संख्या १५) तक से लेकर ज्वल तक के रूप पठ धातु की तरह चलते हैं ।

लिंगबोध

संस्कृत में तीन लिंग होते हैं—पुरुषलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग । जिस प्रकार विभक्ति और वचन के बिना नाम का प्रयोग नहीं होता उसी प्रकार लिंग के बिना भी उसका प्रयोग नहीं होता । इसलिए लिंग का ज्ञान भी आवश्यक है । हिन्दी में पुरुषवाची शब्द पुल्लिग और स्त्रीवाची [illegible] है । कई शब्द केवल पुल्लिग होते हैं, कई शब्द केवल स्त्रीलिंग और कई शब्द केवल नपुंसकलिंग होते हैं । कई शब्द त्रिलिंगी भी होते हैं । प्रस्तुत पाठ में पुल्लिग और स्त्रीलिंग शब्दों के पहचान के नियम बताए जाएंगें । इससे अगले पाठ में नपुंसक और त्रिलिंगी शब्दो के पहचान के नियम बताए जाएंगे ।

नियम ४९—जिन शब्दों के उपधा में क, ट, ण, थ, प, भ, म, य, र, ष, स हो वे पुल्लिग होते हैं।

क—आनकः—दुंदुभिः। ट-नटः—नट।

ण—गुणः—गुण। थ—निशीथः—आधीरात।

प—क्षपः—लताओं का समूह। भ—दर्भः—दूब।

म—संग्रामः—युद्ध। य—भागधेयः—हिस्सेदार।

र—निर्दरः—गुफा। ष – गवाक्षः—झरोखा।

स—कूर्पासः—चोला।

नियम ५०—जिन शब्दों के अन्त में स्, न्, उ और अन्त शब्द हों वे शब्द पुल्लिग होते हैं।

स्—चंद्रमस्—(चंद्रमा)। न्—ग्रावन्=(पत्थर)। उ—मन्तुः—(अपराध)। अन्त—पर्यन्त=(अवसान)।

स्त्रीलिंग

नियम ५१—मातृवाची नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—हस्तिनी=हथिनी। अश्वा=घोडी। मत्सी=मच्छली।

नियम ५२—तिथिवाची, नदीवाची, बुद्धिवाची, पृथ्वीवाची, लक्ष्मीवाची नाम स्त्रीलिंगी होते हैं। जैसे—

तिथिवाची—प्रतिपदा (एकम), पूर्णिमा (पूनम), अमावस्या (अमावस)।

नदीवाची—निम्नगा, सरित्, तटिनी, कूलंकषा।

बुद्धिवाची—मनीषा, बुद्धिः, मतिः, धिषणा।

पृथ्वीवाची—वसुधा, उर्वी, वसुंधरा, रत्नगर्भा।

लक्ष्मीवाची—रमा, कमला, इन्दिरा।

नियम ५३—प्राणियों के अपने अंगवाची इकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

जैसे—गोधिः (ललाट), कटिः (कमर), पालिः (कान की पाल)।

नियम ५४—तल् प्रत्यायान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, तल् में ल् इत् जाता है। स्त्रीलिंग होने के कारण आप् प्रत्यय आता है जिसमें 'आ' शेष रहता है। त और आ मिलकर ता बन जाता है। जैसे—जनता, सुंदरता, मधुरता, साधुता इत्यादि।

कुछ स्त्रीवाची शब्द पुल्लिग भी होते हैं। जैसे—दारा।

संधिविचार

नियम ५५—(मोनुस्वारयमौ हसे सवर्णौ १।३।१८) पद के अन्त में मकार हो उससे परे हस हो तो मकार को अनुस्वार और यम दोनों हो जाते

हैं। आगे जो हस हो उसका सवर्ण यम होता है। त्वं करोषि, त्वङ्करोषि। त्वं चरसि, त्वञ्चरसि। त्वं टीकसे, त्वण्टीकसे। त्वं तरसि, त्वन्तरसि। त्वं पचसि, त्वम्पचसि। अहंयुः अहय्युंः, त्वं लोकः त्वल्लोकः। संवत्सरः सँव्वत्सरः।

नियम ५६—(म्नां झपे ञमः सवर्णोऽपदान्ते १।३।३४) अपदान्त में मकार और नकार हो, आगे झप हो तो उनको (म, न् को) झप का सवर्णिक ञम हो जाता है, सब कार्य करने के बाद। गन्ता, शङ्किता, अञ्चिता, कुण्ठिता, नन्दिता, कम्पिता।

नियम ५७—(हशसेऽनुस्वारः १।३।३५) अपदान्त में मकार और नकार हो, सामने हकार और शस हो तो मकार, नकार को सब कार्य करने के बाद अनुस्वार हो जाता है। स्वनड्वांहि, दंशः, यशांसि, पुंसि, पयांसि।

नियम ५८—(नोऽप्रशानः सक् छतेऽमपरेऽनुनासिकश्च वा १।३।१३) प्रशान् शब्द को छोड़कर न् अन्तवाले शब्दों को सक् का आगम हो जाता है छत परे हो और उससे आगे अम प्रत्याहार हो तो। न् का अनुनासिक और सानुनासिक हो जाता है। जैसे—भवान्+तनोति=भवाँस्तनोति, भवांस्तनोति। भवाँस्छादयति, भवांस्छादयति। भवाँष्टीकते, भवांष्टीकते।

प्रयोगवाक्य

तस्य गृहे गौरस्ति। ग्लौः स्वच्छोऽस्ति। कटं कः करोति? सूदः समये भोजनं पाचयति। भूपस्य कोषे प्रचुरं धनं अस्ति। तन्तुवायः कुत्र अस्ति? अहं संस्कृतं पठामि। बालिका तकति। नार्यः नटन्ति। शिशुः बहिर्गन्तुं हठति। वयं न शठामः। शीला त्वां किं अगदत्? शब्दाः नदन्ति। हिमाद्रिः वायुना न चलति। अग्निः ज्वलति।

संस्कृत में अनुवाद करो

इस गाय का मालिक कौन है? चन्द्रमा आकाश में है? इस चटाई का कर्ता रमेश है। रसोइया क्या करता है? राजा का खजाना समृद्ध है। जुलाहे ने यह क्या किया? दुकानदार को नम्र होना चाहिए। कुली उसका भार ले जाता है। शिकारी अभी तक क्यों नहीं आया? पत्थर में भगवान् नहीं है। उसका पैसा कौन ले गया? मच्छरों का यहां क्या काम है? तुम क्या पढ़ते हो? शीला क्यों नाचती थी? द्रौपदी क्यों हंसी? रमेश क्यों हठ करता है? जो सरल होता है वह माया नहीं करता। बहिन ने क्या कहा? दादी क्यों कांपी? कैकयी को मंथरा ने क्या कहा?

अभ्यास

१. स्त्रीलिंग शब्दों की क्या पहचान है? नियम ५१, ५२ को स्पष्ट करो।

२. तल् प्रत्यय के तीन रूप लिखें ।

३. नीचे लिखें शब्दों के लिंग बताओ और साथ में नियम भी ।
आनक, कमला, गर्भ, संग्राम, गवाक्ष, चंद्रमस्, अश्वा, दृष्टान्त, निम्नगा, मति, गोधि, उर्वी ।

४. संधि करो—
नियमान्+च । विशिष्टान्+च । शास्त्रादीन्+च । कान्+च ।

५. निम्मलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
चटाई, रसोइया, दूकानदार, कुली, शिकारी, पत्थर, मच्छर, कली ।

६. मरुत्, आत्मन्, राजन् और युवन् शब्दों के रूप लिखो ।

पाठ १३ : लिंगबोध (२)

शब्दसंग्रह

स्कन्धावारः (छावनी) । राजपुरुषः (पुलिस) । कासारः (तालाब) । कर्दमः (कीचड़) । कापटिकः (बेईमान) । अनिलः (हवा) । चटकः (चिड़िया) । धुरः (गाडी का धुरा, जुवा) । भस्त्रः (धमनी) । कृष्णपक्षः (कृष्णपक्ष) । कालायसं (लोहा) । रत्नं (रत्न) । गुल्मं (पुलिसचौकी) । ओदनं (चावल) । पुष्पं (फूल) । सलिलं (जल) । पद्मं (कमल) ।

धातु—लप, जल्प—व्यक्तायां वाचि (लपति, जल्पति) बोलना । **जप—मानसे च** (जपति) जाप करना । **चर—भक्षणे च, चाद्गतौ** (चरति) **खाना और** जाना । दल—विशरणे (दलति) नष्ट करना । फल—निष्पत्तौ (फलति) उत्पन्न होना । रक्ष—पालने (रक्षति) रक्षा करना । मह—पूजायां (महति) पूजा करना । वज, व्रज—गतौ (वजति, व्रजति) जाना । अज—**क्षेपणे च, चाद् गतौ** (अजति) फेंकना और जाना ।

अव्यय—सर्वदा (हमेशा) । यदा (जब) । तदा (तब) । इतः (यहां से) । अतः (इसलिए) ।

रत्न शब्द के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट १ संख्या २५)

अकारान्त नपुंसक लिंग के शब्द रत्न की तरह चलते हैं ।

भवत्, महत् और हसत् शब्दों को याद करो । (देखे परिशिष्ट १ संख्या १३, ५४, ५५)

अज धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ५१) लप से लेकर व्रज तक के रूप पठ धातु की तरह चलते हैं । वज-व्रज के रूप णबादि प्रत्ययों में पठ से भिन्न चलते हैं । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ५२, ५३)

नियम

नियम ५९—न, त, ल, ये जिनकी उपधा में होते हैं वे शब्द नपुंसकलिंगी होते हैं । जैसे—अजिन (अजिनम्) मृग की चमड़ी । चक्रवाल (चक्रवालम्) समूह । अद्भुत (अद्भुतम्) आश्चर्य ।

नियम ६०—स्तु, संयुक्त त और र जिनके अन्त में होते हैं वे शब्द नपुंसकलिंगी होते हैं । जैसे—वस्तु (वस्तु) पदार्थ । अग्र (अग्रम्) आगे । गोत्र (गोत्रम्) नाम । शुक्र (शुक्रम्) वीर्य । श्मश्रु (श्मश्रु) दाढ़ी । लक्ष्य (लक्ष्यम्) लक्ष्य ।

निमय ६१—द्विस्वर वाले सकारान्त और मन् प्रत्यय जिनके अन्त में

हों वे शब्द नपुंसक होते हैं जैसे—रोचिस् (रोचिः) किरण। यशस् (यशः) यश। शर्मन् (शर्म) सुख। वर्मन् (वर्म) कवच। हेमन् (हेम) स्वर्ण। दामन् (दाम) माला। पामन् (पाम) खुजली। वर्त्मन् (वर्त्म) मार्ग। धामन् (धाम तेज। वर्ष्मन् (वर्ष्म) शरीर।

नियम ६२— त्व और ट्यण् प्रत्ययान्त शब्द भी नपुंसकलिंगी होते हैं। ट्यण् प्रत्यय में आदि स्वर की वृद्धि और शब्द के अन्त में अकार या इकार का लोप होकर 'य' मिल जाता है। जैसे—मधुरत्व (मधुरत्वम्), गंभीरत्व (गंभीरत्वम्), माधुर्य (माधुर्यम्) गाम्भीर्य (गाम्भीर्यम्)।

कुछ स्त्रीवाची शब्द नपुंसकलिंगी भी होते हैं। जैसे—कलत्र (कलत्रम्)।

त्रिलिङ्गी

नियम ६३—**गुणवाचीशब्द**—काला, पीला, नीला, सफेद, अच्छा बुरा, सुन्दर, मधुर आदि गुणवाची शब्द त्रिलिंगी होते हैं। जैसे—कृष्णः पक्षः। कृष्णा गौः। कृष्णं शरीरम्

नियम ६४—**संख्यावाचीशब्द**—एक, दो, तीन, चार—ये त्रिलिंगी होते हैं। एको मुनिः। एका साध्वी। एकम् रत्नम्।

नियम ६५—**परिमाणवाचीशब्द**—थोड़ा, अधिक, लम्बा, चौड़ा, छोटा, बड़ा आदि परिमाणवाची शब्द त्रिलिंगी होते हैं।

अल्पः आहारः। अल्पा भक्तिः। अल्पं सामर्थ्यम्।

नियम ६६—सर्व, विश्व, उभ, उभय, त्यद्, तद्, यद्, अदस्, इदम्, आदि सर्वादिगण के सब शब्द त्रिलिंगी होते हैं। सर्वे लोकाः। सर्वा शक्तिः। सर्वं जगत्)

संधिविचार

नियम ६७—*(अतोत्युः १।३।४९) (हबे १।३।५०)—अकार से परे* विसर्ग को उकार हो जाता है यदि अकार या हब प्रत्याहार परे हो तो। जैसे—कः+अत्र=कोऽत्र। जिनः+अर्च्यः=जिनोऽर्च्यः। जिनः+वन्द्यः=जिनोवन्द्यः। धर्मः+जयति=धर्मोजयति।

नियम ६८—(विसर्गस्य सश्छते १।३।४४) (वाशसे १।३।४५) विसर्ग को सकार आदेश हो जाता है छत प्रत्याहार परे हो तो। शस प्रत्याहार परे होने पर विसर्ग को 'स' विकल्प से होता है। जैसे—कः+तरति=कस्तरति। कः+चरति=कश्चरति। कः+टीकते=कष्टीकते। शुद्धः+साधुः=शुद्धस्साधुः, शुद्धः साधुः।

नियम ६९—(अवर्णभोभगोअघोभ्यो लोपः १।३।५१) अवर्ण, भोस्, भगोस् और अघोस् से परे विसर्ग का लोप हो जाता है हब प्रत्याहार परे होने पर। जैसे—श्रमणाः+गच्छन्ति=श्रमणा गच्छन्ति। भोः+गच्छसि=भो

गच्छसि । भगोः+हससि=भगो हससि । अघोः+यासि=अघोयासि ।

प्रयोगवाक्य

स्कन्धावारः इतः कियत् दूरमस्ति । राजपुरुषाः नगरे किं कुर्वन्ति ? अस्माकं ग्रामे एकोऽपि कासारः नास्ति । कर्दमे गजोऽस्ति । कापटिकानां विश्वासं मा कुरु । प्रातः शीतः अनिलः चलति । युधिष्ठरः अर्जुनं जगाद । सर्वदा जिनं जप । गौः वने चरति । पापानि दल । क्षेत्रे किं फलति । मां रक्ष । जिनं मह । त्वं वज । स व्रजति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

छावनी में कौन है ? पुलिस क्या करती है ? तालाब में पानी नहीं है । कीचड़ में पैर मत रखो । वह बेईमान है । अभी पूर्व में हवा चलती है । चिड़िया वृक्ष पर बैठी है । गाडी की धुरा कहां है ? लोहार धमनी से लोहा धमता है । कृष्णपक्ष में चन्द्रमा नहीं बढ़ता है । पुलिस चौकी कहां है ? ये रत्न किनके हैं ? मुझे चावल अच्छे नहीं लगते । फूल में सुगंध नहीं है । आचार्यश्री ने तुम्हें क्या कहा ? मुनि जाप करता है । गाय क्या खाती है ? जो पापों को नष्ट करता है, वह महान् है । वृक्ष पर फल फूलते हैं । माता पुत्र की रक्षा करती है । मोहन गांव जाएगा । मैं सदा जिनेश्वर देव की भाव पूजा करता हूं ।

अभ्यास

१. किस उपधावाले शब्द नपुंसकलिंग में होते हैं ?
२. द्विस्वर वाले और मन् प्रत्यय अंत वाले कौन से शब्द हैं ?
३. त्रिलिंग शब्दों के क्या नियम हैं ?
४. कौनसा शब्द स्त्रीवाची होने पर भी नपुंसकलिंग में प्रयुक्त होता है ।
५. निम्नलिखित शब्दों में कौन से शब्द किस लिंग के हैं ?
   अजिन, वस्तु, त्रि, श्मश्रु, दामन्, माधुर्य, श्वेत, विस्तृत ।
६. सन्धि करो—
   लग्नाः+तम् । कृपाणपाणिः+तनोति । कः+अयं । यतः+अचिन्तितः निर्णीताः+ते । कः+साधकः । जिनः+तरति । गावः+चरन्ति । जिनाः+गच्छन्ति ।
७. संधि विच्छेद करो ।
   सर्वज्ञोयं, शुद्धस्सम्यक्त्वी, रामस्तरीतुं, भगोव्रजसि, अधोयासि ।
८. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
   पुलिस, कीचड़, चिड़िया, धमनी, बेईमान, लोहा, पुलिस, चौकी, चावल ।
९. सीता और नदी शब्दों के रूप लिखो ।
१०. पठ धातु के सारे रूप लिखो ।

पाठ १४ : विशेषण और विशेष्य

शब्दसंग्रह

उन्मादः (पागलपन) । प्रतिश्यायः (जुकाम) । चिकित्सकः (वैद्य) । अनाचारः (अकरणीय) । पर्यंकः (पल्यंक) । प्रजा (प्राणी) । पथ्यं (हित-*कारी*) । *शर्करोदकं* (*शर्बत*) । उपवनं (बगीचा) । कृशः (दुर्बल) । तीक्ष्णः (तेज) । मन्दः (मन्द) । हरितः (हरा) । कृष्णः (काला) । श्वेतः (सफेद) । नीलः (नील) । रक्तः (लाल) । पीतः (पीला) । सज्जनः (सज्जन) । दुर्जनः (दुष्ट) । दक्षः (चतुर) । सुंदरः (सुंदर) ।

परिमाण वाचक शब्द - गुञ्जा (रत्ती) । कणमा (छटांक) द्विकणमे (अधपाव) । माषकः (माशा) । तोलकः (तोला) । कणमाचतुष्टयं (पाव भर) । अर्धसेरकं (आधा सेर) । सेरकं (सेरभर) । घटिका (घड़ी, पंसेरी) । धारा (दश सेर) । अर्धमणः (२० सेर) । मणः (मण) ।

धातु—वाछि - इच्छायाम् (वाञ्छति) इच्छा करना । तकि—कृच्छ्र-जीवने (तङ्कति) कष्ट साध्य जीवन जीना । खजि—गुति वैकल्ये (खञ्जति) लंगडाना । गुजि—अव्यक्ते शब्दे (गुञ्जति) गूंजना । लुटि—स्तेये (लुण्टति) लूटना । णिदि—कुत्सायां (निन्दति) निंदा करना । चदि—दीप्त्याह्लादनयोः (चन्दति) दीप्ति और आनंद होना । टुनदि—समृद्धौ (नन्दति) समृद्ध होना । क्रदि, क्लदि—रोदनाह्वानयोः (क्रन्दति, क्लन्दति) रोना और बुलाना । चुबि—वक्त्रसंयोगे (चुम्बति) चुम्बन करना । काक्षि—कांक्षायां (काङ्क्षति) इच्छा करना ।

दधि, वारि शब्द याद करो । अक्षि, अस्थि के रूप दधि की तरह चलते हैं । (देखें परिशिष्ट १ संख्या २६,२७) ।

वाछि धातु के रूप याद करो । तकि से लेकर काक्षि तक वाछि की तरह रूप चलेंगे । (देखें परिशिष्ट २ संख्या १६) ।

विशेष्य, विशेषण

जो शब्द अर्थवान् हो उसे नाम कहते हैं । जैसे—महावीरः, बालकः, गौः, वृक्षः, ग्रामः, पुस्तकम् ।

जिस नाम के पीछे विशेषण जुड़ जाता है तब वह नाम विशेष्य बन जाता है ।

विशेषण द्वारा जिसकी विशेषता जानी जाती है उसे विशेष्य कहते हैं । जैसे—दुष्टो मनुष्यः—इसमें मनुष्य विशेष्य है और दुष्ट विशेषण ।

नाम और क्रिया की अवस्था में भेद दिखलाने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। विशेषण के दो भेद हैं—नामविशेषण और क्रियाविशेषण।

जिस शब्द से नाम की कोई विशेषता जानी जाती है उसे नामविशेषण कहते हैं। जैसे—दुष्टो मनुष्यः दुष्टतां न जहाति। इस वाक्य में दुष्ट शब्द मनुष्य का विशेषण है। यह उस मनुष्य की विशेषता यानि एक अवस्था बतलाता है—वह मनुष्य दुष्ट है। सब मनुष्यों जैसा नहीं है, इसका बोध कराता है।

नामविशेषण के मुख्यतया चार भेद हैं—सार्वनामिक, गुणवाचक, संख्यावाचक और परिमाणवाचक।

(१) **सार्वनामिक विशेषण**—संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग होता है उन्हें सर्वनाम कहते हैं। संस्कृत में सर्वनाम शब्द निम्न है—तद्, एतद्, इदम्, युष्मद्, अस्मद् इत्यादि। जहां सर्वनाम विशेषण होता है उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे—अहं रामः।

(२) **गुणवाचक विशेषण**—जहां गुणवाचक शब्द विशेषण बनते हों उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—नवीनं पुस्तकम्। विस्तृतं स्थानम्। चतुष्कोणः पर्वतः। दुर्बलं शरीरम्। सज्जनः पुरुषः।

(३) **संख्यावाचक विशेषण**—जहां संख्यावाचक शब्द विशेषण बनता हो उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—द्वादशः आगमः।

(४) **परिमाणवाचक विशेषण**—जहां परिमाणवाचक शब्द विशेषण बनता हो उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—अल्पं दुग्धम्।

क्रियाविशेषण—जिस शब्द से क्रिया की विशेषता जानी जाती है उसे क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे—मन्दं गच्छति—इस वाक्य में 'मन्द' शब्द चलने की विशेषता बतलाया है अर्थात् हमें इस बात का बोध कराता है कि चलने की अवस्था कैसी है। क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति, नपुंसकलिंग और एकवचन होता है। जैसे—उच्चैर्जल्पति। मृदु पचति। क्रूरं पश्यति।

संधिविचार

नियम ७०—(सोऽह्न : २।१।१०५) पद के अंत में अहन् शब्द के अंत को सकार आदेश हो जाता है।

नियम ७१—(स्रोर्विसर्गः २।१।१०३) पद के अंत में सकार और रेफ को विसर्ग आदेश हो जाता है। अहो राजते, अहो रूपम्।

नियम ७२—(रोऽरस्यादि भे २।१।१०६) पदान्त में अहन् शब्द हो तो उसके अंत को रकार आदेश हो जाता है, आगे रकार और स्यादिप्रत्ययों में भ आदि प्रत्ययों को छोड़कर।

नियम ७३—(रः १।३।५६) रकार का विसर्ग बना हो वह वापस रकार हो जाता है यदि अब परे हो तो। अहरहः, अहर्गणः, अहर्भवः, प्रातरत्र,

अन्तर्गतः ।

नियम ७४—(नामिनो रोऽबे १।३।५५) नामि (अवर्ण को छोड़) स्वरों से परे विसर्ग को रकार हो जाता है अब प्रत्याहार परे हो तो । मुनिः+अत्र=मुनिरत्र । साधुः+आयाति=साधुरायाति । बुद्धिरियम् । साधुरयं ।

नियम ७५—(रोरिलोपोदीर्घश्चादिदुतः १।३।३६) रकार से आगे रकार हो तो पूर्व रकार का लोप हो जाता है और उससे पूर्व स्वर अ, इ, उ हो तो उन्हें दीर्घ हो जाता है । निर्+रक्तं=नीरक्तं । दुर्+रमणीयं=दूरमणीयं । पुनर्+रमते=पुनारमते । प्रातर्+रौति=प्रातारौति ।

प्रयोगवाक्य

तस्य उन्मादं पश्य । प्रतिश्याये शीतलं पेयं न पेयं । कुशलचिकित्सकानां निदानं महत्त्वपूर्णं विद्यते । कृष्णा धेनुः मधुरं दुग्धं ददाति । इदं वस्त्रं श्वेतं कथं जातम् ? कृशो बालः बुद्धिमानस्ति पाठशालायां । वृक्षेऽस्मिन् कियन्ति पत्राणि हरितानि संति ? त्वं मंदं वद । अनाचारः अनाचरणीयोऽस्ति । अहोरूपं अहो ध्वनिः कस्याः कथायाः सारोऽस्ति ? देवेन्द्रः पुस्तकं वाञ्छति । दस्यवः जनान् आतङ्कन्ति । बालः खञ्जति । गुरोः शब्दाः अद्यापि गुञ्जन्ति । चौरः धनिकान् लुण्टति । गुरुं मा निन्द्याः । भूपः नंदति । शिशुः क्रन्दति क्लन्दति वा । जननी पुत्रं चुम्बति । वयं पुस्तकं कांक्षामः ।

संस्कृत में अनुवाद करो

यह कुशल चिकित्सक है । यह पल्यंक काला है । शर्बत मीठा है । सदा हितकारी भोजन करो । मोहन का बगीचा सुंदर है । जैन मुनि सफेद वस्त्र धारण करते हैं । नीली गाय को देखो । मुझे लाल रंग दो । सज्जन पुरुष की संगति करो । दुष्ट व्यक्ति से दूर रहो । मामी कहां गिरी ? यदि तुम झुक जाते तो तुम्हारा कार्य हो जाता । काली गाय खेत में चर रही है । उसने मधुर पेय पीया था । प्रतिदिन पाव भर दूध पीना चाहिए । मोहन को दश सेर चावल दो । मुझे एक तोला घी दो । यह एक छटांक दूध है । तुम आधा मन पानी से नहाते हो । तुम वहां से पांच घड़ी पानी ले आओ । मण भर दूध कहां से आएगा ? महेंद्र धीरे-धीरे बोले । मोहन क्या चाहता है ? गुफा में शब्द गूंजते है । बालिका क्यों लंगडाती है ? पथिक को किसने लूंटा ? किसी की निंदा मत करो । राजा समृद्ध है । तुम क्यों रोते थे ? मां ने पुत्र का चुम्बन कब लिया ।

अभ्यास

१. विशेषण और विशेष्य किसे कहते हैं ?
२. विशेषण के भेद और प्रभेद कितने हैं ?
३. क्रियाविशेषण से आप क्या समझते हैं ?

४. नियम पूर्वक संधि विच्छेद करो —
अहर्भुङ्क्ते, अहरघ्रीतं, अहर्ददाति, साधुरात्मवान्, मतिरेषा, पटूराजा, उच्चैरौति, पुनारक्षणीयं, प्रातराज्यं, प्रातर्गतः,
शान्तिरेव, साधनैरितरे, शांतेरुपायाः, विरतिर्द्वितीयम् ।

५. संधि करो —
बहिः+इति, उच्चैः+उच्चैः, सर्वैः+अपि, अन्तर्+राष्ट्रीयः ।

६. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
पागलपन, जुकाम, शर्बत, पल्यंक, पीला, बगीचा, अधपाव, माशा, छटांक, आधा सेर, मण ।

७. रत्न, महत्, भवत् और हसत् शब्दों के रूप लिखो ।

८. अज, वज, व्रज धातु के रूप लिखो ।

पाठ १५ : संख्यावाची शब्द

संख्यावाची शब्द एक से लेकर दस तक स्वतंत्र चलते हैं। उसके आगे ग्यारह से निन्नानवें तक यौगिक शब्द हैं। दो संख्याओं के योग से संख्यावाची शब्द का बोध होता है।

(क) एक शब्द अकारान्त है, द्वि और त्रि शब्द इकारान्त हैं। चतुर् शब्द रकारान्त और षष् शब्द षकारान्त है। पंच, सप्त, अष्ट, दस शब्द नकारान्त है। दस से लेकर अठारह तक के शब्दों के अन्त में दशन् होने से दस की तरह रूप चलते हैं। एकोनविंशति से लेकर नवविंशति तक के शब्द विंशति की तरह चलते हैं। तीस से लेकर उनसठ तक के शब्द त्रिंशत् की तरह चलते हैं। एकोनषष्टि से लेकर नवनवति (९९) तक के शब्द ह्रस्व इकारान्त हैं।

(ख) तीन से लेकर अठारह तक की संख्या बहुवचन में चलती है। एकोनविंशति से लेकर नवविंशति तक के सारे शब्द एक वचनान्त स्त्रीलिंग हैं। जहां इन संख्याओं में कई वर्गों का निरूपण करते हैं वहां इनमें बहुवचन भी होता है। जैसे—धर्मशास्त्रस्य विंशतयः पुस्तकानि संति (धर्मशास्त्र की वीसों पुस्तके हैं। एक से लेकर चार तक के शब्द तीनों लिंगों में व्यवहृत होते हैं। पांच से अठारह तक की संख्या के शब्द तीनों लिंगों में एक समान चलते हैं। विंशति, सप्तति, अशीति, नवति शब्द तथा ये जिनके अन्त में हों उनके रूप बुद्धि की तरह चलते हैं। त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् ये शब्द तथा ये जिनके अन्त में हों उनके रूप स्त्रीलिंग में सरित् की तरह चलते हैं। षष्टि का रूप स्त्रीलिंग में बुद्धि की तरह चलता है।

(ग) शतं, सहस्रं, अयुतं, नियुतं, प्रयुतं आदि शब्द नित्य एकवचनान्त नपुंसकलिंग शब्द है। इनके रूप नपुंसक के रत्न की तरह चलते हैं।

(घ) सौ से ऊपर की संख्या के लिए बीच में अधिक शब्द जोड़ा जाता है। जैसे—एकाधिकं शतम्। द्व्यधिकं शतम्। त्र्यधिकं शतम्।

(ङ) दो सौ की संख्या और तीन सौ की संख्या को दो प्रकार से कह सकते हैं। जैसे—द्विशती, शतद्वयम्। त्रिशती, शतत्रयम्। चार सौ से लेकर नौ सौ तक—चतुःशती, पञ्चशती, षट्शती, सप्तशती, अष्टशती, नवशती।

(च) करोड़ (कोटि), दश कोटयः, अर्बुदं (अरब), खर्वं (खरब), नीलं (नील), पद्मं (पद्म), शंखं (शंख), महाशंखं (महाशंख), संख्येयं (संख्येय), असंख्येयं (असंख्येय), अनन्तं (अनन्त)।

संख्यावाची शब्दः

१. एक
२. द्वि
३. त्रि
४. चत्वारः
५. पञ्च
६. षट्
७. सप्त
८. अष्ट
९. नव
१०. दश
११. एकादश
१२. द्वादश
१३. त्रयोदश
१४. चतुर्दश
१५. पञ्चदश
१६. षोडश
१७. सप्तदश
१८. अष्टादश
१९. एकोनविंशति
२०. विंशतिः
२१. एकविंशतिः
२२. द्वाविंशतिः
२३. त्रयोविंशति
२४. चतुर्विंशतिः
२५. पञ्चविंशतिः
२६. षड्विंशतिः
२७. सप्तविंशतिः
२८. अष्टाविंशतिः
२९. एकोनत्रिंशतिः
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. नवत्रिंशत् एकोनचत्वारिंशत्,
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत्
४३. त्रयश्चत्वारिंशत्
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पंचचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
४९. नवचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्
५०. पञ्चाशत्
५१. एकपञ्चाशत्
५२. द्विपंचाशत्, द्वापञ्चाशत्
५३. त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चाशत्
५४. चतुःपञ्चाशत्
५५. पञ्चपञ्चाशत्
५६. षट्पञ्चाशत्
५७. सप्तपञ्चाशत्
५८. अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्
५९. नवपञ्चाशत्, एकोनषष्टिः
६०. षष्टिः
६१. एकषष्टिः
६२. द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
६३. त्रिषष्टिः, त्रयःषष्टिः
६४. चतुःषष्टिः
६५. पञ्चषष्टिः
६६. षट्षष्टिः
६७. सप्तषष्टिः
६८. अष्टषष्टिः अष्टाषष्टिः

६९. नवषष्टिः एकोनसप्ततिः
७०. सप्ततिः
७१. एकसप्ततिः
७२. द्विसप्ततिः, द्वासप्ततिः
७३. त्रिसप्ततिः, त्रयःसप्ततिः
७४. चतुःसप्ततिः
७५. पञ्चसप्ततिः
७६. षट्सप्ततिः
७७. सप्तसप्ततिः
७८. अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः
७९. नवसप्ततिः एकोनाशीतिः
८०. अशीतिः
८१. एकाशीतिः
८२. द्वयशीतिः
८३. त्र्यशीतिः
८४. चतुरशीतिः
८५. पञ्चाशीतिः
८६. षडशीतिः
८७. सप्ताशीतिः
८८. अष्टाशीतिः
८९ नवाशीतिः, एकोननवतिः
९०. नवतिः
९१. एकनवतिः
९२. द्विनवतिः, द्वानवतिः
९३. त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
९४. चतुर्णवतिः
९५. पञ्चनवतिः
९६. षण्णवतिः
९७. सप्तनवतिः
९८. अष्टनवतिः, अष्टानवतिः
९९. नवनवतिः, एकोनशतम्
१००. शतम्

एक, द्वि, त्रि और चतुर् शब्दों के रूप तीनों लिंगों के याद करो
(देखें परिशिष्ट १ संख्या ३९, ४०, ६९, ७०)

प्रयोगवाक्य

मम पंच भ्रातरः सन्ति । ज्येष्टभ्रातुः चतस्रः पुत्र्यः सन्ति । मम कनिष्ठभ्रातुः एकः पुत्रः तिस्रः पुत्र्यश्च सन्ति । भगवतः महावीरस्य सप्त गणा आसन् । आचार्यवराः अत्र एकादशवादनसमये आगमन् । विंशतिः जना एतत् कार्यं कुर्युः । त्रिंशत् गावः अनेन मार्गेण अगमन् । चत्वारिंशत् छात्रा अत्र अपठन् । अस्माकं विद्यालये अशीतिः बालिकाः पठन्ति । पितामहः मह्यं एकाधिकशतं रुप्यं ददौ । मोहनस्य पार्श्वे कोटि धनं अस्ति । अस्मिन् देशे अब्जं पुरुषा निवसन्ति । खर्वं, नीलं, पद्मं, शंखं च धनमपि तृप्तिं न ददाति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

मोहन के एक लड़का और दो लड़की हैं । उसके तीन भाई और चार बहिनें हैं । अध्यापक के पास पांच छात्र और छह छात्राएँ पढ़ती हैं । मेरे सात भुआएं हैं । तुम्हारे आठ मामा हैं । मेरे दादा के पास नव गायें और दस घोड़े हैं । बीस आदमी खेत जाते हैं । तीस मनुष्य यहां कार्य करते हैं । चालीस स्त्रियां गाना गाती हैं । पचास छात्राएं परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई । साठ छात्र परीक्षा में फेल हो गये । सत्तर महिलाएं यहां से गई थी । अस्सी साधु यहां

बैठे हैं। नब्बे आदमी आज यहां आये थे। इस विद्यालय में सौ बालक और दो सौ बालिकायें पढ़ चुकी हैं। भगवान महावीर के चौदह हजार साधु थे। दो सौ करोड़ रूपये भी एक वर्ष में खर्च करना सरकार के लिए कठिन नहीं है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

तव एकः भगिनी अस्ति। मम तिस्रः पितृव्याः सन्ति। चतस्रः पुरुषाः कुत्र गमिष्यन्ति। पंच छात्रः मम पार्श्वे अपठन्। अस्मिन् वृक्षे दश विहगः अतिष्ठन्। विंशतिः स्त्री कूपे जग्मुः। अस्मिन् कार्ये पंचशतपुरुषाः रताः सन्ति।

२. विंशति से आगे की संख्या और सौ से पहले के लिए कौन-कौन से नियम हैं?

३. कौन सी संख्या के दो-दो रूप बनते हैं?

४. संख्यावाची शब्दों में कौन से शब्द स्त्रीलिंग है और कौन से पुल्लिंग और कौन से त्रिलिंगी।

५. नीचे लिखी संख्या के लिए संस्कृत में क्या शब्द हैं।

तेरह, नियासी, पचाणव, पचपन, पद्म, दो सौ, तीन सौ, पैंतीस, अठारह, छव, पैंसठ, सत्तावीस।

६. दधि और वारि शब्दों के रूप लिखो।

७. वाछि धातु के रूप लिखो।

पाठ १६ : स्त्री प्रत्यय (१)

शब्दसंग्रह

खट्वा (खाट) । अजा (बकरी) । एडका (भेड) । अश्वा (घोडी) । कोकिला (कोयल) । चटका (चिडिया) । मूषिका (चूहिया) । बाला (लड़की) । वत्सा (बछडी) । सुपर्वा (देवता) । महिषी (रानी, भैंस) । मही (पृथ्वी) । रजनी (रात) । शुनी (कुतिया) । कौमुदी (चांदनी) । विदुषी (विद्वान् स्त्री) । प्राची (पूर्वदिशा) । प्रतीची (पश्चिमदिशा) । उदीची (उत्तरदिशा) । कुमारी (अविवाहित बालिका) ।

धातु—शुच—शोके (शोचति) शोक करना । कुच—उच्चैः शब्दे (कोचति) ऊंचे स्वर से शब्द करना । लुट—विलोटने (लोटति) लोटना । चुप—मंदगतौ (चोपति) धीरे-धीरे चलना । उषु, प्लुषु—दाहे (ओषति, प्लोषति) जलना । पुष—पुष्टौ (पोषति) पुष्ट करना । बुध—बोधने (बोधति) जानना । लुञ्च—अपनयने (लुञ्चति) दूर करना । बुक्क—भषणे (बुक्कति) भूंकना ।

लक्ष्मी, स्त्री और श्री शब्द के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट १ संख्या ६०,५८,५९)

शुच धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २, संख्या १७) कुच से पुष धातु तक के रूप शुच की तरह चलते हैं, उषु के रूप कुछ भिन्न चलते हैं (देखें परिशिष्ट २ संख्या ५४) । बुक्क के रूप लुञ्च की तरह ही चलते हैं। लुञ्च के रूप देखें (परिशिष्ट २ संख्या ५५) ।

स्त्रीप्रत्यय

पुल्लिग शब्दों को स्त्रीलिंग में परिवर्तित करने के लिए जो प्रत्यय लगाए जाते हैं उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहते हैं । वे चार हैं—आप्, ईप्, ऊङ् और ति । इनमें पिछले दो प्रत्यय बहुत ही कम काम में आते हैं । आप् और ईप् प्रत्यय ही अधिक लगते हैं । आप् का रूप कहीं पर काप् और डाप् के रूप में भी मिलता है । आप् और ईप् में प् इत् चला जाता है । आप्प्रत्ययान्त शब्द के रूप सीता की तरह और ईप्प्रत्ययान्त शब्द के रूप नदी की तरह चलते हैं। (ईप्यतः ८।४।७२) से ईप्प्रत्यय परे होने पर अकारान्त शब्द के 'अ' का लोप हो जाता है ।

नियम ७६ क—(आबतः स्त्रियाम् २।३।१) अकारान्त नाम से स्त्रीलिंग में आप् प्रत्यय होता है । खट्वा, सर्वा, या, सा ।

ख—(अजादेः २।३।२) अज आदि शब्दों से आप् प्रत्यय होता है। अजा, एडका, अश्वा, कोकिला, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, मंदा, ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मध्यमा, कन्या।

ग—(अतइदनित्काप्ययत्तद्क्षिपकादीनाम् २।३।९५) यत्, तत्, क्षिपका आदि शब्दों को छोड़कर अकारान्त नाम से इकार हो जाता है, काप् (क+आप्) प्रत्यय आगे हो तो। क प्रत्यय ऐसा हो जिसका अ इत् नहीं गया हो। कारिका, पाचिका, पाठिका, मुण्डिका।

नियम ७७—(ह्रस्वश्चाभाषितपुंस्कात् २।३।१०४) जो शब्द पुल्लिग में कहे गए हों उन्हें भाषितपुंस्क कहते हैं। अभाषितपुंस्क शब्द से परे आप् को इ और ह्रस्व विकल्प से होता है, अनित् काप् परे हो तो। गङ्गिका, गङ्गका, गङ्गाका। परमखट्विका, परमखट्वका, परमखट्वाका।

नियम ७८—(नृतोऽस्वस्रादेः २।३।७) नकारान्त और (स्वसृ, तिसृ, चतसृ, ननान्दृ, दुहितृ, यातृ, मातृ इन सात शब्दों को छोड़कर) ऋकारान्त शब्दों से ईप् प्रत्यय होता है। दण्डिनी, शुनी। कर्त्री, हर्त्री।

नियम ७९ क—(उदृदितोऽधातोः २।३।८) उकार और ऋकार इत् जाने वाली धातुओं को छोड़कर, उकार और ऋकार इत् जाने वाले प्रत्ययों के शब्द या अप्रत्ययों के शब्द से स्त्रीलिंग में ईप् प्रत्यय होता है। भवती, गोमती, विदुषी, पचन्ती, पठन्ती।

ख—(मनो डाब् वा २।३।४) मन् अंत वाले शब्दों से आप् प्रत्यय होता है। सीमा।

नियम ८०—(अनो बहुव्रीहेः २।३।५) बहुव्रीहि समास होने पर अन् अंत वाले शब्दों से डाप् प्रत्यय विकल्प से होता है। सुपर्वा।

नियम ८१—(उपधालोपिनो वा २।३।१४) बहुव्रीहिसमास होने पर अन् अंत वाले शब्दों की उपधा का लोप होने पर ईप् प्रत्यय विकल्प से होता है, आप् प्रत्यय भी। बहुराज्ञी। बहुराजा, बहुराजानौ, बहुराजानः। बहुराजा; बहुराजे, बहुराजाः।

नियम ८२—(अञ्चः २।३।९) अञ्चु उत्तरपद में हो तो ईप् प्रत्यय होता है। प्राची, प्रतीची।

नियम ८३—(मुख्यात् षिट्टिदणञ्नञ्स्नञ्ञेयेकणीकण्क्वरपः २।३।२०) ष् अनुबन्ध और ट् अनुबन्ध प्रत्ययान्त शब्द तथा अण्, अञ्, नञ्, स्नञ्, एय, एयण्, एयञ्, इकण्, ईकण्, क्वरप्—इन प्रत्यायन्त शब्दों से ईप् प्रत्यय होता है। षाक—वराकी, भिक्षाकी। चरट्—कुरुचरी, मद्रचरी। अण्—तपोऽस्या अस्तीति तापसी। अञ्—विदस्य अपत्यं स्त्री बैदी। नञ्—स्त्रैणी। स्नञ्—पौंस्नी। एयण्—वैनतेयी। एयञ्—शैलेयी। इकण्—अक्षिकी। ईकण्—शाक्तीकी, याष्टीकी। क्वरप्—सृत्वरी, जित्वरी।

प्रयोगवाक्य

भूपः सर्वाः भूमीः अधिकरोति। या बाला अत्र समागच्छत् सैव तत्रागमत्। मम एका ज्येष्ठा एका च कनिष्ठा भगिनी अस्ति। अस्य पुस्तकस्य कारिका पाठिका च का अस्ति? रोगं हर्त्री औषधिः का विद्यते? इमां कवितां कर्त्री बालिका सुन्दरी नास्ति। भ्रातः! त्वं मा शुच। गर्दभः लोटति। मोहनः चोपति। अग्निः तृणानि ओषति प्लोषति वा। दुग्धः बालस्य शरीरं पोषति। किं सोहनः प्राकृतं बोधति? मुनिः केशान् लुञ्चति।

संस्कृत में अनुवाद करो

खाट पर कौन सोया है? बकरी खेत में है। भेड कूंए पर है। घोडी सुन्दर है। कोयल मधुर गाती है। चिडिया वृक्ष पर बैठी है। बछडी गाय का दूध पीती है। देवता भी त्यागियों को नमस्कार करते हैं। सूर्य पूर्वदिशा में उगता है और पश्चिमदिशा में छिपता है। उत्तरदिशा की ओर सिर कर नहीं सोना चाहिए। तुम गाय का दूध पीते हो या भैंस का। मुनियों के लिए पृथ्वी सुन्दर शय्या है। रात में तुम कहां गए थे? कुमारी लड़कियां कहां खेलती हैं? कुतिया के कितने बच्चे हैं? चन्द्रमा की चांदनी सभी का मन हरती है। साध्वियों में कौन विदुषी है? तुम शोक क्यों करते हो? कुत्ता घर में ही लोटता है। चोर धीरे-धीरे चलता है। वन में आग जलती है। फलों का रस मनुष्यों को पोषण देता है। क्या तुम संस्कृत जानते हो? क्या तीर्थंकर लोच करते हैं?

अभ्यास

१ निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध, अशुद्ध बताओ—
एतासु मध्यमं कन्यं कथय। दण्डिनी कदा वनमव्रजत्। किं सा भवती स्वसा अस्ति? पुस्तकं पठन्तीं सा कदा अस्वपत्। इमा तापसी असुंदरा चकास्ति। मातुर्लि ज्ञापय साध्व्यौ तव गृहे भिक्षार्थमागमताम्।

२ निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग के रूप बताएं—
अज, मंद, अश्व, भवत्, विद्वस्, पचत्, पठत्, कारक, पाठक, मूषक, बाल, मंद, श्वन्, दण्डिन्।

३ बहुराजन् का स्त्रीलिंग में क्या रूप बनेगा?

४ शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के स्त्रीलिंग में किस नियम से क्या रूप बनता है?

५ नीचे लिखे शब्दों में किस नियम से और किस प्रत्यय से ईप् हुआ है—
कुरुचरी, भिक्षाकी, तापसी, स्त्रैणी, आक्षिकी, याष्टीकी, वराकी, वैनतेयी, शैलेयी, जित्वरी।

६ निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
घोडी, चूहिया, कोयल, कुतिया, भेड, बकरी, रात, भैंस, पूर्वदिशा।

७ एक, द्वि, त्रि और चतुर् शब्दों के तीनों लिंगों के रूप लिखो।

पाठ १७ : स्त्रीप्रत्यय (२)

शब्दसंग्रह

भवानी, गौरी, रुद्राणी, मृडानी, शर्वाणी (पार्वती)। शबली (कर्बुर वर्णवाली, चितकबरी)। गवयी (रोज—एक प्रकार का पशु जो गाय के समान होता है)। हयी (घोडी)। अनडुही (गाय)। मत्सी (मछली)। कुक्कुटी (मुर्गी)। मक्षिका (मक्खी। यूका (जूं)। शोणी (पीला और लाल वर्णवाली घोड़ी)। कमला (लक्ष्मी)। मातुली (मामी)। सिंही (शेरनी)। सर्पिणी (साँपिन)। मार्जारी (बिल्ली)। मणिपुच्छी (जिसकी पूंछ में मणि है)। सुनासिकी (जिसकी नाक अच्छी है)। कृशोदरी (जिसका पेट पतला है)। सपत्नी (सौत)। इन्द्राणी (इन्द्र की स्त्री)।

धातु—अर्ह—पूजायाम् (अर्हति) पूजा करना। अर्च—पूजायां (अर्चति) पूजा करना। तर्ज—भर्त्सने (तर्जति) भर्त्सना करना। गर्ज—शब्दे (गर्जति) शब्द करना। नर्द, गर्द—शब्दे (नर्दति, गर्दति) शब्द करना। तर्द—हिंसायां (तर्दति) हिंसा करना। कर्द—कुत्सिते शब्दे (कर्दति) खराब शब्द करना। खर्द—दशने (खर्दति) दंशना, काटना। चर्व—अदने (चर्वति) खाना। गर्व—दर्पे (गर्वति) गर्व करना।

धेनु, वधू, स्वसृ और मातृ शब्दों के रूप याद करो। (परिशिष्ट १ संख्या २०, ६१, ६२, ६३)

अर्ह और तर्ज धातु के रूप याद करो (परिशिष्ट २ संख्या ५६, ५७) अर्च के रूप अर्ह की तरह चलेंगे। नर्द से लेकर गर्व धातु तक के रूप तर्ज की तरह चलेंगे।

नियम

नियम ८४ क—(गौरादिभ्यः २।३।२७) गौर आदि शब्दों से ईप् प्रत्यय होता है। गौरी, नदी, शबली, गवयी, हयी, अनडुही।

ख—([illegible]) ईप् प्रत्यय परे होने पर। मत्सी।

ग—(हसात् तद्धितस्य ८।४।७४) हस् से परे तद्धित के य प्रत्यय का का लोप हो जाता है, ईप् प्रत्यय परे हो तो। मनुषी।

नियम ८५—(वयस्यचरमेतः २।३।२५) अंतिम वयस् (अवस्था) को छोड़कर शेष अकारान्त वयस् शब्दों से ईप् प्रत्यय होता है। कुमारी, किशोरी,

तरुणी ।

नियम ८६—(जातेरयोपधनित्यस्त्रीशूद्रात् २।३।३६) य उपधा वाले शब्द, नित्यस्त्रीजातिवाचक शब्द और शूद्र शब्द को छोड़कर जातिवाची अकारन्त नाम से ईप् प्रत्यय होता है। मृगी, हंसी, ब्राह्मणी, कुक्कुटी, शूकरी। य उपधा—इभ्या, क्षत्रिया, वैश्या, आर्या। नित्यस्त्री—मक्षिका, यूका, शूद्रा।

नियम ८७—(शोणादेः २।३।३४) शोण आदि शब्दों से ईप् प्रत्यय विकल्प से होता है। शोणी, शोणा। चण्डी, चण्डा। कमली, कमला। विशाली, विशाला। कल्याणी, कल्याणा। उदारी, उदारा। कृपणी, कृपणा।

नियम ८८—(इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडानामानुक् च २।३।५५) भर्ता वाची इन्द्र आदि शब्दों से ईप् प्रत्यय होता है और आनुक् (आन्) का आगम होता है। इन्द्रस्य स्त्री इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी।

नियम ८९—(मातुलाचार्योपाध्यायाद् वा २।३।५६) मातुल, आचार्य और उपाध्याय शब्दों से ईप् प्रत्यय होता है और आनुक् का आगम विकल्प से होता है। मातुलानी, मातुली। उपाध्यायानी, उपाध्यायी। आचार्यानी, आचार्यी।

नियम ९० क—(आर्यक्षत्रियाद् वा २।३।६०) आर्य, क्षत्रिय शब्द से ईप् प्रत्यय होता है और आनुक् का आगम विकल्प से होता है। आर्याणी, आर्या। क्षत्रियाणी, क्षत्रिया।

ख—(असहनञ्विद्यमान·····२।३।४५) पूर्वपद में सह और विद्यमान शब्द तथा नञ्समास को छोड़कर स्वअंगवाची अकारान्त शब्दों से ईप्प्रत्यय विकल्प से होता है। पीनस्तनी, पीनस्तना। अतिकेशी, अतिकेशा। यहां नहीं होता है—सहकेशा, अकेशा। विद्यमानकेशा।

ग—(नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाङ्गगात्रकण्ठात् २।३।४६) पूर्वपद में सह और विद्यमान शब्द तथा नञ्समास को छोड़कर नासिका आदि स्वाङ्गवाची शब्दों से ईप्प्रत्यय विकल्प से होता है। सुनासिकी, सुनासिका। कृशोदरी, कृशोदरा। बिम्बोष्ठी, बिम्बोष्ठा। यहाँ ईप् नहीं होगा—सहनासिका अनासिका, विद्यमाननासिका इत्यादि।

घ—(पुच्छात् २।३।४८) पूर्वपद में सह, विद्यमान और नञ् समास को छोड़कर पुच्छ शब्द से ईप् प्रत्यय विकल्प से होता है। दीर्घपुच्छी, दीर्घपुच्छा। अतिपुच्छी, अतिपुच्छा।

ङ—(कबरमणिविषशरादेः २।३।४९) कबर, मणि, विष और शर शब्द पूर्वपद में हो तो पुच्छ शब्द से ईप् प्रत्यय होता है। कबरपुच्छी, मणिपुच्छी, विषपुच्छी, शरपुच्छी।

नियम ९१—इतोक्त्यर्थाद् वा २।३।७५) क्त अर्थ वाले प्रत्ययान्त

शब्दों को छोड़कर अकारान्त शब्दों से ईप्प्रत्यय विकल्प से होता है। रात्री, रात्रिः। धूली, धूलिः। भूमी, भूमिः। क्ति अर्थ वाले—कृतिः, अजननिः।

नियम ९२—(उतोगुणादखरुसंयोगोपधात् २।३।७८) खरु और संयोग उपधा को छोडकर उकारान्त गुणवाची शब्दों से ईप्प्रत्यय विकल्प से होता है। पट्वी, पटुः। साध्वी, साधुः। लघ्वी, लघुः। मृद्वी, मृदुः।

नियम ९३—(यूनस्तिः २।३।८६) युवन् शब्द से ति प्रत्यय होता है। युवतिः।

नियम ९४—(नारी सखी २।३।७४) ईप् प्रत्ययान्त नारी और सखी शब्द निपात हैं। नारी, सखी।

नियम ९५—(सपत्न्यादौ २।३।६९) समान, एक, वीर, पिंड, भ्रातृ और पुत्र शब्द पूर्वपद में हों तो पति शब्द से ईप् प्रत्यय होता है और पति के इ को नकार आदेश हो जाता है। समानः पतिः अस्या सपत्नी, एकपत्नी, वीरपत्नी, पिण्डपत्नी, भ्रातृपत्नी, पुत्रपत्नी।

प्रयोगवाक्य

इयं कुमारी किशोरी तरुणी वा यत्र गच्छति तत्र त्वं मा गच्छ। इयं मृगी हंसी वा सुंदरी नास्ति। श्रेष्ठिनः भार्यां कृपणी अस्ति। उदारां भार्यां लब्ध्वा सः प्रसन्नोऽभवत्। उपाध्यायानीं दृष्ट्वा सोऽनमत्। क्षत्रियाणी न कदापि तिरस्कारं सहते। रात्र्यां वर्षा अभवत्। इमा भूमी पवित्रा विद्यते। जैनाः जिनेश्वरं अर्चन्ति। भूपः चौरं तर्जति। गगने बलाहकाः (बादल) गर्जन्ति, नर्दन्ति, गर्दन्ति वा। दस्युः कं अतर्दत्? काकः कर्दति। सर्पः शिशुं चखर्द।

संस्कृत में अनुवाद करो

पार्वती को कौन नहीं जानता? इन गायों में चितकबरी गाय अच्छी है। मैंने जंगल में कभी रोज की पत्नी को नहीं देखा। रमेश की घोडी कैसी है? गाय दूध क्यों नहीं देती? मछली का आधार पानी है। यहां अनेक मुर्गियां हैं। भोजन पर मक्खी बैठी है। सिर में जूएं कहां से आती हैं? सतीश की घोडी लाल और पीलेवर्ण वाली है। लक्ष्मी की माया विचित्र है। सुशीला सतीश की मामी है। यह स्त्री सुन्दर नाक वाली है। यह पतले पेट वाली लडकी है। महिमा के एक सौत है। रमा किस देव की पूजा करती है? दादी ने नौकर की क्यों भर्त्सना की? बादल क्यों गरजते हैं? पशु की हिंसा मत करो। कौन-सा पक्षी खराब बोलता है। बालक को किसने काटा? विमला क्या खाती है? रावण क्यों घमंड करता था?

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्धाशुद्ध बताओ—
आचार्यी दृष्ट्वा सो कथमब्रावत ? इदं वचनं श्रुत्वा स क्षत्रियां अकुप्यत् । आर्या कुकार्यं न कुरुते । कुमाराणी कुत्र व्रजति ? मृगिणी किं करोति ? क्षत्रिया कुत्र व्रजति ।

२. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग के रूप और नियम बताएं—
मत्स्य, इभ्य, आचार्य, मातुल, पटु, साधु, ब्राह्मण, मृग, हंस, शूकर, इन्द्र, कुमार, तरुण, युवन् ।

३. उकारान्त गुणवाची स्त्रीलिंग शब्दों के चार उदाहरण दो ।

४. नारी, युवति शब्द किस नियम से बने हैं ?

५. नीचे लिखे शब्दों के संस्कृत रूप लिखो ।
मछली, मुर्गी, शेरनी, मक्खी, जूं, पार्वती ।

६. नीचे लिखे शब्दों में कौन-सा रूप शुद्ध है और किस नियम से ?
दीर्घपुच्छी, दीर्घपुच्छा । विषपुच्छी । धूलिः, धूली । अजननिः, कृशोदरा, कृशोदरी, अकेशा, अतिकेशा, कल्याणा ।

७. लक्ष्मी, स्त्री और श्री शब्दों के रूप लिखो ।

८. शुच्, उषु और लुञ्च धातु के रूप लिखो ।

पाठ १८ : कारक प्रकरण (कर्ता)

शब्दसंग्रह

किं वदन्तिः, जनश्रुतिः (अफवाह) । परुषा (आक्षेप शब्द) । आम्रेडितम् (एक को दुबारा बुलाना) । खाकरिः (गधे की आवाज) । कल्हः (गले की आवाज) । सिंजितम् (गहने की आवाज) । चर्चरी, चर्डटी (गाडी की आवाज) । प्रतिध्वनिः (गूंज) । घोत्कारः (घुर्राटे) । घोषितम् (घोकना) । खरकः (चमडे की आवाज) । वाशितम् (चहचहाना) । वृंहितम् (चिंघाडना) । चीत्कारः (चिल्लाना) । कलाभाषणम् (तुतली आवाज) । नश्वरी (दीनता के शब्द) । कलरवादः (धीमी आवाज) । तुम्बुकः (नाक से बोलना) । रुशती (निंदा के शब्द) । मालुकी (प्रेम के शब्द) । हुतिः (फिजूल बोलना) । लालकः (बच्चों की तरह बोलना) । क्वणनम्, क्वणितम् (वीणा के शब्द) । हक्कारः (बुलाना) । गद्गदः (भराई हुई आवाज) । शून्या (मोह की आवाज) । रंभणम्, तन्दनम् (गाय की आवाज) । लल्लरः (रुक कर बोलना) । जांगली (लोभ की आवाज) । खंडिता (विरह की आवाज) । भीरिता (शोक की आवाज) । आख्यानी (संदेश के शब्द) । घुर्घुरी (सूअर की आवाज) । कल्या (हित की आवाज) ।

(धातु) अञ्चु—गतौ (अञ्चति) जाना और पूजा करना । हूर्च्छा—कौटिल्ये (हूर्च्छति) कुटिलता करना । मुर्च्छा—मोहसमुच्छ्राययोः (मूर्च्छति) मूर्च्छित होना । एजृ—कम्पने (एजति) कम्पन होना ।

धीर्, वाच्, सरित् शब्दों को याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या २१, २३, ६४) ।

अञ्चु और एजृ धातु के रूप याद करें (देखें परिशिष्ट २ संख्या ५८,५९) । हूर्च्छा और मूर्च्छा के रूप समान चलते हैं ।

कारक

क्रिया के साथ जिनका सीधा संबंध (अन्वय) होता है उन शब्दों को या क्रिया के होने में जो निमित्त बनते हैं उनको कारक कहते हैं । कारक छह हैं—(१) कर्ता (२) कर्म (३) साधन (करण) (४) दानपात्र (सम्प्रदान) (५) अपादान (६) आधार ।

ये सब कारक दो प्रकार के होते हैं—मुख्य (उक्त) और गौण (अनुक्त) । जिस कारक के अर्थ में प्रत्यय होता है वह कारक मुख्य

और शेष कारक गौण होते हैं। मुख्य सब कारकों में प्रथम विभक्ति होती है और गौण कारकों में क्रमशः कर्म में द्वितीया, कर्ता एवं साधन में तृतीया, दानपात्र में चतुर्थी, अपादान में पंचमी एवं आधार में सप्तमी विभक्ति होती है।

कारक में होने वाली विभक्तियों को कारक विभक्ति कहते हैं और कारकों के सिवाय दूसरे शब्द एवं अर्थों को मानकर जो द्वितीया आदि विभक्तियां होती हैं वे 'उपपद विभक्तियां' कहलाती हैं। षष्ठी विभक्ति सम्बन्ध में होती है। सम्बन्ध कारक नहीं है क्योंकि वह क्रिया से सीधा संबंध नहीं रखता।

कर्ता

क्रिया की सिद्धि में कर्ता का स्थान सबसे प्रधान है। यः क्रियां करोति स कर्ता— जो क्रिया करता है उसे और जिस शब्द से क्रिया करने वाले का बोध हो उसे कर्ताकारक कहते हैं। कर्ता तीन प्रकार के होते हैं— (१) स्वतंत्रकर्ता (२) प्रेरककर्ता—प्रयोक्ताकर्ता (३) कर्मकर्ता।

(१) **स्वतंत्रकर्ता**— न परैः प्रेर्यते यः स स्वतंत्रः—दूसरों की प्रेरणा के बिना ही अपनी इच्छानुसार कार्य करने वाला कर्ता 'स्वतंत्रकर्ता' होता है। जैसे—शिष्यः गुरुं प्रणमति—शिष्य गुरु को प्रणाम करता है।

(२) **प्रेरककर्ता**— स्वतंत्र कर्ता को प्रेरित करने वाला कर्ता 'प्रेरक कर्ता' होता है। जैसे—उपाध्यायः शिष्येण गुरुं प्रणामयति—उपाध्याय शिष्य से गुरु को प्रणाम करवाता है।

(३) **कर्मकर्ता**—'कर्म एव कर्ता कर्म कर्ता'— कर्म ही जहां कर्ता हो जाता है वह कर्मकर्ता है। जैसे—पच्यन्ते शालयः स्वयमेव—चावल अपने आप पकते हैं। इसकी पूर्व अवस्था है— सूदः शालीन् पचति अर्थात् रसोइया चावल पकाता है। कर्ता के व्यापार का जब कर्म में आरोप कर दिया जाता है तब कर्म ही कर्ता बन जाता है। उपर्युक्त वाक्य में सूद कर्ता है और चावल कर्म है। सूद की क्रिया (चावल पकाने की क्रिया) का चावलों में आरोप किया गया है—चावल अपने आप पकते हैं।

नियम ९६—(नाम्नः प्रथमा २।४।४४)—नाम से प्रथमा विभक्ति होती है। अश्वः, गुणः, शुक्लः, कारकः, वृक्षः, स्त्री, कुलं, कुमारी, गंगा, कम्बलः, गौः, कृष्णः।

नियम ९७—(आमन्त्रणे २।४।४५)—संबोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

हे देवदत्त !

प्रयोगवाक्य

विद्यते इयं जनश्रुतिः। स आम्रेडितं कथं करोति। क्वणनं कस्मै न

रोचते। तस्य हक्कारं श्रुत्वा सोऽत्र आगमत्। गद्गदेन स स्वदुःखं तस्मै अकथयत्। रंभणं श्रुत्वा गोपालः प्रसन्नो जातः। मोहनस्य लल्लरोऽपि मात्रे रोचते। इयं भीरिता कुतः याति। भूपस्य आख्यानीं श्रुत्वा स प्रसन्नोऽभूत्। मोहनः चैत्रेण पानीयं गृहात् बहिः निस्सारयति। वत्सराजः अजितेन गृहं प्रमार्जयति। क्रियते कटः स्वयमेव। भिद्यते कुसूलः (अन्नकोष्ठ) स्वयमेव। सिध्यते ओदनः स्वयमेव। मातुलः कस्मिन् दिने राजमार्गं अञ्चिष्यति। सः मूर्च्छति। लक्ष्मणे मृत्युं गते रामः मुमूर्च्छ। वायुना वृक्षं एजति।

संस्कृत में अनुवाद करो

गधे की आवाज कर्कश होती है। उसके गले की आवाज मधुर है। उसके कानों में गहने की आवाज आई। गाड़ी की आवाज सुनकर वह जाग गया। वह घुर्राटें लेता है। बार-बार पाठ को घोकने से (दुहराने से) वह याद हो जाता है। चिडियों का चहचहाना अच्छा नहीं है। जंगल में हाथी चिंघाड़ रहा था। वह क्यों चिल्ला रहा था? बच्चों की तुतली आवाज सभी को प्रिय लगती है। वह दीनता के शब्द क्यों कर रहा था? उसकी धीमी आवाज भी सुन्दर थी। नाक से बोलना अच्छा नहीं है। गुरुओं के प्रति निंदा के शब्द मत सुनो। फिजूल मत बोलो। सुरेन्द्र किस देव की पूजा करता है? दादी क्यों मूर्च्छित हुई? कुटिलता मत करो? गाय क्यों कांपती है।

अभ्यास

(१) स्वतंत्रकर्ता, प्रेरककर्ता और कर्मकर्ता के दो-दो वाक्य बनाओ।

(२) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—
परुषा मधुरं न भवति। आम्रेडितः श्रुत्वाऽपि चर्चरी शृणेति। प्रतिध्वन्यां कस्य वृहितोऽस्ति। बालकस्य घोषितः वायुना प्रसरति।

(३) प्रथमा विभक्ति कहां होती है?

(४) एजृ धातु के लादि के रूप लिखो।

(५) निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो।
गधे की आवाज, चमडे की आवाज, धीमी आवाज, निंदा के शब्द, फिजूल बोलना, तुतली आवाज, गाडी की आवाज, गहने की आवाज, गाय की आवाज, विरह की आवाज, संदेश के शब्द।

(६) धेनु, वधू, स्वसृ और मातृ शब्दों के रूप लिखो।

(७) अर्ह और तर्ज धातु के रूप लिखो।

पाठ १६ : कर्म

शब्दसंग्रह

कारागारम् (जेल)। खवाष्पम् (बर्फ, ओस)। कार्यालयः (काम करने का स्थान दफ्तर)। विचित्रालयः (अजायबघर, म्युजियम)। चिकित्सालयः (अस्पताल)। न्यायालयः (कचहरी)। न्यायाधीशः (जज)। लेखहारः, पत्रवाहकः (डाकिया)। पत्रालयः (डाकघर)। शुल्कशाला (चूंगीघर)। पण्यभोजनालयः (होटल)। बन्दी (कैदी)। उपशल्यम् (मैदान)। निगडम् (बेडी)। वादी (पूर्ववक्ता, मुद्दई (दावा करने वाला)। अक्षपटलः (दफ्तर)। उपचारः (आदर सूचक शब्द)। साक्षी (गवाह)। साक्ष्यम् (गवाही)। प्रतिभूः (जामिन, किसी की जमानत करने वाला)। प्रातिभाव्यम् (जमानत)। आवेदनपत्रम् (अर्जी)। उत्कोचः, उपदानम् (लंचा, घूस)। लेखकः (क्लर्क)। वाक्कीलः (वकील)। शिल्पगृहम् (कारखाना)। अनुग्रहः (बक्शीश)। कारागाराध्यक्षः (जेलर)। प्रतिवादी (मुद्दालय)। अभियोगः (मुकद्दमा)। दण्डः (सजा)। निबन्धपुस्तकः (रजिस्टर)। उपसत्तिः (बयान)। उपसर्जनम्, अन्वासनम् (कारखाना, शिल्पगृह)। प्रतिवादी (प्रतिवाद करने वाला)। प्रतिपक्षी, मुद्दालेह (जिस पर दावा किया गया हो)। कुसीदः (सूद)।

अव्यय—निकषा (समीप)। समया (समीप)। हा (दुःख, खेद)। अन्तरा (बीच में)। अन्तरेण (बिना)। येन तेन (जैसे तैसे)। उपरि (ऊपर)। अधः (नीचे)। अधि (भीतर)। सर्वतः (चारों ओर)। उभयतः (दोनों ओर)। अभितः (चारों ओर)। परितः (चारों ओर)।

धातु—हसे–हसने (हसति) हंसना। कटे–वर्षावरणयोः (कटति) वर्षा और आवरण। पथे–गतौ (पथति) जाना। मथे–विलोडने (मथति) मथना। मील–निमेषणे (मीलति) आंख मीचना। शील–समाधौ (शीलति) समाधि होना। जीव–प्राणधारणे (जीवति) प्राण धारण करना।

गिर्, दिश्, उपानह् शब्दों को याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या २२, २४,६५)

हस और जीव धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ६०, ६१) जिन धातुओं का 'ए' इत् जाता हो उनके रूप हस की तरह चलते हैं। मील, शील धातु के रूप जीव की तरह चलते हैं।

कर्म

क्रियते कर्त्रा स्वक्रियया निष्पाद्यते यत् तत् कर्म—कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जो वस्तु निष्पन्न करता है या जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पडता है उसे कर्म कहते हैं। कर्म की यह विस्तृत परिभाषा है। संक्षेप में 'यत् क्रियते तत् कर्म' अर्थात् कर्ता जो कुछ करता है वह कर्म है। कर्म के तीन भेद किये जाते हैं—(१) निर्वर्त्य (२) विकार्य (३) प्राप्य।

(१) **निर्वर्त्य**—इसका अर्थ है उत्पाद्य। उत्पाद्य वस्तुएं दो श्रेणी की होती है। एक तो वे जो जन्म से उत्पन्न हो, जैसे—माता सुतं प्रसूते। दूसरी वे हैं जो अविद्यमान हों और उनका निर्माण किया जाये, जैसे—तन्तुवायः कटं करोति।

(२) **विकार्य**—वर्तमान वस्तु को अवस्थान्तरित करने से अथवा कर्ता की क्रिया से वस्तु के स्वभाव-परिवर्तन होने से जो विकार होता है उस कर्म को 'विकार्य' कहते हैं। जैसे—स्वर्णकारः काञ्चनं कुण्डलीकुरुते। कृशानुः काष्ठं दहति।

(३) **प्राप्य**—जिसमें क्रिया से कुछ भी विशेषता न होती हो उसे प्राप्य कहते हैं। जैसे—चक्षुष्मान् आदित्यं पश्यति। इसमें न तो कुछ भी उत्पन्न होता है और न विकृत।

कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है और शब्दों के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है। कारक से जो विभक्ति होती है उसे कारक विभक्ति कहते हैं, शब्दों के योग में होने वाली विभक्ति को उपपदविभक्ति कहते हैं। दोनों में कारक विभक्ति बलवान् होती है। प्रत्येक कारक के लिए यह नियम है।

नियम ९८—(कर्तुर्व्याप्यं कर्म २।४।३)—इसमें कर्ता के व्याप्य को ही कर्म कहा है। परन्तु व्याप्य शब्द का अर्थ विशाल है। इसमें हम उत्पाद्य, विकार्य और प्राप्य इन सबका समावेश कर सकते हैं।

नियम ९९—(गौणात् २।४।४६)—कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—स पुस्तकं पठति।

नियम १००—(क्रियाविशेषणात् २।४।४८)—क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—स सत्वरं धावति।

नियम १०१—(निकषासमयाहाधिगन्तरान्तरेणातियेतेनैः २।३।४९) निकषा, समया, हा, धिग्, अन्तरा, अन्तरेण, अति, येन, तेन इत्यादि शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—निकषा पर्वतं नदी। समया पर्वतं वनम्। हा देवदत्तं वर्धते व्याधिः। धिग् जाल्मम्। अन्तरा निषधं नीलवन्तं च मेरुः। ज्ञानमन्तरेण न सुखम्। अतिकुरून् पाण्डुसेना। येन तेन वा पश्चिमां गतः।

नियम १०२—(सर्वोभयाभिपरिभिस्तसन्तैः २।४।५०)—सर्वतः (सब ओर से), उभयतः (दोनों ओर से), अभितः (सब ओर से), परितः (चारों ओर से) इन तस् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—सर्वतो ग्रामं वनानि। उभयतो ग्रामं वनानि। अभितो ग्रामं क्षेत्राणि। परितो ग्रामं क्षेत्राणि।

नियम १०३—(उपर्यधोधिभिर्द्वित्वे २।४।५१)—उपर्युपरि, अधोऽधः, अध्यधि इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—उपर्युपरि ग्रामं मेघो याति। अधोऽधो ग्रामं निधानानि सन्ति। अध्यधि ग्रामं क्षेत्राणि संति—गांव के भीतर-भीतर खेत है।

नियम १०४—(उपेन चोत्कृष्टे २।४।५५)—उत्कृष्ट अर्थ में उप और अनु उपसर्ग से युक्त नाम से द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—उपसर्वज्ञं सुराः—देवताओं में सर्वज्ञ उत्कृष्ट हैं। अनुसिद्धसेनं कवयः—कवियों में सिद्धसेन उत्कृष्ट है।

नियम १०५—(कालाध्वनोरत्यंतसंयोगे २।४।५६)—कालवाची और मार्गवाची शब्दों से यदि ये शब्द निरन्तरता के द्योतक हों तो उनसे द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—मासमधीते। क्रोशं पर्वतः।

नियम १०६—(प्रतिपर्यनुभिर्भागिनि च २।४।५३)—भागी, लक्षण, वीप्सा और इत्थंभूत अर्थों में प्रति, अभि, परि और अनु शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

भागी—यत्र मां प्रति मां परि मां अनु वा स्यात् तद्दीयताम्।
लक्षण—वृक्षं प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत्।
वीप्सा—वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा सेचनम्।
इत्थंभूत—साधुर्मैत्रो मातरं प्रति परि अनु वा।

नियम १०७—(अधेः शीङ्स्थासामाधारः २।४।१४)—अधि उपसर्ग पूर्वक शी, स्था और अस् धातु के योग में आधार की कर्म संज्ञा हो जाती है। जैसे—ग्राममधिशेते मुनिः। ग्राममधितिष्ठति आचार्यः। ग्रामं अध्यास्ते वैद्यः।

प्रयोगवाक्य

कारागारध्यक्षः कारागृहं कदा गमिष्यति ? प्रतिवादी किं वदति ? किं त्वं तस्य उपसत्तिमश्रौषीः। तस्य साक्ष्यं को दास्यति ? अहं तस्य प्रतिभाव्यं न नेष्यामि। तस्योपरि कोऽभियोगं करिष्यति ? चौरं दंडं देहि। निबन्धपुस्तके सोहनः किं लिखति ? शिल्पगृहं निकषा न कोऽपि ग्रामोऽस्ति। मम नगरं समया काऽपि नदी नास्ति। कारागृहं अक्षपटलं च अन्तरा अनेकानि गृहाणि सन्ति। धिक् साधुं यो साध्वाचारं सम्यक् न पालयति। जिनदर्शनमन्तरेण किम्। उपश्रमणं गृहस्थाः। अन्वर्जुनं योद्धारः। क्रोशं कुटिला नदी। स रजनीं कथापुस्तकं अपठत्। गुरुकुलमधितिष्ठति शिष्यः। पर्वतमध्यास्ते

मर्कटः। बिना प्रयोजनं मा हस। रमा दधि कदा अभक्षत्? जैनमुनयः रात्रौ न पर्यन्ति। सा नयनं अमीलत्। मुनिः शीलति। शिशुः जीवति।

संस्कृत में अनुवाद करो

कार्यालय को जाओ। क्या तुम बर्फ खाओगे? जेल के पास एक म्युजियम है। अस्पताल के चारों ओर वृक्ष हैं। न्यायाधीश कचहरी को कब जायेंगे? डाकिया डाकघर को कब आयेगा? चूंगीघर के चारों ओर मकान नहीं है। इस कैदी को जेल में ले जाओ। मैदान के दोनों ओर क्या है? साधुओं में आचार्य प्रमुख है। उसकी साक्षी कौन देगा? तुम्हारी जामिन कौन लेगा? विद्यार्थी ने अध्यापक को अर्जी दी थी। तुमने पुलिस को घूस दी थी। कारखाने से लेकर मेरे घर तक मकान ही मकान है। मुझे क्या बक्शीश दोगे? लाडनूं के ऊपर-ऊपर वायुयान उड़ रहा है। गृहस्थ से साधु श्रेष्ठ है। गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है। गांव और विद्यालय के बीच में जल है। नास्तिक को धिक्कार है। संसार के ऊपर-ऊपर सूर्य हैं। गांव के नीचे-नीचे जल है। धर्म के बिना सुख नहीं मिलता। मां आसन पर बैठी है। दादाजी घर में सोए हैं। उसने १२ वर्ष तक अध्ययन किया। वह पांच दिन तक लिखता है। साधु कोस भर चलता है। द्रौपदी क्यों हंसी? माताजी ने दही क्यों नहीं मथा? क्या रमेश गांव गया था? शीला समाधि में है। जब तुम यहां आए थे मेरे मामा जीवित थे।

अभ्यास

(१) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—
नद्याः परितः वृक्षाणि सन्ति। ग्रामस्य निकषा एकः विद्यालयोऽस्ति। नगरस्य समया एकं शिल्पगृहं अस्ति। रामे मोहने च अन्तरा सोहनोऽस्ति। धिक् मिथ्यादृष्टेः। गृहस्य सर्वतः, उभयतः, अभितः परितो वा नराः सन्ति। उपगणीशस्य श्रमणाः।

(२) निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करो—
पत्रालयः, न्यायालयः, शिल्पगृहम्, कारागृहम्, निबन्धपुस्तकः, अध्यधि, अधोऽधो, निकषा, हा, अन्तरा।

(३) अभितः, परितः समया, अन्तरेण, येन, तेन इन शब्दों के योग में किस नियम से द्वितीया विभक्ति होती है।

(४) नियम सं० १०५ (कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे) के तीन वाक्य बनाओ।

(५) क्रियाविशेषण के चार वाक्य बनाओ।

(६) कर्म कितने प्रकार के हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखो।

(७) आधार की कर्म संज्ञा करने वाला कौन-सा नियम है? उसके दो वाक्य बनाओ।

(८) कारक विभक्ति और उपपद विभक्ति किसे कहते हैं ? दोनों में बलवती कौन-सी है ?

(९) निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
अजायबघर, चूंगीघर, मैदान, बेड़ी, घूस, जेलर, रजिस्टर, कारखाना, बर्फ, डाकघर, कचहरी, डाकिया, जज ।

(१०) धीर्, वाच्, सरित् शब्दों के रूप लिखो ।

(११) अञ्चु और एजृ के रूप लिखो ।

पाठ २० : साधन

शब्दसंग्रह

शंकुला (सरौता) । दण्डः (डंडा) । परशुः (कुल्हाड़ी) । गुलिका, गुटिका (गोली) । कृपाणः (तलवार) । कर्तरी (कैंची) । यष्टिः (लाठी) । भुशण्डिः (बन्दूक) । चपेटः, चर्पटः (तमाचा) । लवित्रम् (चाकू) । सूचिः (सूई) । दोरकम् (धागा) । शतघ्नी (तोप) । संदंशकः (चिमटा) । संडसी (संडासी) । मुष्टिः, मुस्तुः (मुक्की) । शास्त्रवरूथम् (टैंक) । ऋष्टिः (दुधारी तलवार) । गुलिकास्त्रम् (पिस्तौल) । नालास्त्रम् (बंदूक) । गुलिकायन्त्रम् (मशीनगन) । स्फोटास्त्रम् (बंब) । कुक्षिभृतास्त्रम् (राईफल) । तोमरः (संगीन) । शस्त्रम् (आयुध) । धनुः (धनुष) । शरः (बाण) । इषुः (बाण) । खड्गपिधानकम् (म्यान) । फलकम् (ढाल) । क्षुरिका (छुरी) । असिपुत्री (छुरी) । करपालिका (कटार) । त्रिशीर्षकम् (शूल) । तरवारिः (तलवार) । खड्गः (तलवार) ।

धातु—त्यजं—हानौ (त्यजति) छोडना । तपं—संतापे (तपति) तपना । चूष—पाने (चूषति) चूसना । पूष—वृद्धौ (पूषति) वृद्धि करना । लूष, मूष—स्तेये (लूषति, मूषति) चुराना । भूष—अलंकारे (भूषति) अलंकार करना ।

अव्यय—अति (अधिक) । अद्य (आज) । अधुना, इदानीं (अब) । **अन्तरेण, ऋते** (बिना) । अन्तरा (बीच में) । इह (यहां) । शश्वत् (निरन्तर) ।

मधु और कर्तृ शब्द (नपुंसक) को याद करो । (देखें परिशिष्ट १ संख्या २८, ६६)

त्यज और भूष धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ६२, ६३) तप के रूप त्यज की तरह चलते हैं । चूष से लेकर मूष तक के रूप भूष की तरह चलते हैं ।

साधन

'साध्यते येनेति साधनम्', क्रियते येनेति करणम्—जिसके द्वारा कार्य किया जाता है उसे साधन या करण कहते हैं । किन्तु एक कार्य करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनेक वस्तुएं सहायक होती हैं, क्या उन सबको साधन मानना चाहिए या उनमें से किसी एक को ? इस प्रश्न को समाहित करने के लिए हमें साधन की एक पूर्ण या मंजी हुई परिभाषा की ओर दृष्टि

डालनी होगी। वह है—'साधकतमं साधनम्' अर्थात् कार्य-सिद्धि में जितने सहायक होते हैं वे सब साधन नहीं कह ला सकते। साधन तो वही है जो साधकतम हो यानी क्रियासिद्धि में सबसे अधिक निकट सम्पर्क रखता हो। जैसे—परशुना लता छिनत्ति। साधन दो प्रकार का है—बाह्य और आभ्यन्तर।

करणं द्विविधं ज्ञेयं, बाह्यमाभ्यन्तरं बुधैः।
धान्यं लुनाति दात्रेण, मेरुं गच्छति चेतसा॥

विवक्षा से अन्य कारकों से भी साधन बनाया जा सकता है। जैसे—साधवे भिक्षां दत्ते—इसको 'भिक्षया साधुं सत्करोति' इस तरह परिवर्तित करके कर्म के स्थान में 'भिक्षया' साधन किया जा सकता है। विवक्षा से साधन को कर्तृकारक बनाया जा सकता है। जैसे—असिना छिनत्ति। यहां असि साधन है। असिः छिनत्ति—यहां असि कर्ता है।

कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—गुरुः शिष्येण पूज्यते। मैत्रेण स्थीयते।

नियम

नियम १०८—(अपवर्गे तृतीया २।४।५७) कालवाची और मार्गवाची शब्दों से निरन्तर संयोग से फल प्राप्ति होने पर तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—मासेनावश्यकमधीतम्। क्रोशेन शाकुन्तलमधीतम्।

नियम १०९—(कर्तृसाधनहेत्वित्थंभूतलक्षणेषु २।४।५८)—कर्ता, साधन, हेतु और इत्थंभूतलक्षण (किसी विशेष वस्तु से उसकी पहचान होती है) में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—चैत्रेण कृतम्। दात्रेण लुनाति। दानेन कीर्तिः। कमण्डलुना छात्रमद्राक्षीत्।

नियम ११०—(सहार्थे २।४।५९) साकम्, सार्धम्, समम्, अमा, युगपत् आदि सह अर्थवाले शब्दों के योग से तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—शिष्येण साकं गतो गुरुः। पुत्रेण युगपद् स दर्शनार्थं गतः।

नियम १११—(येनाङ्गविकारः २।४।६०)—जिस विकृत अंग से जीव का विकार जाना जाता है उससे तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—अक्ष्णा काणः। पादेन खञ्जः।

नियम ११२—(निषेधार्थकृताद्यैः २।४।६१)—निषेधार्थक कृतं, भवतु, अलं, किं, पूर्णम्, पर्याप्तम् आदि शब्दों के योग से तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—कृतं तेन। अलं अतिप्रसंगेन। किं गतेन। भवतु तेन। तेन पूर्णम्। पर्याप्तं धनेन।

नियम ११३—(प्रकृत्यादय आख्यायाम् २।४।६९)—प्रकृति आदि शब्दों की साधन संज्ञा होती है यदि उनका अर्थ प्रसिद्धि का वाचक हो तो। जैसे—प्रकृत्या चारुः। प्रायेण धार्मिकाः। नाम्ना चैत्रः। जात्या क्षत्रियः।

वर्णेन गौरः ।

प्रयोगवाक्य

कविता शंकुलया पूगफलं कर्तति । दण्डेन बालकः कं अहनत् ? गणेशः परशुना वृक्षं छिनत्ति । सैनिकः जनान् गुल्मिकाभिः हन्ति । योद्धा युद्धे कृपाणेन शत्रोः शिरः अभिनत् । क्रोशेन दशवैकालिकोऽधीतः । पुत्रेण साकं, समं, सार्धं, अमा, युगपत् वा सोऽत्र आगमत् । कर्णेन बधिरः कोऽस्ति ? सोहनः स्वभावेनोदारः आसीत् । अलं तव सेवया । माता पुत्रं अत्यजत् । सा इक्षुं चूषति । बालः पूषति । चौरः धनं मूषति । कमला भूषति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

तुम कैंची से क्या करते थे ? सुरेन्द्र लाठी से गाय को मार रहा था । सिपाही बंदूक से गोली छोड़ रहा था । नरेन्द्र चाकू से क्या कर रहा था ? वीणा धागे से कपड़ा सीयेंगी । भारतीय सैनिकों ने तोप से कितने सैनिकों को मारा ? माता संडासी से बर्तन पकड़ रही थी । सैनिक टैंक से वायुयान गिराना सीख रहा है । शत्रु ने दुधारी तलवार से कितने सिर काटे ? राम ने धनुष से बाण छोड़ा । युद्ध में सैनिक के पास पिस्तौल, बन्दूक, मशीनगन, बंब, राईफल, फलक, कटार आदि के साथ अनेक शस्त्र होते हैं । म्यान में तलवार रखो । कसाई ने छुरे से बकरे को मार दिया । जटा से संन्यासी ज्ञात होता है । मोहन ने नगर को क्यों छोड़ा ? लड़की आम चूसती है । बालक का शरीर बढ़ता है । तुमने किसकी चोरी की ? मुनियों में आचार्य अलंकृत होते हैं । रजोहरण से जैन साधु की पहचान होती है । गुरु शिष्य के साथ आज कहां गये ? शत्रु आंख से काना है । धनपाल कान से बहरा है । पशु पैर से लंगड़ा है । निर्मल स्वभाव से सज्जन है ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—
सविता दोरकात् किं करिष्यति ? पितामहः सहोदरात् साकं अमा वा कुत्र अगमत् ? भिक्षुकः नयनात् काणोऽस्ति । किं तस्मात् कार्यात् ? अलं गमनात् । धनात् भवतु ।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
अन्तरेण, अन्तरा, अलम्, अमा, सूचिः, असिपुत्री ।

३. तृतीया विभक्ति कहां होती है ? भाववाच्य में, कर्तृवाच्य में या कर्मवाच्य में ?

४. इत्थंभूतलक्षण और अपवर्ग किसे कहते हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो ।

५. नीचे लिखे शब्दों में किस-किस नियम से तृतीया विभक्ति होती है—

पर्याप्तं, साकं, अमा, युगपत्, अलं, भवतु ।

६. 'अपवर्गे तृतीया' से तुम क्या समझते हो ? दो उदाहरण लिखो ।

७. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
बन्दूक, लाठी, गोली, तोप, टैंक, पिस्तोल, राईफल, म्यान, शूल, कटार, छुरी ।

८. गिर्, दिश् और उपानह् शब्दों के रूप लिखो ।

९. हस और जीव धातु के रूप लिखो ।

पाठ २१ : दानपात्र

शब्दसंग्रह

तूलिका (पेंसिल) । फलकम् (बोर्ड) । रेखा (लकीर) । पुस्तकपीठम् (टिकटी) । वेष्टनम् (बस्ता) । काष्ठपट्टिका (तख्ती) । वस्त्रबंधनम् (कपड़े की जिल्द) । पीठम् (मूढा) । चतुष्पादिका (चौकी) । सुखोपवेशिका (सोफा या आराम कुर्सी) । पुरस्कारः (इनाम) । काष्ठपटलम् (तख्ता) । आसन्दी, आसन्दिका (कुर्सी) । लेखनी, कलमः (कलम) । कागदः, पत्रम् (कागज) । संचितिः (जमा करना) । काष्ठपीठः (डेस्क) । काष्ठासनम् (बेंच) । पाद-फलकम् (मेज) । श्रेणिः (कक्षा) । अनुपस्थितिः (गैरहाजिरी) । योगः (जोड) । संकलनम् (हिसाब की जोड) । व्यवकलनम् (बाकी) । निबन्ध-पुस्तकः (रजिस्टर) । भागः (भाग) । रेखागणितम् (रेखागणित) । बीज-गणितम् (बीजगणित) । रोचते (अच्छा लगता है) । क्रुध्यति (क्रोध करता है) । द्रुह्यति (द्रोह करता है) । ईर्ष्यति (ईर्ष्या करता है) । असूयति (बुराई निकालता है) । स्पृहयति (चाहता है) । अनुगृणाति (अनुमोदन करता है) । प्रतिगृणाति (प्रतिज्ञा करता है) । श्लाघते (प्रशंसा करता है) । ह्नुते (छिपाता है) । कल्पते (समर्थ होता है) । संपद्यते (उत्पन्न होता है) । आश्रृणोति, प्रतिश्रृणोति (प्रतिज्ञा करता है) ।

धातु—वद—व्यक्तायां वाचि (वदति) बोलना ।

जगत्, कर्मन् और नामन् शब्दों के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ३१,२९,३०)

वद धातु के रूप याद करो (परिशिष्ट २ संख्या ६४)

दानपात्र

(दानपात्रेचतुर्थी २।४।६३) कर्म के द्वारा अथवा क्रिया के द्वारा श्रद्धा, उपकार या कीर्ति की इच्छा से जिसको कोई वस्तु दी जाये अथवा जिसके लिए कोई कार्य किया जाये उसे 'दानपात्र' कहते हैं। दानपात्र में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—श्रमणाय भिक्षां ददाति (श्रमण के लिए भिक्षा देता है)। यहां श्रमण को श्रद्धा से भिक्षा दी जा रही है इसलिए श्रमण की 'दानपात्र' संज्ञा है।

गुरवे कार्यं निवेदयति (गुरु को कार्य निवेदन करता है)। यहां गुरु को निवेदन किया जाता है इसलिए गुरु की 'दानपात्र' संज्ञा है। कार्य कर्म है। युद्धाय संनह्यते—यहां वाक्य में कर्म नहीं केवल क्रिया है।

रजकस्य वस्त्रं ददाति—धोबी को वस्त्र देता है।

राज्ञः करं ददाति—राजा को कर देता है।

इनमें वस्तु का देना अवश्य है पर वह श्रद्धा आदि की भावना से नहीं दिया जाता अतः इनकी दानपात्र संज्ञा नहीं है।

नियम ११४—(रुच्यर्थानां प्रीयमाणः २।४।३३) रुचि अर्थ वाली धातुओं के योग में जिस व्यक्ति को जो पदार्थ रुचता हो (अच्छा लगता हो) उस व्यक्ति में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—मैत्राय रोचते मोदकः। चैत्राय स्वदते दधि।

नियम ११५—(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिकोपः २।४।३७)—क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्या और असूया इन अर्थ वाली सभी धातुओं के योग में जिसके प्रति क्रोध, द्रोह, ईर्ष्या, असूया आदि की जाये उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—चैत्रः मैत्राय द्रुह्यति। तातः मात्रे कुप्यति। रामः तेभ्यः ईर्ष्यति। बालकः बालकेभ्यः असूयति।

नियम ११६—(समर्थार्थनमःस्वस्तिस्वाहास्वधावषड्भिः २।४।६७) समर्थ और उसके अर्थ वाले शब्दों से तथा नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा और वषड् आदि शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—युवाभ्यामहं समर्थोऽलं क्षमः प्रभुर्वा। नमो जिनेन्द्राय। स्वस्ति पूज्याय। स्वाहा अग्नये। स्वधा पितृभ्यः। वषड् इन्द्राय।

नियम ११७—(तादर्थ्ये २।४।६४) किसी वस्तु से किसी वस्तु का निर्माण किया जाता हो तो उस निर्मित वस्तु में चतुर्थी विभक्ति होती है यदि उपादानवस्तु का साथ में प्रयोग हो तो। जैसे—स घटाय मृत्तिकां आनयति।

नियम ११८—(श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः २।४।३४) श्लाघ, ह्नुङ् स्था और शप इन धातुओं के योग में जिसको बताया जाता है उसकी संप्रदान संज्ञा होती है। उससे चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—मैत्राय श्लाघते, मैत्राय ह्नुते। मैत्राय शपते। मैत्राय तिष्ठते (स्थेय अर्थ में स्था धातु आत्मने पद होती है भिक्षुशब्दानुशासन-३।३।३३)। यथा—त्वयि मयि वा तिष्ठते विवादः।

नियम ११९—(धारेरुत्तमर्णः २।४।३५) धारय् धातु के योग में जो ऋण देने वाला है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—चैत्राय शतं धारयति मैत्रः (मैत्र चैत्र का सौ रुपये का ऋणी है)।

नियम १२०—(स्पृहेरीप्सितो वा २।४।३६) स्पृह् धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है। जैसे—विमला धनाय धनं वा स्पृहयति। राजेशः पुष्पेभ्यः पुष्पाणि वा स्पृहयति। मुनिसंगीतः संगीताय संगीतं वा स्पृहयति।

नियम १२१—(अनुप्रतिभ्यां गृणः २।४।४१) अनु, प्रति उपसर्ग सहित गृणाति धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—आचार्याय अनु-

गृणाति । आचार्याय प्रतिगृणाति । (आचार्योक्तमनुवदति, प्रशंसन्तं वा प्रोत्साहयति इत्यर्थः) ।

नियम १२३—(प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वकर्ता २।४।४०) प्रति और आ उपसर्ग सहित श्रु (शृणोति) धातु के योग में पूर्वकर्ता में चतुर्थी विभक्ति होती है । जैसे—मैत्राय विद्यां प्रतिशृणोति आचार्यः (आचार्य मैत्र को विद्या देने की प्रतिज्ञा करता है) । द्विजाय गामाशृणोति चैत्रः (चैत्र ब्राह्मण को गाय देने की प्रतिज्ञा करता है) ।

नियम १२४—(गतेरप्राप्ते वा २।४।७०) शरीर से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता हो और उस स्थान तक नहीं पहुँचा हो तो उस स्थान में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है । जैसे—मुनिः ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति । सावित्री ब्राह्मीविद्यापीठं ब्राह्मीविद्यापीठाय वा गच्छति ।

नियम १२५—(हितसुखाभ्याम् (२।४।७२) हित और सुख शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है । ग्रामस्य हितं, ग्रामाय हितं । चैत्रस्य सुखं, चैत्राय सुखम् ।

नियम १२६—(तदायुष्यकुशलार्थार्थैराशिषि २।४।७३) हितार्थ, सुखार्थ, आयुष्यार्थ, कुशलार्थ, अर्थार्थ—इनके योग में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है, आशिष् गम्यमान हो । हितार्थ—हितं पथ्यं वा जीवेभ्यो जीवानां वा । सुखार्थ—सुखं शं शर्म वा भव्येभ्यो भव्यानां वा भवतात् । आयुष्यार्थे—आयुष्य भूयात् चैत्राय चैत्रस्य वा । कुशलार्थे—कुशलं क्षेमं कल्याणं मद्रं भद्रं वा भूयात् संघस्य संघाय वा । अर्थार्थे—अर्थः प्रयोजनं कार्यं वा भूयात् चैत्रस्य चैत्राय वा ।

ख—चतुर्थी के अर्थ में अर्थम् और कृते इन दो अव्ययों का प्रयोग किया जाता है । कृते के योग में षष्ठी विभक्ति होती है । जैसे—अहं भोजनार्थं व्रजामि । अहं भोजनस्य कृते व्रजामि ।

नियम १२७—(कृप्यर्थानां विकारे २।४।६५) कल्पते, संपद्यते, जायते धातुओं के योग में पदार्थ से जिसमें विकृति होती है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है । जैसे—सूत्राय कल्पते यवागूः ।

नियम १२८—(मन्यस्यानादरेऽनावादिभ्यः २।४।७१) अनादर अर्थ में 'मन्' धातु के साथ द्वितीया और चतुर्थी विभक्ति होती है । जैसे—न त्वां तृणं तृणाय वा मन्ये ।

प्रयोगवाक्य

द्विजाय गां ददाति । शिष्याभ्यां गुरुः धर्ममुपदिशति । जिनदत्ताय रोचते जिनभक्तिः । मूर्खः सज्जनाय क्रुध्यति, रुष्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति असूयति वा । चन्दनबाला पठनार्थं पठनस्य कृते वा विद्यालयं गच्छति । सुरेन्द्रः राजेन्द्राय सहस्रं धारयति । कविः यशसे काव्यं करोति । विद्या ज्ञानाय कल्पते, संपद्यते

जायते वा । तपस्विनां सुखं भूयात् । शिष्यः गुरवे अनुगृणाति प्रतिगृणाति वा । दीर्घमायुः चिरंजीवितं वा अस्तु मैत्राय मैत्रस्य वा । उच्चाराय कल्पते यवान्नम् । श्लेष्मणे कल्पते दधि । कुंडलाय हिरण्यम् । संयमाय श्रुतम् । धर्माय संयमम् । मोक्षाय धर्मम् । अहं त्वां अवदम् । आचार्यः शिष्यं अवादीत् । यः सत्यं वदिष्यति सः प्रथमो भविष्यति । यः जनापवादान् वदिता स गर्हार्होऽस्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

पिता ने पुत्र को पेंसिल, बस्ता, कलम, कापी और कोर्स की पुस्तकें दी । विद्यालय के लिए एक बोर्ड लाओ । किरण ने पुस्तक रखने के लिए एक टिकटी ली । अध्यापक के लिए मूढ़ा, चौकी या कुर्सी लाओ । आचार्यश्री के के लिए तख्ता लाओ । संगीता को चावल अच्छे नहीं लगते । पत्नी पति पर क्यों गुस्सा कर रही थी ? विजया मेरे से ईर्ष्या करती है । मैंने यह बात गुरुदेव से निवेदन कर दी । अर्हंतों को मेरा नमस्कार हो । कुसुम कुसुम को चाहती है । प्राणियों का सुख हो । तुम्हारा हित हो । सोहन भोजन के लिए जाता है । रमेश रमा से सौ रुपये ऋण लेता है । यह लकीर छोटी है । विजय तिपाई पर बैठा है । विद्यार्थी जोड, बाकी, गुणा, भाग, रेखागणित और बीजगणित नहीं जानता है । विमला को हिसाब मिलाना नहीं आता । इस कक्षा में आज कितने विद्यार्थियों की अनुपस्थिति है ? जो सत्य कहता है वह भगवान के तुल्य है । असत्य मत बोलो । जो सत्य बोलेगा उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—
साधुं भिक्षां देहि । वीरेन्द्रः दुग्धं रोचते । मधुकरः गुरुं निवेदयति । नरेन्द्रः तं कुप्यति । नमः त्वाम् । मोहनः भद्रं भूयात् । गुरुं द्रुह्यति ।

२. हित, अनुगृणाति, स्पृह्, श्लाघते, असूयति, रोचते, क्रुध्यति, नमः, तिष्ठते, स्वदते, क्षमः—इनके योग में चतुर्थी विभक्ति किन-किन नियमों से होती है ?

३. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो—
व्रजति, कुशलम्, कृते, क्षमः, क्रुध्यति, रोचते, स्पृहयति, अनुगृणाति ।

४. मधु और कर्तृ शब्द के रूप लिखो ।

५. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
टिकटी, चौकी, कलम, कुर्सी, बेंच, जोड, बाकी, रजिस्टर, पेंसिल ।

६. त्यज और भूष धातु के रूप लिखो ।

पाठ २२ : अपादान

शब्द संग्रह

पोतघाटः (बंदरगाह)। पादयानम् (बाईसिकल)। पारियाणिकः (मुसाफिर के लिए गाडी)। चित्ररथः, तैलरथः (मोटर)। वाष्पगम् (रेलगाडी)। लोहसरणी (रेल की लाइन)। पथकोटः, स्थैषणम् (स्टेशन)। अग्निपोतः (अगनबोट)। जलयानम् (जहाज)। वायुयानम् (हवाईजहाज)। वहनदलम् (टिकट)। भूतैलसारः (पैट्रोल)। घोरणम् (वग्घी)। आंगलभाषा (अंग्रेजी)। निरीक्षणम् (इन्सपेक्शन)। निरीक्षकः (इन्सपेक्टर) अध्यापकः (पढ़ानेवाला)। समयविभागः (टाइमटेबल)। विश्वविद्यालयः (युनिवर्सिटी)। पादकंदुकम् (फुटबाल)। विज्ञानम् (साइन्स)। विधा (ट्यूशन)। पोष्यपोषम्, गुणवेतनम् (पेन्शन)। शुल्कम् (फीस)। वेतनम् (तनख्वाह)। उत्कर्षः (तरक्की)। उपढौकनम् (भेंट)। उत्कोचः, उपदा (रिश्वत)। अनुवादः (तर्जुमा)। आज्ञापनम् (लाइसेंस)।

(धातु) गम्लृं—गतौ (गच्छति) जाना। घस्लृं—अदने (घसति)। खाना। पत्लृं—पतने (पतति) गिरना। षद्लृं—विशरणगत्यवसादनेषु (सीदति) नष्ट होना, जाना और विषाद करना। दृशिं—प्रेक्षणे (पश्यति) देखना।

अव्यय—साम्प्रतम् (अब)। स्वयम् (अपने आप)। जातु (कदाचित्)। तथाहि (जैसा कि)। ध्रुवम्, नूनम् (निश्चय)। मा (मत)। सहसा (एकदम)। भृशम् (बहुधा)।

पयस् शब्द के रूप याद करो (परिशिष्ट १ संख्या ३२)। मनस् और धनुष् शब्द के रूप पयस् की तरह चलते हैं।

गम् और दृश् धातु के रूप याद करो (परिशिष्ट २ संख्या १८,१९)। घस् से सद् तक के रूप प्रायः गम् की तरह चलते हैं। कुछ रूपों में भिन्नता है।

अपादान

अपायः विश्लेषः—अलग होने का नाम अपाय या विभाग है। उसकी [illegible]

दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है)। यह विभाग शरीर से संबंध रखता है। बुद्धिपूर्वक विभाग में शरीर से अलग होने की कोई जरूरत नहीं होती, केवल बुद्धि से ही अलगाव होता है। जैसे—रामः शत्रुभ्यो बिभेति (राम शत्रुओं से डरता

है) । मोहनः धर्मात् प्रमाद्यति (मोहन धर्म से प्रमाद करता है) । इन दोनों वाक्यों में शत्रु और धर्म से बुद्धि द्वारा राम और मोहन दूर होते हैं ।

नियम १२९—(प्रभृत्यन्यार्थाराद्दिक्शब्दैः २।४।८१) प्रभृति, आरभ्य, अन्य अर्थ वाले शब्द (*भिन्न, व्यतिरिक्त, पृथक्, विलक्षण, इतर, हिरुक्*), आरात् (दूर और निकट का वाचक) और दिशावाची शब्दों के योग में पंचमी विभक्ति होती है । जैसे—कार्तिक्याः प्रभृति । आरभ्य ग्रीष्मात् । भिन्नश्चैत्रात् *व्यतिरिक्तः पटात् । पृथग् गजात् । विलक्षणोऽश्वात् ।* इतरश्चैत्रात् । हिरुक् गार्ग्यात् । आराद् ग्रामात् क्षेत्रम् । ग्रामात् पूर्वस्यां दिशि वसति ।

नियम १३०—(पर्यपाभ्यां वर्जने २।४।७६) परि और अप अव्यय वर्जन (छोडकर) अर्थ में हों वहां उसके योग में पञ्चमी विभक्ति हो जाती है । जैसे—परिपाटलिपुत्राद् वृष्टो मेघः । अपपाटलिपुत्रं वृष्टो मेघः । आराणावासात् ग्रीष्मप्रकोपः ।

नियम १३१—(ऋते द्वितीयापञ्चम्यौ २।४।१२४) ऋते (*वर्जन के अर्थ में अव्यय*) *शब्द के योग में द्वितीया* और पञ्चमी विभक्ति होती है । जैसे—ऋते धर्मं धर्माद् वा कुतः सुखम् ।

नियम १३२—(दूरान्तिकार्थैर्बहिर्भि : २।४।८४) दूर और अन्तिक अर्थ वाले शब्दों तथा बहिः के योग में पंचमी और षष्ठी विभक्ति होती है । जैसे—दूरं ग्रामात् ग्रामस्य वा ।

नियम १३३—(आख्यातुर्युपयोगे २।४।७८) पढ़ाने वाले वाचक शब्द से पंचमी विभक्ति होती है यदि उपयोग विषय (नियमपूर्वक विद्याध्ययन) हो तो । जैसे—उपाध्यायादधीते शिष्यः । आचार्यात् आगमयति । साधोः शृणोति । प्रत्येकबुद्धात् अधिगच्छति ।

नियम १३४—(आङावधौ २।४।७७) अवधि अर्थ में आङ् (आ) शब्द के योग में पंचमी विभक्ति होती है जैसे—आबालेभ्यो जिनभक्तिः । आटमकोरात् वृष्टो मेघः । आउदयपुरात् शीतलहरः ।

प्रयोगवाक्य

सः ग्रामादायाति । सा मार्जारात् बिभेति । ऋते ज्ञानं ज्ञानाद् वा न मुक्तिः । नगरादुत्तरस्यां दिशि एका वसतिरस्ति । पूर्वो ग्रीष्माद् वसन्तः । पश्चिमो रामात् युधिष्ठिरः । कालुरामाचार्यादधीते शिष्यः । साधोः शृणोति । स्वयंबुद्धादधिगच्छति । परिजयपुरात् वृष्टो मेघः । आकुमारेभ्यो यशः गौतमस्य । शैशवात् प्रभृति । तद्दिनादारभ्य । प्रव्रज्याया अनन्तरम् । सः साम्प्रतं स्वयं आगमिष्यति । सहसा विदधीत न क्रियाम् । त्वं दुष्कर्म मा कुरु । जातु शैशवदशापरवशो । मर्त्यः गच्छति । बालः मिष्टान्नं घसति । वृद्धः भूमौ कथमपतत् ? बालिका सीदति । नरेन्द्रः सीमां कदा ददर्श ?

संस्कृत में अनुवाद करो

बंदरगाह से नगर कितना दूर है ? बाईसिकल से कौन गिरा ? रेलगाड़ी रेललाइन से कैसे नीचे उतरी ? युनिवर्सिटी से मेरा घर नजदीक है। मोहन अध्यापक से अंग्रेजी पढ़ता है। जहाज से मोहन गिर गया। हवाईजहाज से कितने आदमी उतरे ? हाथी घोडे से भिन्न है। मेरे गांव के दूर और नजदीक अनेक खेत हैं। इस नगर की उत्तरदिशा में एक मंदिर है। मदन को छोडकर सभी बालक आ गये। प्राण के बिना शरीर का क्या महत्त्व है ? घर के बाहर कौन बैठा है ? बालक अध्यापक से पढता है। छोटों से लेकर बडों तक वह प्रिय है। गाडी में पेट्रोल नहीं है। माणक टिकट के लिए स्टेशन गया है। सुबोध विज्ञान की अध्यापिका है। इसका अनुवाद कौन करेगा ? तुमको कितनी पेन्शन मिलती है ? स्कूल की कितनी फीस है ? मेरी तरक्की हो गई। सुरेन्द्र ने तुमको क्या भेंट दी ? रिश्वत मत लो। तुम कहां जाओगे ? दादाजी क्या खायेंगे ? तुम कहां गिरे ? आप क्यों खिन्न होते हैं ? तुमने जैन विश्व भारती कब देखी ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—
मुनिः नगरेण आयाति। बालिकाः गोभिः बिभेति। ऋते धर्मेण न सुखम्। अध्यापकेन छात्रः पठति। परिचंदेरीं सो गतः। आछात्रान् तस्य कीर्तिः। ग्रामेण अन्तिकं एकः विद्यालयोऽस्ति। नगरेण बहिः एका नदी अस्ति।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करें—
पथकोटः, वाष्पगम्, पादफलकम्, दूरम्, ऋते, ध्रुवम्, भृशम्।

३. परि, ऋते और आङ् अव्ययों के योग में कौन सी विभक्ति किस नियम से होती है ? प्रत्येक के दो-दो वाक्य बनाओ।

४. अपाय किसे कहते हैं ? वह कितने प्रकार का होता है ? प्रत्येक के तीन उदाहरण स्वयं बनायें।

५. निम्नलिखित शब्दों के संकृस्त रूप लिखो—
रेलगाडी, स्टेशन, पेट्रोल, मोटर, युनिवर्सिटी, पेन्शन, तरक्की, रिश्वत, लाइसेंस, फुटबाल।

६. जगत्, कर्मन् और नामन् शब्दों के रूप लिखो।

७. वद धातु के रूप लिखो।

पाठ : २३ संबंध

शब्दसंग्रह

कायः (शरीर) । शिरः (शिर) । नयनम् (आंख) । कर्णः (कान) । रदनः (दांत) । नासिका (नाक) । ललाटम् (ललाट) । वदनम् (मुख) । हस्तः (हाथ) । पादः (पैर) । उदरम् (पेट)। अङ्गुलिः (अंगुली) । अङ्गुष्ठः (अंगूठा) । केशः (बाल) । अधरः (होठ) । गुदम् (गुदा) । जत्रु (कंधे और काख का जोड, हंसुली-कंधे से छाती को जोडने वाली हड्डी) । अंत्रम् (आंत)। कफोणिः, कूर्परः (कोहुनी—बाहु और भुजा का जोड) । घुंटिका (टखना—एडी के ऊपर हड्डी की गांठ) । जंभः (दाढ) । वलिः (झुर्री) । कमन्धः, कवन्धम् (धड) । पर्शुका (पंसुली—दोनों पार्श्व भागों की हड्डी) । कंकालः (हड्डियों का ढांचा) । फुप्फसम् (फेफडा) । दन्तवेष्टः (मसूडा) ।

अव्यय—उपरिष्टात् (ऊपर) । परस्तात् (आगे) । पुरस्तात् (आगे) । पश्चात् (बाद) । पुरः (आगे) । सदृशः, समः (समान) । उच्चैः (ऊंचे) । नीचैः (नीचे) । अद्य (आज) । अति (अधिक) ।

धातु—वदिङ्—अभिवादनस्तुत्योः (वन्दते) वंदन करना, स्तुति करना । लोकृङ्—दर्शने (लोकते) देखना । त्रैङ्—पालने (त्रायते) रक्षा करना । लघिङ्—भोजननिवृत्तौ च (लंघते) लंघन करना ।

सर्व शब्द के स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग के रूप याद करो (परिशिष्ट १ संख्या ६७)

वदिङ् धातु के रूप याद करो । (परिशिष्ट २ संख्या २०) आत्मने पद धातुओं के रूप प्रायः वदिङ् की तरह चलते हैं ।

सम्बन्ध

(शेषे २।४।८७) सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है । सम्बन्ध अनेक प्रकार का होता है—

१. स्वस्वामिसंबंध—राज्ञः पुरुषः ।
२. जन्यजनकसंबंध—दशरथस्य पुत्रः ।
३. अवयवावयविसंबंध—पशोः पादः ।
४. आधाराधेयसंबंध—वृक्षस्य शाखा ।
५. प्रकृतिविकारभावसंबंध—क्षीरस्य विकारः ।
६. समूहसमूहिभावसंबंध—गवां समूहः ।
७. समीपसमीपिभावसंबंध—कुम्भस्य स्वामी ।

८. पाल्यपालकभावसंबंध—पृथिव्याः स्वामी ।

९. अश्याशनभावसंबंध—गोधूमानामश्नीयात् ।

१०. शिक्षणीयशिक्षणभावसंबंध—सुभाषितस्य शिक्षते ।

११. ज्ञानज्ञेयभावसंबंध—आवश्यकसूत्रस्य जानीते ।

नियम १३५—(कर्तृकर्मणोः कृति २।४।८९) कृदन्त प्रत्ययों के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—तव गमनम् । शास्त्रस्य प्रणेता । तीर्थस्य कर्ता ।

नियम १३६—(निर्धारणेऽविभागे सप्तमी च २।४।११२) अविभाग गम्य होने पर निर्धारण अर्थ में वर्तमान नाम से षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—नृणां नृषु वा क्षत्रियः शूरः ।

नियम १३७—(तुल्यार्थैस्तृतीयाषष्ठ्यौ २।४।१२२) तुल्य अर्थ वाले शब्दों के योग में वर्तमान नाम से तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—जिनेन जिनस्य वा तुल्यः, समः, सदृशो वा कालुरामाचार्यः ।

नियम १३८—रिरिष्टात्स्तादस्तादतसादसन्तैः २।४।८८) रि, रिष्टात्, स्तात्, अस्तात्, अतस्, आत् और अस्—इन प्रत्यय अंत वाले शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—रि—उपरि ग्रामस्य । रिष्टात्—उपरिष्टात् ग्रामस्य । स्तात्—परस्तात् ग्रामस्य । अस्तात्—पुरस्तात् ग्रामस्य । अतस्—दक्षिणतो ग्रामस्य । आत्—पश्चात् ग्रामस्य । अस्—पुरो ग्रामस्य, अधो ग्रामस्य ।

नियम १३९—(कृत्यानां कर्तरि वा २।४।९३) कृत्यसंज्ञा वाले (तव्य, अनीय, य, क्यप्, ध्यण्) प्रत्ययों के योग में कर्ता में षष्ठी और तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—भवतः भवता वा उद्यमो कार्यः, करणीयः, कृत्यो वा ।

नियम १४०—(वैकत्र द्वयोः कर्मणोः २।४।९२) द्विकर्मक धातुओं के योग में एक वाक्य में जहां दो कर्मों का प्रयोग हो वहां किसी एक कर्म में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। जैसे—पयसो दोहको गां गोर्वा । यहां पयः और गां ये दो कर्म है इनमें गां कर्म में षष्ठी विभक्ति विकल्प से हुई है। पयः पयसो वा दोहको गोः—यहां पयः कर्म में षष्ठी विभक्ति विकल्प से हुई है।

प्रयोगवाक्य

बालकस्य पठनम् । ओदनस्य भोजकः । साधूनां साधुषु वा आचार्यः प्रमुखोऽस्ति । गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा । मुनिना मुनेः वा सदृशः अयं श्रावकः । भिक्षोः स्वामिनः पश्चात् भारीमालोऽभूत् । तव पुरः पुरस्तात् वा कोऽस्ति ? अहं प्रतिदिनं गुरुं वन्दे । भवान् किं लोकते ? माता पुत्रं त्रायते । सुरेन्द्रः भोजनं लङ्घते । शिष्यः गुरुं वन्दते ।

संस्कृत में अनुवाद करो

उसका शरीर सुंदर है। मोहन का शिर, आंख, कान, दांत और

ललाट सुन्दर हैं। चंदन के हाथ में पुस्तक है। गाय के कितने पैर होते हैं? बच्चा मां के पेट में कितने महीने रहता है? तुम्हारी अंगुलियां छोटी हैं। सोहन का अंगूठा बडा है। मां के बाल सफेद हैं। सीता के होठ लाल हैं। उसके गुदा में पीडा है। शरीर में कितनी आंतें होती हैं? दादाजी के घुटने और दाढ में दर्द है। बूढे के मुख पर झुर्रियां हैं। यह सैनिक का धड है। मोहन के पंसुली में अति दर्द है। मेरा फेफडा स्वस्थ है। तपस्वी का शरीर हड्डियों का ढांचा मात्र है। दादी के मसूडे में आज पीडा है। विद्यार्थियों में प्रदीप पढने में कुशल है। आचार्य तीर्थंकर के तुल्य होते हैं। मेरे घर के ऊपर एक सांप बैठा है। आचार्य सुधर्मा के बाद जंबू स्वामी आचार्य हुए थे। छोटे मुनि रत्नाधिक साधुओं को वंदना करते हैं।

अभ्यास

१. निर्धारण अर्थ में और तुल्य अर्थ वाले शब्दों के योग में कौनसी विभक्ति किस नियम से होती है?

२. वाक्य बनाओ—
वन्दिष्ये, अलोकिष्ट, अलङ्घत, त्रायिष्यते, वदनम्, अधरः।

३. संबंध कितने प्रकार के होते हैं?

४. कृत्य प्रत्यय के योग में कौन सी विभक्ति होती है?

५. निम्नलिखित वाक्यों में कौन से शुद्ध है और कौन से अशुद्ध—
बालानां पवनः चंचलोऽस्ति। विद्यार्थिभिः रमेशः दक्षोऽस्ति। आचार्येण सदृशः कोऽपि वक्ता नास्ति? युष्मत् तुल्यः कोऽपि नास्ति? ग्रामं अधः किमस्ति? गृहस्य पुरस्तात् एकः उपाश्रयः चकास्ति। पुस्तकं पठिता क्वास्ति? ओदनस्य भोजकः व्रजति। साध्वीभ्यः साध्वीप्रमुखा मुख्या विद्यते। अध्यापकेषु सुरेन्द्रः निपुणोऽस्ति।

६. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखें—
दांत, पेट, अंगूठा, होठ, दाढ, फेफडा, मसूडा, गुदा, धड, नाक।

७. पयस् शब्द के रूप लिखो।

८. गम् और दृश् धातु के रूप लिखो।

पाठ २४ : आधार

शब्दसंग्रह

मज्जा (मज्जा—नली की हड्डी के भीतर भरा मुलायम पदार्थ)। सृक्कणी (ओष्ठ का प्रान्त भाग)। वेणिः (बालों की चोटी)। जंघा (जांघ)। शिश्नम् (लिंग)। कललः (झिल्ली)। प्लीहा (तिल्ली)। स्नायुः, सिरा (नाडी, नस)। पार्श्वः (शरीर के काख और कमर के बीच का पसलियों वाला भाग)। कण्डरा (भोजन की बडी नाडी)। पिप्लुः (मसा, तिल)। गुम्फः (मूंछ)। रोमकूपः (त्वचा के छोटे-छोटे छेद जिनसे रोएं निकलते हैं)। फालः, सीमन्तः (मांग)। गलः, कंठः (कंठ)। अंसः (कंधा)। भुजः, बाहुः (बाँह, भुजा)। भुजकोटरः (काँख)। रसना (जीभ)। तालु (तालु)। ग्रीवा (गर्दन)। भ्रूः (भौंह)। स्तनः (स्तन)। पृष्ठम् (पीठ)। नाभिः (नाभि)। कटिः (कमर)। ईश्वरः, अधिपतिः (मालिक)। दायादः (हिस्सेदार)।

धातु—लोचृङ्—दर्शने (लोचते) देखना। भ्राजृङ्—दीप्तौ (भ्राजते) दीप्त होना। स्फुटङ्—विकसने (स्फुटते) विकसित होना। चेष्टङ्—चेष्टायाम् (चेष्टते) चेष्टा करना। यतीङ्—प्रयत्ने (यतते) प्रयत्न करना।

अव्यय—सहसा (एकदम)। भृशम् (बहुत)। अवश्यम् (जरूर)। साक्षात् (आँखों के सामने)। मिथः (परस्पर)। किंचित् (कुछ)। अहो (आश्चर्य)। तर्हि (तो)। समीपम् (पास)।

तत् शब्द के तीनों लिंगों के रूप याद करो (परिशिष्ट १ संख्या ३४)। यत्, एतत् शब्द के रूप थोडे अन्तर के साथ तत् की तरह ही चलते हैं। (देखें संख्या ३५, ३८)।

लोचृङ् से यतीङ् तक के रूप वदिङ् की तरह चलते हैं।

आधार

जिसमें क्रिया हो रही है उसे आधार कहते हैं। वह छव प्रकार का होता है—

(१) औपश्लेषिक (२) सामीप्यक (३) अभिव्यापक (४) वैषयिक (५) नैमित्तिक (६) औपचारिक।

(१) औपश्लेषिक—जिस आधार से संलग्न पदार्थ का बोध हो उस आधार को औपश्लेषिक कहते हैं। जैसे—कटे शेते—चटाई पर सोता है। तरौ वसति—वृक्ष पर रहता है। इनमें चटाई और वृक्ष आधार है।

सोने वाला और रहने वाला अपने आधारभूत चटाई और वृक्ष से संलग्न रहते है। इसलिए ऐसे आधार को 'औपश्लेषिक' आधार कहा जाता है।

(२) सामीप्यक—जिससे समीपता का बोध हो उसे 'सामीप्यक आधार' कहते हैं। जैसे—वटे गावः—गायें बरगद के नीचे खड़ी है। अशोके सीता आसाञ्चक्रे—अशोक वृक्ष के नीचे सीता बैठी थी। इनसे गायें और सीता का बरगद के नीचे या आसपास रहना जाना है।

(३) अभिव्यापक—व्याप्य का बोध कराने वाले शब्द को 'अभिव्यापक आधार' कहते हैं। जैसे—क्षीरे घृतम्। तिलेषु तैलम्। कुसुमेषु गन्धः। यहाँ दूध, तिल और कुसुम व्यापक हैं और घी, तैल और गंध व्याप्य हैं।

(४) वैषयिक—जिससे विषय (निवास करने के क्षेत्र) का बोध हो उसे 'वैषयिक आधार' कहते हैं। जैसे—तपोवने तपस्वी वसति। अरण्ये सिंहो गर्जति।

(५) नैमित्तिक—जिस शब्द से होने वाले कार्य के निमित्त की सूचना मिलती है उसे 'नैमित्तिक आधार' कहते हैं। जैसे—युद्धे संनह्यते—युद्ध के लिए तैयार होता है। पर्वणि सज्जति—पर्व के लिए तैयार होता है। यहाँ लड़ने के लिए तैयार होने का और सज्जित होने का निमित्त युद्ध और पर्व हैं।

(६) औपचारिक—उपचार यानि संकेत को मान कर जो कहा जाता है उसे 'औपचारिक आधार' कहते हैं। जैसे—वृक्षाग्रे विद्युत्—वृक्ष पर बिजली चमक रही है। अङ्गुल्यग्रे करिशतम्—अङ्गुलि की नोक पर सौ हाथी है। यह उपचार से कहा जाता है। अङ्गुल्यग्रे चन्द्रमाः।

नियम १४१—(यस्य भावेन भावलक्षणम् २।४।१०९) एक प्रसिद्ध क्रिया से दूसरी अप्रसिद्ध क्रिया का काल जाना जाये तो पहली क्रिया में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—स गोषु दुह्यमानासु आगतः—वह गायों के दुहने पर आया।

नियम १४२—(षष्ठ्यनादरे २।४।१११) अनादर भाव से किसी की उपेक्षा कर क्रिया करने से अनादर भाव वाले में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—रुदति मातरि पुत्रः प्राव्राजीत्—रोती हुई माता को छोड पुत्र दीक्षित हो गया। रुदत्याः मातुः पुत्रः प्राव्राजीत्।

नियम १४३—(स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैर्वा २।४।११३) स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षि, प्रतिभू, प्रसूत आदि इन शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—गवां गोषु वा स्वामी, ईश्वरः, अधिपतिः, दायादः, साक्षी, प्रतिभूः, प्रसूतो वा।

नियम १४४—(निमित्तात्कर्मसंयुक्तात् २।४।१०८) निमित्त यदि कर्म संयुक्त हो तो निमित्त में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—चर्मणि द्वीपिनं हन्ति—चर्म (चमड़े) के लिए हाथी को मारता है।

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयो र्हन्तिकुञ्जरम्।
केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलको हतः॥
सीमा=अण्डकोशः। पुष्कलकः=गन्धमृगः।

नियम १४५—(साध्वसाधुभ्याम् २।४।१०५) साधु और असाधु शब्द से सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—साधुर्मैत्रो मातरि—मैत्र माता के प्रति साधु है। असाधुर्मैत्रो मातुले—मैत्र मामा के प्रति असाधु है। विनीतः गुरौ साधुः।

नियम १४६—(साधुनिपुणाभ्यामर्चायामऽप्रत्यादौ २।४।१०४) प्रति, परि, अनु, अभि इन अव्ययों का प्रयोग न हो तो साधु और निपुण शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—मातरि साधुः, पितरि निपुणः।

प्रति, परि, अनु और अभि का प्रयोग होने पर द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—साधुर्मैत्रो मातरं प्रति, मातरं परि, मातरमनु, मातरमभि।

नियम १४७—(स्वस्वामिनोरऽधिना २।४।१०७) अधि शब्द स्व और स्वामी के अर्थ में प्रयुक्त होता हो वहाँ गौण नाम में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—(स्व अर्थ में)—अधि मगधेषु श्रेणिकः—मगध का श्रेणिक। (स्वामी अर्थ में)—अधि श्रेणिके मगधाः—श्रेणिक का मगध।

प्रयोगवाक्य

मुनिः भूमौ तिष्ठति। उपाश्रये अनेके आपणाः सन्ति। मृत्तिकायां तैलमस्ति। नरके नैरयिकाः वसन्ति। भूपः तीर्थयात्रायां व्रजति। तस्मिन् वृक्षे अनेके पक्षिणः सन्ति। गृहस्वामिनि बहिर्गते चौराः समाययुः। विलपति सुते सा गता। गृहानां गृहेषु वा कोऽस्ति स्वामी? रमेशः दुग्धे गां दोग्धि। दुर्जनः सज्जने असाधुरस्ति। सहसा कान्ता भ्रातरं अलोचत। मुनिसंघे आचार्यः आजते। अहं अवश्यं चेष्टिष्ये प्रयतिष्ये वा।

संस्कृत में अनुवाद करो

अध्यापक कुर्सी पर बैठा है। स्कूल में लडके खेल रहे हैं। फूल में सुगंध है। गायें वन में है। शरीर में आत्मा है। मुनि विहार के लिए तैयार होते हैं। आचार्य श्री का प्रवचन हुआ, देहली से साधुओं ने दर्शन किये। पुत्र के रोने पर भी पिता चला गया। घोडों का स्वामी कौन है? शिकारी केश के लिए चमरी गाय को मारता है। राजेन्द्र मेरे लिए अच्छा है। गोपाल मनीष के लिए अच्छा नहीं है। भाभी के ओष्ठप्रान्त में दर्द है। सरोज चोटी कर रही है। उसकी जांघ पर तिल है। हमारे शरीर में अनेक नाडियाँ

है। भोजन बडी नाडी में कितने घंटे बाद जाता है ? तुम्हारे शरीर में कितने तिल है ? स्त्रियों के मूंछ नहीं होती। सौभाग्यवती स्त्रियों की मांग में सिंदूर है। विजय के कंठ में मधुरता है। मेरी भुजा फडक रही है। राजू पिता के कंधे पर बैठता है। युवक की काँख में केश है। शरीर में जीभ, तालु, ग्रीवा, भौंह, स्तन, पीठ, नाभि और कमर कहाँ है ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों में कौन से शुद्ध हैं और कौन से अशुद्ध, बतायें ?
आचार्यः पट्टं विराजते। मम गृहं उद्यानं अस्ति। मनुष्यक्षेत्रे मनुष्याः निवसन्ति। धर्मेशः विद्यालयं संनह्यते। वर्षर्तौ समागते मुनिवराः आयान्ति। मं भुक्ते सो समागतः। वनं हस्ती वसति।

२. आधार कितने प्रकार के होते हैं ? औपचारिक, सामीप्यक और अभिव्यापक के दो दो उदाहरण दो।

३. नियम १४१ (यस्य भावेन भावलक्षणम्) का उदाहरण देकर स्पष्ठ करो।

४. प्रति, परि और अभि के योग में किस नियम से कौनसी विभक्ति होती है ?

५. सर्व शब्द के तीनों लिंगों के रूप लिखो।

६. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
जांघ, नाडी, तिल, मूंछ, गर्दन, पीठ, तिल्ली, काँख, भौंह, बहुत।

७. वदिङ् धातु के रूप लिखो।

पाठ २५ : कर्ता का क्रिया के साथ अन्वय

शब्दसंग्रह

ग्रासः (कोर) । वटकः (बडा) । शाकः (साग) । खण्डः (खांड) । बुभुक्षितः (भूखा) । तृषितः (प्यासा) । निघसः (भोजन) । पाथम् (पानी) । कुण्डलिनी (जलेबी) । नवनीतम् (मक्खन) । घृतम् (घी) । दधि (दही) । पुंसवनम् (दूध) । मोदकः (लड्डू) । पक्वान्नम् (पकवान) । तक्रम् (मट्ठा, छाछ) । दाधिकम् (लस्सी) । पिष्टिका (कचौडी) । राज्यक्तम् (रायता) । पायसम् (खीर) ।

धातु—स्पदिङ्—किञ्चिन्चलने (स्पन्दते) स्पन्दित होना, चलित होना । ददङ्—दाने (ददते) देना । स्वदङ्, स्वादङ्—आस्वादने (स्वदते, स्वादते) आस्वादन करना । बाधृङ्—बिलोडने (बाधते) पीडा करना । दधङ्—धारणे (दधते) धारण करना । टुवेपृङ्, कपिङ्—चलने (वेपते, कम्पते) कांपना । त्रपूषङ्—लज्जायाम् (त्रपते) लज्जित होना । डुलभषङ्—प्राप्तौ (लभते) प्राप्त करना । क्षमूषङ्—सहने (क्षमते) सहन करना । मुदङ्—हर्षे (मोदते) हर्षित होना । एधङ्—वृद्धौ (एधते) बढ़ना ।

अदस् और इदं शब्द के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ३६,३७) ।

एधङ् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ६९)

स्पदिङ् से लेकर मुदङ् तक के रूप वदिङ् की तरह चलते हैं ।

एक साथ कर्ता दो हों तो द्विवचन की क्रिया, कर्ता तीन या तीन से अधिक हों तो बहुवचन की क्रिया आएगी । क्रिया किस कर्ता के अनुसार होगी उसके लिए नियम ध्यान से पढें ।

नियम

१. (त्यदादिः ३।१।१३६)

२. (पुमान्स्त्रिया ३।१।१४२)

३. (नपुंसकमनपुंसकेनैकत्वं च वा ३।१।१४४)

क—कर्ता प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुष—इन तीनों पुरुषों के एक साथ हों तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार चलेगी । जैसे—सः अहञ्च गच्छावः । स त्वं अहञ्च पठामः । अहं युवाञ्च गच्छामः ।

ख—कर्ता यदि प्रथमपुरुष और मध्यमपुरुष के एक साथ हों तो क्रिया मध्यमपुरुष के अनुसार चलेगी । जैसे—स त्वं च पठथः । तौ त्वं च पठथ ।

ते त्वं च पठथ ।

ग—यदि सभी कर्ता प्रथमपुरुष के होंगे तो क्रिया प्रथमपुरुष के अनुसार चलेगी । जैसे—रामः गोपालश्च गच्छतः । सुभाषः विजयः सुदर्शनश्च गच्छन्ति ।

घ—कर्ता भिन्न-भिन्न वचन के हों तो क्रिया समीप के कर्ता के अनुसार होगी । जैसे—ते वा अयं पारितोषिकं गृह्णातु ।

ङ जब एक क्रिया के अनेक कर्ता हों परन्तु वे एक साथ न समझे जाकर अलग-अलग स्वीकार किये जायें तो क्रिया में एकवचन ही होता है । जैसे—न मां त्रातुं तातः प्रभवति न चाम्बा न च भवती—मुझे न तो पिता बचा सकते हैं, न माता और न आप ।

च—जब दो या अधिक कर्ता के आगे कर्ता के रूप में सर्वनाम आये तो क्रिया उसी अन्तिम सर्वनाम के अनुसार होगी । जैसे—माता पिता चेति स्वभावात् द्वितयं हितमस्ति ।

छ—जब भिन्न-भिन्न पुरुष के दो या तीन कर्ता 'वा' से सम्बन्धित हों तो क्रिया अपने समीप के कर्ता के अनुसार होगी । जैसे—सा वा यूयं वा तद् कर्म अकुरुत—उसने या तुम लोगों ने यह काम किया ।

ज—यदि कर्ता के साथ दो या तीन पद 'च' से जुड़े हों तो क्रिया मिली हुई संख्या के अनुसार होगी । जैसे—तयोः जगृहतुः पादान्, राजा राज्ञी च मागधी—राजा और मागधी रानी ने उन दोनों का पैर पकड़ा ।

झ—दम्पती, पितरौ, अश्विनौ इनके रूप द्विवचन में चलते हैं । इनके साथ क्रिया द्विवचन में आती है । जैसे—दम्पती, पितरौ अश्विनौ वा गच्छतः ।

ञ—हस्त, नेत्र, पाद, कर्ण आदि शब्द हिन्दी भाषा में बहुवचन के रूप में होते हैं परन्तु उनका भाव द्विवचन का होता है । संस्कृत में भाषान्तर करने के समय उनका भाषान्तर द्विवचन में ही करना चाहिए । जैसे—स हस्तौ पादौ च प्राक्षालयत् – उसने हाथ, पैर धोये । सा लोचने न्यमीलत्—उसने आंखें बन्द कर लीं ।

ट—द्वय, युगल, युग, द्वन्द्व—ये चारों 'दो' अर्थ के बोधक हैं । ये शब्द के अन्त में जुड़ते हैं और नपुंसकलिंग एकवचन होते हैं । इनके साथ क्रिया एकवचन में रहती है । जैसे—छात्रद्वयं, छात्रयुगलं, छात्रयुगं, छात्रद्वन्द्वं वा पुस्तकानि पठति ।

ठ—यदि एक वाक्य में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द हों तो सर्वनाम और क्रिया पुल्लिंग होंगे । यदि पुं०, स्त्री०, नपुंसक तीनों हों तो सर्वनाम और क्रिया नपुंसक होंगे । जैसे—शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी = ताविमौ क्रीतौ । शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं अन्तरीयं = तानि एतानि प्रक्षालितानि ।

ड—यदि एक वाक्य में संज्ञाशब्द और सर्वनाम हो तो सर्वनाम शेष

रहेगा। कई सर्वनाम होंगे तो अन्तिम शेष रहेगा। जैसे—स रामश्च=तौ।

ढ—बहुवचन से दो से अधिक का बोध होता है लेकिन संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे हैं जो रूप में तो बहुवचन हैं परन्तु उनका भाव एकवचन का ही रहता है। जैसे—दाराः, आपः, वर्षाः, सिकताः, सुमनसः, अक्षताः, लाजाः, असवः, प्राणाः, अप्सरसः, समाः। (अप्सरस्, वर्षा, समा सुमनस् इनका कहीं-कहीं एकवचन में भी प्रयोग मिलता है।)

ण—(गुरावेकस्मिंश्च १।१।६७) पूज्य के अर्थ में एकवचन और द्विवचन के स्थान पर बहुवचन का भी प्रयोग होता है। जैसे—एष मे पिता, एते मे पितरः। अयं तपस्वी, इमे तपस्विनः। गुरुशिष्यौ, गुरुशिष्याः।

त—जातिवाची नाम में एकवचन और बहुवचन होता है। जैसे—क्षत्रियो वीरः, क्षत्रियाः वीराः।

थ—(अस्मदो द्वयोश्च १।१।६५) अस्मद् शब्द के एकवचन और द्विवचन के स्थान पर बहुवचन का भी प्रयोग होता है। अहं ब्रवीमि, वयं ब्रूमः। आवां ब्रूवः, वयं ब्रूमः। अहं पण्डितो ब्रवीमि (मैं पण्डित कहता हूं), वयं पण्डिताः ब्रूमः।

द—देशों के नाम संस्कृत भाषा में सदा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—अहं गतः कदाचिद् कलिङ्गान्—मैं कभी कलिंग गया था।

ध—जब देश के नाम के साथ 'देश' या विषय शब्द जुड़े हों तब एक-वचन में प्रयोग करना चाहिए। जैसे—अस्ति मगधदेशे पाटलिपुत्रं नाम नगरम्—मगधदेश में पाटलिपुत्र नाम का एक नगर है।

न—व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के बहुवचन प्रयोग से वंश या जाति का बोध होता है। जैसे—रघूणामन्वयं वक्ष्ये—मैं रघुवंशियों का वर्णन करूंगा। जनकानां रघूणां च सम्बन्धः कस्य न प्रियः—जनक और रघुवंश वालों का सम्बन्ध किसको प्रिय नहीं है।

प—पात्र, आस्पद, स्थान, पद, प्रमाण, भाजन आदि शब्द जब विधेय के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब ये सदा एकवचन नपुंसकलिंग में रहते हैं। चाहे कर्ता किसी भी वचन और लिंग में हो, क्रिया सदा कर्ता के अनुकूल होती है। उद्देश्य के रूप में होंगे तो अन्य बचन भी होंगे। जैसे—गुणाः पूजास्थानं गुणिषु—गुणियों में गुण ही पूजा के स्थान हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो

राम, तुम और मैं कल साथ में भोजन करेंगे। मोहन और मैं कल बाजार गये थे। मैं और तुम संस्कृत पढेंगे। सीता और तुम इस पुस्तक को पढो। मोहजीत और मुनिसुव्रत भजन गायेंगे। मोहन, सोहन और निर्मल कलकत्ता कब जायेंगे। तुम और हम सब ध्यान करेंगे। राम या तुम शीघ्र घर जाओ। आचार्यश्री प्रवचन करते हैं। भगवन्! तेरा स्मरण करना किसको

अच्छा नहीं लगता ? आचार्यश्री की वाणी का आस्वादन करो । वृक्ष बढता है । सूत्र सूत्र को बाधता है । संन्यासी शिखा धारण करता है । वह क्यों कांपती है ? बहू लज्जित होती है । राम धन पाता है । मुनि दूसरे के कठोर वचन को भी सहन करते हैं । मैं प्रसन्न हूं । शास्त्रों में पुरुषों के लिए बत्तीस और स्त्रियों के लिए अट्ठाईस कोर का विधान है । गुरु ने शिष्य से पूछा—तुम इतने बडे कैसे खा गये ? प्राकृतिक चिकित्सक कहते हैं रोटी और साग अलग-अलग खानी चाहिए । प्राचीनकाल में मुनिजन एक समय भोजन करते थे । समुद्र का पानी खारा होता है । शंकर को जलेबी, मक्खन, घी, दूध और दही अच्छे लगते हैं । देवकी ने आये हुए मुनियों को भक्तिभाव से लड्डू दिये । अशोक के घर आज अनेक पकवान बने हैं । उसका शरीर स्पन्दित हो रहा है । तुम मुझे क्या दोगे ?

अभ्यास

१. नीचे लिखे नियमों का भाव बताओ और एक-एक वाक्य बनाओ ।
च, द, प, ठ, ग, घ, झ, ण ।

२. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखें—
बडा, खांड, जलेबी, घी, लड्डू, मट्ठा, कचौडी, रायता, प्यासा, भूखा ।

३. तत्, यत् और एतत् शब्दों के रूप लिखो ।

४. यतीङ् धातु के रूप लिखो ।

५. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध, अशुद्ध बतायें—
पितरौ गच्छन्ति । छात्रद्वयं पठन्ति । वर्षाः वर्षन्ति । अप्सरसः क्रीडति ।
प्राणाः गच्छति । आपः वहति ।

पाठ २६ : निमित्तार्थक क्रिया

शब्दसंग्रह (तुम् प्रत्यय के रूप)

कर्तुम् (करने के लिए)। व्यवस्थितुम् (व्यवस्थित करने के लिए)। वर्धितुम् (बढ़ने के लिए)। स्नातुम् (स्नान करने के लिए)। लेखितुम् (लिखने के लिए)। पठितुम् (पढने के लिए)। ज्ञातुम् (जानने के लिए)। कथयितुम् (कहने के लिए)। वक्तुम् (बोलने के लिए)। जेतुम् (जीतने के लिए)। पर्यटितुम् (टहलने के लिए)। उदञ्चितुम् (खींचने के लिए)। पराजेतुम् (हराने के लिए)। प्रक्षालयितुम् (धोने के लिए)। नर्तितुम् (नाचने के लिए)। वन्दितुम् (वन्दन के लिए)। क्रेतुम् (खरीदने के लिए)। पातुम् (पीने के लिए)। गन्तम्, यातुम् (जाने के लिए)। अत्तुम् (खाने के लिए)। अध्येतुम् (अध्ययन के लिए)। रोदितुम् (रोने के लिए)। भवितुम् (होने के लिए)। दातुम् (देने के लिए)। शयितुम्, स्वपितुम् (सोने के लिए)। घ्रातुम् (सूंघने के लिए)। स्मर्तुम् (याद करने के लिए)। मारयितुं, हन्तुं (मारने के लिए)। आसितुम् (बैठने के लिए)। स्तोतुम् (स्तुति करने के लिए)।

धातु—णमं—नमने (नमति) झुकना।

किं शब्द के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ४१)।

णम धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ६५)।

नोट—अन्य धातुओं के तुम् प्रत्यय के रूप परिशिष्ट ४ में देखें।

तुम् प्रत्यय

जो क्रिया का कारण प्रकट करता है उसे निमित्तार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे—स प्रवचनं श्रोतुं गच्छति। यहां गच्छति क्रियापद है। इसका अर्थ है—जाना। परन्तु किसलिए जाता है इसका उत्तर श्रोतुं के द्वारा मिलता है। निमित्तार्थक क्रिया को सूचित करने वाला तुम् प्रत्यय है। यह धातु मात्र से होता है। इसके योग में सकर्मक धातु से कर्म आता है, अकर्मक से नहीं। तुम् प्रत्यय अव्यय है इसलिए यह सब जगह समान रहता है।

तुम् प्रत्यय के रूप बनाने के नियम

नियम १४८—(काममनसोस्तुमश्च ३।२।१४६) तुम् प्रत्ययान्त शब्द के आगे काम और मनस् शब्द लगाने से तुम् के म् का लोप हो जाता है और वह स्वयं विशेषण के रूप में परिणत हो जाता है। जैसे—विद्यामध्येतुकामाः

छात्राः उपाध्यायं परिचरन्ति। वैशालीमधिकर्तुमनाः कोणिकः चेटकमाचक्राम।

क—सेट् धातु से इट् (इ) आता है और अनिट् धातुओं से इट् नहीं आता। इट् तुम् प्रत्यय से पहले आता है। जैसे—पठ=पठितुम् (पढ़ने के लिए)।

ख—(आत्सन्ध्यक्षराणाम् ४।२।१०१) सन्ध्यक्षर अंत वाली धातुओं के अंत में सन्ध्यक्षर के स्थान पर 'आ' हो जाता है। जैसे—गै=गातुम् (गाने के लिए)।

ग—(नामिनोगुणोऽक्ङिति) उपधायाः लघोः ४।२।१,४) नामि स्वर अंतवाली धातुओं को तथा हसान्त धातुओं की उपधा को गुण हो जाता है। जैसे—

जि (जेतुम्) जीतने के लिए। णी (नेतुम्) ले जाने के लिए। श्रु (श्रोतुम्) सुनने के लिए। कृ (कर्तुम्) करने के लिए। रुद् (रोदितुम्) रोने के लिए। ष्टु (स्तोतुम्) स्तुति करने के लिए। लिख् (लेखितुम्) लिखने के लिए।

घ—(चजो कगौ २।१।११६) अनिट् धातुओं के अंत में स्थित च को क और ज को ग होकर क हो जाता है। जैसे—पच् (पक्तुम्) पकाने के लिए। भुज् (भोक्तुम्) खाने के लिए।

ङ—(खसे चपा झथानाम् १।३।४०), (झसा जबाः २।१।१०८) धातु के अंतिम द् को त्, ध् को द् और भ् को ब् हो जाता है। जैसे छिद् (छेत्तुम्) काटने के लिए। रुध् (रोद्धुम्) रोकने के लिए। लभ् (लब्धुम्) पाने के लिए।

च—(शराज्भ्राज्यज्सृज्मृज्भ्रस्ज्ब्रश्चपरिव्राजां षः २।१।११७) श अन्तवाली धातुएं तथा राज्, भ्राज्, यज्, सृज्, मृज्, भ्रस्ज्, ब्रश्च् इन धातुओं के अंतिम वर्ण को ष् हो जाता है और तुम् के तु को टु हो जाता है। जैसे—प्रविश् (प्रवेष्टुम्) प्रवेश करने के लिए। राज् (राजितुम्) भ्राज् (भ्राजितुम्) चमकने के लिए। यज् (यष्टुम्) यज्ञ करने के लिए। सृज् (स्रष्टुम्) सर्जन करने के लिए। मृज् (मृष्टुम्) साफ करने के लिए। भ्रस्ज् (भ्रष्टुम्, भ्रष्टुम्) भुनने के लिए।

छ—(म्नां नपे अमः सवर्णोऽदान्ते १।३।३४) मकार को नकार हो जाता है। जैसे—गम् (गन्तुम्) जाने के लिए। रम् (रन्तुम्) रमण करने के लिए।

प्रयोगवाक्य

चेत् त्वं चित्त ! बुद्धिकलापं लब्धुं, आपदमपाकर्तुं, पथि विहर्तुं, कीर्तिं प्राप्तुं, साधुतां विधुवितुं, धर्मं समासेवितुं, पापविपाकं रोद्धुं, स्वर्गापवर्गश्रियमाकलयितुं समीहसे तदा गुणवतां संगं अङ्गीकुरु। किमहं मध्याह्नेऽवर-

कमागन्तुमर्हामि ? किं त्वमाचार्यवराणां सुदृशमाराधयितुं समर्थोऽसि ? अहं जाने भवन्तः शासनार्थं प्राणानर्पयितुं तत्पराः सन्ति । नर्तकः स्वपुत्रीं नर्तितुं प्रेरयति । तातः पयः पातुं कुत्र व्रजति ? शिक्षकः उद्यानं गंतुं सज्जति । आचार्यः शिष्यमध्येतुं वक्ति । विनीतः नमति, उद्दण्डः न नमति । भूपः अरीणां सम्मुखे न नंस्यति । चेत् त्वं अनंस्यः तदा न युद्धोऽभविष्यत् ।

संस्कृत में अनुवाद करो

वह संध्या समय प्रतिक्रमण करने के लिए सामायिक करता है । शासन को व्यवस्थित करने के लिए जयाचार्य ने क्या नहीं किया ? हमारे पूर्वजों ने शासन वृद्धि के लिए तन मन अर्पण कर डाले । विद्या अध्ययन के लिए स्थिरता की आवश्यकता है । कूएं से जल खींचने के लिए नौकर को क्या चाहिए ? मोहन स्नान के लिए तालाब पर गया है । रमा निबंध लिखने के लिए पुस्तक पढ़ती है । देवेन्द्र को पढ़ने के लिए पुस्तक दो । सत्य को जानने के लिए गहरे में उतरो । तुम्हें स्पष्ट बोलने के लिए चेष्टा करनी चाहिए । भरत ने बाहुबलि को जीतने के लिए क्या किया ? प्रातःकाल टहलने के लिए जाना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है । रमेश को हराने के लिए सोहन ने क्या किया ? धोबी को धोने के लिए कपड़े दो । राजा श्रेणिक भगवान महावीर को वंदन करने के लिए गुणशील उद्यान में गये । मुनि गाना गाने के लिए जाता है । प्रवचन सुनने के लिए सावधान हो जाओ । रसोइया सब्जी पकाने के लिए अग्नि जलाता है । बच्चा मिठाई खाने के लिए रोता है । विनय ज्ञान पाने के लिए प्रयत्न करता है । अभिमानी व्यक्ति कभी नहीं झुकते । वह कभी नहीं झुकेगा । यदि श्याम झुक जाता तो उसका कार्य हो जाता ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
अत्तुम्, रोदितुम्, स्वपितुम्, घ्रातुम्, स्मर्तुम्, भवितुम्, दातुम् ।
२. अदस् और इदम् शब्दों के रूप लिखो ।
३. एधङ् धातु के रूप लिखो ।
४. निमित्तार्थक क्रिया किसे कहते हैं ? उसके बारे में तुम क्या जानते हो ?

पाठ २७ : पूर्वकालिक क्रिया (क्त्वा प्रत्यय)

शब्दसंग्रह (क्त्वा प्रत्यय के रूप)

लिखित्वा (लिखकर)। हित्वा, त्यक्त्वा (छोडकर)। स्मृत्वा (यादकर)। पठित्वा (पढकर)। ज्ञात्वा (जानकर)। कथयित्वा, उक्त्वा (कहकर)। मारयित्वा (मारकर)। पीत्वा (पीकर)। जित्वा (जीतकर)। वन्दित्वा (वन्दन कर)। गत्वा, यात्वा (जाकर)। रोदित्वा (रोकर)। शयित्वा, सुप्त्वा (सोकर)। नर्तित्वा (नाचकर)। बुध्वा (जानकर)। मत्वा (मानकर)। श्रुत्वा (सुनकर)। पृष्ट्वा (पूछकर)। गृहीत्वा (ग्रहण कर)। नीत्वा (लेकर, पाकर)। नत्वा (नमनकर)। स्थित्वा (ठहरकर)। स्नात्वा (स्नानकर)। लब्ध्वा (प्राप्तकर)। श्वसित्वा (श्वास लेकर)। घ्रात्वा (सूंघकर)। दत्वा (देकर)। भीत्वा (डरकर)। विदित्वा (जानकर)। जग्ध्वा (खाकर)। स्तुत्वा (स्तुति कर)। दुग्ध्वा (दुहकर)। उषित्वा (रहकर)। लूत्वा (काटकर)। चोरयित्वा (चुराकर)। चित्वा (चुनकर)। नशित्वा, नष्ट्वा (नष्टकर)। कृत्वा (करके)। हत्वा (मारकर)।

धातु—दहं—भस्मीकरणे (दहति) जलाना।

युष्मद् शब्द के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ४२)।

दह धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ६६)।

नोट—अन्य धातुओं के क्त्वा, यप् प्रत्यय के रूप परिशिष्ट ४ में देखें।

क्त्वा प्रत्यय

जहाँ पूर्वकाल की क्रिया के बाद उत्तर काल की क्रिया का निर्देश किया जाता है वहाँ संस्कृत में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —अहं पुस्तकं पठित्वा उत्तरं दास्ये। इस वाक्य में दो क्रियाएँ हैं—पढ़ना और उत्तर देना। उत्तर देने की क्रिया पढने के बाद में होगी इसलिए वह उससे पूर्वकालीन है। क्त्वा प्रत्यय सब धातुओं से होता है। कुछ धातुओं से विकल्प में दूसरा प्रत्यय भी होता है। कई धातुओं को क्त्वा से पहले इट् होता है उसे सेट् क्त्वा कहते हैं। कई धातुओं को गुण होता है। सकर्मक धातुओं को क्त्वा प्रत्यय होने से उसके योग में कर्म आता है। क्त्वा प्रत्यय के रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि क्त प्रत्यय के रूप में अंतिम त को निकाल कर त्वा लगा दें। धातु के पहले उपसर्ग होने से क्त्वा के स्थान पर

यप् प्रत्यय हो जाता है। अर्थ वही रहता है।

नियम

नियम १४९—(अलंखलु प्रतिषेधे क्त्वा वा ६।१।३९) अलं और खलु यदि ये प्रतिषेधवाची हों तो क्त्वा प्रत्यय विकल्प से होता है। अलंकृत्वा, खलुकृत्वा—न कर्तव्यमित्यर्थः।

नियम १५०—(परावरयोः ६।१।४०) पर (आगे), अवर (पहले) का अर्थ गम्यमान हो तो धातु से क्त्वा प्रत्यय विकल्प से होता है। अतिक्रम्य नदीं पर्वतः (नदी से आगे पर्वत है)। अप्राप्य नदीं पर्वतः (नदी से पहले पर्वत है)। बाल्यमतिक्रम्य यौवनं (बाल्यकाल के बाद यौवन)। अप्राप्य यौवनं बाल्यं (यौवन से पहले बाल्यकाल)।

नियम १५१—(पूर्वकाले ६।१।४३) एक कर्ता एक समय में एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया करता हो तो पूर्व क्रिया में क्त्वा प्रत्यय विकल्प से होता है। भुक्त्वा व्रजति। भुक्त्वा पुनर्भुङ्क्ते। स्नात्वा, भुक्त्वा, पीत्वा व्रजति। एक पक्ष में—आस्यते भोक्तुमित्यपि भवति।

नियम १५२—(उदितः क्त्वो वा ४।३।७९) उकार इत् जाने वाली धातुओं से क्त्वा प्रत्यय को इट् विकल्प से होता है। जैसे—दमित्वा, दान्त्वा, (दमन कर, शान्त कर)। शमित्वा, शान्त्वा (शांत कर)। तमित्वा, तान्त्वा (इच्छा कर)। देवित्वा, द्यूत्वा (खोलकर)। सेवित्वा, स्यूत्वा (सीकर)।

नियम १५३—(क्षुधिवसेः क्तयोश्च ४।३।८१, लुभो विमोहने तेषां ४।३।८२, अञ्चेः पूजायाम् ४।३।८३, पूङ्क्लिशिभ्यो वा ४।३।८४) क्षुध, वस, लुभ (विमोहन=आकुलीकरण अर्थ में), अञ्च् (पूजा अर्थ में), पूङ्, क्लिश धातुओं से इट् होता है। क्षुधित्वा (भूखा रहकर)। उषित्वा (रहकर)। लुभित्वा, लोभित्वा (विमोहित कर)। अञ्चित्वा (पूजाकर, जाकर)। पूत्वा (साफ कर)। क्लिशित्वा (पीडित कर)।

नियम १५४—(वा तृषिमृषिकृशिवञ्चिलुञ्चयृतेः ३।४।१०५) तृष्, मृष्, कृश्, वञ्च्, लुञ्च् धातुओं को सेट् क्त्वा परे होने पर गुण विकल्प से होता है। तृषित्वा, तर्षित्वा (प्यासा रहकर)। मृषित्वा, मर्षित्वा (सहन कर)। कृशित्वा, कर्शित्वा (कृशकर)। वचित्वा, वञ्चित्वा (ठग कर)। लुचित्वा, लुञ्चित्वा (लुंचन कर)।

नियम १५५—(नोपधात्थफात् ३।४।१०६) न उपधा वाली धातुओं में यदि थकार और फकार अंत में हो और आगे सेट् क्त्वा हो तो गुण विकल्प से होता है। जैसे—श्रथित्वा, श्रन्थित्वा (छोड़ कर, खुश कर)। गुफित्वा, गुम्फित्वा (गूंथ कर)।

नियम १५६—(यपि ४।३।४२) यप् प्रत्यय आगे होने पर हन्, मन्, घनति और तनादि गण की धातुओं के अंत का लोप हो जाता है। प्रहत्य

(मार कर)। प्रमत्य (विचार कर)। प्रवत्य (याचना कर), प्रतत्य (फैला कर), प्रसत्य (देकर)।

नियम १५७—(मो वा ४।३।४३) यम् रम् नम्, गम् धातुओं के अंत का लोप विकल्प से होता है यप् प्रत्यय परे होने पर। नियत्य, नियम्य (नियमन कर)। विरत्य, विरम्य (विराम कर)। प्रणत्य, प्रणम्य (नमन कर)। आगत्य, आगम्य (आकर)।

प्रयोगवाक्य

अवनिपतिः प्रत्यर्थिनो जित्वा स्वदेशं प्रत्यागमत्। तत्त्वं बुद्ध्वापि यो मुह्यति स एव सर्वतो महीयान् मूढः। कोपं हित्वा यः शान्तिमाधत्ते स एव दुःखमुज्झित्वा सुखमश्नुते। अहं आचार्यवरं वन्दित्वा आगतोऽस्मि। पयः पीत्वा तत्कालं जलं न पेयम्। त्वं अर्हत्पदपूजनं कृत्वा, यतिजनं नत्वा, आगमं विदित्वा, अधर्मकर्मठधियां संगं हित्वा, पात्रेषु धनं दत्वा, उत्तमक्रमजुषां पद्धतिं गत्वा, अन्तरारिव्रजं जित्वा, पञ्चनमस्क्रियां स्मृत्वा इष्टं सुखं करक्रोडस्थं कुरु। अग्निः सर्वं दहति। वस्त्राणि कोऽदहत्। सीमा काष्ठानि न धक्ष्यति।

संस्कृत में अनुवाद करो

मोहन फूलों को चुनकर घर गया। राम ने वहाँ जाकर देखा तो उसे वह चीज नहीं मिली। तुम आशा लेकर वहाँ गये थे किंतु निराश क्यों लौटे? सोहन पढकर चिकित्सक बनेगा। आचार्य श्री का प्रवचन सुनकर सभी प्रसन्न हो गये। दिनेश पत्र लिखकर सो गया। सतीश को छोडकर सभी यहाँ आये थे। सास के कठोर स्वभाव को जानकर गुलाब डर गई। अच्छी बातें कहकर सुमति ने सबका मन मोह लिया। राजेन्द्र बगीचे में टहल कर कब आयेगा? चोर को मार कर राजा खुश हुआ। दूध पीकर बसंत कहाँ गया? कलिंग को जीतकर भी अशोक का मन प्रसन्न नहीं हुआ। आचार्य श्री को वंदन कर साध्वियाँ बैठ गई। फूल सूंघकर बालक कहाँ गया? सत्य को जानकर स्वीकार करो। पिता से डरकर रमेश पढने बैठ गया। तीर्थंकरों की स्तुति कर राजा प्रसन्न हुआ। गायों को दुहकर ग्वाला घर गया। सेठ का धन चुराकर चोर भाग गया। दूसरों का कार्य करके जिनेश खुश हुआ। उसके कपड़े कैसे जले? उसका शरीर कैसे जला?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
यात्वा, शयित्वा, बुद्ध्वा, मत्वा, श्रुत्वा, पृष्ट्वा, कृत्वा, नष्ट्वा, हत्वा।
२. क्त्वा और यप् प्रत्यय कहाँ-कहाँ होता है?
३. क्त्वा प्रत्यय परे होने पर किन-किन धातुओं को गुण होता है?
४. किम् शब्द के रूप लिखो।
५. णम धातु के रूप लिखो।

पाठ २८ : शतृ और शान प्रत्यय (१)

शब्दसंग्रह (शतृ और शान प्रत्यय के रूप)

पश्यत् (दृश्) देखता हुआ। विक्रीणत्, विक्रीणानः (वि+क्री) बेचता हुआ। क्रीडत् (क्रीड्) खेलता हुआ। स्मरत् (स्मृ) स्मरण करता हुआ। तुष्यत् (तुष्) तुष्ट होता हुआ। तरत् (तॄ) तैरता हुआ। ध्मत् (ध्मैं) शब्द करता हुआ। मुञ्चत् (मुञ्च्) छोड़ता हुआ। जिघ्रत् (घ्रा) सूंघता हुआ। गच्छत् (गम्) जाता हुआ। ग्रथ्नत् (ग्रथ्) गूंथता हुआ। युञ्जत् (युज्) जोड़ता हुआ। नश्यत् (नश्) नष्ट करता हुआ। पिबत् (पां) पीता हुआ। जयत् (जि) जीतता हुआ। पतत् (पत्) गिरता हुआ। विदधत्, विदधानः (वि+धा) धारण करता हुआ। बिभ्रत् (भृंनक्) धारण करता हुआ। ध्यायत् (ध्यै) चिंतन करता हुआ। कम्पमानः (कपि), एजमानः (एजृ), वेपमानः (वेप) कांपता हुआ। प्रसरत् (प्र+सृ) फैलता हुआ। ददत्, ददानः (दा) देता हुआ। हसत् (हस्) हंसता हुआ। पठत् (पठ्) पढता हुआ। रुदत् (रुद्) रोता हुआ।

(धातु)—वसं—निवासे (वसति) रहना।

अस्मद् शब्द के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ४३)

वस धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ६७)

नोट—अन्य धातुओं के शतृ, शान प्रत्ययों के रूप परिशिष्ट ४ में देखें।

शतृ-शान

शतृ और शान ये दो कृदन्त प्रत्यय वर्तमानकालिक और भविष्य-कालिक हैं। जहां यह विशेषण बनता है वहां इनका अर्थ होता है करता हुआ, जाता हुआ, बोलता हुआ। विशेष्य के अनुसार वचन और लिंग इसमें होते हैं। शतृ प्रत्यय परस्मैपद धातु से, शान प्रत्यय आत्मनेपद धातु से और उभयपद धातु से शतृ और शान दोनों प्रत्यय होते हैं। भावकर्म में आत्मनेपद ही होता है, इसलिए वहां शान प्रत्यय ही होगा। शतृ प्रत्यय के रूप बनाने का सीधा तरीका यह है कि तिबादि के बहुवचन (अन्ति) का जो रूप बनता है उसमें इ और न् को हटा दो। यह पुल्लिग का रूप है। जैसे –तिबादि के बहुवचन भवन्ति का रूप भवत् बनता है। भवन्, भवन्तौ भवन्तः, भवन्तं, भवन्तौ के के बाद शेष रूप भवत् की तरह चलेंगे। शतृ प्रत्यय के रूप नपुंसकलिंग में

जगत् शब्द की तरह चलेंगे। स्त्रीलिंग में ईप् प्रत्यय आएगा। उसके रूप नदी के समान चलेंगे। स्त्रीलिंग में रूप बनाने के लिए (अब्यनः १।४।६२) सूत्र को ध्यान में रखें। उससे भ्वादिगण और दिबादिगण की धातुओं से नुम् (न्) नित्य होता है। पचन्ती, दीव्यन्ती।

नियम १५८—(अवर्णादनः शतुर्वेपोः १।४।६१) ना प्रत्यय को छोड़कर अन्य गणों की अकारान्त धातुओं से नुम् (न्) विकल्प से होता है। तुदंती तुदती। यान्ती, याती। शेष गणों की धातुओं में इ लगेगा। रुदती, दधती, कुर्वती, शृण्वती।

नियम १५९—(इङ्धारिभ्यामकृच्छ्रे शतृः ५।३।९) अकृच्छ्र (सुखसाध्य) अर्थ में इङ्, धारि धातु से वर्तमान अर्थ में शतृ प्रत्यय होता है। अधीयन् द्रुमपुष्पीयम्। धारयन् आचाराङ्गम्।

नियम १६०—(सुन्द्विषार्हः सत्रिशत्रुस्तुत्ये ५।३।१०) सुन् धातु से सत्रि (यज्ञ कर्ता या यज्ञ का निरीक्षण करने वाला) अर्थ में, द्विष् से शत्रु अर्थ में, अर्ह् से स्तुति अर्थ में वर्तमान काल में शतृ प्रत्यय होता है। सर्वे सुन्वन्तः (यज्ञस्वामिनः इत्यर्थः)। चौरस्य चौरं वा द्विषन् (शत्रुरित्यर्थः)। पूजामर्हन् (प्रशस्य इत्यर्थः)।

शान—शान प्रत्यय के रूप बनाने का सरल तरीका यह है—तिबादि विभक्ति के 'ते' प्रत्यय का जो रूप बनता है वहां से ते को हटाकर 'मान' बिठा दें। जहां मुक् न हो वहां आन जोड़ दें।

नियम १६१—(मुगानेतः ५।३।११) धातु के रूप अकारान्त होने पर आन प्रत्यय को मुक् का आगम होता है। पवमानः, उद्वहमानः, विद्यमानः, करिष्यमाणः।

नियम १६२—(पूङ्यजोरानश् ५।३।७) पूङ्, यज् धातुओं से वर्तमान अर्थ में आनश् प्रत्यय होता है। पवमानः यजमानः।

नियम १६३—(आसीनः ५।३।१२) आस् धातु से परे आन के आ को ई आदेश होता है। आसीनः, उदासीनः, उपासीनः, अध्यासीनः।

नियम १६४—(शक्तिवयस्ताच्छील्ये ५।३।८) शक्ति (सामर्थ्य), वयः (बाल आदि अवस्था), ताच्छील्य (तत्स्वभावता) ये अर्थ गम्यमान हो तो धातु से वर्तमान अर्थ में आनश् प्रत्यय होता है। कति इह हस्तिनं निघ्नानाः। कति इह स्त्रियःगच्छमानाः। कति इह आत्मानं वर्ण्यमानाः, परान्निंदमानाः।

प्रयोगवाक्य

छात्रः पाठं घोषयन् न खलु इतस्ततो विलोकते। को विदधानो भूघनमरसं प्रभवति रोद्धुम् जरसम्? अनेकान् अवनिरुहान् बिभ्रद् एव उद्यानं रमणीयं भवति। परमात्मानं ध्यायन्तं मुनिं मस्तकन्यस्तपाणि जनो वन्दते।

पवनेन कम्पमानास्तरवः, एजमानाः शाखाः, वेपमानानि दलानि, विकासं गच्छन्ति कुसुमानि, उद्भवन्ति फलानि, प्रसरँश्च परिमलः, किं नारामस्य महिमानं वितनुयात् । अद्य नगरे बहवः जनाः वसन्ति । अस्मिन् ग्रामे त्वं कुत्र अवात्सीः ? श्यामः अत्र क्व वत्स्यति ? चेत् सोहनः इह अवत्स्यत् तदा सः उन्नतिं अकरिष्यत् ।

संस्कृत में अनुवाद करो

साधु भूमि पर ईर्यासमिति देखते जा रहे थे । दुकानों में वस्तु को बेचते हुए लोगों ने खडे होकर साधु का अभिवादन किया । खेलते हुए लडकों ने पैर छूकर नमस्कार किया । वन्दन पाठ को स्मरण करती हुई स्त्रियों ने भी साधु का सत्कार किया । महेश तुष्ट होता हुआ घर आया । वीरेन्द्र ने तैरते हुए नदी को पार किया । लोहार धमनी से शब्द करता हुआ काम कर रहा था । सतीश बहिन को ससुराल छोडता हुआ घर जायेगा । लक्ष्मण फूल सूंघता अच्छे व्यक्ति बुरे लोगों के साथ नहीं रहते । सुरेन्द्र यहां नहीं रहेगा । यदि तुम मेरे साथ रहते तो अच्छे बन जाते ।

अभ्यास

१. निम्नोक्त वाक्यों को शुद्ध करो —
जयतीं सेनां पश्य । दानं ददन्ती राज्ञी मुमुदे । हसन्तो बालकान् इह आनय । रुदन्तीं कन्यां प्रपृच्छ । धर्ममधीयमानो लोकः सुखी भवति । पठतीं बालां कः उपालम्भेत् ।
२. युष्मद् शब्द के रूप लिखो ।
३. दह धातु के रूप लिखो ।

अभ्यास

१. निम्नोक्त वाक्यों को शुद्ध करो —
जयतीं सेनां पश्य । दानं ददन्ती राज्ञी मुमुदे । हसन्तो बालकान् इह आनय । रुदन्तीं कन्यां प्रपृच्छ । धर्ममधीयमानो लोकः सुखी भवति । पठतीं बालां कः उपालम्भेत् ।
२. युष्मद् शब्द के रूप लिखो ।
३. दह धातु के रूप लिखो ।
४. शत. शान प्रत्यय के बारे में तम क्या जानते हो ? अत प्रत्यय के रूप

पाठ २९ : शतृ, शान (२)

शब्दसंग्रह

वासरः (दिन)। रविवारः (रविवार)। सोमवारः (सोमवार)। मङ्गलवारः (मंगलवार)। बुधवारः (बुधवार)। बृहस्पतिवारः (बृहस्पतिवार)। शुक्रवारः (शुक्रवार)। शनिवारः (शनिवार)। (मासः (महीना)। चैत्रः (चैत्र)। वैशाखः (वैशाख)। ज्येष्ठः (जेठ)। आषाढः (आषाढ)। श्रावणः (श्रावण)। भाद्रपदः (भाद्रपद)। आश्विनः (आश्विन)। कार्तिकः (कार्तिक)। मार्गशीर्षः (मार्गशीर्ष)। पौषः (पोष)। माघः (माघ)। फाल्गुनः (फाल्गुन)।

धातु—षेवृङ्—सेवने (सेवते) सेवा करना। भ्राश्रृङ्—टुभ्राश्रृङ्-दीप्तौ (भ्राशते, भ्राश्यते) दीप्त होना। भासृङ्—दीप्तौ (भासते) दीप्त होना। भाषङ्—व्यक्तायां वाचि (भाषते) बोलना। आङ्-शसिङ्—इच्छायाम् (आशंसते) इच्छा करना।

पञ्चन्, षष्, सप्तन् और अष्टन् शब्द के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट १ संख्या ७१,७२,७३,१६)

षेवृङ् से लेकर आङ्-शसिङ् तक के रूप वदिङ् की तरह चलते हैं।

शतृ-शान

हिन्दी में रहा है, रहा था, रहा हुआ, रहा होगा आदि स्थानों में शतृ, शान का प्रयोग होता है। वर्तमानकाल में शतृ प्रत्यय के रूप के आगे अस् धातु के तिबादि के रूप आते हैं। भूतकाल के लिए भू या अस् धातु के ङ्यादि के रूप और भविष्यकाल के लिए भविष्यत् की क्रिया के रूप आते हैं।

जैसे—अहं कार्यं कुर्वन्नस्मि।
अहं कार्यं कुर्वन्नभूवम्।
अहं कार्यं कुर्वन् भविष्यामि।

अन्य क्रियाओं के प्रयोग भी तीनों कालों में इसी प्रणाली से करना चाहिए। शतृ-शान प्रत्यय विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता है वहां वह कर्ता का विशेषण बनता है। जिस प्रकार कर्ता का विशेषण बनता है वैसे ही कर्म का भी विशेषण बनता है। वहां कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

१. अयं विषयः मया अनुभूयमानोऽस्ति।
२. अमी जनाः कृतान्तेन कदर्थ्यमानाः सन्ति।

३. त्वया कथ्यमाना इयं कथा प्रलम्बाऽस्ति ।

हम कर्ता से कर्म और कर्म से कर्ता का परिवर्तन अनेक प्रकार से कर सकते हैं तथा दूसरी-दूसरी क्रियाओं के साथ उनका संबंध जोड सकते हैं। मया पठ्यमाना पुस्तिका ज्ञानं वर्धयति । इस वाक्य के भाव को इस रूप में भी कह सकते है—अहं ज्ञानं वर्धयन्तीं पुस्तिकां पठन् प्रमोदे ।

प्रयोगवाक्य

त्वं किं पठन्नसि ? नरेन्द्रः कुत्र गच्छन्नासीत् ? रविवारे तव भगिनी किं कुर्वती आसीत् ? शुक्रवारे ललितस्य मातुलानी गीतं गायती आसीत् । विमलया पठ्यमानं पुस्तकं मह्यं देहि । आचार्येण उच्यमाना वार्ता सर्वेभ्यः ज्ञापय । साध्वीभिः गीयमानं गीतं कियत्मधुरं समस्ति । गुरुं सेवेथाः । दिवसे सूर्यः गगने भ्राशते, भ्लाशते, भासते वा । शीला त्वां किमभाषत ? पदं मा आशंसेथाः ।

संस्कृत में अनुवाद करो

महीने में कितने दिन होते हैं ? एक वर्ष में कितने महीने होते हैं ? रामनवमी चैत्र मास में आती है । अक्षयतृतीया बैशाखमास में आती है । जेठ महीने में गर्मी अधिक पडती है । आषाढपूर्णिमा के दिन आचार्यभिक्षु ने तेरापंथ की स्थापना की थी । भैया दूज श्रावण मास में आती है । संवत्सरी भाद्रमास में आती है । दशहरा का उत्सव आश्विनमास में होता है । दीपावली के दिन भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था । मिगसर कृष्णा प्रतिपदा के दिन साधु विहार कर कहां जायेंगे ? भगवान् पार्श्वनाथ की जन्म जयंती पौषमास में आती है । तुमने साधुओं की सेवा कब की थी ? मुनियों में आचार्य शोभित होते हैं । व्यर्थ मत बोलो । शान्ता क्या चाहती है ?

शतृ, शान के प्रयोग करो

रविवार को आचार्यश्री कहां प्रवचन कर रहे थे ? सोमवार को हम उत्तराध्ययन पढ़ रहे थे । अभी तुम क्यों हंस रहे हो ? मंगलवार को तुम्हारे दादाजी कहां जा रहे थे ? बुधवार को रमा मध्याह्न में ध्यान कर रही होगी । बृहस्पतिवार को मैं गुरुदेव की सेवा कर रहा था । शुक्रवार को अध्यापक द्वारा क्या विषय पढ़ाया जायेगा ? शनिवार को संतों द्वारा गीत सुनाया जायेगा । मैं हर समय आचार्यवर की उपासना कर रहा हूं । आप सूत्र पढ़ रही हैं अतएव मैं आपको विदुषी कह रहा हूं । मैं जो कुछ कर रहा था वह आपको निवेदन करूंगा । वह आपके आदेशानुसार अध्ययन करती रहेगी । आप जो कुछ कह रहे थे वही मैं सुन रहा था ।

अभ्यास

१. अस्मद् शब्द के रूप लिखो।

२. वस् धातु के रूप लिखो।

३. निम्नोक्त वाक्यों को शुद्ध करो—
सीमा किं पश्यन्नस्ति। सोहनः जिनं स्मरती आसीत्। बाला पुष्पं जिघ्रन्नासीत्। वृक्षात् पतन्तं पुष्पं कः अग्रहीत्? वृद्धः नीरं पिबती अभवत्। बालिका हसन्नस्मि।

४. शतृ, शान प्रत्यय कर्ता और कर्म के विशेषण के रूप में किस प्रकार प्रयुक्त होते हैं, सोदाहरण बताओ?

पाठ ३० : समास (१) अव्ययीभाव

शब्दसंग्रह

मिष्टान्नम् (मीठा) । यवागूः, कृशरः (खिचडी) । सेविका, सूत्रिका (सेवई) । गुडधाना (गुडधानी, भूने हुए गेहूं में पाग कर बनाया हुआ लड्डू) । अपूपः (पूआ) । पायसम् (खीर) । सूपः (दाल) । शर्करा (शक्कर) । सिता (चीनी) । पोलिका, पूरिका, शष्कुली (पूरी) । लवणम् (नमक) । तक्रम् (मट्ठा) । धान्यम् (धान) । सक्तुः (सत्तू) । लशुनम् (लहसुन) । दधिवटकः (दहीबडा)। अभ्यूषः (डबल रोटी) । भृष्टापूपः (टोस्ट) । पिष्टकः (बिस्कुट) । गुल्यः (टॉफी, मीठी गोली) । कफछ्नी (कॉफी) । जलपानम् (जलपान) । सध्रिः (सहभोज) । पक्वालुः (कचालू, आलू की टिकिया) । कूलपी (कुलफी) । व्यञ्जनम् (मसाला, मसालेदार पदार्थ) । पुलाकः (पुलाव) ।

धातु—ईक्षङ्—दर्शने (ईक्षते) देखना । ईहङ्—चेष्टायाम् (ईहते) चेष्टा करना । शिक्षङ्—विद्योपादाने (शिक्षते) विद्या प्राप्त करना । दीक्षङ्—मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु (दीक्षते) मुंडित करना, यज्ञ करना, जनेऊ देना, व्रत करना, संस्कार करना ।

कति, अन्य, त्यद् और उभ शब्दों के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट १ संख्या ७४,६८,३३,७५) ।

ईक्षङ् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ७०) ।

ईहङ् के रूप ईक्षङ् की तरह चलते हैं । शिक्षङ् और दीक्षङ् के रूप वदिङ् की तरह चलते हैं ।

समास

समास और विग्रह ये दो शब्द हैं । परस्पर में अपेक्षा रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग को समास कहते हैं । समासित पदों को अलग करने को विग्रह कहते हैं । जैसे—सुखस्य मार्गः । ये दो पद हैं । इनको एक पद करने को समास कहते हैं । समास करने पर सभी पदों की विभक्तियों का लोप हो जाता है । सुखमार्गः यह समास किया हुआ पद है । इसका विग्रह होगा—सुखस्य मार्गः । जिन जिन पदों का समास किया जाता है उनकी विभक्तियों का लोप हो जाता है और समास होने पर वह एक पद बन जाता है । समास में सभी पदों की नित्य संधि होती है । समास करने पर अंतिम शब्द से विभक्ति आती है । समास कम से कम दो पदों का होता है । पहले पद

को पूर्वपद और अगले पद को उत्तरपद भी कहते हैं। पदों की प्रधानता और अप्रधानता के आधार पर समास के चार भेद होते हैं—

(१) अव्ययीभाव (२) तत्पुरुष (३) बहुव्रीहि (४) द्वन्द्व।

अव्ययीभाव

जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो उसको अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव में नपुंसकलिंग होता है। अव्ययीभाव में उत्तरपद यदि दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है।

नियम १६५—(अनतो लुक् ३।२।५) अव्ययीभाव समास में उत्तर पद में अकारान्त शब्दों को छोडकर सभी स्वरान्त शब्दों से सभी विभक्तियों का लोप हो जाता है। यानि सभी विभक्तियों का एक समान रूप बनेगा। जैसे—अधि + स्त्री का समास करने पर अधिस्त्री। स्त्री शब्द ह्रस्व करने पर अधिस्त्रि बना। सभी विभक्तियों में अधिस्त्रि रूप ही रहेगा। जैसे 'अधिस्त्रि मा पश्य' स्त्रियों में मत देखो। उपवधु, उपकर्तृ आदि।

अकारान्त शब्दों के लिए नीचे लिखे दो नियम ध्यान में रखें—

नियम १६६—(अव्ययीभावस्यातोऽमपञ्चम्या : ३।२।२) अव्ययीभाव समास में उत्तरपद अकारान्त हो तो पंचमी विभक्ति को छोडकर सभी विभक्तियों को अम् आदेश हो जाता है। जैसे—उपकुम्भं तिष्ठति। उपकुम्भं पश्य। उपकुम्भं देहि। उपकुम्भं स्वामी।

नियम १६७—(वा तृतीयासप्तम्यो : ३।२।३) अव्ययीभाव समास में उत्तरपद अकारान्त हो तो तृतीया और सप्तमी विभक्ति को अम् आदेश विकल्प से होता है। उपकुम्भं कृतं, उपकुम्भेन कृतम्। उपकुम्भं स्थितम्, उपकुम्भे स्थितम्।

नियम १६८—(अव्ययं कारक समीप समृद्ध·····३।१।२३) अव्ययीभाव समास में शब्दों के अव्यय इस प्रकार हैं—

अर्थ	अव्यय	विग्रह	समास
सप्तमी विभक्ति	अधि	नदीषु	अधिनदि
समीप	उप	कार्यालयस्य समीपं	उपकार्यालयं
समृद्धि (ऋद्धि की अधिकता)	सु	जैनानां समृद्धिः	सुजैनं
असंप्रति (वर्तमानकाले उपभोगादेः प्रतिषेधः)		कम्बलस्य उपभोगं प्रति नायं कालः	अतिकम्बलं
अर्थाभाव (वस्तुनोऽभावः)	निर्	जनानां अभावः	निर्जनं
अत्यय (अतीतत्वं)	अति, निर्	हिमस्यअत्ययः	अतिहिमं, निर्हिमं
असंपत्ति (ऋद्धेरभावः)	दुर्	यवनानामसंपत्तिः	दुर्यवनं

ख्याति (प्रसिद्धता)	इति, अहो	भद्रबाहोः ख्यातिः	इतिभद्रबाहु, अहोभद्रबाहु
पश्चाद्	अनु	महावीरस्य पश्चाद्	अनुमहावीरं
योग्यतायां	अनु	रूपस्ययोग्यांचेष्टां कुरुते	अनुरूपं चेष्टते
वीप्सा	प्रति	दिनं दिनं प्रति	प्रतिदिनं
अनतिक्रम	यथा	शक्तिमनतिक्रम्य	यथाशक्ति
असादृश्य	यथा	ये ये वृद्धाः	यथावृद्धं
सादृश्य	सह (स)	श्रुतस्यसादृश्यं	सश्रुतमनयोः
यौगपद्य (एककालता)	सह (स)	युगपत् चक्राणि	सचक्रं
आनुपूर्वी (अनुक्रम)	अनु	ज्येष्ठस्य अनुक्रमेण	अनुज्येष्ठं
संपत्ति (सिद्धि) (आत्मभावनिष्पत्तिः)	सह (स)	क्षत्राणां संपत्तिः	सक्षत्रं
साकल्यं (अशेषता)	सह (स)	तृणेन सह	सतृणं
अभि	आभिमुख्य	अग्निआभिमुख्य	अभ्यग्नि
प्रति	आभिमुख्य	अग्निं आभिमुख्य	प्रत्यग्नि

नियम १६९—(पारेमध्येऽग्रेऽन्तः षष्ठ्या वा ३।१।३०) पारे मध्ये, अग्रे, अन्तः इनके साथ समास करने पर इनकी विभक्ति का लोप नहीं होता, इसलिए ये अव्ययीभाव समास में निपात हैं। जैसे—पारं गंगायाः पारेगङ्गं। गंगायाः मध्ये मध्येगंगं। वनस्य अग्रे अग्रेवनं। गिरेः अन्तर् अन्तर्गिरि।

अव्ययीभाव समास में निम्नलिखित शब्दों से ट (अ) प्रत्यय हो जाता है और ट होने से शब्द अकारान्त बन जाता है—

नियम १७०— (शरदादेरव्ययीभावात् ८।३।२७) शरद्, त्यद् तद्, यद्,

नियम १६९—(पारमध्यऽग्रऽन्तः षष्ठ्या वा ३।१।३०) पार मध्य, अग्रे, अन्तः इनके साथ समास करने पर इनकी विभक्ति का लोप नहीं होता, इसलिए ये अव्ययीभाव समास में निपात हैं। जैसे—पारं गंगायाः पारेगङ्गं। गंगायाः मध्ये मध्येगंगं। वनस्य अग्रे अग्रेवनं। गिरेः अन्तर् अन्तर्गिरि।

अव्ययीभाव समास में निम्नलिखित शब्दों से ट (अ) प्रत्यय हो जाता है और ट होने से शब्द अकारान्त बन जाता है—

नियम १७०— (शरदादेरव्ययीभावात् ८।३।२७) शरद्, त्यद् तद्, यद्,
कियत्, हिरुक्, हिमवत्, उपसद्, सदस्, अदस्, अनस्, मनस्, विपाश्, दिश्,

नियम १७१—(सख्यायानदागादावराभ्याम् ८।३।२८) पूर्व शब्द संख्यावाची हो, अन्त में नदी या गोदावरी शब्द हो तो ट प्रत्यय हो जाता है। जैसे—पञ्चनदम्, सप्तनदम्, द्विगोदावरम्, त्रिगोदावरम्।

नियम १७२—(जरायाः जरस् च ८।३।२९) जरा शब्द अन्त में हो तो समास के अन्त में ट प्रत्यय हो जाता है और जरा को जरस् आदेश हो जाता है। जैसे—उपजरसम्, प्रतिजरसम्।

नियम १७३—(प्रतिपरः समनुभ्योऽक्ष्णः ८।३।३०) प्रति, परस्, सम्, अनु इनसे आगे अक्षि शब्द हो तो समास के अन्त में ट प्रत्यय हो जाता हैं। जैसे—अक्षिणी प्रति = प्रत्यक्षम्। अक्ष्णो परः = परोक्षम्। संगतमक्ष्णा = समक्षम्। अक्ष्णः समीपम् = अन्वक्षम्।

नियम १७४—(अनः) नपुंसकाद् वा ८।३।३१,३२) 'अन्' अन्त वाले शब्दों से ट प्रत्यय होता है। जैसे—उपराजं, अध्यात्मं, प्रत्यात्यमम्। यदि 'अन्' अन्त वाले शब्द नपुंसकवाची हो तो उनसे विकल्प से ट प्रत्यय हो जाता है। जैसे—उपचर्मं उपचर्म। प्रतिकर्मं, प्रतिकर्म। अनुलोमं, प्रतिलोम।

नियम १७५—(झपात् ८।३।३३) 'झप' प्रत्याहार शब्द अंत में हो तो ट प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे—अधिस्रजं, अधिस्रक्। प्रतिमरुतं, प्रतिमरुत्। उपदृषदं, उपदृषद्।

नियम १७६—(गिरिनदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ८।३।३४) गिरि, नदी, पौर्णमासी, आग्रहायणी अंतवाले शब्दों से ट प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे—उपगिरं, उपगिरि। उपनदं, उपनदि। उपपौर्णमासं, उपपौर्णमासि। उपाग्रहायणं, उपाग्रहायणी (मिगसर की पूर्णिमा के पास)।

प्रयोगवाक्य

अधिस्त्रि निधेहि। उपाग्नि मा तिष्ठ। अतिकम्बलं अयं कालः। निर्मक्षिकं इदं स्थानम्। इतिभद्रबाहु सर्वत्र प्रसृता अस्ति। अनुजयाचार्यं मघवागणिनः बभूवुः। यथाशक्ति पठ। अनुबलं तपः तप। प्रतिग्रामं विहर। प्रतिबालं मोदकं देहि। बुभुक्षितेन बालेन सशुष्कपूपिकं भक्षितम्। बहिर्ग्रामं एकः विद्यालयोऽस्ति। परिहिमालयं ग्रीष्मः वर्तते। पारेसमुद्रं जैनधर्मः गतः। दुर्हरिजनं प्रश्नचिह्नोऽस्ति मुख्यमंत्रिणां कृते। यथादक्षं व्याकरणं पृच्छ। पठनकाले इतस्ततः मा ईक्षस्व। ज्ञानं प्राप्तुं सर्वदा ईहस्व। अहं मुनीनां पार्श्वे संस्कृतं शिशिक्षे। आचार्यकालुः मां दिदीक्षे।

संस्कृत में अनुवाद करो (अव्ययों का प्रयोग करो)

बालकों में कौन प्रिय है? गुरुदेव के पास कौन है? चक्रवर्ती की समृद्धि प्रसिद्ध है। वह जन रहित स्थान में ध्यान करता है। अंधकार में पढ़ना ठीक नहीं है। शिमला में हिम का विनाश कब हुआ? महावीर की ख्याति विश्व भर में है। जंबूस्वामी के बाद कौन आचार्य हुए? प्रतिष्ठा के अनुरूप कार्य करो। जो जो बुद्धिमान् हैं वे परीक्षा दें। बडों के क्रम से सोवो? भूखी गाय तृण सहित सब कुछ खा गई। मैंने चूलिका सहित दशवैकालिक पढ ली।

हरियाणा को छोडकर वर्षा हुई। उसकी कीर्ति हिमालय तक फैल गई। गांव के बाहर बगीचा है। वह परोक्ष में गुरु की निंदा करता है। आत्मा में मेरा विश्वास है। राजा के पास चापलूस अधिक है। प्रत्येक बालक को यह पाठ याद करना चाहिए। अधिक मीठा नहीं खाना चाहिए।

अनुवाद करो

वैद्य बीमार को खिचडी खाने के लिए कहता है। तुम्हारी मामी ने आज पूए क्यों बनाए हैं? भूपेन्द्र को सेवई और गुडधानी (गुडराब) अच्छी नहीं लगती। ईर्ष्यावश उसने दाल में अधिक नमक डाल दिया। शक्कर और चीनी में क्या अन्तर है? विजय ने आज कितनी पूरियां खाई थी? मोहन भोजन के बाद थोड़ा मट्ठा पीता है। क्या तुमने कभी सत्तू खाये हैं? मोहन की दादी लहसुन नहीं खाती है। प्रशान्त पढने के लिए चेष्टा करता है। छात्र अध्यापक से ज्ञान सीखता है। आचार्यश्री तुलसी ने लगभग ५०० व्यक्तियों को दीक्षा प्रदान की है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों के अव्ययीभाव समास के रूप बनाएं।

(क) स्त्रीषु (ङ) कालोः पश्चात् (झ) अक्षिणी प्रति
(ख) गुरोः समीपं (च) गुर्जराणां समृद्धिः (ञ) दृषदः समीपं
(ग) जनानां अभावः (च) मुनेः सदृशः (ट) जैनानां संपत्तिः
(घ) भिक्षोः ख्यातिः (ज) तुषेन सहितम्।

२. किस अर्थ में कौनसा अव्यय होता है? प्रत्येक अव्यय के दो-दो उदाहरण दो।

३. अव्ययीभाव में कौनसा लिंग होता है?

४. अव्ययीभाव में अकारांत, इकारांत, उकारांत और हसांत शब्दों के लिए कौन-कौन से नियम ध्यान में रखने होंगे। वे नियम क्या विधान करते हैं?

५. पञ्चन् और षष् शब्दों के रूप लिखो।

६. आङ्शसिङ् धातु के रूप लिखो।

७. नीचे लिखे शब्दों के संस्कृत रूप बतायें—
खिचडी, खीर, चीनी, नमक, सत्तू, सेवई, लहसुन, दाल।

पाठ ३१ : समास (२) तत्पुरुष

शब्दसंग्रह

चमसम् (चमचा) । स्थाली (थाली) । महानसम् (रसोई)। अङ्गार-धानी (सिघडी) । चुल्लिः (चूल्हा) । पिष्टपचनम् (तवा) । चूर्णमर्दनी (कठोति) । संमार्जनी (बुहारी) । खल्वम् (खरल) । अर्गलम् (आगल) । विष्कम्भिका (चटकनी) । शुक्तम् (सिरका) । शिलापुत्रम् (लोढी) । चालनी (चालनी) । पेषणी (चक्की) । कटाहः (कडाही) । कर्करी (झारी) । दीप-शलाका (दियासलाई) । खर्वटः (पहाडीगांव, मंडी) । कंकमुखः (चिमटी) ।

धातु - वृतुङ्—वर्तने (वर्तते) वर्तन करना । वृधुङ्—वृद्धौ (वर्धते) (बढना) । द्युतङ् - दीप्तौ (द्योतते) दीप्त होना । भ्रंसुङ्, स्रंसुङ्—अवस्रंसने (भ्रंसते, स्रंसते) नष्ट होना । ध्वंसुङ्—गतौ च (ध्वंसते) नष्ट करना और जाना । रुचङ्—अभिप्रीतौ (रोचते) अच्छा लगना । रमङ्—क्रीडायाम् (रमते) क्रीडा करना । षहंङ्—मर्षणे (सहते) सहन करना ।

वृतुङ्, द्युतङ् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ७१,७२)

वृधुङ् के रूप वृतुङ् की तरह चलते हैं ।

भ्रंसुङ् से लेकर रुचङ् तक के रूप द्युतङ् की तरह चलते हैं।

रमङ् और षहङ् के रूप वदिङ् की तरह चलते हैं। सिर्फ षहङ् के तादि में सोढा रूप बनता है ।

तत्पुरुष समास

जिसमें उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता हो उसे तत्पुरुष कहते है । इसमें सातों विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है । उत्तरपद में जो लिंग होता है समास के बाद भी वही लिंग रहता है । जैसे—

द्वितीया - संसारं अतीतः = संसारातीतः

तृतीया - अहिना दष्टः = अहिदष्टः

चतुर्थी—कुण्डलाय हिरण्यं = कुण्डलहिरण्यं

पंचमी—ग्रामात् निर्गतः = ग्रामनिर्गतः

षष्ठी—गवां क्षीरम् = गोक्षीरम्

सप्तमी—शिरसि शेखरः = शिरः शेखरः

तत्पुरुष समास का दूसरा रूप भी मिलता है, पहले पद में अव्यय और दूसरे पद में प्रथमा आदि छह विभक्तियां । इसका प्रयोग दो पदों से अन्य अर्थ

में होता है। इसलिए इसे बहुव्रीहिरूपक तत्पुरुष समास कहते हैं। बहुव्रीहि समास और बहुव्रीहिरूपक तत्पुरुष की पहचान विग्रह से होती है। दोनों के विग्रह में बहुत अन्तर है। समास के विग्रह में अव्यय का अर्थ साथ में रहता है। समास के बाद उत्तरपद का लिंग नहीं रहता। वह विशेषण बन जाता है। जैसे—

प्रथमा— प्रगतः आचार्यः = **प्राचार्यः**
द्वितीया—अतिक्रान्तः गङ्गां=अतिगङ्गः
तृतीया— अनुगतमर्थेन=अन्वर्थम्
चतुर्थी – अलं कुमार्यै = अलंकुमारिः
पंचमी—उत्क्रान्तं कुलं = उत्कुलम्
षष्ठी—पूर्वः कायस्य = पूर्वकायः

तत्पुरुष के दो अवान्तर भेद और होते हैं—कर्मधारय और द्विगु। कुछ वैयाकरण इन दोनों को स्वतंत्र समास मानते हैं। उनकी मान्यता के अनुसार समास के छह भेद होते हैं।

कर्मधारय—विशेष्य और विशेषण के या उपमा और उपमेय के रूप में जहां दो शब्दों का मेल होता है वह कर्मधारय समास होता है। अथवा जिस समास के विग्रह में दोनों पदों के साथ एक ही विभक्ति आती है उसे कर्मधारय समास कहते हैं। कर्म का अर्थ है क्रिया। इस समास के सब पद एक ही क्रिया में अन्वित होते हैं। इसके छह भेद होते हैं—

(१) **विशेषणपूर्वपद**—जिसमें पूर्वपद विशेषण हो। जैसे–कृष्णश्चासौ सर्पश्च=कृष्णसर्पः। यहां 'कृष्ण' सर्प का विशेषण है।

(२) **विशेषणोत्तरपद**—जिसमें उत्तरपद विशेषण हो। **जैसे**—आचार्यश्चासौ प्रवरश्च=आचार्यप्रवरः। यहां 'प्रवर' आचार्य का विशेषण है।

(३) **विशेषणोभयपद**—जिसमें दोनों पद विशेषण हो। **जैसे**—शीतं च उष्णं च=शीतोष्णम्।

(४) **उपमानपूर्वपद**—जिसमें पहिला शब्द उपमावाची हो। **जैसे**—घन इव श्यामः=घनश्यामः।

(५) **उपमेयउत्तरपद**—जिसमें उत्तरपद उपमेयवाची हो। **जैसे**—पुरुषः सिंह इव=पुरुषसिंहः।

(६) **अवधारणबोधक (निश्चयबोधक)**—जिसका पहिला पद किसी भी अर्थ में हो और वह दूसरे पद से जोडा जाये उसे 'अवधारण बोधक' कहते है। जैसे—विद्या एव धनम्=विद्याधनम्।

द्विगुसमास—*जिसमें पूर्वपद संख्यावाची हो उसे द्विगु* समास कहते हैं। यथा—त्रयाणां पथां समाहारः=त्रिपथम्। द्वादशानां अङ्गानां समाहारः=

द्वादशाङ्गी । यह एक प्रकार से कर्मधारय का ही उपभेद है । क्योंकि संख्यावाची शब्द विशेषण ही होते हैं । द्विगुसमास प्रायः समुदायबोधक होता है ।

नियम १७७—(नञत्) अन् स्वरे ३।२।९७,१०१) नञ् तत्पुरुष में उत्तरपद हस आदि वाला हो तो पूर्वपद में 'न' का 'अ' हो जाता है । उत्तरपद स्वर आदि वाला हो तो 'न' को 'अन्' आदेश हो जाता है। जैसे—न हिंसा = अहिंसा । न सत्यं = असत्यम् । न अश्वः = अनश्वः । न अद्यतनः = अनद्यतनः ।

तत्पुरुषसमास में निम्नलिखित शब्दों से ट (अ) प्रत्यय हो जाता है और ट होने से वे शब्द अकारान्त बन जाते हैं—

क—(सखेष्टः ८।३।६)—सखि शब्द अन्त वालों से । जैसे—राजसखः, महासखः ।

ख—(राज्ञोऽस्त्रियाम् ८।३।७)—स्त्रीलिंग में छोडकर राजन् शब्द अंत में हो तो । जैसे—देवराजः, महाराजः ।

ग—(अह्नः ८।३।८)—अहन् शब्द अन्त में हो तो । जैसे—परमाहः, उत्तमाहः ।

घ—(संख्यातादऽह्नश्च वा ८।३।९)—पूर्वपद में संख्यात शब्द हो तो अहन् को अह्न आदेश विकल्प से हो जाता है । जैसे—संख्यातमहः = संख्याताह्नः, संख्याताहः ।

ङ—(सर्वांशसंख्यातपुण्यवर्षादीर्घाच्च रात्रेः ८।३।५५) सर्व शब्द, अंशवाची (एकदेशवाची) शब्द, संख्यावाची और अव्यय से परे अहन् शब्द से ट प्रत्यय हो जाता है और अहन् को अह्न आदेश हो जाता है । जैसे—सर्वमहः = सर्वाह्नः । (अंशवाची-) अपराह्नः मध्याह्नः, सायाह्नः । (संख्यावाची-) द्वयोरह्नोर्भवः—द्वयह्नः । (अव्यय-) अत्यह्नी कथा, निरह्नी वेला ।

च—(ग्रामकौटात् तक्षणः ८।३।१३)—ग्राम और कौट शब्द से परे तक्षन् शब्द अन्त में हो तो । जैसे—ग्रामतक्षः (गांव का बढई), कौटतक्षः (कटी शाला, तस्यां भवः कौटः । वह बढई जो अपनी दूकान में स्वतंत्र काम करता हो, किसी से प्रतिबद्ध न हो

छ—(गोष्ठातेः शुनः ८।३।१४)—गोष्ठ और अति से परे श्वन् शब्द से ट प्रत्यय हो जाता है । गोष्ठे श्वा = गोष्ठश्वः (गोष्ठी में अधिक बोलने वाला), अतिक्रांतः श्वानं—अतिश्वो वराहः (तेज दौड़ने वाला सूअर) ।

ज—(प्राणिन उपमानात् ८।३।१५)—प्राणिवाची उपमान से परे श्वन् शब्द अंत में हो तो ट प्रत्यय हो जाता है । व्याघ्रः स चासौ श्वा च—व्याघ्रश्वः (बाघ की तरह कुत्ता) ।

झ—(मृगपूर्वोत्तराच्च सक्थ्नः ८।३।१७)—मृग, पूर्व, उत्तर और उपमानवाची शब्दों से परे सक्थि शब्द से । मृगस्य सक्थि = मृगसक्थम् (मृग की हड्डी) । पूर्वं सक्थि = पूर्वसक्थम्, सक्थनः पूर्वं = पूर्वसक्थम् । उत्तरं सक्थम्—

उत्तरसक्थम् । (उपमान-) फलकं च सक्थि च फलकसक्थि (गाडी का लट्ठा) ।

अ—(जनपदेभ्यो ब्रह्मण: ८।३।१८)—जनपदवाची शब्दों से परे ब्रह्मन् शब्द से । अवन्तौ ब्रह्मा—अवन्तिब्रह्मा:, सुराष्ट्रब्रह्मा:, काशिब्रह्मा: ।

ट—(कुमहद्भ्यां वा ८।३।१९)—कु और महत् शब्द से परे ब्रह्मन् शब्द से विकल्प से । पापो ब्रह्मा—कुब्रह्मा, कुब्रह्मा: । महान् ब्रह्मा—महाब्रह्मा, महब्रह्मा: ।

ठ—(उरसोग्रे ८।३।११)—उरस् शब्द का अर्थ अग्र (मुख और प्रधान) हो तो । अश्वाश्च ते उरश्च अश्वोरसं, सेनाया अश्वा मुखमित्यर्थ: । अश्वानां उर: अश्वोरसं, अश्वानां प्रधानमित्यर्थ: ।

ड—(अनोश्मायस: सरसो जातिसंज्ञयो: ८।३।१२)—जाति और संज्ञा के अर्थ में अनस्, अश्मन्, अयस्, सरस् शब्द हो तो । उपानसं अन्नविशेषस्य जाति: । महानसं पाकस्थानस्य संज्ञा । स्थूलाश्म: कनकाश्म:—अश्मजातिविशेषा: । कालायसं लोहितायसं—अयोजातिविशेषा: । जातसरसं, मण्डूक सरसं—सरसीजाति ।

प्रयोगवाक्य

संसदि विपक्ष: बलवान् नास्ति । प्रतिपक्षेण विना अन्त्याक्षरी भवितुं नालम् । अतिगङ्ग: सुधीर: सभायां भाषते । अनद्यतन: रविवारोऽस्ति । भरत: महाराज: आसीत् । रूसदेश: भारतदेशस्य महासखोऽस्ति । संख्याताह्न: व्यतीत: अस्य पञ्चमारस्य । सायाह्ने मोहन: सामायिकं करोति: । अतिश्वो वराह: मोहनस्य पार्श्वे विद्यते । काशिब्रह्मा: विद्वान् भवति । समुद्रे नीरं कदा वर्धते । साम्प्रतं मोहन: कुत्र वर्तते । इदं नगरं कदा बभ्रंसे दध्वंसे वा ? मह्यं पुस्तकं रोचते । नृप: राज्ञीभि: सह उद्याने रमते । य: दुर्जनवाक्यानि सहते सोऽस्ति महान् ।

संस्कृत में अनुवाद करो (तत्पुरुष समास में)

धर्मचन्द्र घोडे के अभाव में पैदल चलता है । असत्यभाषी का कौन विश्वास करता है ? मंत्री राजा का मित्र होता है । देवताओं का राजा इंद्र है । उत्तम दिन की क्या पहचान है ? रमेश संपूर्ण दिन पढता है । दोपहर में सोना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद नहीं है । दोनों दिनों के प्रश्नों को हल करो । गांव का बढई गाँव के लिए उपयोगी है । गोष्ठी में अधिक बोलनेवाला सम्मान नहीं पाता । मृग की हड्डियों का क्या उपयोग होता है ? यहां काशी का ब्राह्मण आया है । प्रिंसिपल (प्राचार्य) बनना सरल नहीं है । गंगा को उल्लंघना सरल नहीं है । कुल की मर्यादा को उल्लंघ कर उसने यह कार्य अच्छा नहीं किया है ।

अनुवाद करो

अतिश्रम करने वाला थकान का अनुभव करता है । क्या तुम बाजार

से पांच चमचे, दो थाली, एक सिघडी, एक तवा, एक कडाही और एक चिमटा लाये हो ? रसोई में चूल्हा कहां रखोगे ? बुहारी से कमरा कौन साफ करेगा ? खरल में क्या पीसोगे ? किवाड के आगल किसने लगाई है ? इस किवाड के चटकनी है या नहीं ? लोढी से क्या करोगे ? तुम्हारी चालनी मुझे दो। चक्की में क्या डाला है ? झारी में थोड़ा पानी है। क्या तुम्हारे पास दियासलाई है ? वृक्ष क्यों बढता हैं ? पुस्तक कहां है ? मदिरा से बुद्धि नष्ट होती है। बालक घर में क्रीडा करते हैं। पृथ्वी सब कुछ सहन करती है। रमेश को लड्डू अच्छे लगते हैं।

अभ्यास

१. तत्पुरुष समास के विभक्तियों के आधार पर कितने भेद हैं ? एक-एक उदाहरण दो।

२. बहुव्रीहिरूपक तत्पुरुष समास किसे कहते हैं ? उदाहरण देते हुए लिखें।

३. तत्पुरुषसमास में विग्रह करो—
अदेवः, परमाहः, संख्याताहः, सुराष्ट्रब्रह्मः, मृगचपला, हंसशुभ्रा, वृषभसिंहः, रक्तशाटी, महानसं, कौटतक्षः, गोष्ठश्वः।

४. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
ग्रामतक्षः हस्त्युरसं, अत्यह्नीकथा अतिश्वः, कुब्रह्मा।

५. नीचे लिखे शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
बुहारी, चक्की, खरल, सिघडी, दियासलाई, चिमटा, चुल्हा, झारी, लोढी।

६. कति और उभ शब्द के रूप लिखो।

७. ईक्षङ् धातु के रूप लिखो।

पाठ ३२ : समास ३ (बहुव्रीहि समास)

शब्दसंग्रह

मरिचं, पवितं, कोलकं (काली मिरच) । रुचिष्यः (पोदिना) । भृगं, चोचं, चोलं (दालचीनी) । चविका, चायं (चाय) । राजपलाण्डुः, यवनेष्टः (प्याज) । क्वथिका (कढी) । झर्झरिका (उडद की रोटी) । पिष्टिकः (चावल की पीठी) । पोलिका (एक प्रकार की पूरी, पूआ) । संधानं, संधितं (अचार) । कट्वरं (चटनी, अचार) । भक्तं (भात) । परोठाः (पराँठा) । पूपः (मीठा पूआ) । राज्यक्तं, दाधेयं (रायता) । रोटिका (रोटी) । फुलका (फुलका, पतली रोटी) । किलाटः (पनीर फटे हुए दूध का घनीभूत भाग) । अवदंशः (चाट) । समोषः (समोसा) । पक्ववटिका (पकोड़ी) ।

(धातु)—श्रिन्—सेवायाम् (श्रयति, श्रयते) सेवा करना । णींन्—प्रापणे (नयति, नयते) प्राप्त करना । टुडुयाचृन्—याञ्चायाम् (याचति, याचते) याचना करना । डुपचंषन्—पाके (पचति, पचते) पकाना । राजृन्—दीप्तौ (राजति, राजते) दीप्त होना । भजंन्—सेवायाम् (भजति, भजते) सेवा करना ।

श्रिन् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ७४) । णीन् के रूप श्रिन् की तरह चलते हैं । याच् से भजंन् तक के रूप वदिङ् की तरह चलते हैं ।

बहुव्रीहि समास

जिन समास करने वाले पदों में पूर्वपद और उत्तरपद की प्रधानता न हो, अन्य पद प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं । बहुव्रीहि समास विशेषण बनता है । विशेष्य के अनुसार इसमें लिंग और वचन होते हैं । समास से पूर्व की स्थिति को विग्रह कहते हैं । विग्रह में यत् शब्द का प्रयोग किया जाता है । यत् शब्द विशेष्य से सम्बन्ध रखता है । यत् शब्द में द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है । बहुव्रीहि समास में जिन शब्दों में समास होता है, वे शब्द 'तत्' शब्द के द्वारा सूचित अर्थ के विशेषण बन जाते हैं । जैसे —

द्वितीया—आरूढो नृपो यं—स आरूढनृपो हस्ती ।
तृतीया—दृष्टो मार्गो येन—स दृष्टमार्गो मुनिः ।
चतुर्थी—उपहृतः नालिकेरो यस्मै—सः उपहृतनालिकेरः अध्यापकः ।
पंचमी—निर्गतं भयं यस्मात्—स निर्भयः ।

षष्ठी—श्वेतमम्बरं यस्य—स श्वेताम्बरः मुनिः ।
सप्तमी—सूक्ष्माणि अक्षराणि यस्मिन्—तत् सूक्ष्माक्षरं पत्रम् ।

नियम

बहुव्रीहि समास में प्राग् निपात के लिए निम्नलिखित नियम ध्यान से पढ़ें—

नियम १७९—(क) (सर्वादिश्च बहुव्रीहौ ३।१।१९०) सर्वादि शब्द और संख्यावाची शब्दों का प्राग् निपात हो जाता है । जैसे—सर्वं शुक्लं अस्य स सर्वशुक्लः, विश्वदेवः, उभयचेतनः । द्वौ कृष्णौ गुणौ यस्य सः द्विकृष्णः गुणः । चतुर्ह्रस्वः ।

ख. (विशेषणम् ३।१।१९१) विशेषण का प्राग् निपात होता है—शबलाः गावो यस्य स शबलगुः ।

ग. (प्रियो वा ३।१।१९२) प्रिय शब्द का प्राग् निपात विकल्प से होता है—प्रियः गुडः अस्ति यस्य सः प्रियगुडः, गुडप्रियः ।

घ. (सप्तम्यन्तम् ३।१।१९३) सप्तम्यन्त नाम का प्राग् निपात होता है—कण्ठे कालः अस्ति यस्य सः कण्ठेकालः ।

ङ. (नेन्द्वादिभ्यः ३।१।१९५) बहुव्रीहि समास में इन्दु, चन्द्र, शशि, पद्म, ऊर्ण, शंख, दर्भ आदि शब्दों से आगे सप्तम्यन्त नाम होने पर उनका प्राग् निपात नहीं होता—इन्दुः मौलौ अस्ति यस्य सः इन्दुमौलिः, शशिशेखरः, पद्मनाभः, ऊर्णनाभः, पद्महस्तः, शंखपाणिः, दर्भपवित्रपाणिः, पद्मपाणिः ।

च. (गड्वादिभ्यो वा ३।१।१९४) सप्तम्यन्त नाम के आगे गड्डु, अरु, गुरु ये शब्द हों तो विकल्प से प्राग् निपात होता है—कण्ठेगड्डुः, गड्डुकण्ठः, मध्येगुरुः, गुरुमध्यः, शिरस्यरुः, अरुःशिराः ।

छ. (प्रहरणेभ्यः ३।१।१९६) प्रहरणवाचि (शस्त्रवाची) शब्दों से आगे सप्तम्यन्त नाम होने पर भी उनका प्राग् निपात नहीं होता—दण्डपाणिः, असिपाणिः, चक्रपाणिः, शूलपाणिः, सारङ्गपाणिः, धनुष्यपाणिः, धनुर्हस्तः ।

ज. (क्तान्तं वा ३।१।१९७) शस्त्रवाची शब्दों से आगे क्त प्रत्ययान्त नाम हो तो उसका प्राग् निपात विकल्प से होता है—उद्यतः असि अनेन उद्यतासिः, अस्युद्यतः । उद्यतचक्रः, चक्रोद्यतः ।

झ. (शेषे ३।१।१९८) बहुव्रीहि समास में क्त प्रत्ययान्त नाम का नित्य प्राग् निपात हो जाता है—कृतः कटो अनेन कृतकटः । पीतं दुग्धं येन पीतदुग्धः ।

ञ. (जातिकालसुखादेः ३।१।२००) जातिवाची शब्द, कालवाची शब्द और सुख आदि (सुख, दुःख, तृप्र, कृच्छ्र, अस्र, अलीक, करुण, कृपण, सोढ, प्रतीप) शब्दों से आगे क्त प्रत्ययान्त नाम हो तो उसका प्राग् निपात

विकल्प से होता है—पलाण्डुभक्षिणी, भक्षितपलाण्डुः। पाणिगृहीती, गृहीतपाणिः। (काल) मासगतः, गतमासः। (सुख) सुखयाता, यातसुखा, हीनदुःखा, दुःखहीना।

नियम १८०—(स्वाङ्गादीपो जातेश्चामानिनि ३।२।६०) स्वांगवाची शब्द और जातिवाची शब्द से आगे स्त्रीलिंग में ईप् प्रत्यय हो तो बहुव्रीहि समास में वह पुंवत् नहीं होता है, मानिन् शब्द उत्तरपद में न हो तो—दीर्घकेशीभार्यः, चन्द्रमुखीभार्यः, ब्राह्मणीभार्यः।

नियम १८१—(द्विपदाद्धर्मादन् ८।३।७४) एक पद पूर्व में हो और अन्त में धर्म शब्द हो तो उससे बहुव्रीहि समास में अन् प्रत्यय हो जाता है—सुष्ठुधर्मः अस्ति यस्य सः सुधर्मन् (सुधर्मा), कल्याणधर्मा।

नियम १८२—(खरखुरान्नासिकाया नस्—८।३।८४) खर, खुर से आगे नासिका शब्द को नस् आदेश हो जाता है यदि किसी की संज्ञा बनती हो तो। गौरिव नासिका यस्य सः गोनसः। दुरिव नासिका यस्य दुनसः, खरनसः।

नियम १८३—(उपसर्गात् ८।३।८६) उपसर्ग से परे नासिका शब्द हो तो बहुव्रीहि समास में उसे नस् आदेश हो जाता है यदि किसी की संज्ञा नहीं बनती हो तो—उद्गता नासिका अस्य स उन्नसः।

नियम १८४—(नसस्य २।२।७५) पूर्वपद में उपसर्ग हो और उसमें र, ष, ऋ हो तो नस् के न् को ण हो जाता है—प्रगता नासिका अस्य प्रणसं—मुखम्, निर्णसं मुखम्।

नियम १८५—(जायाया जानिः ८।३।८८) जाया शब्द अन्त में हो तो उसे जानि आदेश हो जाता है। युवतिः जाया अस्ति यस्य सः युवजानिः।

नियम १८६—(सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः ८।३।१०४) मित्र अर्थ में सुहृद् और अमित्र अर्थ में दुर्हृत् शब्द निपात हो जाता है। अन्य स्थानों पर अन्त में हृदय शब्द ही रह जाता है—सुष्ठु हृदयं यस्य सः सुहृत् मित्रः। दुर्हृत् अमित्रः। सुहृदयो मुनिः।

नियम १८७—(ऋन्नित्यदितः ८।३।१०९) ऋकारान्त शब्दों (जिनको नित्य दै, दास्, दाम् आदेश होते हैं) से बहुव्रीहि समास में कप् प्रत्यय हो जाता है—बहवः कर्तारः सन्ति यस्मिन् सः बहुकर्तृकः।

नियम १८८—(क) (नञ्सुदुर्भ्यः प्रजाया अस् ८।३।७२) नञ्, सु, दुर् (दुः) से आगे प्रजा शब्द से बहुव्रीहि समास में 'अस्' प्रत्यय हो जाता है—जैसे—अविद्यमानाः प्रजा अस्य अप्रजाः (अप्रजस्)। सुप्रजाः। दुःप्रजाः।

(ख) (मन्दाऽल्पाच्च मेधायाः ८।३।७३) मन्द, अल्प और नञ्, सु, दुर् से आगे मेधा शब्द से बहुव्रीहि समास में 'अस्' प्रत्यय हो जाता है। जैसे—मन्दा मेधा अस्य मन्दमेधाः (मन्दमेधस्)। अल्पमेधाः। अमेधाः। सुमेधाः। दुर्मेधाः।

नियम १८९—(संख्याया बहुव्रीहेः ८।३।७०) संख्यावाची शब्दों से बहुव्रीहि समास में 'ड' प्रत्यय हो जाता है। जैसे—द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः। पञ्चषाः। द्विदशाः। त्रिदशाः।

नियम १९०—(सूत्-पूति-सुरभिभ्यो गन्धादिद् गुणे ८।३।८९) सु, उत्, पूति, सुरभि शब्दों से परे गंध शब्द हो तो बहुव्रीहि समास में 'इत्' प्रत्यय हो जाता है यदि गंध शब्द गुण अर्थ में हो तो। जैसे—शोभनो गन्धो गुणोऽस्य सुगन्धि चन्दनम्। उद्गन्धि कमलम्। पूतिगन्धि करञ्जम्। सुरभिगन्धि केसरम्।

नियम १९१—(क) (पादस्य लोपोऽहस्त्यादेः ८।३।९३) हस्तिन् आदि शब्दों को (हस्तिन्, अश्व, कटोल, कटोलक, कण्डोल, कण्डोलक, गण्डोल, गण्डोलक, गडोल, गडोलक, गण्ड, महेला, दासी, गणिका, कुसूल, कपोत, जाल, अज) छोडकर उपमानवाची शब्दों से आगे बहुव्रीहि समास में पाद शब्द के 'द' के अ का लोप हो जाता है। जैसे—व्याघ्रस्येव पादावस्य व्याघ्रपात्। सिंहपात्। ऋक्षपात्।

नियम १९२—(सुसंख्यायाः ८।३।९५) सु और संख्यावाची शब्द पूर्व में हो तो पाद के 'द' के 'अ' का लोप हो जाता है। जैसे—शोभनौ पादावस्य सुपाद्, द्विपाद्, त्रिपाद्, चतुष्पाद्।

स्त्रीलिंग में ईप् विकल्प से होने से और पाद को पद् आदेश होने पर—सुपदी, सुपाद् रूप बनता है। द्विपदी, द्विपाद्। शतपदी, शतपाद्।

नियम १९३—(संप्राज्जानोर्ज्ञौ) ऊर्ध्वाद्वा ८।३।७९,८०) सम्, प्र से आगे जानु शब्द को बहुव्रीहि समास में ज्ञु, ज्ञ विकल्प से आदेश होते हैं। जैसे—संगते जानुनी अस्य संज्ञुः, संज्ञः। प्रकृष्टे जानुनी अस्य प्रज्ञुः, प्रज्ञः। ऊर्ध्वे जानुनी अस्य ऊर्ध्वज्ञुः, ऊर्ध्वज्ञः, ऊर्ध्वजानुः।

नियम १९४—(धनुषो धन्वन् ८।३।८२) धनुष् शब्द को बहुव्रीहि समास में धन्वन् आदेश हो जाता है। जैसे—शार्ङ्गं धनुरस्य शार्ङ्गधन्वा। (धन्वन्)। पिनाकधन्वा। गाण्डीवधन्वा।

प्रयोगवाक्य

पद्मपाणिः मुनिः कुत्रास्ति ? गडुकण्ठः कोऽस्ति ? दण्डपाणिं जनकं दृष्ट्वा पुत्रोऽधावत्। सुखयाता रजनी। हीनदुःखा बाला केयम् ? चन्द्रमुखी-भार्यं रामचन्द्रं को भाषयति ? युवाजानिना सुभाषेन किं उक्तम् ? सुहृदां सर्वत्र सत्कारो भवति। सुप्रजाः नृपः सुखमनुभवति। अमेधा न किमपि कर्तुं शक्नोति। ऋक्षपात् पुरुषोऽयम्। सुपदी इयं बाला। अहं गुरुं श्रयामि श्रये वा। त्वं एतद् पुस्तकं कुत्र अनैषीः ? मुनिः भिक्षां याचति याचते वा। जननी भोजनंपच ति पचते वा। रात्रौ गगने तारकाः राजन्ति राजन्ते वा।

संस्कृत में अनुवाद करो (पाठ में आये शब्दों का प्रयोग करें)

गाय का सारा शरीर सफेद है। चार ह्रस्व वर्ण वाला शब्द कौनसा है? शबली गाय वाला रमेश क्या कहना चाहता है? गुडप्रियवाला देश कौनसा है? जिसके शिर पर शिखा है उस व्यक्ति को बुलाओ। जिसके मुकुट पर चंद्रमा है वह व्यक्ति कौन है? हाथ में तलवार लिए महेन्द्र को देखकर बच्चे डरते हैं। दूध पीकर जाने वाली बिल्ली को देखो। प्याज खाने वाले लोग किस प्रदेश में रहते हैं? लंबे केश वाली स्त्री अपने केशों को ठीक करे। जिसका धर्म अच्छा है वह अपने धर्म की व्याख्या करे। उन्नत नाक वाले लोग जापान में कितने हैं? नासिका रहित मुख सुन्दर नहीं लगता। यह प्रासाद अनेक कर्ताओं द्वारा बना है। प्रजा रहित राजा का क्या महत्त्व है? अल्पबुद्धि वालों को श्रम करना चाहिए। जिसके पैर बाघ की तरह है वह व्यक्ति कहां है? अच्छे पैर वाला बालक सुगमता से दौड़ सकता है।

संस्कृत में अनुवाद करो

बाजार से काली मीरच लाओ। पोदिना गर्मी को शान्त करता है। दालचीनी कौनसे डिब्बे में है? क्या तुम चाय पीते हो? रमेश प्याज नहीं खाता है। कढी पाचक होती है। मोहन को उडद की रोटी अच्छी लगती है। रमा चावल की पीठी से क्या बनाती है? तुम कितने फुलके खा सकते हो? अचार अनेक प्रकार का होता है। गजेन्द्र को सलूना साग अच्छा नहीं लगता। सुमन के लिए भात और पराँठे लाओ। पनीर गरिष्ठ नहीं होता है। गणेश चाट, समोसा और पकोडी नहीं खाता है। आज माँ ने पूडा और रायता बनाया है। शिष्य गुरु की सेवा करता है। तुमने धन कहां पाया? बहिन भाई से क्या मांगती है? रसोइया रात्रि में भोजन नहीं पकाता है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों का बहुव्रीहि समास में विग्रह करो—
विश्वदेवः। पद्मपाणिः। गुरुमध्यः। शूलपाणिः। चक्रोद्यतः।
ब्राह्मणीभार्यः। खरनसः। कल्याणधर्मा।

२. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बताओ—
यवनेष्टः, कट्वरं, झर्झरिका, किलाटः, भृगं, चविका, चोचं, पोलिका।

३. बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं? उसकी विधि क्या है?

४. वृतुङ् और द्युतङ् धातु के रूप लिखो।

पाठ ३३ : समास ४ (द्वन्द्वसमास)

शब्दसंग्रह

अवलेहः, लालसिकं (चटनी)। तृषरः (मीठे चावल)। प्रलेहः (एक प्रकार का व्यंजन)। मिष्टपाकः (मुरब्बा)। रागपाडवः (आम का मुरब्बा)। लप्सिका (लपसी)। वेढमिका (मिस्सीरोटी)। रोटिका, रोटका (रोटी)। वटी, वटिका (बडी)। अंगारपरिपाचितः (वाटी)। घार्तिकः (मालपुआ)। संयावः (हलुवा, गोझिया)। पूरिका, सुपिष्टिका (कचोरी)। यवनालः (ज्वार)। प्रियंगुः (बाजरा)। चणकचूर्णम् (बेसन)। मिश्रचूर्णम् (मिस्सा आटा)। आढकी (अरहर)। द्विदलम् (दाल)। चूर्णम् (आटा)। भाजी (भाजी-साग)।

धातु—रञ्जन्—रागे (रजति, रजते) राग करना। गुहून्—संवरणे (गूहति, गूहते) छिपाना। बुधून्—बोधने (बोधति, बोधते) जानना। खनुन्—अवदारणे (खनति, खनते) खोदना। धावुन्—गतिशुद्ध्योः (धावति, धावते) दौड़ना, साफ करना। लषन्—कान्तौ (लषति, लषते) चमकना। भक्षन्, भ्लक्षन्—भक्षणे (भक्षति, भक्षते। भ्लक्षति, भ्लक्षते)।

रञ्जन् और गुहून् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ३६,७५)। बुध् से लेकर भ्लक्ष तक के रूप आत्मनेपद में वदिङ् की तरह और परस्मैपद में प्रायः भू की तरह चलते हैं। कुछ रूपों में भिन्नता है।

द्वन्द्वसमास

जिसमें सब पद प्रधान हों और जिसके विग्रह में 'च' शब्द का प्रयोग होता हो उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। इसके दो भेद हैं—

१. इतरेतर २. समाहार

इतरेतर—जिसमें पृथक्-पृथक् प्रत्येक शब्द का समान महत्त्व होता है उसे इतरेतरद्वन्द्व कहते हैं। जितने पद होते हैं उन्हीं के अनुसार द्विवचन और बहुवचन होता है। जैसे—मरुदेवा च ऋषभश्च=मरुदेवऋषभौ। ऋषभश्च मरुदेवा च=ऋषभमरुदेवे। समास होने के बाद जो अन्तिम शब्द का लिंग होता है वही रहता है।

समाहार—जिसमें पृथक्-पृथक् शब्दों का महत्त्व न होकर सिर्फ समूह का महत्त्व होता है उसे समाहारद्वन्द्व या एकत्वद्वन्द्व कहते हैं। इसमें सिर्फ

एकवचन और नपुंसकलिंग होता है। जैसे पाणी च पादौ च—पाणिपादम्। अश्वश्च महिषश्च—अश्वमहिषम्।

नियम

द्वन्द्व समास में प्राग् निपात के लिए निम्नलिखित नियमों को ध्यान से पढ़े —

नियम १९५—(क)—(द्वन्द्वे लघ्वक्षरमेकम् ३।१।१६८)—जो शब्द लघु अक्षर वाला हो उसका प्राग् निपात होता है। यदि लघु अक्षर के अनेक पद हों तो उनका क्रमशः प्राग् निपात होता है। जैसे—तिलमाषौ, घटशंखपटाः, पटशंखघटाः।

ख—(अल्पस्वरम् ३।१।१७६)—अल्प स्वर वाले पद का प्राग् निपात होता है। जैसे—धवखदिरौ, वागर्थौ।

ग—(इदुदन्तमसखि ३।१।१७०)—सखि शब्द को छोडकर इकारांत, उकारांत शब्द का प्राग् निपात होता है। यदि इकारांत, उकारांत शब्द संज्ञा में हो तो उनका इच्छानुसार प्राग् निपात कर सकते हैं। जैसे—पतिसुतौ, वायुतोयं, पतिवसू, वसुपती।

घ—(न जायापत्यादिषु ३।१।१७१)—जाया, भार्या, पुत्र, स्वसृ इनके आगे पति शब्द हो तो इकारांत होने पर भी उसका प्राग् निपात नहीं होता। जैसे—जायापती, भार्यापती, पुत्रपती, स्वसृपती।

ङ—(गुणवृद्ध्यादिषुवा ३।१।१७२) इन शब्दों का प्राग् निपात विकल्प से होता है। जैसे—गुणवृद्धी, वृद्धिगुणौ, सर्पिमधुनी, मधुसर्पिषी, दीर्घलघू, लघुदीर्घौ, चंद्रराहू, राहुचन्द्रौ।

च—(स्वराद्यदन्तम् ३।१।१७३)—स्वर आदि और अकार अन्त वाले शब्दों का प्राग् निपात होता है, जैसे—अश्वखरम्, अश्वखरौ। समाहारद्वन्द्वसमास में 'खर' में नपुंसकलिंग और एकवचन हुआ है और इतरेतर द्वन्द्व करने से 'खर' शब्द में द्विवचन हुआ है।

छ—(न शूद्रार्यादिषु ३।१।१७४)—शूद्रार्यौ, अवन्तीअश्मकौ, विश्वसेनार्जुनौ, विषयेन्द्रियाणि, राजाश्वौ इनमें स्वर आदि और अकार अंत में होने पर भी प्राग् निपात नहीं होता है।

ज—(धर्मार्थादिषु ३।१।१७५) धर्मार्थौ, अर्थधर्मौ, कामर्थौ, अर्थकामौ, धर्मार्थौ अर्थधर्मौ. आद्यन्तौ. अन्तादी. अग्नीन्द्रौ, इन्द्राग्नी, चंद्राकौ, अर्कचंद्रौ, अश्वत्थकपित्थौ, कपित्थाश्वौ इनम स्वर आाद आर अकारान्त हान पर भा प्राग् निपात विकल्प से होता है।

(झ) (समीरणाग्न्यादिषु वा ३।१।१७८)—समीरणाग्नी, अग्निसमीरणौ, आदित्यचंद्रौ, चंद्रादित्यौ, पाणिनीयरौढीयाः, रौढियपाणिनीयाः इनमें अल्प स्वर होने पर प्राग् निपात विकल्प से होता है।

ञ—(अर्चितम् ३।१।१७९)—द्वन्द्वसमास में जो पूज्य होता है उसका प्राग् निपात होता है। जैसे—निर्ग्रन्थगृहस्थौ, देवदेव्यौ, मातापितरौ, वधूवरौ।

नियम १९६ (क)—(मासर्तुभ्रातृनक्षत्राण्यानुपूर्व्येण ३।१।१८२)—द्वंद्व समास में मासवाची, ऋतुवाची, भ्रातृवाची और नक्षत्रवाची शब्दों को आनुपूर्व्य (क्रम से) प्राग् निपात होता है। जैसे—फाल्गुनचैत्रौ, वैशाखज्येष्ठौ, हेमन्तशिशिरौ, हेमन्तशिशिरवसंताः, युधिष्ठिरार्जुनौ, कृत्तिकारोहिण्यौ, अश्विनी-भरणीकृत्तिकाः। वसन्त और ग्रीष्म शब्द को विकल्प से प्राग् निपात होता है। वसन्तग्रीष्मौ, ग्रीष्मवसन्तौ।

ख—(न पाण्डुधृतराष्ट्रादिषु ३।१।१८४) पाण्डुधृतराष्ट्रौ, विष्णुवासवौ भ्रातृवाची शब्द होने पर भी इनका आनुपूर्वी से प्राग् निपात नहीं होता।

ग—(भीमसेनार्जुनादिषु वा ३।१।१८५)—भीमसेनश्च अर्जुनश्च=भीमसेनार्जुनौ, अर्जुनभीमसेनौ। इसमें प्राग् निपात विकल्प से होता है।

घ—(न पुष्यपुनर्वस्वादिषु ३।१।१८६)—पुष्यपुनर्वसू, तिष्यपुनर्वसू; मघाश्लेषे, आर्द्रामृगशिरसी नक्षत्रवाची इन शब्दों का आनुपूर्वी से प्राग् निपात नहीं होता है।

नियम १९७—(नित्यवैरिणाम् ३।१।१५२) जिनका जातिनिबद्ध वैर हो उनका द्वंद्वसमास में समाहार (एकत्व) समास होता है। जैसे—अहि-नकुलम्, मार्जारमूषकम्, अश्वमहिषम्।

नियम १९८—(विरोधिनामद्रव्याणाम् ३।१।१६०)—परस्पर विरोधि शब्द यदि द्रव्य के विशेषण न हो तो उनका द्वंद्व समास में समाहार विकल्प से होता है। जैसे—सुखदुःखम्, सुखदुःखे, लाभालाभम्, लाभालाभे, संयोगविभागम् संयोगविभागौ।

नियम १९९—(फलानां जातौ ३।१।१५७) यदि फलवाची शब्द बहु-वचन के द्योतक हों तो उनका द्वंद्वसमास में (एकत्व) समास होता है। जैसे बदराणि च आमलानि बदरामलकम्।

नियम २००—(वा वृक्षतृणधान्यमृगशकुनीनाम् ३।१।१५८) वृक्ष, तृण, धान्य, मृग, शकुनि इनका द्वंद्वसमास में एकत्व विकल्प से होता है। (वृक्ष)—प्लक्षाश्च न्यग्रोधाश्च=प्लक्षन्यग्रोधं, प्लक्षन्यग्रोधाः। (तृण)—कुशकाशं, कुशकाशाः (धान्य)—व्रीहियवं, व्रीहियवाः। (मृग)—रुरुपृषतं; रुरुपृषताः। (शकुनि)—शुकबकं, शुकबकाः।

नियम २०१—(पशुव्यञ्जनानाम् ३।१।१५९)—पशुवाची और व्यञ्जनवाची शब्दों से द्वंद्वसमास में एकत्व विकल्प से होता है। जैसे—गौश्च महिषश्च=गोमहिषं, गोमहिषौ। व्यञ्जन—दधिघृतं, दधिघृते। शाकसूपं, शाकसूपौ।

नियम २०२—(अप्राणिजातीनाम् ३।१।१५०)—प्राणि को छोडकर जातिवाची शब्दों का द्वंद्वसमास में एकत्व हो जाता है। जैसे—धाना च शष्कुली च धानाशष्कुली। तरुशैलम्।

प्रयोगवाक्य

हेमन्तशिशिरयोः शीतं अधिकं बाधते। कृत्तिकारोहिण्योः कानि कार्याणि कर्तव्यानि सन्ति। पाण्डुधृतराष्ट्रौ भ्रातरौ आस्ताम्। मार्जारमूषकं विरोधस्य रूपकं भवति। अस्यां नगर्यां शूद्रार्यौ वसतः। चंद्राकौ कदा उदितः। माता पुत्रे रजति रजते वा। दुष्टः पापानि गूहति गूहते वा। कियन्तः मर्त्याः कूपं खनन्ति। दासः धावति धावते वा। वस्त्राणि कोऽधावीत् अधाविष्ट वा। रमा निशायां किमपि न भक्षति भक्षते वा।

संस्कृत में अनुवाद करो (द्वन्द्वसमास में)

~~[illegible]~~ कहां है ? माणक मेरी बहन का पति है। घी और मधु साथ में मत खाओ। राजा और मंत्री कहां है ? माता और पिता को नमस्कार करो। बैशाख और जेठ में गर्मी पड़ती है। युधिष्ठिर और अर्जुन भाई थे। पुष्य और पुनर्वसू ये दो नक्षत्र हैं। सांप और नेवले में सदा वैर रहता है। सुख और दुःख में सम रहने वाला ही मुनि होता है। मोहन के घर में गाय और भैंस हैं। प्रत्याहार में आदि और अंत का ग्रहण होता है। देव और दैत्यों का युद्ध किसने देखा था ? दीर्घ और लघु की क्या परिभाषा है ?

संस्कृत में अनुवाद करो

सोहन को चटनी अच्छी लगती है। आज मेरे घर में मीठे चावल बने हैं। माष के कोफले कौन खाता है ? रोटी के साथ भाजी चाहिए। सुरेन्द्र लपसी नहीं खाता है। मुरब्बा अनेक प्रकार का होता है। राजस्थानी लोग मोठ की रोटी खाते हैं। सीमा ने आज बडी बनाई है। मेवाडी लोगों को वाटी प्रिय है। हलवा कितने प्रकार का होता है ? तुम कौन सी दाल खाते हो ? ज्वार और बाजरा कहां उत्पन्न होता है ? घर में आटा नहीं है। शीला भाई से राग करती है। पापों को मत छिपाओ। बालक मिट्टी खोदता है। मोहन क्यों दौड़ा ? श्याम कपड़े धोता है। जैन साधु रात में नहीं खाते।

---

१. निम्नलिखित शब्दों का द्वंद्वसमास में विग्रह करें—
(१) बदरामलकम् (२) जायापती (३) अश्वखरम् (४) इन्द्राग्नी (५) धवखदिरौ (६) तरुशैलम्।

२. निम्नलिखित शब्दों में कौन से शुद्ध, कौन से अशुद्ध हैं और किस नियम से बतलाएं—

लाभालाभम्, लाभालाभौ, सुखदुःखम्, सुखदुःखे, संयोगविभागम्, संयोगविभागौ, अर्कचंद्रौ, चंद्राकौ, आद्यन्तौ, अन्तादी।

३. प्राग्निपात करने में कौन-सा नियम किसका बाधक है ?

४. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—

चटनी, मीठे चावल, कचोरी, लपसी, मुरब्बा, मालपुआ, वाटी, हलवा, बेसन, अरहर, मिस्सा आटा।

पाठ ३४ : समास ५ (अलुक्समास)

शब्दसंग्रह

गोराणी (गंवारफली) । निकोचनम् (पिस्ता) । मकायः (मक्का) । अश्वमाषः, कङ्कटुकः (कोरडु) । आम्रः, रसालः (आम) । दाडिमः (अनार) । पनसः (कटहल) । जम्बीरः (नींबू) । अश्वत्थः (पीपल) । निम्बः (नीम) । बिल्वः (बेल) । वातादः (बादाम) । द्राक्षा (अंगूर) । बदरी (बेर) । कदली, कदलीफलम् (केला) । नारिकेलफलम् (नारियल) । सेवफलम् (सेव) । नारंगफलम् (नारंगी) । आम्रलम् (अमरूद) । जम्बुः (जामुन) । जम्बीरकं (कागजी नींबू) । बीजपूरः (बिजौरा नींबू) । अमृतफलं (नाशपाती) । क्षुमानी (खुमानी) । आलुकं (आलूबुखारा) । तूतं (शहतूत) । लीचिका (लीची) । अंजीरं (अंजीर) ।

धातु—यजंन्—देवपूजासंगतिकरणदानेषु (यजति, यजते) देवपूजा करना, संगति करना, देना । वेंन्—तन्तुसन्ताने (वयति, वयते) सीना । ह्वेंन् स्पर्धाशब्दयोः (आह्वयति, आह्वयते) स्पर्धा और शब्द करना (बुलाना) । टुवपंन्—बीजसन्ताने (वपति, वपते) बीज बोना ।

यजंन्, वेंन् ह्वेंन् और वप् धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ७६ से ७९) ।

अलुक्समास

समास में विभक्तियों का लोप होता है । कुछ शब्द ऐसे हैं जिनमें समास करने पर भी उनकी विभक्तियों का लोप नहीं होता उन्हें अलुक्समास कहते हैं । उसके कुछ नियम ये हैं—

नियम २०३—(आत्मनः पूरणे ३।२।१४)—आत्मन् शब्द तृतीयान्त हो और उसके आगे संख्यावाची शब्द पूरण प्रत्ययान्त हो तो तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता । जैसे—आत्मनाचतुर्थः । आत्मनाषष्ठः ।

नियम २०४—(परात्मभ्यां चतुर्थ्याः ३।२।१७)—पर और आत्मन् शब्द चतुर्थी विभक्ति अंत वाले हों और उससे आगे पद शब्द हो तो विभक्ति का लोप नहीं होता । जैसे—परस्मैपदम्, आत्मनेपदम् ।

नियम २०५—(तत्पुरुषे कृति ३।२।२२)—अकारान्त और हसान्त शब्दों से आगे सप्तमी विभक्ति हो तो उसका लोप नहीं होता यदि कृदन्त प्रत्यय का रूप आगे हो तो । जैसे—स्तम्बेरमः । कर्णेजपः । प्रवाहेमूत्रितं ।

भस्मनिहुतम् ।

नियम २०६—(अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे ३।२।२१)—मूर्ध और मस्तक इन दो शब्दों को छोडकर अकारान्त और हसान्त शब्द स्वाङ्गवाची हों तो उनकी सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता काम शब्द को छोडकर उत्तर-पद में कोई भी शब्द आगे हो तो । जैसे—कण्ठेकालः । उदरेमणिः । शिरसि शिखः ।

नियम २०७—(संज्ञायां ३।२।१६) मनसा से आगे उत्तर पद हो, वह संज्ञा बनता हो तो विभक्ति का लुक् नहीं होता । मनसादेवी, मनसागुप्ता, मनसादत्ता, मनसासंगता—ये स्त्रीलिंग में नाम हैं ।

प्रयोगवाक्य

आत्मनापञ्चमः रमेशो विद्यते । अयं धातुः परस्मैपदी विद्यते । आत्मनेपदे कियन्तः धातवः सन्ति ? तव कथनं प्रवाहेमूत्रितं चकास्ति । कण्ठेकालस्य अर्चां कः करोति ? शीला यजति यजते वा । तन्तुवायः वस्त्राणि वयति, वयते वा । विनोदः त्वां आह्वत् आह्वत वा । कृषकः क्षेत्रे किं वप्स्यति, वप्स्यते वा ? अस्मिन्नुद्याने दाडिमानां, पनसानां, द्राक्षाणां, वातादानाञ्च एकोऽपि वृक्षो नास्ति । किं तुभ्यं बदरी रोचते ? कर्णेजपानां कदापि संगं मा कुरु । शिरसिशिखस्य अनेकानि रूपाणि सन्ति । मनसागुप्ता कस्मिन् देशे विदेशे च गमिष्यति । सदा आत्मनेपदं भाव्यम् ।

संस्कृत में अनुवाद करो

क्या तुम्हारे खेत में गंवारफली उत्पन्न हुई है ? पिस्ता पौष्टिक होता है । मेवाडी लोग मक्की की रोटी खाते हैं । कोरड़ू कौन खाता है ? राजा श्रेणिक के बगीचे में बारह ही महीने आम लगे रहते थे । रोगी ने वैद्य को अनार दिये । बंदर को कटहल अच्छी लगती है । नींबू खट्टा होता है । सास ने बहू से कहा—तुम पीपल ले आओ । रोगी लोग नीम के वृक्ष के नीचे बैठे हैं । बेल पेट के लिए लाभप्रद है । हमने बादाम के वृक्ष देखे हैं । हैदराबाद में अंगूर बहुत होते हैं । राजस्थानी लोग बेर को बहुत पसंद करते हैं । मुझे केला अच्छा नहीं लगता । नारियल के वृक्ष बहुत लंबे होते हैं । नागपुर में नारंगी बहुत उत्पन्न होती है । क्या तुमने सेव का साग खाया है ? इलाहाबाद में अमरूद होते हैं । चंद्रकान्त यहां अपने सहित छट्ठा व्यक्ति है । योगी के शिर पर जटा है । नरेश की दादी क्या सीती है ? श्याम को किसने बुलाया है ? किसान खेत मे बीज कब बोयेगा ?

अभ्यास

१. अलुक् समास का क्या अर्थ है ? किस समास में अलुक् होता है ?

२. इन शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
गंवारफली, पीपल, अमरूद, नीम, बेर, नारंगी, नींबू, पिस्ता, खुमानी, शहतूत ।

पाठ ३५ : समास ६ (एकशेष)

शब्दसंग्रह

उत्तरीयम् (मरदाना दुपट्टा)। करपूः, मुखप्रोंछनम् (रूमाल)। घंडातकम् (लहंगा)। वासकटिः (बासकट)। फर्फरीका (सलीपर, हवाई चप्पल)। शाटी, शाटिका (साडी)। उपानह् (जूता)। उष्णीषम् (पगडी)। अङ्गप्रोक्षणम् (अंगोछा)। उपधानम् (तकिया)। कम्बलः (कम्बल)। नीशारः (रजाई)। कञ्चुकः (कुर्ता)। रशना (कमरबंद, नाडा)। उपसंव्यानम्, अधोवस्त्रम् (धोती)। पादयामः (पायजामा)। प्रावारः, चोडः, चालकः (काट)।

धातु—इङ्क्—अध्ययने (अधीते) अध्ययन करना। अदं, प्सांक्—भक्षणे (अत्ति, प्साति) खाना। यांक्—गतौ (याति) जाना। भांक्—दीप्तौ (भाति) शोभित होना। ष्णांक्—शौचे (स्नाति) स्नान करना। पांक्—रक्षणे (पाति) रक्षा करना। ख्यांक्—प्रकथने (ख्याति) कहना।

अदं, प्सांक् और यांक् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या २१,८०,२२)। भांक् से लेकर ख्यांक् तक के रूप प्रायः प्सांक् की तरह चलते हैं।

एकशेष

द्वन्द्वसमास का एक भेद और है जिसे एकशेष कहते हैं। दो शब्दों में से एक शब्द शेष रहकर दोनों का बोध कराये उसे 'एकशेष' कहते हैं। जैसे—माता च पिता च=पितरौ। भ्राता च स्वसा च=भ्रातरौ।

एकशेष के कुछ नियम ये हैं—

नियम २०८—(समानामर्थेनैकशेषः ३।१।१३४) समान अर्थ वाले शब्दों का एक कथन हो तो उनमें से कोई एक शेष रह जाता है। शब्दों के अनुसार उनमें द्विवचन या बहुवचन होता है। जैसे—वक्रश्च कुटिलश्च=वक्रौ कुटिलौ वा।

नियम २०९—(सङ्ख्यावसंख्येय· ३।१।१३५) संख्यावाची शब्दों को छोडकर कोई शब्द दो या दो से अधिक बार प्रयुक्त होता हो तो उनमें एक शेष रह जाता है। जैसे—वृक्षश्च वृक्षश्च=वृक्षौ। वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च=वृक्षाः।

नियम २१०—(त्यदादिः ३।१।१३६) त्यद् आदि शब्द (त्यद्, तद्, यद्, अदस्, इदम्, एतद्, एक, द्वि, युष्मद् अस्मद्, भवतु, किम्) दूसरे नाम के

साथ में एक साथ कहे जाते हों तो उनमें त्यदादि शब्द शेष रहता है। जैसे—स च चैत्रश्च = तौ। यदि दोनों शब्द त्यदादि हों तो उनमें अन्तिम शब्द शेष रहता है। स च यश्च = यौ। भवांश्च अहं च = आवाम्। कहीं-कहीं पर पूर्व शब्द भी शेष रह जाता है। सश्च यश्च = तौ। अयं च एष च = इमौ।

नियम २११ (क)—स्त्रीपुंनपुंसकानां तु सहोक्तौ परलिङ्गता[1]—स्त्रीलिंग, पुल्लिग और नपुंसकलिंग तीनों लिंगों के शब्दों की सहोक्ति हो तो अन्तिम लिंग शेष रहता है।

ख—स्त्रीपुंलिङ्गयोः परं पुल्लिगमेव भवति– स्त्रीलिंग और पुल्लिग शब्द हों तो उनमें पुल्लिग शब्द शेष रहता है। जैसे—स च देवदत्ता च = तौ।

ग—स्त्रीनपुंसकयोः परं नपुंसकमेव भवति—स्त्रीलिंग और नपुंसक शब्द हों तो उनमें नपुंसकलिंग शेष रहता है। स च रत्नं च = ते।

घ—पुंनपुंसकयोः परं नपुंसकमेव भवति—पुल्लिग और नपुंसकलिंग शब्द हों तो उनमें नपुंसकलिंग शेष रहता है। जैसे - तत् च चैत्रश्च = ते।

नियम २१२—(नपुंसकमऽनपुंसकेनैकत्वं च वा ३।१।१४४) अनपुंसक नाम के साथ नपुंसक नाम हो तो उनमें नपुंसक नाम शेष रहता है और उनका एकत्व विकल्प से होता है। जैसे—शुक्लं च वस्त्रं, शुक्लश्च कम्बलः = ते शुक्ले। पक्षे—शुक्लम् (एकत्वे)। शुक्लं च वस्त्रं, शुक्लश्च कम्बलः, शुक्ला च शाटी तानि शुक्लानि। पक्षे—शुक्लम्।

नियम २१३—(भ्रातृपुत्राः स्वसृदुहितृभिः ३।१।१३७) भ्राता शब्द के अर्थ वाले शब्दों के साथ में स्वसृवाची शब्द हों तो भ्रातृवाची शब्द शेष रहता है। जैसे—भ्राता च स्वसा च = भ्रातरौ। सोदर्यश्च स्वसा च = सोदर्यौ।

पुत्रवाची शब्दों के साथ में दुहितृवाची शब्द हों तो पुत्रवाची शब्द रहता है। जैसे—पुत्रश्च दुहिता च = पुत्रौ। पुत्रश्च सुता च = पुत्रौ।

नियम २१४—(पिता मात्रा वा ३।१।१३८) माता शब्द के साथ पितृ शब्द हो तो पिता शब्द विकल्प से शेष रहता है। जैसे—पिता च माता च = पितरौ। पक्षे—मातापितरौ। अर्च्य होने के कारण माता शब्द का प्राग् निपात हुआ है।

नियम २१५= (श्वसुरः श्वश्रूभ्याम् ३।१।१३९) श्वश्रू शब्द के साथ श्वसुर शब्द विकल्प से शेष रहता है। जैसे—श्वश्रूश्च श्वसुरश्च = श्वसुरौ। पक्षे— श्वश्रूश्वसुरौ।

नियम २१६— (पुमान् स्त्रिया ३।१।१४२) स्त्रीवाची शब्द के साथ में पुरुषवाची शब्द हो तो पुरुषवाची शब्द शेष रहता है। उनमें द्विवचन और बहुवचन संख्या के अनुसार होते हैं। जैसे—ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च = ब्राह्मणौ।

---

१. श्रीभिक्षुलिंगानुशासन परवल्लिंगाधिकार श्लोक ४

प्रयोगवाक्य

सुरेन्द्रः कदा भोजनं अत्स्यति प्सास्यति वा ? कनकमाला मिष्टान्नं कदा जघास पप्सौ वा ? चेत् बालः मिष्टान्नं न आत्स्यत् तदा न रुग्णोऽभविष्यत् । गगने एतद् किं भाति ? दरिद्रः कुत्र यास्यति ? त्वं कुत्र अयासीः ? किं अरण्यवासिनः कदापि न स्नान्ति ? दुर्बलं कः पाति ? पापेभ्यः आत्मानं सर्वदा पाहि । आचार्यः सुधर्मा जम्बूं किं आचख्यौ ? सुरेन्द्रः गृहं कदा यास्यति ? शैलेशः नगरं अयासीत् ।

संस्कृत में अनुवाद करो

गणेश का दुपट्टा कहां है ? सुरेन्द्र की रूमाल कौन सी है ? शीला का सलीपर किस पेटी में है ? इस साड़ी की क्या कीमत है ? जैन साधु जूते नहीं पहनते । सतीश के दादाजी की पगडी और कुर्ता कहां है ? राजेश का अंगोछा साफ है । यह तकिया रूई का है । सर्दी में कंबल और रजाई का बहुत उपयोग होता है । [illegible] रंग कैसा है ? कोट पर क्या लिखा है ? मैं आज भोजन नहीं करूंगा ? वृक्ष पर क्या शोभित होता है ? संजय प्रतिदिन स्नान नहीं करता । अपनी आत्मा की रक्षा करो । सुनील को अध्यापक ने क्या कहा ? यदि तुम मेरी रक्षा करते तो मैं तुम्हारी रक्षा करता । यहां किसने स्नान किया था ?

एकशेष के प्रयोग करो

आप और मैं क्या करें ? भाई और बहन पढते हैं । पुत्र और पुत्री खेलती हैं । आपके पिता और माता कब आयेंगे ? सास और श्वसुर बहू को प्यार करते हैं । ब्राह्मण और ब्राह्मणी जाते हैं ।

अभ्यास

१. निम्नलिखितों के एकशेष समास के रूप बनायें—
(१) जिनश्च जिनश्च जिनश्च (२) वीरश्च वीरश्च (३) स च अयं च (४) त्वं च अहं च (५) सा च चैत्रश्च (६) सा च कुण्डे च (७) सा च कुण्डं च (८) भ्राता च भगिनी च (९) सुतश्च दुहिता च (१०) पिता च माता च (११) श्वश्रूश्च श्वसुरश्च (१२) कुक्कुटश्च कुक्कुटी च ।

२. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बताओ—
लहंगा, कुर्ता, कोट, पायजामा, अंगोछा, रूमाल, सलीपर ।

३. [illegible]

४. नीचे लिखे संयुक्त लिंगों में कौन सा लिंग शेष रहता है—
स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में, पुल्लिंग और नपुंसकलिंग में, भ्रातृवाची शब्द और स्वसृवाची शब्दों में, पुत्रवाची शब्द और दुहितृवाची शब्दों में ।

५. मातृ शब्द के साथ पितृ शब्द हो तो क्या शेष रहता है ?

पाठ ३६ : समासान्त प्रत्यय

शब्दसंग्रह

पादुका (खडाउ) । कंथा (गुदडी) । चंडातकः (चादरा) । चलनी, घर्घरी (घाघरा) । वैक्षकं, कंचुकं (चोगा) । घुटानाहः (घुटन्ना—घुटने तक पाजामा) । गुरुडं, शिरस्त्राणं (टोप) । शिरस्कं (टोपी) । दूकूलं, द्विपटी (दुपट्टा) । पतलूनः (पतलून) । विटीका (बटन) । पादावरणम् (बूट) । कञ्चुलिका (ब्लाउज) । प्रावारकम् (शेरवानी) । बृहतिका (ओवरकोट) । आप्रदीनम् (पैंट) । अन्तरीयम् (पेटीकोट) । अर्धोरुकम् (अण्डरवीयर, जांघिया) । नक्तकम् (नाइटड्रेस) । प्रच्छदपदः (ओढनी, चुन्नी) । स्यूतवरः (सलवार) । रल्लकः (लोई) । तूलसंस्तरः (गद्दा) । आस्तरणम् (दरी) । प्रच्छदः (चादर) । ऊर्णावरकम् (स्वेटर) । कार्पासम् (सूती वस्त्र) । कौशेयम् (रेशमी वस्त्र) । राङ्कवम् (ऊनी वस्त्र) । नवलीनकम् (नाइलोन का वस्त्र) ।

धातु—इणक्—गतौ (एति) जाना । षुंक्—प्रसवैश्वर्ययोः (सौति) उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना । युक्—मिश्रणे (यौति) मिलाना । णुक्—स्तुतौ (नौति) स्तुति करना ।

षुंक् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ८१) । इणक् के रूप इंक् की तरह चलते हैं । युक् और णुक् के रूप प्रायः षुंक् की तरह चलते हैं ।

समासान्त प्रत्यय

अव्ययीभाव, तत्पुरुष और बहुव्रीहिसमास करने के बाद जो प्रत्यय लगते हैं उन्हें समासान्त प्रत्यय कहते हैं । जिन शब्दों से समासान्त प्रत्यय होते हैं उनमें से कुछेक सूत्र नीचे दिए जा रहे हैं ।

नियम २१७ (क)—(ऋक्-पुरऽप्-पथिभ्यः समासे ८।३।५६)—ऋच्, पुर्, अप्, पथिन् ये शब्द अंत में हों तो 'अ' प्रत्यय हो जाता है । जैसे—ऋचोऽर्धं =अर्धर्चः । ऋचः समीपं =उपर्चम् । श्रियाः पूः=श्रीपुरम् । श्रीश्चासौ पूश्चेति =श्रीपुरम् । द्विर्गता आपोऽस्मिन् द्वीपम् । जलस्य पन्था=जलपथः, स्थलपथः, उपपथं, प्रतिपथं, विशालपथम् ।

ख—(धुरोऽनक्षस्य ८।३।५७) 'धुर्' अंतवाले शब्दों से अ प्रत्यय हो जाता है यदि समास में अक्ष शब्द का प्रयोग न हो तो । स्त्रीलिंग में अकारांत होने से आप् और ईप् हो जाता है । जैसे—राज्यधुरा, रणधुरा, द्विधुरी,

त्रिघुरी।

ग—(प्रत्यन्ववात् सामलोम्नः ८।३।५८) प्रति, अनु, अव इनसे परे सामन् और लोमन् शब्द परे हो तो अ प्रत्यय हो जाता है। जैसे—प्रतिगतं साम प्रतिसामम्। प्रतिगतं सामास्य प्रतिसामं। अनुसामं, अनुसाम। अवसामं, अवसाम। अनुलोमं अनुलोम।

घ—(नपुंसकाद् वा ८।३।३२) अव्ययीभाव में 'ट' प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे—प्रतिकर्मं, प्रतिकर्मं।

ङ—(अक्ष्णोऽप्राण्यङ्गे ८।३।५९) अक्षि शब्द से अ प्रत्यय हो जाता है। वह अक्षि शब्द प्राणि का अंगबोधक नहीं होना चाहिए। जैसे—लवणस्य अक्षि=लवणाक्षि। लवणं अक्षि इव=लवणाक्षम्। पुष्कराक्षं, गवाक्षम्।

च—(कटात् ८।३।६०) कट शब्द के आगे अक्षि शब्द प्राणि का अंग-बोधक हो तो समास के अंत में अ प्रत्यय हो जाता है। जैसे—कटस्य अक्षि=कटाक्षः।

छ—(ब्रह्म-हस्ति-राज-पल्याद् वर्चसः ८।३।६१) ब्रह्मन्, हस्तिन्, राजन् और पल्य शब्द से आगे वर्चस् शब्द अन्त में हो तो अ प्रत्यय हो जाता है। जैसे—ब्रह्मणो वर्चः—ब्रह्मवर्चसं (ब्राह्मण का तेज, बल) राजवर्चसं, पल्य-वर्चसं।

नियम २१८—(अन्धसमवात् तमसः ८।३।६२) अंध, सम्, अव इनसे परे तमस् शब्द हो तो अ प्रत्यय हो जाता है। जैसे—अंधं च तत् तमश्च=अन्धतमसम्। अंधं तमोऽस्मिन्निति अंधतमसं (अन्धा करने वाला अन्धकार), अन्धश्च तमश्चेति=अन्धतमसं, अन्धतमसे। संततं तमः, संततं तमसा, संततं तमोऽस्मिन्निति वा संतमसम्। अवहीनं तमो, अवहीनं तमसा, अवहीनं तमोऽस्मिन्निति वा अवतमसम्।

नियम २१९—(अन्ववतप्ताद् रहसः ८।३।६३) अनु, अव, तप्त इनसे पर रहस् शब्द से 'अ' प्रत्यय हो जाता है। जैसे—अनुगतं रहः=अनुरहसम्, अनुगता रहसा—अनुरहसम्, अनुगतं रहः अस्येति अनुरहसः। अवरहसं, अवर-रहसः। तप्तं तप्ताय इवानधिगम्यं रहः तप्तरहसं, तप्तं रहोऽस्येति तप्तरहसः।

नियम २२०—(प्रतेरुरसः सप्तम्याः ८।३।६४) सप्तमी अर्थ में प्रति अव्यय आता है। प्रति से परे 'उरस्' शब्द हो तो समास में 'अ' प्रत्यय हो जाता है। जैसे—उरसि वर्तते=प्रत्युरसम् (अव्ययी) उरसि प्रतिष्ठितम्=प्रत्युरसम् (तत्पुरुष)। यहां 'निरादयो गताद्यर्थे पञ्चम्या' सूत्र से समास हुआ है।

नियम २२१—(उपसर्गादध्वनः ८।३।६५) उपसर्ग (प्र आदि) से आगे यदि अध्वन् शब्द हो तो उससे समास में 'क' प्रत्यय हो जाता है। जैसे—प्रगतः अध्वानं=प्राध्वम् (तत्पुरुष)। उपक्रान्तं अध्वानं—उपाध्वम्।

निरध्वम् । अत्यध्वम् ।

नियम २२२—(संख्या-पाण्डूदक्-कृष्णाद् भूमेः ८।३।६६) संख्यावाची शब्द और पाण्डु, उदच्, कृष्ण इन शब्दों से परे भूमि शब्द से 'अ' प्रत्यय हो जाता है । जैसे—द्वयोर्भूम्योः समाहारो=द्विभूमम् (द्वंद्व), द्वे भूमी अस्य=द्वे भूमः (बहुव्रीहि), पाण्डुर्भूमिः (तत्पु०) पाण्डुभूमम् (द्वंद्व), पाण्डुभूमः (बहु) ।

नियम २२३—(इच् युद्धे ८।३।६७) युद्ध के अर्थ में जिन शब्दों का समास किया जाता है उनसे 'इच्' प्रत्यय हो जाता है । जैसे—केशेषु च केशेषु च मिथो गृहीत्वा कृतं युद्धं केशाकेशि । मुष्टिभिश्च मुष्टिभिश्च प्रहृत्य कृतं युद्धं—मुष्टामुष्टि, मुष्टीमुष्टि । यहां पूर्वपद में इकारान्त मुष्टि शब्द को (इच्यऽस्वरे दीर्घ आच्च ३।२।७३) सूत्र से दीर्घ और आकार आदेश हुआ है । दण्डादण्डि । मुसलामुसलि । यष्टायष्टि, यष्टीयष्टि ।

प्रयोगवाक्य

चन्द्रेशः कुत्र एति ? राज्ञी पुत्रं सौति । महेशः दुग्धे शर्करां यौति । धर्मेशः गुरुं नौति । भरतः स्वपुरीं एष्यति । त्वं कुत्र अगाः ? यः दुग्धे नीरं यौति स दंडनीयोऽस्ति । नरेशः देवालयं गत्वा अर्हन्तं नौति । नवीनस्य अर्घोरुकम्, ऊर्णावरकं च कुत्रास्ति ? बालाय प्रच्छदं देहि ।

संस्कृत में अनुवाद करो

जैन मुनि खडाउ नहीं पहनते । यह भिखारी की गुदडी है । उसके पास एक चादरा है । बालिका का घाघरा कहां है ? सैनिक टोप रखते हैं। आज कल लोग शिर पर टोपी नहीं रखते । शीला का दुपट्टा साफ है । कुछ लोग पतलून, पैंट और शेरवानी पहनते हैं । भरत की बटन टूटी हुई है । रमेश अपना बूंट स्वयं साफ करता है । स्त्रियां साडी, ब्लाउज और पेटीकोट पहनती हैं । सलवार और ओढनी का अधिक प्रचलन कहां है ? कई लोग सूती, कई लोग रेमशी और कई लोग नाइलोन के कपड़े पसन्द करते हैं । अशोक किसके पास पढेगा ? सोहन संस्कृत पढता था । तुम्हें प्राकृत पढनी चाहिए । सुशील अभी कहां गया था ? आज तुम कहां जाओगे ? धरती क्या उत्पन्न करती है । ग्वाले ने दूध में कितना पानी मिलाया है ? गुरु की स्तुति करो ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
लोई, गद्दा, रजाई, दरी, चादर, तकिया, स्वेटर ।

२. समासान्त प्रत्यय किसे कहते हैं ? वे कौन-कौन से हैं और किस समास में कहां होते हैं ?

३. नीचे लिखे शब्दों का विग्रह करो—
प्रत्युरसं, द्वीपम्, त्रिधुरी, अनुसामं, कटाक्षः, अन्धतमसं, अवरहसः, अत्यध्वं ।

पाठ ३७ : उपसर्ग

शब्दसंग्रह

अन्त्यजः (शूद्र) । चर्मकारः (चमार) । संमार्जकः (भंगी) । शाकुनिकः (बहेलिया) । अजाजीवः (गडरिया) । मायाकारः (जादूगर) । शौण्डिकः (सुराविक्रेता) । कर्मकरः (नौकर) । भारवाहः (कुली) । मालाकारः (माली) । कुलालः (कुम्हार) । लेपकः (पुताईवाला) । प्रेष्यः (चपरासी) वैतनिकः (वेतन पर नियुक्त नौकर) । तस्करः (चोर) । पाटच्चरः (डाकू) । ग्रन्थिभेदकः (गिरहकट) । मृगयुः (शिकारी) । मृगया (शिकार) । वागुरा (जाल) ।

उपसर्ग

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर् दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, प्रति, परि, उप, अति, अपि, अभि, सु, उद्—ये शब्द (चादयो निपातः १।१।४०) सूत्र से निपात हैं। (प्रादिरुपसर्गः क्रियायोगे १।१।४१) सूत्र से ये जब क्रिया के साथ प्रयुक्त होते हैं तब इनकी उपसर्ग संज्ञा होती है। (ऊर्याद्यनुकरणोपसर्गच्विडाचो गति र्धातोः प्राक् च ३।१।१) इस सूत्र से उपसर्ग की गति संज्ञा भी होती है और धातु से पहले इनका प्रयोग होता है। (निपातस्वरादयोऽव्ययम् १।१।४८) इस सूत्र से उपसर्गों की अव्यय संज्ञा होती है। अव्यय होने से इनके रूप में किसी भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता। दो उपसर्गों की या धातु के रूप के साथ उपसर्ग की संधि हो सकती है।

प्र आदि उपसर्ग २२ हैं। धा और कृ धातु के योग में श्रत् शब्द की उपसर्ग संज्ञा होती है। अन्तर् शब्द की भी ङ और कि प्रत्यय के योग में तथा न को ण करने लिए उपसर्ग संज्ञा होती है। (श्रद्धा कृनोः १।१।४२, अन्तर्णत्वङकिषु १।१।४३)। धातु से पहले उपसर्ग लगाने से कहीं पर धातु का अर्थ बदल जाता है, कहीं पर विपरीत अर्थ हो जाता है और कहीं पर धातु के अर्थ की ही विशेषता होती है। प्र आदि उपसर्ग सभी धातुओं के साथ नहीं लगते। एक धातु के साथ भी सभी उपसर्ग नहीं लगते। किसी धातु के साथ एक दो उपसर्ग लगते हैं तो किसी के साथ दो से भी अधिक दस-पन्द्रह उपसर्ग लगते हैं। एक धातु के एक साथ एक, दो, तीन, चार उपसर्ग भी देखे जाते हैं। हृन्—हरणे का अर्थ है हरना।

प्रहरति = प्रहार करना	व्यवहरति = व्यवहार करना
अपहरति = अपहरण करना	निहरति = निहार करना

सहरति = संहार करना	अध्याहरति = ऊपर से लेना
अनुहरति = सदृश होना	परिहरति = छोडना
विहरति = विहार करना	उपहरति = भेंट करना
आहरति = आहार करना	अवहरति = निकालना
अभ्यवहरति = खाना	नयति = ले जाना
समभ्यवहरति = खाना	आनयति = लाना
व्याहरति = बोलना	प्रकरोति = करना ।

उपसर्ग से परस्मैपदी धातु आत्मनेपदी बन जाती है और आत्मनेपदी परस्मैपदी । देखें पाठ ६० और ६१ ।

उपसर्ग के संयोग से धातुओं के अर्थ के लिए देखें परिशिष्ट नं० ५ ।

प्रयोगवाक्य

अन्त्यजेन सह मनुष्यवत् आचरणीयम् । चर्मकारः निर्माति दृतिम् । संमार्जकः शौचालयं संमार्जति । अजाजीवः अजान् चारयितुं क्षेत्रे नयति । मायाकारः दर्शयति स्वहस्तलाघवम् । अस्मिन् नगरे कियन्तः संति शौण्डिकाः ? कर्मकरः कार्यं तु करोति परन्तु स्वाभिमानेन । भारवाहः वहति केवलं भारम् । मालाकारः मालां ग्रथ्नाति विचित्रपुष्पैः । कुलालो भूत्वा कथं न निर्माति घटम् ? लेपकः भीतिं लिप्यति । प्रेष्यः आगन्तुकं किं कथयति ? मासावसाने वैतनिकः याचते स्ववेतनम् । तस्करः नगरे कदा प्रविष्टः ? पाटच्चरः दिवसे एव लुंटयति इभ्यान् । मृगयुः वागुरां विस्तारयति मृगयार्थम् । ग्रंथिभेदकस्य किं कार्यमस्ति ? सीता फलमभ्यवहरति । पश्यतु कस्मात् कारणात् अध्यापकः प्रहरति रामचन्द्रम् । विहरन्ति साधवः अनुचतुर्मासं ग्रामानुग्रामम् । अपहरणकर्तारः वायुयानमपि अपहरन्ति शस्त्रशक्त्या । रात्रौ मुनयः नाहरन्ति । सुशीला मधुरं व्याहरति । परैः सह सम्यक् व्यवहरति स एव सद्गृहस्थः । वाक्ये कर्तारं वा कर्म अध्याहरति । परद्रव्यं परिहरति आचारवान् । मुनिधर्मचन्द्रः मुनिश्रीचन्द्रमनुहरति । आपणात् विद्यार्थी पुस्तकानि आनयति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

शूद्र, चमार और भंगी भी धर्म कर सकते हैं । बहेलिया तोतों को पकड़ने के लिए जंगल में गया था । गडरिया गायों को खेतों में चराता है । जादूगर क्या दिखाता है ? शराब बेचने वालों के पास इतने व्यक्ति क्यों बैठे हैं ? रमेश के घर में कितने नौकर हैं ? कुली कितना भार उठायेगा ? माली बगीचे में फूल चुनता है । कुम्हार मिट्टी का घड़ा बनाता है । पुताईवाला कहां गया है ? इस स्कूल का चपरासी कौन है ? सुरेश की दूकान पर कितने नौकर वेतन पर नियुक्त है ? चोर और डाकू भी सत्संगति से साधु बन जाते

हैं। गिरहकट ने कितने रुपये लिये ? शिकारी मृग को पकड़ने के लिए जंगल जाता है। मछुए की जाल में कितनी मछलियां आईं ?

अभ्यास

१. प्र आदि शब्दों की कितनी संज्ञा होती है ?
२. उपसर्ग संज्ञा किनकी होती है और कहां होती है ?
३. एक धातु के साथ कितने उपसर्ग लग सकते हैं। उससे लाभ क्या है ?
४. नीचे लिखे शब्दों के संस्कृत रूप लिखो ?
चपरासी, डाकू, कुली, गडरिया, भंगी, पुताईवाला, जादूगर, जाल।

पाठ ३८ : तद्धित १ (अपत्य)

शब्दसंग्रह

रक्तिका, गुंजा (रती) । माषः (माशा) । टंकः (चारमाशा) । षट्टंकः (दो तोला) । कोलः, तोलः (तोला) । पादः, कुडपः (पाव या २० तोला) । अर्धसेटकम् (आधासेर) । सेटकम् (सेर) । मनः (मन या चालीस सेर) । द्वयंगुलम् (एक इंच से कुछ अधिक) । गजः (गज) । चतुरांगुलः (गिरह, सवा दो इंच) । धनुः (चार हाथ) । पादः (फुट) । मीलम् (मील) ।

धातु—रुदृक्—अश्रुविमोचने (रोदिति) रोना ।

ष्वप्क्—शये (स्वपिति) सोना । चकासृक्—दीप्तौ (चकास्ति) दीप्त होना ।

रुद्, ष्वपंक् और चकासृक् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या २३,८२,८३) ।

तद्धित

तस्मै लौकिकवैदिकशब्दसंदर्भाय हितः तद्धितः । लौकिक और वैदिक शब्दों के संदर्भ के लिए हितकर हो उसे तद्धित कहते हैं । अथवा ताभ्यः प्रकृतिविकृतिभ्यो हितः तद्धितः । शब्दों की प्रकृति और विकृति के हित के लिए हो उसे तद्धित कहते हैं । तद्धित के प्रत्यय नाम के आगे ही लगते हैं । तद्धित में अनेक अर्थ हैं और प्रत्यय भी अनेक हैं । एक अर्थ में भी अनेक प्रत्यय लगते हैं ।

अपत्य का अर्थ है—संतान । पुत्र और पुत्री दोनों अपत्य हैं । पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि सब अपत्य होते हैं । प्रपौत्र से गोत्र प्रारंभ होता है, पुत्र और पौत्र से नहीं । गोत्र का नामकरण व्यक्ति के आधार पर हुआ है । जैसे गर्ग के प्रपौत्र आदि गार्ग्य कहलाते हैं, कश्यप के प्रपौत्र आदि काश्यप और भृगु के प्रपौत्र आदि भार्गव ।

(तस्यापत्ये) अकारान्त गोत्रवाची नाम को छोडकर षष्ठीअंत वाले नाम से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है । (अतइञ्) गोत्र के आदि व्यक्ति का नाम अकारान्त हो तो उससे अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है । दशरथस्य अपत्यं = दाशरथिः का अर्थ हुआ दशरथ के पुत्र । जितने पुत्र हैं सब दाशरथि हैं । यह विशेषण है । राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न में से किसी भी विशेष्य का विशेषण बन सकता है । दाशरथिः रामः ।

नियम

नियम २२४ क—(शिवादेरण् ६।२।४२) शिव आदि शब्दों से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। शैवः, प्रौष्ठः, भौमः।

ख—(गोत्रे बिदादेः पौत्रादौ ६।२।५६) बिद आदि शब्द गोत्रवाची हों तो पौत्र आदि अपत्य अर्थ में अञ् प्रत्यय होता है। बिदस्य पौत्राद्यपत्यं—बैदः। काश्यपः। भारद्वाजः। अपत्य अर्थ में (अतइञ्) से इञ् प्रत्यय ही होगा। बिदस्य अपत्यं=बैदिः।

नियम २२५ क—(गर्गादेर्यञ् ६।२।५७) गोत्र अर्थ में होने वाले गर्ग आदि षष्ठी अंतवाले शब्दों से पौत्र आदि अपत्य अर्थ में यञ् प्रत्यय होता है। गर्गस्य अपत्यं पौत्रादि—गार्ग्यः। वात्स्यः।

ख—(नडादिभ्य आयनण् ६।२।६८) नड आदि षष्ठ्यन्त शब्दों से पौत्र आदि अपत्य अर्थ में आयनण् प्रत्यय होता है। नडस्य पौत्राद्यपत्यं—नाडायनः। चारायणः। आमुष्यायणः।

नियम २२६—(द्विस्वरादनद्याः ६।२।८६) दो स्वर वाले स्त्रीप्रत्ययान्त अनदीवाची शब्दों से अपत्य अर्थ में एयण् प्रत्यय होता है। दात्तेयः, गौप्तेयः। सैतः, सान्ध्यः, माहः—यहां एयण् प्रत्यय नहीं हुआ है क्योंकि ये नदी के नाम हैं।

नियम २२७—(क्षुद्राभ्यो वा ६।२।१०४) जो स्त्री अंग से हीन हो या जिसका पति निश्चित न हो वह स्त्री क्षुद्रा कहलाती है। क्षुद्रावाची शब्दों से अपत्य अर्थ में एरण् प्रत्यय विकल्प से होता है, पक्ष में एयण् प्रत्यय भी। काणायाः अपत्यं=काणेरः, काणेयः। दासेरः, दासेयः। नाटेरः, नाटेयः।

नियम २२८ क—(स्वसुरीयः ६।२।१०६) स्वसृ शब्द से अपत्य अर्थ में ईय प्रत्यय होता है। स्वस्रीयः।

ख—(भ्रातुर्व्यश्च ६।२।१०७) भ्रातृ शब्द से अपत्य अर्थ में व्य और ईय प्रत्यय होता है। भ्रातुः अपत्यं=भ्रातृव्यः, भ्रात्रीयः।

ग—(श्वशुराद्यः ६।२।११४) श्वशुर शब्द से अपत्य अर्थ में य प्रत्यय होता है। श्वशुरस्य अपत्यं=श्वशुर्यः।

नियम २२९—(मनोर्याणौ षुक् च ६।२।११७) मनु शब्द से य और अण् प्रत्यय होता है। जाति के अर्थ में षुक् का आगम होता है। मनोरपत्यानि=मनुष्याः, मानुषाः। जहां जाति का अर्थ नहीं वहां मानवः, मानवाः।

नियम २३०—(इतोऽनिञः ६।२।९०) इञ् प्रत्यय अंत वाले शब्दों को छोडकर दो स्वरवाले इकारान्त शब्दों से अपत्य अर्थ में एयण् प्रत्यय होता है। नाभेरपत्यं=नाभेयः। आत्रेयः, आहेयः।

नियम २३१—(कुलादीनः ६।२।११९) कुल शब्द अंत वाले शब्द और कुल शब्द से अपत्य अर्थ में ईन प्रत्यय होता है। कुलीनः, बहुकुलीनः, क्षत्रियकुलीनः। आढ्यकुलीनः, राजकुलीनः।

नियम २३२—(दुष्कुलादेयण् ६।२।१२२)। दुष्कुल शब्द से अपत्य अर्थ में एयण् और ईन प्रत्यय होता है। दौष्कुलेयः, दुष्कुलीनः।

प्रयोगवाक्य

काश्यपाः शिक्षिताः भवन्ति। सैतेयःलवः पित्रा सदृशः धनुर्विद्यायां प्रवीणः आसीत्। विद्यार्थिषु काणेरस्य किं अभिधानम्? दासेयस्य सभायां महत्त्वं नासीत्। तव भ्रातृव्याः कियन्तः सन्ति? मम स्वस्रीयेषु कः प्रथमः जातः? कुलीनस्य चरित्रं सर्वे अनुकुर्वन्ति। गार्ग्ये प्रसिद्धः को जातः? विदानां देवी का विद्यते? रजन्याः श्वशुर्यः महेशः बुद्धिमान् निर्बलश्च अस्ति। भ्रात्रीयाः परस्परं कथं कलहायन्ते? दाशरथिषु कस्य पूजा जायते साम्प्रतमपि? गौप्तेया ललिता परीक्षायां उत्तीर्णा जाता वा न? नाभेयः कोऽस्ति, किं त्वं जानासि? बालः रोदिति। भ्रातुः मृत्योः संवादं श्रुत्वासा अरोदत्। मा रुदिहि। बालिका रोदिष्यति। चेत् सः परीक्षायामुत्तीर्णोऽभविष्यत् तदा न अरोदिष्यत्। भगिनी रात्रौ कुत्र अस्वपत्? त्वं कदा स्वप्स्यसि? पुरा अस्यां नगर्यां एकः बलवान् भूपः अचकात्।

संस्कृत में अनुवाद करो

सीमा को उसकी मां ने एक रती सोना और एक माशा चांदी दी है। रमेश को चार माशा घी चाहिए। बच्चे के लिए दो तोला दूध पर्याप्त नहीं है। रमा बाजार से एक तोला तैल, आधा सेर दही, और एक सेर मिठाई लायेगी। हमारे घर में महीने में एक मन गेहूं खाने के काम में आता है। सवा दो इंच जमीन के लिए इतना झगडा क्यों करते हो? यह वस्त्र एक गज का है। रमा की साडी चार हाथ की है। सुजानगढ लाडनूं से कितनी मील दूर है?

तद्धति के प्रत्ययों का प्रयोग करो

नगराज के पुत्र अशोक का स्वभाव कैसा है? शिव के पुत्र गणेश बुद्धिमान् थे। शीला का पुत्र रमेश पढने में तेज है। दासी का पुत्र भी सुंदर है। प्रकाश राजेन्द्र की बहन का पुत्र है। विजय के पांच भतीजे हैं। मनु का पुत्र कौन है? नाभि के पुत्र ऋषभ इस अवसर्पिणी के प्रथम तीर्थंकर थे। सांप के बच्चों को छोटा मत मानो।

धातु का प्रयोग करो

सीमा क्यों रोती है? रात में बालक क्यों रोया? दुःखद समाचार

सुनकर भी वह नहीं रोई। यदि तुम कार्य में सफल हो जाते तो नहीं रोते। आचार्य श्री कब सोते है ? मैं यहाँ नहीं सोऊंगा। मोहन कल कहां सोया था ? आकाश में सूर्य चमकता है।

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—

अहो ! अयं काणेरोऽपि काणोऽस्ति। तस्य कुत्सिताचरणं दृष्ट्वा सोऽवदत् अयं दौष्कुलेयोऽस्ति। कौलीनः कदापि एतादृक् कार्यं न करोति। मोहनः विपणिमार्गे श्वशुर्यमपश्यत्। रामेयः कुत्र अव्रजत् ? छौगेयः कालुः तेरापथस्य अष्टमः आचार्यः आसीत्।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ किस शब्द से कौन सा प्रत्यय किस अर्थ में हुआ है ?

आहेयः, शैलेयः, रामेशिः, कानीनः, मानुषः, दुष्कुलीनः, गौप्तेयः, भ्रातृव्यः।

३. तद्धित किसे कहते हैं ?

४. गोत्र का प्रारंभ कहां से होता है ?

५. पुत्र (अपत्य) के अर्थ में अकारान्त शब्दों से कौन सा प्रत्यय होता है ? गौत्र अर्थ में किन शब्दों से कौन-कौन से प्रत्यय होते हैं ?

६. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—

पाव, सेर, मन, ईंच, फुट, मील, रती।

७. रुद्, ष्वप् और चकासृक् धातु के द्यादि के रूप लिखो।

पाठ ३९ : तद्धित २ (समूह)

शब्दसंग्रह

घटीयंत्रम् (घडी) । लेखनयंत्रम् (टाइपराइटर) । वार्तायंत्रम् (टेलीफोन) तापमापकम् (थर्मामीटर) । दूरवीक्षणम् (दूरबीन) । मुद्रणालयः (प्रेस) । शंपाव्यजनम् (बिजली का पंखा) । ध्वनिधानी (रिकार्ड) । ध्वनिक्षेपकयंत्रम् (रेडियो) । श्रुतियंत्रम् (लाउडस्पीकर) । ध्वनिमंजूषा (साउन्डबॉक्स) । समितिः (कमेटी) । प्रवापणं, प्रादेशनम् (चन्दा) । निर्वाचनं (चुनाव) । मंगलयात्रा (जुलूस) । सदस्यः, सभ्यः (सदस्य) । निवृत्तिः (रिपोर्ट) । प्रस्तावः (प्रस्ताव) । मतम् (वोट) । मोक्षयात्रा (शवयात्रा) । उपनेत्रम् (एनक) ।

धातु—जागृक्—निद्राक्षये (जागर्ति) जागना । शासुक्—अनुशिष्टौ (शास्ति) अनुशासन करना । वचंक्—भाषणे (वक्ति) बोलना ।

जागृक्, शासुक् और वचंक् धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या २४, ८४, ८५) ।

(तस्यसमूहे) समूहे के अर्थ में प्रत्यय षष्ठी अन्त वाले नाम से ही होते हैं । समूह के अर्थ में बहुवचन का प्रयोग होता है परन्तु प्रत्यय लगने पर वह एक वचन भी समूह का वाचक बन जाता है । समूह प्रत्ययान्त शब्दों से क्रिया एक वचन और बहुवचन दोनों आती है । समूह अर्थ में अनेक प्रत्यय होते हैं । उनमें अण्, अकञ्, इकण्, ण्य, य, ईय, एयञ्, ड्वण् और अञ् प्रत्यय वाले शब्द नपुंसकलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं । अल प्रत्ययान्त पुल्लिग और त्रल्, कट्यल्, ल्य, लिन्, तल् ये पांच प्रत्यय लित् होने के कारण स्त्रीलिंग में व्यवहृत होते हैं ।

नियम २३३—(गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्साजमनुष्यवृद्धादकञ् ६।३।१३) गोत्र प्रत्ययान्त शब्द, उक्षन्, उष्ट्र, उरभ्र, राज, राजन्य, राजपुत्र, वत्स, अज, मनुष्य, वृद्ध—इन शब्दों से समूह अर्थ में अकञ् प्रत्यय होता है । गार्गकं, औक्षकं, औरभ्रकं, राजकं, राजन्यकं, राजपुत्रकं, वात्सकं, आजकं, मानुष्यकं, वार्धकम् ।

नियम २३४—(कवचिहस्त्यचित्ताच्चेकण् ६।३।१५) कवचिन्, हस्तिन्, केदार और अचित्तवाची शब्दों से समूह अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है । कावचिकं । हास्तिकं । कैदारिकं । आपूपिकम् ।

नियम २३५—(ग्रामजनबन्धुगजसहायेभ्यस्तल् ६।३।२९) ग्राम,

जन, बन्धु, गज, सहाय शब्दों से समूह अर्थ में तल् प्रत्यय होता है। प्रत्यय में ल् इत् जाने से स्त्रीलिंग होता है। जनानां समूहः जनता। ग्रामता, बन्धुता, गजता, सहायता।

नियम २३६—(केशाण्ण्यो वा ६।३।१७) केश शब्द से समूह अर्थ में ण्य और इकण् प्रत्यय होता है। कैश्यं, कैशिकम्।

नियम २३७—(गणिकायाः ६।३।१८) गणिका शब्द से समूह अर्थ में ण्य प्रत्यय होता है। गाणिक्यम्।

नियम २३८—(धेनोरनञः ६।३।१६) नञ् समास रहित धेनु शब्द से समूह अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। धैनुकम्।

नियम २३९—(अश्वादीयो वा ६।३।२०) अश्व शब्द से समूह अर्थ में ईय और अण् प्रत्यय होता है। अश्वीयं, आश्वम्।

नियम २४०—(पर्श्वा ड्वण् ६।३।२१) पर्शु शब्द से समूह अर्थ में ड्वण् प्रत्यय होता है। पार्श्वम्।

नियम २४१—(गोरथवातात् त्रलकटयलूलम् ६।३।२४) गो शब्द से त्रल्, रथ शब्द से कट्यल्, और वात शब्द से ऊल प्रत्यय होता है। गोत्रा, रथकट्या, वातूलः।

नियम २४२—(भिक्षादेः ६।३।११) भिक्षा, सहस्र, क्षेत्र, करीष, अंगार,, दक्षिणा आदि शब्दों से समूह अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होता है। भैक्षं, यौवतं, साहस्रं, क्षेत्रं, कारीषं, आंगारं, दाक्षिणं, यौगं, खाण्डिकम्।

नियम २४३—(श्वादिभ्योऽञ् ६।३।२६) श्वा आदि शब्दों से समूह अर्थ में अञ् प्रत्यय होता है। शौवं, दाण्डं, चात्रम्।

नियम २४४—(खलादिभ्यो लिन् ६।३।२७) खलादि शब्दों से समूह अर्थ में लिन् प्रत्यय होता है। ल् इत् जाने से स्त्रीलिंग होता है। खलिनी, डाकिनी, कुण्डलिनी, कुटुम्बिनी।

प्रयोगवाक्य

भैक्षुके कः तेजस्वी चकास्ति ? काकं कथमत्र आयान्ति ? हास्तिकं अरण्ये एव मिलन्ति। वृक्षे शौकं क्रीडन्ति। हास्तिके गजतायां को भेदः ? सदा सहायता कार्या। गाणिक्यं देशाय लज्जास्पदं भवति। कैशिके तैलं न प्रयुञ्जीत। अश्वीये चेटकः क्वास्ति ? गोत्रायां कापि कृष्णा अस्ति ? रथकट्यायां सौवर्णिकः रथः शोभते। निशायां त्वं कदा अजागः। द्राक् जागर्हि। वृद्धः कदा जागरिष्यति। चेत् गृहस्वामी अजागरिष्यत् तदा चौरः धनं न अचोरयिष्यत्। भूपतिः प्रजाः शास्ति। त्वं स्वं शाधि। श्वः कः कथां वक्ष्यति ? ह्यः कः कथां अवक्।

संस्कृत में अनुवाद करो

विजय की घडी कहां खो गई ? टाईपराईटर तुम्हें क्या कहता था ? विमला का टेलीफोन आज क्यों नहीं आया ? थर्मामीटर से बुखार देखो। दूरबीन से दूर की वस्तु साफ दिखाई देती है। जैन विश्व भारती में एक प्रेस भी है। मेरे घर में एक बिजली के पंखे की जरूरत है। किसने गीतिकाओं का रिकार्ड किया है ? रेडियो और लाउडस्पीकर की क्या उपयोगिता है ? कमेटी ने कितना चंदा इकट्ठा किया है ? तेरापंथ में आचार्य का चुनाव कौन करता है ? दीक्षार्थी के जुलूस में बहुत लोग थे। सदस्यों ने अपनी रिपोर्ट किसको दी ? इस प्रस्ताव पर कितने वोट आये ? दादाजी ने ऐनक कब लगाया ?

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो—कौवों में यह कौन सा पक्षी बैठा है ? ऊंटों का समूह कहां जा रहा है ? बैलों का समूह पानी पी रहा है। राजाओं का समूह युद्ध के लिए तैयार हो रहा है। इस गांव में वृद्धों का समूह निष्क्रिय है। मनुष्यों का समूह आज भगवान् के दर्शन के लिए जा रहा है। वेश्याओं का समूह देश के लिए लज्जास्पद है।

धातु का प्रयोग करो—सुशील कब जगा ? दादाजी कब जगेंगे ? बच्चे यदि जग जाते तो पिता बाहर नहीं जाता। अपनी आत्मा पर शासन करो। मृदु बोलो। साध्वियां क्या बोलती थी ? कल कौन भाषण बोलेगा ?

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद करो—
आजकं कूपे व्रजति। कुर्कुरः आपूपिकममभक्षत्। कैदारिके गौः प्राविशत्। आश्वस्य कोऽस्ति रक्षकः। वातूलः व्रजति।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ किस शब्द से कौन सा तद्धित प्रत्यय हुआ है ?
राजन्यकम्, कावचिकम्, कैश्यम्, वात्सकम्, आजकम्, रथकट्या, वाडवम्, मौदकम्।

३. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
थर्मामीटर, रेडियो, लाउडस्पीकर, जुलूस, चुनाव, घडी।

४. जागृक्, शासुक् और वचंक् धातु के द्यादि और तुवादि के रूप लिखो।

५. समूह अर्थ में कौन-कौन से प्रत्यय किस-किस लिंग में व्यवहृत होते हैं ? एक-एक उदाहरण लिखो।

पाठ : ४० तद्धित (३)

शब्दसंग्रह

अधिकारी (अफसर) । पंजिकाध्यक्षः (रजिस्ट्रार) । परिचालकः (सुपरिटेन्डेट) । संचालकः (मेनेजर) । भीरकः (खजाने का बड़ा अफसर) । नैष्किकः (टकसाल का बडा अफसर) । शौल्किकः (महसूल (राजस्व) का बडा अफसर) । अधिकर्मिकः (व्यापार का बडा अफसर) । अधिकर्णिकः (न्याय का बडा अफसर) । व्यवस्थापकः (डाइरेक्टर का बडा अफसर) । बोधनम् (नोटिस, सूचना) । रक्षकपुरुषः (पुलिसमेन) । रक्षकः, परिदर्शकः (पुलिस

नियम २४५—(निष्फले तिलात् पिञ्जपेजौ ६।३।६५) फलरहित अर्थ में तिल शब्द से पिंज और पेज प्रत्यय होते हैं। तिलपिंजः, तिलपेजः (तिल का वह पौधा जो न फले और फूले)।

नियम २४६—(अवेःसंघातविस्तारयोः कटपटौ ७।४।२५) अवि शब्द से संघात अर्थ में कट और विस्तार अर्थ में पट प्रत्यय होता है। अविकटः (अविसमूहः), अविपटः (ऊनी वस्त्र)।

नियम

नियम २४५—(निष्फले तिलात् पिञ्जपेजौ ६।३।६५) फलरहित अर्थ में तिल शब्द से पिंज और पेज प्रत्यय होते हैं। तिलपिंजः, तिलपेजः (तिल का वह पौधा जो न फले और फूले)।

नियम २४६—(अवेःसंघातविस्तारयोः कटपटौ ७।४।२५) अवि शब्द से संघात अर्थ में कट और विस्तार अर्थ में पट प्रत्यय होता है। अविकटः (अविसमूहः), अविपटः (ऊनी वस्त्र)।

नियम २४७—(भूतपूर्वे चरट् ८।१।९५) भूतपूर्व के अर्थ में चरट् प्रत्यय होता है। अध्यापकचरः। शिष्यचरः। आढ्यचरः।

नियम २४८—(पित्रोर्डामहट् ६।३।३१) पितृ और मातृ शब्द से पिता और माता अर्थ में डामहट् प्रत्यय होता है। पितुः पिता—पितामहः। मातुः पिता—मातामहः। मातुः माता—

नियम २४९—(पितृमातृभ्यां व्यडुलौ भ्रातरि ६।३।२७) पितृ और मातृ शब्द से भ्राता के अर्थ में क्रमशः व्य और डुल प्रत्यय होता है। पितुः भ्राता—पितृव्यः। मातुः भ्राता—मातुलः।

नियम २५०—(गोः पुरीषे ६।३।५२) गो शब्द से पुरीष अर्थ में

मयट् प्रत्यय होता है । गोः पुरीषं = गोमयं (गोबर) ।

नियम २५१—(सास्य देवता ६।३।६६) देवता के नाम में प्रत्यय होने से वह शब्द उनके अनुयायियों का वाचक होता है । देवता का नाम प्रथमान्त हो तो षष्ठी के अर्थ में अण् प्रत्यय होता है । अर्हत् देवता अस्य आर्हतः—जैनः । आग्नेयः—ब्राह्मणः । शैवः, बौद्धः, वैष्णवः ।

नियम २५२—(ऋतुवायुपित्रुषसो यः ६।३।७३) ऋतु, वायु, पितृ, उषस् शब्दों से देवता अर्थ में य प्रत्यय होता है । ऋतव्यं, वायव्यं, पित्र्यं, उषष्यम् ।

प्रयोगवाक्य

हतभाग्यानां क्षेत्रे तिलपेजानां बाहुल्यं जायते । अविकटे कः वृद्धत्वं भजते । अविपटं शीतकाले प्रियं लगति । अस्य साधुचरस्य किं नामधेयं विद्यते ? मम पितामहस्य अभिधानं किं त्वं जानासि ? पितामही धार्मिकी आसीत् । मातुलः जुहारमलः व्यापारे पटुः आसीत् । मातुली ततोऽधिका गृहकुशला जाता । गोमयमपि रोगे उपयोगि भवति । कापिलानां किं चिन्हं अस्ति ? आर्हतां किं वैशिष्ट्यं विश्रुतमस्ति ? आत्मानं मृड्ढि । रजकः वस्त्राणि मार्ष्टि । भ्रातृजाया इमानि वस्त्राणि अमार्क्षीत् । आत्मानं विद्धि । प्राणिनः मा जहि । रामः रावणं जघान । कविः कुत्र अस्ति । पुरा अनेके विद्वांसः बभूवुः ।

संस्कृत में अनुवाद करो

आज यहां कौन सा अफसर आयेगा ? रजिस्ट्रार कहां है ? सुपरिटेन्डेन्ट क्या कह रहे थे ? मेनेजर को बुलाओ । खजाने का बडा अफसर कठोर है । टकसाल के बडे अफसर का स्वभाव मृदु है । महसूल का बडा अफसर भद्र है । व्यापर का बडा अफसर रिश्वत खाने वाला नहीं है । न्याय के बडे अफसर का न्याय सबके लिए समान है । डायरेक्टर के बडे अफसर के बिना यहां कौन व्यवस्था करेगा ? तुमने कब नोटिस दी थी ? पुलिसमेन हर व्यक्ति को सावधान करते हैं । पुलिस इन्स्पेक्टर को सशक्त होना चाहिए । बारिस्टर विदेश कब जायेंगे ? मजिस्ट्रेट अपराधी को दंड देता है ।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

गांव के लोग गोबर से घर का आंगन लीपते हैं । इस खेत में पौधे तिलरहित हैं । ये मेरे भूतपूर्व अध्यापक हैं । पारसियों के देवता अग्नि हैं उन्हें एक शब्द में क्या कह सकते हैं ? गोबर बहुत उपयोगी और पवित्र माना जाता है । मामे का घर दूर है । मेरे दादा दयालु थे । दादी में धार्मिक संस्कार बचपन से थे । वायव्य और पित्र्य में क्या अन्तर है ? जिनके देवता जिन हैं उनका दृष्टिकोण अनाग्रही होना चाहिए । वायु जिनके देव हैं वे कौन हैं ?

धातु का प्रयोग करो

शीला वस्त्रों को कब साफ करेगी ? उसने पापों की आलोचना करके अपनी आत्मा को साफ कर लिया । जिसने आत्मा को जान लिया उसने सब कुछ जान लिया । बालक को किसने मारा ? तेरापंथ में आठ आचार्य हो गये हैं । आचार्य तुलसी नवमें आचार्य हैं ।

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—
पार्षदः मृदुव्यवहारेण जनान् आकर्षन्ति । वैकथिकाः स्वसमयं न सार्थकी-कुर्वन्ति । पांचालप्रदेशे बहूनि गोधूमशाकिनानि सन्ति । विनयचञ्चुः खेतसीस्वामी तेरापंथस्य गौरवः आसीत् । अयं मम शिष्यचरोऽस्ति ।

२. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करो और बताओ किस अर्थ में कौन सा प्रत्यय हुआ है ?
स्वीयः, तिलपेजः, विद्याचणः, सभ्यः, अविपटः आढ्यचरः ।

३. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
अफसर, संचालक, सूचना, न्याय का बडा अफसर, वारिस्टर, मजिस्ट्रेट ।

४. मृज्, विद् धातु के तुबादि के रूप और हन् और अस् धातु के द्यादि के रूप लिखो ।

५. नीचे लिखे अर्थों में कौनसा प्रत्यय होता है ?
भूतपूर्व, पुरीष, भ्राता, देवता ।

पाठ : ४१ तद्धित (४)

शब्दसंग्रह

चत्वरम् (आंगन) । रक्षा (राख) । दीपकः, स्नेहप्रियः (दीया) । कुञ्चिका (कुंजी) । द्वारयन्त्रम् (ताला) । आलकम् (आला) । शिक्थम् (छींका) । काचदीपका (लालटेन) । मञ्चः (मांचा) । तण्डुलः (चावल) । गोधूमः (गेहूं) । चणकः (चना) । यवः (जौ) । माषः (उडद) । मसूरः (मसूर) । सर्षपः (सरसों) । क्वथनम् (उबालना) । कुट्टनम् (कूटना) । मर्दनम् (गूंधना) । चालनम् (छालना) परिवेषणम् (परोसना) । अवघातः (छडना, छांटना) ।

धातु—इंङ्क्—अध्ययने (अधीते) अध्ययन करना । शीङ्क्—स्वप्ने (शेते) सोना । षूङ्क्—प्राणिगर्भविमोचने (सूते) उत्पन्न होना ।

इंङ्क्, शीङ्क् और षूङ्क् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या २८,८७,८८) ।

नियम

नियम २५३—(तेन रक्ते रागात् ६।३।१) तृतीयान्त शब्द रागवाची (जिससे रंगा जाए) हो तो रक्त (रंगने) के अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं । कुसुम्भेन रक्तं कौसुम्भं, हारिद्रं, काषायं, माञ्जिष्ठम् ।

नियम २५४—(लाक्षारोचनाभ्यामिकण् ६।३।२) लाक्षा, रोचना से रंगने के अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है । लाक्षिकं, रौचनिकम् ।

नियम २५५—(नीलपीताभ्यामकौ ६।३।४) रंगने के अर्थ में नील शब्द से अ और पीत शब्द से क प्रत्यय होता है । नीलं, पीतकम् ।

नियम २५६—(तद्वेत्त्यधीते ६।३।८५) वेत्ति (ज्ञाता) और अधीते (पढता है) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं । सूत्रं वेत्ति अधीते वा सौत्रः । व्याकरणं वेत्ति अधीते वा वैयाकरणः ।

नियम २५७—(संधिव्योरैडौट् च ८।४।२३) संधि से इ को य् और उ को व् बना हो उससे आगे जो आदि स्वर हो उसको वृद्धि नहीं होती अपितु य् को ऐट् और व् को औट् का आगम हो जाता है । व्याकरण में वि+आ मिलकर व्या बना है इसलिए य से आगे स्वर को वृद्धि न होकर ऐट् का आगम हुआ है । वैयाकरण रूप बना है ।

नियम २५६—(न्यायादेरिकण् ६।३।८६) न्याय, मुहूर्त, निमित्त,

चर्चा, आयुर्वेद, इतिहास, वर्षा आदि शब्दों से वेत्ति या अधीते अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। नैयायिकः, मौहूर्तिकः, नैमित्तिकः, चार्चिकः आयुर्वेदिकः, ऐतिहासिकः ज्यौतिषिकः, गाणितिकः, वार्षिकः।

नियम २५९ (तत्र साधौ ७।३।१५) सप्तम्यन्त नाम से साधु (प्रवीण, योग्य, उपकारक) अर्थ में य प्रत्यय होता है। सभायां साधुः सभ्यः। कर्मणि साधुः कर्मण्यः। शरणे साधुः शरण्यः।

नियम २६०—(पर्षदो ण्यणौ ७।३।१८) पर्षद् शब्द से साधु अर्थ में ण्य और ण प्रत्यय होता है। पर्षदि साधुः पार्षद्यः, पार्षदः।

नियम २६१—(कथादेरिकण् ७।३।२१) कथा, विकथा, वितण्डा, वृत्ति, संग्रह, गुण, आयुर्वेद, गुड, इक्षु, वेणु, ओदन, संग्राम आदि शब्दों से साधु अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। काथिकः, वैकथिकः, वार्तिकः, आयुर्वेदिकः, सांग्रहिकः, सांग्रामिकः, बैतण्डिकः, गौणिकः।

नियम २६२—(तस्मै हिते ७।३।३५) चतुर्थ्यन्त नाम से हित (उपकारक) अर्थ में ईय आदि प्रत्यय होते हैं। वत्सेभ्यो हितः—वत्सीयः, करभीयः, पित्रीयः, मात्रीयः। शुन्यः, शून्यः। आमिक्ष्यः, आमिक्षीयः। आमिक्षा (छेना)।

नियम २६३—(शरीरावयवाद्यः ७।३।३७) शरीर के अवयववाची शब्दों से हित अर्थ में य प्रत्यय होता है। दन्तेभ्यो हितं दन्त्यं, कर्ण्यं, कण्ठ्यं, ओष्ठ्यम्।

नियम २६४—(अजाविभ्यां थ्यः ७।३।३९) अज, अवि शब्द से हित अर्थ में थ्य प्रत्यय होता है। अजेभ्यो हितं अजथ्यं, अविथ्यम्।

नियम २६५—(खल-यव-माष-तिल-वृष-ब्रह्मरथात् ७।३।३८) खलादि शब्दों से हित अर्थ में य प्रत्यय होते है। खल्यं, यव्यं, माष्यं, तिल्यं, वृष्यं ब्रह्मण्यं, रथ्यम्।

नियम २६६—(क्षेत्रे शाकटशाकिनौ ७।३।७९) क्षेत्र अर्थ में शाकट, शाकिन प्रत्यय होते हैं। इक्षूणां क्षेत्रं इक्षुशाकटं, इक्षुशाकिनम्। मूलकशाकटं, मूलकशाकिनम्। सर्षपशाकटं, सर्षपशाकिनम्।

नियम २६७—(तेन वित्ते चञ्चुचणौ ७।४।१६) तृतीयान्त शब्द से वित्त (ज्ञात, प्रकाश) अर्थ में चञ्चु और चण प्रत्यय होते हैं। विद्यया वित्तः विद्याचञ्चुः, विद्याचणः। केशचञ्चुः, केशचणः।

प्रयोगवाक्य

हारिद्रं वस्त्रं कीदृशं पीतं भवति ? इदं माञ्जिष्ठं वर्तते न तु लाक्षिकम्। पीतकं परिदधाति तथापि नो पीताम्बरो कथमेतत् ? आयुर्वेदिकोपि गाणितिको भवितुं इच्छति। नैयायिकस्य शंकरस्य मंदबुद्धिः कथं जाता ? अस्मिन् नगरे

कियन्तः पार्षदाः सन्ति ? आयुर्वेदिकोपि न आयुर्वेदिकः । मात्रीयो रामः कथं क्षुधां सहते ? कर्ण्यं यंत्रं क्व उपलभते ? चत्वरे अजथ्यस्य उपलब्धिः भविष्यति । केशचञ्चुः लोकेशः अद्य भाषणं दास्यति । रक्ताङ्गशाकटं किं त्वया कदापि दृष्टम् ? नैमित्तिकः भवन्तं किमवोचत् ? यः चार्चिकः स चर्चां कर्तुं व्रजेत् । गुरोः पार्श्वे महेन्द्रः किं अध्येष्यते ? प्रातः सुरेन्द्रः किं अध्यैत ? श्यामा सूतं असूत । बालः रजन्यां कुत्र अशेत ?

संस्कृत में अनुवाद करो

रमेश आंगन में क्यों बैठा है ? साधु राख से केश लुंचन करते हैं। दीया कब तक जलेगा ? ताले की कुंजी कहां है ? इस मकान में बहुत आले हैं। छींके से लड्डू किसने लिये हैं ? लालटेन में तैल नहीं है। तुम्हारे घर में कितने मांचे और खाट हैं ? राजस्थानी लोग चावल, गेहूं और चना खाते हैं। पंजाब के लोग सरसों का साग खाते हैं। मेवाड के लोग उडद की दाल खाते हैं। घोडे को जौ प्रिय है। क्या तुम्हें मसूर की दाल पसन्द है ? पानी को उबालने से दूषित कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। गेहूं को कूटना और आटे को गूंधना भी एक कला है। उडद की दाल में से सरसों को छांटना सहज नहीं है। पानी को छालना (छानना) सद्गृहस्थ का कर्त्तव्य है।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

इसमें कौन सा वस्त्र लाक्षा से रंगा हुआ है ? कषाय से क्या रंगा जाता है ? हरिद्रा से रंगा हुआ वस्त्र बहुत जल्दी साफ हो जाता है। वह ज्योतिष में विश्रुत है। मुनि राजकर्ण चर्चा में विश्रुत है। यह भोजन साधु के लिए हितकर है। विद्यासागर गणित विद्या में प्रसिद्ध है। कण्ठ के लिए हितकर हो वह पेय पीओ। शरण में आए हुए का वह उपकारक है। सभा में वह प्रवीण है। व्यवहार में वह प्रवीण है। गुण के योग्य व्यक्ति को क्या कहते हैं ? निमित्त का ज्ञाता आज कौन है ?

धातु का प्रयोग करो

तुमने संस्कृत किसके पास पढी ? आलसी क्या पढेगा ? रमेश कहां सोयेगा ? सीमा के पुत्र उत्पन्न हुआ है। दर्शनार्थी सुधर्मा सभा में सोते हैं। सुशीला के एक भी पुत्र पैदा नहीं हुआ है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो और बताओ किस नियम से इनमें प्रत्यय हुआ है ?

वैष्णवः, उपस्थ्यं, शैवः, आग्नेयः, आयुर्वेदिकः, गाणितिकः, वैयाकरणः, मौहूर्तिकः, कौसुम्भं, पीतकं, वार्षिकः, कर्मण्यः, पार्षद्यः, वार्तिकः, करभीयः, शून्यः, ओष्ठ्यम् ।

२. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
परोसना, राख, दीया, ताला, छींका, चावल, जौ, कूटना आंगन ।

३. इंङ्क्, शीङ्क् और षूङ्क् धातु के तिबादि, द्यादि तथा णबादि के रूप लिखो ।

४. हिंदी में अनुवाद करो—
वैयाकरणस्य पार्श्वे व्याकरणं पठ । विनयचणं खेतसीस्वामिनं किं त्वं जानासि ? हारिद्रं वसनं मह्यं न रोचते । तव नीशारः कुत्रास्ति ? अहं इदं पुस्तकं न अधीयाय । ते कुत्र शेरते ?

५. नीचे लिखे अर्थों में कौन सा प्रत्यय होता है ?
रंगने के अर्थ में, तद्वेत्त्यधीते, साधु अर्थ में, हित, वित्त ।

पाठ ४२ : तद्धित (५) शेषाधिकार

शब्दसंग्रह

आयः (आमदनी)। उद्धारः, ऋणम् (उधार)। धारकः (किरायेदार)। संवित् (ठेका)। कृतसंवित् (ठेकेदार)। अस्तोकः (थोक)। ग्राहकजीवी (दलाल)। प्रतिनिध्यम् (दलाली)। टंकम् (नकद)। प्रतिरूपम् (नमूना)। ख्यापना, ज्ञापना (नोटिस)। गोणी (बोरा, बोरी) वृद्धिः (ब्याज)। अर्घः (मूल्य)। विनिमयदलम् (हुंडी)।

धातु—ईडङ्क्—स्तुतौ (ईट्टे) स्तुति करना। आसङ्क्—उपवेशने (आस्ते) बैठना। चक्षङ्क्—व्यक्तायां वाचि (आचष्टे) बोलना।

ईड्, आस् और चक्ष् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ८९,२९,९०)।

शेष अर्थ (जात, भव, क्रीत, कुशल आदि)

शेष अर्थ में अनेक अर्थ हैं। उनमें जात, भव, क्रीत कुशल आदि प्रमुख हैं। इनमें एक-एक अर्थ में भी प्रत्यय होते हैं। शेष अर्थ में जो प्रत्यय होते हैं वे इन सारे अर्थों में होते हैं। जहां जो अर्थ उपयुक्त बैठता हो वहां वह लगा लेना चाहिए।

नियम २६८—(राष्ट्रादियः ६।४।२) राष्ट्र शब्द से शेष अर्थ में **इय** प्रत्यय होता है। राष्ट्रे जातः, भवः, क्रीतः कुशलो वा=राष्ट्रियः।

नियम २६९—(पारावारेभ्य ईनः ६।४।३) पार, अवार, पारावार, अवारपार इनसे शेष अर्थ में ईन प्रत्यय होता है। पारीणः, अवारीणः, पारावारीणः, अवारपारीणः।

नियम २७०—(द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यः ६।४।४) दिव्, प्राच्, अपाच्, उदच्, प्रत्यच् इन शब्दों से शेष अर्थ में य प्रत्यय होता है। दिवि भवं दिव्यं, प्राचि प्राग् वा भवं प्राच्यं, अपाच्यं, उदीच्यं, प्रतीच्यम्।

नियम २७१—(ग्रामादीनञ् च ६।४।५) ग्राम शब्द से ईनञ् और य प्रत्यय होता है। ग्रामीणः, ग्राम्यः।

नियम २७२—(नद्यादेरेयण् ६।४।९) नदी आदि शब्दों से एयण् प्रत्यय होता है। नद्यां जातो भवो वा नादेयः। माहेयः। वाराणसेयः, श्रावस्तेयः, कौशाम्बेयः, वानवासेयः आदि।

नियम २७३—(दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यण् ६।४।१०) दक्षिणा,

पश्चात्, पुरस् शब्द से त्यण् प्रत्यय होता है दाक्षिणात्यः, पाश्चात्यः, पौरस्त्यः ।

नियम २७४—(क्वामेहत्रतसस्त्यप् ६।४।१५) क्व, अमा, इह, और त्र और तस् प्रत्ययान्त शब्द से त्यप् प्रत्यय होता है । क्वत्यः, अमात्यः, इहत्यः, कुत्रत्यः, यत्रत्यः, तत्रत्यः, कुतस्त्यः, ततस्त्यः ।

नियम २७५—(ऐषमोह्यःश्वसो वा ६।४।१८) ऐषमस्, ह्यस्, श्वस् शब्दों से शेष अर्थ में त्यप् और तन प्रत्यय होता है । ऐषमस्त्यं, ऐषमस्तनं । ह्यस्त्यं, ह्यस्तनं । श्वस्त्यं, श्वस्तनम् ।

निगम २७६—(णो रण्यात् ६।४।२१) अरण्य शब्द से शेष अर्थ में ण प्रत्यय होता है । आरण्याः पशवः ।

नियम २७७—(भवतोरिकणीयसौ ६।४।३०) भवत् शब्द से इकण्, ईयस् प्रत्यय होता है । भावत्कं, भावत्की । भवदीयः, भवदीया ।

नियम २७८—(परजनराज्ञोऽकीयः ६।४।३१) पर, जन, राजन् शब्द से अकीय प्रत्यय होता है । परकीयः, जनकीयः, राजकीयः ।

नियम २७९—(वृद्धादीयः ६।४।३२) वृद्ध संज्ञा से शेष अर्थ में ईय प्रत्यय होता है । त्यदादिगण और जो संज्ञा व्यवहार में प्रयोग में आती है उसकी वृद्ध संज्ञा होती है । चैत्रीयः, मोहनीयः, मैत्रीयः, तदीयः, मदीयः ।

नियम २८०—(वा युष्मदस्मदोऽञीनऔयुष्माकास्माकौ च ६।४।६९) युष्मद् और अस्मद् शब्द से शेष अर्थ में अञ्, ईनञ् प्रत्यय विकल्प से होता है । उसके योग में युष्मद् को युष्माक, अस्मद् को अस्माक आदेश होता है । युवयोर्युष्माकं वा इदं यौष्माकं, यौष्माकीणं, युष्मदीयम् । आस्माकं, आस्माकीनं, अस्मदीयम् ।

नियम २८१—(तवकममकावेकत्वे ६।४।७०) शेष अर्थ में एकत्ववाची युष्मद् और अस्मद् से अञ् और इनञ् प्रत्यय होता है, तथा युष्मद् को तवक और अस्मद् को ममक आदेश होता है । तव अयं तावकः, तव इदं तावकं, तव इयं तावकी । इसी प्रकार मामकः मामकं, मामकी । इसी प्रकार ईनञ् प्रत्यय होता है । तव अयं तावकः, तावकीनं, त्वदीयम् । मामकः, मामकीनं, मदीयम् ।

नियम २८२—(अन्तादिमध्यान्मः ६।४।७६) अंत, आदि और मध्य शब्द से शेष अर्थ में म प्रत्यय होता है । अन्तमः, आदिमः, मध्यमः ।

नियम २८३—(पश्चादग्रान्तादिमः ६।४।७८) पश्चाद्, अग्र और अन्त शब्द से शेष अर्थ में इमः प्रत्यय होता है । पश्चिमः, अग्रिमः, अन्तिमः । (अनाराच्छश्वत् पृथगोऽव्ययस्य ८।४।६६) से अव्यय की टि का लोप करने पर पश्चिमः ।

नियम २८४—(वर्षाकालेभ्यः इकण् ६।४।८१) वर्षा और कालवाची

शब्दों से इकण् प्रत्यय होता है। वर्षासु भवः—वार्षिकः। मासिकः, पाक्षिकः, दैवसिकः, अर्द्धमासिकः, आह्निकः, रात्रिकः।

प्रयोगवाक्य

राष्ट्रियाः सर्वदा स्वराष्ट्रस्य सम्मानं वाञ्छन्ति। साधवः दिव्यं सौख्यं न कांक्षन्ति। प्राच्या रक्तिमा सर्वेभ्यः रोचते। केचित् ग्रामीणाः कृषिं कुर्वन्ति। नादेयं नीरं मधुरं भवति। वारणसेयोऽयं पुरुषः विद्वान्नस्ति। पाश्चात्या संस्कृतिः शनैः शनैः भारतवर्षेऽपि समागता। यत्रत्योऽयं मर्त्यः तत्रत्यं इदं वस्त्रमस्ति। परकीयं वस्तु विना आज्ञया यः गृह्णाति सोऽस्ति स्तेनः। भावत्केन ज्ञानेन सर्वेऽपि प्रभाविताः जाताः। इदं यौष्माकीणं इदं आस्माकीनं च इति विभेदरेखा ज्ञानिनः हृदये न भवति। अर्हं सर्वदा जिनं ईडे। त्वं जिनं ईडिष्व। सुव्रतः कुत्र आसिष्ट। आचार्यभिक्षुः साधून् किं आचख्यौ ? त्वं किं आख्यासि ?

संस्कृत में अनुवाद करो

दिलीप की मासिक आमदनी कितनी है ? संपत से तुमने कितने रुपये उधार लिये ? किरायेदार कब मकान खाली करेगा ? इस मकान का ठेका किसने लिया है ? ठेकेदार कब आयेगा ? जयपुर में थोक व्यापारी कितने हैं ? इस वस्तु का दलाल कौन है ? मोहन को तुमने कितने नकद रुपये दिये थे ? व्यापारी को चावल का नमूना कौन दिखायेगा ? यह नोटिस कहां से आया है ? बोरी में क्या है ? सोहन मोहन के रुपयों का ब्याज कब देगा ? गेहूं का क्या भाव है ? यह हुंडी नकली है।

तद्धति के प्रत्ययों का प्रयोग करो

ग्राम में रहने वाले व्यक्ति भद्र होते हैं। नदी में होने वाली धूल का भी उपयोग होता है। हमें गर्व है हमारे राष्ट्र में उत्पन्न व्यक्तियों का यश सारे विश्व में व्याप्त है। यह वस्तु यहां पैदा हुई है। आचार्य भिक्षु कहां के निवासी थे ? मेंढक वर्षा में उत्पन्न होता है। आपकी पुस्तक कहां है ? मेरी दवात कहां है ? आदिमंगल, मध्यमंगल और अंत मंगल कौन सा है ?

धातु का प्रयोग करो

हमें सदा वीतराग देव की स्तुति करनी चाहिए। क्या तुम यहां बैठोगे ? यहां नवरत्न बैठा था। पिताजी ने तुमको क्या कहा ? सभा में रमेश क्या बोलेगा ?

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो

ह्यस्तनः बालः कोऽस्ति ? श्वस्त्योऽयंशिशुः। चैत्रीयं गृहम्। भावत्कं

कौशलं दृष्ट्वा, द्विधा मोदो जायते । डा० राधाकृष्णः दाक्षिणात्यः आसीत् । यौष्माकेन माधुर्येण नैपुण्येन च सर्वः विवादः विनष्टः । त्वदीया भगिनी मदीया भातृजाया अस्ति । साधवः प्रतिदिनं दैवसिकं रात्रिकं च प्रतिक्रमणं कुर्वन्ति ।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ किस अर्थ में कौन-सा प्रत्यय हुआ है—

पाश्चात्यः, पौरस्त्यः, ग्रामीणः, माहेयः, पारावारीणः, जनकीयः, ततस्त्यः, पाक्षिकः ।

३. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ—

प्रतिरूपम्, संवित्, ख्यापना, गोणी, वृद्धिः, विनिमयदलम् ।

४. ईड्, आस् और चक्ष् धातु के तुबादि, द्यादि और स्यत्यादि के रूप लिखो ।

पाठ ४३ : तद्धित ६ (शेषाधिकार २)

शब्दसंग्रह

खुरली (शस्त्राभ्यास का स्थान) । प्रगंडरः (किले की दीवार) । डमरः (गदर) । सज्जम् (शस्त्र आदि से युक्त) । आवेष्टकः (घेरा) । यानम् (चढाई) । पताका (झंडा) । खूरिका (परेड करने का मैदान) । उपरक्षणम् (पहरा) । द्वैधम् (फूट डलवाना) । डिंबः (बिना हथियारों का युद्ध) । विद्रवः (भागना) । विद्रावणम् (भगाना) । प्रचक्रम् (मार्च करना, प्रस्थित सैन्य) । व्यूहः (मोर्चा) । आसारः (शत्रु को घेर लेना, आक्रमण) । संधिः (सुलह) ।

धातु—ष्टुंन्क्—स्तुतौ (स्तौति, स्तुते) स्तुति करना । ब्रूंन्क्—व्यक्तायां वाचि (ब्रवीति, ब्रूते) बोलना । द्विषंन्क्—अप्रीतौ (द्वेष्टि, द्विष्टे) ।

ष्टु, ब्रू और द्विष् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ३०,३१,९१) ।

नियम २८५—(ऋतुनक्षत्रसंध्यादेरण् ६।४।८६) ऋतुवाची, नक्षत्रवाची, संध्यादि शब्दों से शेष अर्थ में अण् प्रत्यय होता है । ग्रीष्मे भवः ग्रैष्मः । वासन्तः, शैशिरः । पुष्ये भवः पौषः । आश्विनः, रौहिणः । सान्ध्यः, सान्धिवेलः, आमावास्यः, शाश्वतः ।

नियम २८६—(तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्रेणि ८।४।७६) तिष्य, पुष्य के य का लोप हो जाता है अण् प्रत्यय परे होने पर । तिष्ये भवः तैषः । पौषः ।

नियम २८७—(तत्र जाते ७।१।१) सप्तम्यन्त नाम से जात (स्वयं पैदा होना) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है । कुछ शब्दों से अनेक अर्थों में एक ही प्रत्यय होता है । यथाविहित का अर्थ है उन शब्दों से वे ही प्रत्यय होंगे और वही रूप बनेगा । पाठ ४६ देखें । मथुरायां जातः माथुरः । आग्नेयः, कालेयः, स्त्रैणः, पौंस्नः, राष्ट्रियः, ग्रामीणः, ग्राम्यः ।

नियम २८८—(कृतलब्धक्रीतसंभूतेषु ७।१।१७) सप्तम्यन्त नाम से कृत, लब्ध, क्रीत, संभूत इन अर्थों में यथाविहित प्रत्यय होता है । मथुरायां कृतः, लब्धः, क्रीतः, संभूतः वा माथुरः ।

नियम २८९—(कुशले ७।१।१८) सप्तम्यन्त नाम से कुशल अर्थ में अण्, इय आदि प्रत्यय होते हैं । मथुरायां कुशलः माथुरः ।

नियम २९०—(भवे ७।१।३१) सप्तम्यन्त नाम से भव (रहना)

अर्थ में अण्, इय आदि प्रत्यय होते हैं। मथुरायां भवः माथुरः। भारतीयः।

नियम २९१—(दिगादेर्यः ७।१।३२) दिश्, वर्ग, गण, पक्ष, मित्र, मेधा, न्याय, देश, काल, आकाश, अप्, मेघ, वंश आदि शब्दों से भव अर्थ में य प्रत्यय होता है। दिश्यः, वर्ग्यं, गण्यः, देश्यः।

नियम २९२—(शरीरावयवात् ७।१।३३) शरीर के अवयव से भव अर्थ में य प्रत्यय होता है। दन्त्यः, कर्ण्यः, ओष्ठ्यः, मुख्यः, मूर्धन्यः।

नियम २९३—(दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यहेरेयण् ७।१।३५) दृति, कुक्षि, कलशि, वस्ति, अहि शब्दों से भव अर्थ में एयण् प्रत्यय होता है। दार्तेयं जलं। कौक्षेयः व्याधिः। कालशेयं तक्रं। वास्तेयं मूत्रं। आहेयं विषम्।

नियम २९४—(मध्यादिनण्णेया मुम् चास्य ७।१।४८) मध्यशब्द से भव अर्थ में दिनण्, ण, ईय प्रत्यय और मुम् का आगम होता है। मध्ये भवः माध्यन्दिनः, माध्यमः माध्यमीयः।

नियम २९५—(ईयो मत्वर्थजिह्वामूलाङ्गुलिभ्यश्च ७।१।४९) मत्वर्थ, जिह्वामूल, अंगुलि, मध्य शब्दों से भव अर्थ में ईय प्रत्यय होता है। मत्वर्थीयः, जिह्वामूलीयः, अङ्गुलीयः, मध्यीयः।

नियम २९६—(वर्गान्तात् ७।१।५०) वर्गअंत वाले शब्दों से भव अर्थ में ईय प्रत्यय होता है। कवर्गीयः, तवर्गीयः, पवर्गीयः।

नियम २९७—(प्रभवति ७।१।६९) पंचमी विभक्ति अन्त वाले शब्दों से प्रभवति (प्रथमं प्रकाशमानेऽर्थे) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं। हिमवतः प्रभवति हैमवती गंगा। दारदी सिन्धुः। काश्मीरी वितस्ता।

नियम २९८—(अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ७।१।७४) द्वितीयान्त शब्द से अधिकृत्य कृते ग्रन्थे (जिस विषय को लेकर ग्रन्थ बनाया जाए) अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं। सुभद्रां अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः सौभद्रः। भाद्रः, चान्दनः, बालः, सैतः।

नियम २९९—(तेन प्रोक्ते ७।१।९१) तृतीयान्त शब्द से प्रोक्त (व्याख्यात) अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं। गणधरेण प्रोक्तं गाणधरं द्वादशाङ्गम्। भद्रबाहुना प्रोक्तं—भाद्रबाहवानि उत्तराध्ययनानि।

नियम ३००—(कृते ७।१।१०६) तृतीयान्त शब्द से कृत (उत्पादित, बनाया हुआ) अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होता है। शिवेन कृतो ग्रन्थः शैवः। सिद्धसेनीयः स्तवः।

नियम ३०१—(तस्येदम् ७।१।११२) षष्ठयन्त नाम से इदं अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है। भिक्षोः इदं भैक्षवं। माथुरं, बार्हस्पत्यं, पाटलिपुत्रकः, प्राकारः, कालेयः, आग्नेयं, राष्ट्रियं, पारावारीणम्।

नियम ३०२—(निशाप्रदोषात् ६।४।८४) कालवाची निशा, प्रदोष शब्द से शेष अर्थ में इकण् और अण् प्रत्यय होता है। नैशिकः, नैशः। प्रादो-

षिकः, प्रादोषः ।

नियम ३०३—(सायं-चिरं-प्राह्णे-प्रगेऽव्ययेभ्यस्तनट् ६।४।९०) कालवाची इन अव्ययों से, कालवाची और अव्ययों से भी शेष अर्थ में तनट् प्रत्यय होता हैं । सायंतनं, चिरंतनं, प्राह्णेतनं, प्रगेतनं, दिवातनं, दोषातनं, प्रातस्तनं, प्राक्तनम् ।

प्रयोगवाक्य

ग्रैष्मं औष्ण्यं सर्वान् पीडयति । माथुरोऽयं पुरुषः भद्रोऽस्ति । वयं सर्वे भारतीयाः स्मः । दन्त्यां कर्ण्यां ओष्ठ्यां मूर्धन्याञ्च पीडामपनेतुं जनाः चिकित्सकस्य पार्श्वे गच्छन्ति । ग्रीष्मतौ दिवसस्य माध्यमतापः तीव्रतरो भवति । चान्दनबाले ग्रन्थे अनेकाः घटनाः शिक्षाप्रदाः सन्ति । सिद्धसेनीयः स्तवः पठनीयोस्ति । भैक्षवं गणं नन्दनवनतुल्यं चकास्ति । रवीन्द्रः प्रतिदिनं जिनं स्तौति स्तुते वा । द्रौपदी जिनं अस्तावीत् अस्तोष्ट वा । अहं जिनं स्तोष्यामि स्तोष्ये वा । मोहनः त्वां किमवोचत् अब्रूत वा । कटु मा ब्रूहि ब्रूष्व वा । अजितः किं वक्ष्यते वक्ष्यति वा । सा मां द्वेष्टि द्विष्टे वा । सः तं अद्विक्षत् अद्विक्षत वा । मा द्विड्ढि ।

संस्कृत में अनुवाद करो

शत्रुसेना किले की दीवार तोडने का प्रयास कर रही है । सेना नगर के चारों ओर घेरा डाली हुई है । अशोक ने कलिंग पर क्यों चढाई की ? दुर्जनता पर सज्जनता का विजय-झंडा सदा लहरायेगा । सेना के लिए परेड करने का मैदान सुरक्षित रहता है । रात में पहरेदार पहरा दे रहा था । दुर्जन लोग फूट डलवाने का कार्य करते हैं । त्रिपृष्ठ वासुदेव ने सिंह के साथ बिना हथियारों का युद्ध किया । लडकों को भगाना डाकुओं के लिए सहज कार्य है । लडके और लडकी का घर से भागना अच्छा कार्य नहीं है । सेना मोर्चे पर डटी हुई है । राणाप्रताप ने प्राणान्त तक अकबर से सुलह नहीं की ।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

रात में अन्धकार होता है । प्रदोष वेला में होने वाला कार्य बताओ । प्रातः होने वाला भ्रमण स्वास्थ्य के लिए अच्छा है । पोष में होने वाली शीतल हवा किसे सुहाती है ? यह फल मथुरा में उत्पन्न हुआ है । आंख, कान और नाक में होने वाली पीडा असह्य होती है । पूर्वदिशा में होने वाली लालिमा सबको अच्छी लगती है । मतु अर्थ में होने वाले कौन से प्रत्यय हैं ? गंगा हिमालय से उत्पन्न होती है । यह ग्रन्थ भरत को लेकर बनाया गया है । महात्मा गांधी भारत में उत्पन्न हुए थे । यह ग्रन्थ आचार्य तुलसी द्वारा कृत है । यह संघ आचार्य भिक्षु का है ।

धातु का प्रयोग करो

तीर्थंकरों की स्तुति करो। जो अर्हतों की स्तुति करेगा वह संसार से तर जायेगा। झूठ मत बोलो। बच्चे क्या बोलते थे ? किसी से द्वेष मत करो।

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—

नैशे सघनतमसि चौराः चौर्यं कुर्वन्ति। आचार्यस्य दिवातनानि कार्याणि कानि कानि सन्ति ? वासन्तः पवनः कस्मै न रोचते ? माध्यमानां तीर्थंकराणां साधवः चतुर्यामधर्मं पालयन्ति। कालवोऽयं कालुयशोविलासः तेरापंथसंघस्य अमूल्यनिधिरस्ति। भैक्षवा इमा वाणी अस्माकं पथदर्शिनी चकास्ति।

२. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करो और बताओ किस अर्थ में कौन-सा

३. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ—

आवेष्टकः, खूरिका, द्वैधम्, विद्रवः, खुरली, आसारः।

४. ष्टु, ब्रू और द्विष् धातु के तिबादि, द्यादि और स्यत्यादि के रूप लिखो।

वैज्ञानः, जायाचार्यः, भारमलः, भैक्षवः, भैक्षवम्।

३. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ—

आवेष्टकः, खूरिका, द्वैधम्, विद्रवः, खुरली, आसारः।

४. ष्टु, ब्रू और द्विष् धातु के तिबादि, द्यादि और स्यत्यादि के रूप लिखो।

पाठ ४४ : तद्धित ७ (इकण् अधिकार)

शब्दसंग्रह

अंगुलीयकम् (अंगूठी) । काचवलयम् (चूडी) । कटिसूत्रम्, मेखला (करधन) । किंकिणी (घुंघरु) । केयूरम् (बाजूबन्द) । पादाभरणम् (लच्छा) । ग्रैवेयकम् (हंसुली) । कुंडलम् (कान की बाली) । ललाटाभरणम् (टिकुली) । एकावली (एकलड का हार) । मुद्रिका (नामांकित अंगूठी) । ओष्ठरञ्जनम् (लिपस्टिक) । कपोलरञ्जनम् (रूज़) । नखरंजनम् (नेल पालिश) । फेनिलः (साबुन) । रोममार्जनी (ब्रुश) । दंतचूर्णम् (टूथपाउडर) । दंतधावनम् (दांत का ब्रुश, दातून) । दंतपिष्टकम् (टूथपेस्ट) ।

धातु—लिहंन्क्—आस्वादने (लेढि, लीढे)—आस्वादन करना । ओहांक्—त्यागे (जहाति) छोडना । जिभींक्-भये (बिभेति) डरना ।

लिह्, ओहांक् और भी धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ९२, ९३,३३) ।

नियम

इस प्रकरण में नीचे लिखे गए सभी अर्थों में इकण् प्रत्यय होता है ।

नियम ३०४—(तेन दीव्यतिखनतिजयतिजितेषु ७।२।२) तृतीयान्त शब्द से, दीव्यति (जूआ खेलना) खनति (खोदना) जयति (जीतना) जित (जीता हुआ)—इन अर्थों से इकण् प्रत्यय होता है । अक्षै र्दीव्यति आक्षिकः । कुद्दालेन खनति कौद्दालिकः । अक्षै र्जयति आक्षिकः । अक्षैर्जितं आक्षिकम् ।

नियम ३०५—(संसृष्टे ७।२।३) संसृष्ट (दूसरे द्रव्य का मिश्रणभूत) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है । दध्ना संसृष्टं दाधिकम् । पैप्पलिकम् ।

नियम ३०६—(संस्कृते ७।२।८) संस्कृत (सतउत्कर्षाधानं संस्कारः) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है । दध्ना संस्कृतं दाधिकम् । मारिचिकम् । उपाध्यायेन संस्कृतः औपाध्यायिकः । विद्यया संस्कृतः वैद्यिकः ।

नियम ३०७—(तरति ७।२।१०) तरति (तैरना) के अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है । उडुपेन तरति औडुपिकः । गौपुच्छिकः ।

नियम ३०८—(नौ द्विस्वरादिकः ७।२।११) नौ और द्विस्वरवाले शब्दों से तरति अर्थ में इक प्रत्यय होता है । नावा तरति नाविकः । बाहुकः, घटिकः, दृतिकः ।

नियम ३०९—(चरति ७।२।१२) चरति (जाना और खाना) अर्थ

में इकण् प्रत्यय होता है। हस्तिना चरति हास्तिकः। शाकटिकः। दध्ना चरति दाधिकः।

नियम ३१०—(पर्पादेरिकट् ७।२।१३) पर्प, अश्व, अश्वत्थ, रथ, अर्घ्य, व्याल, व्यास शब्दों से चरति अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। पर्पेण चरति पर्पिकः, पर्पिकी, अश्विकः, रथिकः।

नियम ३११—(पक्षिमत्स्यमृगाख्येभ्यो हन्ति ७।२।३८) पक्षि, मत्स्य और मृग इनके स्वरूप, पर्यायवाची और जातिविशेष द्वितीयान्त शब्दों से इकण् प्रत्यय होता है। पक्षिणो हन्ति पाक्षिकः। शाकुनिकः, मायूरिकः, मात्स्यिकः, मैनिकः, मार्गिकः, सारङ्गिकः, हारिणिकः।

नियम ३१२—(धर्माधर्माभ्यां चरति ७।२।४३) द्वितीयान्त धर्म, अधर्म शब्द से चरति (अनुष्ठान) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। धर्मं चरति—धार्मिकः। आधर्मिकः।

नियम ३१३—(निकटादिषु वसति ७।२।८२) सप्तम्यन्त शब्द से वसति अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। निकटे वसति। पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग होने पर भी मूलिकः, श्मशानिकः।

नियम ३१४—(मूल्यैः क्रीते ७।२।१०५) तृतीयान्त मूल्यवाची शब्द से क्रीत अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। प्रस्थेन क्रीतं प्रास्थिकम्। साप्ततिकम्।

नियम ३१५—(अर्हति ७।२।१३२) द्वितीयान्त शब्दों से अर्हति अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। छत्रमर्हति छात्रिकः। चामरिकः। वास्त्रिकः।

नियम ३१६—(शोभते ७।२।१७३) तृतीयान्त शब्दों से शोभते अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है। आचार्येण शोभते आचार्यिकः गणः। शीलेन शोभते शैलिकी सीता। वास्त्रयुगिकं शरीरम्। औपनहिकौ पादौ।

प्रयोगवाक्य

कौट्टालिकः कुत्र वसति ? दाधिकं भक्तं कस्मै रोचते ? बाहुकं कृष्णं दृष्ट्वा सर्वेऽपि पांडवाः विस्मयं जग्मुः। अस्यां नगर्यां अनेके पाक्षिकाः, शाकुनिकाः, मायूरिकाः, मात्स्यिकाः, हारिणिकाः, मार्गिकाः च सन्ति। धार्मिकाणां व्यवहारो मृदु भवति। आधर्मिकाः निरये यान्ति। वार्क्षमूलिकः मूषकः किं अत्ति ? शैलिकीं सीतां सर्वेऽपि स्मरन्ति। सुशीला गुरोः वाणीं लेढि लीढे वा। मनिः भोजनं अद्रासीत। रामः सीतां कथं जहौ ? यः पापात् बिभेति सोऽस्ति महान्। सः कस्मात् अभयात् !

संस्कृत में अनुवाद करो

मंजू को उसकी मां ने अंगूठी, करधन, घुंघरु, बाजूबन्द, हंसुली, कान की बाली, टिकुली और एकलड का हार दिया था। अपनी नामांकित अंगूठी

को देखकर दुष्यन्त को शकुन्तला की याद आ गई। आजकल स्त्रियां लिपस्टिक, रूज़ और नेल पालिश का बहुत उपयोग करती हैं। लोग साबुन से शरीर और कपडे को साफ करते हैं। तुम ब्रुश से क्या करोगे ? सोहन को टूथपाउडर और दांत का ब्रुश चाहिए।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

रमेश को दही से संस्कृत साग अच्छा लगता है। इस नगर में विद्या से संस्कृत व्यक्ति कितने हैं ? नौका से पार करने वाले व्यक्ति दूरदर्शी होने चाहिए। इस गांव में मयूर को मारने वाला व्यक्ति कौन है ? श्मसान में रहने वाला व्यक्ति निर्भीक होता है। धर्म का आचरण करने वाला व्यक्ति स्वर्ग जाता है। गण आचार्य से शोभित होता है।

धातु का प्रयोग करो

सुधर्मा स्वामी ने भगवान महावीर की वाणी का आस्वादन किया था। तुम आचार्यश्री के वचनों का आस्वादन करो। सुशील ने घर क्यों छोडा ? पाप से डरो। रमेश चूहे से डरता है।

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—

अस्यां नगर्यां कियन्तः अश्विकाः, रथिकाः, हास्तिकाश्च वसन्ति। दाधिकं व्यञ्जनं बहुभ्यः रोचते। शाकुनिकः कदा आगमिष्यति ? आचार्यस्य नैकटिको भिक्षुः कुत्र अव्रजत् ? तस्याः वास्त्रयुगिकं शरीरं विलोक्य सः मुग्धोऽभवत्।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ कौन सा प्रत्यय किस अर्थ में हुआ है—

पैप्पलिकम्, औपाध्यायिकः, दृतिकः, शाकटिकः, प्रास्थिकम्, चामरिकः, आधर्मिकः।

३. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बताओ—

अंगुलीयकम्, ललाटाभरणम्, ओष्ठरञ्जनम्, फेनिलः, रोममार्जनी, दंत-पेष्टकम् पादाभरणम्।

४. लिह्, ओहांक् और भी धातु के तिबादि, णबादि और स्यदादि के रूप लिखो।

पाठ ४५ : तद्धित ८ (भाव)

शब्दसंग्रह

अहिफेनम् (अफीम) । गंजा (गांजा) । ताम्रकूटः (तम्बाकू) । चरसम् (चरस) । मद्यम्, मदिरा (शराब) । मांसम् (मांस) । त्रिकम् (कटिदेश) । विधुरः (रंडुवा) । अवलः (बडा शाला) । कुली (बडी शाली) । जन्या (मां की सहेली, वधू की सहेली) । उत्तराधिकारी (वारिस) । श्यालः (साला) । श्याली (साली) । श्यालीधवः (साडू) । श्वसुरगृहम् (ससुराल) ।

धातु—डुदांन्क्—दाने (ददाति, दत्ते) देना । डुधांन्क्—धारणे च (दधाति, धत्ते) धारण करना । डुभृंन्क्—पोषणे च (बिभर्ति, बिभृते) पोषण करना ।

दा, धा और भृं धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ३४,९४,९५) ।

यस्य गुणस्य हि भावात् द्रव्ये शब्दनिवेशः । जिस गुण के होने से द्रव्य में शब्द का सन्निवेश (संबंध) होता है, उस गुण को भाव कहते हैं । (भावे त्वतलौ ७।३।५६) भाव में मुख्यतया सभी शब्दों से त्व और तल् प्रत्यय होता है । त्व प्रत्यय नित्य नपुंसकलिंग होता है और तल् प्रत्यय नित्य स्त्रीलिंग होता है । तल् में ल् का लोप होकर 'आ' आ जाता है (ता) रूप बन जाता है । जैसे—साधुत्वं, साधुता । सज्जनत्वं, सज्जनता । किसी व्यक्ति के साथ साधु या सज्जन शब्द का संबंध जुडता है वह इसलिए कि उसमें साधुता या सज्जनता का भाव है । सज्जनता नाम का गुण है । सज्जनता के कारण ही व्यक्ति सज्जन कहलाता है । सज्जन विशेषण है और सज्जनता उसका भाव (गुण) है । कर्त्ता का विशेषण जब भाव रूप में बदलता है तब कर्ता में षष्ठी विभक्ति हो जाती है । जैसे—कोमलं पुष्पं, पुष्पस्य कोमलता ।

भाव में त्व और तल् के अतिरिक्त इमन्, ट्यण्, य, अण् और ईय प्रत्यय होते हैं ।

नियम

नियम ४०७—(पृथ्वादेरिमन् वा ७।३।५९) पृथु, मृदु, पटु, तनु, बहु, साधु, मंद, स्वादु, ऋजु, प्रिय, ह्रस्व, दीर्घ आदि अनेक शब्दों से इमन् प्रत्यय होता है । इमन् प्रत्यय लाने से शब्दों की टि (अंतिम स्वर व्यंजन सहित) का लोप हो जाता है ।

नियम ४०८—(पृथु मृदु भृश० ८।४।४६) पृथु, मृदु, भृश, कृश, दृढ, परिवृढ इन शब्दों के ऋकार को र् हो जाता है इमन्, ज्रि, इष्ठ, ईयस् प्रत्यय परे होने पर। पृथो र्भावः = प्रथिमा। मृदोर्भावः म्रदिमा। भ्रशिमा, क्रशिमा, द्रढिमा, परिव्रढिमा।

नियम ४०९—(प्रियस्थिर० ८।४।३८) इमन् आदि प्रत्यय परे होने पर इन शब्दों को ये आदेश होते हैं।

प्रिय—प्र = प्रेमा	बहुल—बंह = बंहिमा
स्थिर—स्थ = स्थेमा	तृप्त—त्रप = त्रपिमा
स्फिर—स्फ = स्फेमा	दीर्घ—द्राघ = द्राघिमा
उरु—वर = वरिमा	ह्रस्व—ह्रस = ह्रसिमा
	वृद्ध—वर्ष = वर्षिमा
गुरु—गर = गरिमा	वृन्दारक—वृन्द = वृन्दिमा

नियम ४१०—(वर्णदृढादिभ्यष्ट्यण् च ७।३।६०) वर्णवाची और दृढ, आदि (दृढ, शीत, उष्ण,तृष्णा, मूक, मूर्ख, पंडित, मधुर, विशारद····· आदि) शब्दों से ट्यण् और इमन् प्रत्यय होता है। ट्यण् से शब्द के आदि स्वर को वृद्धि, अंत के इकार और अकार का लोप होकर य मिल जाता है। शुक्लस्य भावः = शौक्ल्यं, शुक्लिमा, शुक्लत्वं, शुक्लता। पीतस्य भावः = पैत्यं, पीतिमा, पीतत्वं, पीतता। दार्ढ्यं, द्रढिमा, दृढत्वं, दृढता।

नियम ४११—(पतिराजान्तगुणाङ्गराजादिभ्यः कर्मणि च ७।३।६१) पति और राज शब्द अंत में हो उनसे तथा गुणाङ्ग और राज आदि शब्दों से ष्यञ् प्रत्यय होता है। अधिपतेर्भावः = आधिपत्यं, अधिपतित्वं, अधिपतिता। अधिराजस्य भावः = आधिराज्यं, अधिराजत्वं, अधिराजता। मौढ्यं, मूढत्वं, मूढता। मौखर्यं, वैदुष्यं। राज्यं, राजत्वं, राजता। काव्यं, कवित्वं, कविता।

नियम ४१२—(सखिदूतवणिग्भ्यो यः ७।३।६४) सखि, दूत, वणिज् शब्दों से भाव में य प्रत्यय होता है। सख्यं, दूत्यं, वणिज्यम्।

नियम ४१३—(युवादेरण् ७।३।६८) युव आदि शब्दों से भाव में अण् प्रत्यय होता है। यौवनं, युवत्वं, युवता। स्थाविरं, स्थविरत्वं, स्थविरता।

नियम ४१४—(लघुपूर्वाद् व्वृवर्णात् ७।३।७२) इवर्ण, उवर्ण और ऋवर्ण अंत वाले शब्दों से पहले ह्रस्व अक्षर हो तो भाव में अण् प्रत्यय होता है। मुने र्भावः मौनं, मुनित्वं मुनिता। इसी प्रकार पाटवं, पैत्रं, पार्थवम्।

नियम ४१५—(तस्यार्हे क्रियायां वत् ७।३।५२) षष्ठ्यन्त नाम से अर्ह अर्थ में वत् प्रत्यय होता है, योग्यता क्रिया की होनी चाहिए। साधोरर्हं वृत्तमस्य साधुवत्।

नियम ४१६—(तत्र ७।३।५४) सप्तमी विभक्ति से इव के अर्थ में वत् प्रत्यय होता है, यदि वह सदृशता क्रिया विषय की हो तो। जैसे—मथुरायामिव—मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादः।

नियम ४१७—(तस्य ७।३।५५) षष्ठी अंत वाले शब्दों से इव अर्थ में वत् प्रत्यय होता है। चैत्रस्य इव—चैत्रवत् मैत्रस्य गावः।

ख—(स्यादेरिवे ७।३।५३) स्यादि अंतवाले शब्दों से इव अर्थ में वत् प्रत्यय होता है। क्षत्रिया इव क्षत्रियवत्। देवमिव देववत्। साधुना इव साधुवत्। ब्राह्मणाय इव ब्राह्मणवत्। पर्वतात् इव पर्वतवत्।

प्रयोग वाक्य

जम्बोः वैराग्यस्य द्रढिमानं दृष्ट्वा चौरा अपि विस्मिता बभूवुः। भ्रातुः हृदयस्य द्राघिम्ना स गद्गदोऽभूत्। नेत्रयोः पैत्यं विलोक्य वैद्योऽवदत्—त्वं रुग्णोऽसि। सर्वेभ्यः वैदुष्यं रोचते। मौढ्येन मानवः सर्वक्षेत्रेषु विफलो भवति। यौवने यादृशी शक्ति र्भवति पुंसि तादृशी वर्षिम्नि न। मार्दवेन मर्त्यः जनप्रियो भवति। गुरुः शिष्येभ्यः ज्ञानं ददाति दत्ते वा। तातः पुत्रेभ्यः प्रचुरं धनं अदात् अदत्त वा। विजयः वस्त्राणि दधाति धत्ते वा। शीला भूषणानि धास्यति धास्यते वा। शंकरः स्वपरिकरं बिभर्ति बिभृते वा। बालं कः भरिष्यति, भरिष्यते वा ?

संस्कृत में अनुवाद करो

मांस और अफीम मत खाओ। शराब और गंजा मत पीओ। तम्बाकू और चरस स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है। श्याम के कटिदेश में दर्द है। इस गांव में विधुर व्यक्ति कितने है ? सोहन की बडी शाली कब आयेगी ? मां की सहेली मंदिर कब जायेगी ? राजा ने अपने बाद किसको वारिस बनाया है ? सुरेन्द्र मोहन का साढू है। रमेश के कितने साला, साली हैं ? ससुराल में ज्यादा नहीं रहना चाहिए।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

राम की मृदुता प्रशंसनीय है। रमेश की कृशता सबको असुहावनी लगती है। संकल्प की दृढता से मनुष्य क्या नहीं कर सकता ? अग्नि की उष्णता, जल की शीतलता एक शाश्वत धर्म है। मोहन की मूर्खता से यह काम बिगड गया। कवि की कविता रसपूर्ण थी। लक्ष्य की स्थिरता सफलता का प्रथम सोपान है। गुरु की गरिमा को कायम रखना हमारा कर्तव्य है। श्रावक रूपचंदजी का जीवन साधु की तरह था। मनुष्य और मनुष्यता दो वस्तुएं है। मनुष्य का आकार होने मात्र से मनुष्यता नहीं आती। सुंदरता जहां एक गुण है, वहां दोष भी। दुर्जनता मानव के लिए अभिशाप है।

धातु के प्रयोग करो

दादाजी ने रमेश को अपना मकान दिया था। बहिन को तुम क्या दोगे ? शिव ने क्या धारण किया है ? शंकर अपने परिवार का पोषण करता है। मुझे पुस्तक दो।

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—

(क) वस्तुनः प्रेमा तस्य गुणे अवगुणे च आश्रितोस्ति। विना स्थेमानं न किमपि कार्यं सिद्धयति। त्रपिमा स्त्रीणां एकः गुणोऽस्ति।

(ख) तस्य वैदुष्यं दृष्ट्वा सर्वेऽपि प्रभाविताः जाताः। तीर्थंकराणां शरीरे न बर्षिमा दृग्गोचरी भवति। अस्मिन् गृहे कस्य आधिपत्यमस्ति ? भरतस्य राज्यं विशालतरमासीत्। यौवनं को न वाञ्छेत् ?

२. निम्नलिखित शब्दों का भाव के अर्थ में प्रयोग करो—

निर्धन, पशु, लघु, गुरु, कोमल, सखि, वृद्ध, अधिराज।

३ निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

पित्यं शुक्ल्यं च कस्य स्वभावो वर्तते। ध्याने स्थिरमा भवेत्। गृहस्य द्रधिमानं दृष्ट्वा भूपः विस्मितो जातः। मूखर्यं न कोऽपि श्लाधते।

४. प्रिय आदि शब्दों को नियम ४०९ में क्या आदेश किया गया है ?

५. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—

अफीम, तम्बाकू, साडू, शाला, वारिस, ससुराल।

६. दा, धा और भृ धातु के द्यादि तथा स्यदादि के रूप लिखो।

पाठ ४६ : तद्धित (६)

शब्दसंग्रह

शय्या (विस्तर, खाट) । अवगुण्ठनम् (घूंघट) । अलंकारः (आभूषण) । हारः (मोती की माला) । कर्णपूरः (कनफूल) । नूपुरम् (पायजेब) । प्रसाधनी (कंघी) । वेणिका (वेणी—बालों की चोटी) । सिन्दूरम् (सिन्दूर) । अञ्जनम् (काजल) । गन्धतैलम् (इत्र) । तिलकम् (तिलक) । ललाटिका (टीका) । चूर्णकम् (पाउडर) । हैमम् (स्नो) । शरः (क्रीम) । दर्पणः (शीशा) । कङ्कणम् (कंकण) । कण्ठाभरणम् (कंठा) । नासाभरणम् (नथ, बुलाक) ।

धातु—दिवुच्—क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिषु (दीव्यति) रमण करना, जीतना, व्यवहार करना, जूआ खेलना, स्तुति करना, प्रसन्न होना, मद करना, स्वप्न लेना, दीप्त होना । षिवुच्—तन्तुसन्ताने (सीव्यति) सीना । ष्ठिवु, क्ष्विवुच्—निरसने (ष्ठीव्यति, क्ष्वीव्यति) थूकना । नृतीच्—नर्तने (नृत्यति) नाचना । व्रीडच् लज्जायाम् (व्रीड्यति) लज्जा करना । क्रुधच्—कोपे (क्रुध्यति) क्रोध करना । कुपच्—क्रोधे (कुप्यति) क्रोध करना लुभच्—गार्द्ध्ये (लुभ्यति) गृद्ध होना । शुषंच्—शोषणे (शुष्यति) शोषण करना । दुषंच्—वैकृत्ये (दुष्यति) विकृत होना, मलिन होना । षुहच्—तृप्तौ (सुह्यति) तृप्त होना । तुषं, हृषच्—तुष्टौ (तुष्यति, हृष्यति) प्रसन्न होना ।

दिव्, नृत्, क्रुध्, हृषच् धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ९६,३५,९७,९८) ।

षिवुच् से लेकर क्ष्विवुच् तक दिव् की तरह चलते हैं । कुप् से तुषं तक के रूप कुप् की तरह चलते हैं । हृष् के रूप कुछ भिन्न चलते हैं ।

नियम

एक शब्द से अर्थ की भिन्नता में भिन्न प्रत्यय होते हैं । किन्तु कुछ शब्द ऐसे हैं जिनसे अनेक अर्थों में एक ही प्रत्यय होता है । एक ही रूप अनेक अर्थों में प्रयोग में आता है ।

नियम ४१६—(प्राग्वतोऽग्निकलिरेयण् ६।२।२७) अग्नि और कलि शब्द से एयण् प्रत्यय होता है । अग्नेरपत्यं = आग्नेयः । अग्नये हितं = आग्नेयम् । इसी प्रकार कालेयः, कालेयम् ।

नियम ४१७—(स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ ६।२।२८) स्त्री शब्द से नञ्

और पुंस शब्द से स्नञ् प्रत्यय विकल्प से होता है। स्त्रियाः अपत्यं—स्त्रैणः। स्त्रीभ्यो हितं=स्त्रैणं। स्त्रीणां समूहः=स्त्रैणं। स्त्रीषु भवं स्त्रैणं। स्त्रीणां इयं=स्त्रैणी। स्त्रीणां निमित्तं संयोग उत्पातो वा स्त्रैणं। पुंस शब्द से (तस्यार्हे क्रियायां वत्) सूत्र से पहले सभी अर्थों में पौंस्नः रूप बनेगा। लिंग के अनुसार पुल्लिग, नपुंसक आदि परिवर्तन हो सकता है।

नियम ४१८—(पुरुषात् कृतहितवधविकारसमूहेष्वेयञ् ६।६।३४) पुरुष शब्द से कृत, हित, वध, विकार, समूह अर्थ में एयञ् प्रत्यय होता है। पुरुषेण कृतः=पौरुषेयः ग्रन्थः। पुरुषाय हितं=पौरुषेयं पथ्यं। पुरुषाणां वधः विकारः, समूहो वा पौरुषेयः।

नियम ४१९—(गोः स्वरे यः ६।२।३०) गो शब्द से य प्रत्यय होता है। तद्धित प्रत्ययों के प्रसंग में य स्वर के समान होता है। गोरपत्यं गव्यं। गवि भवं गव्यं। गौ र्देवता अस्य गव्यः। गवा चरति गव्यः।

प्रयोगवाक्य

आग्नेयः कालेयश्च कोस्ति ? अद्य जनाः स्त्रैणं चिन्तयन्ति। स्त्रैणेषु अयं नरः कथं समायातः ? मह्यं पौरुषेयः आगमः रोचते। गौः गृहे पुनरागता परं गव्यः कुत्र गतः। बालकाय गव्यं क्षीरं देहि। बालः दीव्यति। तन्तुवायः वस्त्राणि सीव्यति। बालिका अत्र ष्ठीव्यति क्षीव्यति वा। पिता पुत्राय कथं अक्रुध्यत् अकुप्यत् वा। विषयेषु मा लुभ्य। यः भूपः प्रजाः शुष्यति सः न प्रियो भवति। शिशुः वस्त्राणि दुष्यति। सीमायाः सुखदं संवादं श्रुत्वा तातः अतुष्यत्।

संस्कृत में अनुवाद करो

विस्तर पर कौन सोया है ? स्त्रियां घूंघट क्यों रखती हैं ? क्षमा मुनियों का आभूषण है। रानी के हार को किसने चुराया ? सरोज को उसकी मां ने एक कनफूल, दो पायजेब, एक कंकण, एक कंठा और एक बुलाक दिया है। विवाहित स्त्रियां मांग में सिंदूर डालती हैं। दीपक कंघी से केश संवारता है। पुरुष चोटी नहीं करते। किरण पुत्र की आँखों में काजल डालती है। उसने कपडों में इत्र लगाया है। बहन भाई के तिलक करती है।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

अग्नि के लिए पानी शत्रु है। कलि का पुत्र कौन है ? इस रास्ते से स्त्रियों का समूह जा रहा था। स्त्रियों में कोमलता है। पुरुषों के लिए क्या कठिन है ? पुरुषों के दाढी और मूंछ होती है। यह स्त्रियों का कथन है। यह ग्रन्थ पुरुषों द्वारा बनाया गया है।

धातु के प्रयोग करो

यहां मत खेलो। मामी फटे वस्त्र सीती है। भींत पर नहीं थूकना

चाहिए। मां लडकी पर क्यों क्रुद्ध हुई ? सब कुछ प्राप्त होने पर भी रमेश विषयों में गृद्ध नहीं बना। किसी का शोषण मत करो। यह वस्त्र किसने गंदा किया ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
स्त्रैणम् (स्त्रीषुभवः), पौंस्नः (पुंसा समूहः), पौरुषेयः (पौरुषाणां समूहः)।

२. हिन्दी में अनुवाद करो—
आग्नेयं घृतम्। पौंस्नः कुत्र व्रजति ? पौरुषेयः परशुरामः। स्त्रियः नृत्यन्ति। सा न व्रीड्यति। मुनिः दुर्जनाय न कुप्यति। साध्व्यः वस्त्रं सीव्यन्ति।

४. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप लिखो—
घूंघट, कनफूल, कंघी, काजल, इत्र, कंठा, कंकण, सीसा।

५. दिव्, नृत्, क्रुध् और हृष् धातु के तिबादि और स्यत्यादि के रूप लिखो।

पाठ ४७ : तद्धित १० (प्रमाण)

शब्दसंग्रह

पारितोषिकम् (इनाम)। आयकरः (इन्कमटैक्स)। भाटकम् (किराया)। सरकारकरः (चूंगी)। अर्थदंडः (जुर्माना)। द्रोणमुखम् (बडा कस्बा)। स्थानीयम् (बडा शहर)। पत्तनम् (व्यापारी नगर)। उपपुरम् (शहर के पास की बस्ती)। कान्तारः (दुर्गम पथ)। वीथिका, वीथि, प्रतोली (गली)। पद्या, पद्धतिः (पगडंडी)। गह्वरः (वृक्षों की छाया वाला रास्ता)। राजमार्गः (सडक)।

धातु—णशूच्—अदर्शने (नश्यति) नष्ट होना। जनीङ्च्—प्रादुर्भावे (जायते) उत्पन्न होना। खिदंङ्च्—दैन्ये (खिद्यते) खिन्न होना। युधंङ्च् संप्रहारे (युध्यते) युद्ध करना। बुधं, मनङ्च्—ज्ञाने (बुध्यते, मन्यते) जानना। क्लिशङ्च्—उपतापे (क्लिश्यति) दुःखी होना।

णश् और जन् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ३६, ९९) खिद् से लेकर क्लिश् तक के रूप दिबादि तक जन् की तरह चलते हैं। शेष रूप परिशिष्ट में देखें (संख्या १००,१०१,१०२ ,३७,३८)।

प्रमाण

प्रमाण का अर्थ है लम्बाई। प्रमाण दो प्रकार का होता है—ऊर्ध्व और तिर्यच्। ऊर्ध्वप्रमाण को उन्मान भी कहते हैं। (प्रमाणान्मात्रट् ७।४।३३) प्रमाणवाची शब्द से षष्ठी के अर्थ में मात्रट् प्रत्यय होता है। जानुनी प्रमाणं अस्य = जानुमात्रं जलं। जानुमात्री परिखा।

नियम ४२०—(ऊर्ध्वं दघ्नड्द्वयसटौ ७।४।३५) ऊर्ध्व प्रमाणवाची शब्दों से दघ्नट्, द्वयसट् और मात्रट् ये तीन प्रत्यय होते हैं। ऊरुः प्रमाणं अस्य = ऊरुदघ्नं, ऊरुद्वयसं, ऊरुमात्रं जलम्।

नियम ४२१—(इदं किमोतुरियकिय् चास्य ७।४।४१) इदं और किं शब्द मानवृत्ति वाची हो तो षष्ठी अर्थ में अतु प्रत्यय होता है और इदं को इय् और किं को किय् आदेश हो जाता है। इदं मानं अस्य = इयान् पटः। किं मानं अस्य = कियान् पटः।

नियम ४२२—(यत्तदेतदोडावट् च ७।४।४२) यत्, तत्, एतत् ये तीन शब्द मानवाची हो तो षष्ठी के अर्थ में अतु प्रत्यय होता है। प्रत्यय से पहले डावट् का आगम होता है। यत् प्रमाणं अस्य = यावान् पटः। इसी प्रकार

तावान्, एतावान् पटः ।

नियम ४२३—(यत्तत्किमः संख्याया डतिर्वा ७।४।४३) प्रथमान्त यत्, तत्, एतावत् शब्द संख्यावाची के अर्थ में हो तो डति और अतु दोनों प्रत्यय हो जाते हैं, वे शब्द संख्येय मेय के वाचक हों तो। संख्या मानं एषां=यति, यावन्तः । इसी प्रकार तति, तावन्तः । कति, कियन्तः ।

नियम ४२४—(अवयवात् तयट् ७।४।४४) प्रथमान्त संख्यावाची शब्द अवयववाची हो तो षष्ठी के अर्थ में तयट् प्रत्यय होता है, यदि अवयवी का बोध हो तो । चत्वरोऽवयवाः अस्य=चतुष्टयः । एवं पंचतयो यमः, दशतयो धर्मः ।

नियम ४२५—(द्वित्रिभ्यामयड् वा ७।४।४५) प्रथमान्त द्वि और त्रि शब्द अवयव अर्थ में हो तो षष्ठी अर्थ में अयट् प्रत्यय विकल्प से होता है, यदि अवयवी का बोध हो तो । पक्ष में तयट् भी होता है । द्वौ अवयवौ अस्य द्वयम् तपः, द्वितयं तपः । त्रयं जगत् ।

प्रयोगवाक्य

यदा नद्यां ऊरुदघ्नं ऊरुद्वयसं वा जलं आसीत् तदा सः तस्यां स्नातुं अव्रजीत् । तुभ्यं कियत् घृतं रोचते ? मह्यं इयत् वस्त्रं रोचते । नेतुः भाषणे कति पुरुषाः आसन् ? यावन्तः मर्त्याः प्रातः प्रवचने आसन् तावन्तः रात्रौ प्रवचने नासन् । चतुष्टयोऽयं मोक्षमार्गः । महावीरेण द्वितयं तपः प्रोक्तम् । तस्य धनं कथं अनशत् ? वृक्षेषु बहूनि फलानि जायन्ते । ललितः कथं खिद्यते ? आचार्यः मां बुध्यते । भूपः शत्रुभिः सह युध्यते । सा मुधा क्लिश्यते ।

संस्कृत में अनुवाद करो

काव्य प्रतियोगिता में किसने इनाम जीता ? आजकल प्रायः लोग इन्कमटैक्स देना नहीं चाहते । तुम्हारे मकान का किराया कितना है ? प्रान्त की हर सीमा पर चूंगी घर है । यदि तुम जुर्माना दोगे तो बच जाओगे । भारत में कितने बडे कस्बे, बडे गांव और बडे शहर हैं ? अहमदाबाद एक व्यापारी नगर है । जीवन शहर के पास की बस्ती में रहता है । कठिन रास्ते को शीघ्र पार करो । इस गली में अन्धेरा है । यह पगडंडी कहां जाती है ? वृक्षों की छाया वाले रास्ते से सभी जाना चाहते हैं ।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

जब इस नदी में घुटने जितना पानी हो तब तुम मुझे बतलाना । जब बालक नदी में गिरा तब उसमें छाती जितना पानी था । तुम बाजार से कितना वस्त्र लाओगे ? इतनी मिठाई मत खाओ । जितने व्यक्ति यहां हैं वे सब प्रवचन सुनें । ब्रह्मचर्य चौथा महाव्रत है । धर्म के दश प्रकार हैं । महाव्रत के पांच अवयव हैं । नदी में कटि जितना पानी है । कितनी गायें बाहर जाती

हैं ? तुम कितना पानी पीते हो ? जगत् तीन प्रकार का है। यह खेत दश रज्जु है। मकान की बाहरी दीवार कंधे जितनी है।

धातु का प्रयोग करो

अनाचार से व्यक्ति का यश नष्ट होता है। खेत में क्या उत्पन्न हुआ है ? तुम खिन्न मत होओ। अशोक ने किसके साथ युद्ध किया ? सर्वज्ञ सब कुछ जानते हैं। कर्म शत्रुओं के साथ युद्ध करो। तुम क्यों दुःखी होते हो ?

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—
कियत् मात्रं जलं विप्र !, जानुदघ्नं नराधिप ! । चेटकः कोणिकेन सह युयुधे। त्वं मा खिद्यस्व। तस्करान् कः अबोधि ? आत्मानं बुध्यस्व। वधूः कथं अक्लेशिष्ट ?

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ कौनसा प्रत्यय किस अर्थ में हुआ है—
यावान्, एतावान्, यति, तति, कति, चतुष्टयः, द्वयः।

३. प्रमाण कितने प्रकार का होता है ? उनमें प्रत्यय एक समान ही होते हैं या अन्तर भी है।

४. अवयव का अर्थ क्या है ?

५. अवयव और अवयवी, संख्या और संख्येय का भेद बतलाओ।

६. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ—
अर्थदंडः, पत्तनम्, उपपुरम्, पद्या, पत्तनम्, भाटकम्।

७. णश् और जन् धातु के तिबादि, द्यादि तथा स्यत्यादि के रूप लिखो।

पाठ : ४८ तद्धित ११ (संख्या)

शब्दसंग्रह

पत्रालयाधीशः (जनरल पोस्ट मास्टर)। पत्रालयः (पोस्ट आफिस)। पत्रालयाध्यक्षः (पोस्ट मास्टर)। प्रधानपत्रालयः (बडा डाक-खाना)। पत्रविभागः (डाक का महकमा)। पत्राधिः (लेटरबक्स)। पत्रम् (खत, पत्र)। आवेष्टनम् (लिफाफा)। धनादेशः (मनीआर्डर)। पार्शलः (पार्सल)। पंजिका, निवेशनम् (रजिस्ट्री)। रक्षापणः (बीमा)। पत्रवाहकः (चिट्ठी ले जाने वाला, डाकिया)। त्वरितसूचनालयः (तारघर)। त्वरितसूचम् (तार)।

वृनत् से लेकर आप्लृंत् धातु के दिबादि तक के रूप चिन्त् की तरह चलते हैं। शेष धातु रूप परिशिष्ट (संख्या १०४ से १०६) में देखें। धूनत्, तृपत् के रूप प्रायः चि की तरह चलते हैं।

संख्या

संख्यावाची शब्दों से एकवचन, द्विवचन और बहुवचन का बोध होता है। तीन से लेकर आगे सब बहुवचन हैं। संख्यावाची शब्दों मे पूरण अर्थ का प्रत्यय लगने से वह शब्द निश्चित एक संख्या का बोधक हो जाता है। जैसे— ११ पुस्तक इससे ११ पुस्तकों का ज्ञान होता है। पूरण प्रत्यय लगने से वह ११ वीं पुस्तक (यानि एक ११ वीं पुस्तक) का बोध होगा शेष १० का

संख्या

संख्यावाची शब्दों से एकवचन, द्विवचन और बहुवचन का बोध होता है। तीन से लेकर आगे सब बहुवचन हैं। संख्यावाची शब्दों मे पूरण अर्थ का प्रत्यय लगने से वह शब्द निश्चित एक संख्या का बोधक हो जाता है। जैसे— ११ पुस्तक इससे ११ पुस्तकों का ज्ञान होता है। पूरण प्रत्यय लगने से वह ११ वीं पुस्तक (यानि एक ११ वीं पुस्तक) का बोध होगा शेष १० का नहीं। १५ वां व्यक्ति यहां आओ। यह सुनकर १ ही व्यक्ति आएगा। संख्या

नियम

नियम ४२६—(संख्यापूरणे डट् ७।४।४८) संख्यावाची शब्द से संख्यापूर्ति के अर्थ में डट् प्रत्यय होता है। डट् में अ शेष रहता है और शब्द

की टि का लोप हो जाता है। एकादशानां पूरणः एकादशः। द्वादशः।

नियम ४२७—(नोमट् ७।४।५२) पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन् और दशन् शब्दों से संख्यापूरण के अर्थ में मट् प्रत्यय होता है। पञ्चमः, सप्तमः, अष्टमः, नवमः, दशमः।

नियम ४२८—(विंशत्यादेर्वा तमट् ७।४।४६) बीस से ऊपर की संख्या से संख्यापूरण अर्थ में तमट् और डट् प्रत्यय होते हैं। विंशतितमः, विंशः। त्रिंशत्तमः, त्रिंशः।

नियम ४२९—(षट्कतिकतिपयाच्च थट् ७।४।५८) षट्, कति, कतिपय, चतुर् शब्दों से थट् प्रत्यय होता है। षष्ठः, कतिथः, कतिपयथः, चतुर्थः।

नियम ४३० क—(द्वेस्तीयः ७।४।५५) द्वि शब्द से तीय प्रत्यय होता है। द्वितीयः।

ख—(त्रेस्तृ च ७।४।५६) त्रि शब्द से तीय प्रत्यय होता है और त्रि को तृ आदेश। तृतीयः।

ग—(चतुरो येयौ च लोपश्च ७।४।५७) चतुर् शब्द से य और इय प्रत्यय होता है और चतुर् के च का लोप विकल्प से होता है। तुर्यः, तुरीयः।

नियम ४३१—(संख्याया धा ८।१।१२२) संख्यावाची शब्दों से प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है। एकधा, द्विधा, त्रिधा, पञ्चधा। षोढा, षड्ढा निपात है।

नियम ४३२—(वारे कृत्वस् ८।१।१२७) संख्यावाची शब्दों से वार अर्थ में कृत्वस् प्रत्यय होता है। पञ्चवारं भुङ्क्ते, पञ्चकृत्वस् भुङ्क्ते। (पांच बार खाता है)। एवं सप्तकृत्वस्, नवकृत्वस्।

नियम ४३३ क—(द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् ८।१।१२८) द्वि, त्रि, चतुर् शब्द से वार अर्थ में सुच् (स्) प्रत्यय होता है। द्विः पठति, त्रिः पठति, चतुः पठति।

ख—(एकात् सकृच्चास्य ८।१।१२९) एक शब्द से सुच् (स्) प्रत्यय और एक को सकृत् आदेश होता है। सकृद् भुङ्क्ते।

प्रयोगवाक्य

कक्षायां एकादशः, द्वादशः, पञ्चमः, सप्तमः, नवमः, दशमः, विंशतितमः छात्रः कोऽस्ति ? सर्वेषु महाव्रतेषु चतुर्थो महाव्रतः दुष्करोऽस्ति। जैनधर्मस्य षष्ठः तुर्यश्च आचार्यः कः बभूव ? बंधनं द्विधा विद्यते। अहं एतद् पुस्तकं पञ्चकृत्वः, सप्तकृत्वः, नवकृत्वश्च अपठिषम्। डालचंदमुनिं कः चिचाय चिच्ये वा आचार्यपदाय ? किं तातः तव कथनं श्रोष्यति ? रामः सीतां ववार

वन्ने वा । पत्न्याः क्रोधं दृष्ट्वा पतिः अधावीत् अधोष्ट वा । मिष्टान्नं भुक्त्वा ललितः अतर्पीत् ।

संस्कृत में अनुवाद करो

इस गांव से पोस्ट आफिस और बडा डाकखाना कितनी दूर है ? जनरलपोस्टमास्टर और पोस्टमास्टर को मेरे आने की सूचना किसने दी ? लेटरबक्स में बहुत से खत हैं । यह लिफाफा किसका है ? रमेश ने मनी-आर्डर से अपने पिताजी को हजार रुपये भेजे हैं । तुम्हारा पार्सल कौन ले गया ? महेश ने अपने मकान की रजिस्ट्री कब कराई ? मंजू ने अपना बीमा कहां कराया ? तारघर में किसका तार आया है ? डाकिया ने यह खत तुम्हें कब दिया था ?

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

श्रेयांसनाथ ग्यारहवें और वासुपूज्य बारहवें तीर्थंकर थे । आचार्य मघराजजी पांचवें, आचार्य डालचंदजी सातवें और आचार्य कालुरामजी तेरापंथ के आठवें आचार्य थे । आचार्यश्री तुलसी तेरापंथ के नवमें आचार्य हैं । बीसवें तीर्थंकर कौन थे ? यहां कितने लोगों ने भोजन किया ? तुम सब प्रकार से झूठ बोलते हो । महाव्रतों के पांच प्रकार हैं । दिगम्बरमुनि दिन में एक बार भोजन करते हैं । मैं यहां तीन बार आ गया । सेठ का चौथा लडका कहां है ?

धातु का प्रयोग करो

तेरापंथ में आचार्य का चयन कौन करता है ? मोहन को कम सुनाई देता है । भगवान महावीर ने मुक्ति-स्त्री का कब वरण किया था ? मैं यह कार्य कर सकता हूं । तुम्हें धन कहां मिला ? पत्ते हवा से कांपते हैं । भोजन करके सोहन तृप्त हो गया ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित पद्यों का अर्थ लिखो और बताओ किस शब्द से कौन-सा तद्धित प्रत्यय हुआ है ?

(क) द्विः त्रिः चतुर्वदितोऽपि, नायं हृष्टः प्रजायते ।

(ख) जयाचार्यः चतुर्थोऽभूत्, पञ्चमो मघवाधिपः ।
षष्ठो हि माणकलालः, सप्तमो डालचन्द्रजित् ॥१॥

(ग) एकादशे गुणस्थाने, द्वादशेऽपि महामुनिः ।
वीतरागः केवली स्यात्, विशुद्धात्मा त्रयोदशे ॥२॥

२. संख्यावाची शब्दों से प्रकार और वार अर्थ में कौन सा प्रत्यय होता है ? दोनों में क्या अन्तर है ? उदाहरण से स्पष्ट करें ।

३. नीचे लिखे अर्थ में क्या शब्द है ?
एक बार, चार प्रकार, दसवां, दस, तीन बार, छह प्रकार, चौथा, बीसवां ।

४. संख्या और संख्यापूरण में क्या अन्तर है ?

५. चि और श्रु धातु के तिबादि तथा णबादि के रूप लिखो ।

पाठ ४९ : तद्धित १२ (मत्वर्थ प्रत्यय)

शब्दसंग्रह

अन्धासिकः (आडती) । ताम्बूलिकः, शाल्मलः (तम्बोली) । उपदर्शकः (दर्बान) । रोमकः (नमक बनाने वाला) । भारुडः (पहरेदार) । चित्रकारः (फोटोग्राफर) । पांशुलः (बोरी बनाने वाला) । उत्कलः, वीवधिकः (भार उठाने वाला) । इन्द्रजलिकः, शौभिकः (मदारी) । नागरकः (मूर्ति बनाने वाला) । धिग्वणः (मोची) । कोटकः (घर बनाने वाला) । अहितुण्डिकः (संपेरा) । क्षणदः (ज्योतिषी) ।

धातु—मुच्लृंन्ज्—मोक्षणे (मुञ्चति, मुञ्चते) छोडना । लिखज्—अक्षरविन्यासे (लिखति) लिखना । प्रच्छंज्—ज्ञीप्सायाम् (पृच्छति) पूछना । स्पृशंज्—स्पर्शे (स्पृशति) स्पर्श करना । विशंज्—प्रवेशने (विशति) प्रवेश करना । इषज्—इच्छायाम् (इच्छति) चाहना । मृंज्—प्राणत्यागे (म्रियते) मरना ।

मुच्, मृंज् और इषज् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या १०७,४३,१०८) ।

लिख्, प्रच्छ्, स्पृश्, विश् इन धातुओं के तिबादि तक के रूप मुच् की तरह चलते हैं । शेष धातु रूप परिशिष्ट २ में देखें (संख्या १०९ से ११२) ।

मत्वर्थ

वह इसका या इसमें है—इस अर्थ में जो प्रत्यय होते हैं उनको मत्वर्थ प्रत्यय कहते हैं । मतु प्रत्यय कुछ अपवादों को छोडकर सभी शब्दों से होता है । जैसे—गावोऽस्य सन्तीति=गोमान् । तरवो यस्मिन् सन्तीति तरुमान् ।

नियम

नियम ४३४—(मावर्णान्तोपधाद् वतुः ८।१।२) म् और अवर्ण अंतवाले तथा म् और अवर्ण उपधा वाले शब्दों से मतु के स्थान पर वतु प्रत्यय होता है । मतु और वतु में उ का लोप हो जाता है । इसके रूप तीनों लिंगों में चलते हैं । पुल्लिग में भवत् और नपुंसकलिंग में जगत् की तरह चलते हैं । स्त्रीलिंग में ईप् जुडकर नदी की तरह रूप चलते हैं । किंवान्, लक्ष्मीवान्, ज्ञानवान्, विद्यावान्, यशस्वान् भास्वान् । लक्ष्मीवती, ज्ञानवती, गुणवती, विद्यावती ।

नियम ४३५—(अस्तपोमायामेधास्रजो विन् वा ८।१।९) अस् अंत

वाले शब्द तथा माया, मेधा, स्रज् शब्दों से मत्वर्थ में विन् और वतु प्रत्यय होता है। यशस्वी, तपस्वी, मायावी, मेधावी, स्रग्वी, यशस्वान्, तपस्वान्, मायावान्, मेधावान्, स्रग्वान्।

नियम ४३६—(शिखादिभ्य इन् ८।१।११) शिखा, माला, शाला, वीणा, मान, मनीषा, कर्मन्, चर्मन् आदि शब्दों से मत्वर्थ में इन् और वतु प्रत्यय होता है। शिखी, शिखावान्, माली, मालावान् इत्यादि।

नियम ४३७—(झषात् ८।१।३) झष अंतवाले शब्दों से अस्ति अर्थ में वनु प्रत्यय होता है। तडित्वान्, मरुत्वान्, विद्युत्वान्, समिद्वान्।

नियम ४३८—(अतोऽनेकस्वरात् ८।१।१३) अकारान्त अनेक स्वर वाले शब्दों से मत्वर्थ में इक, इन् और वतु प्रत्यय होते हैं। छत्रिकः, छत्री, छत्रवान्। दण्डिकः, दण्डी, दण्डवान्।

नियम ४३९—(वातातीसारपिशाचानां कुक् च ८।१।२८) वात, अतिसार और पिशाच शब्दों से मत्वर्थ में इन् प्रत्यय होता है और कुक् का आगम होता है। कुक् में उक् इत् जाता है। वातकी, अतिसारकी, पिशाचकी।

नियम ४४०—(सर्वादेरिन् ८।१।२६) अकारान्त सर्वादि शब्द कर्मधारय समास में हो तो मत्वर्थ में इन् प्रत्यय होता है। सर्वं धनं तस्यास्तीति सर्वधनी। सर्वकेशी नटः।

नियम ४४१—(सुखादेः ८।१।३०) सुख आदि शब्दों से मत्वर्थ में इन् प्रत्यय ही होता है। सुखी, दुखी, अलीकी, कृपणी, प्रणयी, प्रतीपी, तृप्री कृच्छ्री, अस्री, सोढी, हली, आस्री, कक्षी।

नियम ४४२—(वाचि आलाटौ ८।१।४६) वाच् शब्द से क्षेप (निंदा) के अर्थ में आल और आट प्रत्यय होता है। वाचालः, वाचाटः।

नियम ४४३—(कृपाहृदयाद् वालुः ८।१।७४) कृपा और हृदय शब्द से आलु और वतु प्रत्यय होता है। कृपालुः, कृपावान्। हृदयालुः, हृदयवान्।

नियम ४४४—(दन्तादुन्नतात् ८।१।५९) दन्त शब्द से डुर प्रत्यय होता है यदि दंत उन्नत (ऊंचे) हों तो। दन्तुरः। उन्नत न हों वहां दंतवान्।

नियम ४४५—(नावादेरिकः ८।१।१०) नौ, कुमारी, यवखदा, सभा, करण शब्दों से मत्वर्थ में इक प्रत्यय विकल्प से होता है। पक्ष में मतु होता है। नाविकः, नौमान्। कुमारिकः, कुमारीवान्।

नियम ४४६—(व्रीह्यर्थतुन्दादेरिलश्च ८।११५) व्रीहिवाची शब्द, तुंद आदि शब्दों से इल, इक, इन् और वतु ये चार प्रत्यय होते हैं। कलमिलः, कलमिकः, कलमी, कलमवान्। शालिलः, शालिकः, शाली, शालिवान्। तुन्दिलः, तुन्दिकः, तुन्दी, तुन्दवान्। उदरिलः, उदरिकः, उदरी, उदरवान्। व्रीहिशब्द से इल प्रत्यय नहीं होता शेष तीन प्रत्यय ही होते है। व्रीहिकः, व्रीही, व्रीहिमान

(व्रीह्यादिभ्यस्तौ ८।१।१२ से) ।

नियम ४४७—(तदस्य संजातं तारकादिभ्यः इतः ७।४।३१) तारक आदि शब्दों से षष्ठी के अर्थ में इत प्रत्यय होता है, वह शब्द उसमें पैदा हुआ होना चाहिए । तारकाः संजाताः अस्य—तारकितं नभः । पिपासितः, बुभुक्षितः, पुष्पितः, फलितः, हर्षितः, गर्वितः, उत्कर्षितः ।

प्रयोगवाक्य

तपस्विनः शांताः भवेयुः । मायावी किं किं पापं न करोति ? ज्ञानवतीं गुणवतीं विद्यावतीं च भार्यां लब्ध्वा प्रकाशः मुमुदे । मरुत्वान् विद्युत्वान् च अयं प्रासादः । दण्डिनं दृष्ट्वा चौरोऽधावीत् । प्रणयिनां स्नेहं को ज्ञातुं शक्नोति ? आचार्यः कृपालुरस्ति । दन्तुरोऽयं पुरुषः कुत्र गच्छति । पिपासितं बुभुक्षितं च बालं दृष्ट्वा जननी अवोचत् । पुष्पितं फलितं च वृक्षं द्रष्टुं छात्राः वनेऽगमन् । आचार्यस्य प्रवचनं श्रुत्वा हिंस्राः आजीवनं हिंसां अमुचन् । भगिनी भ्रातरं पत्रे किं अलिखत् ? सुधा साध्वीं प्रश्नं पृच्छति । साधवः नारीः न [illegible] बनाने वाला कौन है ? भार उठाने वाला इस भार का कितना रुपया लेगा ? मदारी क्या कर रहा है ? महावीर की प्रतिमा बनाने वाला कुशल कलाकार कहां है ? मोची से जूते कब लाओगे ? संपेरे ने कितने सांप पकडे हैं ? हस्तरेखा देखने वाले ने मुझे कहा कि तुम जीवन में प्रगति करोगे ।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

विद्वान् व्यक्ति का सर्वत्र आदर होता है । मंत्री तपस्वियों का आदर करता है । राजा बुद्धिमानों को पुरस्कार देता है । मायावी बहुत पापों का का अर्जन करता है । छत्र वाले और डंडे वाले व्यक्ति को किसने बुलाया है ? इस दुनियां में कौन सुखी है और कौन दुखी ? कंजूस का कोई सम्मान [illegible] हैं ? हस्तरेखा देखने वाले ने मुझे कहा कि तुम जीवन में प्रगति करोगे ।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

विद्वान् व्यक्ति का सर्वत्र आदर होता है । मंत्री तपस्वियों का आदर करता है । राजा बुद्धिमानों को पुरस्कार देता है । मायावी बहुत पापों का का अर्जन करता है । छत्र वाले और डंडे वाले व्यक्ति को किसने बुलाया है ? इस दुनियां में कौन सुखी है और कौन दुखी ? कंजूस का कोई सम्मान नहीं करता । वाचाल का कोई विश्वास नहीं करता ।

साधुओं का प्रवचन सुनकर नारायण ने मांस खाना छोड दिया । कमला ने मां को क्या लिखा था ? धर्मरुचि ने तुमसे क्या पूछा ? जैन मुनि हरियाली को नहीं छूते । सिंह ने गुफा में कब प्रवेश किया ? सीमा

पुस्तक चाहती है। जो उत्पन्न होता है वह अवश्य मरता है।

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद करो—
यस्तेजस्वी स एव बलवान्। बलमेव संबध्नाति तेजः न तु वयः। विना बलं क्व तस्य कथा ? या मनस्विनी भवति सा प्राणान्तेऽपि न शीलं जहाति। वर्चस्विनां न प्राणाः किञ्चिदपि मूल्यमादधते। सः उपादेय-वचनो नूनं यः स्याद् ओजस्वी वक्ता। पुष्पितं फलितं च उद्यानं मनोहरं भवति। बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ किस अर्थ में कौन सा प्रत्यय किस शब्द से हुआ है ?
पातकी, दयालुः, वाचाटः, कुमारीकः, तुन्दिलः, हली, पुष्पितः, दन्तुरः, उदरी, सर्वकेशी, प्रणयी, दन्तुरः, कलमिलः, कुमारिकः।

३. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—
सा विद्यावान् अस्ति। अयं मानवः मतिवान् अस्ति। अत्र स्त्रियोऽपि धनिनः सन्ति। रमा विद्वान् अस्ति।

४. मत्वर्थ किसे कहते हैं ? मतु और वतु प्रत्यय के लिए स्थूल रूप में किस नियम को याद रखना चाहिए ?

५. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ—
शाल्मलः, वीवधिकः, धिग्वणः, अहितुण्डिकः, भारुडः।

६. मुच्, मृज् और इष् धातु के तिबादि, द्यादि और स्यदादि के रूप लिखो।

पाठ ५० : तद्धित १३ (स्वार्थिक प्रत्यय)

शब्दसंग्रह

शोधनम् (अदा करना) । दंडासनं, धर्मासनम् (अदालत) । पुनरावेदनम् (अपील) । न्यासः, निक्षेपः (जमानत) । प्रार्थनापत्रम् (अर्जी) । निर्वाहिनपत्रं, प्रतिज्ञापत्रम् (इकरारनामा) । भोगः (कब्जा) । जनपदः (कमिश्नरी) । बलात्ग्रहणम् (कुर्क करना) । बलग्राहः (कुर्की) । बंधनं, ग्रग्रहः (कैद) । कारादेशः (कैद का हुक्म) । बन्दी (कैदी) । निरसनं, उपशमनम् (खारिज करना) । आसेधः (गिरफ्तारी) ।

धातु—रुधृंन्र्—आवरणे (रुणद्धि, रुन्धे) रोकना । विचृंन्र्—पृथग्भावे (विनक्ति, विन्ते) अलग करना । युजृंन्र्—योगे (युनक्ति,युङ्क्ते) जोडना । भिदृंन्र्—विदारणे (भिनत्ति, भिन्ते) तोडना । छिदृंन्र्—द्वैधीकरणे (छिनत्ति, द्विन्ते) काटना । भुजंर्—पालनाभ्यवहारयोः (भुनक्ति, भुङ्क्ते) पालन करना, खाना । पिष्लृंर्—संचूर्णने (पिनष्टि) पीसना । तनुन्व्—विस्तारे (तनोति, तनुते) विस्तार करना ।

रुध्, भिद्, पिष् और तन् धातु के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट २ संख्या ४४ से ४७)। विच् से लेकर भुज् तक के रूप प्रायः रुध् की तरह चलते हैं (देखें परिशिष्ट २ संख्या ११६, ११४, ११५, ११३)

स्वार्थिक प्रत्यय

शब्द का जो अर्थ होता है, उसी अर्थ में होने वाले प्रत्ययों को स्वार्थिक प्रत्यय कहते हैं । शब्द के साथ स्वार्थिक प्रत्यय का योग होने पर स्वार्थिकप्रत्ययान्त शब्द का वही अर्थ होता है जो शब्द का था ।

नियम

नियम ४४७—(विनयादिभ्य इकण् ७।४।८४) विनय आदि शब्दों से स्वार्थ में इकण् प्रत्यय होता है । विनयः एव वैनयिकम् । समयः एव सामयिकम् । उपचारः एव औपचारिकम् । व्यवहारः एव व्यावहारिकः । संप्रदायः एव साम्प्रदायिकः ।

नियम ४४९—(प्रज्ञादिभ्यः ७।४।८८) प्रज्ञ आदि शब्दों से अण् प्रत्यय होता है । प्रज्ञः एव प्राज्ञः । मनः एव मानसः । वणिग् एव वाणिजः । आदि ।

नियम ४५०—(भेषजादिभ्यो यण् ७।४।९४) भेषज आदि शब्दों

से यण् प्रत्यय होता है। भेषजं एव भैषज्यम्। अनन्तं एव आनन्त्यम्। आवसथः एव आवसथ्यम्। इतिह एव ऐतिह्यम्।

नियम ४५१—(चतुर्वर्णादिभ्यष्ट्यण् ७।४।९५) चतुर्वर्ण आदि शब्दों से ट्यण् प्रत्यय होता है। चतुर्वर्णः एव चातुर्वर्ण्यम्। त्रैलोक्यम्, सार्वलोक्यम्, सान्निध्यम्, सामीप्यम्।

नियम ४५२—(देवात्तल् ७।४।९६) देव शब्द से तल् प्रत्यय होता है। देव एव देवता।

नियम ४५३—(मृदस्तिकः ७।४।९७) मृत् शब्द से तिक प्रत्यय होता है। मृदेव मृत्तिका।

नियम ४५४—(वर्णाव्ययात् स्वरूपे कारः ७।४।९९) अकार आदि वर्ण और अव्यय से कार प्रत्यय होता है। अकारः, ककारः, नमस्कारः, ओङ्कारः।

नियम ४५५—(रादेफो वा ७।४।१००) र शब्द से स्वार्थ में एफ प्रत्यय विकल्प से होता है। रेफः, रकारः।

नियम ३५६—(नामरूपभागेभ्यो धेयः ७।४।१०१) नाम, रूप, भाग इन शब्दों से स्वार्थ में धेय प्रत्यय होता है। नामधेयम्, रूपधेयम्, भागधेयम्।

नियम ४५७—(मर्तादिभ्यो यः ७।४।१०२) मर्त आदि शब्दों से य प्रत्यय होता है। मर्त एव मर्त्यः, सूर्य., भाग एव भाग्यम्। क्षेम्यः, अपराध्यम्, लव्यम्।

नियम ४५८—(नवादीनतनत्नञ्च नू चास्य ७।४।१०३) नव शब्द से ईन, तन, त्न और य प्रत्यय होते हैं और नव को नू आदेश होता है। नवीनम्, नूतनम्, नूत्नम्, नव्यम्।

प्रयोगवाक्य

गुरूणां विनयं कुरु। साम्प्रदायिकं विवादं जहीहि। मानसं जपं कुरुष्व। अस्मिन् विष्टपे आनन्त्यानि वस्तूनि सन्ति। जिनकल्पिनः साधवः भैषज्यं न नयन्ति। अयं घटः मृत्तिकायाः चकास्ति। दस्यूनां नामधेयं श्रुत्वा बालकाः दधुवुः। पुरुषस्य 'भाग्यं को वुध्यते ? नव्यं वस्तु सर्वेभ्यः रोचते। पापानि रुन्द्धि। हंसः दुग्धं नीरं च विनक्ति। साधुः छिन्नं पात्रं युनक्ति। दुर्जनः मित्राणि भिनत्ति। तक्षकः वृक्षाणि छिनत्ति। बालः ओदनं भुनक्ति। भूपः पृथ्वीं भुङ्क्ते। स मुधा विवादं तनोति। सा गोधूमं पिनष्टि।

संस्कृत में अनुवाद करो

अदालत में आज न्यायाधीश ने क्या फैसला सुनाया ? अपील को खारिज करना या स्वीकार करना किसका काम है ? उसकी जमानत कौन देगा ? छात्र ने अर्जी कब दी थी ? इस इकरारनामे पर किसका नाम है ?

कश्मिन्नरी (जनपद) पर किसका कब्जा है ? पक्षियों को भी कैद अच्छा नहीं लगता। न्यायाधीश ने किसको कैद का हुक्म सुनाया है ? कितने कैदी भाग गये ? गिरफ्तारी का आदेश सुनकर वह रो पडा।

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

विनय हमारा धर्म है। प्राज्ञ व्यक्तियों का सम्मान करना चाहिए। वणिक् दुकान में बैठा है। रोग को दूर करने के लिए तुमने कौनसी दवा ली ? इस संसार का कोई अन्त नहीं है। देवों का निवास कहां है ? ये बर्तन मिट्टी के हैं। पिताजी ने मुझे क्यों रोका ? चीनी और धूल को अलग किसने किया ? उसने टूटे हुए हृदय को जोड दिया। वृक्ष को नहीं काटना चाहिए। शीला ने लड्डू नहीं खाये। मुनि प्रेम का विस्तार करते हैं।

धातु का प्रयोग करो

सुशील को किसने रोका ? आचार्य भिक्षु ने धर्म और अधर्म को अलग किया था। सज्जन व्यक्ति टूटे हुए दिलों को जोडता है। यह पत्थर किसने तोडा ? वृक्ष को मत काटो। गेहूं किसने पीसे ? मोहन क्या खायेगा ? भगवान महावीर का यश सर्वत्र फैला हुआ है।

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद करो—
तस्य सामयिकीं मंत्रणां श्रुत्वा सोऽमोदत। केवलज्ञानी जनानां मानसिकं भावं बोद्धुं शक्नोति। तस्य नामधेयं कानि कान्यक्षराणि अलंकरोति ? नामधेयेन किं ? चेन्न सन्ति गुणाः। मर्त्येषु अनेकाः जातयः सन्ति। नवीनं किमस्ति संसारे ? गुरूणां सान्निध्ये अतिलाभो भवति। वैनयिके कियन्तः गुणाः सन्ति ? आनन्त्यं ज्ञस्य किं त्वया न कृतम् ?

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ किस अर्थ में कौन सा प्रत्यय हुआ है—
भैषज्यम्, देवता, नमस्कारः, सूर्यः, भागधेयम्, औपचारिकः, नव्यम्, त्रैलोक्यम्, चकारः, पुरस्कारः।

३. स्वार्थिक प्रत्यय किसे कहते हैं ? उससे शब्द के अर्थ में क्या अन्तर आता है ?

४. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ—
दंडासनम्, प्रार्थनापत्रम्, न्यासः, प्रग्रहः, आसेधः, निरसनम्।

५. रुध्, भुज् और तन् धातु के तिबादि, ष्यादि, तथा स्यदादि के रूप लिखो।

पाठ ५१ : तद्धित १४ (तर, तम, इष्ठ, ईयस्)

शब्दसंग्रह

केककिता (कंघी) । छत्रम् (छत्ता) । चित्रम् (तस्वीर) । वर्तिः (दीये की बत्ती) । वीजनम् (पंखा) । प्रतिच्छाया (फोटो) । लोमाकर्षकः (ब्रुश) । पेटकः (संदूक) । शवाच्छादनम् (कफन) । पट्टिः (तख्ती) । श्राद्धम् (मरे के निमित्त देना) । अरघटः (अरहट) । पोटकी (कोल्हू) । पेषिणी (चक्की) । जामिकः (चरखा) ।

धातु—डूक्रीन्श्—द्रव्यविनिमये (क्रीणाति, क्रीणीते) खरीदना । ग्रहन्श्—उपादाने (गृह्णाति, गृह्णीते) ग्रहण करना । ज्ञांश्—अवबोधने (जानाति) जानना । पून्श्—पवने (पुनाति, पुनीते) साफ करना । लून्श्—छेदने (लुनाति, लुनीते) काटना । धून्श्—कम्पने (धुनाति, धुनीते) कांपना । स्तॄन्श्—आच्छादने (स्तृणाति, स्तृणीते) आच्छादन करना । मन्थश्—बिलोडने (मथ्नाति) मथना । बन्धंश्—बन्धने (बध्नाति) बांधना । मुषश्—स्तेये (मुष्णाति) चुराना । अशश्—भोजने (अश्नाति) खाना । पुषश्—पुष्टौ (पुष्णाति) पुष्ट करना ।

क्री, ग्रह् और ज्ञा धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या १७,४९,४८) ।

पून्श् से लेकर पुषश् धातु के रूप दिवादि तक और अशश् के तुवादि तक ग्रह की तरह चलते हैं । शेष रूप परिशिष्ट २ में देखें (संख्या ११८ से १२४) ।

तर, तम, इष्ठ, इयस्

दो की तुलना में एक को उससे अच्छा बताने के लिए तर और सबसे अच्छा बताने के लिए तम प्रत्यय आता है । अयं अनयोः प्रकृष्टः पटुः—पटुतरः । इन दोनों में यह पटु है । इसी प्रकार आढ्यतरः, कुशलतरः । अयं एषां प्रकृष्टः शुक्लः—शुक्लतमः (यह सबसे अधिक सफेद है) । पटुतमः—यह सब में पटु है ।

नियम ४५९—(गुणाङ्गादिष्ठेयसू तदर्थे वा ८।२।५) तर के अर्थ में ईयस् और तम के अर्थ में इष्ठ प्रत्यय होता है । पटुतरः=पटीयान् । पटुतमः=पटिष्ठः । लघिष्ठः, लघुतमः । गुरुतमः, गरिष्ठः ।

नियम ४६०—(स्थूलदूरयुव० ८।४।४२) स्थूल,दूर,युव,क्षिप्र,क्षुद्र इन शब्दों में य,र,ल,व, का लोप हो जाता है और गुण हो जाता है ञि, इष्ठ, और ईयस् प्रत्यय परे होने पर । स्थूल—स्थविष्ठः, स्थवीयान् । दूर—दविष्ठः,

दवीयान्। युवन्—यविष्ठः, यवीयान्। क्षिप्र—क्षेपिष्ठः, क्षेपीयान्। क्षुद्र-क्षोदिष्ठः, क्षोदीयान्।

नियम ४६१—(युवाल्पयोः कन् वा ८।४।३३) युवन् और अल्प शब्द को कन् आदेश विकल्प से होता है ञि, इष्ठ, ईयस् प्रत्यय परे होने पर।

अतिशयेन युवा—कनिष्ठः, यविष्ठः।

अतिशयेन अल्पः—कनिष्ठः, अल्पिष्ठः।

अयं अनयोः युवा—कनीयान्, यवीयान्।

अयं अनयोः अल्पः=कनीयान्, अल्पिष्ठः।

नियम ४६२—(प्रशस्यस्य श्रः ८।४।३४) प्रशस्य को श्र आदेश होता है, ञि, इष्ठ, ईयस् प्रत्यय परे होने पर। श्रेष्ठः, श्रेयान्।

नियम ४६३—(वृद्धस्य च ज्यः ८।४।३५) वृद्ध और प्रशस्य को ज्या आदेश होता है, ञि, इष्ठ, ईयस् प्रत्यय परे होने पर। ज्येष्ठः (यह सब में वृद्ध या सब में प्रशस्य है)। ज्यायान् निपात है। ज्यायान् (उससे यह वृद्ध या प्रशस्य है)। स्त्रीलिंग में ईयस् प्रत्ययान्त शब्दों से ईप् होता है। पटीयसी, ज्यायसी इत्यादि।

विभक्तियों के अर्थ में प्रत्यय

नियम ४६४—(अहीयरुहोऽपादाने ८।१।१०५) अपादान के अर्थ में पंचमी विभक्ति होती है, उस पंचम्यन्त पद से तसु (तस्) प्रत्यय होता है, हीयते और रुह् धातु को छोडकर। ग्रामतः आगच्छति। चोरतो बिभेति।

नियम ४६५—(किमद्वयादिसर्वाद्यऽवैपुल्यबहोस्तस् ८।१।१०६) कि शब्द, सर्व आदि शब्द (द्वि आदि शब्द छोडकर) और बहुशब्द (विपुलता का अर्थ छोडकर) से पंचमी विभक्ति के स्थान पर तस् प्रत्यय होता है। सर्वस्मात्—सर्वतः। विश्वतः, ततः, यतः बहुतः।

नियम ४६६—(इतोतः कुतः ८।१।१०७) अस्मात्—इतः। एतस्मात्-अतः। कस्मात्—कुतः, ये निपात हैं।

नियम ४६७—(सप्तम्याः ८।१।११०) सप्तम्यन्त पद से त्र प्रत्यय होता है। सर्वस्मिन्—सर्वत्र। तस्मिन्—तत्र। यस्मिन्—यत्र।

नियम ४६८—(कुत्रात्र-क्व-कुहेह ८।१।१११) ये निपात हैं। कस्मिन्—कुत्र, क्व, कुह। एतस्मिन्—अत्र। अस्मिन्—इह।

नियम ४६९—(किमन्यैकसर्वयत्तदःकाले दा ८।१।११२) किम्, अन्य, एक, सर्व, यत्, तत् इन शब्दों से सप्तमी विभक्ति काल अर्थ की वाचक हो तो दा प्रत्यय होता है। कस्मिन् काले—कदा। अन्यदा, एकदा, सर्वदा, यदा, तदा।

नियम ४७०—(सदाधुनेदानीं तदानीमेतर्हि ८।१।११३) सर्वस्मिन् काले—सदा। अस्मिन् काले—अधुना, इदानीम् एतर्हि। तस्मिन् काले—

तदानीम् ये शब्द काल अर्थ में निपात हैं।

नियम ४७१—(प्रकारे था ८।१।११९) प्रकार अर्थ में था प्रत्यय होता है। सर्वेण प्रकारेण—सर्वथा। यथा, तथा, अन्यथा।

नियम ४७२—(कथमित्थम् ८।१।१२०) ये निपात हैं। केन प्रकारेण —कथम्। अनेन प्रकारेण—इत्थम्।

प्रयोगवाक्य

पांडवेषु को गुरुतमः आसीत्? अयं गौः सर्वेषु स्थविष्ठोऽस्ति। महेन्द्रस्य गृहं सुरेन्द्रगृहात् दविष्ठमस्ति। वीरेन्द्रः नरेन्द्रात् श्रेष्ठोऽस्ति। अस्मिन् गृहे यः सर्वेषु ज्येष्ठोऽस्ति तं एतद् पृच्छ। वृक्षतः पत्राणि पतन्ति। इतः एको मुनिरगमत्। निर्मला कुत्र गमिष्यति? सर्वदा जिनं ध्याय। अहं त्वया सह वार्तामकार्षम् तदा कः समायात्? इत्थं मा वद। जननी इमानि वस्त्राणि अक्रैषीत् अक्रेष्ट वा। साधवः कदा भिक्षां ग्रहीष्यन्ति? कृषकः धान्यानि पुनाति। वृक्षाणि मा छिन्द्धि। एतां वार्तां निशम्य तस्य हृदयं अधुनात्। सत्यं मा स्तृणीहि। माता रज्ज्वा पुत्रं बध्नाति। कस्यापि वस्तु मा मुष्णीहि। भगिन्यः भोजनं अश्नन्ति। दुग्धं शरीरं पुष्णाति।

संस्कृत में अनुवाद करो

नानाजी की कंघी और छत्ता कहां है? यह भगवान महावीर की तस्वीर है। क्या दीये की बत्ती जल रही है? शहरों में प्रायः घरों में पंखे होते हैं। यह किसकी फोटो है? ब्रुश से दांत साफ करो। संदूक में श्यामा के कपडे नहीं है। यह मृत का कफन है। बच्चे तख्ती पर लिखते हैं। आज किसका श्राद्ध है? अरहट पर पानी कौन भर रहा है? कोल्हू में क्या है? चक्की में क्या पीसोगे? गांधीजी चरखा से क्या करते थे?

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

राम और लक्ष्मण में कौन चतुर था? मोहन और सोहन में कौन धनवान् है? विनोद सब में पटु है। साध्वियों में कौन सबसे छोटी साध्वी है? साधुओं में कौन सबसे बडा साधु है? रमा और सुशीला में कौन युवती है? क्या यहां से एक बकरा गया था? यह मधुर आवाज कहां से आई? एक बार शीघ्र मेरे साथ आओ। बडों का सदा सम्मान करना चाहिए। आचार्य श्री कब आयेंगे?

धातु के प्रयोग करो

सीमा क्या खरीदेगी? अच्छी बातें ग्रहण करो। लडकियां धान कब साफ करेगी? सुशील वृक्ष नही काटेगा। रमा क्यों कांपती है? पिता ने पुत्र को क्यों बांधा? सेठ का धन किसने चुराया? बालक क्या खायेगा? उसका शरीर कैसे पुष्ट हुआ?

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—

मदनः स्थविष्ठोऽस्ति । अनयोः वस्त्रयोः किं शुक्लतरमस्ति ? एषु को ज्येष्ठोऽस्ति ? बालिकासु का पटुतमास्ति ? विमलानंदयोः का पटीयसी चकास्ति ? चन्दनबाला संघे साध्वीतमा बभूव ।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ किस शब्द से कौन सा तद्धित प्रत्यय हुआ है ?

दवीयान्, यविष्ठः, स्थवीयान्, यवीयान्, क्षोदीयान्, कुत्र, यदा, इतः, अतः, श्रेष्ठः ।

३. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ में दूसरे शब्द क्या हो सकते हैं ?

साधुतरः, स्थविष्ठः, दवीयान्, क्षोदिष्ठः, मधुरतमः, गुरुतरः, ज्यायसी, अन्यथा, अतः, इतः, इत्थं, कुह, इह, अत्र, कदा, तदानीम् ।

४. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ—

केककिता, वीजनम्, पेटकः, पोटकी, पेषिणी, जामिकः ।

५. क्री और ग्रह् धातु के दिवादि, णवादि तथा स्यत्यादि के रूप लिखो ।

पाठ ५२ : तद्धित १५ (ईषदसमाप्त, अभूततद्भाव आदि)

शब्दसंग्रह

गंजः (अनाज की मंडी) । यंत्रगृहम् (कोल्हुघर) । कूटागारम् (क्लब) । संधानी (धातु पिघलाने का कारखाना) । निषद्या (मंडी) । वपनी, खरकुटी (नाई की दुकान) । हट्टतालम् (हडताल) । कच्छपः (शराब का कारखाना) । भूमिपालः (जागीरदार) । पटराज्ञी, महिषी (पटरानी) । राजद्रोहः, विप्लवः (बगावत) । महाराज्ञी (बडी रानी) । राजाधिराजः (शहंशाह) । सामंतः (बडा जमींदार) ।

धातु—चुरण्—स्तेये (चोरयति) चुराना । पूजण्—पूजायाम् (पूजयति) पूजा करना । पलण्—रक्षणे (पालयति) रक्षा करना । स्निहण्—स्नेहने (स्नेहयति) स्नेह करना । मन्त्रङ्ण्—गुप्तभाषणे (मन्त्रयते) मन्त्रणा करना । स्पृहण्—ईप्सायाम् (स्पृहयति) चाहना । मार्गण्—अन्वेषणे (मार्गयति) खोजना । हिंसिण्—हिंसायाम् (हिंसयति) हिंसा करना । रचण्—प्रतियत्ने (रचयति) बनाना ।

चुर् और पूजण् धातु के रूप याद करो । (देखें परिशिष्ट २ संख्या ५०,१२५) ।

पलण् से लेकर रचण् धातु के रूप दिबादि तक चुर् की तरह चलते हैं । शेष रूप परिशिष्ट में देखें (संख्या १२६ से १३२ तक) ।

ईषद् असमाप्त, अभूततद्भाव

नियम ४७२—(त्यादेश्च प्रशंसायां रूपः ८।२।६) तिप् आदि अंत वाले धातु के रूप और नाम से प्रशंसा के अर्थ में रूप प्रत्यय आता है । जैसे—कलाकाररूपः—यह कुशल कलाकार है । पठतिरूपं—बहुत अच्छा पढता है । जिस शब्द के आगे रूप प्रत्यय लगाएंगे वह पुल्लिग है तो रूपः, स्त्रीलिंग है तो रूपा, नपुंसकलिंग है तो रूपं बनेगा । पठति आदि क्रिया के आगे नपुंसकलिंग का एक वचन 'रूपं' ही रहेगा ।

नियम ४७३—(पाशः क्षेपे ८।२।११) निंदा के अर्थ में पाश प्रत्यय होता है । जैसे—कलाकारपाशः । वैयाकरणपाशः । याज्ञिकपाशः । कुत्सिता कुमारी—कुमारपाशा । स्त्रीप्रत्यय पुंवत् हो जाता है ।

नियम ४७४—(प्रकृते मयट् ८।२।१५) जिस वस्तु के निष्पन्न में

जिसकी प्रचुरता या प्रधानता हो उसे प्रकृत कहते हैं। प्रकृत अर्थ में होने वाले नाम से मयट् प्रत्यय होता है। जिस मिठाई में घृत की प्रधानता है उसे घृतमयं कहेंगे। वैसे ही दधिमयं शाकम्।

नियम ४७५—(अस्मिन् ८।२।१६) प्रकृत अर्थ में होने वाले नाम से सप्तमी के अर्थ में मयट् प्रत्यय होता है। अन्नं प्रकृतं अस्मिन्—अन्नमयं भोजनम्। अपूपमयं पर्व।

नियम ४७३—(कुत्सिताल्पाज्ञातेषु ८।२।४७) कुत्सित, अल्प और अज्ञात इन तीन अर्थों में कच् प्रत्यय होता है। तीनों में जितने अर्थ नाम के साथ लग सकते हों लगाना चाहिए। जैसे—घृतकं, तैलकं। यहां तीनों अर्थ लग सकते हैं। अश्वकः, वृक्षकः, पटकः इत्यादि।

नियम ४७७—(ह्रस्वे ८।२।६०) ह्रस्व अर्थ में शब्द और क्रिया के रूप से कच् आदि प्रत्यय होते हैं। ह्रस्वः पटः—पटकः। वृक्षकः, वंशकः, वेणुकः, नरकः, वरकः, शाटकः। ह्रस्वे पचति—पचतकि।

नियम ४७८—(त्यादिसर्वादेरक् प्राक् टेः ८।२।४३) त्याद्यन्त और सर्वादि शब्दों से कुत्सित, अल्प, अज्ञात अर्थ में अक् प्रत्यय होता है टि से पहले। ह्रस्वं पचति—पचतकि। पचतकः। पचन्तकि। सर्वे ह्रस्वः—सर्वके, विश्वके।

नियम ४७९—(अभूततद्भावे·····८।२।१८) जो नहीं था उसका उस रूप में होने को अभूततद्भाव कहते हैं। कृ, भू और अस् इन तीन धातुओं के योग में अभूततद्भाव के अर्थ में च्वि प्रत्यय होता है।

नियम ४८०—(ईश्च्वाववर्णस्याऽनव्ययस्य ४।१।६०) अव्यय को छोडकर अवर्णान्त शब्द के अन्तिम अ के स्थान पर ई हो जाता है और च्वि प्रत्यय का लोप हो जाता है। अशुक्लं शुक्लं करोति—शुक्लीकरोति वस्त्रम्। अशुक्लः शुक्लो भवति—शुक्लीभवति, शुक्लीस्यात् वस्त्रम्।

नियम ४८१—(च्वियग्यङ्क्यादादियक्येषु ४।१।५१) च्वि आदि प्रत्यय परे होने पर पूर्वस्वर दीर्घ हो जाता है। अशुचिं शुचिं करोति—शुचीकरोति। शुचीभवति। शुचीस्यात्।

नियम ४८२—(कात्स्न्र्ये साद् वा ८।२।२२) सम्पूर्ण रूप से परिवर्तन होने पर सात् प्रत्यय विकल्प से होता है। सर्वं काष्ठं अनग्निं अग्निं करोति= अग्निसात् करोति, अग्निसात् भवति, अग्निसात् स्यात्। पक्ष में अग्नीकरोति, अग्नीभवति, अग्नीस्यात्।

नियम ४८३—(अतमादेरीषदसमाप्ते कल्पदेश्यदेशीयाः ८।२।७) तम आदि रहित त्याद्यन्त और नाम से ईषद् असमाप्त (पूर्णता में थोडी कमी) के अर्थ में कल्प, देश्य, देशीय प्रत्यय होते हैं। ईषद् असमाप्तं पचति= पचतिकल्पं, पचतिदेश्यं, पचतिदेशीयम्। ईषद् असमाप्तं गुडः—गुडकल्पा द्राक्षा, गुडदेश्या द्राक्षा, गुडदेशीया द्राक्षा।

नियम ४८४—(नाम्नः प्राग् बहुर्वा ८।२।८) ईषद् असमाप्त अर्थ में नाम से बहु प्रत्यय होता है और वह नाम से पहले लगता है। ईषद् असमाप्तः पटुः= बहुपटुः। बहुभुक्तं, बहुमृदुः, बहुपीतम्।

प्रयोगवाक्य

महेन्द्रः वदतिरूपम्। मधुकरः गायकरूपोऽस्ति। अयं कविपाशः कुत्र याति ? अलंकारमयी भाषा केभ्यः न रोचते। सा घृतकं शाकं खादति। शिशुः धूल्या अमलिनं वस्त्रं मलिनीकरोति। मंगलायाः पुस्तकं कः अचूचुरत् ? पितामही जिनं अपूपुजत्। जननी शिशुं पालयति। भ्राता भगिनीं स्नेहयति। भूपः अमात्येन साकं मन्त्रयते। दीनः धनं स्पृहयति। सम्यक् मार्गं अन्वेषय। गां कः अहिंसयत् ? कविः काव्यं रचयति।

संस्कृत में अनुवाद करो

अनाज की मंडी नगर से कितनी दूर है ? कोल्हुघर में कौन जा रहा है ? शहरों में अनेक क्लब हैं। मंडी में अनेक दुकानें हैं। नाई की दुकान पर आज कोई नहीं है। आज अध्यापकों की हडताल है। किस शहर में शराब का कारखाना है। जागीरदार भूमि की सुरक्षा करता है। पटरानी और बडी रानी दोनों क्या कर रही थी ? बगावत करने वालों को किसने पकडा ? राजकुमार का राजतिलक कब होगा ? शहंशाह यहां कब आयेंगे ?

तद्धित के प्रत्ययों का प्रयोग करो

सुशील कुशल गायक है। जयप्रज्ञा अच्छा गाती है। कलाकारों में कौन निम्न है ? यह सब्जी लवणमय है। यह स्थान वृक्ष रहित है। आचार्य अपटु को भी पटु बना देते हैं। इस बात को किसने आत्मसात् किया है ? यह तैल खराब है।

धातु का प्रयोग करो

आजकल लोग साहित्य की चोरी करते हैं। जिनेश्वर देव की भाव पूजा करो। अपनी रक्षा करो। माता पुत्र पर स्नेह करती है। आचार्य श्री किससे मन्त्रणा करते हैं ? तुम क्या चाहते हो ? आत्मा को खोजो। तुमने कौन-सा काव्य बनाया है ? मृग को किसने मारा है ?

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद करो—

ये मनो वशीकुर्वन्ति ते सफलीकुर्वन्ति पौरुषं जन्म। अहिंसा न केवलं कृतान्तीकार्या अपितु स्वीकार्या। यो देवीभवति सोऽपि मानवीभवितुमभिलषति। गृहस्वामी गां अन्वेषयति। एतद् वस्तु कः अचूचुरत् ? मुनिसुव्रतः गायकरूपोऽस्ति।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो और बताओ किस शब्द से कौन सा तद्धित प्रत्यय हुआ है—

वैयाकरणपाशः, दुग्धमयम्, शुचीकरोति, अग्निसात् करोति, अश्वकः, पटू भवति, बहुपयो यवागुः, बहुकम्बिताम्, पचन्तिकल्पम्, बहुचन्द्रो मुखम्, पक्ष्यतिदेशीयम्, पण्डितरूपः, मणिज्ञपाशः, घृतमयम्, शाटकः, दुग्धकम् ।

३. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ—

कूटागारम्, वपत्नी, भूमिपालः, विप्लवः, कच्छपः, यंत्रगृहम् ।

४. चुर् और पूजण् धातु के तिबादि, द्यादि तथा स्यत्यादि के रूप लिखो ।

पाठ ५३ : क्रियाविशेषण

शब्दसंग्रह

केसरी (केसरिन्) शेर। द्वीपी (द्वीपिन्) व्याघ्र, बघेरा। तरक्षुः (तेंदुआ)। भल्लूकः (भालू)। शाखामृगः (बन्दर)। गोमायुः (गीदड)। वराहः (सूअर)। वृकः (भेडिया)। कुरङ्गः (हिरण)। उक्षा (उक्षन्) बैल। लोमशा (लोमडी)। महिषः (भैंसा)। अजः (बकरा)। मेषः (भेड)। कौलेयकः (कुत्ता)। सरमा (कुतिया)। खरः (गदहा)। मार्जारी (बिल्ली)। वृश्चिकः (बिच्छू)। गोधा (गोह)। गृहगोधिका (छिपकली)। लूता (मकडी)। कर्णजलौका (कानखजूरा, गोजर)। मीनः (मछली)। कुलीरः (केकडा)। कच्छपः (कछुआ)। नक्रः (मगर)। भेकः (मेंढक)।

क्रियाविशेषण

विशेषण विशेष्य की अवस्था को प्रगट करता है। विशेष्य में जो लिंग, विभक्ति, और वचन होते हैं वे ही विशेषण में किए जाते हैं। क्रिया-विशेषण क्रिया की अवस्था बताता है। भाव को क्रिया कहते हैं। भाव में प्रत्यय होने पर जो लिंग, वचन होते हैं वे ही क्रियाविशेषण में होते हैं। (भावस्यैकत्वात् एकवचनमेव) भाव (क्रिया) में एकवचन ही होता है। लिंगानुशासन के अनुसार भाव में नपुंसकलिंग होता है। (क्रियाविशेषणात् २।४।४८) सूत्र से क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया परिवर्तनशील होती है। कहीं वह कर्ता के अनुसार चलती है और कहीं वह कर्म के अनुसार। कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य वाक्य होने पर भी क्रिया-विशेषण में एकवचन और नपुंसकलिंग रहता है। जैसे—

१. घनाघनाः पटु ध्वनन्ति।

२. वेगं पतति पानीयम्

दो नम्बर के वाक्य में पतति क्रिया एक वचन की है और वेगं क्रिया-विशेषण भी एक वचन और नपुंसकलिंग में है। एक नम्बर के वाक्य में ध्वनन्ति क्रिया कर्तृवाच्य में कर्ता के कारण बहुवचन में है परन्तु क्रिया-विशेषण पटु एकवचन और नपुंसकलिंग में है। कुशलं नृत्यन्ति, मन्दं गच्छति, मधुरं गायति इन सभी स्थानों पर क्रिया बहुवचन में है परन्तु क्रियाविशेषण एक वचन और नपुंसकलिंग ही है। क्रिया वाच्य के अनुसार अपना रूप बदल लेती है, पर क्रियाविशेषण भाव में प्रत्यय के अनुसार ही चलता है।

प्रयोगवाक्य

सोहनः शनैः शनैः भुङ्क्ते । मृगः तीव्रं धावति । दुर्जनः मधुरं वक्ति । कटु मा वद । नद्याः नीरं तीव्रं प्रवहति । अध्यापकः छात्रान् सुष्ठु पाठयति । भूपः दुष्टान् क्रूरं मारयति । पक्षिणः मधुरं गायन्ति । सुशीलः वस्त्राणि सम्यक् परिधत्ते । अस्मिन् वने अनेके केसरिणः द्वीपिनश्च निवसन्ति । शाखामृगः इतस्ततः धावति । रजकस्य गृहे एकः खरोऽस्ति । मार्जारी मूषकं हन्ति । सरमा गेहे गेहे भ्रमति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

जंगल में अनेक हिंसक पशु रहते हैं । लोग शेर, बाघ, तेंदुआ और भालू से डरते हैं । बन्दर चंचल होता है । क्या तुमने गीदड, सूअर, और भेडिया देखा है ? हिरण तेज दौडता है । मम्मन सेठ के बैल को देखने के लिए राजा श्रेणिक भी उसके घर गया था । लोग बकरे और भैंसे की बलि क्यों देते हैं ? कुत्ते ने किसको काटा ? कुतिया के कितने बच्चे हैं ? यह गदहा किसका है ? रात्रि में बिल्ली क्यों घूमती है ? बिच्छू के काटने से वह मर गया । पानी के बिना मछली मर जाती है । कछुआ, मगर, मेंढक, केकडा आदि पानी में रहते हैं ।

क्रियाविशेषण के प्रयोग करो

साध्वियां सुंदर गाती हैं । बालक तेज दौडता है । बालिका मधुर बोलती है । बूढा धीरे-धीरे चलता है । पिताजी सत्य बोलते हैं । रमेश सुंदर लिखता है । आंखों से बुरा मत देखो । कानों से बुरा मत सुनो । मुंह से बुरा मत बोलो । बालिका जोर से बोलती है । लोकप्रकाश अच्छा बोलता है ।

अभ्यास

१. क्रियाविशेषण में एक वचन और नपुंसकलिंग क्यों होता है ?
२. क्रियाविशेषण में कौन-सी विभक्ति होती है ?
३. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ और उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो—

भेडिया, बैल, बिच्छू, केकडा, मगर, लोमडी, भालू ।

पाठ ५४ : जिन्नन्त १

शब्दसंग्रह (जिन्नन्त रूप)

भावयति, भावयते (भू) हुवाता है। यावयति (युंक्) जुडवाता है। श्रावयति (श्रु) सुनवाता है। घटयति (घट्) चेष्टा करवाता है। स्मारयति (स्मृ) याद करवाता है। वेष्टयति (वेष्ट्) वेष्टित करवाता है। जनयति (जनी) उत्पन्न करवाता है। स्थापयति (ष्ठा) ठहरवाता है। जापयति (जि) जीताता है। रोपयति, रोहयति (रुह्) उगवाता है। पालयति (पांक्) रक्षा करवाता है। लम्भयति (लभि) ठगवाता है। तारयति (तॄ) पार करवाता है। लङ्घयति (लघि) लंघन करवाता है। लुञ्चयति (लुञ्च्) लुंचन करवाता है। अर्जयति (अर्ज्) अर्जन करवाता है। त्याजयति (त्यज्) छुडवाता है। लुण्टयति (लुटि) लुटवाता है। पाठयति (पठ्) पढवाता है। भणयति (भण्) कहलाता है। खादयति (खाद्) खिलाता है। लेखयति (लिख्) लिखवाता है। कारयति (कृ) करवाता है। चोरयति (चुर्) चुरवाता है। गमयति (गम्) भेजता है।

धातु—भू धातु के जिन्नन्त के रूप याद करो (देखें परिशिष्ट ३)।

जिन्नन्त

जहां एक कर्ता को दूसरा कर्ता कार्य करने को प्रेरित करता हो वहां संस्कृत में धातुओं से जिन् प्रत्यय होता है। जिन्प्रत्ययान्त प्रत्येक धातु उभयपदी होती है। जिन्नन्त में प्रत्येक धातु के दो कर्ता होते हैं—एक मुख्य और दूसरा गौण। प्रेरित करने वाला मुख्य होता है और जिसे प्रेरित किया जाता है वह गौण। मुख्य कर्ता में प्रथमा विभक्ति और गौण कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे—शिष्यः कार्यं करोति (मूलवाक्य)

जिन्नन्त—गुरुः शिष्येण कार्यं कारयति। इसी प्रकार मुनिः श्रावकेण तपः कारयति। नृपः भृत्येन कार्यं कारयति। कुछ धातुओं के योग में गौण कर्ता की कर्म संज्ञा होती है। नीचे के नियम देखें—

नियम

नियम ४८५—(गतिबोधाहारशब्दार्थाकर्मणाम् २।४।२१) गति, बोध, आहार और शब्द अर्थवाली धातुओं तथा अकर्मकधातुओं के योग में गौणकर्ता की कर्म संज्ञा हो जाती है। जैसे—भरतः सुशीलं ग्रामं गमयति।

आचार्यः शिष्यं धर्मं बोधयति । माता शिशुं ओदनं भोजयति । श्यामः मैत्रं मन्त्रं जल्पयति । आसयति विजयं माता ।

नियम ४८६—(न नीखाद्यदिह्वाशब्दायक्रन्दाम् २।४।२६) नी, खाद् अद्, ह्वा, शब्दाय, क्रन्दय्—इन धातुओं के योग में गौणकर्त्ता की कर्मसंज्ञा नहीं होती ।

मूलवाक्य—भृत्यः भारं नयति ।

ञिन्नन्त—श्रेष्ठी भृत्येन भारं नाययति । इसी प्रकार खादयति अन्नं मैत्रेण श्यामः । आदयति अपूपं पुत्रेण माता । रामः मैत्रेण चैत्रं ह्वाययति, शब्दायति, क्रन्दयति वा ।

नियम ४८७—(अविवक्षितकर्मणामञिन्कर्ता नौ वा २।४।२०) वाक्यों में जहां कर्म की विवक्षा न की जाए वहां गौण कर्त्ता की कर्म संज्ञा विकल्प से होती है । मूलवाक्य—श्यामः लिखति । ञिन्नन्त—विमलः श्यामं लेखयति, विमलः श्यामेन लेखयति । सुशीला कमलां पाचयति, सुशीला कमलया पाचयति ।

ञिन्नन्त में दो कर्त्ता होते हैं वैसे ही द्विकर्मक धातुओं के योग में कर्म भी दो होते हैं । वहां किस कर्म में प्रत्यय करना चाहिए इसके लिए नीचे लिखे दो श्लोक मननीय हैं—

गौणे कर्मणि दुह्यादेः, प्रधाने नीहृकृष्वहाम् ।
आहारबोधशब्दार्थ-ञिन्नन्तानां निजेच्छया ॥१॥
गत्यर्थाऽकर्मकाणां तु, प्रधाने हृकृनोस्तथा ।
कर्मजाः प्रत्ययाः प्रोक्ता श्चात्मनेऽभिवदे र्दृशेः ॥२॥

नी, हृ, कृष्, वह्—इन धातुओं के योग में प्रधान कर्म में प्रत्यय होता है—

मूलवाक्य—गोपालः अजां ग्रामं नयति ।

प्रधान कर्म में प्रत्यय—गोपालः अजा ग्रामं नीयते । इसी प्रकार रामेण ग्रामं शाखा कृष्यते । मैत्रेण ग्रामं भारो उह्यते ।

आहार, बोध और शब्द अर्थवाली सभी धातुओं से ञिन्नन्त में इच्छानुसार प्रत्यय किया जा सकता है ।

मूलवाक्य—(आहार अर्थ धातु) जिनेशः अतिथिं मोदकं भोजयति ।
प्रधान कर्म—जिनेशेन अतिथिं मोदकः भोज्यते ।
गौण कर्म—जिनेशेन अतिथिः मोदकं भोज्यते ।
मूलवाक्य (बोध अर्थ धातु)—आचार्यः शिष्यं धर्मं बोधयति ।
प्रधानकर्म—आचार्येण शिष्यं धर्मः बोध्यते ।
गौणकर्म—आचार्येण शिष्यो धर्मं बोध्यते ।
इसी प्रकार—पाठ्यते शिष्यो ग्रंथं अध्यापकेन । पाठ्यते शिष्यं ग्रंथः

अध्यापकेन ।

जिन्नन्त गतिअर्थवाली धातु, अकर्मकधातु, जिन्नन्त हृ और कृन् धातु, अभिपूर्वक वद् धातु और दृश् धातु ये दोनों जिन्नन्त में आत्मनेपद हों तो प्रधान कर्म में प्रत्यय होता है ।

मूलवाक्य—चैत्रः मैत्रं ग्रामं गमयति ।
प्रधान कर्म में—चैत्रेण मैत्रो ग्रामं गम्यते ।
मूलवाक्य—चैत्रः मैत्रं मासं आसयति ।
(प्रधान कर्म) चैत्रेण मैत्रः मासं आस्यते ।
मूलवाक्य—हारयति भारं भृत्यं भृत्येन वा श्यामः ।
प्रधानकर्म—हार्यते भारो भृत्यं भृत्येन वा श्यामेन ।
मूलवाक्य—कारयति कटं चैत्रं चैत्रेण वा सुयशः ।
प्रधानकर्म—कार्यते कटः चैत्रं चैत्रेण वा सुयशसा ।
मूलवाक्य—अभिवाद्यते गुरुं शिष्यं शिष्येण वा श्रावकः ।
प्रधानकर्म—अभिवाद्यते गुरुः शिष्यं शिष्येण वा श्रावकेण ।
मूलवाक्य—दर्शयते राजानं भृत्यान् भृत्यै र्वा कपिलः ।
प्रधानकर्म—दर्श्यते राजा भृत्यान् भृत्यैर्वा कपिलेन ।

जिन्नन्त से भाव कर्म

गण की धातुओं की तरह जिन्नन्त की धातुओं से भी भावकर्म बनाएं जाते हैं । उसका सरल साधन यह है—जिन्नन्त की धातु के अंतिम 'इ' को हटाकर उसके स्थान पर 'यते' लगा देना चाहिए । जैसे—जिन्नन्त धातु—कारि है । भावकर्म में रूप बनेगा—कार्यते । हारि—हार्यते । पाठि—पाठ्यते । तापि—ताप्यते ।

गण की धातुओं से क्त प्रत्यय होता है और भावकर्म के प्रत्यय लगाकर धातु के रूप चलाए जाते हैं वैसे ही जिन्नन्त की धातुओं से भी क्त प्रत्यय होता है और उसके भी भावकर्म के रूप बनाए जाते हैं । जैसे—

क—विशालाऽपि सुरैः समेतैः संकीर्णतां नन्दनभूरलम्भि (प्रापिता) ।

ख—अणहिलेन वनराजभाजो नगरनिवेशं स्वनाम्ना कारितः इति अणहिलनगरम् ।

आए हुए देवताओं ने उस विशाल नन्दनभूमि को संकीर्ण बना दिया । इसमें 'अलम्भि' यह जिन्नन्त से भावकर्म का प्रयोग है । संकीर्णता और नन्दनभूः ये दो कर्म हैं । मुख्यकर्म में प्रथमा एवं गौणकर्म में द्वितीया है ।

अणहिल ने वनराजा से अपने नाम का नगर बनवाया । कारितः यह कर्म में क्त प्रत्यय है । जिन्नन्तानां निजेच्छया के अनुसार जिन्नन्त से कर्म में प्रत्यय मुख्य कर्म से भी किया जा सकता है एवं गौण कर्म से भी ।

प्रयोगवाक्य

विदलयति कुबोधं बोधयत्यागमार्थं,
सुगतिकुगतिमार्गौ पुण्यपापे व्यनक्ति ।
अवगमयति कृत्याकृत्यभेदं गुरुर्यो,
भवजलनिधिपोतस्तं विना नास्ति कश्चित् ॥

भगिनी भ्रातरं स्वगृहे स्थापयति । दासः स्वामिना वार्तां स्मारयति । तातः पुत्रेण भृत्यकर्म त्याजयति । तातः पुत्रेण पत्रं लेखयति । गुरुः शिष्यं पाठं पाठयति । स्वामी कर्मकरेण आम्रवृक्षं आरोहयेत् । नाविकः यात्रिभिः नदीं उत्तारयतु । माता पुत्रेण चन्द्रं दर्शयिष्यति । गृहपत्नी मेखलां मंजूषायां अस्थापयत् । मोहनः भृत्येन भारं नाययति । माता पुत्रेण क्षीरं आदयति । तातः पुत्रं फलं भोजयति । सुरेशः रमेशं टमकोरं गमयति । रमा सीतया सुशीलां ह्वाययति । आचार्यः शिष्यं मन्त्रं जल्पयति । आचार्यहेमचन्द्रः शिष्यं धर्मं बोधयति । स्वयंसेवकः बालकं आसयति । तातेन पुत्रेण भृत्यकर्म त्याज्यते । आचार्येण शिष्येण वार्ता स्मार्यते ।

संस्कृत में अनुवाद करो (जिन्नन्त का प्रयोग करो)

नरेश सुमति से पात्र जुडवाता है । आचार्यश्री जनता को संतों से भजन सुनवाते हैं । अध्यापक विद्यार्थी से भाषण बोलने की चेष्टा करवाता है । मंथरा ने कैकयी से दशरथ को दिये गये वचन की याद करवाई । किसान मजदूर से खेतों में गेहूं उगवाता है । सेना राजा को शत्रुओं से जीताती है । राजा सेना से नगर की रक्षा करवाता है । नरेन्द्र दुर्जन से सेठ को ठगवाता है । नाविक नौका से यात्रियों को पार करवाता है । वैद्य माता से बच्चे को लंघन करवाता है । धर्मेश उदित से केश-लुंचन करवाता है । सास बहू से पत्र लिखवाती है । मोहन सोहन से काम करवाता है । दुर्जन नौकर से धन चुरवाता है । गुरु शिष्यों से आगम पढवाता है । पिता पुत्र से नये घर में प्रवेश करवाता है । बहन दासी से भाई को सुलवाती है । सुरेन्द्र मित्र को अपने घर में बुलवाता है ।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करो' शीर्षक में जितने वाक्य हैं उनके तिबादि के स्थान पर यादादि की क्रिया लगा कर वाक्य बनाओ ।
२. ऊपर के वाक्यों को भाव कर्म में परिवर्तित करो ।
३ जिन्नन्त से भावकर्म के रूप बनाने का सरल तरीका क्या है ?
४. द्विकर्मक धातुओं में किन धातुओं के योग में प्रधानकर्म में प्रत्यय होता है ?
५. कौन सी जिन्नन्त धातुओं के योग में प्रधानकर्म में प्रत्यय होता है ?

६. गौणकर्ता में कौन सी विभक्ति होती है ?

७. निम्नलिखित धातुओं के णिच प्रत्यय के रूप लिखो—

स्मृ, ष्ठा, पा, तॄ, त्यज्, भण्, खाद्, अर्ज्, रुह्, लुञ्च् ।

८. हिंदी में अनुवाद करो—

अध्यापकः छात्रेण लेखं लेखयति । खलः भृत्येन धनं चोरयति । गुरुः शिष्यं नगरं गमयति । सज्जनः नृपेण दानं दापयति । भूपः दूतेन संदेशं भणयति । अध्यापिका छात्राभिः पाठं पाठयति ।

पाठ ५५ : णिन्नन्त २

शब्दसंग्रह (णिन्नतरूप)

तापयति (तप्) तपवाता है। लापयति (लप्), जल्पयति (जल्प्) कहलवाता है। जापयति (जप्) जप करवाता है। जेमयति (जिमु) जिमवाता है। भोजन करवाता है। दर्शयति (दृश्) दिखवाता है। दाहयति (दह्) जलवाता है। क्रापयति (क्री) खरीदवाता है। अध्यापयति (अधि+इ) पढवाता है। चापयति, चाययति (चि) चुनवाता है। अर्पयति (ऋ) प्राप्त करवाता है। ह्रेपयति (ह्रीङ्) लजवाता है, लज्जा करवाता है। वाययति (वे) सिलवाता है। दूषयति (दूष्) दूषित करवाता है। सेवयति (सेव्) सेवा करवाता है। आदयति (अद्), जक्षयति (जक्ष्) खिलवाता है। भोजयति (भुञ्ज्) खिलवाता है। ग्राहयति (ग्रह्) ग्रहण करवाता है। त्रोटयति (त्रुट्) तुडवाता है। विलीनयति, विलाययति (वि+ली) पिघलवाता है।

गण की धातुओं से णिन्नन्त के रूप बनाने का नियम

णिन्नन्त में अ इत् जाता है। (वृद्धिस्वराणामादेर्ञ्णिति तद्धिते ८।४।१) इस सूत्र से आदि स्वर को वृद्धि हो जाती है। वृद्धि होने पर संध्यक्षर स्वर (ए,ऐ,ओ,औ) को कहीं पर आ हो जाता है, कहीं पर अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। णि का इ मिलाने से इकारान्त धातु बन जाती है।

नियम ४८८—(जिक्रीङां आौ ४।२।१०६) जि, क्री, इङ्—इनके संध्यक्षर को आ हो जाता है। जापयति, क्रापयति, अध्यापयति।

नियम ४८९—(चिस्फुरो र्वा ४।२।१११) चिनत् धातु के संध्यक्षर को आ विकल्प से होता है। चापयति, चाययति। स्फारयति, स्फोरयति।

नियम ४९०—(अर्तिह्वीब्लीरीक्नूयिक्ष्माय्यातां पुक् ४।२।११३) ऋं क्-गतौ, ऋं-प्रापणे वा (अर्ति), ह्री, ब्ली, री (रीयति, रिणाति), क्नूयि, क्ष्मा और आदन्त धातुओं को पुक् (प्) का आगम होता है। ऋ-अर्पयति, अरारयति, ह्रेपयति, क्लेपयति, रेपयति, क्नोपयति, क्ष्मापयति, दापयति, जापयति।

नियम ४९१—(शाछासाह्वाव्यावेपां युक् ४।२।११४) शा आदि धातुओं को युक् (य्) का आगम होता है। शोंच्—शाययति। छोंच्—छाय-

यति । वेंन्-वाययति । पां-पाने, पैं-शोषणे वा—पाययति ।

नियम ४९२—(व्योः पुगयहसे ४।४।४९) धातु के य् और व् का लोप हो जाता है पुक् और यकार को छोडकर हस आदि प्रत्यय आगे हो तो । पुक्ग्रहणमप्रत्ययार्थम् । क्नोपयति, क्ष्मापयति ।

नियम ४९३—(लो लुक् ४।२।११७) ला धातु को लुक् (ल्) का आगम विकल्प से होता है, स्नेह (चिकनाइ) तपाने के अर्थ में । विलालयति विलापयति वा घृतम् ।

नियम ४९४—(पातेः ४।२।११८) पा धातु को लुक् (ल्) का आगम होता है । पालयति ।

नियम ४९५—(रुहः पो वा ४।२।१२२) रुह् धातु के अंत को पकार का आदेश विकल्प से होता है । रोपयति, रोहयति ।

नियम ४९६—(स्फायो वः ४।२।१२०) स्फाय् को अंत में व आदेश होता है । स्फावयति ।

नियम ४९७—(दुषे औं ४।३।१२१) दुष् की उपधा को ऊकार होता है । दूषयति कुलम् ।

नियम ४९८—(वो विधूनने जुक् ४।२।११९) वा धातु को विधूनन अर्थ में जुक् (ज्) का आगम होता है । उपवाजयति पुष्पाणि ।

नियम ४९९—(वेष्टिचेष्ट्योर्वा ४।१।११४) वेष्ट् धातु को अिन् के अङ् प्रत्यय से द्वित्व होने पर पूर्व को 'अ' आदेश विकल्प से होता है । अववेष्टत्, अविवेष्टत् । अचचेष्टत् अचिचेष्टत् ।

नियम ५००—(स्वपेरङि ४।४।१२) अिन्नन्तस्वप् को संप्रसारण होता है, अङ् प्रत्यय परे होने पर । असूषुपत् ।

नियम ५०१—(तिष्ठतेरित् ४।१।११८) स्था (तिष्ठति) धातु की उपधा को इकार हो जाता है, अिन्नन्त में अङ् परे हो तो । अतिष्ठिपत् ।

नियम ५०२—(जिघ्रतेर्वा ४।१।११९) घ्रा (जिघ्रति) धातु की उपधा को इकार विकल्प से होता है, अिन् का अङ् परे हो तो । अजिघ्रिपत्, अजिघ्रपत् ।

नियम ५०३—(औ मृगरमणे ४।२।४४) रञ्ज् धातु की उपधा के नकार का लोप हो जाता है मृगरमण अर्थ में । रजयति मृगान् व्याधः ।

नियम ५०४—(ज्वलह्वलह्मलग्ला-स्ना-वनु-वम-नमोऽनुपसर्गस्य वा ४।२।१३१) उपसर्गरहित इन धातुओं को ह्रस्व विकल्प से होता है । ज्वलयति, ज्वालयति । ह्वलयति, ह्वालयति । ह्मलयति, ह्मालयति । ग्लपयति, ग्लापयति । स्नपयति, स्नापयति । वनयति, वानयति । वमयति, वामयति । नमयति, नामयति ।

नियम ५०५—(लभेः ४।३।२६) लभ् धातु को नुम् का आगम होता

है, अप् वर्जित और णबादि वर्जित, स्वर आदि वाला प्रत्यय परे होने पर। लम्भयति।

प्रयोगवाक्य

माता दुहित्र्या किमर्थं तैलं तापयति ? आचार्यः शिष्यं भक्तामरस्तोत्रं लापयति जल्पयति वा। मोहनः पुत्रं अतिथिं जेमयति। माता पुत्रेण शशिनं दर्शयति। अध्यापकः शिष्यं आचारबोधं अध्यापयति। स्वामी मालाकरेण प्रातः पीतानि पुष्पाणि चाययति चापयति वा। कन्या सौचिकेन नव्यवेषं वाययति। आचार्यः युवतीभिः शिष्याभिः वृद्धसाध्वीः सेवयति। सीता महेशेन फलं आदयति खादयति वा। सुशीला पुत्रं मिष्टान्नं जक्षयति। राज्याधिकारी कर्मचारिभिः आपणं त्रोटयति। माता पुत्र्या नवनीतं विलीनयति विलाययति वा।

संस्कृत में अनुवाद करो (जिन्नन्त के प्रयोग करो)

माता पुत्री से घी तपवाती है। पिता पुत्र से शब्द कहलवाता है। मुनि नरेश से जप करवाता है। सीमा भाई को रसोइए से जिमवाती है। सुबाहु पारस से चित्र दिखवाता है। शीला रमा से अग्नि जलवाती है। गुरु शिष्य से रुग्ण की सेवा करवाता है। सास बहू से साडी खरीदवाती है। रमेश लडके से पुस्तक पढवाता है। माली नौकर से फूल चुनवाता है। सुरेश अध्यापक से इनाम प्राप्त करवाता है। रमा ससुर से बहू को लज्जा करवाती है। सुनीला सुशीला से रोटी ढकवाती है। मंजू जुलाहे से वस्त्र सिलवाती है। रानी धाई से पुत्र का पालन करवाती है। श्याम गंदे पानी से वस्त्र को दूषित करवाता है। विमला सरस्वती से पाठ पढवाती है। पिता पुत्र से धन अर्जन करवाता है। माँ पुत्र को पत्र लिखवाती है। सास बहू से कार्य करवाती है।

अभ्यास

१. किन धातुओं को युक्, पुक्, जुक् और लुक् का आगमन होता है ? उदाहरण दो।
२. किन-किन धातुओं को विकल्प से ह्रस्व होता है ?
३. संध्यक्षर धातुओं को 'आ' करने वाला कौन सा नियम है ?
४. निम्नलिखित धातुओं के जिन् प्रत्यय के रूप लिखो—
शोंच्, ह्वेंन्, क्री, चि, दा, धा, जि।
५. हिंदी में अनुवाद करो—
पुत्रः भृत्येन मातरं सेवयति। मालाकारः पुत्र्या पुष्पाणि त्रोटयति। पुष्पा तन्तुवायेन वस्त्राणि वाययति। जननी सखीभिः सुतां दर्शयति। श्रेष्ठिभार्या दास्या घृतं विलीनयति।

पाठ ५६ : सन्नन्त १

शब्दसंग्रह (सन्नन्त के रूप)

बुभूषति (भवितुमिच्छति)। तिष्ठासति (स्थातुमिच्छति)। जिगमिषति (गन्तुमिच्छति)। जिज्वलिषति (ज्वलितुमिच्छति)। जिहसिषति (हसितुमिच्छति)। रुरुदिषति (रोदितुमिच्छति)। निनीषति (नेतुमिच्छति)। पिपक्षति (पक्तुमिच्छति)। पिपठिषति (पठितुमिच्छति)। चिक्षिप्सति (क्षेप्तुमिच्छति)। बिभणिषति (भणितुमिच्छति)। प्रविविक्षति (प्रवेष्टुमिच्छति)। मुमुक्षति (मोक्तुमिच्छति)। पिपृच्छिषति (प्रष्टुमिच्छति)। पिपासति (पातुमिच्छति)। ज्ञीप्सति (ज्ञातुमिच्छति)। ईप्सति (आप्तुमिच्छति)। धित्सति (धातुमिच्छति)। भित्सति (भेत्तुमिच्छति)। दित्सति (दातुमिच्छति)। लिप्सते (लब्धुमिच्छति)। दिधक्षति (दग्धुमिच्छति)। शुश्रूषते (श्रोतुमिच्छति)। चिचलिषति (चलितुमिच्छति)। बिभ्रमिषति (भ्रमितुमिच्छति)। चिकीर्षति (कर्तुमिच्छति)। दिदृक्षते (द्रष्टुमिच्छति)। जिघत्सति (अत्तुमिच्छति)। पित्सति, पिपतिषति (पतितुमिच्छति)। तितीर्षति (तरीतुमिच्छति)। जिघांसति (हन्तुमिच्छति)।

नोट—भू धातु के सन्नन्त के दसों लकारों के रूप याद करो। (देखें परिशिष्ट ३)।

सन्नन्त

सन्नन्त शब्द सन्+अन्त से बना है। जिस धातु के अन्त में सन् प्रत्यय आता है उसे सन्नन्त कहते हैं। तुम् प्रत्यय के आगे इच्छति का प्रयोग करने से जो अर्थ होता है उसी अर्थ में सन् प्रत्यय आता है। (इच्छायामेककर्तृककर्मणोऽतत्सनो वा ४।१।१६) कर्मभूत, कर्मसदृश या कर्मरूप में धातु से इच्छा के अर्थ में सन् प्रत्यय होता है। कर्मभूत धातु और इच्छति धातु का कर्ता एक ही होना चाहिए। इच्छति का प्रयोग कर्मभूत (कर्मकारक) के साथ होने से ही सन् प्रत्यय आता है अन्य कारकों के साथ होने से नहीं आता। धातु से एक बार सन् प्रत्यय आने के बाद उस सन्नन्त रूप से दूसरी बार सन् प्रत्यय नहीं आता। जैसे—कर्तुं इच्छति = चिकीर्षति। चिकीर्षितुं इच्छति, यहां सन् प्रत्यय नहीं होता।

गमनेन इच्छामि। यहां इच्छामि क्रिया साधन-कारक के साथ है इसलिए सन् प्रत्यय नहीं होता। सन् प्रत्यय आने के पहले गणों में जो धातु परस्मैपद या आत्मनेपद थी वह सन् प्रत्यय के बाद भी पूर्ववत्

परस्मैपद और आत्मनेपद रहती है। सकर्मक और अकर्मक का नियम भी उसी के अनुसार है। सन् प्रत्यय का स शेष रहता है। पूर्वनिमित्त मिलने से स का ष भी हो जाता है।

सनन्त के रूप बनाने का नियम

नियम ५०६—(सन्यङश्च ४।१।७४) सन् और यङ् प्रत्यय परे होने पर धातु का पहला एक स्वर (व्यंजनसहित) द्वित्व हो जाता है।

नियम ५०७—(ऋस्मिपूङञ्जशूकृ-गृ-दृ-धृ-प्रच्छिभ्यः ४।३।६७) इन धातुओं को सन् प्रत्यय परे होने पर इट् होता है।

ऋ—अरिरिषति। स्मि—सिस्मयिषते। पूङ्—पिपविषते। अञ्जू—अञ्जिजिषति। अशू—अशिशिषते। कृ—चिकरिषति, चिकरीषति। गृ—जिगरिषति, जिगरीषति।

नियम ५०८—(इवन्तर्धभ्रस्जदम्भश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनितनिपतिदरिद्रावृद्भ्यः सनः ४।३।६६) इवन्त, ऋदन्त और ऋध् आदि धातुओं से इट् प्रत्यय विकल्प से होता है। दिव्—दुद्यूषति, दिदेविषति। सिव्—सुष्यूषति, सिसेविषति। स्वृ—सिस्वरिषति, सुस्वूर्षति। ऋध्—ईर्त्सति, अर्दिधिषति। श्रि—शिश्रीषति, शिश्रयिषति। भ्रस्ज्—विभ्रक्षति, विभर्क्षति। यु—युयूषति, यियविषति। ऊर्णु—ऊर्णुनूषति, ऊर्णुनविषति, ऊर्णुनुविषति। भर—बुभूर्षति, बिभरिषति। ज्ञपण्—जिज्ञापयिषति, जिज्ञपयिषति। सन्—सिषासति, सिसनिषति। तन्—तितंसति, तितांसति, तितनिषति। पत्—पित्सति, पिपतिषति। दरिद्राक्—दिदरिद्रासति, दिदरिद्रिषति। वृ—वुवूर्षति, विवरिषति, विवरीषति।

(सन्यनिटि दीर्घः ३।४।८१) स्वरान्त धातु दीर्घ हो जाती है, अनिट् सन् प्रत्यय परे होने पर। चि—चिकीषति, चिचीषति। जि—जिगीषति। तुष्—तुतूषति। ष्टु—तुष्टूषति। कृ—चिकीर्षति।

नियम ५०९—(ज्ञप्याप्योर्ज्ञीपीपौ ४।१।१४०) ज्ञप् को ज्ञीप् और आप् धातु को ईप् आदेश होता है, सन् प्रत्यय परे होने पर। ज्ञीप्सति, ईप्सति।

नियम ५१०—(ऋधईर्त् ४।१।१३९) ऋध् को ईर्त् आदेश होता है, सन् प्रत्यय परे होने पर। ईर्त्सति।

नियम ५११—(दम्भेर्धिञ्धीपौ ४।१।१४१) दंभ धातु को धिप् और धीप् आदेश होता है सन् प्रत्यय परे होने पर। धिप्सति, धीप्सति।

नियम ५१२—(सनि ४।३।४७) झस आदि वाला सन् प्रत्यय परे हो तो जन्, सन् और खन् धातुओं के अंत को आ आदेश हो जाता है। सिसाषति। झस सन् न होने पर सिसनिषति।

नियम ५१३—(रभलभशकशक्लृपतपदामिः ४।१।१३७) इन धातुओं के स्वर (अ) को इकार हो जाता है, द्वित्व नहीं होता।

रभ्—आरिप्सते। लभ्—लिप्सते। शक्, शक्लृ—शिक्षति। पत्—पित्सति। पद्—पित्सते।

प्रयोगवाक्य

अहं विद्वान् बुभूषामि। अस्मिन् देशे को भ्राता तिष्ठासति ? विद्यार्थी विद्यां अरिरिषति। बालकस्य स्पष्टोक्तिं श्रुत्वा मोहनः सिस्मयिषते। कृषकः क्षेत्रं पिपविषते। पूर्वकल्मषं दूरीकृत्य सोहनः अञ्जिजिषति। मुनिः उत्तरीयपटं सुस्यूषति सिसेविषति वा। तारागणः निशायां दुद्यूषन्ति दिदेविषन्ति वा। अर्थलोभी दुग्धे जलं युयूषति यियविषति वा। साधुः इन्द्रियाणि जिगीषति। मालाकारः श्वेतपुष्पाणि चिचीषति। अहं पार्श्वनाथं तुष्टूषामि। पिपासुः शीतलं जलं पीत्वा तुतूषति। किं स घोरपापैः दिदरिद्रासति ? पाश्चात्यदेशे जैनधर्मं कः तितनिपिस्यति ? त्वं किं लिप्से ?

संस्कृत में अनुवाद करो (सन्नन्त के प्रयोग करो)

तुम क्या बनना चाहते हो ? मैं यहां बैठना चाहता हूं। ये लोग कहां जाना चाहते हैं ? क्या तुम जलना चाहते हो जो कि आग के पास बैठे हो ? सभी हंसना चाहते हैं, रोना कोई नहीं चाहता। वे तुम्हें कहां ले जाना चाहते हैं ? रसोइया आज क्या पकाना चाहता है ? कितनी बहिनें संस्कृत और प्राकृत पढना चाहती हैं ? बालिका नदी में पत्थर फेंकना चाहती है। तुम आचार्य श्री को क्या कहना चाहते हो ? हरिजन मंदिर में प्रवेश करना चाहते हैं। पति पत्नी को क्यों छोडना चाहता है ? बालक पानी पीना चाहता है। विमला कमला से क्या पूछना चाहती है ? मैं संघविरुद्ध बातें नहीं सुनना चाहता हूं। बच्चा रात्रि को कहां चलना चाहता है ? तुम प्रातः कहां घूमना चाहते हो ? भूखा व्यक्ति भोजन खाना चाहता है। प्यासा व्यक्ति पानी पीना चाहता है। वह पहाड से गिरना चाहता है। डाकू उसको मारना चाहते हैं। स्त्रियां पानी भरना चाहती हैं। ग्वाला दूध में पानी मिलाना चाहता है। वृक्ष की शाखाएं फैलना चाहती हैं। मुनि मुक्ति-स्त्री का वरण करना चाहते हैं। जनता किसको चुनना चाहती है। राजा शत्रुओं को जीतना चाहता है।

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद करो—

सर्वं जीप्सति पुण्यमीप्सति दयां धित्सत्यघं भित्सति,
क्रोधं दित्सति दानशीलतपसां साफल्यमादित्सति।
कल्याणोपचयं चिकीर्षति भवाम्भोधेस्तटं लिप्सति,
मुक्तिस्त्रीं परिरिप्सते यदि जनस्तद् भावयेद् भावनाम् ॥१॥

२. निम्नलिखित सन्नन्त रूपों का वाक्यों में प्रयोग करो—
चिकीर्षति, पित्सति, जिगीषति, अरिरिषति, दिदेविषति, बुभूर्षति, तितांसति, तुष्टूषति, तुतूषति ।

३. निम्नलिखित धातुओं के सन्नन्त के रूप बताओ—
स्वृ, श्रि, भ्रस्ज्, वृ, दंभ, ज्ञप्, ऋध् ।

४. सन् प्रत्यय कहां आता है ? उसके विषय में जो जानते हो वह बताओ ।

पाठ ५७ : सन्नन्त २ (उ, अ प्रत्यय)

शब्दसंग्रह

जिगमिषुः (जाने का इच्छुक)। पिपठिषुः (पढने का इच्छुक)। दित्सुः (देने का इच्छुक)। लिप्सुः (प्राप्त करने का इच्छुक)। पिपृच्छिषुः (पूछने का इच्छुक)। दिधरिषुः (धारण करने का इच्छुक)। दिदृक्षुः (देखने का इच्छुक)। जिगीषुः (जीतने का इच्छुक)। बुभुक्षुः (खाने का इच्छुक)। शुश्रूषुः (सुनने का इच्छुक)। बुभुत्सुः (जानने का इच्छुक)। चिकीर्षुः (करने का इच्छुक)। जिज्ञासुः (जानने का इच्छुक)। विवक्षुः (बोलने का इच्छुक)। तितीर्षुः (तैरने का इच्छुक)। जिघांसुः (मारने का इच्छुक)। तितीर्षा ((तैरने की इच्छा)। चिकीर्षा (करने की इच्छा)। बुभूषा (होने की इच्छा)। विवक्षा (बोलने की इच्छा)। शुश्रूषा (सुनने की इच्छा)। पिपासा (पीने की इच्छा)। लिप्सा (पाने की इच्छा)। जिघत्सा (खाने की इच्छा)। जिज्ञासा (जानने की इच्छा)। धित्सा (धारण करने की इच्छा)।

उ और अ प्रत्यय

जैसे गण की धातु से प्रत्यय होते हैं वैसे सन्नन्त धातु मे भी कई प्रत्यय होते हैं। (सन्नाशंसिभिक्षिभ्यः उः ५।३।४१) सूत्र से शीलादि अर्थ में सन्नन्त धातु से 'उ' प्रत्यय होता है। यह प्रत्यय कर्ता में होता है इसलिए इसके कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। 'उ' प्रत्ययान्त शब्द त्रिलिंगी होते हैं।

चिकीर्षति इत्येवं शीलः चिकीर्षुः। इसका अर्थ होता है करने की इच्छा करने वाला। अहं साम्प्रतं स्वाध्यायं चिकीर्षुरस्मि—मैं अभी स्वाध्याय करने का इच्छुक हूं। इयं धर्मं बुभुत्सुः शास्त्रं पठति—यह धर्म को जानने की इच्छुक (स्त्री) शास्त्र पढती है। यहां धर्म 'उ' प्रत्ययान्त बुभुत्सु का कर्म है, शास्त्रं पठति क्रिया का कर्म है।

तुम् प्रत्यय के आगे इच्छा शब्द लगाने से जो अर्थ होता है उसी अर्थ में (शंसि प्रत्ययात् ५।४।१०१) इस सूत्र से 'अ' प्रत्यय होता है। यह स्त्रीलिंग वृत्ति में ही प्रयोग में आता है। कर्तुमिच्छा = चिकीर्षा। ज्ञातुं इच्छा = जिज्ञासा। गन्तुं इच्छा = जिगमिषा। 'अ' प्रत्यय के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। अस्य तत्त्वजिज्ञासा अस्ति। साम्प्रतं मम स्वाध्याय-चिकीर्षा वर्तते। उ और अ प्रत्यय के वाक्यों को ध्यान से पढें—

(उ) अहं साम्प्रतं स्वाध्यायं चिकीर्षुरस्मि ।

(अ) साम्प्रतं मम स्वाध्यायचिकीर्षा वर्तते ।

प्रथम वाक्य में अहं कर्ता और अस्मि क्रिया है । द्वितीय वाक्य में अहं में षष्ठी विभक्ति होने से अहं कर्ता नहीं रहा, चिकीर्षा कर्ता है । दोनों वाक्यों का भाव एक है, कहने का प्रकार भिन्न है । प्रशंसा, गोपाया, मीमांसा, कंडूया, लोलूया, पुत्रकाम्या, नवा, गल्भा, पटपटाया ये अ प्रत्यय के रूप हैं ।

प्रयोगवाक्य

छात्राः गृहं जिगमिषवः सन्ति । शिष्याः व्याकरणं पिपठिषवः सन्ति । श्रेष्ठी धनं लिप्सुरस्ति । ललितः प्रश्नं पिपृच्छिषुरस्ति । भूपः शत्रून् जिगीषुरस्ति । शिशवः नाट्यं दिदृक्षवः सन्ति । सुशीलः फलानि बुभुक्षुरस्ति । अहं गुरोः वचनं शुश्रूषुरस्मि । मम ध्यानस्य चिकीर्षा वर्तते । तातस्य पुत्रस्य निनीषा विद्यते । श्रमिकस्य धनस्य लिप्सा अस्ति । रोगिनः भोजनस्य जिघत्सा वर्तते ।

संस्कृत में अनुवाद करो

ललित अपने गांव जाने का इच्छुक है । मोहन संस्कृत पढने का इच्छुक है । सोहन किसी को कुछ भी देने का इच्छुक नहीं है । योगक्षेमवर्ष में साधु और साध्वियां अप्राप्त को प्राप्त करने के इच्छुक हैं । विद्यार्थी शिक्षक से प्रश्न पूछने का इच्छुक है । विमला नये वस्त्र धारण करने की इच्छुक है । चंदन सिनेमा देखने का इच्छुक नहीं है । मुनि कर्मशत्रुओं को जीतने के इच्छुक हैं । बालक लड्डू खाने का इच्छुक है । मोहन ज्ञान ग्रहण करने का इच्छुक है । उसकी क्या करने की इच्छा है ? सुमंगला की संसार समुद्र को तैरने की इच्छा है । सुनील की साधु बनने की इच्छा है । चोर की सेठ का धन हरने की इच्छा है । श्रावकों की प्रवचन सुनने की इच्छा है । युवक तत्व जानने के इच्छुक हैं । साधु संसार समुद्र को तैरने के इच्छुक हैं । राजा दुष्ट को मारने का इच्छुक है । *वैज्ञानिकों की गूढ रहस्यों को जानने की इच्छा है । जिनेश की वस्त्र धारण करने की इच्छा है ।*

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
चिकीर्षा, तितीर्षा, विवक्षा, जिघृक्षुः, जिगीषुः, विवत्सुः ।

२. अ प्रत्यय करने वाला कौनसा सूत्र है ?

३. उ प्रत्यय के योग में कौनसी विभक्ति होती है ?

४ नीचे लिखे शब्द किन प्रत्ययों के हैं ?
प्रशंसा, जिहीर्षुः, मीमांसा, भिक्षुः, पुत्रकाम्या, आशंसुः, कण्डूया, चिकीर्षुः, जिघत्सा ।

५. नीचे लिखे वाक्यों को अ प्रत्यय में बदलो—

अहं ग्रामं जिगमिषुरस्मि । सः पुस्तकं पिपठिषुरस्ति । किं ते धनं जिहीर्षवः सन्ति ? वयं चित्रं दिदृक्षवः स्मः ।

६. हिंदी में अनुवाद करो—

साम्प्रतं अहं न बुभुक्षुरस्मि । विनोदः किं जिघृक्षुरस्ति ? गजेन्द्रः नगरे विवत्सुरस्ति । साधवः तत्वं बुभुत्सवः सन्ति । किं युष्माकं वस्तुनः निनीषा चकास्ति ?

पाठ ५८ : यङ्प्रत्यय

शब्दसंग्रह (यङ्प्रत्यय के रूप)

बोभूयते (भू) बार-बार होता है। जंगम्यते (गम्) बार-बार जाता है। जाज्वल्यते (ज्वल्) बार-बार जलता है। पापच्यते (पच्) बार-बार पकाता है। अटाट्यते (अट्) बार-बार घूमता है। अरार्यते (ऋ) बार-बार पाता है। जाजायते (जनी) बार-बार उत्पन्न होता है। लोलुप्यते (लुप्) बार-बार लुप्त होता है। सासद्यते (सद्) बार-बार जाता है। नरीनृत्यते (नृत्) बार-बार नाचता है। पेपीयते (पां) बार-बार पीता है। जेघ्नीयते (हन्) बार-बार मारता है। चेचीयते (चि) बार-बार चयन करता है। वावश्यते (वश्) बार-बार शोभित होता है। वावाञ्छ्यते (वाछि) बार-बार चाहता है। तात्यज्यते (त्यज्) बार-बार छोडता है। चाखाद्यते (खाद्) बार-बार खाता है। जागद्यते (गद्) बार-बार बोलता है। दरीदृश्यते (दृश्) बार-बार देखता है। शाशस्यते (शास्) बार-बार शासन करता है। रारक्ष्यते (रक्ष्) बार-बार रक्षा करता है। तेष्ठीयते (ष्ठां) बार-बार बैठता है। नंनम्यते (नम्) बार-बार झुकता है। जेहीयते (ओहाक्) बार-बार छोडता है। जाहास्यते (हस्) बार-बार हंसता है।

धातु—भू धातु के यङ्प्रत्यय के रूप याद करो (देखो परिशिष्ट ३)

यङ्प्रत्यय

यङन्त में यङ् प्रत्यय आता है। आत्मने पद होता है और प्रत्यय से पहले इट् आ जाता है। यङ्प्रत्यय सन् की तरह द्वित्व होता है, पर सब धातुओं से नहीं। प्रत्यय पृथक्-पृथक् धातुओं से भिन्न-भिन्न अर्थों में आता है।

नियम ५१४—(हसादेरेकस्वराद् ४।१।५) हसादि और एक स्वर वाली धातुओं से अधिक या बार-बार के अर्थ में यङ् प्रत्यय विकल्प से होता है। (आच्चानीगादेर्यङः ४।१।१०२) से पूर्व को आकार और गुण होता है। पच्-पापच्यते। भू—बोभूयते।

नियम ५१५—(अटयर्त्यशूर्णुसूत्रिमूत्रिसूचिभ्यः ४।१।६) अटि आदि धातुओं से अधिक या बार-बार के अर्थ में यङ् प्रत्यय होता है। अटि—अटाट्यते। इर्यति ऋच्छति वा—अरार्यते। अश्नुते अश्नाति वा—अशाश्यते। ऊर्णु—प्रोर्णोनूयते। सूत्रण्—सोसूत्र्यते। मूत्रण्—मोमूत्र्यते सूचण्—

सोसूच्यते ।

नियम ५१६—(गत्यर्थाद् भावस्य कौटिल्ये ४।१।७) भाव (क्रिया) की कुटिलता के अर्थ में गति अर्थ वाली धातुओं से यङ् प्रत्यय होता है। (मुगतो नमस्य ४।१।१०५) सूत्र से नम अंतवाली धातु के पूर्व के अकार को मुक् का आगम हो जाता है और म् का अनुस्वार हो जाता है। कुटिलं गच्छति = जंगम्यते, चंक्रम्यते ।

नियम ५१७—(लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो गर्हायाम् ४।१।८) लुप आदि धातुओं से क्रिया की गर्हा के अर्थ में यङ् प्रत्यय होता है। गर्हितं लुम्पति—लोलुप्यते । सद्—सासद्यते । चर्—चंचूर्यते । जप्—जंजप्यते । गृ—जेगिल्यते ।

नियम ५१८—(जपजभदहदशभंजपशाम् ४।१।१०६) जप आदि धातुओं के पूर्व अकार को मुक् का आगम होता है। जभ्-जंजभ्यते । दह्—दंदह्यते । दश्—दंदश्यते । भज्—बंभज्यते । पश्—पंपश्यते ।

यङन्त के रूप बनाने के नियम

(वञ्चस्रंसध्वंसभ्रंशकसपतपदस्कन्दो नीक्—४।१।१०४) वञ्च्, स्रंस्, ध्वंस्, भ्रंश्, कस्, पत्, पद्, आदि धातुओं से पूर्व में 'नीक्' का आगम होता है। वञ्च्—वनीवच्यते । स्रंस—सनीस्रस्यते । ध्वंस्—दनीध्वस्यते । भ्रंश्—बनीभ्रश्यते । कस् = चनीकस्यते (बार-बार जाता है) । पत्—पनीपत्यते । पद्— पनीपद्यते । स्कन्द्—चनीस्कद्यते ।

नियम ५१९—(ईर्हसेऽप्यपि क्ङित्यशिति ४।१।५७) अपित् दा, धा, स्था, मा, गा, पिब, हा इन धातुओं को 'ई' हो जाता है, यप् को छोडकर हस आदि वाला कित्, ङित् अशिति प्रत्यय आगे होने पर । दा—देदीयते । धा—देधीयते । सा—सेषीयते । ष्ठा—तेष्ठीयते । मा—मेमीयते । गा (गै)—जेगीयते । पा—पेपीयते । ओहांक्—जेहीयते ।

नियम ५२०—(ऋत्वतां रीक् ४।१।१०९) ऋकारवान् धातुओं को पूर्व में 'रीक्' का आगम होता है। (नृते र्यङि २।२।१०५) से नृत् के न को ण नहीं होता। नृत्—नरीनृत्यते। दृश्—दरीदृश्यते। प्रच्छ्—परीपृच्छ्यते। व्रश्च्—वरीवृश्च्यते। ग्रह्—जरीगृह्यते। संप्रसारण होने से ये धातुएं ऋकारवान् हो गई ।

नियम ५२१—(ऋतोरीः ४।१।५२) ऋकार अंतवाली धातुओं को 'री' आदेश होता है। कृ—चेक्रीयते । हृ—जेह्रीयते ।

नियम ५२२—(चायः की र्यङि ४।४।२६) चायृन् धातु को 'की' आदेश होता है। चेकीयते (बार-बार हिताहित का विचार करता है, बार-बार पूजा करता है) ।

नियम ५२३—(शयियि क्ङिति ४।१।६६) शीङ् धातु को शय् आदेश होता है कित् और ङित् संज्ञा वाला यकार आदि प्रत्यय परे होने पर। शाश्यते।

नियम ५२४—(घ्राध्मोर्यङि ४।१।५८) घ्रा, ध्मा के आ को ई हो जाता है। जेघ्रीयते। देध्मीयते।

नियम ५२५—(स्यमिव्येनोश्च यङि ४।४।१३) यङ् प्रत्यय परे होने पर स्यमु, व्यन् और ष्वप् को संप्रसारण होता है। स्यमु—सेसिम्यते। व्येंन्—वेवीयते। ष्वप्—सोषुप्यते।

प्रयोगवाक्य

रुग्णाः फलानि अशाश्यन्ते। मुनिः पात्राणि प्रोर्णोनूयते। मालाकारः पुष्पाणि सोसूत्र्यते। शिशुः कथं मोमूत्र्यते। दुर्जनः सोसूच्यते। साधवः अर्हं जंजप्यन्ते। प्रमादेन तस्याः वस्त्राणि दंदह्यन्ते। आपणिकः ग्राहकान् वनीवच्यते। इदं नगरं सनीस्रस्यते, दनीध्वस्यते, बनीभ्रश्यते वा। वर्षर्तौ नीरं पनीपत्यते। छात्रः गृहं पनीपद्यते। जननी पुत्र्यै वस्त्राणि देदीयते। नटः विविधरूपं देधीयते। बालः दिवसे रात्रौ च सोषुप्यते। लोहकारः धमनीं देध्मीयते।

संस्कृत में अनुवाद करो (यङ्प्रत्यय के रूपों का प्रयोग करो)

वर्षा ऋतु में वर्षा बार-बार होती है। सुशीला साध्वियों के स्थान पर बार-बार जाती है। जंगल में अग्नि बार-बार क्यों जलती है? रसोइया भोजन बार-बार पकाता है। चोर रात में बार-बार घूमता है। सीता कक्षा में इनाम बार-बार पाती है। खेतों में घास बार-बार उत्पन्न होता है। सोहन की कॉपी बार-बार लुप्त होती है। मोर बार-बार नाचता है। शीला पानी बार-बार पीती है। सेना शत्रुओं को बार-बार मारती है। जनता नेता का बार-बार चयन करती है। रात्रि में चन्द्रमा बार-बार शोभित होता है। बालक दूध बार-बार पीता है। राजा शत्रु को पकडकर उसे बार-बार छोडता है। है। विवाह के समय स्त्रियां गीत बार-बार- गाती हैं। छात्र अध्यापक से प्रश्न बार-बार पूछता है। सोहन वृक्षों को बार-बार काटता है। शिष्य गुरु से ज्ञान बार-बार ग्रहण करता है। चोर मनुष्यों का धन बार-बार हरता है।

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—

अये! कथमद्य उदासीन इवात्र तेष्ठीयसे। धूर्ताः नंनम्यन्ते। अरे! कथं अपार्थकं जाहास्यसे। भाग्यशालिनः सर्वत्र सत्कारं लालभ्यन्ते। मेघागमं विलोक्य मयूराः नरीनृत्यन्ते। रात्रौ वृद्धः मोमूत्र्यते। साध्व्यः प्रज्ञागीतं

जेगीयन्ते। बालः पुष्पं जेघ्रीयते। रुग्णः शाश्यते। तातः पुत्रं दरीदृश्यते।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।
चाखाद्यते, देदीयते, जेहीयते, पेपीयते, सोषुप्यते, जंजप्यते, जंगम्यते, लोलुप्यते, चंचूर्यते, सोसूच्यते।

३. यङ्प्रत्यय किन-किन धातुओं से किन-किन अर्थों में होता है, बताओ ?

४. रीक्, नीक्, री और मुक् का आगम किन-किन धातुओं से होता है ?

पाठ ५९ : यङ्लुगन्त

शब्दसंग्रह

बोभवीति (भू) बार-बार होता है। पापेति, पापाति (पा) बार-बार पीता है। जाघ्रेति, जाघ्राति (घ्रा) बार-बार सूंघता है। तास्थाति (ष्ठा) बार-बार बैठता है। जेजयीति, जेजेति (जि) बार-बार जीतता है। स्मरीति, स्मर्ति (स्मृ) बार-बार याद करता है। तातर्ति, तातरीति (तॄ) बार-बार तैरता है। दाध्येति, दाध्याति (ध्यै) बार-बार चिंतन करता है। जागेति, जागाति (गै) बार-बार गाता है। शोशोक्ति (शुच्) बार-बार शोक करता है। लोलुञ्चीति (लुञ्च्) बार-बार लोच करता है। वावाञ्छीति (वाञ्छि) बार-बार चाहता है। वाव्रजीति, वाव्रजति (व्रज्) बार-बार जाता है। तात्यजीति, तात्यक्ति (त्यज्) बार-बार छोडता है। पापठीति, पापट्टि (पठ्) बार-बार पढता है। चेक्रीडीति, चेक्रीट्टि (क्रीड्) बार-बार खेलता है। बम्भणीति, बम्भण्टि (भण्) बार-बार कहता है। चाखादीति, चाखात्ति (खाद्) बार-बार खाता है। जागदीति, जागत्ति (गद्) बार-बार कहता है। लालपीति, लालप्ति (लप्) बार-बार कहता है। दादधीति, दादद्धि (धा) बार-बार धारण करता है। चर्कर्ति, चरिकर्ति, चरीकर्ति (कृ) बार-बार करता है।

धातु—भू धातु के यङ्लुगन्त के रूप याद करो। (देखो परिशिष्ट ३)

यङ्लुगन्त

यङ्लुगन्त में यङ्प्रत्यय ही आता है पर उसका लोप हो जाता है। उसके साथ तिबादि, यादादि, तुबादि, दिवादि प्रत्ययों में हस आदि पित् प्रत्ययों से इट् बहुल (कहीं विकल्प से) हो जाता है। यङ्लुगन्त में रूप परस्मैपद में चलते है।

नियम ५२६—(सन् यङश्च ४।१।७४) इस सूत्र मे धातु द्वित्व हो जाती है। भू—बोभोति, बोभवीति। बोभूयात्। बोभोतु, बोभवीतु। अबोभोत्, अबोभवीत्। अबोभोत्, अबोभोताम्, अबोभूवु.। बोभवाञ्चकार, बोभूयात्, बोभविता, बोभविष्यति, अबोभविष्यत्। नाथ्—नानाथीति, नानात्ति। धा—दादधीति, दादद्धि।

नियम ५२७—(रुग्रिकौ च लुकि ४।१।११०) ऋकारवान् धातुओं के यङ् का लुक् और द्वित्व होने पर पूर्व को रुक्, रिक्, रीक् का आगम होता है। कृ—चर्कर्ति, चरिकर्ति। चर्करीति चरिकरीति, चरीकरीति।

नियम ५२८—(जनसनखनामाः ४।१३।४६) जन्, सन्, खन् इनके अंत को आ आदेश हो जाता है, ह और झस आदिवाला क्ङित् प्रत्यय आगे हो तो। जन्—जंजाहि। सन्—षणुनव् दाने, वन् षन् संभक्तौ वा संसाहि। खन्—चंखाहि।

प्रयोगवाक्य

मानवः सुखं वावञ्छीति, दुःखं न। वीरेन्द्रः पद्यानि स्मरीति। माता बहिर्गतं पुत्रं स्मर्ति। कनकमाला विदेशं वाव्रजीति। सीमा पाठं पापठीति। साध्व्यः प्रेक्षागीतं जागन्ति। बालकाः चेक्रीडन्ति। गुरुः शिष्यं पठितुं जागदीति लालपीति वा। शिष्यः दुग्धं पापेति। वणिक् धनमर्जितुं विदेशं जागमीति। मनोहरः नवीनानि वस्त्राणि दादधीति दादद्धि वा। मनोरमः एतद् कार्यं चर्कर्ति, चरिकर्ति, चरीकर्ति वा।

संस्कृत में अनुवाद करो (यङ्लुगन्त के प्रयोग करो)

वर्षा बार-बार होती है। बालक बार-बार पानी पीता है। सुरेन्द्र बार-बार फूल सूंघता है। कमला बार-बार यहां बैठती है। राजा बार-बार शत्रुओं को जीतता है। बहिन भाई को बार-बार याद करती है। नाविक नौका से नदी को बार-बार पार करता है। मुनि प्रभु का बार-बार चिंतन करते हैं। स्त्रियां यह गीत बार-बार गाती हैं। माता पुत्र का बार-बार शोक करती है। मुनि लोच बार-बार करते हैं। बालक मिष्टान्न बार-बार चाहता है। मोहन बहिन के घर बार-बार जाता है। छात्र यह पुस्तक बार-बार पढता है। लडकी बार-बार खेलती है। आचार्यश्री संतों को यह बात बार-बार कहते हैं। पिताजी बार-बार नहीं खाते। राजा ने कहा—मुझे यह बात बार-बार कहो।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—स्मर्ति, जेजेति, जागाति, तार्ति, जाघ्राति, तात्यक्ति।

२. हिंदी में अनुवाद करो—
तस्य उदरे पीडा कथं बोभवीति ? पिपासितः नीरं पापेति। शिष्यः गुरुं स्मरीति। शिशुः मातुः पार्श्वे वाव्रजीति। तातः हिताय पुत्रं जागदीति। निषिद्धेपि सः एतद् कार्यं चर्कर्ति। बालकः धूल्यां चेक्रीडीति।

३. निम्नलिखित धातुओं के यङ्लुगन्त के रूप बताओ।
ध्यै, त्यज्, धा, वाछि, गै।

पाठ ६० : नामधातु

शब्दसंग्रह

अगुरु (अगर) । आकरकरहा (पुं) अकरकरा । अर्कः (आक) । अभ्रकं, अमलम् (अभ्रक) । यवनिका, दीप्यः (अजवायन) । अमरवल्ली, दुस्पर्शा (अमरबेल) । आरावधः (अमलतास) । अश्वगन्धा (असगंध) । ईषद्गोलम् (इसबगोल) । कंपिल्लः, कर्कशः (कमीला वृक्ष) । गंधकः (गंधक) । खसबीजम्, सुबीजः (खसखस) । गुडूची, कुंडलिनी (गिलोय) । गुग्गुलः (गुग्गुल) । गोरक्षकः (गोखरू) ।

नामधातु (नियम)

धातु से कृदन्त के प्रत्यय लगाकर शब्द या नाम बनाया जाता है। वैसे ही नाम से प्रत्यय लगाकर धातु बनाई जाती है, उसे नामधातु कहते हैं। नाम से धातु बनाने के लिए अनेक प्रत्यय लगते हैं।

नियम ५२९—(द्वितीयायाः काम्यः ४।१।१७) द्वितीयान्त नाम कर्म-रूप में हो तो उससे इच्छा के अर्थ में काम्य प्रत्यय होता है। पुत्रं इच्छति = पुत्रकाम्यति। स्वःकाम्यति।

नियम ५३०—(अमाव्ययात् क्यच्च ४।१।१८) अमकारान्त अव्यय-रहित नाम कर्म रूप में हो तो इच्छा के अर्थ में क्यच् और काम्य प्रत्यय होता है। (क्यचि ४।१।६१) इस सूत्र से क्यच् प्रत्यय परे होने पर अवर्ण को ईकार हो जाता है। पुत्रं इच्छति = पुत्रीयति। एवं नाव्यति।

नियम ५३१—(असुक् च लौल्ये ४।१।६३) लौल्ये (लोलुपता के अर्थ में) नाम से क्यच् प्रत्यय होने पर असुक् और सुक् का आगम होता है। दधि भक्षितुं इच्छति = दध्यस्यति, दधिस्यति। मध्वस्यति, मधुस्यति।

नियम ५३२—(आधाराच्चोपमानादाचारे ४।१।१९) अमकारान्त और अव्यय रहित शब्द उपमानवाची द्वितीयान्त और सप्तम्यन्त हो तो आचरण करने के अर्थ में क्यच् प्रत्यय होता है। पुत्रमिव आचरति—पुत्रीयति छात्रम्। (छात्र को पुत्र की तरह मानता है)। वस्त्रीयति कम्बलम्। प्रासादे इव आचरति = प्रासादीयति कुट्याम्। पर्यंकीयति मञ्चके।

नियम ५३३—(कर्तुः क्विब् गल्भक्लीबहोडात्तु ङित् ४।१।२०) कर्तावाची शब्द की उपमा दी जाए उन शब्दों से आचार अर्थ में क्विप् प्रत्यय होता है। गल्भ, क्लीब् और होड शब्दों से ङित्क्विप् (आत्मनेपद) होता है।

अश्व इव आचरति = अश्वति । गर्दभति, राजनति, तोयति, स्रजति । गल्भते क्लीबते, होडते ।

नियम ५३४—(क्यङ् ४।१।२१) उपमानवाची कर्ता से आचरण अर्थ में क्यङ् प्रत्यय विकल्प से होता है । अश्वायते, हंसायते, गर्दभायते, गल्भायते, क्लीबायते, होडायते ।

नियम ५३५—(वा सो लोपश्च ४।१।२२) उपमानवाची कर्ता सकारान्त हो तो आचार अर्थ में क्यङ् प्रत्यय विकल्प से होता है और अन्तिम स् का लोप विकल्प से होता है । पयायते, पयस्यते । सरायते, सरस्यते ।

नियम ५३६—(ओजोऽप्सरसः ४।१।२३) ओजस् और अप्सरस् के स् का लोप नित्य होता है । ओजायते, अप्सरायते ।

नियम ५३७—(च्व्यर्थे भृशादेर्हसस्य ४।१।२४) भृश आदि शब्द च्वि अर्थ में हो तो क्यङ् प्रत्यय विकल्प से होता है और अन्त्य हस का लोप हो जाता है । अभृशो भृशो भवति = भृशायते । चपलायते, पण्डितायते, उन्मनायते, शीघ्रायते, उत्सुकायते ।

नियम ५३८—(वाष्पोष्मधूमफेनादुद्वमने ४।१।२८) वाष्प, ऊष्म, धूम, फेन—ये शब्द कर्मरूप में हो तो उद्वमति (निकालना) के अर्थ में क्यङ् प्रत्यय विकल्प से होता है । वाष्पं उद्वमति = वाष्पायते । ऊष्मायते, धूमायते, फेनायते ।

नियम ५३९—(सुखादेरनुभवे ४।१।२९) सुख, दुःख, अलीक, कृपण आदि शब्दों से अनुभव अर्थ में क्यङ् प्रत्यय विकल्प से होता है । सुखं अनुभवति = सुखायते । दुःखायते, अलीकायते, कृपणायते ।

नियम ५४०—(तपसः क्यच् ४।१।३१) तप शब्द कर्म रूप में हो तो करण अर्थ में क्यच् प्रत्यय होता है । तपः करोति = तपस्यति ।

नियम ५४१—(ञिज् बहुलं करणादिषु ४।१।३७) करण आदि अर्थों में नाम से ञिच् प्रत्यय होता है, प्रयोग के अनुसार । मुण्डं करोति = मुण्डयति छात्रम् । लवणयति सूपम् । पटुमाचष्टे = पटयति । प्रियमाचष्टे = प्रापयति । स्थिरमाचष्टे = स्थापयति । वृक्षं रोपयति = वृक्षयति । कृतं गृह्णाति = कृतयति । रूपं दर्शयति = रूपयति । शीलेन आचरति = शीलयति ।

प्रयोगवाक्य

तोयत्यग्निरपि स्रजत्यहिरपि व्याघ्रोपि सारङ्गति ।
व्यालोप्यश्वति पर्वतोप्युपलति क्ष्वेडोपि पीयूषति ॥
विघ्नोप्युत्सवति प्रियत्यरिरपि क्रीडातडागत्यपां-
नाथोपि स्वगृहत्यटव्यपि नृणां शीलप्रभावाद् ध्रुवम् ॥१॥

हिमति महिमाम्भोजे चण्डानिलत्युदयाम्बुदे ।
द्विरदति दयारामे क्षेमक्षमाभृति वज्रति ॥
समिधति कुमत्यग्नौ कन्दत्यनीतिलतासु यः ।
किमभिलषता श्रेयः श्रेयः स निर्गुणसंगमः ॥२॥

इयं महिला अप्सरायते । छात्रः पण्डितायते । अग्निः धूमायते । साधुः सदा सुखायते । नारकः दुःखायते । गुरुः मुण्डयति शिष्यम् । माली वृक्षयति । श्यामः मध्वस्यति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

महेन्द्र बाजार से अगर, अकरकरा, आक, अभ्रक और गंधक किसके लिए लाया है ? अजवायन खाने से पेट की वायु नष्ट होती है । यह अमरबेल है । अमलतास का क्या उपयोग है ? असगन्ध शक्तिप्रद होता है । इषबगोल कब्जियत को दूर करता है । खसखस ठंडा होता है । बुखार को दूर करने के लिए वैद्य गिलोय भी देते हैं । गुग्गुल वायु को दर्द को नष्ट करता है ।

नामधातु का प्रयोग करो

मदन धन चाहता है । माणक पुत्र चाहता है । सुव्रत दही खाना चाहता है । प्रताप नौकर को भी स्वजन की तरह मानता है । भिखारी अपनी झोपडी को भी महल की तरह मानता है । शील के प्रभाव से अग्नि भी पानी की तरह हो जाती है । यह व्यक्ति गदहे की तरह आचरण करता है । यह पक्षी हंस की तरह आचरण करता है ।यह दूध पानी की तरह है । साध्वी तप करती है । मृदुभाषी जनों के शत्रु भी मित्र जैसे बन जाते हैं ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
राजनति, सरायते, ओजायते, उत्सुकायते, तृणायते, सुखायते, दुःखायते ।

२. हिंदी में अनुवाद करो—
महेन्द्रः मातुलाय यवनिकां ददाति । केचित् ईषद्गोलं दुग्धेन सह, केचित् नीरेण साकं, केचिच्च दध्ना समं खादन्ति । बालः मध्वस्यति । उष्ट्रः गर्दभति । इदं गोरसं पयस्यते । इयं रमणी अप्सरायते । काकोऽपि हंसायते ।

३. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
आक, अभ्रक, अजवायन, खसखस, गुग्गुल, गोखरू ।

४. अनुभव अर्थ में किन-किन शब्दों से नामधातु बनती है ?

५. नामधातु बनाने के लिए करण आदि अर्थ कौन-कौन से हैं ?

६. कर्तावाची अकारान्त और सकारान्त शब्दों की उपमा दी जाए उन शब्दों से आचार अर्थ में नामधातु कैसे बनती है ?

७. अकारान्त शब्दों से इच्छा के अर्थ में और द्वितीयान्त शब्दों से आचरण के अर्थ में नाम धातु का क्या रूप बनता है, उदाहरण सहित लिखो ।

पाठ ६१ : पदव्यवस्थाप्रक्रिया (१)

शब्दसंग्रह

गोरोचना, रोचना (गोरोचन) । किरातकः, निद्रारी (चिरायता) । लज्जालुः, लज्जा (छुईमई) । जयपालः, सारकः (जमालगोटा) । यवक्षारः (जवाखार) । जातिफलं, कोपकम् (जायफल) । जातिपत्री, जातिकोषा (जावित्री) । ताम्रकूटः, तमाकूः, (तमाखु) । कोकिलाक्षः, क्षरः (तालमखाना) । नस्यम् (नसवार) । तीक्ष्णसारः (तेजाब) । धुस्तूरः, मदनः (धतूरा) । नागरमुस्ता, चूडाला (नागरमोथा) । तुत्थम् (नीलाथोथा) । सादरः, नरसादरः (नोसादर) ।

आत्मनेपद परस्मैपद

उपसर्ग के संयोग से और कहीं अर्थों के कारण धातुओं के पदों का परिवर्तन हो जाता है। परस्मैपद आत्मनेपद हो जाता है और आत्मनेपद परस्मैपद हो जाता है ।

इसके कुछ नियम ध्यातव्य हैं—

नियम५४२—(निविशः ३।३।२१) नि उपसर्गपूर्वक विश् धातु आत्मनेपद हो जाती है। निविशते ।

नियम ५४३—(व्यवपरिभ्यः क्रियः ३।३।२२) वि. अव, परि, उपसर्गपूर्वक क्री धातु आत्मनेपद हो जाती है। विक्रीणीते, अवक्रीणीते, परिक्रीणीते ।

नियम ५४४—(विपराभ्यां जेः ३।३।२३) वि और परा उपसर्गपूर्वक जि धातु आत्मनेपद हो जाती है। विजयते, पराजयते ।

नियम ५४५—(अनुपरिभ्यां च क्रीडः ३।३।२७) अनु, परि, आ उपसर्गपूर्वक क्रीड् धातु आत्मनेपद हो जाती है। अनुक्रीडते, परिक्रीडते, आक्रीडते ।

नियम ५४६—(शप उपालंभे ३।३।३२) शप् धातु उपालंभ के अर्थ में आत्मनेपद हो जाती है। मैत्राय शपते। अन्यत्र मैत्रं शपति (आक्रोशति) ।

नियम ५४७—(विप्रसमवेभ्यः ३।३।३४) वि, प्र, सं, अव उपसर्गपूर्वक स्था धातु आत्मनेपद हो जाती है । वितिष्ठते, प्रतिष्ठते, संतिष्ठते, अवतिष्ठते ।

नियम ५४८—(उपात्स्थः ३।३।७४) उप उपसर्गपूर्वक स्था धातु

अकर्मक हो तो आत्मनेपद हो जाती है। भोजनकाले उपतिष्ठते। अन्यत्र राजानं उपतिष्ठति।

नियम ५४९—(आङ् स्पर्धायाम् ३।३।४०) आ उपसर्गपूर्वक ह्वयति धातु स्पर्धा के अर्थ में आत्मनेपद हो जाती है। मल्लो मल्लं आह्वयते। अन्यत्र गोपालः गां आह्वयति।

नियम ५५०—(वेः स्वार्थे ३।३।४९) वि उपसर्गपूर्वक क्रम् धातु स्वार्थ में आत्मनेपद हो जाती है। गजो विक्रमते।

नियम ५५१—(प्रोपादारंभे ३।३।५०) प्र उपसर्गपूर्वक क्रम् धातु आरंभ अर्थ में आत्मनेपद हो जाती है। भोक्तुं प्रक्रमते, भोक्तुं उपक्रमते (प्रारंभ करता है)। अन्यत्र प्रक्रामति (जाता है)।

नियम ५५२—(अनुपसर्गाद् वा ३।३।५१) उपसर्ग रहित क्रम् धातु विकल्प से आत्मनेपद होती है। क्रमते, क्रामति।

नियम ५५३—(अनुपसर्गाद् ज्ञः ३।३।८६) उपसर्गरहित ज्ञा धातु फलवति अर्थ में हो तो आत्मनेपद हो जाती है। गां जानीते। अन्यत्र परस्य गां जानाति।

नियम ५५४—(अवाद् गिरः ३।३।५४) अव उपसर्गपूर्वक गिर् धातु आत्मनेपद हो जाती है। अवगिरते।

नियम ५५५—(उपाद्यमः स्वीकारे ३।३।५८) उप उपसर्गपूर्वक यम् धातु स्वीकार अर्थ में आत्मनेपद हो जाती है। कन्यां उपयच्छते वरः।

नियम ५५६—(समः क्ष्णुवः ३।३।६८) सं उपसर्गपूर्वक क्ष्णु धातु आत्मनेपद हो जाती है। संक्ष्णुते शस्त्रम्।

नियम ५५७—(समो गमृच्छिप्रच्छिस्वरतिश्रुविदर्तिदृशः ३।३।७६) सं उपसर्गपूर्वक अकर्मक गम् आदि धातुएं आत्मनेपद हो जाती हैं। संगच्छते, संमृच्छते, संपृच्छते, संस्वरते, संश्रृणुते, संवित्ते, समृच्छते, समियृते, संपश्यते।

नियम ५५८—(अनोरकर्मकात् ३।३।७३) अनु उपसर्गपूर्वक वद् धातु अकर्मक हो तो आत्मनेपद हो जाती है। अनुवदते आचार्यस्य शिष्यः। अन्यत्र उक्तं अनुवदति।

नियम ५५९ (व्युदस्तपः ३।३।७८) वि, उत् उपसर्गपूर्वक तप् धातु आत्मनेपद हो जाती है। वितपते, उत्तपते वा रविः।

नियम ५६०—(व्यक्तवाचां सहोक्तौ ३।३।७१) मनुष्य आदि एक साथ स्पष्ट बोले तो वद् धातु आत्मनेपद हो जाती है। संप्रवदन्ते ग्राम्याः। संप्रवदन्ति कुक्कुटाः (व्यक्त वाणी नहीं)। चैत्रः वदति (सहोक्ति नहीं है)।

प्रयोगवाक्य

माता पुत्रं शपते। शिष्यः गुरुमुपतिष्ठति। गोपालः गां जानीते। भूपः

शत्रून् पराजयते। साधवः भोक्तुं प्रक्रमन्ते। श्यामः सीतामुपयच्छते। सा किं संपृच्छते। शिष्याः संप्रवदन्ते। गर्दभाः संप्रवदन्ति। मोहनः भोजनमव गिरते। रुग्णाय किरातकः न रोचते। ताम्रकूटं मा अद्धि। नस्यं मा जिघ्र। बालकाः जननीं कोकिलाक्षान् याचन्ति।

संस्कृत में अनुवाद करो

चिरायता कडवा होता है। सुरेन्द्र की मां ने बाजार से जमालगोटा, जवाखार, जायफल, जावित्री, नागरमोथा, नीलाथोथा और नोसादर मंगवाया है। तमाखु नुकसानप्रद होता है। बच्चे तालमखाना खाते हैं। नसवार नहीं सूंघना चाहिए। तेजाब से वस्तु जल जाती है। धतूरे के फल नहीं होता। सुशीला यहां बैठती है। माली बाजार में क्या बेचता है? शत्रु सेना को जीतता है। बालक आंगन में खेलता है। श्याम इस नगर में ठहरता है। वादी प्रतिवादी से विवाद करता है। तापस दुष्टों को श्राप देता है। साधक भोजन करना शुरू करता है। राजा कन्या को स्वीकार करता है। रमेश साधु के साथ जाता है। सूर्य तपता है। भेडें बोलती हैं।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
उपतिष्ठते, उपयच्छते, संतिष्ठते, जानाति, अनुवदते, अवगिरते।

२. नीचे लिखे रूपों का कारण बताते हुए शुद्धाशुद्धि करो।
शपति, शपते। उपतिष्ठति, उपतिष्ठते। विक्रामति, विक्रमते। जानीते, जानाति। विजयते, विजयति। निविशते, निविशति। संप्रवदन्ते, संप्रवदन्ति।

३. हिंदी में अनुवाद करो—
अस्मिन् ग्रामे कियन्तः जनाः ताम्रकूटं खादन्ति जिघ्रन्ति च। जननी बालकाय जातिफलं ददाति। सुरेन्द्रः निद्रारीं नेतुं कुत्र अगमत्? किं यूयं नस्यं जिघ्रथ? यः कष्टैः न पराजयते स एव अग्रे वर्धितुं शक्तोऽस्ति। प्रवचनसमये स कुत्र उपतिष्ठते?

४. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
जमालगोटा, जायफल, छुईमुई, तालमखाना, धतूरा, नागरमोथा।

५. परस्मैपदी धातु किन-किन उपसर्गों के योग से किस अर्थ में आत्मनेपदी होती है?

६. बिना उपसर्ग के कौनसी धातु कहां आत्मनेपदी होती है?

पाठ ६२ : पदव्यवस्थाप्रक्रिया (२)

शब्दसंग्रह

सूर्यक्षारः (शोरा) । स्वर्जिका, स्वर्जिः (साजी) । शुक्लाजाजी (सफेद जीरा) । सुधामूली, जीवनी (सालममिसरी) । सर्वक्षारः (साबुन) । हिंगुलम्, चित्रांगम् (सिंगरफ) । शौक्तिकम् (सिरका) । अंजनम् (सुरमा) । मधुरा, मधुरिका (सौंफ) । हिंगु, उग्रगंधः (हींग) । जीरकः (जीरा) । धान्यकम् (धनिया) । शुण्ठी (सोंठ) । हरिद्रा (हल्दी) । लवणम् (नमक) । सैन्धवम् (सेंधा नमक) । लवङ्गम् (लौंग) । दारुत्वचम् (दालचीनी) । त्रिपुटा (छोटी इलायची) । खादिरः (कत्था) । चूर्णः (चूना) । आर्द्रकम् (अदरक)। मरिचम् (मिर्च) ।

परस्मैपद

नियम ५६१—(अनुपराभ्यां कृनः ३।३।९२) अनु, परा उपसर्ग पूर्वक कृ धातु परस्मैपद होती है । अनुकरोति, पराकरोति ।

नियम ५६२—(अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ३।३।९३) अभि, प्रति, अति उपसर्गपूर्वक क्षिप् धातु परस्मैपद होती है । अभिक्षिपति, प्रतिक्षिपति, अतिक्षिपति ।

नियम ५६३—(व्याङ्परिभ्यो रमः ३।३।९६) वि, आङ्, परि उपसर्गपूर्वक रम् धातु परस्मैपद होती है । विरमति, आरमति, परिरमति ।

नियम ५६४—(वोपात् ३।३।९७) उप उपसर्गपूर्वक रम् धातु विकल्प से परस्मैपद होती है । उपरमति उपरमते वा भार्याम् ।

नियम ५६५—(विवादे वा ३।३।७२) विवादरूप में एक साथ अनेक स्पष्ट बोलते हों तो वद् धातु विकल्प से परस्मैपद होती है । विप्रवदन्ते वैद्याः, विप्रवदन्ति वैद्याः ।

नियम ५६६—(प्रलम्भने गृधिवञ्चेः ३।३।८०) गृध्, वञ्च् धातु ञिन्नन्त में हो और प्रलंभन (ठगना) के अर्थ में हो तो आत्मने पद होती है । बटुं गर्धयते वञ्चयते वा । अन्यत्र गर्धयति श्वानम् ।

नियम ५६७—(मिथ्यया कृनोऽभ्यासे ३।३।८४) बार बार मिथ्या करने के अर्थ में कृ धातु का ञिन्नन्त रूप (कारयति) आत्मने पद हो जाता है । पदं मिथ्या कारयते । पदं साधु कारयति (यहां मिथ्या नहीं है) । सकृत् पदं मिथ्या कारयति (यहां बार-बार नहीं है) ।

नियम ५६८—(स्मृदृशः सनः ३।३।६१) स्मृ और दृश् धातु सन्नन्त में हो तो आत्मने पद होती है। सुष्मूर्षते पूर्ववृत्तम्। दिदृक्षते मुनिम्।

नियम ५६९—(अग्निन्तकर्मकप्राणिकर्तृकाज्जिनः ३।३।१०२) अग्निन् अवस्था में धातु अकर्मक हो, प्राणी कर्ता हो तो वह धातु जिन्नन्त में परस्मैपद हो जाती है। आस्ते चैत्रः=आसयति चैत्रम्। कारयति धर्मं (कृ धातु सकर्मक है)। शोषयते व्रीहिन् आतपः। यहां कर्ता प्राणी नहीं है।

नियम ५७०—(चल्याहारार्थबुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुश्रुभ्यः ३।३।१०३) चलि (कम्पन) और आहार—इन अर्थवाली धातुएं, बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु, स्रु—ये सभी धातुएं जिन्नन्त में हो तो परस्मैपद हो जाती हैं। चलयति, कम्पयति, चोपयति वा शाखाम्। निगारयति, भोजयति, आशयति वा चैत्रं अन्नम्। रविः पद्मं बोधयति। योधयति काष्ठानि। नाशयति पापम्। जनयति पुण्यम्। सूत्रं अध्यापयति शिष्यम्। प्रावयति राज्यम् (प्रापयति)। द्रावयति लोहम्। स्रावयति तैलम्।

नियम ५७१—(प्राद् वहः ३।३।९४) प्र उपसर्गपूर्वक वह् धातु परस्मैपद होती है। प्रवहति।

प्रयोगवाक्य

एकः मेषः अन्यं मेषं अनुकरोति। दुष्टः सज्जनं अभिक्षिपति। शीला सखिभिः सार्द्धं उद्याने आरमति। विद्वान्सः कथं विप्रवदन्ते? दस्युः सभ्यं वञ्चयते। सा मम वार्तां मिथ्याकारयते। मातुलानी मुनिं दिदृक्षते। धनञ्जयाय धान्यकं रोचते। शुण्ठी उष्णा भवति। केचित् लवणमयं शाकं न जिघत्सन्ति। सा दुग्धे हरिद्रां नयति। शीला लवङ्गं न अश्नाति।

संस्कृत में अनुवाद करो

साजी में खार होता है। भाभी ने सुरेश से सफेद जीरा, लाल मिसरी, सिंगरफ, सिरका मंगाया था। साबुन किससे बनती है? सुरमा आंख के लिए लाभदायक है। क्या तुम सोंफ खाते हो? इस सब्जी में हींग नहीं है। शिष्य गुरु का अनुकरण करता है। नौकर मालिक पर आक्षेप करता है। वही सच्चा मुनि है जो आत्मा में रमण करता है। बच्चे क्यों विवाद करते हैं? रमेश भाभी को ठगता है। अविनीत शिष्य बार-बार आचार्य के कथन को झूठा करता है। मैं प्रतिदिन साधुओं को देखना चाहता हूं। मंत्रीमुनि ने आचार्य श्री को बलात् पट्ट पर बैठाया। ऊंट शाखा को कंपाता है। माता पुत्र को मिठाई खिलाती है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—

पराकरोति, प्रतिक्षिपति, सुष्मूर्षते, विप्रवदन्ति, भोजयति, बोधयति।

२. हिंदी में अनुवाद करो—

मूढाः मुधा विप्रवदन्ते । जननी पुत्रं दिदृक्षते । छात्रः पाठं सुष्मूर्षते । सा अंजनं याचते । महेशः मधुरिकां, लवङ्गं, त्रिपुटां च भक्षति । मूलचंदाय समरिचं शाकं न रोचते । श्यामसुंदरः खादिरं चूर्णं च नेतुं बहिर्याति ।

३. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—

साजी, साबुन, हींग, दालचीनी, जीरा, कत्था ।

४. नीचे लिखी धातुएं किन-किन उपसर्ग के साथ परस्मैपद होती हैं ?

कृ, रम्, क्षिप्, वह्, वद् ।

५. सन्नन्त रूप वाली और ञिन्नन्त रूप वाली कौनसी धातु परस्मैपद होती है ?

पाठ ६३ : विभक्त्यर्थप्रक्रिया (१)

शब्दसंग्रह

पर्पटः (पितपापडा) । कोलफलम् (पिपलामूल) । खसफलम् (पोस्त) । स्फटिकरि, स्फटिका (फिटकडी) । वंशलोचना (वंशलोचन) । भंगा, विजया, मातुली (भांग) । मंजिष्ठा, तुवरा (मजीठा) । पथिका, मधुरिका (मुनक्का) । तिमिरः, कोकदंता (मेंहदी) । सिक्थकम्, मयनम् (मोम) । रसाञ्जनम् (रसौत) । रालः (राल) । अरिष्ठकः (रीठा) । लाक्षा, जतुका (लाख) ।

विभक्त्यर्थप्रक्रिया

वर्तमान, भूत और भविष्यत् काल की क्रियाओं के लिए तिबादि, यादादि आदि १० विभक्तियां हैं (देखो पाठ ६) । कुछ शब्दों के योग में विभक्तियों का काल बदल जाता है । वाक्य रचना की सुविधा के लिए अथवा ज्ञान की विशिष्टता के लिए इनका प्रयोग किया जाता है ।

नियम ५७२ (स्मे च तिबादिः ४।४।६६) अनद्यतनभूत (दिबादि) परोक्ष (णबादि) अपरोक्ष (द्यादि) के अर्थ में स्म और पुरा शब्द के योग में तिबादि विभक्ति होती है । स्म, पुरा धातु के आगे, पीछे कहीं लगाया जा सकता है । भवति स्म महावीरः (महावीर हुए थे) । वसति इह पुरा मुनिः (यहां मुनि रहते थे) ।

नियम ५७३—(भूतेऽनद्यतनेऽयदिस्मृत्यर्थे स्यत्यादिः ४।४।५९) स्मृति अर्थ की धातु का पूर्वपद में प्रयोग हो, यत् शब्द का प्रयोग न हो तो अनद्यतनभूत अर्थ में स्यत्यादि विभक्ति होती है । साधो ! स्मरसि स्वर्गे स्थास्यामः (हे साधु ! याद है हम स्वर्ग में रहते थे) । इसी प्रकार स्मरसि के स्थान पर अभिजानासि, बुध्यसे, चेतयसे का प्रयोग हो सकता है । क्रिया में स्थास्यामः के स्थान पर वत्स्यामः, गमिष्यामः का प्रयोग किया जा सकता है ।

नियम ५७४—(कृताऽस्मृत्यतिनिह्नवयोर्णबादिः ४।४।६१) कृतकार्य की चित्त विक्षेप के कारण स्मृति न रहे या अतिनिह्नव का अर्थ गम्यमान हो तो अनद्यतनभूत के अर्थ में णबादि विभक्ति होती है । सुप्तोऽहं किल विललाप । किं कलिंगेषु ब्राह्मणो हतः ? नाहं कलिंगं जगाम ।

नियम ५७५—(परोक्षे हशश्वतो दिबादिश्च ४।४।६२) ह और शश्वत् का प्रयोग करने से अनद्यतनपरोक्ष के अर्थ में दिबादि और णबादि विभक्ति

होती है। इति ह अकरोत्, इति ह चकार। शश्वत् अकरोत्, शश्वत् चकार।

नियम ५७६—(अविवक्षिते ४।४।६४) अनद्यतन परोक्ष की विवक्षा न करने से दिबादि विभक्ति होती है। अभवत् सगरः राजा।

नियम ५७७—(पुरादौ द्यादिर्वा ४।४।६५) अनद्यतनभूत परोक्ष (णबादि) अनद्यतनभूत अपरोक्ष (दिबादि) के अर्थ में पुरा आदि उपपद में हो तो द्यादि विभक्ति विकल्प से होती है। पक्ष में अपनी-अपनी विभक्ति होती है। यानि दिबादि में दिबादि, णबादि अर्थ में णबादि। अवात्सुः इह पुरा साधवः। अवसन् इह पुरा साधवः। ऊषुरिह पुरा छात्राः। तदा अभाषिष्ट राघवः, तदा अभाषत राघवः, बभाषे राघवस्तदा।

प्रयोगवाक्य

भवति स्म आचार्यः कालुः। निवसामो पुरा वयमत्र। लक्ष्मण ! किमभिजानासि इमौ नुपूरौ सीतायाः स्तः। नाहं नाट्यगृहं जगाम। अगमत् रामः लंकायाम्। स शश्वद् अवदत्। आगमन् इह पुरा साधवः। अवदत्, अवादीत्, उवाद वा स पुरा भाषणम्। स्फटिका मलिनं जलं विमलीकरोति। विजयां पीत्वा जनाः अनर्गलं लपन्ति। स्त्रीभ्यः कोकदंता रोचते। ते प्रतिदिनं पथिकाः भुञ्जते।

संस्कृत में अनुवाद करो

रमा पितपापडा खाती है। सुरेन्द्र की मां प्रतिवर्ष पिपलामूल लेती है। सतीश को पोस्त अच्छा लगता है। यदि पानी को साफ करना है तो फिटकडी लाओ। होली में लोग भांग क्यों खाते हैं? पिप्पल भूख को बढाती है। बच्चे को मुनक्का किसने दी? कमला हाथ और पैरों में मेंहदी लगाती है। मोम गर्मी में पिघल जाता है। लाख का व्यापार जैन श्रावक के लिए वर्जनीय है।

विभक्त्यर्थ का प्रयोग करो

महासती सीता और राम कब हुए थे? इस कमरे में आचार्य श्री विराजे थे। यह हमारा छट्ठा जन्म है। जानते हो, हम दोनों कुलीन हैं। क्या मैं नींद में बोला था? उसने क्या किया था? राजा दिलीप हुए थे। सुनीला पहले इस मकान में रहती थी।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
पुरा, स्म, शश्वत्, ह।
२. तिबादि विभक्ति किसके योग में होती है?

३. अनद्यतनभूत के अर्थ में किस अर्थ में कौन-कौन सी विभक्ति होती है ?

४. अनद्यतनभूत के अर्थ में णबादि विभक्ति किस नियम से होती है ?

५. हिन्दी में अनुवाद करो—

पितामही कोलफलं कदा अभक्षत् ? छात्रः खसफलं खादति। ते मातुलीं न पिबन्ति। मयनेन भवान् किं करिष्यति ? ताः पिप्पलं वाञ्छन्ति। भवति स्म बुद्धः। अभवत् गणधरः गौतमः। अभक्षत् बालः मोदकम्। अपात् स दुग्धम्।

६. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—

फिटकडी, पोस्त, भांग, रसौत, राल, लाख, मोम।

पाठ ६४ : विभक्त्यर्थप्रक्रिया (२)

शब्दसंग्रह

आलूः (आलु) । रक्ताङ्गः (टमाटर) । गोजिह्वा (गोभी) । कलायः (मटर) । भिण्डकः (भिंडी) । टिण्डिशः (टिंडा) । अलाबुः (लौकी) । कूष्माण्डः (कद्दू) । गृञ्जनम् (गाजर) । मूलकम् (मूली) । श्वेतकन्दः (शलगम) । पालकी (पालक) । जालिनी (तोरई) । पटोलः (परवल) । कारवेल्लः (करेला) । कर्कटी (ककडी) । पनसम् (कटहल) । शदः (सलाद) । करमर्दकः (करौंदा) । तिन्तिडीकम् (इमली) ।

नियम

नियम ५७८—(ननौ पृष्टोक्तौ वर्तमानवत् ४।४।६७) प्रश्न के उत्तर में ननु शब्द उपपद में हो तो भूतकाल के अर्थ में तिबादि विभक्ति होती है । किं अकार्षीः तपः साधो ! ननु करोमि भोः । किं लेखं अलिखः ? ननु लिखामि ।

नियम ५७९—(यावत्पुरयोर्भविष्यति ४।४।६९) निपातशब्द यावत् और पुरा के योग में भविष्यति के अर्थ में तिबादि विभक्ति होती है । यावद् भुङ्क्ते । पुरा भुङ्क्ते ।

नियम ५८०—(कदाकर्ह्योर्वा ४।४।७०) कदा, कर्हि शब्द पूर्वपद में हो तो भविष्यति के अर्थ में तिबादि विभक्ति विकल्प से होती है । पक्ष में तादि, स्यत्यादि भी । कदा भुङ्क्ते । कदा भोक्ता, कदा भोक्ष्यते । कर्हि पठति, कर्हि पठिता, कर्हि पठिष्यति ।

नियम ५८१—(वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद् वा ४।४।७६) समीप का भूत और समीप का भविष्य के अर्थ में तिबादि विभक्ति विकल्प से होती है । कदा आगतोऽसि ? अयं आगच्छामि । कदा गमिष्यसि ? एष गच्छामि ।

नियम ५८२—(इच्छार्थेभ्यो वा वर्तमाने ४।४।१०१) इच्छति के अर्थवाली धातुओं से वर्तमान (तिबादि) के अर्थ में यादादि विकल्प से होती है । पक्ष में तिबादि भी । इच्छेत्, इच्छति । उश्यात्, वष्टि । कामयेत्, कामयति । वाञ्छेत्, वाञ्छति । यदि संयतः सन्नकल्प्यं सेवितुमिच्छेत् इच्छति वा धिग् गर्हामहे ।

नियम ५८३—(हेतुफले ४।४।९९) हेतु (कारण), फल (कार्य) । हेतु और फल अर्थ में यादादि विकल्प से होती है । यदि गुरुन् उपासीत

शास्त्रान्तं गच्छेत् । यदि गुरुन् उपासिष्यते शास्त्रान्तं गमिष्यति ।

नियम ५८४—(शक्तार्हयोः कृत्यश्च ४।४।१०६) शक्तः (समर्थः), अर्हः (योग्यः) । शक्त और अर्ह यदि कर्ता हो तो धातु से कृत्य (तव्यादि) प्रत्यय और तुबादि विभक्ति होती है। भवता खलु भारो वोढव्यः, वहनीयः, वाह्यः वा उह्येत । (भवान् भारं वहेत्) ।

नियम ५८५—(द्यादि र्माङि ४।४।११०) माङ् उपपद में हो तो द्यादि विभक्ति होती है । माङ्योगे तु न—इससे द्यादि में अट् नहीं होता । मा भूत् । मा कार्षीद् धर्मम् ।

नियम ५८६—(सस्मे दिवादिश्च ४।४।१११) मा के साथ स्म शब्द उपपद में हो तो द्यादि और दिवादि विभक्ति होती है । मा चैत्र स्म हार्षीः परद्रव्यम् । मा चैत्र स्म हरः परद्रव्यम् । मा स्म करोत्, मा स्म कार्षीत् ।

प्रयोगवाक्य

किं त्वं गुरुणा सह वार्तामकार्षीः ? ननुकरोमि । किं भवान् पुरा वक्ति ? रमा कर्हि गच्छति, गन्ता, गमिष्यति वा । मनोहरः कदा पठिष्यति, एष पठति । यदि सः पठेत् उत्तीर्णतां गच्छेत् । विनीतेन ज्ञानं प्राप्यं, प्राप्तव्यं, प्रापणीयं वा । कस्मैचित् कूष्माण्डः, गृञ्जनं श्वेतकन्दश्च रोचते, कस्मैचिच्च कारवेल्लः, पटोलः, पनसं च । महेन्द्रः रक्ताङ्गं पालकीं च न अत्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

राजेन्द्र के पिताजी आलू और मूली नहीं खाते । रमेश को टमाटर और सलाद अच्छा लगता है । आज बाजार में टिंडा, लौकी, कद्दू, शलगम, पालक, तोरई, परवल, करौंदा आदि सब्जियां आई हैं । कई लोग गोभी, भिंडी और मटर नहीं खाते । करेला कडवा होता है । कटहल पौष्टिक होता है । इमली का खट्टापन प्रसिद्ध है । ककडी खारी क्यों बनती है ?

विभक्त्यर्थ का प्रयोग करो

क्या तुमने आचार्यश्री की सेवा की थी ? हां की थी । क्या तुम नगर में पहले जाओगे ? हां जाऊंगा । तुम कब पढोगे, अभी पढता हूं । मोहन कब जायेगा ? श्याम कहां जाएगा ? यदि मदन पिता के पास रहता तो धन पा लेता । साध्वियों को पढना चाहिए । तुम वहां मत जाओ । तुम ऐसा मत बोलो ।

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—

कारवेल्लः स्वास्थ्यप्रदो भवति । मम ग्रामं समया गृञ्जनशाकटं, जालिनीशाकिनं, कर्कटीशाकटं च विद्यन्ते । शिशवे तिन्तिडीकं न रोचते । कदा अत्स्यति भवान्, एष अत्ति । किं सा पुरा गायति ?

२ निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
टमाटर, लौकी, गाजर, परवल, तोरई, कटहल, भिंडी, शलगम, करेला, सलाद, करौंदा, इमली ।

३. ननु शब्द के योग में कौनसी विभक्ति होती है और किस प्रसंग में ?

४. मा तथा मा स्म के योग में कौनसी विभक्ति होती है ?

५. तिबादि विभक्ति नित्य और विकल्प से कहां-कहां होती है और किसके योग में ?

पाठ ६५ : तव्य, अनीय प्रत्यय

शब्दसंग्रह (तव्य, अनीय के रूप)

भवितव्यम्, भवनीयम् (भू) होना चाहिए। अत्तव्यम्, अदनीयम् (अद्) खाना चाहिए। वेदितव्यम्, वेदनीयम् (विद्) जानना चाहिए। हन्तव्यम्, हननीयम् (हन्) मारना चाहिए। स्तवितव्यम्, स्तवनीयम् (ष्टु) स्तुति करनी चाहिए। भेतव्यम्, भयनीयम् (भी) डरना चाहिए। नष्टव्यम्, नशनीयम् (नश्) नष्ट होना चाहिए। श्रोतव्यम्, श्रवणीयम् (श्रु) सुनना चाहिए। मर्तव्यम्, मरणीयम् (मृङ्) मरना चाहिए। पेष्टव्यम्, पेषणीयम् (पिष्) पीसना चाहिए। बोद्धव्यम्, बोधनीयम् (बुध्) जानना चाहिए। मन्तव्यम्, मननीयम् (मन्) मानना चाहिए। हर्तव्यम्, हरणीयम् (हृ) हरण करना चाहिए। कर्तव्यम्, करणीयम् (कृ) करना चाहिए। भर्तव्यम्, भरणीयम् (भृ) भरना चाहिए। धर्तव्यम्, धरणीयम् (धृ) धारण करना चाहिए। स्मर्तव्यम्, स्मरणीयम् (स्मृ) याद करना चाहिए। पठितव्यम्, पठनीयम् (पठ्) पढना चाहिए। जागरितव्यम्, जागरणीयम् (जागृ) जागना चाहिए। शयितव्यम्, शयनीयम् (शी) सोना चाहिए। द्रष्टव्यम्, दर्शनीयम् (दृश्) देखना चाहिए। प्रष्टव्यम्, प्रच्छनीयम् (प्रच्छ्) पूछना चाहिए। नर्तितव्यम्, नर्तनीयम् (नृत्) नाचना चाहिए। हसितव्यम् हसनीयम् (हस्) हंसना चाहिए। गन्तव्यम्, गमनीयम् (गम्) जाना चाहिए।

तव्य, अनीय

जहां अन्त में चाहिए का प्रयोग आए तथा यह करने योग्य है, खाने योग्य है या करना है, खाना है, जाना है—इत्यादि स्थानों में कृत्य प्रत्ययों का प्रयोग होता है। कृत्य प्रत्यय पांच हैं—तव्य, अनीय, य, क्यप्, ण्यण्। कृत्य प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म में और अकर्मक धातुओं से भाव में होता है। भाव में नपुंसकलिंग होता है और कर्म में होने से त्रिलिङ्गी होता है। कर्ता में तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं। भाव में नित्य एकवचन और नपुंसकलिंग होता है। तव्य और अनीय ये प्रत्यय सब धातुओं से होते हैं। तव्य और अनीय के रूप बनाने के लिए कुछ नियम ध्यान में रखें। सरल तरीका यह है कि तुम् प्रत्यय के जो रूप बनते हैं, उनमें तुम् को हटाकर तव्य लगा देना चाहिए। जैसे—कर्तुं=कर्तव्यम्। हसितुं=हसितव्यम्।

गन्तुं=गन्तव्यम् । पातुं=पातव्यम् । जेतुं—जेतव्यम् आदि ।

अनीय प्रत्यय के लिए नामि धातु को गुण होता है, इ और ई को ए, उ और ऊ को ओ, ऋ और ॠ को अर् होता है । उसके बाद ए को अय्, ओ को अव् हो जाता है । (देखें संधिविचार **नियम ६, २०, २१**)

जि—जयनीयम् । चि—चयनीयम् कृ—करणीयम् । हु हवनीयम् । भू—भवनीयम् । उपधा में नामि हो उसे भी गुण होता है । जैसे—लिख्—लेखनीयम् । शुच्—शोचनीयम् । दृश्—दर्शनीयम् ।

प्रयोगवाक्य

त्वया साध्व्या भवितव्यम् । जनैः रात्रौ न अत्तव्यं, अदनीयं वा । छात्राभिः पाठः पठनीयः पठितव्यो वा । वीरेन्द्रेण कार्यं कर्तव्यं करणीयं वा । सुरेशेन तत्वं बोद्धव्यं बोधनीयं वा । भवतः भवता वा अत्रैव शयितव्यं शयनीयं वा । युष्माभिः रात्रौ जागर्तव्यं, जागरणीयं वा । मुनिभिः नाट्यं न दर्शनीयं द्रष्टव्यं वा । जिज्ञासुभिः प्रश्नः प्रष्टव्यः प्रच्छनीयः वा । आचार्यैः मम वार्ता श्रोतव्या श्रवणीया वा । त्वया न हसनीयम् ।

संस्कृत में अनुवाद करो

तुम्हें विद्वान् होना चाहिए । बालक को मीठा नहीं खाना चाहिए । रमेश को तत्व जानना चाहिए । हमें किसी प्राणी को नहीं मारना चाहिए । तुम सबको तीर्थंकरों की स्तुति करनी चाहिए । हम सबको सदा पाप से डरना चाहिए । सेवा में आये हुए सभी व्यक्तियों को आचार्य श्री का प्रवचन सुनना चाहिए । विद्यार्थियों को संस्कृत जाननी चाहिए । मनुष्यों को किसी का धन नहीं हरना चाहिए । श्रावकों को प्रतिक्रमण करना चाहिए । पिताजी को पानी नहीं भरना चाहिए । वृद्ध को नये वस्त्र धारण करने चाहिए । साधुओं को उत्तराध्ययन याद करना चाहिए । विद्यार्थी को अधिक नहीं सोना चाहिए । तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए । छात्रों को प्रश्न पूछना चाहिए । स्त्रियों को नहीं नाचना चाहिए । सभी को बिना प्रयोजन नहीं हंसना चाहिए । अकेले व्यक्ति को रात में बाहर नहीं जाना चाहिए । मनुष्य को हर वक्त विद्यार्थी रहना चाहिए । हमें हमारे कार्य में तत्पर रहना चाहिए । आप महान् हैं इसलिए आपको किसी के साथ भी असद् व्यवहार नहीं करना चाहिए । आचार्यवर का व्याख्यान प्रतिदिन सुनना चाहिए । चंदन को पुस्तक पढनी चाहिए । मुनियों को स्वाध्याय करना चाहिए ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

साधवः पापात् भेतव्यम् । अस्माभिः शास्त्रं बोद्धव्यः । केनापि अतिभोजनं

न अत्तव्यः । शीला एतद् कार्यं कर्तव्यम् । अशोकेन पाठः स्मर्तव्यम् । शिशुः शयनीयम् । साधकाः जागरणीयः ।

२. निम्नलिखित धातुओं के तव्य, अनीय प्रत्ययों के रूप बताओ—
मृज्, हृ, कृ, अद्, ष्टु, शी, पिष्, दृश्, भी, विद् ।

३. निम्नलिखित तव्य, अनीय प्रत्ययों के रूपों को वाक्यों में प्रयुक्त करो—
हन्तव्यम्, अदनीयम्, स्मर्तव्यम्, धरणीयम्, गन्तव्यम् ।

४. तव्य और अनीय प्रत्यय किन धातुओं से होता है और किसमें होता है ?

५. तव्य और अनीय प्रत्यय के रूप बनाने का सरल तरीका क्या है ?

पाठ ६६ : य, क्यप् प्रत्यय

शब्दसंग्रह

स्थेयम् (ष्ठां) ठहरना चाहिए। हेयम् (ओहांक्) छोडना चाहिए। देयम् (दा) देना चाहिए। ध्येयम् (ध्यै) चिंतन करना चाहिए। पेयम् (पा) पीना चाहिए। गेयम् (गै) गाना चाहिए। चेयम् (चि) चुनना चाहिए। जेयम् (जि) जीतना चाहिए। नेयम् (णी) ले जाना चाहिए। भव्यम् (भू) होना चाहिए। श्रव्यम् (श्रु) सुनना चाहिए। लव्यम् (लू) काटना चाहिए। तप्यम् (तप्) तपना चाहिए। लभ्यम् (लभ्) प्राप्त करना चाहिए। गम्यम् (गम्) जाना चाहिए। तक्यम् (तक्) हंसना चाहिए। चत्यम् (चत्) मांगना चाहिए। यत्यम् (यतीङ्) प्रयत्न करना चाहिए। शस्यम् (शस्) हिंसा करनी चाहिए। सह्यम् (सह्) सहना करना चाहिए। गद्यम् (गद्) बोलना चाहिए। मद्यम् (मदीच्) हर्षित होना चाहिए। यम्यम् (यमु) रोकना चाहिए। उद्यम् (वद्) बोलना चाहिए।

क्यप् प्रत्यय के रूप

प्रावृत्यः (प्रा+वृ) ढकना चाहिए। अधीत्यः (अधि+इ) पढना चाहिए। आदृत्यः (आ+दृ) आदर करना चाहिए। जुष्यः (जुष्) सेवा करनी चाहिए। शिष्यः (शास्) शासन करना चाहिए। स्तुत्यः (ष्टु) स्तुति करना चाहिए। वृत्यम् (वृ) होना चाहिए। वृध्यम् (वृध्) बढना चाहिए। गृध्यम् (गृध्) गृद्ध होना चाहिए। भृत्यः (भृ) भरना चाहिए। कृत्यम् (कृ) करना चाहिए। मृज्यम् (मृज्) साफ करना चाहिए। दुह्यम् (दुह्) दुहना चाहिए। जप्यम् (जप्) जप करना चाहिए। गुह्यम् (गुह्) छिपाना चाहिए।

य और क्यप् प्रत्यय

य और क्यप् प्रत्यय कृत्य संज्ञा के अन्तर्गत हैं। तव्य और अनीय की तरह ये भी अकर्मक धातुओं से भाव में और सकर्मक धातुओं से कर्म में होते हैं। तव्य और अनीय सब धातुओं से होता है। ये दोनों प्रत्यय कुछेक धातुओं से होते हैं। क्यप् प्रत्यय में क् और प् इत् जाते हैं, य प्रत्यय शेष रहता है। दोनों य प्रत्यय होने पर भी रूपों में अन्तर पडता है। क्यप् प्रत्यय में प् इत् जाने से (ह्रस्वस्य पित् कृति तुक्) सूत्र से ह्रस्व धातुओं को तुक् (त्) का आगम हो जाता है और रूपों में भिन्नता आ जाती है।

य प्रत्यय के रूप बनाने के लिए इन सूत्रों को ध्यान में रखो—

नियम ५८७—(स्वराद्य एच्चातः ५।१।२६) स्वरान्त धातुओं से य प्रत्यय होता है और आकारान्त धातुओं को एकार आदेश हो जाता है। चेयं, जेयं, नेयं, शेयं, देयं, गेयं, धेयम्। नव्यं, हव्यं, लव्यं। (येऽयकि १।२।५) सूत्र से ओकार और औकार को अव् और आव् आदेश हुआ है।

नियम ५८८—(पुशकितकिचतियतिशसिसहेः ५।१।२७) पवर्ग अंतवाली धातुएं तथा शक्, तक्, चत्, यत्, शस् और सह् धातुओं से य प्रत्यय होता है। तप्यं, लभ्यं, गम्यं, शक्यं, तक्यं, चत्यं, यत्यं, शस्यं, सह्यम्।

नियम ५८९—(गदिमदियमोऽनुपसर्गात् ५।१।२९) उपसर्ग रहित गद्, मद् और यम् धातु से य प्रत्यय होता है। उपसर्ग सहित होने से ण्यण् प्रत्यय होता है। गद्यं, मद्यं, यम्यं। प्रगाद्यं, प्रमाद्यं, प्रयाम्यम्।

नियम ५९०—(नाम्नि वदः क्यप् च ५।१।३६) नाम उपपद में हो तो वद् धातु से य और क्यप् प्रत्यय होता है। सत्योद्यं, सत्यवद्यम्।

क्यप् प्रत्यय के रूपों के लिए नियम

नियम ५९१—(वृनेतिदृजुषिशासुस्तुभ्यः ५।१।४०) वृन्, इ, दृ, जुष्, शास्, स्तु—इन धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है। वृत्यः, प्रावृत्यः, इत्यः, अधीत्यः। दृत्यः, आदृत्यः। जुष्यः, शिष्यः, स्तुत्यः।

नियम ५९२—(ऋदुपधाद्ऽकृपिचृदृचः ५।१।३९) कृप्, चृत्, ऋच् धातुओं को छोडकर उपधा में ऋकार वाली धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है। वृत्यं, वृध्यं, गृध्यम्।

नियम ५९३—(भृनोऽसंज्ञायाम् ५।१।४१) भृन् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है असंज्ञा के अर्थ में। संज्ञा अर्थ में ण्यण् प्रत्यय होता है। भृत्यः (पोष्यः इत्यर्थः)। संज्ञा—भार्यः नाम कश्चित् क्षत्रियः।

नियम ५९४—(कृवृषिमृजिशंसिदुहिगुहिजपेर्वा ५।१।४४) कृ, वृष्, मृज्, शंस्, दुह्, गुह्, जप् धातुओं से क्यप् और ण्यण् प्रत्यय होता है। कृत्यं, कार्यं। वृष्यं, वर्ष्यं। मृज्यं, मार्ग्यं। शस्यं, शंस्यं। दुह्यं, दोह्यं। गुह्यं, गोह्यं। जप्यं, जाप्यम्।

प्रयोगवाक्य

श्रावकैः सच्चित्तं नीरं न पेयम्। सुव्रतेन अणुव्रतगीतं गेयम्। विवेकिभिः विना प्रयोजनं न तव्यम्। छात्रैः ज्ञानं प्राप्तुं प्रयत्यम्। तया कर्कशं वचनं न गद्यम्। सुरेन्द्रेण श्यामाय पुस्तकानि देयानि। सीमया पारितोषिकः नेयः। वर्षया भव्यम्। युष्माभिः सत्यं वचनं श्रव्यम्। गृहे अस्माभिः न स्थेयम्। इदं स्थानं सर्वैः हेयम्। जनैः विषयेषु न गृध्यम्। साधकैः जिनः जप्यः। युष्माभिः पापानि न गुह्यानि।

संस्कृत में अनुवाद करो (य प्रत्यय का प्रयोग करो)

तुम्हें मुनियों को दान देना चाहिए। हम सब को प्रभु का चिंतन करना है। किसी को भी अति ठंढा और अति गर्म पानी नहीं पीना चाहिए। साध्वियों को प्रेक्षागीत गाना है। जनता को योग्य व्यक्ति का चुनाव करना चाहिए। हमें कर्म शत्रुओं को जीतना चाहिए। सब को ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। मुनियों को बावीस परीषह सहन करने चाहिए। सब को मधुर बोलना चाहिए। किसान को फसल जल्दी नहीं काटनी चाहिए।

क्यप् प्रत्यय का प्रयोग करो

सुशील को गुरु से विद्या पढनी है। सभी को गुरुओं का आदर करना चाहिए। साध्वियों को रुग्ण और वृद्ध साध्वी की सेवा करनी चाहिए। तुम सब को प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। राजा को दुष्टों पर शासन करना चाहिए। नरेश को सम्यक् वर्तन करना चाहिए। स्त्रियों को विकास पथ पर बढना चाहिए। विवेकशील व्यक्तियों को सदा अच्छा कार्य करना चाहिए। हमें अपनी आत्मा को ध्यान और स्वाध्याय से साफ करनी चाहिए। तुम्हें किसी की हिंसा नही करना चाहिए।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—
सर्वे समये कार्यं कृत्यम्। शिष्याः वृध्यम्। विनीताः गुरुणां पार्श्वे विद्या अधीत्या। नराः लाभे न मद्यम्। साधवः दुर्जनानां कर्कशा वाणी सह्या। शीला अधुना गृहं न गम्यम्। वयं अग्रजाः आदृत्याः। मोहनः भाषणं उद्यम्।

२. निम्नलिखित धातुओं के य प्रत्यय के रूप बताओ—
गै, चि, लू, लभ्, गम्, तप्, सह्, वद्।

३. निम्नलिखित धातुओं के क्यप् प्रत्यय के रूप बताओ—
शास्, ष्टु, वृध्, शस्, जुष्, दुह्, गुह्।

४. य और क्यप् प्रत्यय किन-किन धातुओं से होता है, बताओ ?

५. नीचे लिखे रूप किस धातु और किस प्रत्यय के हैं ?
मृज्यं, तक्यं, लभ्यं, सत्योद्यं, शिष्यः, अधीत्यः वृध्यं, मार्ग्यम्।

६. य और क्यप् प्रत्यय के विषय में तुम क्या जानते हो ?

७. दोनों प्रत्ययों के रूपों की समानता है या भिन्नता है। उनकी पहचान क्या है ?

पाठ ६७ : ध्यण् प्रत्यय

शब्दसंग्रह (ध्यण् प्रत्यय के रूप)

कार्यम् (कृ) करना चाहिए। वर्ष्यम् (वृष्) बरसना चाहिए। मार्ग्यम् (मृज्) साफ करना चाहिए। याज्यम् (यज्) यज्ञ करना चाहिए। रोच्यम् (रुच्) अच्छा लगना चाहिए। शोच्यम् (शुच्) शोक करना चाहिए। याच्यम् (याच्) मांगना चाहिए। अर्च्यम् (अर्च्) पूजा करनी चाहिए। वाच्यम् (वच्) बोलना चाहिए। भोज्यम् (भुज्) खाना चाहिए। त्याज्यम् (त्यज्) छोडना चाहिए। लाव्यम् (लू) काटना चाहिए। पाव्यम् (पू) साफ करना चाहिए। याव्यम् (यु) मिश्रण करना चाहिए। वाप्यम् (वप्) बोना चाहिए। राप्यम् (रप्) अव्यक्त शब्द करना चाहिए। लाप्यम् (लप्) बोलना चाहिए। त्राप्यम् (त्रप्) लज्जा करनी चाहिए। डेप्यम् (डिप्) इकट्ठा करना चाहिए। दाभ्यम् (दभ्) दंभ करना चाहिए। आचाम्यम् (चम्) आचमन करना (पीना) चाहिए। आनाम्यम् (नम्) झुकना चाहिए। हार्यम् (हृ) हरण करना चाहिए। पाक्यम् (पच्) पकाना चाहिए। वाह्यम् (वह्) प्राप्त करना चाहिए। सेक्यम् (सिच्) सिंचन करना चाहिए। योग्यम् (युज्) जोडना चाहिए। दोह्यम् (दुह्) दुहना चाहिए। गोह्यम् (गुह्) छिपाना चाहिए। जाप्यम् (जप्) जप करना चाहिए।

नियम ५९५—(ऋवर्णहसाद् ध्यण् ५।१।४८) ऋवर्ण और हस् अन्त वाली धातुओं से ध्यण् प्रत्यय होता है। कार्यं, हार्यं, पाक्यं, वाक्यं, वाह्यम्।

नियम ५९६ क—(आसुयुवपिरपिलपित्रपिडिपिदभिचम्यानमेः ५।१।४९) आङ् पूर्वक सुनोति और नमि धातु, यु, वप्, रप्, लप्, त्रप्, डिप्, दभ्, चम् इन धातुओं से ध्यण् प्रत्यय होता है। आसव्यं, याव्यं, वाप्यं, राप्यं, लाप्यं, डेप्यं, दाभ्यं, आचाम्यं, आनाम्यम्।

ख—(पाणिसमवायोः सृजेः ५।१।५०) पाणि, समव (सम्+अव) उपपद में हो तो सृज् धातु से ध्यण् प्रत्यय होता है। पाणिभ्यां सृज्यते = पाणिसर्ग्या रज्जुः। समवसृज्यते इति समवसर्ग्यः।

ग—(चजोः कगौ घिति ६।१।२१) धातु के च को क तथा ज को ग हो जाता है, घ् इत् जाने वाला प्रत्यय परे हो तो। सेक्यं, पाक्यं, योग्यम्।

घ—(त्यजियजिरुचिशुचियाचिप्रवर्चचः ६।१।२७) इन धातुओं के ज को ग और च को क नहीं होता। त्याज्यं, याज्यं, रोच्यं, शोच्यं, याच्यं, प्रवाच्यं, अर्च्यम्।

ङ—(उवर्णादावश्यके ५।१।५१) उवर्ण अन्तवाली धातुओं से आवश्यक अर्थ में ण्यण् प्रत्यय होता है। लाव्यं, पाव्यम्। जहां आवश्यक अर्थ नहीं वहां लव्यं, पव्यम्।

च—(ण्यण्यावश्यके ६।१।२६) आवश्यक अर्थ में होने वाले ण्यण् प्रत्यय परे होने पर च को क, ज को ग नहीं होता। अवश्यपाच्यं, अवश्यरञ्ज्यम्। अन्यत्र पाक्यं, रङ्ग्यम्।

छ—(भुजो भक्ष्ये ६।१।३१) भुज् धातु से भक्ष्य अर्थ में ण्यण् प्रत्यय होने पर ज को ग नहीं होता। भोज्यं अन्नं, भोज्या यवागूः। भक्ष्य अर्थ न हो वहां भोग्यः कंबलः।

ज—(वचोऽशब्दसंज्ञायाम् ६।१।२८) वच् के च को क नहीं होता अशब्द संज्ञा में। वाच्यम्। शब्द संज्ञा में वाक्यम्।

प्रयोगवाक्य

त्वया एतद् स्थानं मार्ग्यम्। युष्माभिः मा यज्यम्। मात्रा सुतः न शोच्यः। दरिद्रैः कटु न वाच्यम्। युष्माभिः वीतरागदेवः अर्च्यः। श्रेष्ठिनः पुत्रैः कुसंगः त्याज्यः। त्वया गुरुभिः त्राप्यम्। शिशुभिः न दाभ्यम्। त्वया कस्यापि वस्तूनि न हार्याणि। सूदेन अन्नं पाक्यम्। त्वया शर्करायां धूलिः न याव्या। रोगिभिः मिष्टान्नं न भोज्यम्। बलवता नृपेण इयं पृथ्वी भोग्या।

संस्कृत में अनुवाद करो

साधुओं को श्रम करना चाहिए। हमें अपने स्थान को साफ करना चाहिए। रमा को दही अच्छा लगना चाहिए। बीती हुई बात का शोक नहीं करना चाहिए। मुनियों को गृहस्थों से भिक्षा मांगनी चाहिए। हमें वीतराग देव की भाव पूजा करनी चाहिए। स्त्रियों को मधुर बोलना चाहिए। मनुष्यों को अधिक मीठा नहीं खाना चाहिए। तुम्हें दुर्जनों का साथ छोड देना चाहिए। ग्वाले को दूध में पानी नहीं मिलाना चाहिए। किसानों को उर्वर भूमि में बीज बोना चाहिए। बहूओं को सास-ससुर से लज्जा करनी चाहिए। सुशील को दंभ नहीं करना चाहिए। श्याम को गुरुचरणों में झुक जाना चाहिए। हमें किसी की वस्तु का हरण नहीं करना चाहिए। सुशीला को अन्न पकाना चाहिए। सभी को योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। तुम्हें टूटे हुए हृदय को जोडना चाहिए। सभी को अर्हं का जप करना चाहिए। स्त्रियों को गेहूं साफ करने चाहिए।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

त्वया सुतं न शोच्यम्। मुनयः निरवद्यं वचनं वाच्यम्। रुग्णाः घृतं न भोज्यम्। नृपेण पृथिवी भोग्यः। आपणिकाः मधुरं वचनं लप्यम्। *तया*

गृहं त्याज्यः । कृषकैः क्षेत्रे बीजं वाप्यः ।

२. निम्नलिखित ष्यण् प्रत्यय किन-किन धातुओं के हैं, बताओ ? और उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।

रोच्यम्, त्याज्यम्, लाव्यम्, पाव्यम्, वाप्यम्, दोह्यम्, सेक्यम्, हार्यम्, आनाम्यम्, याव्यम् ।

पाठ ६८ : अच् आदि प्रत्यय

शब्दसंग्रह

करकः (लोटा) । स्थालिका (थाली) । कंसः (गिलास) । काचकंसः (काच का गिलास) । कटोरम् (कटोरा) । घटः (घडा) । उदञ्चनम् (बाल्टी) । वारिधिः (तांबे का कलश) । द्रोणिः (टब)। स्थाली (पतीली, थाली) । स्वेदनी (कडाही) । ऋजीषम् (तवा) । पिष्टपचनः (कडाही, तवा) । हसंती (अंगीठी) । उद्ध्मानम् (स्टोप) । धिषणा (प्याली, कटोरी) । दर्वी (चमचा, कलछुल) । चषकः (प्याला, कप) । शरावः (प्लेट, तस्तरी) । उखा (तपेली, बटलोई) । हस्तधावनी (चिलमची) । संदंशः (चीमटा) ।

अच्, अन, णिन् क. ड श. ण प्रत्यय

अचादि प्रत्यय कर्ता में होते हैं । ये पुल्लिग होते हैं । इनका अर्थ होता है करने वाला, बोलने वाला आदि । हिन्दी भाषा में वाला अर्थ में ये प्रत्यय होते हैं ।

नियम ५९७—(अच् ५।१।६०) सब धातुओं से अच् प्रत्यय होता है । करः, हरः, पचः, पठः लेहः, देवः, देहः, कोपः, गोपः, नर्तः, दर्शः ।

नियम ५९८—(अर्होच् ५।२।२०) पूर्वपद में कर्म हो तो अर्ह् धातु से अच् प्रत्यय होता है । पूजार्हः साधुः । वन्दनार्हा साध्वी । मालार्हा इन्दिरा ।

नियम ५९९—(वयोऽनुद्यमे हृनः ५।२।२१) कर्म पूर्वपद में हो तो हृन् धातु से अच् प्रत्यय होता है वयः और अनुद्यम (श्रम का अभाव) अर्थ हो तो । कवचहरः क्षत्रियकुमारः । अंशहरो दायादः । अस्थिहरः श्वशिशुः । अनुद्यम—मनोहरः प्रासादः, मनोहरा बाला ।

नियम ६००—(आङः शीले ५।२।२२) कर्म उपपद में हो, आङ् पूर्वक हृन् धातु से शील अर्थ गम्यमान हो तो अच् प्रत्यय होता है । शील का अर्थ है स्वाभाविकी प्रवृत्ति । पुष्पाणि आहरति इत्येवं शीलः पुष्पाहरः । फलाहरः । पुष्प आदि आहरण करने में फलनिरपेक्षा स्वाभाविकी वृत्ति है ।

नियम ६०१—धनुर्दण्डत्सरुलाङ्गलाङ्कुशर्ष्टिशक्तियष्टितोमरघटेषु ग्रहेर्वा ५।२।२४) धनुष् आदि शब्द कर्मरूप में उपपद में हो तो ग्रह् धातु से अच् प्रत्यय विकल्प से होता है । पक्ष में अण् प्रत्यय भी । धनुर्ग्रहः, धनुर्ग्राहः । दण्डग्रहः, दण्डग्राहः । त्सरुग्रहः, त्सरुग्राहः । लांगलग्रहः, लांगलग्राहः । अंकुशग्रहः, अंकुशग्राहः । ऋष्टिग्रहः, ऋष्टिग्राहः । शक्तिग्रहः, शक्तिग्राहः । यष्टिग्रहः,

यष्टिग्राहः । तोमरग्रहः, तोमरग्राहः । घटग्रहः, घटग्राहः ।

नियम ६०२—(नन्द्यादिभ्योऽनः ५।१।६३) नदि आदि धातुओं से अन प्रत्यय होता है । नन्दनः, मदनः, साधनः, वर्धनः, शोभनः, रोचनः, सहनः रमणः दमनः, तपनः ।

नियम ६०३—(ग्रहादिभ्यो णिन् ५।१।६४) ग्रह आदि धातुओं से णिन् प्रत्यय होता है । ग्राही, स्थायी, मन्त्री, अपराधी, निवासी । इनके रूप दण्डिन् की तरह चलेंगे ।

नियम ६०४—(नाम्युपधज्ञाप्रीकृगिरः कः ५।१।६५) नामि उपधा वाली धातुएं, ज्ञा, प्री, कृ, गिर्, इन धातुओं से क प्रत्यय होता है । क् इत् जाने से गुण नहीं होता । क्षिपः, लिखः, बुधः, कृशः, प्रियः, किरः, गिलः ।

नियम ६०५—(उपसर्गादातो डोऽश्यः ५।१।६६) श्यैङ् धातु को छोडकर उपसर्ग सहित आकारान्त धातुओं से ड प्रत्यय होता है । ड् इत् जाने से धातु की टि का लोप होता है । आह्वः, प्रह्वः, प्रज्यः, प्रस्थः, सुत्रः, सुरः ।

नियम ६०६—(पाघ्राध्माधेड्दृशः शः ५।१।६८) पा, घ्रा, ध्मा, धेंट् और दृश् धातु से श प्रत्यय होता है । श् इत् जाने से शित् कार्य हो जाता है । पिबः, निपिबः, उत्पिबः । जिघ्रः, विजिघ्रः, उज्जिघ्रः । धमः, विधमः, उद्धमः । धयः, विधयः, उद्धयः, । पश्यः, विपश्यः, उत्पश्यः ।

नियम ६०७—(गवादौ विन्देः ५।१।७१) गो आदि शब्द उपपद में हो तो विन्द् धातु से श प्रत्यय होता है । गाः विन्दतीति गोविन्दः । कुविन्दः, अरविन्दः, कुरुविन्दः ।

नियम ६०८—(दुनीभवः ५।१।७४) दु, नी और भू धातु उपसर्ग रहित हो तो ण प्रत्यय होता है । दावः, दवः । नायः, नयः। भावः, भवः । उपसर्ग सहित होने से—प्रदवः, प्रणयः, प्रभवः ।

प्रयोगवाक्य

वन्दनार्हाः साध्वीः को न वन्दते ? अंशहरो गोपालः अंशं गृहीत्वा कथं न तृप्यति ? निशाकरः रात्रौ न कथं दृष्टः ? तपनः तपति तृतीयप्रहरे । सहनः सहते आभ्यन्तरोपसर्गान् । मन्त्री अपराधिनं दण्डयति । चंचला किं क्वापि स्थायिनी भवति ? ग्रामनिवासिनः नगरे जिगमिषन्ति । कृशः प्रियमित्रोपि चेष्टते सहायतायै । कुविन्दः तन्तुं वयति । किं तुभ्यं कुरविन्दं (मोथ) रोचते । अस्मिन् ग्रामे को गोविन्दोऽस्ति ? मालार्हः गिरीशो मालां स्पृशत्यपि न । मालां दधः कोयमस्ति ? मनोहरायाः बालायाः किमभिधानमस्ति ?

संस्कृत में अनुवाद करो

लोटे में पानी नहीं है । थाली में कौन भोजन करेगा ? रमेश को एक गिलास दूध चाहिए । इस काच की गिलास में किसने दूध पीया

है ? कटोरे में आटा है। घडे में चूहा है। रमेश बाल्टी में पानी लाता है। श्याम टब में स्नान करता है। भाभी कडाही का क्या करेगी ? सतीश ने शान्ता को एक तवा, एक तई, एक अंगीठी, एक स्टोप, एक तसला, एक चिमटा और एक चिलमची दी है। शीला का प्याला सुंदर है। इस तस्तरी में फल है। सीमा को एक चम्मच घी चाहिए। नेता माला के योग्य होता है। मदन कामदेव ही होता है या और भी। पश्यतो हरः यहां कौन हैं ? इंद्रियां स्वविषय को ग्रहण करने वाली होती है। ज्ञानी (बुधः) सब कुछ जानता है। कुविन्द और अरविन्द में क्या अन्तर है ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
गिलास, बाल्टी, अंगीठी, स्टोप, तसला, प्याला, प्लेट।

२. अचादि प्रत्ययों में कौन कौन से प्रत्यय इस पाठ में आए हैं ?

३. अन, णिन् और क प्रत्यय कहां होता है ?

४ हृन् धातु से कर्म उपपद में हो तो किस अर्थ में अच् प्रत्यय होता है ?

पाठ ६९ : णक, तृच्, तृन् प्रत्यय

शब्दसंग्रह (णक, तृच्, तृन् प्रत्यय के रूप)

भावकः, भविता (भू) होने वाला। पायकः, पाता (पा) पीने वाला। गामकः, गन्ता (गम्) जाने वाला। वन्दकः, वन्दिता (वदिङ्) वंदना स्तुति करने वाला। कारकः, कर्ता (कृ) करने वाला। आदकः, अत्ता (अद्) खाने वाला। यायकः, याता (यांक्) जाने वाला। अध्यायकः, अध्येता (इं) पढने वाला। रोदकः, रोदिता (रुद्) रोने वाला। जागरकः, जागरिता (जागृ) जागने वाला। वेदकः, वेत्ता (विद्) जानने वाला। घातकः, हन्ता (हन्) मारने वाला। भावकः, भविता (अस्) होने वाला। शायकः, शयिता (शी) सोने वाला। आसकः, आसिता (आस्) बैठने वाला। स्तावकः, स्तोता (ष्टु) स्तवना करने वाला। वाचकः, वक्ता (ब्रू) बोलने वाला। दोहकः, दोग्धा (दुह्) दुहने वाला। भायकः, भेता (भी) डरने वाला। दायकः, दाता (दा) देने वाला। नर्तकः, नर्तिता (नृत्) नाचने वाला। नाशकः, नष्टा (णश्) नष्ट करने वाला। बोधकः, बोद्धा (बुध्) जानने वाला। मानकः, मन्ता (मन्) मानने वाला। रञ्जकः, रङ्क्ता (रञ्ज्) राग करने वाला। श्रावकः, श्रोता (श्रु) सुनने वाला। प्रच्छकः, प्रष्टा (प्रच्छ्) पूछने वाला। मारकः, मर्ता (मृंज्) मारने वाला। रोधकः, रोद्धा (रुध्) रोकने वाला। भेदकः, भेत्ता (भिद्) भेदन करने वाला। पेषकः, पेष्टा (पिष्) पीसने वाला। तानकः, तनिता (तन्) फैलाने वाला। ज्ञायकः, ज्ञाता (ज्ञा) जानने वाला। ग्राहकः, ग्रहिता (ग्रह्) ग्रहण करने वाला। चोरकः, चोरिता (चुर्) चुराने वाला। हारकः, हर्ता (हृ) हरण करने वाला।

णक, तृच्, तृन् प्रत्यय

णक प्रत्यय कर्ता में होता है और सब धातुओं से होता है। हिन्दी में 'वाला' के अर्थ में होता है। कारक., पाठकः। इसका अर्थ होता है करने वाला, पढने वाला। इसके रूप पुल्लिग में जिन की तरह चलते हैं। णक प्रत्यय भाव में होता है वहां वह स्त्रीलिग में होता है। उसके योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—भवतां आसिका। भवतां शायिका।

तृच् और तृन् प्रत्यय भी कर्ता में होते हैं। तृच् और तृन प्रत्ययों के रूप समान बनते हैं। उनकी पहचान विभक्ति से होती है। तृच् के योग में षष्ठी विभक्ति और तृन् के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। इनके रूप

बनाने का सरल उपाय है—तुम् प्रत्यय के जो रूप बनते हैं उनमें तुम् के स्थान पर तृ लगा दें तथा धातुओं को गुण और सेट् धातुओं से इट् कर दें। तृच् और तृन् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिग में कर्तृ और स्त्रीलिंग में ईप् लगाकर नदी की तरह चलते हैं। कर्त्री, हर्त्री, पठित्री आदि।

नियम

नियम ६०९—(भावे ५।४।१२०) भाव (धातु के अर्थ) में णक प्रत्यय होता है स्त्रीलिंग में। आसिका, शायिका, जीविका, कारिका।

नियम ६१०—(संज्ञायां णकः ५।४।११७) भावाकर्त्रो अर्थ में धातु से णक प्रत्यय होता है स्त्रीलिंग में, यदि वह शब्द कोई संज्ञा बनता हो तो। प्रच्छद्यतेऽनयेति प्रच्छर्दिका। प्रवाहिका, विर्चचिका, प्रस्कन्दिका, विपदिका (ये रोग के नाम हैं)। अभ्योषखादिका, अवोषखादिका, सालभञ्जिका (ये क्रीडा के नाम हैं)।

नियम ६११—(पुंस्यपि क्वचित् ५।४।११८) भावाकर्त्रो अर्थ में कहीं कहीं धातु से णक प्रत्यय होता है पुल्लिग में। अरोचनं न रोचतेऽस्मिन् इति वा अरोचकः। अनाशकः, उत्कन्दकः, उत्कर्णकः।

नियम ६१२—(पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ५।४।११९) पर्याय, अर्ह, ऋण और उत्पत्ति इन अर्थो में स्त्रीलिंग में धातु से भावाकर्त्रो के अर्थ में णक प्रत्यय होता है। भवतः आसिका, भवतः शायिका, भवतः अग्रगामिका। (आसितुं शयितुं अग्रेगन्तुं च भवतः क्रमः)। अर्हणमर्हः योग्यता। अर्हति भवान् इक्षु-भक्षिकाम्, ओदनभोजिकां, पयः पायिकाम्। ऋणं यत् परस्मै धार्यते। इक्षु-भक्षिकां मे धारयसि। उत्पत्तिः जन्म। इक्षुभक्षिका मे उदपादि।

प्रयोगवाक्य

अमी गुणानां ग्राहकाः सन्ति अत एव सर्वत्र गुणान् दृग्गोचरी कुर्वन्ति। इयं न केवलमध्यापिका एव अपितु तर्कशास्त्रस्य अन्वेषिकापि वर्तते। शासनस्य नेतारो विचक्षणाः अभूवन्। अद्यतन्याः परिषदः काऽधिनेत्री भविष्यति। किमेते सर्वेऽपि पाठं विस्मर्तारः। अहो! किशोरी चापि वीणावाणीमधिकर्त्री। अस्मिन् ग्रामे संस्कृतस्य वेदकाः वेत्तारः वा कियन्तः जनाः सन्ति। यथार्थस्य श्रावकाः श्रोतारः वा विरला एव भवन्ति। प्रश्नं प्रच्छकाः प्रष्टारः वा कुत्र जग्मुः। पुत्रस्यमारकाः मर्तारः वा क्व पलायाञ्चक्रुः। कुमार्गस्य रोधकाः रोद्धारः वा विरलाः भवन्ति। आचार्यं नीरं पाता मुनिः कुत्रत्योऽस्ति। ज्ञानं दाता अध्यायकः दाक्षिणात्योऽस्ति। श्लोकान् वक्त्री साध्वी इहत्यास्ति।

संस्कृत में अनुवाद करो (तृच्, या तृन् प्रत्यय के प्रयोग करो)

संसार का करने वाला, हरने वाला, और धारण करने वाला कौन

है ? इस पुस्तक का पढने वाला कौन है ? ग्रन्थ का रचने वाला ग्रन्थ बनाता है। जीतने वाला राजा शत्रुओं को जीतता है। धन हरण करने वाला किसका धन चुराता है ? दूध पीने वाला बालक कहां है ? तुम्हारे गांव कौन जाने वाला है ? अर्हत् की सदा स्तुति करने वाला कर्मों को तोडता है। भोजन करने वाले कब आयेंगे ? पढने वाले छात्र व्यर्थ बातें नहीं करते। रोने वाले बालक को कौन चुप करेगा ? आगम जानने वाले मुनि से आगम पढो। रात भर जागने वाला व्यक्ति कौन है ? सेठ के पुत्र को मारने वाला कौन है ? सोने वाले बालक को कौन जगायेगा ? स्थिर बैठने वाला ध्यान करें। स्पष्ट बोलने वाला भाषण दें।

णकप्रत्यय का प्रयोग करो

गाय को दुहने वाला कहां है ? बच्चों को डराने वाला कहां छिप गया ? ज्ञान देने वाले का सम्मान करो। धन को नष्ट करने वाला दरिद्र हो गया। तत्व को जानने वाले कितने व्यक्ति हैं? गुरु के वचन को मानने वाला विकास करता है।

अभ्यास

१. तृच् और तृन् में अर्थ भेद के सिवाय और क्या अन्तर है ?

२. णक, तृच्, तृन् प्रत्ययों के स्त्रीलिंग में यथेष्ट प्रयोग करो और बताओ कि इनको पुल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने की क्या विधि है ?

३. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

पापं हन्तारः मुनिः मुक्तिं लभते। अस्मिन् विद्यालये प्राकृतं अध्येता कियन्तः छात्राः सन्ति ? आत्मानं बोद्धा सर्वं विदन्ति। आगमरहस्यं ज्ञायकाः कुत्र निवसन्ति ? अन्नं पेषकाः अधुना किं कुर्वन्ति ? धनं चोरकान् नृपः दंडयति। अतिमिष्टान्नं अत्तारः रुग्णो भवन्ति। विहारं कर्त्रीन् साध्वीः वन्दस्व। मम पुस्तकं हर्ता किं त्वं जानासि ? गां दोग्ध्रीं स्त्री कदा आगमिष्यति ?

४. निम्नलिखित धातुओं के णक और तृच् प्रत्ययों के रूप बताओ—

रुद्, कृ, हन्, विद्, आस, ब्रू, दुह्, नश्, प्रच्छ्, भिद्।

५. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो—

यायकः, अध्यायकः, रोदिता, वेत्ता, दायकः, ज्ञाता, हारकः।

पाठ ७० : ख, खि प्रत्यय

शब्दसंग्रह

आहवः (युद्ध) । प्रहरणम् (शस्त्र) । आयुधम् (शस्त्रास्त्र) । आयुधागारम् (शस्त्रागार) । वर्मन् (कवच) । कार्मुकम् (धनुष) । निस्त्रिंशः (खड्ग) । कौक्षेयकः (तलवार) । विशिखः (बाण) । तूणीरः (तूणीर) । शल्यम् (बर्छी) । प्रासः (भाला) । तोमरः (गंडासा) । गदा (गदा) । छुरिका (चाकू) । धन्विन् (धनुर्धर) । शरव्यम् (लक्ष्य) । सांयुगीनः (रणकुशल) । कबन्धः (धड) । हस्तिपकः (महावत) । सादिन् (घुडसवार) । वैजयन्ती (पताका) । अभ्रंकषः (बादल या आकाश को छूनेवाला) । सर्वंकषः (सबको पीडित करने वाला) । करीषंकषः (उपलों के छोटे टुकडों को उडाने वाला) । मद्रंकरः, भद्रंकरः (कल्याण करने वाला) । पुरंदरः (इन्द्र) । कुक्षिंभरिः, उदरंभरिः (पेट भरने वाला, पेटू) ।

ख, खि प्रत्यय

ख प्रत्यय कर्ता में होता है, पूर्वपद में कर्म रूप में कोई शब्द होना चाहिए । ख में ख् इत् जाने से कर्म में मुम् (म्) का आगम होता है ।

ख प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के रूप में व्यवहृत होता है ।

नियम ६१३—(प्रियवशयोर्वदेः खः ५।२।३४) प्रिय और वश शब्द पूर्वपद में कर्मरूप में हो तो वद् धातु से ख प्रत्यय होता है । प्रियं वदति इति प्रियंवदः । वशंवदः ।

नियम ६१४—(सर्वे सहः ५।२।३७) सर्व शब्द पूर्वपद में कर्मरूप में हो तो सह् धातु से ख प्रत्यय होता है । सर्वं सहते इति सर्वंसहः ।

नियम ६१५—(कूलाभ्रकरीषेषु च कषः ५।२।३८) कूल, अभ्र, करीष और सर्व शब्द पूर्वपद में कर्मरूप में हो तो कष् धातु से ख प्रत्यय होता है । कूलंकषा नदी । अभ्रंकषो गिरिः । करीषंकषा वात्या । सर्वंकषः खलः ।

नियम ६१६—(मेघर्तिभयाभयेषु कृनः ५।२।३९) मेघ, ऋति, भय, और अभय शब्द पूर्वपद में कर्मरूप में हो तो कृन् धातु से ख प्रत्यय होता है । मेघंकरः । ऋतिर्गतिः सत्यता वा ऋतिंकरः । भयंकरः, अभयंकरः ।

नियम ६१७—(क्षेमप्रियमद्रभद्रेष्वण् च ५।२।४०) क्षेम, प्रिय, मद्र और भद्र शब्द पूर्वपद में कर्मरूप में हो तो करोति (कृ) धातु से अण् और ख

प्रत्यय होता है। क्षेमं करोति=क्षेमकारः, क्षेमंकरः। प्रियकारः, प्रियंकरः। मद्रकारः, मद्रंकरः। भद्रकारः, भद्रंकरः।

नियम ६१८—(तीर्थे तौ वा ५।२।४१) तीर्थ शब्द पूर्वपद में कर्मरूप में हो तो करोति (कृ) धातु से अण्, ख और ट प्रत्यय होते हैं। तीर्थं करोति=तीर्थकारः, तीर्थंकरः, तीर्थकरः।

नियम ६१९—(तृभृवृजितपिदमिसहिभ्यः खः संज्ञायाम् ५।२।४२) कर्म उपपद में हो तो इन धातुओं से ख प्रत्यय होता है, संज्ञा के विषय में। रथंतरति रथंतरं साम। विश्वंभरा वसुन्धरा। पतिंवरा कन्या। धनंजयोऽर्जुनः। शत्रुंतपो राजः। बलिं दाम्यति दमयति वा=बलिंदमः कृष्णः। अरिंदमः, शत्रुंसहः—ये दो राजा हैं।

नियम ६२०—(धारेर्धर् च ५।२।४३) कर्म उपपद में हो तो धारय् धातु से संज्ञा के विषय में ख प्रत्यय होता है। धारय् धातु को धर् आदेश हो जाता है। वसुं धारयति इति वसुंधरा पृथ्वी।

नियम ६२१—(पुरंदरभगंदरौ ५।२।४४) पुरंदर, भगंदर—ये दो शब्द ख प्रत्ययान्त निपात हैं। पुरो दारयति=पुरंदरः शक्रः। भगं दारयति=भगंदरः व्याधिः।

नियम ६२२—(कुक्ष्यात्मोदरेषु भृनः खिः ५।२।४५) कुक्षि, आत्म और उदर शब्द कर्मरूप में उपपद में हो तो भृन् धातु से खि प्रत्यय होता है। कुक्षिंभरिः, आत्मंभरिः, उदरंभरिः।

प्रयोगवाक्य

प्रियंवदानां न भवति कोऽपि रिपुः। साधवः सर्वेषां मद्रंकराः भद्रंकरा वा भवन्ति। तीर्थकाराणां कियन्तः अतिशयाः भवन्ति? स मम वशंवदोऽस्ति। मुनिः सर्वंसहो भवति। वसुंधरेयं भारतभूमिः। सांयुगीनोऽयं पुरुषः यत्र कुत्रापि गच्छति तत्रैव साफल्यमेति। सादिनः कुत्र व्रजन्ति? धन्विनः वने कदा ययुः? उदरंभरिरजः कुत्र गतः?

संस्कृत में अनुवाद करो

युद्ध के समय अनेक शस्त्रों की जरूरत होती है। राजा के शस्त्रागार में बहुत शस्त्र हैं। सैनिक सुरक्षा के लिए कवच पहनता है। शिकारी के पास धनुष और बाण हैं। मूर्ख बन्दर ने तलवार से राजा का सिर काट दिया। सैनिक के पास बर्छी, भाला और गंडासा हैं। सैनिक गदा से युद्ध करता है। भाभी चाकू से आम काटती है। धनुर्धर लक्ष्य साधता है। रणकुशल योद्धा ही विजयी होता है। यह धड किसका है? महावत हाथी पर बैठ कर घूमता है। घुडसवार घोडे पर बैठा है। दयालु राजा की विजय-पताका सर्वत्र फैल गई। प्रिय बोलने वाले के अपरिचित भी परिचित हो जाते हैं। यह सांप

भयंकर है। मुनि सभी का प्रिय करने वाले होते हैं। आचार्य सभी का कल्याण करने वाले होते हैं। भगवान् महावीर अन्तिम तीर्थंकर थे। शत्रुओं का दमन करने वाला राजा कहां है ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
धनुष, कवच, बाण, तलवार, बर्छी, भाला, पताका।

२. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करो—
सर्वंकषः, विश्वंभरः, रथंतरं, शत्रुंतपः, कुक्षिंभरिः।

पाठ ७१ : खश् और णिन् प्रत्यय

शब्दसंग्रह

क्षुरम् (उस्तरा) । क्षुरकम् (ब्लेड) । उपक्षुरम् (सेफ्टीरेजर) । कर्तनी (बाल काटने की मशीन) । शस्त्रमार्जः (धार करने वाला) । तैलकारः (तेली) । रसयन्त्रम् (कोल्हू) । अयस् (लोहा, आयरन) । वृश्चनः (छेनी) । यान्त्रिकः (मिस्त्री, मैकेनिक) । पादुरञ्जकः (पालिश) । भ्राष्ट्रम् (भाड) । भृष्टकारः (भडभूजा) । नीली (नील) । शिल्पशाला (फैक्टरी) । मिलः (मिल) । आविधः (बर्मा) । सूत्रम् (धागा) । सूचिका (सूई) । चर्मप्रभेदिका (जूता सीने की सूई) । उपानह् (जूता, बूट) । पादुका (चप्पल) । अनुपदीना (गम बूट) । नीलीकरोति (नील लगाना) । अयस्-करोति (लोहा करना, आयरन करना) ।

खश् और णिन् प्रत्यय धातुओं से होते हैं । इसके उपपद (पूर्वपद) में शब्द कर्मरूप में होता है । णिन् प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति होती है । खश् प्रत्यय कर्ता के रूप में व्यवहृत होता है । इसके रूप पुल्लिग में जिन की तरह और स्त्रीलिंग में ईप् लगाकर नदी की तरह चलते हैं ।

नियम

नियम ६२३—(खित्यनव्ययस्वरान्तारुषां मुम् ह्रस्वश्च ३।२।१३६) अव्यय वर्जित स्वरान्त शब्द और अरुष शब्द को मुम् (म्) का आगम होता है और प्राप्ति होने पर ह्रस्व भी हो जाता है ख् इत् जाने वाला प्रत्यय परे हो तो । इस सूत्र से खश् प्रत्यय में सर्वत्र मुम् का आगम और ह्रस्व हो जाता है ।

नियम ६२४—(मन्याण्णिन् ५।२।४६) कर्म उपपद में हो तो मन् (मन्यते) धातु से णिन् प्रत्यय होता है । पण्डितं मन्यते बन्धुं = पण्डित-मानी बन्धोः । दर्शनीयां मन्यते भार्याम् = दर्शनीयमानी भार्यायाः ।

नियम ६२५—(आत्ममाने खश् ५।२।४७) कर्म उपपद में होने पर मन् (मन्यते) धातु से आत्म (स्वयं) के मानने के अर्थ में खश् प्रत्यय होता है । पण्डितं आत्मानं मन्यते = पण्डितंमन्यः । पट्वीं आत्मानं मन्यते = पट्विमन्या । विद्वन्मन्यः, विदुषिमन्या । णिन् प्रत्यय भी—पण्डितं आत्मानं मन्यते पण्डितमानी । पटुमानिनी, विद्वन्मानी, विद्वन्मानिनी ।

नियम ६२६—(एजेः ५।२।४८) कर्म उपपद में हो तो एजयति

धातु से खश् प्रत्यय होता है। अङ्गानि एजयति=अङ्गमेजयः। जनमेजयः। अरिमेजयः।

नियम ६२७—(शुनीस्तनमुञ्जकूलास्यपुष्पेषु धेटः ५।२।४६) कर्मरूप में ये शब्द उपपद में हों तो धयति धातु से खश् प्रत्यय होता है। शुनीं धयति=शुनिधयः। स्तनंधयः। मुञ्जंधयः। कूलंधयः। आस्यंधयः। पुष्पंधयः। स्तनंधयी कन्या।

नियम ६२८—(नाडीघटीखरीमुष्टिपाणिकरवातनासिकासु ध्मश्च ५।२।५०) कर्म रूप में ये शब्द उपपद में हों तो धमति और धयति धातु से खश् प्रत्यय होता है। नाडीं धमति धयति वा=नाडिधमः, नाडिधयः। घटिधमः, घटिधयः। मुष्टिधमः, मुष्टिधयः। पाणिधमः, पाणिधयः। करंधमः, करंधयः। वातंधमः, वातंधयः। नासिकंधमः, नासिकंधयः।

नियम ६२९—(बहुविध्वरुस्तिलेषुतुदः ५।२।५१) कर्मरूप में ये शब्द उपपद में हों तो तुदति धातु से खश् प्रत्यय होता है। बहुं तुदति=बहुंतुदं युगम्। विधुंतुदो राहुः। अरुंतुदो पीडाकरः। तिलंतुदः काकः।

नियम ६३०—(असूर्योग्रयोर्दृशः ५।२।५२) असूर्य और उग्र शब्द कर्म रूप में उपपद में हों तो दृश् धातु से खश् प्रत्यय होता है। सूर्यमपि न पश्यति=असूर्यंपश्याः राजदाराः। उग्रंपश्यः।

नियम ६३१—(ललाटे तपः ५।२।५३) ललाट शब्द कर्मरूप में हो तो तपति धातु से खश् प्रत्यय होता है। ललाटंतपः सूर्यः।

नियम ६३२—(उद्रुजोद्वहिभ्यां कूले ५।२।५५) कूल शब्द कर्मरूप में हो तो उद्रुजति और उद्वहति धातु से खश् प्रत्यय होता है। कूलमुद्रुजो वजः। कूलमुद्वहा नदी।

नियम ६३३—(वहाभ्रयो लिहः ५।२।५६) वह और अभ्र शब्द कर्मरूप में उपपद में हों तो लिह् धातु से खश् प्रत्यय होता है। वहं लेढि=वहंलिहो गौः। अभ्रंलिहः प्रासादः।

नियम ६३४—(वातशर्धयोरऽजहाभ्याम् ५।२।५७) वात शब्द कर्मरूप में पूर्वपद में हो तो अज् धातु से और शर्ध शब्द हो तो हा धातु से खश् प्रत्यय होता है। वातमजन्ति=वातमजाः मृगाः। शर्धं जहाति=शर्धजहाः माषाः।

प्रयोगवाक्य

पण्डितंमन्येन राधाश्यामेन सह स्थातुं कोऽपि नेच्छति। पट्विमन्यया सुशीलया अतिथीनां सत्कारः कथं न कृतः? विद्वन्मानिनी पुष्पा शब्दस्यार्थं कथं न वेत्ति? अद्य अङ्गमेजयः शीतो वायुः प्रचलति। अरिमेजयः नृपः विजयी जातः। जनमेजयं राज्यकरं श्रुत्वा कः सन्तुष्टोऽभवत्? स्तनंधयः मातुः दुग्धं पिबति। पुष्पंधयः मधुकरः गुञ्जति। बालः क्षुरकेण उपक्षुरेण च किं

करिष्यति ? नापितस्य पार्श्वे एकं क्षुरं एका च कर्तनी स्तः । वृद्धे ! तव सूचिका क्वापतत् ?

संस्कृत में अनुवाद करो

नाई बाल काटने की मशीन से बाल काटता है। महेन्द्र उस्तरे का क्या करेगा ? सुरेन्द्र सेफ्टीरेजर से स्वयं दाढी बना लेता है। भाभी कपडों को धोकर नील लगाती है। सोहन वस्त्रों पर आयरन करता है। तेली कोल्हू के द्वारा तिलों से तैल निकालता है। फैक्ट्री में कितने मिस्त्री हैं ? अहमदाबाद में कपडे की कितनी मिलें हैं ? बढई छेनी से लोहा काटता है और बर्मा से लकडी में छेद करता है। रमा सुई से कपडा सीती है। मोहन *जूते पर पालिश करता है। मोची के पास जूते सीने की सुई है। रमेश के* पास चप्पल नहीं है।

णिन् और खश् प्रत्यय के प्रयोग करो

राहु चन्द्रमा को ग्रसता है। सूर्य को न देखने वाली राजकन्या कैसे स्वस्थ हो ? बालक (स्तनंधयः) माता का दूध पीकर बडा होता है। रमा स्वयं को विदुषी मानती है। स्वयं को पण्डित मानने वाला मोहन भी पराजित हो गया।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
सेफ्टीरेजर, कोल्हू, छेनी, पालिश, भडभूजा, ब्लेड, उस्तरा, चप्पल।

२. कर्म उपपद में होने पर मन्यते धातु से कहां खश् प्रत्यय और कहां णिन् प्रत्यय होता है ? दोनों के विग्रह में क्या अंतर है ?

३. किन-किन धातुओं के योग में कहां-कहां खश् प्रत्यय होता है ?

पाठ ७२ : क्त, क्तवतु प्रत्यय

शब्दसंग्रह (क्त, क्तवतु के रूप)

भूतं, भूतवान् (भू) हुआ। पीतं, पीतवान् (पां) पीया। गतं, गतवान् (गम्) गया। वन्दितं, वन्दितवान् (वदि) वन्दना की, स्तुति की। कृतं, कृतवान् (कृ) किया। जग्धं, जग्धवान् (अद्) खाया। यातं, यातवान् (या) गया। अधीतं, अधीतवान् (अधि+इ) पढा। रुदितं, रुदितवान् (रुद्) रोया। जागृतं, जागृतवान् (जागृ) जागा। विदितं, विदितवान् (विद्) जाना। हतं, हतवान् (हन्) मारा। शयितं, शयितवान् (शी) सोया। आसितं, आसितवान् (आस्) बैठा। स्तुतः, स्तुतवान् (ष्टु) स्तुति की। उक्तं, उक्तवान् (ब्रू) बोला। भीतं, भीतवान् (भी) डरा। दुग्धं, दुग्धवान् (दुह्) दुहा। दत्तं, दत्तवान् (दा) दिया। धृतं, धृतवान् (धृ) धारण किया। उप्तं, उप्तवान् (वप्) बोया। तीर्णं, तीर्णवान् (तॄ) तैरा। गृहीतं, गृहीतवान (ग्रह्) ग्रहण किया। हितं, हितवान् (धा) धारण किया। पठितं, पठितवान् (पठ्) पढा। लिखितं, लिखितवान् (लिख्) लिखा। श्रुतं, श्रुतवान् (श्रु) सुना।

क्तप्रत्यय

क्त प्रत्यय का प्रयोग दो तरह से होता है। एक विशेषण के रूप में, एक अर्धक्रिया के रूप में। विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाला क्त प्रत्यय विशेष्य की किसी अवस्था को बताता है इसलिए उसमें विशेष्य के अनुसार लिंग और वचन होते हैं। प्रीतमानसानां शरीरं पुष्टं भवति। यहां प्रीत और पुष्ट क्त प्रत्ययान्त विशेषण है।

अर्धक्रिया के रूप में आने वाला क्त प्रत्यय कार्य की समाप्ति बताता है। क्त प्रत्यय जहां अर्ध क्रिया के रूप में प्रयुक्त होता है वहां उसका अर्थ होगा—किया, गया, पीया, बोला आदि। जहां क्त प्रत्यय विशेषण बनता है वहां अर्थ होता है—किया हुआ, गया हुआ, कहा हुआ आदि। क्त प्रत्यय भूतकाल में सब धातुओं से होता है। सकर्मक धातुओं से कर्म में और अकर्मक धातुओं से भाव में तथा कर्ता में होता है। क्त प्रत्यय कर्म में होता है वहां कर्म में प्रथमा और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है, क्त प्रत्ययान्त का रूप कर्म के अनुसार चलता है। भाव में क्त प्रत्यय होने से कर्त्ता में तृतीया और षष्ठी दोनों विभक्ति होती है। क्रिया में नपुंसकलिंग

और एक वचन ही रहता है। गत्यर्थक आदि धातुओं से क्त प्रत्यय कर्ता में होता है। क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार चलता है, कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—स ग्रामं गतः।

क्त प्रत्ययान्त शब्द जब विशेषण बनता है वहां उसके रूप पुल्लिग में जिन की तरह, स्त्रीलिग में सीता की तरह और नपुंसकलिंग में रत्न की तरह चलते हैं।

नियम ६३५—(नपुंसके भावे क्तः ६।१।१) नपुंसकलिङ्ग में भाव अर्थ में धातु से क्त प्रत्यय होता है। हसितं छात्रस्य। व्याहृतं रजन्याः।

नियम ६३६—(गत्यर्थाकर्मकपिबभुजेः ५।१।११) भूत आदि अर्थ में होने वाला क्त प्रत्यय गति अर्थ वाली धातुओं, अकर्मक धातुओं तथा पिब, भुज् धातुओं से कर्ता में विकल्प से होता है। दर्शनः ग्रामं गतः, दर्शनेन ग्रामः गतः, गतं दर्शनेन। आसितो भवान्। आसितं भवता। पयः पीताः गावः। पयः गोभिःपीतम्। अन्नं भुक्तास्ते। इदं तै र्भुक्तम्।

नियम ६३७—(श्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहभजजृभ्यः ५।१।१०) श्लिष्, शीङ्, स्था, आस्, वस्, जन्, रुह, भज्, जृ, इन धातुओं से क्त प्रत्यय कर्ता में विकल्प से होता है। आश्लिष्टः पिता पुत्रम्। आश्लिष्टा पुत्री पित्रा। अतिशयितो गुरुं शिष्यः। अतिशयितो गुरुः शिष्येण। उपस्थितो गुरुं शिष्यः। उपस्थितो गुरुः शिष्येण। उपासितो गुरुं शिष्यः। उपासितो गुरुः शिष्येण। उपासितं शिष्येण। अनूषितो गुरुं भवान्। अनूषितो गुरु र्भवता। अनूषितं भवता। अनुजातो माणवको माणविकाम्। अनुजाता माणविका माणवकेन। अनुजातं माणवकेन। आरूढो वृक्षं भवान्। आरूढो वृक्षो भवता। आरूढं भवता। विभक्ता भ्रातरो रिक्थम्। विभक्तं भ्रातृभिः रिक्थम्। विभक्तं भ्रातृभिः। अनुजीर्णो वृषलीं चैत्रः। (अनुप्राप्य जीर्णं इत्यर्थः)। अनुजीर्णा वृषली चैत्रेण।

क्तवतु प्रत्यय

क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में होता है। यह सब धातुओं से होता है इसका तवत् रूप शेष रहता है। यह कर्ता में होता है। इसके योग में कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। पुल्लिग में इसके रूप भवत् शब्द की तरह, स्त्रीलिंग में ईप् लगने के बाद नदी की तरह और नपुंसकलिंग में जगत् की तरह रूप चलते हैं। क्तवतु के रूप बनाने का सरल उपाय है कि क्त प्रत्यय के रूप के आगे वत् शब्द जोड दें। नीचे लिखे नियमों को ध्यान मे पढें—

नियम ६३८—(उवर्णात् ४।३।८७) उवर्ण अंतवाली, एक स्वरवाली धातु से क् इत् जाने वाले प्रत्यय परे हो तो इट् नहीं होता है। यु—युतः,

युतवान् । भू—भूतः, भूतवान् ।

नियम ६३९—(वेटोपतः ४।३।९१) पत् धातु को छोडकर वेट् धातु (जिस धातु को इट् विकल्प से होता हो) एक स्वरवाली हो तो इट् नहीं होता । रधू—रद्धः, रद्धवान् । गुहू—गूढः, गूढवान् । शमु—शान्तः, शान्तवान् ।

नियम ६४०—(आदितः ४।३।१००) आकार अनुबंध जाने वाली धातुओं से इट् नहीं होता । ञिमिदा—मिन्नः, मिन्नवान् । ञिष्विदा—स्विन्नः, स्विन्नवान् ।

नियम ६४१—(पूङ्क्लिशिभ्यो वा ४।३।८४) पूङ् और क्लिश् धातु से विकल्प से इट् होता है । पवितः, पवितवान् । पूतः, पूतवान् । क्लिशितः, क्लिशितवान् । क्लिष्टः, क्लिष्टवान् ।

नियम ६४२—(रदाभ्यां क्तयोस्तस्य नो दस्य च ५।३।७३) र और द अंतवाली धातुओं से आगे क्त और क्तवतु के त को न हो जाता है । धातु के अंत में होने वाले द को भी न हो जाता है । पूर्—पूर्णः, पूर्णवान् । गूरिण्—उद्यमे—गूर्णः, गूर्णवान् । भिद्—भिन्नः, भिन्नवान् । छिन्नः, छिन्नवान् ।

नियम ६४३—(संयोगादेरातो यलवतः ५।३।७४) संयोग आदि और आकार अंतवाली धातुएं यल प्रत्याहारवान् (धातु में य र, ल, व) हो तो क्त के त को न हो जाता है । स्त्यैं—स्त्यानः, स्त्यानवान् । ग्लैं—ग्लानः, ग्लानवान् ।

नियम ६४४—(द्व्याद्योदितः ५।३।७५) दिबादिगण की दू आदि नव (दू, षू, दी, ची, मी, री, ली, डी, व्री,) धातुओं और आकार इत् जाने वाली धातुओं के आगे क्त प्रत्यय के त को न हो जाता है । दूनः, दूनवान् । सूनः, सूनवान् । दीनः, दीनवान् । धीनः, धीनवान् । मीनः, मीनवान् । रीणः, रीणवान् । लीनः, लीनवान् । डीनः, डीनवान् । व्रीणः, व्रीणवान् । ओहांक्—हीनः, हीनवान् । ओप्यायी—पीनः, पीनवान् ।

नियम ६४५—(क्षैशुषिपचिभ्यो मकवाः ५।३।८४) क्त प्रत्यय के त को क्षै से परे म, शुष् से परे क और पच् से परे व आदेश हो जाता है । क्षामः, शुष्कः, पक्वः ।

नियम ६४६—(ऋल्ल्वादेः क्तेश्च ५।३।८२) ऋकार अंतवाली धातु तथा लू आदि धातुओं से आगे क्त, क्तवतु और क्ति प्रत्ययों के त को न हो जाता है । जॄ—जीर्णः, जीर्णवान् । तॄ—तीर्णः, तीर्णवान् । लू—लूनः, लूनवान् । धू—धूनः, धूनवान् ।

नियम ६४७—(न ध्याख्यापॄमूर्च्छिमदिभ्यः ५।३।८३) ध्या, ख्या, पॄ, मुर्च्छ, मद् धातुओं से परे क्त के त को न होने वाला नहीं होता है । ध्यातः, ध्यातवान् । ख्यातः, ख्यातवान् । पूर्तः, पूर्तवान् । मूर्तः, मूर्तवान् । मत्तः, मत्तवान् ।

नियम ५४८—(प्राद्दान आरम्भे क्ते तश् ४।४।३७) प्र उपसर्ग सहित दा धातु को तश् (त्) प्रत्यय विकल्प से होता है, आरंभ करने के अर्थ में। प्रत्तः, प्रत्तवान्। दातुं प्रारब्धवान् इत्यर्थः।

नियम ५४९—(दत् ४।४।४०) पिद्वर्जित दा धातु को दत् आदेश होता है त आदि वाला कित् प्रत्यय परे हो तो। दत्तः, दत्तवान्, दत्तिः, दत्त्वा।

नियम ५५०—(धानः ४।४।४५) धा धातु को हि आदेश होता है, क्त, क्तवतु प्रत्यय परे होने पर। विहितः, विहितवान्।

नियम ५५१—(विनिस्वन्ववेभ्यः ४।४।३८) वि, नि, सु, अनु और अव उपसर्ग सहित उभयपदी दा धातु को तश् (त्) आदेश विकल्प से होता है क्त प्रत्यय परे हो तो। वीत्तं, विदत्तम्। सूत्तं, सुदत्तम्। अनूत्तं, अनुदत्तम्। अवत्तं, अवदत्तम्।

प्रयोगवाक्य

श्रेष्ठिना भृत्यः हीनः। मोहनः मद्यपानं हीनवान्। भगवता महावीरेण संसारसमुद्रः तीर्णः। नाविकः नदीं तीर्णवान्। वृक्षभिदा वृक्षः लूनः। दुष्टः तस्य हस्तं लूनवान्। साधुना कथा ख्याता। साध्वी कथां ख्यातवती। मात्रा कष्टेन सुतः पूर्तः। सा कुटुम्बं पूर्तवती। मुनिना कषायः शान्तः। सा विवादं शान्तवती। कः बालकः घटं भिन्नवान्? भगिन्या भ्रात्रे पत्रं दत्तम्। का तस्यै पुस्तकं दत्तवती? भ्रातृजायया अन्नं पक्वम्। सूर्यातापेन सर्वं नीरं शुष्कम्।

संस्कृत में अनुवाद करो (क्त प्रत्यय के प्रयोग करो)

आचार्य श्री ने पानी कब पीया था? साधु गांव कब गये थे? क्या तुमने साधुओं को वंदना की? गोपाल ने यह कार्य क्यों नहीं किया? बिल्ली ने लड्डु कब खाये? अध्यापक ने यह पुस्तक कब पढी? बालक क्यों रोया? तुम कब जागे? राजा ने अपने मित्र की सहायता के लिए प्रचुर सेना युद्ध में भेज दी। वक्त पडने पर भी जो काम न आये वह मित्र किस काम का। मयूरों ने आकाश में बादल देखे और नाचना शुरू किया। मुर्गी अपने बच्चों को देखने के लिए दौडी। राजा ने मित्रता का अच्छा निर्वाह किया।

क्रियाविशेषण के रूप में क्त प्रत्यय का प्रयोग करो

मेंरे द्वारा पढी हुई पुस्तक कहां है? रमेश द्वारा दिया गया धन कहां है? ग्वाले द्वारा दुही गई गाय कौन सी है? किसान द्वारा बोया हुआ बीज कहां है? विनय द्वारा स्तुति किये गये देव कौन से हैं?

(क्तवतु के प्रयोग करो) चोर ने एक व्यक्ति को मार दिया। तुम

कहां सोये थे ? वर्षा कब हुई ? रमा उससे क्यों डरी ? महेन्द्र ने दूध नहीं पिया । कान्ता ने रोटी नहीं खाई । बच्चा क्यों रोता था ?

अभ्यास

१. हिंदी में अनुवाद करो—
मया एष पाठः उत्तराध्ययनसूत्रादुद्धृतः । मया उद्धृतः पाठः समीचीनोऽस्ति । संघसंघटनप्रणाली श्रीमद् भिक्षुस्वामिना कामं परिष्कृता । श्रीतुलसीगणिना परिष्कृता पठनप्रणालिः समस्ति महत्युपयोगिनी । मघवागणिना उप्तं संस्कृतबीजं कालुहृदये शतधा अंकुरितम् । रामः किं पुस्तकं पठितवान् ? विमला एतद् कार्यं कदा कृतवती ? उपस्थितो गुरुं शिष्य : । उपस्थितो गुरुः शिष्येण । उपस्थितं शिष्येण ।

२. विशेषण के रूप में क्त प्रत्यय का प्रयोग करो—
आहता, अश्रितम्, अभिहितः, रुदितम्, जागृतम् ।

३. अर्धक्रिया के रूप में क्त प्रत्यय का प्रयोग करो—
प्रणतम्, गताः, उक्तः, पृष्टम् ।

४. निम्नलिखित धातुओं के क्त, क्तवतु, प्रत्ययों के रूप बताओ—
ष्विदा, क्लिश्, छिद्, पच्, प्याय, तॄ, मुच्छी पॄ, वि+दा, प्र+दा, धा ।

पाठ ७३ : क्वसु, कान प्रत्यय

शब्दसंग्रह (क्वसु और कान प्रत्यय के रूप)

बभूवान् (भू) हुआ था। पपिवान् (पां) पीया था। जग्मिवान् (गम्) गया था। ववन्दानः (वदिङ्) स्तुति की थी। चक्रिवान्, चक्राणः (कृ) किया था। शिश्यानः (शी) सोया था। जक्षिवान्, आदिवान् (अद्) खाया था। ययिवान (यांक्) गया था। अधीयिवान् (अधि+इ) पढा था। रुरुदवान् (रुद्) रोया था। विविदवान् (विद्) जाना था। तुष्टुवान्, तुष्टुवानः (ष्टु) स्तवना की थी। बिभीवान् (भी) डरा था। नेशिवान् (णश्) नष्ट हुआ था। प्रप्रच्छवान् (प्रच्छ्) पूछा था। पिपिषवान् (पिष्) पीसा था। तेनिवान्, तेनानः (तन्) विस्तार किया था। जजागृवान् (जागृ) जागा था। दुदुहानः (दुह्) दुहा था। ननृतवान् (नृत्) नाचा था। शुश्रुवान् (श्रु) सुना था। ममृज्वान् (मृंज्) साफ किया था। जज्ञिवान् (ज्ञा) जाना था। जघ्निवान्, जघ्नवान् (हन्) मारा था। बुबुधानः (बुध्) जाना था। मेनानः (मन्) जाना था। ददिवान्, ददानः (दा) दिया था। ररञ्जवान्, ररञ्जानः (रञ्ज्) प्रीति की थी। रुरुध्वान्, रुरुधानः (रुध्) रोका था। जगृह्वान्, जगृहाणः (ग्रह्) ग्रहण किया था। ऊचिवान्, ऊचानः (ब्रू) बोला था।

क्त, क्तवतु, क्वसु और कान—ये चार भूतकालिक कृदन्त प्रत्यय हैं। इनमें पहले दो सामान्य भूत में व्यवहृत होते हैं। शेष दो परोक्ष भूत में प्रयुक्त किए जाते हैं। क्त के सिवाय शेष तीन प्रत्यय कर्ता में ही होते हैं। क्त, क्तवतु सब धातुओं से होता है। क्वसु परस्मैपद धातुओं से और कान आत्मने पद धातुओं से होता है। क्वसु और कान भी दो प्रकार से प्रयोग में आते हैं—अर्द्ध क्रिया के रूप में (२) विशेषण के रूप में।

१. भारीमलस्वामी दिनद्वयानन्तरमेव पुनः भगवतोः भिक्षोः शरणं **समासेदिवान्** (समादितवान्)

२. **मोदमीयिवान्सं** भारमलस्वामिनं परिलोक्य पित्रा विस्मितम् (यः मोदं इतवान् तं परिलोक्य)

३. श्री भिक्षोः सेवां **अध्यूषुषा** (सेवामध्युषितेन) भारमलस्वामिना स्वजीवनं उदाहरणस्वरूपमकारि।

पहले वाक्य में अर्ध क्रिया के रूप में है और शेष दो वाक्यों में विशेषण के रूप में है। गहरे अक्षरों से चिह्नित शब्द क्वसु प्रत्यय के रूप में

है। कोष्ठक में क्तवतु या क्त प्रत्यय के द्वारा अर्थ स्पष्ट किया गया है। आधुनिक वैयाकरण या प्रयोक्ता क्वसु और कान को साधारण भूत में भी प्रयोग करते हैं। क्वसु और कान प्रत्यय के योग में कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया और क्रिया कर्ता के अनुसार होती है।

प्रयोगवाक्य

सीता कदा बभूववती ? शीतलः तातं प्रश्नं पपृच्छवान्। सा गां दुदुहाना। रामः रावणं जघ्निवान्। तस्मै कः पुस्तकं ददिवान् ? बालिका मिष्टान्नं जक्षिवती। मातुली चौरात् बिभीवती। दुग्धं पपिवान्सं बालकं पश्य। विद्यालयं जग्मिवान्सं छात्रं कथय। दुष्करं कार्यं चक्रिवान्सं हनुमन्तं सर्वेऽपि प्रणमन्ति। वित्तं नेशिवान् श्रेष्ठी अत्र समाययौ। रावणं जघ्निवान् रामः दाशरथिरासीत्। महावीरं प्रप्रच्छवान् गौतमः कुत्रत्यः आसीत् ? दुष्करं कार्यं चक्राणः एव महान् भवति।

संस्कृत में अनुवाद करो (क्वसु, कान के प्रयोग करो)

त्रिपृष्ठ वासुदेव कब हुए थे ? क्या शंकर ने जहर पीया था ? मोहन विद्यालय गया था। छात्र ने श्रम किया था। नौकर जमीन पर सोया था। आनन्द ने फल नहीं खाया था। सतीश ने यह पुस्तक पढी थी। राम के वन जाने पर कौशल्या रोई थी। केवलज्ञानियों ने आत्मा को जाना था। द्रौपदी ने वीतराग देव की स्तवना की थी। मोहन गाय से डरा था। अरविन्द ने किसको प्रश्न पूछा था ? कृष्ण ने कंस को मारा था। स्त्रियों ने रात में गेहूं पीसा था। सोहन कब जगा था ? दिन में वर्षा हुई थी। शादी के समय युवक नाचे थे। भगवान महावीर से सुधर्मास्वामी ने यह सुना था। सुदत्त ने मुनियों को दान दिया था। पिता ने पुत्र को कुमार्ग से रोका था। भगवान ऋषभ ने बाहुबलि को क्या कहा था ? सुधर्मा को जिसने प्रश्न पूछा वे जम्बू कहां के थे ? महावीर को जिसने प्रश्न पूछा वे गौतम प्रथम गणधर थे। कंस को जिसने मारा वे कृष्ण मथुरा के थे।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

सा मम कथनं न शुश्रुवान्। मदनेन तत्वं जज्ञिवान्। रात्रौ नटाः ननृतवान्। सीमा मम पुस्तकं जगृहवान्। पितामही कदा जजागृवान् ? सा कथं रुरुदवान् ? ते ग्रामं ययिवान्।

२. निम्नलिखित धातुओं के क्वसु प्रत्यय के रूप बताओ—

अद्, भी, भू, कृ, विद्, श्रु, हन्।

३. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो—

ददानः, बुबुधानः, रुरुधानः, जगृहाणः, तेनानः, ववन्दानः।

पाठ ७४ : शीलादि प्रत्यय (१)

शब्दसंग्रह

निराकरिष्णुः (निराकरण करने वाला) । भविष्णुः (होने वाला) । सहिष्णुः (सहन करने वाला) । रोचिष्णुः (रुचिवाला, कांतिवाला) । वर्धिष्णुः (बढने वाला) । चरिष्णुः (चलने वाला, खाने वाला) । प्रजनिष्णुः (उत्पन्न होने वाला) । अपत्रपिष्णुः (लज्जा करने वाला) । ग्लास्नुः, म्लास्नुः (खिन्न रहने वाला) । स्थास्नुः (स्थिर रहने वाला, स्थायी) । पक्ष्णुः (पकाने वाला) । परिमार्क्ष्णुः (साफ करने वाला) । गृध्नुः (आसक्त होने वाला) । क्षिप्णुः (फेंकने वाला) । जिष्णुः (जीतने वाला) । श्रमी (श्रम करने वाला) । प्रमादी (प्रमाद करने वाला) । दमी (दमन करने वाला) । भोगी भोगने वाला) । त्यागी (छोडने वाला) । द्रोही (द्रोह करने वाला) । दोही (दुहने वाला) । संरोधी (रोकने वाला) । विस्रंसी (हिंसा करने वाला) । विदाही (जलाने वाला) । अनुवादी (अनुवाद करने वाला)

तृन्, इष्णु, स्नु, क्नु, ष्णुक्, घिनुण्, णक प्रत्यय

शीलादि में तीन अर्थ हैं—१. शील (स्वभाव) २. धर्म (कुल आदि आचार) । ३. साधु (अच्छा) । तृन्, इष्णु आदि उपरोक्त सारे प्रत्यय शील आदि अर्थों में कर्ता में होते हैं । इन प्रत्ययों के रूप कर्ता या कर्ता के विशेषण के रूप में प्रयोग में आते हैं । विवक्षा से कर्म आदि अन्य कारकों में भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।

नियम ६५२—(शीलधर्मसाधुषु तृन् ५।३।१३) शील, धर्म और साधु अर्थों में तृन् प्रत्यय होता है । कर्ता कटं (शील) । वधूमूढां मुण्डयितारः श्राविष्ठानां (धर्म) । मुण्डनादि तेषां कुलधर्मः । गन्ता ग्रामम् (साधु) । साधु गच्छति इत्यर्थः

नियम ६५३—(भ्राज्यलंकृन्निराकृन्भूसहिरुचिवृतिवृधिचरिप्रजनापत्रप इष्णुः ५।३।१४) भ्राज्, अलंकृन्, निराकृन्, भू, सह्, रुच्, वृत्, वृध्, चर्, प्रजन्, अपत्रप् धातुओं से इष्णु प्रत्यय होता है । भ्राजिष्णुना लोहित-चंदनेन । अलंकरिष्णुः । निराकरिष्णुः, भविष्णुः, सहिष्णुः, रोचिष्णुः, वर्तिष्णुः, वर्धिष्णुः, चरिष्णुः, प्रजनिष्णुः, अपत्रपिष्णुः ।

नियम ६५४—(उदः पचिपतिपदिमदिभ्यः ५।३।१५) उत् पूर्वक पच्, पत्, पद् और मद् धातु से इष्णु प्रत्यय होता है । उत्पचिष्णुः,

उत्पतिष्णुः, उत्पदिष्णुः, उन्मदिष्णुः ।

नियम ६५५—(ग्लाम्लास्थाक्षिपचिपरिमृजिभ्यः स्नुः ५।३।१६) इन धातुओं से स्नु प्रत्यय होता है। ग्लास्नुः, म्लास्नुः, स्थास्नुः, क्षेष्णुः, पक्ष्णुः, परिमार्क्ष्णुः ।

नियम ६५६—(त्रसिगृधिधृषिक्षिपिभ्यः क्नुः ५।३।१७) इन धातुओं से क्नु (नु) प्रत्यय होता है। त्रस्नुः, गृध्नुः, धृष्णुः, क्षिप्णुः ।

नियम ६५७—(जिभूभ्यां ष्णुक् ५।३।१८) जि और भू धातु से शील आदि अर्थ में ष्णुक् प्रत्यय होता है। जिष्णुः, भूष्णुः ।

नियम ६५८—(शमष्टकाद् घिनुण् ५।३।१९) शम आदि आठ धातुओं से घिनुण् (इन्) प्रत्यय होता है। शमी, दमी, तमी, श्रमी, भ्रमी, क्षमी (मान्तत्वात् न वृद्धिः) । प्रमादी, क्लमी ।

नियम ६५९—(युजभुजभजत्यजरञ्जद्विषदुषद्रुहदुहभ्याहनिभ्यः ५।३।२०) इन धातुओं से घिनुण् प्रत्यय होता है। युज्यते युनक्ति वा इत्येवंशीलो योगी। भोगी, भागी, त्यागी, रागी, द्वेषी, दोषी, द्रोही, दोही, अभ्याघाती ।

नियम ६६०—(समनुव्यवेभ्यो रुधः ५।३।२१) सं, अनु, वि, अव पूर्वक रुध् धातु से घिनुण् प्रत्यय होता है। संरोधी, अनुरोधी, विरोधी, अवरोधी ।

नियम ६६१—(वेः सृजविचकत्थस्रम्भुद्रुकषकसलषसृदहहनिभ्यः ५।३।२५) वि पूर्वक सृज् आदि धातुओं से घिनुण् प्रत्यय होता है। विसृजति इत्येवं शीलो विसर्गी। विवेकी, विकत्थी, विस्रंभी, विद्रावी, विकाषी, विकासी, विलासी, विसारी, विदाही, विघाती ।

नियम ६६२—(संपरिव्यनुप्रेभ्यो वदः ५।३।२९) सं, परि, वि, अनु, प्र पूर्वक वद् धातु से घिनुण् प्रत्यय होता है। संवादी, परिवादी, विवादी, अनुवादी, प्रवादी ।

नियम ६६३—(परेः क्षिपरटवादिभ्यो णकश्च ५।३।३१) परिपूर्वक क्षिप्, रट्, वद् धातु से घिनुण् और णक प्रत्यय होता है। परिक्षेपी, परिक्षेपकः। परिराटी, परिराटकः। परिवादी, परिवादकः ।

प्रयोगवाक्य

विवादं निराकरिष्णुः कुत्र गतः ? मुनिः भविष्णुः कुत्रत्योऽयम् ? शरीरं रोचिष्णुः धनपालः कतिवारं स्नाति। त्वं वर्धिष्णुः भूयाः। घासं चरिष्णुः गौः वनं अगमत्। श्वः प्रजनिष्णुः शिशुः कोऽस्ति ? इयं बाला अपत्रपिष्णुः अस्ति। त्वं केन कारणेन ग्लास्नुः म्लास्नुः वा अभूः ? अन्नं पक्ष्णुः कुत्रत्योऽस्ति ? अस्मिन् विष्टपे कोऽस्ति स्थास्नुः ? अपवरकं परिमार्क्ष्णुः क्व गतः ? विषये गृध्नुः मा भव। कष्टे समागतेऽपि त्रस्नुः मा भव। अयं उपलं क्षिप्णुः बालकः कस्य पुत्रोऽस्ति ?

संस्कृत में अनुवाद करो

दुसरों के कटु वचनों को सहन करने वाला ही पूज्य होता है। विषयों में आसक्त होने वाला कर्मों का बन्धन करता है। तुम कर्म शत्रुओं को जीतने वाले बनो। इंद्रियों का दमन करने वाला सुख का अनुभव करता है। भारतीय संस्कृति में गृहत्याग करने वाले का आदर होता है। विषयों का भोग करने वाला दुःखी बनता है। गुरु का द्रोह करने वाला सद्गति में नहीं जाता। सदा श्रम करने वाले बनो। अनुरोध करने वाला नम्र बनता है। क्या इस सडक पर अवरोधी चिह्न है ? विरोधियों को ठीक से समझो। इसका संवादी प्रमाण कौनसा है ? विवादी प्रतिदिन विवाद करता रहता है। परिवाद करने वाला यह कौन है ? विवेकी व्यवहार जगत् में शान्ति से जीता है। विलासी जीवन का त्याग करो।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो—
प्रजनिष्णुः, अपत्रपिष्णुः, ग्लास्नुः, गृध्नुः, संरोधी, विदाही।

२. नीचे लिखे शब्द किस सूत्र से बने हैं ?
सहिष्णुः, प्रमादी, त्यागी, विकासी, अनुवादी, अनुरोधी।

पाठ ७५ : शीलादि प्रत्यय (२)

शब्दसंग्रह

निन्दकः (निंदा करने वाला) । असूयकः (दूसरों के गुणों में दोष का आरोपण करने वाला) । चकासकः (चमकने वाला) । दरिद्रायकः (दरिद्र) । खादकः (खाने वाला) । गणकः (गिनने वाला) । शारुकः (हिंसा करने वाला) । स्थायुकः (स्थिर रहने वाला) । उत्पातुकः (ऊपर उडने वाला) । उपपादुकः (स्वयं उत्पन्न होने वाला) । चलनः, कंपनः (कांपने वाला) । वराकः (याचना करने वाला) । भिक्षाकः (भिक्षा करने वाला) । जल्पाकः (बोलने वाला) । कुट्टाकः (तोडने वाला) । लुण्टाकः (लूंटने वाला) । स्थावरः (ठहरने वाला) । भास्वरः (चमकने वाला) । पेस्वरः (ध्वंस करने वाला, पीसने वाला) । प्रमदवरः (प्रमाद करने वाला) । सत्वरः (गमन-शील) । जित्वरः (जीतने वाला) । कम्प्रः (कांपने वाला) । स्वप्नक् (सोने वाला) । तृष्णक् (प्यासा) । धृष्णक् (धृष्ट, लज्जारहित) । शरारुः (हिंसा करने वाला) । वन्दारुः (वन्दना करने वाला, स्तुति करने वाला) । भीरुः, भीरुकः, भीलुकः (डरने वाला) । ददृत् (फाडने वाला) । दिद्युत् (चमकने वाला) ।

णक, उकण्, अन्, षाक, वर, क्वरप्, र, नजिङ्, आरु, क्रु, क्रुक, क्लुक, क्विप्, प्रत्यय

नियम ६६४—(निंदहिंसक्लिशखादविनाशिव्याभाषासूयाऽनेकस्वरेभ्यः ५।३।३२) इन धातुओं से शीलादि अर्थ में णक प्रत्यय होता है । निंदकः, हिंसकः, क्लेशकः, खादकः, विनाशकः, व्याभाषकः, असूयकः । अनेक स्वर—दरिद्रायकः, चकासकः, गणकः ।

नियम ६६५—(उपसर्गाद् देवृदेविक्रुशिभ्यः ५।३।३३) उपसर्गपूर्वक देव, देवि और क्रुश् धातु से णक प्रत्यय होता है । आदेवते इत्येवंशीलः आदेवकः । परिदेवकः, आक्रोशकः, परिक्रोशकः ।

नियम ६६६—(शृकमगमहनवृषभूस्थाभ्य उकण् ५।३।३४) इन धातुओं से उकण् प्रत्यय होता है । शृणाति इत्येवं शीलः शारुकः । कामुकः, गामुकः, घातुकः, वर्षुकः, भावुकः । स्थायुकः प्रमत्तः । उपस्थायुकः गुरुम् । गुणान् अधिष्ठायुकः ।

नियम ६६७—(लषपतपदिभ्यः ५।३।३५) इन धातुओं से उकण्

प्रत्यय होता है। अभिलाषुकः। उत्पातुकं ज्योतिः। उपपादुका देवी।

नियम ६६८—(चलशब्दार्थादकर्मकात् ५।३।३७) चल अर्थवाली, शब्द अर्थवाली अकर्मक धातुओं से शीलादि अर्थ में अन प्रत्यय होता है। चलनः, कम्पनः, चोपनः, चेष्टनः। शब्दनः, रवणः, आक्रोशनः।

नियम ६६९—(वृङ्भिक्षिलुण्टिजल्पिकुट्टिभ्यः षाकः ५।३।४०) इन धातुओं से शीलादि अर्थ में षाक प्रत्यय होता है। वराकः, वराकी। भिक्षाकः, लुण्टाकः, जल्पाकः, कुट्टाकः।

नियम ६७०—(स्थेशभासकसपिसप्रमदो वरः ५।३।५४) स्था आदि धातुओं से शीलादि अर्थ में वर प्रत्यय होता है। तिष्ठति इत्येवंशीलः स्थावरः। ईश्वरः, भास्वरः, विकस्वरः, पेस्वरः, प्रमदवरः।

नियम ६७१—(यायावरः ५।३।५५) यङन्तयाति धातु से शील अर्थ में वर प्रत्यय करने पर यायावर शब्द निपात है। कुटिलं याति इत्येवं शीलो यायावरः।

नियम ६७२—(सृजीण्नशेः क्वरप् ५।३।५६) सृ, जि, इ और नश् धातु से शीलादि अर्थ में क्वरप् प्रत्यय होता है। सृत्वरः, जित्वरः, इत्वरः, नश्वरः। गत्वरः शब्द निपात है।

नियम ६७३—(दीपिकम्पिस्म्यजसिहिंसिकमिनमो रः ५।३।५८) दीप्, कम्प्, स्मि, अजस्, हिंस्, कम्, नम्, धातुओं से शील आदि अर्थ में र प्रत्यय होता है। दीप्रः दीपः। कम्प्रा शाखा। स्मेरं मुखं। अजस्रं श्रवणं। हिंस्रो व्याधः। कम्रा युवतिः। नम्रः।

नियम ६७४—(तृषिधृषिस्वपो नजिङ् ५।३।५९) तृष्, धृष्, और स्वप् धातुओं से शीलादि अर्थ में नजिङ् (नज्) प्रत्यय होता है। तृष्णक्, तृष्णजौ, तृष्णजः। धृष्णक्, स्वप्नक्।

नियम ६७५ (शृवन्देरारुः ५।३।६०) शृ और वन्द् धातु से शील आदि अर्थ में आरु प्रत्यय होता है। शृणाति इत्येवं शीलः शरारुः। विशीर्यते विशरारुः। वन्दते वन्दारुः।

नियम ६७६—(भियः क्रुक्रुकक्लुकाः ५।३।६१) भी धातु से शीलादि अर्थ में क्रु, क्रुक और क्लुक प्रत्यय होता है। भीरुः, भीरुकः, भीलुकः।

नियम ६७७—(दिद्युद्ददृत्·····५।३।६२) शील आदि अर्थ में क्विप् प्रत्ययान्त ये शब्द निपात हैं—दिद्युत्, ददृत्, जगत्, जुहोति इति जुहूः। वक्तीति वाक्। पृच्छति इति प्राट्। शब्दप्राट्, तत्वप्राट्। दधाति ध्यायति वा धीः। श्रयतीति श्रीः। शतं द्रवतीति शतद्रूः। स्रवतीति स्रूः। जवतीति जूः। आयतं स्तौतीति आयतस्तूः। कटं प्रवते कटप्रूः। परिव्राजतीति परिव्राट्। विभ्राट्। भाषते इति भाः। भासौ, भासः। पिपर्तीति पूः। पुरौ, पुरः इत्यादि।

प्रयोगवाक्य

गुरूणां निन्दकः, जीवानां हिंसकः, नराणां क्लेशकः, सदाचरणानां विनाशकः, परेषां असूयकश्च मृत्वा कुत्र याति ? मुनीनां कोऽस्ति चकासकः ? नृषु कोऽस्ति दरिद्रायकः ? एतेषां वस्त्राणां कोऽस्ति गणकः ? कालसौकरिकः महिषीनां शरारुः, शारुकः वा आसीत् । जीवानां घातुकः निर्दयी भवति । अरे ! लुण्टाकाः नगरं लुण्टन्ति । पृथ्वीकायस्य जीवः स्थावरोऽस्ति । आचार्यस्य भास्वरं ललाटं दृष्ट्वा हेमन्तः आकृष्टोऽभूत् । विकस्वराणि पुष्पाणि द्रष्टुं मालाकारः उद्याने समायात् । नश्वरं इदं शरीरम् । अस्मिन् संसारे समागता सर्वेऽपि गत्वराः सन्ति । रमेशः गजात् भीरुः, भीरुकः, भीलुको वा, न मूषकात् ।

संस्कृत में अनुवाद करो

गुरुओं की निंदा करने वाला सद्गति में नहीं जाता है । जीवों की हिंसा करने वाला दुर्गति में जाता है । अधिक खाने वाला बीमार होता है । अधिक बोलने का कोई विश्वास नहीं करता है । वह पुत्र की कामना करती है । भिक्षा करने वाले कहां गये ? भाषण बोलने वाला कहां का है ? विकसित होने वाला देश कौन सा है ? षट्खंड को जीतने वाला राजा कौन है ? यह जीवन नष्ट होने वाला है । आचार्य को वंदना करने वाले मुनि कहां गये ? स्वयं उत्पन्न होने वाले देव और नरक हैं । ऊपर उडने वाला पक्षी कौनसा है ? अन्न पीसने वाला कहां है ? किसी कार्य में लापरवाह मत बनो । यह लज्जा रहित है । रात्रि में चमकने वाला तारा कौनसा है ? इस संसार में कौन स्थिर रहने वाला है ? गमनशील व्यक्ति अपने लक्ष्य को पा लेता है । शिला को तोडने वाला व्यक्ति कहां गया ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्द किस धातु के और किस प्रत्यय के हैं, बताओ ?
खादकः, आवेदकः, गामुकः, चलनः, भास्वरः, स्थायुकः, सृत्वरः, तृष्णक्, भीरुकः, शरारुः ।

२. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करो—
उत्पातुकः, शारुकः, जित्वरः, जल्पाकः, वन्दारुः ।

पाठ ७६ : शीलादि प्रत्यय (३)

शब्दसंग्रह

चिकीर्षुः (करने का इच्छुक)। भिक्षुः (भिक्षा करने वाला)। आशंसुः (इच्छा करने वाला)। प्रसवी (उत्पन्न होने वाला)। अत्ययी (नष्ट होने वाला)। विश्रयी (सहारा लेने वाला)। अभ्यमी (सामने जाने वाला)। वमी (वमन करने वाला)। अव्यथी (पीडा नहीं देने वाला)। श्रद्धालुः (श्रद्धा करने वाला)। शयालुः (सोने वाला)। पतयालुः (गिरने वाला)। मृगयालुः (खोजने वाला)। दारुः (दानशील)। सेरुः (बांधने वाला)। सूमरः (गमनशील)। अद्मरः, घस्मरः (खाने वाला)। भंगुरः (नष्ट होने वाला)। भासुरः (दीप्त होने वाला)। मेदुरः (अतिशय स्निग्ध, अतिशय स्नेह वाला)। विदुरः (जानने वाला)। छिदुरः, भिदुरः (काटने वाला)। यायाजूकः (बार-बार यज्ञ करने वाला)। जंजपूकः, वावदूकः (बार-बार बोलने वाला, वातूनी व्यक्ति)। दंदशूकः (जिसका डंसने का स्वभाव हो) चक्रिः (करने वाला)। जज्ञिः (जानने वाला)। सासहिः (बार-बार या अधिक सहन करने वाला)। चाचलिः (बार-बार या अधिक चलने वाला)। वावहिः (बार-वार वहन करने वाला)।

उ, इन्, आलु, रु, मरक्, घुर, अक, कि प्रत्यय

नियम ६७८—(सन्नाशंसिभिक्षिभ्यः उः ५।३।४१) सन् प्रत्ययान्त धातु, आशंस् और भिक्ष् धातु से शीलादि अर्थ में उ प्रत्यय होता है। चिकीर्षति इत्येवंशीलः चिकीर्षुः। आशंसुः। भिक्षुः।

नियम ६७९—(प्राज्जुसूभ्यामिन् ५।३।४३) प्र, परा पूर्वक जु और सू धातु से शीलादि अर्थ में इन् प्रत्यय होता है। प्रजवति इत्येवंशीलः प्रजवी। प्रसुवति इत्येवंशीलः प्रसवी।

नियम ६८०—(जीण्दृक्षिविश्रिपरिभूवमाभ्यमाव्यथिभ्यः ५।३।४४) जि, इण् आदि धातुओं से शीलादि अर्थ में इन् प्रत्यय होता है। जयी, विजयी। अत्ययी, आदरी, क्षयी, विश्रयी, परिभवी, वमी, अभ्यमी, अव्यथी।

नियम ६८१—(श्रद्धानिद्रातन्द्राशीङ्दयिपतिगृहिस्पृहिभ्यः आलुः ५।३।४५) इन धातुओं से शीलादि अर्थ में आलु प्रत्यय होता है। श्रद्धालुः, निद्रालुः, तन्द्रालुः, शयालुः, दयालुः, पतयालुः, गृहयालुः, मृगयालुः, लज्जालुः, ईर्ष्यालुः।

नियम ६८२—(शदिसदिधेड्दासिभ्यो रुः ५।३।४६) इन धातुओं से शीलादि अर्थ में रु प्रत्यय होता है। शीयते शद्रुः। सीदति सद्रुः। धयति धारुः। ददाति, दयते, यच्छति, द्यति, दायति, दाति वा इत्येवंशीलो दारुः। सिनोति सेरुः।

नियम ६८३—(स्रदिघसो मरक् ५।३।४७) सृ, अद्, घस् धातु से शीलादि अर्थ में मरक् प्रत्यय होता है। सृमरः, अद्मरः, घस्मरः।

नियम ६८४—(भञ्जिभासिमिदो घुरः ५।३।४८) इन धातुओं से शीलादि अर्थ में घुर प्रत्यय होता है। भज्यते स्वयमेव इत्येवंशीलं भङ्गुरं काष्ठं। भासुरं वपुः। मेदुरः।

नियम ६८५—(वेत्तिछिदिभिदिभ्यः कित् ५।३।४९) इन धातुओं से शीलादि अर्थ में कित् संज्ञा वाला घुर प्रत्यय होता है। वेत्तीति विदुरः। छिदुरः, भिदुरः।

नियम ६८६—(जागरूकः ५।३।५०) जागृ धातु से शीलादि अर्थ में ऊक प्रत्यय होता है। जागरूकः।

नियम ६८७—(यजिजपिदंशिवदो यङ् ५।३।५१)। यज् आदि धातु यङन्त हो तो शीलादि अर्थ में ऊक प्रत्यय होता है। भृशं पुनःपुनर्वा यजति *इत्येवंशीलो यायजूकः*। जंजपूकः, दंदशूकः, वावदूकः।

नियम ६८८—(सासहिचाचलिवावहिपापतयः कौ ५।३।५२) सह्, चल्, वह् और पत् धातु यङन्त में शीलादि अर्थ में कि प्रत्ययान्त निपात है। सासहिः, चाचलिः, वावहिः, पापतिः।

नियम ६८९—(सस्रिचक्रिदधिजज्ञिनेमयः ५।३।५३) शीलादि अर्थ में कि प्रत्ययान्त ये शब्द निपात हैं। सरति इत्येवंशीलः सस्रिः। करोति चक्रिः। दधाति दधिः। जायते जानाति वा जज्ञिः। नमति नेमिः।

प्रयोगवाक्य

धनं अत्ययि चकास्ति। आनंदः जिनप्रवचने श्रद्धालुरासीत्। पतयालुं वृक्षं पश्य। राक्षसः कं अद्मरोऽस्ति? भंगुरं जीवनं ज्ञानिनः न विश्वसन्ति। श्यामः संस्कृतं विदुरोऽस्ति। काष्ठं छिदुरः, भिदुरः वा कुत्र निवसति? जंजपूकानां न कोऽपि प्रत्ययं कुरुते? अयं वावदूकोऽस्ति। दुष्करं कार्यं चक्रिः कोऽस्ति? तत्वं जज्ञिः भव। सा लज्जालुरस्ति। मृगं मृगयालुः वने गतः?

संस्कृत में अनुवाद करो

रमेश यह कार्य करने का इच्छुक है। तुम आगम में श्रद्धा करने वाले बनो। अधिक नींद लेने वाले मत बनो। पत्ता वृक्ष से पडने वाला है। स्त्री लज्जा वाली है। सोहन ईर्ष्या वाला है। बालक सोने वाला है। वह ज्ञान

देने वाला है। मोहन लड्डू खाने वाला है। यह जीवन नष्ट होने वाला है। श्राविका तत्व जानने वाली है। रमेश लकडी को काटने वाला है। ब्राह्मण बार-बार यज्ञ करने वाला है। सोहन बार-बार बोलने वाला है। मच्छर बार-बार डंसने वाला है। साधु आत्मा के प्रति जागने वाला है। तत्व को खोजने वाले बनो। गाय को बांधने वाला कहां गया ? धर्म का सहारा लेने वाला सुखी होता है। यह पदार्थ अतिस्निग्ध है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—
दयालुः, अद्मरः, दारुः, वावदूकः, मेदुरः।

२. नीचे लिखे प्रत्यय किन-किन धातुओं से होते हैं ?
उ, ऊक, इन्, घुर।

३. नीचे लिखे शब्दों का विग्रह करो—
नेमिः, प्रसवी, दारुः, भङ्गुरं, धारुः, भिक्षुः।

पाठ ७७ : भाव

शब्दसंग्रह

कान्दविकः (हलवाई) । कुण्डली (जलेबी) । अमृती (इमरती) । हैमी (बर्फी) । पिण्डः (पेडा) । कौष्माण्डम् (पेठे की मिठाई) । दुग्धपूपिका (गुलाबजामुन) । रसगोलः (रसगुल्ला) । शर्करापालः (शक्करपारा) । मधुमण्ठः (बालूशाही) । सन्तानिका (मलाई) । कूर्चिका (रबडी) । कलाकन्दः (कलाकन्द) । पर्पटी (पपडी) । घृतपूरः (घेवर) । मधुशीर्षः (खाजा) । मिष्टपाकः (मुरब्बा) । वातासः (बताशा) । मोहनभोगः (मोहनभोग) । गजकः (गजक) ।

भाव

भाव का अर्थ है—क्रिया । भाव में प्रत्यय होने का अर्थ है क्रिया में प्रत्यय होना । भावस्यैकत्वाद्—भाव एक होता है, इसलिए क्रिया में एक वचन ही होता है । किसी भी कारक में प्रत्यय न होने से क्रिया किसी भी कारक के पीछे नहीं चलती । कर्ता किसी भी पुरुष, वचन व लिंग का हो उससे क्रिया के रूप में कोई अन्तर नहीं होता है । कर्ता में तृतीया विभक्ति ही रहती है । जैसे—

मया गम्यते	त्वया गम्यते	तेन गम्यते
आवाभ्यां गम्यते	युवाभ्यां गम्यते	ताभ्यां गम्यते
अस्माभिः गम्यते	युष्माभिः गम्यते	तैः गम्यते
तया गम्यते	ताभिः गम्यते	

भाव में प्रत्यय होने से आत्मनेपद, एकवचन और नपुंसक लिंग होता है । जैसे—

मया गतं, अस्माभि गतं । तेन गतं, तैः गतं, तया गतं, ताभिः गतम् ।

कुछ प्रत्यय भाव में स्त्रीलिंग में भी होते हैं, उनको नीचे दिया जा रहा है ।

नियम ६९०—(गापापचो भावे ५।४।९१) गा, पा (पिब) और पच् धातु से भाव में क्ति प्रत्यय स्त्रीलिंग में होता है । प्रगतिः, संगीतिः । प्रपीतिः संपीतिः । पक्तिः, प्रपक्तिः ।

नियम ६९१—(स्थो वा ५।४।९२) स्था धातु से भाव में क्ति प्रत्यय विकल्प से होता है, पक्ष में ङ प्रत्यय भी । प्रस्थितिः, उपस्थितिः ।

आस्था, व्यवस्था, संस्था ।

नियम ६९२—(आस्यटिव्रजियजः क्यप् ५।४।९३) आस्, अट्, व्रज्, यज्, धातुओं से भाव में क्यप् प्रत्यय स्त्रीलिंग में होता है। आस्या, अट्या, व्रज्या, इज्या ।

(भावे ५।४।१२०) भाव में णक प्रत्यय स्त्रीलिंग में होता है। आसिका, शायिका, जीविका, कारिका । देखें (नियम ६०९)

नपुंसक लिंग में

(नपुंसके भावे क्तः ६।१।१) सब धातुओं से भाव में क्त प्रत्यय नपुंसक लिंग में होता है। हसितं छात्रस्य । नृत्तं मयूरस्य । व्याहृतं आचार्यस्य ।

नियम ६९३—(अनट् ६।१।२) भाव में अनट् प्रत्यय नपुंसक लिंग में होता है। गमनं, भोजनं, पठनं, कथनम् ।

नियम ६९४—(क्त्वातुममो भावे ५।१।२१) क्त्वा, तुम् और अम् ये प्रत्यय भाव में सब धातुओं से होते हैं। कृत्वा व्रजति । कर्तुं व्रजति । चौरंकारं आक्रोशति ।

नियम ६९५—(अकर्मकात् कृत्यक्तखलर्थाः ५।१।२२) अकर्मक धातुओं से कृत्य (तव्य, अनीय, य, क्यप्, घ्यण्), क्त और खल अर्थ के प्रत्यय भाव में होते हैं। जैसे—कर्तव्यं, करणीयं, देयं, कृत्यं, कार्यं वा भवता । शयितं भवता । सुशयं भवता । सुकरं भवता । ईषद् आढ्यं भवं भवता । सुग्लानं कृपणेन ।

प्रयोगवाक्य

रसगोलः कलकत्तायाः, मधुमण्ठः जोधपुरस्य, कलाकंदः हैमी च जयपुरस्य, मोहनभोगः बीकानेरस्य, गजकः व्यावरस्य, कौष्माण्डं आगरानगरस्य प्रसिद्धं मिष्टान्नं चकास्ति। कुण्डलीअमृत्ययोः को भेदोऽस्ति ? किं तुभ्यं दुग्धपूपिका रोचते ? घृतपूरः सन्तानिका च गरिष्ठा भवति। संगीतिः कदा क्व च जाता ? अस्मिन् कार्ये तव उपस्थितिः अनिवार्या चकास्ति । संस्थायां व्यवस्था आस्थायाः कारणं भवति । प्रातः काले तव अट्या व्रज्या च स्वास्थ्यप्रदा न तु आस्या। श्रावणे नृत्तं मयूरस्य नयनाभिरामं लगति। नृपः चौरंकारं आक्रोशति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

मिठाइयां अनेक प्रकार की होती हैं। हलवाई की दुकान पर आज बहुत लोग हैं। कुछ लोग हलवाई से लड्डू और जलेबी लेते हैं। सुरेन्द्र को इमरती, बर्फी और पेठे की मिठाई अच्छी लगती है। गुलाब जामुन और

रसगुल्ले में क्या अंतर है ? रमेश शक्करपारा और बालूशाही नहीं खाता है। मलाई कौन खा गया ? भाभी देवर को रबडी, कलाकंद, और पपडी खिलाती है। सुरेश को घेवर और खाजे अच्छे नहीं लगते। मुरब्बा अनेक प्रकार का होता है ? श्याम बाजार से कितने मोहनभोग लाया है ? लोग सर्दी में गजक खाते हैं।

भाव में वाक्य बनाओ

राम वन में गया। उसने क्या पूछा था ? सुशीला क्या कहेगी ? धर्मेश ने अच्छी तरह सुना। मैंने कहा पर उसने नहीं सुना। वह घोडे से गिरा पर भाग गया। वह चोर से डर गया। गांव से दूर स्कूल उपयोगी होती है। धन से अधिक चरित्र मूल्यवान् होता है। डाकुओं ने ग्राम में प्रवेश किया। सोमवार से वह यहां नहीं है। प्यासी धरती वर्षा से शांत हो गई।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
इमरती, बालूशाही, मलाई, घेवर, जलेबी, मुरब्बा।

२. भाव में वाक्य बनाने के लिए क्या ध्यान में रखना चाहिए ?

३. भाव में कौन-कौन से प्रत्यय होते हैं ? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण लिखो ?

पाठ ७८ : भावकर्त्रो (१)

शब्दसंग्रह

कारुः (शिल्पी) । नापितः (नाई) । रजकः (धोबी) । निर्णेजकः (ड्राईक्लीनर) । कुलिकः (शिल्पि संघ का अध्यक्ष) । तन्तुवायः (जुलाहा)। सौचिकः (दर्जी) । चित्रकारः (चित्रकार, पेन्टर) । स्वर्णकारः (सुनार) । शौल्विकः (तांबे के बर्तन बनाने वाला) । त्वष्टा (बढई) । स्थपतिः (मिस्त्री)। अश्मचूर्णम् (सीमेंट) । इष्टका (ईंट) । स्यूतिः (सिलाई) । यन्त्रम् (मशीन)। उपहासचित्रम् (कार्टून) । बतिका (ब्रुश) । तक्षणी (वसूला) । अयोघनः (हथौडी) । करपत्रम् (आरी) ।

घञ्, न, कि, अल् प्रत्यय

भाव का अर्थ है क्रिया, अकर्तृ का अर्थ है कर्ता कारक को छोड कर । भावाऽकर्त्रो का तात्पर्य है—कर्ता कारक को छोडकर शेष कारक और भाव में प्रत्यय होना । भावाकर्त्रो में होने वाले प्रत्यय कुछ पुल्लिग में होते हैं और कुछ स्त्रीलिंग में ही होते हैं । स्त्रीलिंग में होने वाले प्रत्यय अगले पाठ में देखें ।

नियम ६९६—(भावाऽकर्त्रोः ५।४।९) भाव में और कर्ता छोडकर अन्य कारकों में सब धातुओं से घञ् प्रत्यय होता है ।

भाव में—पचनं पाकः, एवं रागः, त्यागः, ।

कर्म—प्रकुर्वन्ति तं इति प्राकारः ।

संप्रदान—दाशन्ते यस्मै स दाशः ।

अपादान—आहरन्ति यस्मात् इति आहारः ।

नियम ६९७—(हसाद् घञ् ६।१।११) हसान्त धातु से साधन और आधार में घञ् प्रत्यय होता है पुल्लिग के संज्ञा विषय में । विदन्ति अनेन वेदः । चेष्टते अनेन चेष्टो बलम् । एत्य पचन्ति अस्मिन् इति आपाकः । आरामः, लेखः, बन्धः, वेगः, रागः, प्रासादः, अपामार्गः ।

नियम ९९८—(यजिरक्षियतिप्रच्छिस्वपो नः ५।२।८२) इन धातुओं से भावाकर्त्रो में न प्रत्यय होता है । यज्ञः, रक्षणः, यत्नः, प्रश्नः, स्वप्नः ।

नियम ६९९—(उपसर्गोऽपिद्दाधः किः ५।४।८४) उपसर्ग उपपद में हो, प इत जाने वाली दा धातु को छोडकर शेष दा धातु और धा धातु से कि प्रत्यय होता है । आदिः, प्रदिः, आधिः, प्रधिः, निधिः, संधिः, समाधिः ।

नियम ७००—(ऋद्युवर्णवृदृवशिरणिगमिग्रहेरल् ५।४।५१) ऋकार अंतवाली, इवर्ण अंतवाली, उवर्ण अंतवाली धातुएं तथा वृ आदि धातुओं से भावाकर्त्रो अर्थ में अल् प्रत्यय होता है। ऋ—करः, गरः, तरः, दरः। इवर्ण—चयः जयः, क्षयः, क्रयः। उवर्ण—यवः, रवः, स्तवः, लवः। वृ आदि—वरः, दरः, आदरः, वशः, गमः, ग्रहः।

नियम ७०१—(यमः समुपनिविषु ५।४।५६) सं, उप, नि, वि उपपद में हो तो यम् धातु से अल् प्रत्यय विकल्प से होता है। संयमः, संयामः। उपयमः, उपयामः। नियमः, नियामः। वियमः, वियामः।

नियम ७०२—(भयादयो नपुंसके ५।४।५३) अल् प्रत्ययान्त ये शब्द निपात हैं—भयं, वर्षं, धनं, वनं, पदं, युगम्।

घञ् प्रत्यय भावाकर्त्रो के अतिरिक्त कर्ता में होता है —

नियम ७०३—(पदरुजविशस्पृशो घञ् ५।४।७) पद्, रुज्, विश् और स्पृश् धातु से घञ् प्रत्यय कर्ता में होता है। पादः, रोगः, वेशः, स्पर्शः।

नियम ७०४—(सर्तेः स्थिरव्याधिबलमत्स्येषु ५।४।८) स्थिर, व्याधि, बल और मत्स्य अर्थ में सृ (सरति) धातु से कर्ता में घञ् प्रत्यय होता है। स्थिरे—सरति कालान्तरं इति सारः स्थिरः पदार्थः। सालसारः, खदिरसारः, कार्यसारः। व्याधि—अतिसारो व्याधिः। बल—सारो बलम्। विसारो मत्स्यः।

नियम ७०५—(उद्यमोपरमौ ४।२।२८) वृद्धि के अभाव में घञ् प्रत्ययान्त ये दो शब्द निपात हैं—उद्यमः, उपरमः। अन्यत्र यामः, सुयामः। रामः, विरामः।

प्रयोगवाक्य

ब्राह्मणः यज्ञं करोति। शिष्यः गुरुं प्रश्नं पृच्छति। रमेशः पठितुं यत्नं कुरुते। रात्रौ त्वया कः स्वप्नः दृष्टः ? तस्य निधिः कुत्रास्ति ? तस्याः आधिं को जानाति ? भूपः शत्रुणा सह संधिं करोति। सर्वे समाधिं वाञ्छन्ति। पापस्य क्षयं कुरु। अजितात्मनां जयोऽपि पराजयोऽस्ति। इंद्रियाणां संयमः संपदां मार्गोऽस्ति। आचार्यस्य पादौ स्पृश। तस्य वपुषः स्पर्शः न सुखावहोऽस्ति। सनत्कुमारचक्रवर्तिनः शरीरे अनेके रोगाः जज्ञिरे। सः व्याधिं दूरीकर्तुं प्रयतते।

संस्कृत में अनुवाद करो

तुम्हारे गांव में रहने वाले नाई का क्या नाम है ? नरेन्द्र ने धोबी को कपडे कब दिये थे ? ड्राईक्लीनर वस्त्रों को मशीन से धोता है। शिल्पीसंघ का अध्यक्ष शिल्पियों के साथ बात करता है। कबीर जी जुलाहे थे। रमेश दर्जी से कपडे सिलाता है। सुनार मुनि को भिक्षा देने के लिए घर में गया। इस गांव में बर्तन बनाने वाला कौन है ? बढई वसूले से लकडी छीलता है

और आरे से उसे चीरता है। चित्र बनाने के लिए चित्रकार के पास ब्रुश नहीं है। मिस्त्री मशीन ठीक करता है। सीमेंट की क्या कीमत है ? यहां पर सौ ईंटे हैं। शीला सीमा से सिलाई सीखती है। नौकर हथोडे से क्या करेगा ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
सुनार, बढई, दर्जी, जुलाहा, सीमेंट, वसूला, आरी, शिल्पी, ब्रुश।

२. निम्नलिखित शब्द किस धातु के और किस प्रत्यय के हैं, बताओ—
स्वप्नः, आदिः, दरः, संयमः, पादः, सारः, यत्नः, समाधिः, प्रश्नः, स्पर्शः, उद्यमः, आरामः, रागः।

३. प्रत्यय भाव में होते हैं या कर्ता आदि कारकों में ? एक-एक उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

४. घञ् प्रत्यय किस कारक में होता है ?

पाठ ७६ : भावकर्त्रो (२)

शब्दसंग्रह

पारावतः (कबूतर) । चटका (चिडिया) । परभृतः (कोयल) । मरालः (हंस) । बकः (बगुला) । सारसः (सारस) । वर्तकः (बतख) । कीरः (तोता) । सारिका (मैना) । ध्वाङ्क्षः (कौआ) । चिल्लः (चील) । गृध्रः (गिद्ध) । श्येनः (बाज) । कौशिकः (उल्लू) । चातकः (चातक) । चक्रवाकः (चकवा) । बर्हिन् (मोर) । षट्पदः (भौंरा) । शलभः (पतंगा, टिड्डी । सरघा (मधुमक्खी) । वरटा (हंसी) । चाषः (नीलकंठ) । दार्वाघाटः (कठफोडा) । खञ्जनः (खंजन) । कुलायः (घोंसला) ।

क्ति प्रत्यय के रूप

कृतिः (कृ) करना । हृतिः (हृ) हरना । चितिः (चि) चुनना । भूतिः (भू) होना । श्रुतिः (श्रु) सुनना । स्तुतिः (ष्टु) स्तवना करना । नितिः (णी) प्राप्त करना । संपत्तिः (सं+पद्) प्राप्त करना । भणितिः (भण्) बोलना । लिखितिः (लिख्) लिखना । लब्धिः (लभ्) प्राप्त करना । निग्रहीतिः (नि+ग्रह्) निग्रह करना ।

स्त्रीलिंग प्रत्यय (क्ति, क्यप्, अन्, य, अ, ङ, क्विप्, अनि)

ये प्रत्यय भावाकर्त्रो धातु से स्त्रीलिंग में ही होते हैं । इसलिए इन प्रत्ययान्त रूपों के अंत में स्त्रीलिंग प्रत्यय आप् या ईप् और जुड जाता है । इन प्रत्ययों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है ।

नियम ७०६—(स्त्रियां क्तिः ५।४।८७) धातुओं से क्ति प्रत्यय होता है । कृतिः, हृतिः, चितिः, भूतिः ।

नियम ४०७—(श्रुवादिभ्यः ५।४।८८) श्रु आदि धातुओं से क्ति प्रत्यय होता है । श्रुतिः, संपत्तिः, स्तुतिः, लब्धिः, प्रशस्तिः, इष्टिः, भूतिः ।

नियम ७०८—(कृनः शिदन् च वा ५।४।९६) कृ धातु से शित्संज्ञक अन् और क्यप् प्रत्यय विकल्प से होता है । पक्ष में क्ति प्रत्यय भी । क्रिया, कृत्या, कृतिः ।

नियम ७०९—(परौ सृचरेर्यः ५।४।९८) परि उपसर्ग उपपद में हो तो सृ और चर् धातु से य प्रत्यय होता है । परिसर्या, परिचर्या ।

नियम ७१०—(शंसि प्रत्ययात् ५।४।१०१) शंसि धातु और प्रत्ययअन्तवाली धातुओं से अ प्रत्यय होता । प्रशंसा, मीमांसा, चिकीर्षा,

पुत्रकाम्या, गल्भा, पटपटाया ।

नियम ७११—(क्तेटो गुरो हंसात् ५।४।१०२) क्त प्रत्यय को इट् होने वाली धातु, गुरुमान् (धातु में अक्षर गुरु संज्ञक हो) और हस अन्त वाली धातु से अ प्रत्यय होता है । ईहा, ऊहा, ईक्षा, उक्षा, कुण्डा, हुण्डा, शिक्षा, भिक्षा ।

नियम ७१२—(षितो ङः ५।४।१०३) ष् इत् जाने वाली धातुओं से ङ प्रत्यय होता है । पचा, क्षमा, घटा, त्वरा, व्यथा, जरा ।

नियम ७१३— (कुहिगुहिवशिवपितुलिक्षपिक्षिभ्यः संज्ञायाम् ५।४।१०५) इन धातुओं से संज्ञा विषय में ङ प्रत्यय होता है । कुहा नाम नदी । गुहा पर्वतकंदरा । वशा स्नेहनद्रव्यं धातुविशेषश्च । वपा मेदोविशेषः । तुला उन्मानं । क्षपा रात्रिः । क्षिया आचारभ्रंशः ।

नियम ७१४—(भीषिभूषिचिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चिस्पृहितोलिदोल्यूनिचूडिपीडिभ्यः ५।४।१०८) अिन्नन्त इन धातुओं से ङ प्रत्यय होता है । भीषा, भूषा, चिंता, पूजा, कथा, कुम्बा, चर्चा, स्पृहा, तोला, दोला, ऊना, चूडा, पीडा ।

नियम ७१५—(आत उपसर्गे ५।४।१०९) उपसर्ग उपपद में हो तो आकारान्त धातुओं से ङ प्रत्यय होता है । प्रदा, उपदा, प्रधा, उपधा, आधा, विधा, संधा ।

नियम ७१६—(संपत्क्रुधादिभ्यः क्विप् ५।४।११४) सं आदि उपसर्ग पूर्वक पद् आदि धातुओं से तथा क्रुध् आदि शब्दों से क्विप् प्रत्यय होता है । संपद्, विपद्, आपद्, व्यापद्, प्रतिपद्, संसद्, परिषद्, उपनिषत्, उपानत् आदि । क्रुत्, युत्, क्षुत्, मृत्, गीः आदि ।

नियम ७१७—(ल्वादिभ्यो वा ५।४।११५) लू आदि धातुओं से क्विप् प्रत्यय विकल्प से होता है । लूः, लूतिः । भीः, भीतिः । भूः, भूतिः । कृत्, कृतिः । दृक्, दृष्टिः ।

नियम ७१८—(नञ्यऽनिराक्रोशे ५।४।१२२) नञ् उपपद में हो, आक्रोश अर्थ का बोध हो तो स्त्रीलिंग में अनि प्रत्यय होता है । अजननिस्ते वृषल ! भूयात् । एवमजीवनिः, अकरणिः, अगमनिः ।

नियम ७१९—(हाज्याग्लाम्लाभ्यः ५।४।१२३) इन धातुओं मे अनि प्रत्यय होता है । हानिः, ज्यानिः, ग्लानिः, म्लानिः ।

प्रयोगवाक्य

रोगिनः परिचर्यां कृत्वा सा मुमुदे । पुत्रस्य प्रशंसां निशम्य जननी जहर्ष । तत्वस्य सूक्ष्मां मीमांसां श्रुत्वा सः विस्मितोऽभवत् । गुरोः शिक्षां तं कुमार्गात् अरक्षत् । परेषां चिन्तां त्यक्त्वा स्वस्य चिंतां कुरु । तत्वस्य

चर्चायां सः मोदं अलभत । भ्रातुः पीडां विलोक्य सा रुरोद । तस्य क्रुत्, रुक् च भयंकरोऽस्ति । आचार्यस्य दृक् दूरदर्शिनी भवति । धनस्य हानिः तं विक्षिप्त मकृत । साधोः कथां श्रोतुं बहवः जनाः समाययुः । सत्यस्य श्रुतिः दुष्कराऽस्ति । ज्ञानस्य लब्धि कुरु । आचार्यस्य कृतिः सर्वेभ्यः रोचते । दुष्टानां निग्रहीतिः नृपस्य प्रथमं कर्तव्यमस्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो

संसार में अनेक पक्षी हैं । क्या कबूतर रात्रि में कुछ खाता है ? घोसले में चिडियां हैं । कोयल मधुर बोलती है। हंस में दूध और पानी को अलग करने की शक्ति होती है । इस वृक्ष पर तोता और मैना बैठी है । कौवे की वाणी किसी को अच्छी नहीं लगती । आकाश में अनेक चील और गिद्ध उड रहे हैं । उल्लू को रात में दिखाई नहीं देता । चातक तालाब और नदी का पानी नहीं पीता । मोर सांप का शत्रु है । भौंरा फूल का रस पीता है । टिड्डियों का समूह कहां जा रहा है ? मधुमक्खियों के काटने से उसके शरीर में सूजन हो गई । क्या तुमने हंसी, नीलकंठ, कठफोडा, और खंजन को देखा है ?

क्त प्रत्यय का प्रयोग करो

चौरों के द्वारा धन का हरण करना दुःखद बात है। आचार्य का चुनाव निपुणता से होता है । तीर्थंकरों की स्तवना हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं है । वर्षा का होना सुकाल का सूचक है ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
बगुला, मैना, बाज, उल्लू, भौंरा, हंसी, मोर, नीलकंठ ।

२. निम्नलिखित शब्द किस धातु से और किस प्रत्यय से बने हैं, बताओ ?
श्रुतिः, परिसर्या, प्रशंसा, वशा, तुला, पूजा, लूः, हानिः ।

३. भावाकर्त्रों में कौन-कौन से प्रत्यय होते हैं ?

पाठ ८० : अनट्, खल प्रत्यय

शब्दसंग्रह

भवनम् (भू, अस्) होना। पानम् (पां) पीना। गमनम् (गम्) जाना। करणम् (कृ) करना। अदनम् (अद्) खाना। यानम् (यांक्) जाना। अध्ययनम् (अधि+इ) अध्ययन करना। रोदनम् (रुद्) रोना। जागरणम् (जागृ) जागना। वेदनम् (विद्) जानना। हननम् (हन्) मारना। शयनम् (शी) सोना। आसनम् (आस्) बैठना। स्तवनम् (ष्टु) स्तुति करना। दोहनम् (दुह्) दुहना। भयनम् (भी) डरना। दानम् (दा) देना। नर्तनम् (नृत्) नाचना। नशनम् (णश्) नष्ट होना। बोधनम् (बुध्) जानना। मननम् (मन्) मनन करना। रञ्जनम् (रञ्ज्) राग करना। श्रवणम् (श्रु) सुनना। प्रच्छनम् (प्रच्छ्) पूछना। मरणम् (मृंज्) मरना। रोधनम् (रुध्) रोकना। पेषणम् (पिष्) पीसना। तननम् (तन्) फैलना। ज्ञानम् (ज्ञा) जानना। ग्रहणम् (ग्रह्) ग्रहण करना। चोरणम् (चुर्) चुराना। हरणम् (हृ) हरण करना। जननम् (जन्) उत्पन्न होना।

अनट् प्रत्यय

अनट् प्रत्यय भाव में होता है। नपुंसकलिंग और एक वचन होता है। उसके योग में तृतीया तथा षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—गमनं, भोजनं, हसनं। छात्रस्य हसनं। मम गमनं। रामस्य भोजनम्।

भाव के अतिरिक्त अनट् प्रत्यय कर्ता, कर्म, साधन, अपादान और आधार में भी होता है।

नियम ७२०—कर्ता में (रम्यादिभ्यः कर्तरि ६।१।४) रमि आदि धातुओं से अनट् प्रत्यय कर्ता में होता है और स्त्रीलिंग में होता है। रमणी, कमनी, नन्दनी।

नियम ७२१—कर्म में (भुजादिभ्यः कर्मणि ६।१।६) भुज् आदि धातुओं से कर्म में अनट् प्रत्यय होता है। भुज्यते यत् तत् भोजनं। आच्छादनं, अवस्रावणं, अवसेचनं, असनं, वसनं, आभरणम्।

नियम ७२२—साधन में (साधनाधारयोः ६।१।८) अनट् प्रत्यय साधन में होता है। इष्यते अनया एषणी। लिख्यते अनया लेखनी। विचयनी। इध्मव्रश्चनः (कुल्हाडी), अविलवनः, श्मश्रुकर्तनः।

नियम ७२३ क—अपादान में (स्कन्दादिभ्योऽपादाने ६।१।७) स्कन्द् आदि धातुओं से अनट् प्रत्यय अपादान में होता है। प्रस्कन्दति यस्मात् स प्रस्कन्दनः। प्रपतनः, प्रश्च्योतनः, प्रस्रवणः, निर्झरणः, अपादानं, शंखोद्धरणः।

ख—आधार में (साधनाधारयोः ६।१।८) आधार में अनट् प्रत्यय होता है। गौ र्दुह्यतेऽस्यां गोदोहनी। शक्तुधानी। तिलपीडनी। शयनं, आसनं, अधिकरणं, आस्थानम्।

खल प्रत्यय

नियम ७२४—(दुःस्वीषत्सु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ६।१।१७) दुस्, सु, ईषत्—ये पूर्व पद में हों तो कष्टसाध्य और सुखसाध्य के अर्थ में खल् प्रत्यय होता है। यह प्रत्यय कर्म में होता है। इसके योग में कर्म में प्रथमा और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—अयं पाठस्त्वया सुबोधः। ईषत्करः कटो भवता। दुष्करं ब्रह्मचर्यं मनुजैः।

शिष्यते=दुःशासनः, दुःशासः। सुशासनः, सुशासः। ईषच्छासनः, ईषच्छासः। दुर्योधनः, दुर्योधः। दुर्दर्शनः, दुर्दर्शः। दुर्धर्षणः, दुर्धर्षः। दुर्मर्षणः, दुर्मर्षः। दुस्, सु, इषत् शब्द पूर्वपद में हो, तो कष्ट साध्य एवं सुखसाध्य अर्थ में [illegible] है। दुष्पानं पयो भवता। सुपानं पयो भवता। ईषत्पानं पयो भवता।

नियम ७२६—(शासियुधिदृशिधृषिमृषिभ्यो वा ६।१।२०) दुस्, सु और ईषत् शब्द पूर्वपद में हो, तो कष्ट साध्य एवं सुखसाध्य अर्थ में शास् युध्, धृष् और मृष्—इन धातुओं से आन प्रत्यय विकल्प से होता है। दुःखेन शिष्यते=दुःशासनः, दुःशासः। सुशासनः, सुशासः। ईषच्छासनः, ईषच्छासः। दुर्योधनः, दुर्योधः। दुर्दर्शनः, दुर्दर्शः। दुर्धर्षणः, दुधर्षः। दुर्मर्षणः, दुर्मर्षः।

प्रयोग वाक्य

रोदनं बलानां बलमस्ति। रात्रौ वृद्धस्य रोदनं श्रुत्वा बीरबलः तस्य पार्श्वे जगाम। सुतस्य जननं कस्य कृते प्रमोदविषयं नास्ति। पापिनां शयनमेव वरम्। भुजंगानां पयःपानं केवलं विषवर्धनस्य निमित्तं भवति। रोगिणः पार्श्वे तस्य गमनं लाभप्रदमभूत्। पुस्तकस्याध्ययनेन ज्ञानं वर्धते। धनस्य नशनं श्रेष्ठिनः मृत्योः बीजमासीत्। इदं कार्यं भवतां कृते दुष्करं नास्ति।

संस्कृत में अनुवाद करो

[illegible] कारक है। बालक का रोना उसको नहीं सुहाता। तत्व को जानना हर श्रावक के लिए जरूरी है। बालिका का अध्ययन करना जरूरी है। वर्षा ऋतु में वर्षा का होना स्वाभाविक है। गाय को दुहना भी एक कला है।

साधना के क्षेत्र में पाप से डरना जरूरी है। विवाह के समय लडकियों का नाचना अच्छा नहीं है। मदन का लिखना साफ है। संदीप के दादाजी का भोजन खाने का समय निश्चित है। तुम ईश्वर का स्मरण क्यों करते हो ? तुम्हारा बैठना उचित नहीं है। कार्यकर्ताओं का कार्य करने का ढंग अच्छा होना चाहिए। ज्ञान का दान देना हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। चोर को पकडना सहज नहीं है। सुशील का पढना स्पष्ट नहीं है। गोष्ठी में तुम्हारा बोलना जरूरी था। सीता का हरण करना रावण के लिए शुभ नहीं था। ब्रह्मचर्य का पालन करना बहुत कठिन कार्य है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित धातुओं के अनट् प्रत्यय के रूप बताओ और उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो—
गम्, रुद्, शी, आस्, ष्टु, भी, बुध्, तन्, पिष् ।

२. खल् और अनट् प्रत्यय के बारे में तुम क्या जानते हो ?

पाठ ८१ : एककर्तृक पूर्वकालिक क्रिया १ (क्त्वा, णम्)

शब्दसंग्रह

मृद्वीका (अंगूर) । जम्बूः (जामुन) । कदलीफलम् (केला) । बीजपूरः (बिजौरा नींबू) । उदुम्बरम् (गूलर) । कर्कन्धुः (बेर) । श्रीपर्णिका (कायफल) । अमृतफलम् (नाशपाती) । आलुकम् (आलू बुखारा) । तूतम् (शहतूत) । नारिकेलम् (नारियल) । लीचिका (लीची) । स्वर्णक्षीरी (मकोय) ।

णम् प्रत्यय के रूप

भावं भावं (भू) बार-बार हो करके । पायं पायं (पा) बार-बार पी करके । गामं गामं (गम्) बार-बार जा करके । वन्दं वन्दं (वदि) बार-बार वंदना करके, स्तुति करके । कारं कारं (कृ) बार-बार करके । आदं आदं (अद्) बार-बार खा करके । यायं यायं (याक्) बार-बार जा करके । अध्यायं अध्यायं (अधि+इ) बार-बार पढ करके । भायं भायं (भी) बार-बार डर करके । दायं दायं (दा) बार-बार दे करके । भोजं भोजं (भुज्) बार-बार खा करके ।

पूर्वकाल क्रिया (क्त्वा, णम्)

एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया की जाती है वहां दोनों क्रियाओं का कर्ता एक ही हो उसे एककर्तृक कहते हैं । पूर्वकाल की क्रिया के साथ परकाल की क्रिया का प्रयोग आवश्यक है । ऐसी स्थिति में पूर्वकाल की धातु से क्त्वा और णम् प्रत्यय होता है । दोनों का अर्थ एक है, रूप भिन्न है । स भुक्त्वा व्रजति (वह खाकर जाता है) । खाना पूर्व क्रिया है, 'जाना' पर क्रिया है । यहां दोनों का कर्ता एक ही है । भुक्तवति गुरौ शिष्यः व्रजति (गुरु के खाना खाने के बाद शिष्य जाता है) । यहां दो क्रिया दो कर्ता से संबंधित है इसलिए इसमें पूर्व काल में होने वाले प्रत्यय नहीं होंगे ।

नियम

नियम ७२७—(णम् चाभीक्ष्ण्ये ६।१।४४) एककर्तृक, आभीक्ष्ण्य अर्थ में पूर्वकाल में होने वाली धातु से णम् प्रत्यय विकल्प से होता है । सः भोजं भोजं व्रजति, भुक्त्वा भुक्त्वा व्रजति । पायं पायं गच्छति, पीत्वा पीत्वा

गच्छति ।

नियम ७२८—(पूर्वाग्रेप्रथमेभ्यः ६।१।४५) पूर्व अग्रे, प्रथम—इन शब्दों से परे पूर्वकाल में होने वाली धातु हो तो उससे णम् प्रत्यय विकल्प से होता है, एककर्तृक हो तो। विकल्प में क्त्वा प्रत्यय होता है। यहां अनाभीक्ष्ण्य अर्थ में प्रत्यय होता है। पूर्वं भोजं व्रजति, पूर्वं भुक्त्वा व्रजति। अग्रे भोजं व्रजति, अग्रे भुक्त्वा व्रजति। प्रथमं भोजं व्रजति, प्रथमं भुक्त्वा व्रजति ।

नियम ७२९—(यथातथयोरीर्ष्योक्तरे ६।१।४७) यथा और तथा शब्द पूर्व पद में हो, एककर्तृक हो, पूर्वकाल में कृ धातु का प्रयोग हो, ईर्ष्या से पूछा गया हो उसका उत्तर दिया जाता हो तो णम् प्रत्यय विकल्प से होता है। कथं भवान् भोक्ष्यते इति पृष्टोऽसूयया, तं प्रति आह—यथाकारं अहं भोक्ष्ये, तथाकारं अहं भोक्ष्ये कि तव अनेन ? किं ते मया यथाहं भोक्ष्ये तथाहं भोक्ष्ये इत्यर्थः।

नियम ७३०—(आक्रोशे कर्मणि ण्णम् ६।१।४८) कर्म उपपद में हो, एककर्तृक हो, तो पूर्व काल में होने वाली कृ धातु से ण्णम् प्रत्यय विकल्प से होता है, आक्रोश गम्यमान हो। ख् इत् जाने से नुम् और ण् इत् जाने से वृद्धि हुई है। चौरंकारं आक्रोशति। चौरं कृत्वा (चौरशब्दमुच्चार्य) आक्रोशति। चौरोऽसि इत्याक्रोशति इत्यर्थः। एवं दस्युंकारं आक्रोशति, व्याधंकारं आक्रोशति।

नियम ७३१—(गात्रपुरुषयोः स्नः ६।१।५५) गात्र और पुरुष शब्द पूर्वपद में हो, एककर्तृक हो तो स्नाति धातु से णम् प्रत्यय विकल्प से होता है वर्षा का मान गम्य हो। गात्रस्नायं वृष्टो मेघः। पुरुषस्नायं वृष्टो मेघः। यावत् गात्रं पुरुषश्च स्नाप्यते तावद् वृष्टः इत्यर्थः।

नियम ७३२—(चेलार्थे क्नोपेः ६।१।५४) चेल (वस्त्र) अर्थ वाले शब्द कर्मरूप में उपपद में हो, एककर्तृक हो, क्नोपयते धातु से वर्षा का मान जाना जाए तो णम् प्रत्यय विकल्प से होता है। चेलक्नोपं वृष्टो मेघः। वस्त्रक्नोपं वृष्टो मेघः। क्नूयते (आर्द्रीभवति) इत्यर्थः।

प्रयोगवाक्य

मिष्टान्नं आदं आदं स रुग्णोऽभवत्। क्षेत्रं यायं यायं बालकः अखिद्यत। पुस्तकानि अध्यायं अध्यायं सीमा विदुषी अभवत्। मूषकात् भायं भायं सा दुर्बला अभवत्। विनीताय शिष्याय ज्ञानं दायं दायं गुरुः कृतकृत्योऽभूत्। कमलायै जम्बूः अमृतफलं च रोचते। रवीन्द्रः आलुकं अत्ति। बालकः कर्कन्धुं कदलीफलं च न भुनक्ति। पूर्वं गायं व्रजति, पूर्वं गात्वा व्रजति। पूर्वं पायं व्रजति, पूर्वं पीत्वा व्रजति।

संस्कृत में अनुवाद करो

भारत के अनेक नगरों में अंगूर के बगीचे हैं। रांची शहर के समीप जामुन के बहुत वृक्ष हैं। वैद्य ने रोगी को केला खाने के लिए कहा है। क्या तुमने कभी बिजौरा नींबू खाया है ? गूलर के वृक्ष हर स्थान पर नहीं मिलते हैं ? राजस्थान में बेर बहुत होते हैं। कायफल कैसा होता है ? बालक आलू बुखारा और नाशपाती खाता है।नारियल के वृक्ष लंबे होते हैं। इस बगीचे में लीची और शहतूत के वृक्ष नहीं हैं। गुणवती मकोय खाती है।

णम् प्रत्यय के प्रयोग करो

वह बीमार बार-बार हो करके पढ नहीं सका। दूध बार-बार पी करके सुरेन्द्र मोटा हो गया। गांव बार-बार जा करके सतीश थक गया। मुनियों को बार-बार वंदना करके बालक प्रसन्न होता है। चोरी बार-बार करके चोर निर्लज्ज हो गया। आज कपडे गीले हो इतनी वर्षा हुई है। आज आदमी स्नान कर सके इतनी वर्षा नहीं हुई।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
जामुन, केला, नाशपाती, आलूबुखारा, नारियल, लीची।

२. निम्नलिखित णम् प्रत्ययों के रूपों का वाक्यों में प्रयोग करो—
कारं कारं, आदं आदं, यायं यायं, दायं दायं, चेलक्नोपं, चौरंकारं, गात्रस्नायं।

पाठ ८२ : पूर्वकालिक क्रिया २ (क्त्वा, णम्)

शब्दसंग्रह

आर्द्रालुः (आडू) । सीताफलम् (शरीफा) । पुंनागम् (फासला) । आम्रातकम् (आमडा, जंगली आम) । खर्बुजम् (खरबूजा) । कालिन्दम् (तरबूज) । खर्जूरम् (खजूर) । शृङ्गाटकम् (सिंघाडा) । शुष्कफलम् (मेवा) । अक्षोटम् (अखरोट) । अङ्कोलम् (पिस्ता) । काजवम् (काजू) । शुष्कद्राक्षा (किशमिश) । मधुरिका (मुनक्का) । मखान्नम् (मखाना) । प्रियालम् (चिरौंजी) । पौष्टिकम् (पोस्ता) । अञ्जीरम् (अंजीर) । क्षुमानी (खुमानी) ।

णम् प्रत्यय के रूप

रोदं रोदं (रुद्) बार-बार रो करके । जागरं जागरं (जागृ) बार-बार जाग करके । वेदं वेदं (विद्) बार-बार जान करके । घातं घातं (हन्) बार-बार हिंसा करके । भावं भावं (अस्) बार-बार हो करके । शायं शायं (शी) बार-बार सो करके । आसं आसं (आस्) बार-बार बैठ करके । स्तावं स्तावं (ष्टु) बार-बार स्तुति करके । वाचं वाचं (ब्रू) बार-बार बोल करके । दोहं दोहं (दुह्) बार-बार दुह करके ।

णम्

उपपद (पूर्वपद) में कर्तृवाची, कर्मवाची या साधनवाची शब्द हों तो धातु से णम् प्रत्यय होता है, साथ में उसी धातु का प्रयोग होना चाहिए । अर्थ की दृष्टि से णम् प्रत्ययान्त शब्द का इस प्रसंग में कोई अर्थ नहीं होता है । वाक्य की सुंदरता बढती है । जैसे—शुष्कपेषं पिनष्टि (शुष्कं पिनष्टि इत्यर्थः) । चूर्णपेषं पिनष्टि । रूक्षपेषं पिनष्टि ।

नियम ७३३—(समूले हनश्च ६।१।५७) समूल शब्द कर्मरूप में उपपद में हो तो हन् और कष् धातु से णम् प्रत्यय होता है । समूलघातं हन्ति (समूलं हन्ति इत्यर्थः) । समूलकाषं कषति ।

नियम ७३४—(जीवाकृतयोर्ग्रहिकृन्भ्याम् ६।१।५६) जीव शब्द कर्मरूप में हो तो ग्रह धातु से और अकृत शब्द कर्म रूप में हो तो कृ धातु से णम् प्रत्यय होता है । जीवग्राहं गृह्णाति । अकृतकारं करोति ।

नियम ७३५—(साधनेषु हनः ६।१६०) साधन कारक उपपद में हो तो हन् धातु से णम् प्रत्यय होता है । पादघातं शिलां हन्ति (पाणिना पादेन

वा हन्ति इत्यर्थः) ।

नियम ७३६—(हस्तार्थे ग्रहवर्तिवृतः ३।१।६१) हस्त अर्थ वाले शब्द साधन रूप में उपपद में हों तो ग्रह् और वृत् धातु से णम् प्रत्यय होता है। हस्तग्राहं गृह्णाति। एवं करग्राहं गृह्णाति, पाणिग्राहं गृह्णाति—हस्तेन गृह्णाति इत्यर्थः। हस्तवर्तं वर्तयति, करवर्तं वर्तयति, पाणिवर्तं वर्तयति—हस्तेन वर्तयति इत्यर्थः।

नियम ७३७—(कर्त्रोर्जीवपुरुषयोर्नशिवहिभ्याम् ६।१।६५) उपपद में कर्तृवाची जीव शब्द हो तो नश् धातु से और पुरुष शब्द कर्तृवाची हो तो वह् धातु से णम् प्रत्यय होता है। जीवनाशं नश्यति (जीवन् नश्यति इत्यर्थः)। पुरुषवाहं वहति (पुरुषः प्रेष्यो भूत्वा वहतीत्यर्थः)

नियम ७३८—(ऊर्ध्वे शुषि पूरेः ६।१।६६) ऊर्ध्व शब्द कर्तृरूप में हो तो शुष् और पूर् धातु से णम् प्रत्यय होता है। ऊर्ध्वशोषं शुष्यति (ऊर्ध्वः शुष्यतीत्यर्थः)। ऊर्ध्वपूरं पूरयते। (ऊर्ध्वः पूरयते इत्यर्थः)।

प्रयोगवाक्य

आर्द्रालुः कुतः आगतः ? सीताफलं स्वादु भवति। राजस्थाने पुंनागं न भवति। आम्रातकं क्व फलति ? आयुर्वेदे फलपरिणतौ खर्बुजकालिन्दयोः विभेदो विद्यते। शृङ्गाटक समयपरिपाके कठोरं भवति। शुष्कफलं शीतकाले रुचिकरं भवति। अक्षोटं, अंकोलं काजवं, शुष्कद्राक्षा, मधुरिका, पौष्टिकं अंजीरं च राजस्थाने कुत्र फलति ? मखान्नं प्रियालं क्षुमानी च एतेषां शुष्क-फलानां गुणदोषौ ज्ञातव्यौ। रोदं रोद सा बालिका विद्यालयं गता। रजन्यां जागरं जागरं स खिन्नोऽभूत्। वाचं वाचं सः पाठं स्मरति। शायं शायं सा न श्रान्ता अभूत्। स चूर्णपेषं पिनष्टि। श्यामः कथं पादघातं सीमां हन्ति ? अध्यापकः यष्टिघातं विद्यार्थिनं हन्ति। पुत्रः पितुः हस्तग्राहं गृह्णाति। स जीवनाशं नश्यति।

संस्कृत में अनुवाद करो

भारत में अनेक फल उत्पन्न होते हैं। रमेश को आड़ू अच्छा नहीं लगता। बन्दर शरीफा नहीं खाता। खरबूजा खा करके दूध नहीं पीना चाहिए। तरबूज [illegible]। किशमिश और और मुनक्का में क्या अन्तर है ? पोस्ता पुष्टिकारक होता है। क्या इस दुकान में चिरौंजी, अंजीर और खुमानी हैं ? लोग बादाम, काजू और पिस्ता की मिठाई बनाते हैं।

णम् प्रत्यय के प्रयोग करो

राम के वन जाने पर दशरथ बार-बार रो करके बेहोश हो गये।

रात्रि में बार-बार जाग करके भी राजा चौर को नहीं पकड सका। तत्त्व को बार-बार जान करके भी नीता दूसरों को बता नहीं सकी। भैंसे की बार-बार हिंसा करके कालसौकरिक ने दुष्कर्मों का अर्जन किया था। बार-बार सो करके रोगी थक गया। जिनेश्वर देव की बार-बार स्तुति करके उसने पापों को नष्ट कर दिया। हम दोनों के बीच में बार-बार बोल करके उसने काम बिगाड दिया। गायों को बार-बार दुह करके ग्वाला थक गया।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ—
तरबूज, अखरोट, काजू, मखाना, मुनक्का, पोस्ता, खुमानी, चिरौंजी, फालसा।

२. निम्नलिखित णम् प्रत्ययान्त शब्दों का अर्थ बताओ और उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो—
रोदं रोदं, शायं शायं, जागरं जागरं, स्तावं स्तावं, वाचं वाचं।

३. ७३४ से ७३९ तक के नियमों के अन्तर्गत आई हुई धातुओं के णम् प्रत्ययान्त शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

परिशिष्ट

१. शब्दरूपावली
२. धातुरूपावली
३. जिन्नन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङलुगन्त और भावकर्म रूपावली
४. प्रत्ययरूपावली
५. उपसर्गपूर्वक धातु के अर्थपरिवर्तन
६. एकार्थ धातुएं

शब्दरूपावली की अनुक्रमणिका

१. जिन
२. सर्व (पुल्लिग)
३. मुनि
४. साधु
५. पितृ
६. कर्तृ (पुं)
७. गो
८. चतुर् (पुं)
९. दण्डिन्
१०. राजन्
११. मरुत्
१२. पंचन्
१३. भवत्
१४. विद्वस्
१५ चंद्रमस्
१६. अष्टन्
१७. सीता
१८. बुद्धि
१९. नदी
२०. धेनु
२१. धीर्
२२. गिर्
२३. वाच्
२४. दिश्
२५. रत्न
२६. दधि
२७ वारि
२८. मधु
२९. कर्मन्
३०. नामन्
३१. जगत्
३२. पयस्
३३. त्यद् (त्रिलिंगी)
३४. तद् (त्रिलिंगी)
३५. यद्
३६. अदस्
३७. इदम्
३८. एतत्
३९. एक
४०. द्वि
४१. किं (त्रि०)
४२. युष्मत्
४३. अस्मत्
४४. पूर्व (त्रि०)
४५. सोमपा
४६. दंत
४७. पति
४८. सखि
४९. सुधी
५०. स्वयंभू
५१. पथिन्
५२. आत्मन्
५३. युवन्
५४. महत्
५५. हसत्
५६. पुंस्
५७. अनडुह्
५८. स्त्री
५९. श्री
६०. लक्ष्मी
६१. वधू
६२. स्वसृ
६३. मातृ
६४. सरित्
६५. उपानह्
६६. कर्तृ (नपुं)
६७. सर्व (स्त्री, नपुं)
६८. अन्य
६९ त्रि
७०. चतुर्
७१. पञ्चन्
७२. षष्
७३. सप्तन्
७४. कति
७५. उभ

परिशिष्ट १ : शब्दरूपावलिः

श्लोकाः

जिनः सर्वो मुनिः साधुः, पिता कर्ता च गौस्तथा ।
सप्त एते स्वरान्ताः स्युः, पुल्लिंगे परिकीर्तिताः ॥१॥

चत्वारो दण्डिराजानौ, मरुत् पञ्च भवान् तथा ।
विद्वान् चन्द्रमा चाष्टौ, हसान्ताः परिकीर्तिताः ॥२॥

सीता बुद्धि र्नदी धेनुः, धीः गीर्वाक् दिग् तथैव च ।
अष्टैते प्रमुखाः शब्दाः, स्त्रीलिङ्गे विदुषा मताः ॥३॥

रत्नं दधि तथा वारि, मधु कर्म च नाम च ।
जगत् पय इमे शब्दाः, नपुंसके उदाहृताः ॥४॥

त्यद् तद् यद् अदस् प्रोक्तं, इद एतत् तथैव च ।
एक द्वि किं युष्मदस्मत्, त्रिलिङ्गाः स्युस्त्यदादयः ॥५॥

पुल्लिंगशब्दाः

(१) अकारान्त जिन शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
जिनः	जिनौ	जिनाः	प्र०	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
जिनम्	जिनौ	जिनान्	द्वि०	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
जिनेन	जिनाभ्याम्	जिनैः	तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
जिनाय	जिनाभ्याम्	जिनेभ्यः	च०	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
जिनात्,जिनाद्	जिनाभ्याम्	जिनेभ्यः	पं०	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
जिनस्य	जिनयोः	जिनानाम्	ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
जिने	जिनयोः	जिनेषु	स०	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
हे जिन	हे जिनौ	हे जिनाः	सं०	हे सर्व	हे सर्वौ	हे सर्वे

(३) इकारान्त मुनि शब्द

मुनिः	मुनी	मुनयः	प्र०	
मुनिम्	मुनी	मुनीन्	द्वि०	
मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः	तृ०	
मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः	च०	
मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः	पं०	
मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्	ष०	
मुनौ	मुन्योः	मुनिषु	स०	
हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः	सं०	

भूपति शब्द के रूप मुनि की तरह चलेंगे।

(४) उकारांत साधु शब्द

साधुः	साधू	साधवः	प्र०	
साधुम्	साधू	साधून्	द्वि०	
साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः	तृ०	
साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः	च०	
साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः	पं०	
साधोः	साध्वोः	साधूनाम्	ष०	
साधौ	साध्वोः	साधुषु	स०	
हे साधो	हे साधू	हे साधवः	सं०	

(५) ऋकारान्त पितृ शब्द

पिता	पितरौ	पितरः	प्र०	
पितरम्	पितरौ	पितॄन्	द्वि०	
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	तृ०	
पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः	च०	
पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः	पं०	
पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्	ष०	
पितरि	पित्रोः	पितृषु	स०	
हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	सं०	

(६) ऋकारान्त कर्तृ शब्द

कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र०	
कर्तारम्	कर्तारौ	कर्तॄन्	द्वि०	
कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०	
कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः	च०	
कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः	पं०	
कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्	ष०	
कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु	स०	
हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः	सं०	

(७) ओकारान्त गो शब्द

गौः	गावौ	गावः	प्र०	
गाम्	गावौ	गाः	द्वि०	
गवा	गोभ्याम्	गोभिः	तृ०	
गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः	च०	
गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः	पं०	
गोः	गवोः	गवाम्	ष०	
गवि	गवोः	गोषु	स०	
हे गौः	हे गावौ	हे गावः	सं०	

(८) रकारान्त चतुर् शब्द

चत्वारः	प्र०
चतुरः	द्वि०
चतुर्भिः	तृ०
चतुर्भ्यः	च०
चतुर्भ्यः	पं०
चतुर्णाम्	ष०
चतुर्षु	स०

(९) इन् अंत दण्डिन् शब्द

दण्डी	दण्डिनौ	दण्डिनः	प्र०
दण्डिनम्	दण्डिनौ	दण्डिनः	द्वि०
दण्डिना	दण्डिभ्याम्	दण्डिभिः	तृ०
दण्डिने	दण्डिभ्याम्	दण्डिभ्यः	च०
दण्डिनः	दण्डिभ्याम्	दण्डिभ्यः	पं०
दण्डिनः	दण्डिनोः	दण्डिनाम्	ष०
दण्डिनि	दण्डिनोः	दण्डिषु	स०
हे दण्डिन्	हे दण्डिनौ	हे दण्डिनः	सं०

(१०) नकारान्त राजन् शब्द

राजा	राजानौ	राजानः	प्र०
राजानम्	राजानौ	राज्ञः	द्वि०
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	तृ०
राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः	च०
राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः	पं०
राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्	ष०
राज्ञि,राजनि	राज्ञोः	राजसु	स०
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	सं०

(११) तकारान्त मरुत् शब्द

मरुत्	मरुतौ	मरुतः	प्र०
मरुतम्	मरुतौ	मरुतः	द्वि०
मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः	तृ०
मरुते	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः	च०
मरुतः	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः	पं०
मरुतः	मरुतोः	मरुताम्	ष०
मरुति	मरुतोः	मरुत्सु	स०
हे मरुत्	हे मरुतौ	हे मरुतः	सं०

(१२) नकारान्त पञ्चन् शब्द

प्र०	पञ्च
द्वि०	पञ्च
तृ०	पञ्चभिः
च०	पञ्चभ्यः
पं०	पञ्चभ्यः
ष०	पञ्चानाम्
स०	पञ्चसु
सं०	

(१३) तकारान्त भवत् शब्द

भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	प्र०
भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः	द्वि०
भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः	तृ०
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	च०
भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	पं०
भवतः	भवतोः	भवताम्	ष०
भवति	भवतो	भवत्सु	स०
हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्तः	सं०

(१४) सकारान्त विद्वस् शब्द

विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः	प्र०
विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः	द्वि०
विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः	तृ०
विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः	च०
विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः	पं०
विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्	ष०
विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु	स०
हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः	सं०

(१५) सकारान्त चन्द्रमस् शब्द

चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः	प्र०
चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः	द्वि०
चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः	तृ०
चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः	च०
चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः	पं०
चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्	ष०
चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसुः	स०
हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः	सं०

(१६) नकारान्त अष्टन् शब्द

प्र०	अष्ट, अष्टौ
द्वि०	अष्ट, अष्टौ
तृ०	अष्टभिः, अष्टाभिः
च०	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः
पं०	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः
ष०	अष्टानाम्
स०	अष्टसु, अष्टासु
सं०	

स्त्रीलिंगशब्दाः

(१७) आकारान्त सीता शब्द

सीता	सीते	सीताः	प्र०
सीताम्	सीते	सीताः	द्वि०
सीतया	सीताभ्याम्	सीताभिः	तृ०
सीतायै	सीताभ्याम्	सीताभ्यः	च०
सीतायाः	सीताभ्याम्	सीताभ्यः	पं०
सीतायाः	सीतयोः	सीतानाम्	ष०
सीतायाम्	सीतयोः	सीतासु	स०
हे सीते	हे सीते	हे सीताः	सं०

(१८) इकारान्त बुद्धि शब्द

बुद्धिः	बुद्धी	बुद्धयः	प्र०
बुद्धिम्	बुद्धी	बुद्धीः	द्वि०
बुद्ध्या	बुद्धिभ्याम्	बुद्धिभिः	तृ०
बुद्ध्यै, बुद्धये	बुद्धिभ्याम्	बुद्धिभ्यः	च०
बुद्ध्याः, बुद्धेः	बुद्धिभ्याम्	बुद्धिभ्यः	पं०
बुद्ध्याः, बुद्धेः	बुद्ध्योः	बुद्धीनाम्	ष०
बुद्ध्याम्, बुद्धौ	बुद्ध्योः	बुद्धिषु	स०
हे बुद्धे	हे बुद्धी	हे बुद्धयः	सं०

(१९) ईकारान्त नदी शब्द

नदी	नद्यौ	नद्यः	प्र०
नदीम्	नद्यौ	नदीः	द्वि०
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	तृ०
नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	च०
नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः	पं०
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्	ष०
नद्याम्	नद्योः	नदीषु	स०
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः	सं०

(२०) उकारान्त धेनु शब्द

धेनुः	धेनू	धेनवः	प्र०
धेनुम्	धेनू	धेनूः	द्वि०
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृ०
धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	च०
धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	पं०
धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्	ष०
धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु	स०
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः	सं०

(२१) ईकारान्त धी शब्द

धीः	धियौ	धियः	प्र०
धियम्	धियौ	धियः	द्वि०
धिया	धीभ्याम्	धीभिः	तृ०
धियै, धिये	धीभ्याम्	धीभ्यः	च०
धियाः, धियः	धीभ्याम्	धीभ्यः	पं०
धियाः, धियः	धियोः	धीनाम्, धियाम्	ष०
धियाम्, धियि	धियोः	धीषु	स०
हे धीः	हे धियौ	हे धियः	सं०

(२२) रकारान्त गिर् शब्द

प्र०	गीः	गिरौ	गिरः
द्वि०	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृ०	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
च०	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पं०	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
ष०	गिरः	गिरोः	गिराम्
स०	गिरि	गिरोः	गीर्षु
सं०	हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः

(२३) चकारान्त वाच् शब्द

वाक्,वाग्	वाचौ	वाचः	प्र०
वाचम्	वाचौ	वाचः	द्वि०
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	तृ०
वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः	च०
वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः	पं०
वाचः	वाचोः	वाचाम्	ष०
वाचि	वाचोः	वाक्षु	स०
हेवाक् ,हेवाग्	हे वाचौ	हे वाचः	सं०

(२४) शकारान्त दिश् शब्द

प्र०	दिक्	दिशौ	दिशः
द्वि०	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृ०	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
च०	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पं०	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
ष०	दिशः	दिशोः	दिशाम्
स०	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सं०	हे दिक्	हे दिशौ	हे दिशः

नपुंसकलिङ्गशब्दाः

(२५) अकारान्त रत्न शब्द

रत्नम्	रत्ने	रत्नानि	प्र०
रत्नम्	रत्ने	रत्नानि	द्वि०
रत्नेन	रत्नाभ्याम्	रत्नैः	तृ०
रत्नाय	रत्नाभ्याम्	रत्नेभ्यः	च०
रत्नात्	रत्नाभ्याम्	रत्नेभ्यः	पं०
रत्नस्य	रत्नयोः	रत्नानाम्	ष०
रत्ने	रत्नयोः	रत्नेषु	स०
हे रत्न	हे रत्ने	हे रत्नानि	सं०

(२६) इकारान्त दधि शब्द

प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि०	दधि	दधिनी	दधीनि
तृ०	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
च०	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पं०	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
ष०	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
स०	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
सं०	हे दधे, हेदधि	हे दधिनी	हे दधीनि

(२७) इकारान्त वारि शब्द

वारि	वारिणी	वारीणि	प्र०	
वारि	वारिणी	वारीणि	द्वि०	
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृ०	
वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	च०	
वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	पं०	
वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्	ष०	
वारिणि	वारिणोः	वारिषु	स०	
हेवारे,हेवारि	हे वारिणी	हे वारीणि	सं०	

(२८) उकारान्त मधु शब्द

मधु	मधुनी	मधूनि	
मधु	मधुनी	मधूनि	
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	
मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः	
मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः	
मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्	
मधुनि	मधुनोः	मधुषु	
हे मधो,हेमधु	हे मधुनी	हे मधूनि	

(२९) नकारान्त कर्मन् शब्द

कर्म	कर्मणी	कर्माणि	प्र०	
कर्म	कर्मणी	कर्माणि	द्वि०	
कर्मणा	कर्मभ्याम्	कर्मभिः	तृ०	
कर्मणे	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः	च०	
कर्मणः	कर्मभ्याम्	कर्मभ्यः	पं०	
कर्मणः	कर्मणोः	कर्मणाम्	ष०	
कर्मणि	कर्मणोः	कर्मसु	स०	
हेकर्मन्,हेकर्म	हे कर्मणी	हे कर्माणि	सं०	

(३०) नकारान्त [illegible]

नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
नाम्नि	नाम्नोः	नामसु
हेनामन्,हेनाम	हेनाम्नी, हेनामनी	हेनामानि

अहन् शब्द के रूप नामन्वत्

(३१) तकारान्त जगत् शब्द

जगत्	जगती	जगन्ति	प्र०	
जगत्	जगती	जगन्ति	द्वि०	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	तृ०	
जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः	च०	
जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः	प०	
जगतः	जगतोः	जगताम्	ष०	
जगति	जगतोः	जगत्सु	स०	
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	सं०	

(३२) सकारान्त पयस् शब्द

पयः	पयसी	पयांसि
पयः	पयसी	पयांसि
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
पयस	पयोभ्याम्	[illegible]
पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पयसः	पयसोः	पयसाम्
पयसि	पयसोः	पयःसु,पयस्सु
हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि

त्रिलिङ्गा शब्दाः

(३३) त्यद् शब्द (पुं)

स्यः	त्यौ	त्ये	प्र०
त्यम्	त्यौ	त्यान्	द्वि०
त्येन	त्याभ्याम्	त्यैः	तृ०
त्यस्मै	त्याभ्याम्	त्येभ्यः	च०
त्यस्मात्	त्याभ्याम्	त्येभ्यः	पं०
त्यस्य	त्ययोः	त्येषाम्	ष०
त्यस्मिन्	त्ययोः	त्येषु	स०

(३३) त्यद् शब्द (स्त्रीलिंग)

स्या	त्ये	त्याः	प्र०
त्याम्	त्ये	त्याः	द्वि०
त्यया	त्याभ्याम्	त्याभिः	तृ०
त्यस्यै	त्याभ्याभ्	त्याभ्यः	च०
त्यस्याः	त्याभ्याम्	त्याभ्यः	पं०
त्यस्याः	त्ययोः	त्यासाम्	ष०
त्यस्याम्	त्ययोः	त्यासु	स०

(३३) त्यद् शब्द (नपुं)

त्यद्	त्ये	त्यानि	प्र०
त्यद्	त्ये	त्यानि	द्वि०

शेष रूप पुल्लिगवत्

(३४) तद् शब्द (पुल्लिग)

सः	तौ	ते	प्र०
तम्	तौ	तान्	द्वि०
तेन	ताभ्याम्	तैः	तृ०
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	च०
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	पं०
तस्य	तयोः	तेषाम्	ष०
तस्मिन्	तयोः	तेषु	स०

(३४) तद् शब्द स्त्रीलिंग

सा	ते	ताः	प्र०
ताम्	ते	ताः	द्वि०
तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृ०
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	च०
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	पं०
तस्याः	तयोः	तासाम्	ष०
तस्याम्	तयोः	तासु	स०

(३५) यद् शब्द (पुल्लिग)

यः	यौ	ये	प्र०
यम्	यौ	यान्	द्वि०
येन	याभ्याम्	यैः	तृ०
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	च०
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	पं०
यस्य	ययोः	येषाम्	ष०
यस्मिन्	ययोः	येषु	स०

(३४) तद् शब्द (नपुंसक)

तत्	ते	तानि
तत्	ते	तानि

शेष रूप पुल्लिगवत्

(३५) यद् शब्द (नपुं)

यत्	ये	यानि
यत्	ये	यानि

शेष रूप पुल्लिगवत्

(३५) यद् शब्द स्त्रीलिंग

प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	ये	याः
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पं०	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
ष०	यस्याः	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	ययोः	यासु

(३६) अदस् शब्द (पुं)

असौ	अमू	अमी	प्र०	अयं	इमौ	इमे
अमुम्	अमू	अमून्	द्वि०	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	तृ०	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	पं०	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	ष०	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु	स०	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

(३६) अदस् शब्द (स्त्रीलिंग)

असौ	अमू	अमूः	प्र०	इयं	इमे	इमाः
अमूम्	अमू	अमूः	द्वि०	इमाम्	इमे	इमाः
अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः	तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः
अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः	च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः	पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्	ष०	अस्याः	अनयोः	आसाम्
अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु	स०	अस्याम्	अनयोः	आसु

(३६) अदस् शब्द (नपुंसक)

अदः	अमू	अमूनि	प्र०
अदः	अमू	अमूनि	द्वि०

शेष रूप पुल्लिगवत्

(३७) इदम् शब्द (पुं)

प्र०	अयं	इमौ	इमे			
द्वि०	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्			
तृ०	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः			
च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः			
पं०	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः			
ष०	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्			
स०	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु			

(३७) इदम् शब्द (स्त्रीलिंग)

प्र०	इयं	इमे	इमाः			
द्वि०	इमाम्	इमे	इमाः			
तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः			
च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः			
पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः			
ष०	अस्याः	अनयोः	आसाम्			
स०	अस्याम्	अनयोः	आसु			

(३७) इदम् शब्द (नपुंसक)

प्र०	इदं	इमे	इमानि			
द्वि०	इदं	इमे	इमानि			

शेष रूप पुल्लिगवत्

(३८) एतत् शब्द (पुं)

एषः	एतौ	एते	प्र०
एतम्, एनम्	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्	द्वि०
एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः	तृ०
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	च०
एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	पं०
एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्	ष०
एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु	स०

(३८) एतत् शब्द (स्त्रीलिंग)

एषा	एते	एताः	प्र०
एताम्	एते	एताः	द्वि०
एतया	एताभ्याम्	एताभिः	तृ०
एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः	च०
एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः	पं०
एतस्याः	एतयोः	एतासाम्	ष०
एतस्याम्	एतयोः	एतासु	स०

(३८) एतत् शब्द (नपुंसक)

एतत्	एते	एतानि
एतत्	एते	एतानि

शेषरूप पुल्लिगवत्

(३९) एक शब्द

पुल्लिग	(स्त्रीलिंग)	(नपुंसक)	
एकः	एका	एकम्	प्र०
एकम्	एकाम्	एकम्	द्वि०
एकेन	एकया	एकेन	तृ०
एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै	च०
एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्	पं०
एकस्य	एकस्याः	एकस्य	ष०
एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्	स०

(४०) द्विशब्द

पु०	(स्त्री नपुं०)	
द्वौ	द्वे	प्र०
द्वौ	द्वे	द्वि०
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	तृ०
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	च०
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	पं०
द्वयोः	द्वयोः	ष०
द्वयोः	द्वयोः	स०

(४१) किं शब्द (पुं०)

कः	कौ	के	प्र०
कम्	कौ	कान्	द्वि०
केन	काभ्याम्	कैः	तृ०
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	च०
कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	पं०
कस्य	कयोः	केषाम्	ष०
कस्मिन्	कयोः	केषु	स०

(४१) किं शब्द (स्त्रीलिंग)

का	के	काः	प्र०
काम्	के	काः	द्वि०
कया	काभ्याम्	काभिः	तृ०
कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः	च०
कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः	पं०
कस्याः	कयोः	कासाम्	ष०
कस्याम्	कयोः	कासु	स०

(४१) किं शब्द (नपुं)

किम्	के	कानि
किम्	के	कानि

शेषरूप पुल्लिंगवत्

(४२) युष्मत् शब्द

त्वं	युवाम्	यूयम्	प्र०	
त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः	द्वि०	
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	तृ०	
तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः	च०	
त्वद्	युवाभ्याम्	युष्मद्	पं०	
तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः	ष०	
त्वयि	युवयोः	युष्मासु	स०	

(४३) अस्मत् शब्द

अहं	आवाम्	वयम्	प्र०
माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः	द्वि०
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	तृ०
मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः	च०
मद्	आवाभ्याम्	अस्मद्	पं०
मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः	ष०
मयि	आवयोः	अस्मासु	स०

अतिरिक्त शब्दरूपावली

पुल्लिंगाः शब्दाः

(४४) अकारान्त पूर्व शब्द

पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः	प्र०	
पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्	द्वि०	
पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः	तृ०	
पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	च०	
पूर्वस्मात्, पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	पं०	
पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्	ष०	
पूर्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु	स०	
			सं०	

(४५) आकारान्त सोमपा शब्द

सोमपाः	सोमपौ	सोमपाः	प्र०
सोमपाम्	सोमपौ	सोमपः	द्वि०
सोमपा	सोमपाभ्याम्	सोमपाभिः	तृ०
सोमपे	सोमपाभ्याम्	सोमपाभ्यः	च०
सोमपः	सोमपाभ्याम्	सोमपाभ्यः	पं०
सोमपः	सोमपोः	सोमपाम्	ष०
सोमपि	सोमपोः	सोमपासु	स०
हे सोमपाः	हे सोमपौ	हे सोमपाः	सं०

(४४) पूर्वशब्द (स्त्रीलिंग)

पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः	प्र०
पूर्वाम्	पूर्वे	पूर्वाः	द्वि०
पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः	तृ०
पूर्वस्यै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः	च०
पूर्वस्याः	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः	पं०
पूर्वस्याः	पूर्वयोः	पूर्वासाम्	ष०
पूर्वस्याम्	पूर्वयोः	पूर्वासु	स०

(४६) अकारान्त दंत शब्द

दन्तः	दन्तौ	दन्ताः	प्र०
दन्तम्	दन्तौ	दतः	द्वि०
दता	दद्भ्याम्	दद्भिः	तृ०
दते	दद्भ्याम्	दद्भ्यः	च०
दतः	दद्भ्याम्	दद्भ्यः	पं०
दतः	दतोः	दताम्	ष०
दति	दतोः	दत्सु	स०
हे दन्त	हे दन्तौ	हे दन्ताः	सं०

एक पक्ष में दंत शब्द के रूप जिन शब्द की तरह भी चलते हैं।

(४४) पूर्व शब्द (नपुं)

पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि

शेष रूप पुल्लिगवत्

(४७) इकारान्त पति शब्द

पतिः	पती	पतयः	प्र०	सखा	सखायौ	सखायः
पतिम्	पती	पतीन्	द्वि०	सखायम्	सखायौ	सखीन्
पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः	तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः	च०	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः	पं०	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पत्युः	पत्योः	पतीनाम्	ष०	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
पत्यौ	पत्योः	पतिषु	स०	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
हे पते	हे पती	हे पतयः	सं०	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः

(४८) इकारान्त सखि शब्द

(४९) ईकारान्त सुधी शब्द

सुधीः	सुधियौ	सुधियः	प्र०	स्वयंभूः	स्वयंभुवौ	स्वयंभुवः
सुधियम्	सुधियौ	सुधियः	द्वि०	स्वयंभुवम्	स्वयंभुवौ	स्वयंभुवः
सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः	तृ०	स्वयंभुवा	स्वयंभूभ्याम्	स्वयंभूभिः
सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः	च०	स्वयंभुवे	स्वयंभूभ्याम्	स्वयंभूभ्यः
सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः	पं०	स्वयंभुवः	स्वयंभूभ्याम्	स्वयंभूभ्यः
सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्	ष०	स्वयंभुवः	स्वयंभुवोः	स्वयंभुवाम्
सुधियि	सुधियोः	सुधीषु	स०	स्वयंभुवि	स्वयंभुवोः	स्वयंभूषु
हे सुधीः	हे सुधियौ	हे सुधियः	सं०	हे स्वयंभूः	हे स्वयंभुवौ	हे स्वयंभुवः

(५०) ऊकारान्त स्वयंभू शब्द

(५१) इन्नन्त पथिन् शब्द

पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः	प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
पन्थानम्	पन्थानौ	पथः	द्वि०	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः	तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	च०	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः	पं०	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पथः	पथोः	पथाम्	ष०	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
पथि	पथोः	पथिषु	स०	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः	सं०	हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः

(५२) नकारान्त आत्मन् शब्द

(५३) नकारान्त युवन् शब्द

युवा	युवानौ	युवानः	प्र०	महान्	महान्तौ	महान्तः
युवानम्	युवानौ	यूनः	द्वि०	महान्तम्	महान्तौ	महतः
यूना	युवभ्याम्	युवभिः	तृ०	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः	च०	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः	पं०	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
यूनः	यूनोः	यूनाम्	ष०	महतः	महतोः	महताम्
यूनि	यूनोः	युवसु	स०	महति	महतोः	महत्सु
हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः	सं०	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

(५४) तकारान्त महत् शब्द

(५५) तकरान्त शतृप्रत्ययान्त हसत् शब्द

हसन्	हसन्तौ	हसन्तः	प्र०	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
हसन्तम्	हसन्तौ	हसतः	द्वि०	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
हसता	हसद्भ्याम्	हसद्भिः	तृ०	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
हसते	हसद्भ्याम्	हसद्भ्यः	च०	पुंसे	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
हसतः	हसद्भ्याम्	हसद्भ्यः	पं०	पुंसः	पुंभ्याम्	पुंभ्यः
हसतः	हसतोः	हसताम्	ष०	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
हसति	हसतोः	हसत्सु	स०	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
हे हसन्	हे हसन्तौ	हे हसन्तः	सं०	हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः

(५६) सकारान्त पुंस् शब्द

स्त्रीलिंगशब्दाः

(५७) हकारान्त अनडुह् शब्द

अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः	प्र०	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः	द्वि०	स्त्रियम्,स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रीः,स्त्रियः
अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः	तृ०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः	च०	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः	पं०	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
अनडुहः	अनडुहोः	अनडुहाम्	ष०	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
अनडुहि	अनडुहोः	अनडुत्सु	स०	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
हे अनड्वन्	हे अनड्वाहौ	हे अनड्वाहः	सं०	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

(५८) ईकारान्त स्त्री शब्द

(५९) ईकारान्त श्री शब्द

श्रीः	श्रियौ	श्रियः	प्र०	लक्ष्मीः	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्यः
श्रियम्	श्रियौ	श्रियः	द्वि०	लक्ष्मीम्	लक्ष्म्यौ	लक्ष्मीः
श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः	तृ०	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभिः
श्रिये, श्रियै	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः	च०	लक्ष्म्यै	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
श्रियाः,श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः	पं०	लक्ष्म्याः	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
श्रियाः,श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्,श्रियाम्	ष०	लक्ष्म्याः	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीणाम्
श्रियाम्,श्रियि	श्रियोः	श्रीषु	स०	लक्ष्म्यां	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीषु
हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः	सं०	हे लक्ष्मि	हे लक्ष्म्यौ	हे लक्ष्म्यः

(६०) ईकारान्त लक्ष्मी शब्द

(६१) ऊकारान्त वधू शब्द

वधूः	वध्वौ	वध्वः	प्र०	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
वधूम्	वध्वौ	वधूः	द्वि०	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	तृ०	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः	च०	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः	पं०	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्	ष०	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु	स०	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	सं०	हे स्वसः	हे स्वसारौ	हे स्वसारः

(६२) ऋकारान्त स्वसृ शब्द

(६३) ऋकारान्त मातृ शब्द

माता	मातरौ	मातरः	प्र०	सरित्	सरितौ	सरितः
मातरम्	मातरौ	मातॄः	द्वि०	सरितम्	सरितौ	सरितः
मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः	तृ०	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः	च०	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः	पं०	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्	ष०	सरितः	सरितोः	सरिताम्
मातरि	मात्रोः	मातृषु	स०	सरिति	सरितोः	सरित्सु
हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः	सं०	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

(६४) तकारान्त सरित् शब्द

(६५) हकारान्त उपानह् शब्द

उपानत्	उपानहौ	उपानहः	प्र	
उपानहम्	उपानहौ	उपानहः	द्वि०	
उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः	तृ०	
उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः	च०	
उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः	पं०	
उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्	ष०	
उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु	स०	
हे उपानत्	हे उपानहौ	हे उपानहः	सं०	

(६६) ऋकारान्त कर्तृ शब्द (नपुंसक)

कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि	प्र
कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि	द्वि०
कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०
कर्तृणे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः	च०
कर्तृणः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः	पं०
कर्तृणः	कर्तृणोः	कर्तृणाम्	ष०
कर्तृणि	कर्तृणोः	कर्तृषु	स०
हे कर्तृ, हे कर्तः	हे कर्तृणी	हे कर्तृणि	सं०

(६७) सर्व शब्द (स्त्रीलिंग)

सर्वा	सर्वे	सर्वाः	प्र०
सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः	द्वि०
सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः	तृ०
सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	च०
सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	पं०
सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	ष०
सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु	स०

(६८) अकारान्त अन्य शब्द (पुं)

अन्यः	अन्यौ	अन्ये	प्र०
अन्यम्	अन्यौ	अन्यान्	द्वि०
अन्येन	अन्याभ्याम्	अन्यैः	तृ०
अन्यस्मै	अन्याभ्याम्	अन्येभ्यः	च०
अन्यस्मात्	अन्याभ्याम्	अन्येभ्यः	पं०
अन्यस्य	अनयोः	अन्येषाम्	ष०
अन्यस्मिन्	अनयोः	अन्येषु	स०

(६७) सर्व शब्द (नपुंसक)

सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	प्र०
सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	द्वि०

शेष रूप पुल्लिगवत्

(६८) अन्य शब्द (नपुंसक)

अन्यत्	अन्ये	अन्यानि	प्र०
अन्यत्	अन्ये	अन्यानि	द्वि०

शेष रूप पुल्लिगवत्

(६८) अन्य शब्द (स्त्रीलिंग)

अन्या	अन्ये	अन्याः	प्र०
अन्याम्	अन्ये	अन्याः	द्वि०
अन्यया	अन्याभ्याम्	अन्याभिः	तृ०
अन्यस्यै	अन्याभ्याम्	अन्याभ्यः	च०
अन्यस्याः	अन्याभ्याम्	अन्याभ्यः	पं०
अनस्याः	अन्ययोः	अन्यासाम्	ष०
अन्यस्याम्	अन्ययोः	अन्यासु	स०

(६९) त्रि शब्द

पुं०	स्त्री	नपुं०
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

(७०) चतुर् शब्द

	पुं०	स्त्री	नपुंसक
प्र०	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि०	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृ०	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पं०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
ष०	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स०	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

(७१) पञ्चन् शब्द

पञ्च	प्र०
पञ्च	द्वि०
पञ्चभिः	तृ०
पञ्चभ्यः	च०
पञ्चभ्यः	पं०
पञ्चानाम्	ष०
पञ्चसु	स०

(७२) षष् शब्द

षट्,षड्	
षट्, षड्	
षड्भिः	
षड्भ्यः	
षड्भ्यः	
षण्णाम्	
षट्सु	

(७३) सप्तन् शब्द

सप्त	प्र०
सप्त	द्वि०
सप्तभिः	तृ०
सप्तभ्यः	च०
सप्तभ्यः	पं०
सप्तानाम्	ष०
सप्तसु	स०

(७४) कति शब्द

कति
कति
कतिभिः
कतिभ्यः
कतिभ्यः
कतीनाम्
कतिषु

(७५) उभ शब्द

पुं	स्त्री	
उभौ	उभे	प्र०
उभौ	उभे	तृ०
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	च०
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	पं०
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	ष०
उभयोः	उभयोः	स०
उभयोः	उभयोः	सं०

धातुओं की अकारादि अनुक्रमणिका

परिशिष्ट २ परिशिष्ट ३ परिशिष्ट ४ की धातुओं की अकारादि अनुक्रमणिका है। पहली पंक्ति में धातु हैं, दूसरी पंक्ति में धातुओं के संस्कृत अर्थ है, तीसरी पंक्ति में हिन्दी का अर्थ है, चौथी पंक्ति में गण की धातुओं के दो संकेत हैं सं और वि। स संक्षिप्तरूपों का और वि विस्तृतरूपों का द्योतक है। जो धातु गणों में नहीं आई है वहां × का चिह्न है। पांचवीं पंक्ति में पृष्ठों के प्रमाण हैं। पृ० ३२० से ४९७ तक गण की धातु के रूप देख सकते हैं। पृ० ४९८ से ५४५ तक जिन्नन्त, सन्नन्त, यङन्त और भाव कर्म की धातुओं के रूप दिए गए हैं। यङलुगन्त धातुओं के रूप ५४६ पृष्ठ से ५५७ पृष्ठ तक देख सकते हैं। क्त, णक, तृच् आदि प्रत्ययों के रूप पृष्ठ ५५८ से ५९३ पृष्ठ तक हैं।

धातु		अर्थ		
अकिङ्	लक्षणे	चिन्हकरना	सं	४६२
अघण्	पापकरणे	पापकरना	सं	४६२
अज	क्षेपणे च	फेंकना	वि	३६८
अञ्चु	गतौ च	जाना, पूजा करना	वि	३७४,५०८,५५८
अञ्जूर्	व्यक्तिम्रक्षण-कांतिगतिषु	प्रकट करना, चोपडना, जाना	सं	४६२,५४२,५५८
अट	गतौ	घूमना	सं	४६२,५५८
अण	शब्दे	शब्द करना	सं	४६२
अत	सातत्यगमने	सतत घूमना	सं	४६२,५१०
अदं	भक्षणे	खाना	वि	३३६,५२४,५५८
अन	प्राणने	जीवित रहना	सं	४६२,५२६,५५८
अन्धण्	दृष्ट्युपसंहारे	अंधा करना	सं	४६२
अमण्	रोगे	रोगी होना	×	
अयङ्	गतौ	जाना	सं	४६२,५१८
अर्कण्	स्तवने	स्तुति करना	सं	४६२
अर्च	पूजायाम्	पूजा करना	सं	४६२,५०८,५५८
अर्ज	अर्जने	संग्रह करना	सं	४६२,५०८,५५८

अर्ह	पूजायाम्	योग्य होना	वि	३७२,५१४,५५८
अव	रक्षणे	रक्षा करना	सं	४६२,५५८
अशश्	भोजने	खाना	वि	४५१,५५८
अशूङ्त्	व्याप्तौ	व्याप्त होना	सं	४६२,५३६,५५५,५५८
असक्	भुवि	होना	वि	३४१,५२६,५६०
असु	उपतापे	उपताप करना	सं	४६२
असुच्	क्षेपणे	फेंकना	सं	४६२,५३२,५६०
आप्लृत्	व्याप्तौ	पाना	वि	४२९,५३६,५६०
आसङ्क्	उपवेशने	बैठना	वि	३४३,५२६,५६०
इं	गतौ	जाना	वि	३५६,५६०
इंक्	स्मरणे	स्मरण करना	वि	३३०
इंङ्क्	अध्ययने	पढना	वि	४०४,५६०
इदि	परमैश्वर्ये	ऐश्वर्य भोगना	सं	४६२,५१०
इन्धीङ्र्	दीप्तौ	प्रकाशित करना	सं	४६२,५४२
इरस्	ईर्ष्यायाम्	ईर्ष्या करना	सं	४६२
इषज्	इच्छायाम्	इच्छा करना	वि	४३२,५४०,५६०
ईङ्च्	गतौ	जाना	सं	४६२,५३४
ईक्षङ्	दर्शने	देखना	वि	३८४,५६०
ईडङ्क्	स्तुतौ	स्तुति करना	वि	४०६,५२६,५६०
ईरङ्क्	गतिकम्पनयोः	जाना, धूजना	सं	४६२
ईर्ष्य	ईर्ष्यायाम्	ईर्ष्या करना	सं	४६२
ईशङ्क्	ऐश्वर्ये	समर्थ होना	सं	४६२
ईहङ्	चेष्टायाम्	चेष्टा करना	सं	४६२,५२०,५६०
उक्ष	सेचने	सिंचन करना	×	५१४
उज्झज्	उत्सर्गे	छोडना	सं	४६२
उषु	दाहे	जलना	वि	३७०
ऊर्जण्	बलप्राणनयोः	बलवान होना, जीना	सं	४६२
ऊर्णुन्क्	आच्छादने	ढकना	सं	४६२,५२८,५५२
ऊहङ्	वितर्के	तर्क करना	सं	४६४,५२०,५६०
ऋं	प्रापणे	पाना	वि	३२५,५६०
ऋंक्	गतौ	जाना	×	५२८,५५३,५६०
ऋजङ्	गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु	जाना, ठहरना, पैदाकरना श्वासोश्वास लेना	×	५१६

ऋधूच्	वृद्धौ	बढना	×	५३०
एजृ	कम्पने	कांपना	वि	३७५,५०८
एधङ्	वृद्धौ	बढना	वि	३८३,५१८,५६०
एषृङ्	गतौ	जाना	×	५२०
ओण	अपनयने	दूरकरना	×	५१०
कटे	वर्षावरणयोः	वरसना, ढांकना	सं	४६४,५१०,५४६
कडि	मदे	मद करना	सं	४६४
कण्डून्	गात्रविघर्षणे	खाजकरना	सं	४६४
कण	शब्दे	शब्द करना	सं	४६४,५१०,५४७
कत्थङ्	श्लाघायाम्	प्रशंसा करना	सं	४६४
कथण्	वाक्यप्रबन्धे	कहना	सं	४६४,५४४,५६०
कनी	दीप्तिगतिकांतिषु	दीप्त होना, जाना, शोभित होना	सं	४६४
कपिङ्	चलने	कांपना	सं	४६४,५१८,५४६,५६०
कबृङ्	वर्णे	वर्णनकरना	×	५१८,५४६
कमुङ्	कान्तौ	दीप्त होना	सं	४६४,५६०
कलण्	संख्यानगत्योः	गिनना, जाना	सं	४६४
कलङ्	शब्दसंख्यानयोः	शब्द करना, गिनना	सं	४६४,५२०,५५०
कस	गतौ	जाना	×	५२४,५५१,५६०
काक्षि	काङ्क्षायाम्	चाहना	सं	४६४,५१६,५४८,५६०
काशच्	दीप्तौ	चमकना	×	५३४,५५५
काशृङ्	दीप्तौ	चमकना	सं	४६४,५२०,५५०,५६०
कासृङ्	शब्दकुत्सायाम्	खांसना	सं	४६४,५२०,५५०
कित	निवासरोगापनयनसंशयेषु	निवास करना, रोग को दूर करना, संशय करना	सं	४६४
कुंक्	शब्दे	शब्द करना	×	५२६,५५२
कुंङ्	शब्दे	शब्द करना	×	५१६,५४८
कुंच	कौटिल्याल्पीभावयोः	वक्रता करना, कम करना	× ×	५२२
कुच	उच्चैःशब्दे	जोर से बोलना	×	५२२,५५१
कुचज्	संकोचने	संकोच करना	वि	४३३,४६४,५४०,५५६, ५६०

कुटज्	कौटिल्ये	कुटिलता करना	सं	४६४,५४०,५५६
कुथच्	पूतिभावे	दुर्गंधवाला होना	×	५२८,५५३
कुपच्	क्रोधे	क्रोध करना	सं	४६४,५३०,५५३,५६०
कूर्द	क्रीडायाम्	कूदना	×	५१८,५४९
कृतीज्	छेदने	छेदन करना	सं	४६४,५३८,५५६,५६०
कृंन्	करणे	करना	वि	३२६,५२०,५५०,५६०
कृपूङ्	सामर्थ्ये	समर्थ होना	सं	४६४,५६०
कृशच्	तनूकरणे	पतला होना	सं	४६४,५३२,५५४
कृषं	आकर्षणे	खींचना	सं	४६४,५१४,५४८
कृषंन्ज्	विलेखने	जोतना	सं	४६४,५३८,५५५,५६०
कॄन्श्	हिंसायाम्	हिंसा करना	सं	४६४
कॄज्	विक्षेपे	फेंकना	सं	४६६,५३८,५५६,५६२
कॄतण्	संशब्दने	प्रशंसा पाना	सं	४६६,५६२
क्नूयीङ्	शब्दोन्दनयोः	भींजना, शब्द करना	सं	४६६
क्रदि	रोदनाह्वनयोः	रोना, बुलाना	सं	४६६,५१०,५२४,५४७, ५५१,५६२
क्रपङ्	कृपायाम्	दया करना	सं	४६६
क्रमु	पादविक्षेपे	चलना	सं	४६६,५१२,५४७,५६२
क्रीङ्	विहारे	क्रीडा करना	सं	४६६,५१०,५४६,५६२
क्रींन्श्	द्रव्यविनिमये	खरीदना	वि	४४२,५६२
क्रुधंच्	कोपे	क्रोध करना	वि	४२०,५३०,५५३,५६२
क्रुशं	आह्वानरोदनयोः	बुलाना, रुलाना	सं	४६६,५२४,५५१,५६२
क्लदि	रोदनाह्वानयोः	बुलाना, रुलाना	सं	४६६
क्लमुच्	ग्लानौ	ग्लानि होना	सं	४६६,५३२,५५४,५६२
क्लिदूच्	आर्द्रीभावे	गीला होना	सं	४६६,५३०,५५३
क्लिशङ्च्	उपतापे	खिन्न होना	वि	४२४,५३४,५५५
क्लिशूश्	विबाधने	क्लेश करना	×	५६२
क्वण	शब्दे	वीणा का शब्द	×	५१०,५४७,५६२
क्षणुन्	हिंसायाम्	हिंसा करना	सं	४६६
क्षमूच्	सहने	क्षमा करना	सं	४६६,५३२,५५४,५६२
क्षमूषङ्	सहने	क्षमा करना	सं	४६६,५१८,५५०
क्षर	संचलने	झरना, छोडना	सं	४६६,५२४,५५१
क्षलण्	शौचे	धोना	सं	४६६,५६२

क्षि	क्षये	नष्ट होना	सं	४६६,५६२
क्षिपंच्	प्रेरणे	फेंकना	सं	४६६,५३०,५५३
क्षिपंन्ज्	प्रेरणे	फेंकना	सं	४६६,५३६,५५५,५६२
क्षिवु	निरसने	थूकना	सं	४६६
क्षिवुच्	निरसने	थूकना	सं	४६६
क्षु	शब्दे	शब्द करना	×	५२६,५५२
क्षुद्ंन्र्	संपेषे	पीसना	×	५६२
क्षुधंच्	बुभुक्षायाम्	भूख लगना	सं	४६६,५६२
क्षुभच्	संचलने	क्षोभ पाना	सं	४६६,५३२,५५४,५६२
क्ष्णुक्	तेजने	तीक्ष्ण करना	×	५२४,५५२
क्ष्विदाच्	मोचने, स्नेहने	छोडना, चिकना करना	सं	४६६
खजि	गतिवैकल्ये	लंगडाना	सं	४६६
खडिण्	भेदे	तोडना	सं	४६६,५१६,५४६
खनुन्	अवदारणे	खोदना	सं	४६८,५६२
खादृ	भक्षणे	खाना	सं	४६८,५१०,५४७,५६२
खिट्	उत्त्रासे	भय पाना	×	५१०,५४६
खिदंङ्च्	दैन्ये	खिन्न होना	वि	४२२,५३४,५५४
खिदंङ्र्	दैन्ये	खेद करना	×	५४२ ५५७
खेला	विलासे	क्रीडा करना	×	५१२,५४७
ख्यांक्	प्रकथने	प्रसिद्ध होना	सं	४६८,५२४,५५२,५६२
गणण्	संख्याने	गिनना	सं	४६८,५६२
गद	व्यक्तायां वाचि	कहना	सं	४६८,५१०,५४७,५६२
गद्गद्	वाक्स्खलने	अस्पष्ट शब्द बोलना	सं	४६८
गम्लृं	गतौ	जाना	वि	३३४,५६२
गर्ज	शब्दे	गर्जना	सं	४६८,५०८,५४६,५६४
गर्द	शब्दे	शब्द करना	सं	४६८
गर्व	दर्पे	अभिमान करना	सं	४६८,५१४,५४८
गर्हंङ्	कुत्सने	निंदा करना	सं	४६८,५२०,५५०,५६४
गल	अदने	निगलना	सं	४६८,५१४,५४८,५६४
गवेषण्	मार्गणे	खोजना	सं	४६८,५६४
गाङ्	गतौ	जाना	सं	४६८
गाहूङ्	विलोडने	डुबकी लगाना	सं	४६८,५२०,५५०,५६४
गुजि	अव्यक्ते शब्दे	गुंजनकरना	सं	४६८,५६४

गुधच्	परिवेष्टने	वेष्टित करना	×	५३०,५५३
गुपड्	गोपनकुत्सनयो:	निंदा करना	सं	४६८,५१८,५४६,५६४
गुपच्	व्याकुलत्वे	आकुलव्याकुल होना	×	५३२
गुपू	रक्षणे	रक्षा करना	वि	३८२,५१२,५४७,५६४
गुफज्	ग्रन्थने	गूंथना	×	५४०,५५६
गुम्फज्	ग्रन्थने	गूंथना	सं	४६८,५४०,५५६,५६४
गुहून्	संवरणे	छिपाना	वि	३६०,५६४
गृधूच्	अभिकांक्षायाम्	लोलुपता रखना	सं	४६८,५३०,५५३
गृहूड्	कुत्सने	निंदा करना	सं	४६८
गॄज्	निगरणे	निगलना	सं	४६८,५३८,५५६,५६४
गॄश्	शब्दे	कहना	सं	४६०
गॅं	शब्दे	गाना	सं	४६८,५०८,५४६,५६४
ग्रन्थण्	संदर्भे	बांधना	सं	४६८
ग्रन्थश्	संदर्भे	बांधना	सं	४६८,५६४
ग्रसुङ्	अदने	खाना	सं	४६८,५६४
ग्रहन्श्	उपादाने	ग्रहण करना	वि	३६५,५४४,५५७,५६४
ग्लॅं	हर्षक्षये	खिन्न होना	सं	४६८,५६४
घटङ्	संघाते	मिलाना	सं	४६८
घटषड्	चेष्टायां	चेष्टा करना	×	५६४
घस्लृं	अदने	खाना	सं	४६८
घुण्	भ्रमणे	चक्कर खाना	×	५१६,५४६
घुणज्	भ्रमणे	चक्कर खाना	×	५४०,५५६
घुषॄ	शब्दे	घोषणा करना	×	५१४,५४८
घूर्णज्	भ्रमणे	चक्कर खाना	×	५६४
घृषु	संघर्षे	घर्षण करना	सं	४७०,५१४,५४८,५६४
घ्रां	गन्धोपादाने	सूंघना	वि	३२१,५०८,५६४
चकड्	तृप्तिप्रतिघातयो:	तृप्त होना, घात करना	×	५१६
चकासृक्	दीप्तौ	दीप्त होना	वि	४००,५६४
चक्षङ्क्	व्यक्तायां वाचि	कहना	वि	४०७,५२६,५५२,५६६
चडिङ्	कोपे	कुपित होना	सं	४७०
चतेन्	याचने	मांगना	सं	४७०
चमु	अदने	खाना	सं	४७०,५६६
चर	भक्षणे गतौ	खाना, जाना	सं	४७०,५१२,५४७,५६६

चर्व	अदने	चबाना	सं	४७०,५१४,५४८,५६६
चल	कम्पने	धूनना	सं	४७०,५५१
चल	कम्पने	हिलना	सं	४७०,५२४,५६६
चषन्	भक्षणे	खाना	×	५२२,५५०
चिन्त्	चयने	चुनना	वि	४२५,५६६
चिंतिण्	स्मृत्याम्	चिंतन करना	सं	४७०,५६६
चिती	संज्ञाने	समझना	सं	४७०,५१०,५४७,५६६
चित्रण्	चित्रक्रियायाम्	चित्र बनाना	सं	४७०
चुटिण्	छेदने	छेदना	सं	४७०
चुदण्	संचोदने	प्रेरणा देना	×	५६६
चुप	मंदगतौ	धीरे २ जाना	सं	४७०,५१२,५४७
चुबि	वक्त्रसंयोगे	चूमना	सं	४७०,५१२,५४७,५६६
चुरण्	स्तेये	चुराना	वि	३६७,५४४,५५७,५६६
चूष	पाने	चूसना	सं	४७०
चेष्टङ्	चेष्टायाम्	चेष्टाकरना	सं	४७०,५६६
छदण्	संवरणे	ढांकना	सं	४७०,५६६
छिदृ न्र्	द्वैधीकरणे	काटना	वि	४३६,५४२,५५७,५६६
छुपज्	स्पर्शे	स्पर्श करना	×	५४०,५५६
छृदण्	संदीपने	उद्दीप्त करना	सं	४७०
छेदण्	द्वैधीकरणे	काटना	सं	४७०
जक्षक्	भक्षहसनयोः	खाना, हंसना	सं	४७०,५२६,५५२
जनीङ्च्	प्रादुर्भावे	उत्पन्न होना	वि	४२१,५६६
जप	मानसे च	जाप करना, बोलना	सं	४७०,५०६,५१२,५४७, ५६६
जल्प	व्यक्तायां वाचि	बात करना, बोलना	सं	४७०,५१२,५४७,५६६
जसुच्	मोक्षणे	छोडना	सं	४७०
जसुण्	ताडने	ताडना	सं	४७०
जागृक्	निद्राक्षये	जागना	वि	३३८,५२६,५६६
जि	जये	जीतना	वि	३२२,५६६
जिमु	अदने	जीमना	सं	४७०,५१२,५४७
जीव	प्राणधारणे	जीना	वि	३७६,५१४,५४८,५६६
जूष	हिंसायाम्	हिंसा करना	सं	४७०
जृभिङ्	गात्रविनामे	जंभाइ लेना	सं	४७०,५१८,५४६,५६६
जॄश्	वयोहानौ	वृद्ध होना	×	५६६

जृष्	वयोहानौ	वृद्ध होना	सं	४७०
ज्ञांश्	अवबोधने	जानना	वि	३६५,५६६
ज्ञाण्	मारणतोषण-निशानयोगेषु	मारना, खुश करना तीक्ष्ण करना	सं	४७२,५६६
ज्यांश्	वयोहानौ	वृद्ध होना	सं	४७२,५६८
ज्वर	रोगे	ज्वर होना	सं	४७२,५६८
ज्वल	दीप्तौ	जलना	सं	४७२,५६८
टकिण्	बन्धने	चिह्न लगाना	सं	४७२,५६८
टीकृङ्	गतौ	जाना	×	४७२,५१६,५४६
डीङ्	विहायसा गतौ	पक्षी का उडना	×	४७२,५१६,५४८,५६८
डीङ्च्	गतौ	जाना	×	४७२,५३४,५५४
ढौकृङ्	गतौ	पहुंचना	सं	४७२,५१६,५४८,५६८
णट	नृत्तौ	नाचना	सं	४७२,५१०,५४६,५६८
णद	अव्यक्ते शब्दे	नाद करना	सं	४७२,५६८
णमं	नमने	झुकना	वि	३७६,५६८
णशूच्	अदर्शने	उपलब्ध न होना	वि	३५२,५३२,५५४,५६८
णहंन्च्	बंधने	बांधना	सं	४७२,५३६,५५५,५६८
णिजक्	शौचे च	निर्मल करना, पोषण करना	×	५२८,५५३,५६८
णिदि	कुत्सायाम्	निंदा करना	सं	४७२,५१०,५४७,५६८
णींन्	प्रापणे	पाना	सं	४७२,५६८
णुक्	स्तुतौ	स्तुति करना	सं	४७२,५२६,५५२,५६८
णुदंज्	प्रेरणे	प्रेरणा देना	सं	४७२,५४०,५५६,५६८
णूज्	स्तवने	स्तवना करना	×	५४०,५५६,५६८
तसि	अलङ्कारे	सजाना	×	५६८
तक	हसने	हंसना	सं	४७२
तकि	कृच्छ्रजीवने	दुःखी अवस्था में जीना	सं	४७२
तक्षू	तनूकरणे	छीलना	सं	४७२,५१४,५४८,५६८
तडण्	आघाते	पीटना	सं	४७२,५४४
तनुन्व्	विस्तारे	फैलना	वि	३६३,५४२,५५७,५६८
तपं	संतापे	तपना	सं	४७२,५१२,५४७,५६८
तपङ्च्	ऐश्वर्ये	ऐश्वर्य भोगना	×	५३४,५५५
तमुच्	कांक्षायाम्	अभिलाषा करना	सं	४७२,५३२,५५४,५६८

तर्कण्	तर्कणे	तर्क करना	×	५६८
तर्ज	भर्त्सने	डांटना	वि	३७३,५०८,५४६
तर्जङ्ण्	संतर्जने	तिरस्कार करना	सं	४७२,५६८
तायृङ्	संतानपालनयोः	रचना करना, रक्षण करना	सं	४७२,५१८,५५०
तिजङ्	क्षमानिशानयोः	क्षमा करना, तीक्ष्ण करना	सं	४७२,५१६,५४६,५६८
तिमच्	आर्द्रीभावे	भींगना	×	५३०,५५३
तीमच्	आर्द्रीभावे	भींगना	×	५३०,५५३
तुंक्	गतिवृद्धिहिंसासु	जाना, बढना हिंसा करना	×	५२४,५५२
तुडज्	कलहकर्मणि	क्लेश करना	सं	४७२
तुदंन्ज्	व्यथने	पीडना	सं	४७२,५३६,५५५,५६८
तुलण्	उन्माने	तोलना	सं	४७२
तुषं	तुष्टौ	प्रसन्न होना	सं	४७२,५३२,५५४,५७०
तृपत्	प्रीणने	खुश करना	×	५३६,५५५
तृपूच्	तृप्तौ	तृप्तहोना	सं	४७२,५३०,५५३,५७०
तृषच्	पिपासायां	प्यास लगना	सं	४७२,५३२,५५४
तृहर्	हिंसायाम्	हिंसा करना	×	५४२,५५७
तॄ	प्लवनतरणयोः	तैरना	वि	३२४,५०८,५४६,५७०
त्यजं	हानौ	छोडना	वि	३७७,५०८,५४६,५७०
त्रपूषङ्	लज्जायाम्	शर्माना	सं	४७४,५१८,५७०
त्रसीच्	उद्वेगे	डरना	सं	४७४,५३०,५५३,५७०
त्रुटज्	छेदने	तोडना	×	५४०,५५६,५७०
त्रुटङ्ण्	छेदने	तोडना	सं	४७४
त्रैंङ्	पालने	बचाना	सं	४७४,५७०
त्रैकृङ्	गतौ	जाना	×	५४८
त्वरषङ्	संभ्रमे	उतावल करना	सं	४७४,५७०
दंश	दशने	डसना	सं	४७४,५७०
दंशङ्ण्	दशने	डंक मारना	सं	४७४
दण्डण्	दण्डनिपातने	दण्डित करना	सं	४७४,५७०
ददङ्	दाने	देना	सं	४७४,५१८,५४६
दधङ्	धारणे	धारण करना	सं	४७४,५१८,५४६

दमुच्	उपशमे	शांत होना	सं	४७४,५७०
दम्भृत्	दम्भे	धोखा देना	सं	४७४,५३६,५५५,५७०
दयङ्	दानगतिहिंसा-दहनेषु च	देना, जाना, हिंसा करना, जलाना, रक्षा करना	सं	४७४,५१८,५५०,५७०
दरिद्राक्	दुर्गतौ	दरिद्र होना	सं	४७४,५२६
दल	विशरणे	सडना	सं	४७४,५१२,५४७,५७०
दलण्	विदारणे	फाडना	सं	४७४
दहं	भस्मीकरणे	जलाना	वि	३८०,५१४,५४८,५७०
दांन्क्	दाने	देना	वि	३५०,५०५,५७०
दांपक्	लवने	काटना	सं	४७४,५५२
दांम्	दाने	देना	सं	४७४,५०८,५४६
दांन्न्	अवखण्डने	तोडना	×	५२२,५५०
दिवुच्	क्रीडाविजिगीषा व्यवहारद्युति स्तुतिमोद मद स्वप्नकान्ति गतिषु	रमण करना, जीतना व्यवहार करना, जुआ खेलना, स्तुति करना, प्रसन्न होना, मद करना स्वप्न लेना, दीप्त होना, जाना	वि	४१६,५२८,५५३,५७०
दिशंन्ज्	दाने	दान देना	वि	४१६,४७४,५३८,५५५, ५७०
दिहंन्क्	उपचये	लेप करना	सं	४७६,५२८,५५२,५७०
दीक्षङ्	मौण्ड्येज्योपनयन नियमव्रतादेशेषु	दीक्षित होना	सं	४७६,५२०,५५०,५७०
दीङ्च्	क्षये	क्षय होना	×	५३४,५५४
दीपीङ्च्	दीप्तौ	चमकना	सं	४७६,५३४,५५५,५७०
दुं	गतौ	जाना	वि	३२३
दुंत्	उपतापे	दुःखित होना	सं	४७६,५७०
दुःखण्	तत्क्रियायां	दुःखित होना	सं	४७६
दुपंच्	वैकृत्ये	बिगडना	सं	४७६,५७०
दुहंन्क्	क्षरणे	दुहना	वि	३४७,५२८,५५२,५७२
दूङ्च्	परितापे	दुःखित होना	सं	४७६,५३४,५५४,५७२
दृङ्ज्	आदरे	आदर करना	×	५७२
दृशं	प्रेक्षणे	देखना	वि	३३४,५७२

दूपूच्	हर्षमोहनयोः	खुश करना, अभिमान करना	×	५३०,५५३
दॅंङ्	पालने	रक्षा करना	सं	४७६,५१६,५४८
दैंप्	शोधने	साफ करना	सं	४७६
दोंच्	अवखण्डने	काटना	सं	४७६,५२८,५५३,५७२
द्युतङ्	दीप्तौ	चमकना	सं	४७६,५२२,५५१,५७२
द्रांक्	कुत्सायां गतौ	भाग जाना	×	५२४,५५२
द्राहङ्	निक्षेपे	स्थापना करना	×	५२०,५५०
द्रुं	गतौ	पिघलना	सं	४७६
द्रुहूच्	जिघांसायाम्	द्रोह करना	सं	४७६,५३२,५५४,५७२
धुक्ष्	संदीपनक्लेश जीवनेषु	उत्तेजित करना क्लेश करना, जीवित रखना	×	५२०,५५०
द्विषंन्क्	अप्रीतौ	द्वेष करना	वि	४१३,५२८,५५२,५७२
धान्क्	धारणे	धारण करना	वि	४१६,५२८,५५३,५७२
धावुन्	गतिशुद्ध्योः	दौडना, धोना	सं	४७६,५२२,५५०,५७२
धिवित्	गतौ	जाना	सं	४७६,५३६,५५५
धूज्	विधूनने	कंपित होना	×	५४०,५५६,५७२
धूनत्	कम्पने	कंपित होना	सं	४७६,५३६,५५५,५७२
धूनण्	कम्पने	कंपित होना	सं	४७६
धूप	संतापे	सुखाना	सं	४७६,५१२,५४७,५७२
धृंन्	धारणे	धारण करना	सं	४७६,५२०,५५०
धृङ्ज्	स्थाने	रहना, आधार बनना	सं	४७६,५७२
धेंट्	पाने	पीना, चूसना	वि	३२६,५०८,५४६,५७२
ध्मां	शब्दाग्निसंयोगयोः	फूंकना	सं	४७६,५०८,५४६,५७२
ध्यैं	चिन्तायाम्	चिंतन करना	वि	३३०,५०८,५४६,५७२
ध्रुंज्	गतिस्थैर्ययोः	जाना, स्थिर रहना	सं	४७६
ध्वन	शब्दे	शब्द करना	सं	४७६,५१२,५४७,५७२
ध्वंसुङ्	गतौ च (अवस्रंसने)	नष्ट होना	सं	४७६,५२२,५५१,५७२
नदि	समृद्धौ	प्रसन्न होना	सं	४७६,५१०,५४७,५७२
नाथृङ्	उपतापैश्वर्याशीषु च	दुःख लाना, ऐश्वर्य भोगना, आशीर्वाद देना, मांगना	सं	४७६,५१६,५४६

नृतीच्	नर्तने	नाचना	वि	३५१,५२८,५५३,५७२
पचंषन्	पाके	पकाना, रांधना	सं	४७८,५२२,५५०,५७२
पचिण्	विस्तारे	विस्तार करना	सं	४७८
पट	गतौ	जाना	सं	४७८
पठ	व्यक्तायां वाचि	पढना	वि	३३१,५१०,५४६,५७२
पणङ्	व्यवहारस्तुत्योः	खरीदना	सं	४७८,५१६,५४६,५७२
पत्लृ	पतने	गिरना	सं	४७८,५२२,५५१,५७२
पथे	गतौ	जाना	सं	४७८
पदंङ्च्	गतौ	जाना	सं	४७८,५३४,५५४,५७४
पर्दङ्	कुत्सित शब्दे	अधोवायु निकलना	सं	४७८,५१८,५४६
पलण्	रक्षणे	रक्षा करना	वि	४५३,५७४
पां	पाने	पीना	वि	३२१,५०८,५४६,५७४
पांक्	रक्षणे	रक्षा करना	सं	४७८,५७४
पिडिङ्	संघाते	इकट्ठा करना	सं	४७८,५१६,५४६
पिष्लृंर्	संचूर्णने	पीसना	वि	३६२,५४२,५५७,५७४
पींङ्च्	पाने	पीना	सं	४७८,५३४,५५४,५७४
पीडण्	पीडने	पीडा देना	सं	४७८,५७४
पुष	पुष्टौ	पुष्ट करना	×	५१४,५४८
पुषंच्	पुष्टौ	पुष्ट करना	सं	४७८,५३०,५५३,५७४
पुषश्	पुष्टौ	पुष्ट करना	वि	४५१,५७४
पुष्पच्	विकसने	विकसित होना	×	४७८,५७४
पून्श्	पवने	साफ करना	वि	४४३,५४४,५५७,५७४
पूङ्	पवने	पवित्र करना	सं	४७८,५७४
पूजण्	पूजायाम्	पूजना	वि	४५२,५४४,५७४
पूरण्	आप्यायने	पूरण करना	सं	४७८,५७४
पूरीङ्च्	आप्यायने	बढना, पूर्ण होना	सं	४७८,५३४,५५५,५७४
पूष	वृद्धौ	बढना	सं	४७८
पृंक्	पालनपूरणयोः	पालन करना	सं	४७८,५७४
पृंङ्ज्	व्यायामे	व्यायाम करना	×	५४०,५५६
पृंत्	प्रीतौ	प्रसन्नहोना	सं	४७८,५३६,५५५
पृचीङ्क्	संपर्चने	मिश्रण करना	×	५२६,५५२
पृचीर्	संपर्के	मिश्रण करना	×	५४२,५५७,५७४
पृण्	पूरणे	पूरा करना	सं	४७८

पॄक्	पालनपूरणयोः	पालन करना, पूरा करना	×	५२८,५५३
पॄश्	पालनपूरणयोः	पालन करना, पूरा करना	×	५७०
प्यायीङ्	वृद्धौ	बढना	सं	४७८,५१८,५५०,५७४
प्रच्छंज्	ज्ञीप्सायाम्	पूछना	वि	३५७,५७४
प्रथण्	प्रख्याने	प्रसिद्ध होना	सं	४७८
प्रथषङ्	प्रख्याने	प्रसिद्ध होना	×	५२४,५५१,५७४
प्रीन्‌श्	तृप्तिकान्त्योः	खुशकरना, अभिलाषा करना	सं	४७८,५४४,५५७,५७४
प्रीङ्‌च्	प्रीतौ	प्रेम करना	सं	४७८,५३४,५५४,५७४
प्लुंङ्	गतौ	कूदना	×	५७४
प्लुषु	दाहे	जलाना	सं	४७८,५१४,५३२,५४८, ५७४
प्लुषुच्	दाहे	जलाना	×	५५४
प्सांक्	भक्षणे	खाना	वि	३९८,५२४,५५१
फल	निष्पत्तौ	कार्य सिद्ध होना	×	५१२,५४७
फुल्ल	विकसने	फूलना	सं	४८०,५१२,५४७,५७४
बधङ्	बन्धने	बांधना	×	५४९
बन्धंश्	बन्धने	बांधना	वि	४५०,५७४
बल	प्राणनधान्याव रोधयोः	जीना, अनाज के संग्रह के लिए कोठा बनाना	सं	४८०
बाधृङ्	विलोडने	पीडा देना	सं	४८०,५१८,५४९,५७४
बुक्क	भषणे	कुत्ते का भूंकना	सं	४८०
बुध	अवगमने	जानना	सं	४८०,५२४,५५१
बुधंङ्‌च्	ज्ञाने	जानना	वि	३५३,५७४
बुधन्	बोधने	जानना	×	५२२,५५०
ब्रुडज्	निमज्जने	डूबना	सं	४८०
ब्रूंन्‌क्	व्यक्तायां वाचि	बोलना	वि	३४५,५२८,५५२,५७४
भक्षण्	अदने	खाना	×	५७६
भक्षन्	भक्षणे	खाना	सं	४८०
भजंन्	सेवायाम्	सेवा करना	×	५२२,५५०,५७६
भञ्जोंर्	आमर्दने	मर्दनकरना	सं	४८०,५४२,५५७,५७६

भडिङ्	परिभाषणे	बातचीत करना	×	५१६,५४९
भण	शब्दे	शब्द करना	सं	४८०,५१०,५४७,५७६
भर्त्सङ्ण्	संतर्जने	तिरस्कार करना	सं	४८०
भष	भर्त्सने, कुत्सित-शब्दकरणे	भर्त्सना करना, कुत्ते का भौंकना	×	५१४,५४८
भांक्	दीप्तौ	शोभित होना	सं	४८०,५२४,५५१,५७६
भाषङ्	व्यात्तायां वाचि	कहना	सं	४८०,५२०,५५०,५७६
भासृङ्	दीप्तौ	चमकना	सं	४८०,५७६
भिक्षङ्	याञ्चायाम्	मांगना	सं	४८०,५२०,५५०,५७६
भिदृंन्र्	विदारणे	तोडना	वि	३६०,५४२,५५७,५७६
भिषज्	चिकित्सायाम्	चिकित्सा करना	सं	४८०
भींक्	भये	डरना	वि	३४८,५२८,५७६
भुजंर्	पालनाभ्यवहारयो:	पालना, खाना	वि	५७६
भू	सत्तायाम्	होना	वि	३२०,४९८,५०१,५०३, ५०४,५०८,५४६,५७६
भूष	अलंकारे	सजाना	वि	३७८,५१४,५४८,५७६
भृंन्	भरणे	पोषण करना	सं	४८०,५२०,५५०,५७६
भृंन्क्	पोषणे च	पोषण करना	वि	४१८,५७६
भृशु	अध: पतने	भ्रष्ट होना	×	५५४
भृशुच्	अध: पतने	भ्रष्ट होना	×	४८०,५३२,५५४
भ्रंशुच्	अध: पतने	भ्रष्ट होना	×	५३४,५५४
भ्रंसुङ्	अवस्रंसने	नष्ट होना	वि	३८७,५२२,५५१
भ्रमु	चलने	चलना	सं	४८०,५२४,५५१,५७६
भ्रमुच्	अनवस्थाने	घूमना	सं	४८०,५३२,५५४,५७६
भ्रस्जंन्ज्	पाके	भूनना	×	५३८,५५५,५७६
भ्राजृङ्	दीप्तौ	चमकना	सं	४८०
भ्राशृङ्	दीप्तौ	चमकना	सं	४८०
भ्लक्षन्	भक्षणे	खाना	सं	४८०,५२२,५५०
भ्लाशृङ्	दीप्तौ	चमकना	सं	४८०
मडि	भूषायाम्	सजाना	सं	४८०
मथे	विलोडने	मथना	सं	४८०
मदी	हर्षग्लेपनयो:	प्रसन्न होना	सं	५२४,५५१
मदीच्	हर्षे	प्रसन्न होना	सं	४८२,५३२,५५४,५७६

मनंङ्च्	ज्ञाने	मानना	वि	३५३,५३४,५५५,५७६
मनुङ्व्	बोधने	मानना	सं	४८२,५७६
मन्तु	अपराधरोषयोः	अपराध करना, रोष करना	सं	४८२
मन्त्रङ्ण्	गुप्तभाषणे	मन्त्रणा करना	वि	४५६,५७६
मन्थश्	विलोडने	मन्थन करना	वि	४४६,५७६
मस्जोंज्	शुद्धौ	स्नान करना, डूबना	सं	४८२,५४०,५५६,५७६
मह	पूजायाम्	पूजा करना	सं	४८२,५७६
महण्	पूजायाम्	पूजा करना	×	५४४
मांक्	माने	समाना	सं	४८२,५२४,५५२,५७८
मांङ्क्	मानशब्दयोः	मापना, शब्दकरना	×	५७८
मानण्	पूजायाम्	पूजा करना	सं	४८२,५७८
मार्गण्	अन्वेषणे	खोजना	वि	४५८,५७८
मिनत्	प्रक्षेपणे	फेंकना	×	५३६,५५५,५७८
मिलज्	श्लेषणे	मिलाना	सं	४८२,५७८
मिश्रण्	संपर्चने	मिलाना	सं	४८२,५७८
मिषज्	स्पर्धायाम्	स्पर्धा करना	×	५४०,५५६
मिहं	सेचने	गीला करना	सं	४८२,५७८
मींन्श्	हिंसायाम्	हिंसा करना	×	५४४,५५७,५७८
मील	निमेषणे	आंख मीचना	सं	४८२,५१२,५४७,५७८
मुच्लृंत्ज्	मोक्षणे	छोडना	वि	४३०,५३८,५५५,५७८
मुदङ्	हर्षे	प्रसन्नहोना	सं	४८२,५१८,५४६,५७८
मुर्च्छा	मोहसमुच्छ्राययोः	मूर्छित होना	सं	४८२,५७८
मुषश्	स्तेये	चुराना	सं	४८२,५७८
मुहूच्	वैचित्त्ये	मोह में पडना	सं	४८२,५७८
मूत्रण्	प्रस्रवणे	मूत्र करना	सं	४८२
मूल	प्रतिष्ठायाम्	आधाररूप होना	सं	४८२,५१२,५४७
मूष	स्तेये	चुराना	सं	४८२
मृंज्	प्राणत्यागे	मरना	वि	३५८,५३८,५५६,५७८
मृगङ्ण्	अन्वेषणे	खोजना	सं	४८२,५७८
मृजूक्	शुद्धौ	साफ करना	वि	४०३,५२६,५५२,५७८
मृशंज्	आमर्षणे	स्पर्श करना	×	५४०,५५६
मृषण्	क्षान्तौ	सहन करना	×	५१४,५४८

मृषन्च्	तितिक्षायां	सहन करना	×	५३४,५५५,५७८
मृश्	हिंसायाम्	हिंसा करना	सं	४८२
मेंङ्	प्रतिदाने	वापिस देना	सं	४८२,५१६,५४८
मेधा	आशुग्रहणे	शीघ्र ग्रहण करना	सं	४८२
मोक्षण्	मोचने	फेंकना	सं	४८२,५७८
म्नां	अभ्यासे	अभ्यास करना	सं	४८२,५०८,५४६,५७८
म्रदषङ्	मर्दने	मर्दन करना	सं	४८२
म्रुचु	गतौ	जाना	सं	४८२
म्लुचु	गतौ	जाना	सं	४८२
म्लेच्छण्	अव्यक्ते शब्दे	अस्पष्ट शब्द करना	सं	४८२
म्लैं	हर्षक्षये	थकना, मुरझाना	सं	४८२
यजंन्	देवपूजासंगति-करणदानेषु	देवपूजा करना, संगति करना, देना	वि	३९२,५२४,५५१,५७८
यतीङ्	प्रयत्ने	प्रयत्न करना	सं	४८४,५१६,५४९,५७८
यत्रिण्	संकोचने	संकुचित होना	सं	४८४
यभं	मैथुने	संभोग करना	सं	४८४
यमुं	उपरमे	निवृत्त होना	सं	४८४,५१२,५४७,५८०
यसुच्	प्रयत्ने	प्रयत्न करना	सं	४८४,५३२,५५४,५८०
यांक्	गतौ	जाना	वि	३३७,५२४,५५१,५८०
याचृन्	याञ्चायाम्	याचना करना	सं	४८४,५२०,५५०,५८०
युंन्श्	बन्धने	बांधना	सं	४८४,५८०
युक्	मिश्रणे	मिलाना	सं	४८४
युजंड्च्	समाधौ	समाधि में होना	सं	४८४,५३४,५५४,५८०
युजण्	संपर्चने	मिश्रण करना	सं	४८४
युजृंन्र्	योगे	जोडना	वि	४३७,५४२,५५७,५८०
युधंड्च्	संप्रहारे	लडना, युद्ध करना	वि	४२३,५३४,५५५,५८०
रक्ष	पालने	रक्षा करना	सं	४८४,५१४,५४८,५८०
रघिङ्	गतौ	जाना	सं	४७४
रचण्	प्रतियत्ने	बनाना	वि	४६०,५८०
रञ्जंन्च्	रागे	राग करना	वि	३५४,४८४,५८०
रण	शब्दे	शब्द करना	सं	४८४
रण	गतौ	जाना	×	५१०,५४६
रद	विलेखने	कुरेदना	सं	४८४
रभंड्	राभस्ये	प्रारंभ करना	सं	४८४,५०२,५८०

रमङ्	क्रीडायाम्	क्रीडा करना	सं	४८४,५८०
रस	शब्दे	शब्द करना	×	५१४,५४८,५८०
रसण्	आस्वादनस्नेहनयोः	स्वादलेना, स्नेह करना	सं	४८४,५८०
रांक्	दाने	देना	×	५२४,५५२
राजृन्	दीप्तौ	चमकना	सं	४८४,५८०
राधंत्	संसिद्धौ	पूरा करना	सं	४८४,५३६,५५५,५८०
रि	गतौ	जाना	सं	४८४
रिचृंन्र्	विरचने	रेचन करना	सं	४८४,५४२,५५७,५८०
रिष	हिंसायाम्	हिंसा करना	सं	४८४
रींश्	गतिहिंसनयोः	जाना, हिंसा करना	सं	४८४
रु	शब्दे	शब्द करना	सं	४८६,५८०
रुचङ्	अभिप्रीतौ	अच्छा लगना	सं	४८६,५२२,५५१,५८०
रुजण्	हिंसायाम्	हिंसाकरना	सं	४८६,५८०
रुजोंज्	भङ्गे	तोडना	सं	४८६,५८०
रुटण्	रोषे	क्रोध करना	सं	४८६
रुदृक्	अश्रुविमोचने	रोना	वि	३३७,५२६,५५२,५८०
रुधृंन्र्	आवरणे	रोकना	वि	३५६,५४२,५५७,५८०
रुषंच्	रोषे	रोष करना	सं	४८६,५३२,५५४
रुषण्	रोषे	क्रोध करना	सं	४८६
रुहं	जन्मनि	उगना	सं	४८६,५८०
रूपण्	रूपक्रियायाम्	रूप बनाना	सं	४८६
रेकृङ्	शंकायाम्	संदेह करना	×	५१६,५४८
रैं	शब्दे	शब्द करना	सं	४८६
लक्षङ्ण्	आलोचने	देखना	सं	४८६,५८०
लक्षन्ण्	दर्शनाङ्कनयोः	देखना, चिह्न करना	सं	४८६
लगे	संगे	लगना	×	५२४,५५१
लघि	गतौ	जाना	×	५०८,५४६
लघिङ्	भोजन निवृत्तौ च	लंघन करना	सं	४८६,५०८,५४६,५८२
लजीङ्	व्रीडायाम्	लज्जा करना	सं	४८६
लड	विलासे	प्यार करना	×	५१०,५४६
लप	व्यक्तायां वाचि	बोलना	सं	४८६,५१२,५४७,५८२
लबिङ्	अवस्रंसने च	लटकना, शब्द करना	सं	४८६,५१८,५४६,५८२

लभंषङ्	प्राप्तौ	पाना	सं	४८६,५८२
लभिङ्	शब्दे	शब्द करना	×	५४६
ललङ्ण्	ईप्सायाम्	इच्छा करना	सं	४८६
लषन्	कान्तौ	चाहना	सं	४८६,५२२,५५०,५८२
लस	श्लेषणक्रीडनयोः	आलिगन करना, क्रीडा करना	×	५१४,५४८,५८२
लस्जीङ्ज्	व्रीडायाम्	लज्जाकरना	सं	४८६,५४०,५५६,५८२
लांक्	आदाने	लेना	सं	४८६
लिखज्	अक्षरविन्यासे	लिखना	वि	४३२,५३८,५५६,५८२
लिपंन्ज्	उपदेहे	लीपना	सं	४८६,५३८,५५६
लिहंन्क्	आस्वादने	चाटना	वि	४१४,५२८,५५२,५८२
लीङ्च्	श्लेषणे	आलिगन करना	सं	४८६,५८२
लीण्	द्रवीकरणे	लीन होना, स्नेह से पिघलना	सं	४८६
लुञ्च	अपनयने	दूर करना	वि	३७२,५०८,५४६
लुट	विलोटने	लोटना	सं	४८६,५१०,५४६
लुटच्	विलोटने	लोटना	×	५३०,५५३
लुटि	स्तेये	लूंटना	सं	४८६
लुठज्	संश्लेषणे	आलिगन करना	×	५४०,५५६,५८२
लुण्टण्	स्तेये च	चोरी करना, अनादर करना	सं	४८६
लुपच्	विमोहने	विचलित होना, आकुल करना	सं	४८८,५३४,५५४,५८२
लुप्लृंन्ज्	छेदने	छेदना	×	५३८,५५६,५८२
लुभच्	गाद्ध्यें	लोभ करना	सं	४८८,५३२,५५३,५८२
लुभज्	विमोहने	विचलित होना आकुल करना	सं	४८८,५८२
लून्श्	छेदने	काटना	वि	४४५,५४४,५५७,५८२
लूष	स्तेये	चोरी करना	सं	४८८
लूषण्	हिंसायाम्	मारना	सं	४८८
लोकृङ्	दर्शने	देखना	सं	४८८,५१६,५४८,५८२
लोचृङ्	दर्शने	देखना	सं	४८८,५८२
वकिङ्	कौटिल्ये	कुटिलता करना	सं	४८८

वचंक्	भाषणे	बोलना	वि	४०२,५२६,५५२,५८२
वचण्	भाषणे	वांचना	सं	४८८,५८२
वज	गतौ	जाना	वि	३६६
वञ्चङ्ण्	प्रलंभने	ठगना	सं	४८८,५८२
वञ्चु	गतौ	जाना	×	५०८,५४६
वटिण्	विभाजने	भाग करना	सं	४८८
वद	व्यक्तायां वाचि	बोलना	वि	३७६,५२४,५५१,५८२
वदङ्ण्	भाषणे	बोलना	सं	४८८
वन्दिङ्	अभिवादनस्तुत्योः	प्रणाम करना	वि	३३५,५१६,५४६,५८२
वनुङ्व्	याचने	मांगना	×	५४४,५५७
वपंम्	बीजसंताने	बोना	वि	३६६,५२४,५५१,५८२
वमु	उद्गिरणे	उगलना	सं	४८८,५२४,५५१
वर्णण्	वर्णक्रियाविस्तार-गुणवचनेषु	वर्णन करना रंगना, विस्तार करना, प्रशंसा करना, बोलना	सं	४८८
वलङ्	संवरणे	ढांकना	सं	४८८,५२०,५५०
वशक्	कान्तौ	इच्छा करना	सं	४८८,५२६,५५२,५८२
वसं	निवासे	रहना	वि	३८१,५२४,५५१,५८४
वसिक्	आच्छादने	ढांकना	×	५२६,५५२,५८४
वहंन्	प्रापणे	वहन करना	सं	४८८,५२४,५५१,५८४
वांक्	गन्धने च	गंध लेना	सं	४८८,५८४
वाछि	इच्छायाम्	चाहना	वि	३३२,५०८,५४६,५८४
वाशंङ्च्	शब्दे	शब्दकरना	×	५३४,५५५
विचृंन्र्	पृथग्भावे	अलग करना	वि	४४०,५४२,५५७,५८४
विजीर्	भयचलनयोः	डरना, कांपना	×	५४२,५५७
विजृंक्	पृथग्भावे	अलग करना	×	५२८,५५३,५८४
विदंङ्च्	सत्तायाम्	होना	सं	४८८,५३४,५५४,५८४
विदंङ्र्	विचारणे	विचार करना	×	५४२,५५७
विदंक्	ज्ञाने	जानना	वि	३३६,५२६,५५२
विद्लृंन्ज्	लाभे	पाना	सं	४८८,५३८,५५६,५८४
विधज्	विधाने	विधान करना, बींधना	×	५४०,५५६
विशंज्	प्रवेशने	घुसना	वि	४३५,५४०,५५६,५८४
विष	व्याप्तौ	व्याप्त होना	×	५२८,५४८

विष	सेचने	सिंचन करना	×	५१४,५५३
वृङ्श्	संभक्तौ	अच्छी तरह से सेवा करना	सं	४८८
वृजीण्	वर्जने	छोडना	सं	४८८
वृतुङ्	वर्तने	होना	वि	३८५,५८४
वृतुङ्च्	वरणे	स्वीकार करना	सं	४८८
वृधुङ्	वर्धने	बढना	वि	३८६,५२२,५५१,५८४
वृन्त्	वरणे	वरण करना	वि	४२६,५३६,५५५,५८४
वृष	सेचने	बरसना	×	५८४
वृश्	वरणे	स्वीकार करना	सं	४६०,५८४
वेंन्	तंतुसन्ताने	सीना	वि	३६३,५८४
वेपृङ्	चलने	धूजना	सं	४६०,५१८,५४६,५८४
वेल	गतौ	जाना	×	५१२,५४७
व्यथषङ्	भयचलनयोः	डरना, हिलना	सं	४६०,५८४
व्यधंच्	ताडने च	बींधना, उगना	×	४६०,५३०,५५३,५८४
व्येंन्	संवरणे	ढांकना	×	४६०,५८४
व्रज	गतौ	जाना	वि	३७०,५०८,५४६,५८४
व्रश्चूज्	छेदने	छेदना	सं	४६०,५३८,५५६,५८४
व्रींश्	वरणे	स्वीकार करना	सं	४६०
व्रीडच्	लज्जायाम्	लज्जा करना	सं	४६०,५२८,५५३
शंसु	स्तुतौ च	स्तुति और हिंसा करना	सं	४६०,५१४,५४८
शकंन्च्	मर्षणे	क्षमा करना	सं	४६०,५८४
शकिङ्	शंकायाम्	शंका करना	सं	४६०,५१६,५४८,५८४
शक्लृंत्	शक्तौ	समर्थ होना, सकना	वि	४२६,५३६,५५५,५८४
शट	रुजाविशरणगत्यव सादनेषु	रोगी होना, सडना, जाना, पतला होना	×	५१०,५४६
शठ	कैतवे	कपट करना	सं	४६०
शद्लृं	शातने	पतला करना	सं	४६०
शपंन्	आक्रोशे	श्राप देना	सं	४६०,५२२,५५०,५८६
शपंन्च्	आक्रोशे	श्राप देना	×	५३४,५५५,५८६
शमु	उपशमे	शांत होना	सं	४६०,५८६
शल	गतौ	जाना	×	५२४,५५१

शसिङ्	इच्छायाम्	इच्छा करना	सं	४९०
शसु	हिंसायाम्	हिंसा करना	सं	४९०
शासुक्	अनुशिष्टौ	अनुशासन करना	वि	४०१,५८६
शासुङ्क्	इच्छायाम्	इच्छा करना	सं	४९०
शिक्षङ्	विद्योपादाने	सीखना	सं	४९०,५२०,५५०,५८६
शिष्लृंर्	विशेषणे	विशेषित करना	सं	४९०,५४२,५५७,५८६
शीङ्क्	स्वप्ने	सोना	वि	३४२,५२६,५५२,५८६
शीलण्	समाधौ	प्रसन्न चित्त रहना	×	५४४
शुच	शोके	शोक करना	वि	३३३,५०८,५४६,५८६
शुधंच्	शौचे	स्वच्छ होना	सं	४९०,५३०,५५३,५८६
शुभ	शोभार्थे	शोभित होना	×	५५१
शुभज्	शोभार्थे	शोभित होना	सं	५२२,५४०,५५६,५८६
शुम्भज्	शोभार्थे	शोभित होना	सं	४९०,५४०,५५६
शुषंच्	शोषणे	शोषण करना	सं	४९०,५८६
शृश्	हिंसायाम्	हिंसा करना	सं	४९०,५८६
शोंच्	तनूकरणे	छीलना	सं	४९०,५८६
श्च्युत्	क्षरणे	झरना	सं	५१०,५४७
श्रमुच्	खेदतपसोः	खेद पाना, तपस्या करना	सं	४९२,५३२,५५४,५८६
श्रिन्	सेवायाम्	सेवा करना	वि	३८८,५२०,५५०,५८६
श्रुत्	श्रवणे	सुनना	वि	३५६
श्लाघृङ्	कत्थने	प्रशंसा करना	सं	४९२,५१६,५४९,५८६
श्लिषंच्	आलिंगने	आलिंगन करना	सं	४९२,५३२,५५४,५८६
श्लिषण्	श्लेषणे	मिलाना, जोडना	सं	४९२
श्वसक्	प्राणने	श्वास लेना	सं	४९२,५२६,५५२,५८६
षञ्जं	संगे	मिलना	सं	४९२,५०८,५४६,५८६
षणुनूव्	दाने	देना	×	५४२,५५७,५८६
षद्लृं	विशरणगत्यव-सादनेषु	नष्ट होना, जाना, विषाद करना	सं	४९२,५२२ ५५१,५८६
षहङ्	मर्षणे	सहना	सं	४९२,५८६
षहच्	तृप्तौ	तृप्त होना	×	५३०
षिनत्	बन्धने	बांधना	×	५३६,५५५,५८६
षिचंन्ज्	क्षरणे	सिंचन करना	सं	४९२,५३८,५५५,५८८
षिधु	गत्याम्	जाना	×	५१२,५४७

षिधुंच्	संराद्धौ	तैयार होना	सं	४९२,५८८
षिवुच्	तन्तुसन्ताने	सीना, बुनना	सं	४९२,५३०,५५३,५८८
षुंक्	प्रसवैश्वर्ययो:	उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना	वि	३९८,५२४,५५२,५८८
षुंन्त्	अभिषवे	गीला करना, मथना	×	५३६,५५५,५८८
षुहच्	तृप्तौ	तृप्त होना	सं	४९२
षूङ्क्	प्राणिगर्भविमोचने	जन्म देना	वि	४०५,५२६,५५२,५८८
षूङ्च्	प्राणिप्रसवे	प्रसव करना	सं	४९२,५३४,५५४
षेवृङ्	सेवने	सेवा करना	सं	४९२,५२०,५५०,५८८
षोंच्	अन्तकर्मणि	विनाश करना	सं	४९२,५८८
ष्ट्यैं	संघाते च	इकट्ठा करना, शब्द करना;	सं	४९२
ष्टिघित्	आस्कंदने	आक्रमण करना	×	५३६,५५५
ष्टिमच्	आर्द्रीभावे	भीगना	×	५३०,५५३
ष्टीमच्	आर्द्रीभावे	भीगना	×	५३०,५५३
ष्टुन्क्	स्तुतौ	स्तुति करना	वि	३४४,५२८,५५२,५८८
ष्टुभिङ्	स्तम्भे	क्रिया का रुकना	×	५१८,५४८
ष्ठगे	संवरणे	ढांकना	×	५२४,५५१
ष्ठां	गतिनिवृतौ	ठहरना	वि	३२८,५८८
ष्ठिवुच्	निरसने	थूकना	सं	४९२,५३०,५५३
ष्णांक्	शौचे	स्नान करना	सं	४९२
ष्णिहूच्	प्रीतौ	प्रेम करना	सं	४९२,५३२,५५४,५८८
ष्णैं	वेष्टने	वींटना	सं	४९२
ष्मिङ्	ईषद्हसने	थोडा हंसना	सं	४९२,५१६,५४८,५८८
ष्वपंक्	शये	सोना	वि	३९९
ष्विदांच्	गात्रप्रक्षरणे	पसीने से लथपथ होना	×	५३०,५५३
सपर	पूजायाम्	पूजा करना	×	४९२
समर	युद्धे	युद्ध करना	×	४९२
सर्ज	अर्जने	अर्जन करना	सं	४९२
सान्त्वण्	सामप्रयोगे	शांत करना, प्रिय वचन कहना	×	५८८
साधंत्	संसिद्धौ	फलप्राप्ति होना	सं	४९२,५३६,५५५,५८८

सुं	प्रसवैश्वर्ययोः	प्रसव करना, ऐश्वर्य भोगना	सं	४६४,५०८,५४६
सुखण्	तत्क्रियायाम्	सुख भोगना	सं	४६४
सूचण्	पैशुन्ये सूचने छिद्रकरणे	चुगली करना सूचना करना, छेद करना	सं	४६४
सूत्रण्	ग्रन्थने	संक्षिप्त करना	सं	४६४
सृं	गतौ	सरकना	सं	४६४,५०८,५४६,५८८
सृजंङ्च्	विसर्गे	बनाना, रचना करना	×	५३४,५५४
सृजंज्	विसर्गे	बनाना, रचना करना	सं	४६४,५३८,५५६,५८८
सृप्लृं	गतौ	जाना	सं	४६४,५१२,५४७,५८८
स्कन्दृं	गतिशोषणयोः	जाना, सुखाना	सं	४६४,५१०,५४७,५८८
स्खल	चलने	स्खलित होना	×	५१४,५४८,५८८
स्तनण्	गर्जे	गर्जना	सं	४६४
स्तृंन्त्	आच्छादने	ढांकना	सं	४६४,५३६,५५५
स्तृन्श्	आच्छादने	आच्छादन करना	वि	४४७,५४४,५५७
स्तेनण्	चौर्ये	चोरी करना	सं	४६४
स्त्यैं	संघाते च	इकट्ठा करना, शब्द करना	सं	४६४
स्निहण्	स्नेहने	स्नेह करना	वि	४५४
स्नुक्	प्रस्रवणे	चूना, झरना	×	५२६,५५२
स्पदिङ्	किञ्चिच्चलनै	फडकना	सं	४६४,५८८
स्पर्धंङ्	संघर्षे	स्पर्धा करना	सं	४६४,५१८,५४६,५८८
स्पृशंज्	स्पर्शे	छूना	वि	४३४,५४०,५५६,५८८
स्पृहण्	ईप्सायाम्	चाहना	वि	४५७,५४४,५६०
स्फुलज्	स्फुरणे	फडकना, स्फुरित होना	×	५४०,५५६
स्फुटङ्	विकसने	विकसित होना	सं	४६४,५१०,५४६
स्फुटज्	विकसने	विकसित होना	×	५४०,५५६,५६०
स्फुरज्	स्फुरणे	फडकना	सं	४६४,५६०
स्मृं	चिन्तायाम्	स्मरण करना	वि	३२३
स्मृं	चिन्तायाम्	याद करना	सं	४६४,५६०
स्यन्दूङ्	प्रस्रवणे	झरना, टपकना	सं	४६४,५२२,५५१,५६०
स्रंसुङ्	अवस्रंसने	सरकना	सं	४६४,५२२,५५१,५६०
स्रम्भुङ्	विश्वासे	विश्वास करना	×	५२२,५५१

स्वदङ्	आस्वादने	आस्वादन करना	सं	४९४,५१८,५४९
स्वन	शब्दे	शब्द करना	सं	४९४,५१२,५४७
स्वपंक्	शये	सोना	×	५९०
स्वादङ्	आस्वादने	आस्वादन करना	सं	४९६
स्वृं	शब्दोपतापयोः	शब्दकरना दुःख लाना	सं	४९६
हठ	बलात्कारे	हठ करना	सं	४९६,५१०,५४६
हदंङ्	पुरीषोत्सर्गे	मलोत्सर्ग करना	सं	४९६,४१८
हनंक्	हिंसागत्योः	मारना, जाना	वि	३४०,५२६,५५२,५९०
हसे	हसने	हंसना	वि	३७६,५१४,५४८,५९०
हांक्	त्यागे	छोडना	वि	४१५,५२८,५५३,५९०
हिंत्	गतिवृद्धचोः	जाना, बढना	×	५३६,५५५,५९०
हिक्किन्	अव्यक्ते शब्दे	हिचकी आना	सं	४९६
हिडिङ्	गतौ	जाना	सं	४९६,५१६,५४९
हिसि	हिंसायाम्	हिंसा करना	सं	४९६,५४२,५५७,५९०
हिसिण्	हिंसायाम्	हिंसा करना	वि	४५९,५९०
हुंक्	दानादनयोः	होम में वस्तु डालना	सं	४९६,५२८,५५२,५९०
हुर्च्छा	कौटिल्ये	कुटिलता करना	सं	४९६
हृंन्	हरणे	हरण करना	वि	३२७,५२०,५५०,५९०
हृषच्	तुष्टौ	प्रसन्नहोना	वि	४२१,५३२,५५४,५९०
हेडृङ्	अनादरे	अनादर करना	×	५१६,५४९
हेषृङ्	गतौ	जाना	×	५२०,५५०
ह्नुंङ्क्	अपनयने	छिपाना	×	५२६,५५२,५९०
ह्रींक्	लज्जायाम्	लज्जा करना	×	५९०
ह्रीछ्	लज्जायाम्	लज्जा करना	सं	४९६
ह्वेंन्	स्पर्धाशब्दयोः	स्पर्धा और शब्दकरना	वि	३९५,५९०
ह्लादीङ्	सुखे च	प्रसन्न होना शब्द करना	×	५१८,५४९

परिशिष्ट २

दस गणों की धातु रूपावली में ५८० धातुओं के रूप दिये गए हैं। १३२ धातुओं के दस लकारों के सभी रूप दिये गए हैं। धातुओं की अकारादि अनुक्रमणिका में उस धातु के आगे कोष्ठक में (वि) लिखा हुआ है। वि का अर्थ है विस्तार से। ४४८ धातुओं के दस लकारों के प्रथम पुरुष के एक वचन का एक-एक रूप दिया गया है। अनुक्रमणिका में उसका संकेत है (सं) याने संक्षिप्त रूप। धातुओं की अकारादि अनुक्रमणिका में धातुओं की पृष्ठ संख्या दी गई है।

१. भू—सत्तायाम् (होना)

तिबादि (लट्)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		
भवति	भवतः	भवन्ति	प्र० पु०	
भवसि	भवथः	भवथ	म० पु०	
भवामि	भवावः	भवामः	उ० पु०	

ङादि (लुङ्)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
अभूः	अभूतम्	अभूत
अभूवम्	अभूव	अभूम

यादादि (विधिलिङ्)

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र० पु०	
भवेः	भवेतम्	भवेत	म० पु०	
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ० पु०	

णवादि (लिट्)

बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
बभूव	बभूविव	बभूविम

तुबादि (लोट्)

भवतु, भवतात्	भवताम्	भवन्तु	प्र० पु०	
भव, भवतात्	भवतम्	भवत	म० पु०	
भवानि	भवाव	भवाम	उ० पु०	

क्यादादि (आशीर्लिङ्)

भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

दिबादि (लङ्)

अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र० पु०	
अभवः	अभवतम्	अभवत	म० पु०	
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ० पु०	

अनद्यतन भविष्यति (तादि) (लुट्)

भविता	भवितारौ	भवितारः
भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

स्यत्यादि (लृट्)			स्यदादि (लृङ्)		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र० पु० अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म० पु० अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ० पु० अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

२. पां-पाने (पीना)

तिबादि			यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पिबति	पिबतः	पिबन्ति	प्र० पु० पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
पिबसि	पिबथः	पिबथ	म० पु० पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
पिबामि	पिबावः	पिबामः	उ० पु० पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

तुबादि			दिबादि		
पिबतु, पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु	प्र० पु० अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
पिब, पिबतात्	पिबतम्	पिबत	म० पु० अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
पिबानि	पिबाव	पिबाम	उ० पु० अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

द्यादि			णबादि		
अपात्	अपाताम्	अपुः	प्र० पु० पपौ	पपतुः	पपुः
अपाः	अपातम्	अपात	म० पु० पपिथ, पपाथ	पपथुः	पप
अपाम्	अपाव	अपाम	उ० पु० पपौ	पपिव	पपिम

क्यादादि			तादि		
पेयात्	पेयास्ताम्	पेयासुः	प्र० पु० पाता	पातारौ	पातारः
पेयाः	पेयास्तम्	पेयास्त	म० पु० पातासि	पातास्थः	पातास्थ
पेयासम्	पेयास्व	पेयास्म	उ० पु० पातास्मि	पातास्वः	पातास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि		
पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति	प्र० पु० अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्
पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ	म० पु० अपास्यः	अपास्यतम्	अपास्यत
पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः	उ० पु० अपास्यम्	अपास्याव	अपास्याम

३. घ्रां - गन्धोपादाने (सूंघना)

तिबादि			यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति	प्र० पु० जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ	म० पु० जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः	उ० पु० जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

तुवादि			दिवादि		
जिघ्रतु, जिघ्रतात्	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु	प्र० पु० अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
जिघ्र, जिघ्रतात्	जिघ्रतम्	जिघ्रत	म० पु० अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम	उ० पु० अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

ह्यादि (१)			ह्यादि (२)		
अघ्रात्	अघ्राताम्	अघ्रुः	प्र० पु० अघ्रासीत्	अघ्रासिष्टाम्	अघ्रासिषुः
अघ्राः	अघ्रातम्	अघ्रात	म० पु० अघ्रासीः	अघ्रासिष्टम्	अघ्रासिष्ट
अघ्राम्	अघ्राव	अघ्राम	उ० पु० अघ्रासिषम्	अघ्रासिष्व	अघ्रासिष्म

णबादि			क्यादादि (१)		
जघ्रौ	जघ्रतुः	जघ्रुः	प्र० पु० घ्रेयात्	घ्रेयास्ताम्	घ्रेयासुः
जघ्रिथ, जघ्राथ	जघ्रथुः	जघ्र	म० पु० घ्रेयाः	घ्रेयास्तम्	घ्रेयास्त
जघ्रौ	जघ्रिव	जघ्रिम	उ० पु० घ्रेयासम्	घ्रेयास्व	घ्रेयास्म

क्यादादि (२)			तादि			
घ्रायात्	घ्रायास्ताम्	घ्रायासुः	प्र० पु० घ्राता	घ्रातारौ	घ्रातारः
घ्रायाः	घ्रायास्तम्	घ्रायास्त	म० पु० घ्रातासि	घ्रातास्थः	घ्रातास्थ
घ्रायासम्	घ्रायास्व	घ्रायास्म	उ० पु० घ्रातास्मि	घ्रातास्वः	घ्रातास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि			
घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति	प्र० पु० अघ्रास्यत्	अघ्रास्यताम्	अघ्रास्यन्
घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ	म० पु० अघ्रास्यः	अघ्रास्यतम्	अघ्रास्यत
घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः	उ० पु० अघ्रास्यम्	अघ्रास्याव	अघ्रास्याम

४. जि—जये (जीतना)

तिबादि				यादादि			
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
जयति	जयतः	जयन्ति	प्र० पु०	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
जयसि	जयथः	जयथ	म० पु०	जयेः	जयेतम्	जयेत
जयामि	जयावः	जयामः	उ० पु०	जयेयम्	जयेव	जयेम

तुवादि			दिवादि			
जयतु, जयतात्	जयताम्	जयन्तु	प्र० पु०	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
जय, जयतात्	जयतम्	जयत	म० पु०	अजयः	अजयतम्	अजयत
जयानि	जयाव	जयाम	उ० पु०	अजयम्	अजयाव	अजयाम

ह्यादि				णबादि			
अजैषीत्	अजैष्टाम्	अजैषुः	प्र० पु०	जिगाय	जिग्यतुः	जिग्युः
अजैषीः	अजैष्टम्	अजैष्ट	म० पु०	जिगयिथ, जिगेथ	जिग्यथुः	जिग्य
अजैषम्	अजैष्व	अजैष्म	उ० पु०	जिगाय, जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम

क्यादादि				तादि		
जीयात्	जीयास्ताम्	जीयासुः	प्र० पु०	जेता	जेतारौ	जेतारः
जीयाः	जीयास्तम्	जीयास्त	म० पु०	जेतासि	जेतास्थः	जेतास्थ
जीयासम्	जीयास्व	जीयास्म	उ० पु०	जेतास्मि	जेतास्वः	जेतास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि		
जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति	प्र० पु०	अजेष्यत्	अजेष्यताम्	अजेष्यन्
जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ	म० पु०	अजेष्यः	अजेष्यतम्	अजेष्यत
जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः	उ० पु०	अजेष्यम्	अजेष्याव	अजेष्याम

५. दुं—गतौ (जाना)

तिबादि				यादादि		
दवति	दवतः	दवन्ति	प्र० पु०	दवेत्	दवेताम्	दवेयुः
दवसि	दवथः	दवथ	म० पु०	दवेः	दवेतम्	दवेत
दवामि	दवावः	दवामः	उ० पु०	दवेयम्	दवेव	दवेम

तुवादि			दिवादि			
दवतु, दवतात्	दवताम्	दवन्तु	प्र० पु०	अदवत्	अदवताम्	अदवन्
दव, दवतात्	दवतम्	दवत	म० पु०	अदवः	अदवतम्	अदवत
दवानि	दवाव	दवाम	उ० पु०	अदवम्	अदवाव	अदवाम

ह्यादि			णबादि			
अदौषीत्	अदौष्टाम्	अदौषुः	प्र० पु०	दुदाव	दुदुवतुः	दुदुवुः
अदौषीः	अदौष्टम्	अदौष्ट	म० पु०	दुदविथ, दुदोथ	दुदुवथुः	दुदुव
अदौषम्	अदौष्व	अदौष्म	उ० पु०	दुदाव, दुदव	दुदुविव	दुदुविम

क्यादादि				तादि		
दूयात्	दूयास्ताम्	दूयासुः	प्र० पु०	दोता	दोतारौ	दोतारः
दूयाः	दूयास्तम्	दूयास्त	म० पु०	दोतासि	दोतास्थः	दोतास्थ
दूयासम्	दूयास्व	दूयास्म	उ० पु०	दोतास्मि	दोतास्वः	दोतास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि			
दोष्यति	दोष्यतः	दोष्यन्ति	प्र० पु०	अदोष्यत्	अदोष्यताम्	अदोष्यन्
दोष्यसि	दोष्यथः	दोष्यथ	म० पु०	अदोष्यः	अदोष्यतम्	अदोष्यत
दोष्यामि	दोष्यावः	दोष्यामः	उ० पु०	अदोष्यम्	अदोष्याव	अदोष्याम

६. स्मृं—चिन्तायाम् (स्मरण करना)

तिबादि				यादादि		
स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति	प्र० पु०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ	म० पु०	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः	उ० पु०	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

तुबादि				दिबादि		
स्मरतु, स्मरतात्	स्मरताम्	स्मरन्तु	प्र० पु०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
स्मर, स्मरतात्	स्मरतम्	स्मरत	म० पु०	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
स्मराणि	स्माव	स्माम	उ० पु०	अस्मरम्	अस्माव	अस्माम

ह्यादि				णबादि		
अस्मार्षीत्	अस्माष्टाम्	अस्मार्षुः	प्र० पु०	सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः
अस्मार्षीः	अस्माष्टम्	अस्माष्ट	म० पु०	सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर
अस्मार्षम्	अस्मार्ष्व	अस्मार्ष्म	उ० पु०	सस्मार, सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम

क्र्यादादि				तादि		
स्मर्यात्	स्मर्यास्ताम्	स्मर्यासुः	प्र० पु०	स्मर्ता	स्मर्तारौ	स्मर्तारः
स्मर्याः	स्मर्यास्तम्	स्मर्यास्त	म० पु०	स्मर्तासि	स्मर्तास्थः	स्मर्तास्थ
स्मर्यासम्	स्मर्यास्व	स्मर्यास्म	उ० पु०	स्मर्तास्मि	स्मर्तास्वः	स्मर्तास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति	प्र० पु०	अस्मरिष्यत्	अस्मरिष्यताम्	अस्मरिष्यन्
स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ	म० पु०	अस्मरिष्यः	अस्मरिष्यतम्	अस्मरिष्यत
स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः	उ० पु०	अस्मरिष्यम्	अस्मरिष्याव	अस्मरिष्याम

७. तॄ—प्लवनतरणयोः (तैरना)

तिबादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तरति	तरतः	तरन्ति	प्र० पु०	तरेत्	तरेताम्	तरेयुः
तरसि	तरथः	तरथ	म० पु०	तरेः	तरेतम्	तरेत
तरामि	तरावः	तरामः	उ० पु०	तरेयम्	तरेव	तरेम

तुबादि				दिबादि		
तरतु, तरतात्	तरताम्	तरन्तु	प्र० पु०	अतरत्	अतरताम्	अतरन्
तर, तरतात्	तरतम्	तरत	म० पु०	अतरः	अतरतम्	अतरत
तराणि	तराव	तराम	उ० पु०	अतरम्	अतराव	अतराम

ह्यादि				णबादि		
अतारीत्	अतारिष्टाम्	अतारिषुः	प्र० पु०	ततार	तेरतुः	तेरुः
अतारीः	अतारिष्टम्	अतारिष्ट	म० पु०	तेरिथ	तेरथुः	तेर
अतारिषम्	अतारिष्व	अतारिष्म	उ० पु०	ततार, ततर	तेरिव	तेरिम

क्र्यादादि				तादि (१)		
तीर्यात्	तीर्यास्ताम्	तीर्यासुः	प्र० पु०	तरीता	तरीतारौ	तरीतारः
तीर्याः	तीर्यास्तम्	तीर्यास्त	म० पु०	तरीतासि	तरीतास्थः	तरीतास्थ
तीर्यासम्	तीर्यास्व	तीर्यास्म	उ० पु०	तरीतास्मि	तरीतास्वः	तरीतास्मः

तादि (२)				स्यत्यादि (१)		
तरिता	तरितारौ	तरितारः	प्र० पु०	तरीष्यति	तरीष्यतः	तरीष्यन्ति
तरितासि	तरितास्थः	तरितास्थ	म० पु०	तरीष्यसि	तरीष्यथः	तरीष्यथ
तरितास्मि	तरितास्वः	तरितास्मः	उ० पु०	तरीष्यामि	तरीष्यावः	तरीष्यामः

स्यत्यादि (२)				स्यदादि (१)		
तरिष्यति	तरिष्यतः	तरिष्यन्ति	प्र० पु०	अतरीष्यत्	अतरीष्यताम्	अतरीष्यन्
तरिष्यसि	तरिष्यथः	तरिष्यथ	म० पु०	अतरीष्यः	अतरीष्यतम्	अतरीष्यत
तरिष्यामि	तरिष्यावः	तरिष्यामः	उ० पु०	अतरीष्यम्	अतरीष्याव	अतरीष्याम

स्यदादि (२)

अतरिष्यत्	अतरिष्यताम्	अतरिष्यन्	प्र० पु०
अतरिष्यः	अतरिष्यतम्	अतरिष्यत	म० पु०
अतरिष्यम्	अतरिष्याव	अतरिष्याम	उ० पु०

८. ऋं—प्रापणे

तिबादि				यादादि		
ऋच्छति	ऋच्छतः	ऋच्छन्ति	प्र० पु०	ऋच्छेत्	ऋच्छेताम्	ऋच्छेयुः
ऋच्छसि	ऋच्छथः	ऋच्छथ	म० पु०	ऋच्छेः	ऋच्छेतम्	ऋच्छेत
ऋच्छामि	ऋच्छावः	ऋच्छामः	उ० पु०	ऋच्छेयम्	ऋच्छेव	ऋच्छेम

तुबादि				दिबादि		
ऋच्छतु, ऋच्छतात्		ऋच्छताम्	ऋच्छन्तु	प्र० पु०	आर्च्छत्	आर्च्छताम्	आर्च्छन्
ऋच्छ, ऋच्छतात्		ऋच्छतम्	ऋच्छत	म० पु०	आर्च्छः	आर्च्छतम्	आर्च्छत
ऋच्छानि		ऋच्छाव	ऋच्छाम	उ० पु०	आर्च्छम्	आर्च्छाव	आर्च्छाम

द्यादि (१)				द्यादि (२)		
आरत्	आरताम्	आरन्	प्र० पु०	आर्षीत्	आर्ष्टाम्	आर्षुः
आरः	आरतम्	आरत	म० पु०	आर्षीः	आर्ष्टम्	आर्ष्ट
आरम्	आराव	आराम	उ० पु०	आर्षम्	आर्ष्व	आर्ष्म

णबादि				क्यादादि		
आर	आरतुः	आरुः	प्र० पु०	अर्यात्	अर्यास्ताम्	अर्यासुः
आरिथ	आरथुः	आर	म० पु०	अर्याः	अर्यास्तम्	अर्यास्त
आर	आरिव	आरिम	उ० पु०	अर्यासम्	अर्यास्व	अर्यास्म

तादि				स्यत्यादि		
अर्ता	अर्तारौ	अर्तारः	प्र० पु०	अरिष्यति	अरिष्यतः	अरिष्यन्ति
अर्तासि	अर्तास्थः	अर्तास्थ	म० पु०	अरिष्यसि	अरिष्यथः	अरिष्यथ
अर्तास्मि	अर्तास्वः	अर्तास्मः	उ० पु०	अरिष्यामि	अरिष्यावः	अरिष्यामः

स्यदादि

आरिष्यत्	आरिष्यताम्	आरिष्यन्	प्र० पु०
आरिष्यः	आरिष्यतम्	आरिष्यत	म० पु०
आरिष्यम्	आरिष्याव	आरिष्याम	उ० पु०

९. डुकृंन्—करणे (उभयपदी) करना

परस्मैपद

तिबादि				यादादि		
करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

तुबादि				दिबादि		
करोतु, कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
कुरु, कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत	म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
करवाणि	करवाव	करवाम	उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

ह्यादि				णबादि		
अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः	प्र० पु०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	म० पु०	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र
अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	उ० पु०	चकार, चकर	चकृव	चकृम

क्यादादि				तादि		
क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः	प्र० पु०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त	म० पु०	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ
क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म	उ० पु०	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	प्र० पु०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	म० पु०	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	उ० पु०	अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				यादादि		
कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते	प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे	म० पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे	उ० पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

तुबादि				दिबादि		
कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्	प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्	म० पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
करवै	करवावहै	करवामहै	उ० पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

ञादि				**णबादि**		
अकृत	अकृषाताम्	अकृषत	प्र० पु०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्	म० पु०	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि	उ० पु०	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

क्यादादि				**तादि**		
कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्	प्र० पु०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीढ्वम्	म० पु०	कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे
कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि	उ० पु०	कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते	प्र० पु०	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे	म० पु०	अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्
करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे	उ० पु०	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

१०. हृ ञ्—हरणे (उभयपदी) हरना

परस्मैपद

तिबादि				**यादादि**		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
हरति	हरतः	हरन्ति	प्र० पु०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
हरसि	हरथः	हरथ	म० पु०	हरेः	हरेतम्	हरेत
हरामि	हरावः	हरामः	उ० पु०	हरेयम्	हरेव	हरेम

तुबादि				**दिबादि**		
हरतु, हरतात्	हरताम्	हरन्तु	प्र० पु०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
हर, हरतात्	हरतम्	हरत	म० पु०	अहरः	अहरतम्	अहरत
हराणि	हराव	हराम	उ० पु०	अहरम्	अहराव	अहराम

ञादि				**णबादि**		
अहार्षीत्	अहार्ष्टाम्	अहार्षुः	प्र० पु०	जहार	जह्रतुः	जह्रुः
अहार्षीः	अहार्ष्टम्	अहार्ष्ट	म० पु०	जहर्थ	जह्रथुः	जह्र
अहार्षम्	अहार्ष्व	अहार्ष्म	उ० पु०	जहार, जहर	जह्रिव	जह्रिम

क्यादादि				**तादि**		
ह्रियात्	ह्रियास्ताम्	ह्रियासुः	प्र० पु०	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
ह्रिया	ह्रियास्तम्	ह्रियास्त	म० पु०	हर्तासि	हर्तास्थः	हर्तास्थ
ह्रियासम्	ह्रियास्व	ह्रियास्म	उ० पु०	हर्तास्मि	हर्तास्वः	हर्तास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि			
हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति	प्र० पु०	अहरिष्यत्	अहरिष्यताम्	अहरिष्यन्
हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यन्ति	म० पु०	अहरिष्यः	अहरिष्यतम्	अहरिष्यत
हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः	उ० पु०	अहरिष्यम्	अहरिष्याव	अहरिष्याम

आत्मपनेपद

तिबादि			यादादि			
हरते	हरेते	हरन्ते	प्र० पु०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
हरसे	हरेथे	हरध्वे	म० पु०	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
हरे	हरावहे	हरामहे	उ० पु०	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

तुबादि			दिबादि			
हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्	प्र० पु०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्	म० पु०	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
हरै	हरावहै	हरामहै	उ० पु०	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

ह्यादि			णबादि			
अहृत	अहृषाताम्	अहृषत	प्र० पु०	जह्रे	जह्राते	जह्रिरे
अहृथाः	अहृषाथाम्	अहृढ्वम्	म० पु०	जह्रिषे	जह्राथे	जह्रिध्वे, जह्रिढ्वे
अहृषि	अहृष्वहि	अहृष्महि	उ० पु०	जह्रे	जह्रिवहे	जह्रिमहे

क्यादादि			तादि			
हृषीष्ट	हृषीयास्ताम्	हृषीरन्	प्र० पु०	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
हृषीष्ठाः	हृषीयास्थाम्	हृषीढ्वम्	म० पु०	हर्तासे	हर्तासाथे	हर्ताध्वे
हृषीय	हृषीवहि	हृषीवहि	उ० पु०	हर्ताहे	हर्तास्वहे	हर्तास्महे

स्यत्यादि			स्यदादि			
हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते	प्र० पु०	अहरिष्यत	अहरिष्येताम्	अहरिष्यन्त
हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे	म० पु०	अहरिष्यथाः	अहरिष्येथाम्	अहरिष्यध्वम्
हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे	उ० पु०	अहरिष्ये	अहरिष्यावहि	अहरिष्यामहि

११. ष्ठां—गतिनिवृत्तौ (ठहरना)

तिबादि			यादादि			
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति	प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ	म० पु०	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः	उ० पु०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

तुबादि				दिबादि		
तिष्ठतु, तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु	प्र० पु०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
तिष्ठ, तिष्ठतात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत	म० पु०	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम	उ० पु०	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

द्यादि				णबादि		
अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थुः	प्र० पु०	तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः
अस्थाः	अस्थातम्	अस्थात	म० पु०	तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थथुः	तस्थ
अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम	उ० पु०	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

क्यादादि				तादि		
स्थेयात्	स्थेयास्ताम्	स्थेयासुः	प्र० पु०	स्थाता	स्थातारौ	स्थातारः
स्थेयाः	स्थेयास्तम्	स्थेयास्त	म० पु०	स्थातासि	स्थातास्थः	स्थातास्थ
स्थेयासम्	स्थेयास्व	स्थेयास्म	उ० पु०	स्थातास्मि	स्थातास्वः	स्थातास्मः

स्यत्यादि				स्थदादि		
स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति	प्र० पु०	अस्थास्यत्	अस्थास्याताम्	अस्थास्यन्
स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ	म० पु०	अस्थास्यः	अस्थास्यतम्	अस्थास्यत
स्थास्यामि	स्थास्यामः	स्थास्यावः	उ० पु०	अस्थास्यम्	अस्थास्याव	अस्थास्याम

१२. धेट्—पाने (पीना)

तिबादि				यादादि		
धयति	धयतः	धयन्ति	प्र० पु०	धयेत्	धयेताम्	धयेयुः
धयसि	धयथः	धयथ	म० पु०	धयेः	धयेतम्	धयेत
धयामि	धयावः	धयामः	उ० पु०	धयेयम्	धयेव	धयेम

तुबादि				दिबादि		
धयतु, धयतात्	धयताम्	धयन्तु	प्र० पु०	अधयत्	अधयताम्	अधयन्
धय, धयतात्	धयतम्	धयत	म० पु०	अधयः	अधयतम्	अधयत
धयानि	धयाव	धयाम	उ० पु०	अधयम्	अधयाव	अधयाम

द्यादि (१)				द्यादि (२)		
अदधत्	अदधताम्	अदधन्	प्र० पु०	अधात्	अधाताम्	अधुः
अदधः	अदधतम्	अदधत	म० पु०	अधाः	अधातम्	अधात
अदधम्	अदधाव	अदधाम	उ० पु०	अधाम्	अधाव	अधाम

णबादि						
अधासीत्	अधासिष्टाम्	अधासिषुः	प्र० पु०	दधौ	दधतुः	दधुः
अधासीः	अधासिष्टम्	अधासिष्ट	म० पु०	दधिथ, दधाथ	दधथुः	दध
अधासिषम्	अधासिष्व	अधासिष्म	उ० पु०	दधौ	दधिव	दधिम

क्यादादि				तादि		
धेयात्	धेयास्ताम्	धेयासुः	प्र० पु०	धाता	धातारौ	धातारः
धेयाः	धेयास्तम्	धेयास्त	म० पु०	धातासि	धातास्थः	धातास्थ
धेयासम्	धेयास्व	धेयास्म	उ० पु०	धातास्मि	धातास्वः	धातास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति	प्र० पु०	अधास्यत्	अधास्यताम्	अधास्यन्
धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ	म० पु०	अधास्यः	अधास्यतम्	अधास्यत
धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः	उ० पु०	अधास्यम्	अधास्याव	अधास्याम

१३. इंक्—स्मरणे (अधिपूर्वक)

तिबादि				यादादि		
अध्येति	अधीतः	अधियन्ति, अधीयन्ति	प्र० पु०	अधीयात्	अधीयाताम्	अधीयुः
अध्येषि	अधीथः	अधीथ	म० पु०	अधीयाः	अधीयातम्	अधीयात
अध्येमि	अधीवः	अधीम	उ० पु०	अधीयाम्	अधीयाव	अधीयाम

तुबादि				दिबादि		
अध्येतु,	अधीतात्	अधीताम् अधियन्तु, अधीयन्तु	प्र० पु०	अध्यैत्	अध्यैताम्	अध्यायन्
अधीहि,	अधीतात्	अधीतम् अधीत	म० पु०	अध्यैः	अध्यैतम्	अध्यैत
अध्ययानि		अधीयाव अधीयाम	उ० पु०	अध्यायम्	अध्यैव	अध्यैम

स्वादि				णबादि		
अध्यगात्	अध्यगाताम्	अध्यगुः	प्र० पु०	अधीयाय	अधीयतुः	अधीयुः
अध्यगाः	अध्यगातम्	अध्यगात	म० पु०	अधीययिथ, अधीयेथ	अधीयथुः	अधीय
अध्यगाम्	अध्यगाव	अध्यगाम	उ० पु०	अधीयाय, अधीयय	अधीयिव	अधीयिम

क्यादादि				तादि		
अधीयात्	अधीयास्ताम्	अधीयासुः	प्र० पु०	अध्येता	अध्येतारौ	अध्येतारः
अधीयाः	अधीयस्तम्	अधीयास्त	म० पु०	अध्येतासि	अध्येतास्थः	अध्येतास्थ
अधीयासम्	अधीयास्व	अधीयास्म	उ० पु०	अध्येतास्मि	अध्येतास्व	अध्येतास्म

स्यत्यादि				स्यदादि		
अध्येष्यति	अध्येष्यतः	अध्येष्यन्ति	प्र० पु०	अध्यैष्यत्	अध्यैष्यताम्	अध्यैष्यन्
अध्येष्यसि	अध्येष्यथः	अध्येष्यथ	म० पु०	अध्यैष्यः	अध्यैष्यतम्	अध्यैष्यत
अध्येष्यामि	अध्येष्यावः	अध्येष्यामः	उ० पु०	अध्यैष्यम्	अध्यैष्याव	अध्यैष्याम

१४. ध्यै—चिंतायाम्

तिबादि				यादादि		
ध्यायति	ध्यायतः	ध्यायन्ति	प्र० पु०	ध्यायेत्	ध्यायेताम्	ध्यायेयुः
ध्यायसि	ध्यायथः	ध्यायथ	म० पु०	ध्यायेः	ध्यायेतम्	ध्यायेत
ध्यायामि	ध्यायावः	ध्यायामः	उ० पु०	ध्यायेयम्	ध्यायेव	ध्यायेम

तुवादि				दिवादि		
ध्यायतु, ध्यायतात्	ध्यायताम्	ध्यायन्तु	प्र० पु०	अध्यायत्	अध्यायताम्	अध्यायन्
ध्याय, ध्यायतात्	ध्यायतम्	ध्यायत	म० पु०	अध्यायः	अध्यायतम्	अध्यायत
ध्यायानि	ध्यायाव	ध्यायाम	उ० पु०	अध्यायम्	अध्यायाव	अध्यायाम

सादि				णबादि		
अध्यासीत्	अध्यासिष्टाम्	अध्यासिषुः	प्र० पु०	दध्यौ	दध्यतुः	दध्युः
अध्यासीः	अध्यासिष्टम्	अध्यासिष्ट	म० पु०	दध्याथ, दध्यिथ	दध्यथुः	दध्य
अध्यासिषम्	अध्यासिष्व	अध्यासिष्म	उ० पु०	दध्यौ	दध्यिव	दध्यिम

क्यादादि (१)				क्यादादि (२)		
ध्येयात्	ध्येयास्ताम्	ध्येयासुः	प्र० पु०	ध्यायात्	ध्यायास्ताम्	ध्यायासुः
ध्येयाः	ध्येयास्तम्	ध्येयास्त	म० पु०	ध्यायाः	ध्यायास्तम्	ध्यायास्त
ध्येयासम्	ध्येयास्व	ध्येयास्म	उ० पु०	ध्यायासम्	ध्यायास्व	ध्यायास्म

तादि				स्यत्यादि		
ध्याता	ध्यातारौ	ध्यातारः	प्र० पु०	ध्यास्यति	ध्यास्यतः	ध्यास्यन्ति
ध्यातासि	ध्यातास्थः	ध्यातास्थ	म० पु०	ध्यास्यसि	ध्यास्यथः	ध्यास्यथ
ध्यातास्मि	ध्यातास्वः	ध्यातास्मः	उ० पु०	ध्यास्यामि	ध्यास्यावः	ध्यास्यामः

स्यदादि

अध्यास्यत्	अध्यास्यताम्	अध्यास्यन्	प्र० पु०
अध्यास्यः	अध्यास्यतम्	अध्यास्यत	म० पु०
अध्यास्यम्	अध्यास्याव	अध्यास्याम	उ० पु०

१५. पठ—व्यक्तायां वाचि (पढना)

तिबादि				यादादि		
पठति	पठतः	पठन्ति	प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
पठसि	पठथः	पठथ	म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
पठामि	पठावः	पठामः	उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

तुवादि				दिवादि		
पठतु, पठतात्	पठताम्	पठन्तु	प्र० पु०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
पठ, पठतात्	पठतम्	पठत	म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
पठानि	पठाव	पठाम	उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

सादि (१)				सादि (२)		
अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः	प्र० पु०	अपठीत्	अपठिष्टाम्	अपठिषुः
अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट	म० पु०	अपठीः	अपठिष्टम्	अपठिष्ट
अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म	उ० पु०	अपठिषम्	अपठिष्व	अपठिष्म

णबादि **क्यादादि**

पपाठ	पेठतुः	पेठुः	प्र० पु०	पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः
पेठिथ	पेठथुः	पेठ	म० पु०	पठ्याः	पठ्यास्तम्	पठ्यास्त
पपाठ, पपठ	पेठिव	पेठिम	उ० पु०	पठ्यासम्	पठ्यास्व	पठ्यास्म

तादि **स्त्यादि**

पठिता	पठितारौ	पठितारः	प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
पठितासि	पठितास्थः	पठितास्थ	म० पु०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
पठितास्मि	पठितास्वः	पठितास्मः	उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

स्यदादि

अपठिष्यत्	अपठिष्यताम्	अपठिष्यन् प्र० पु०
अपठिष्यः	अपठिष्यतम्	अपठिष्यत म० पु०
अपठिष्यम्	अपठिष्याव	अपठिष्याम उ० पु०

१६. वाञ्छि—इच्छायाम् (इच्छा करना)

तिबादि **यादादि**

वाञ्छति	वाञ्छतः	वाञ्छन्ति	प्र० पु०	वाञ्छेत्	वाञ्छेताम्	वाञ्छेयुः
वाञ्छसि	वाञ्छथः	वाञ्छथ	म० पु०	वाञ्छेः	वाञ्छेतम्	वाञ्छेत
वाञ्छामि	वाञ्छावः	वाञ्छामः	उ० पु०	वाञ्छेयम्	वाञ्छेव	वाञ्छेम

तुबादि **दिवादि**

वाञ्छतु, वाञ्छतात्	वाञ्छताम्	वाञ्छन्तु	प्र० पु०	अवाञ्छत्	अवाञ्छताम्	अवाञ्छन्
वाञ्छ, वाञ्छतात्	वाञ्छतम्	वाञ्छत	म० पु०	अवाञ्छः	अवाञ्छतम्	अवाञ्छत
वाञ्छानि	वाञ्छाव	वाञ्छाम	उ० पु०	अवाञ्छम्	अवाञ्छाव	अवाञ्छाम

सादि **णबादि**

अवाञ्छीत्	अवाञ्छिष्टाम्	अवाञ्छिषुः	प्र० पु०	ववाञ्छ	ववाञ्छतुः	ववाञ्छुः
अवाञ्छीः	अवाञ्छिष्टम्	अवाञ्छिष्ट	म० पु०	ववाञ्छिथ	ववाञ्छथुः	ववाञ्छ
अवाञ्छिषम्	अवाञ्छिष्व	अवाञ्छिष्म	उ० पु०	ववाञ्छ	ववाञ्छिव	ववाञ्छिम

क्यादादि **तादि**

वाञ्छ्यात्	वाञ्छ्यास्ताम्	वाञ्छ्यासुः	प्र० पु०	वाञ्छिता	वाञ्छितारौ	वाञ्छितारः
वाञ्छ्याः	वाञ्छ्यास्तम्	वाञ्छ्यास्त	म० पु०	वाञ्छितासि	वाञ्छितास्थः	वाञ्छितास्थ
वाञ्छ्यासम्	वाञ्छ्यास्व	वाञ्छ्यास्म	उ० पु०	वाञ्छितास्मि	वाञ्छितास्वः	वाञ्छितास्मः

स्यत्यादि

वाञ्छिष्यति	वाञ्छिष्यतः	वाञ्छिष्यन्ति	प्र० पु०
वाञ्छिष्यसि	वाञ्छिष्यथः	वाञ्छिष्यथ	म० पु०
वाञ्छिष्यामि	वाञ्छिष्यावः	वाञ्छिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अवाञ्छिष्यत्	अवाञ्छिष्यताम्	अवाञ्छिष्यन्	प्र० पु०
अवाञ्छिष्यः	अवाञ्छिष्यतम्	अवाञ्छिष्यत	म० पु०
अवाञ्छिष्यम्	अवाञ्छिष्याव	अवाञ्छिष्याम	उ० पु०

१७. शुच् (शोके) शोक करना

तिबादि

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
शोचति	शोचतः	शोचन्ति
शोचसि	शोचथः	शोचथ
शोचामि	शोचावः	शोचामः

यादादि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शोचेत्	शोचेताम्	शोचेयुः
म० पु०	शोचेः	शोचेतम्	शोचेत
उ० पु०	शोचेयम्	शोचेव	शोचेम

तुबादि

शोचतु, शोचतात्	शोचताम्	शोचन्तु	प्र० पु०
शोच, शोचतात्	शोचतम्	शोचत	म० पु०
शोचानि	शोचाव	शोचाम	उ० पु०

दिबादि

अशोचत्	अशोचताम्	अशोचन्	प्र० पु०
अशोचः	अशोचतम्	अशोचत	म० पु०
अशोचम्	अशोचाव	अशोचाम	उ० पु०

ह्यादि

अशोचीत्	अशोचिष्टाम्	अशोचिषुः	प्र० पु०
अशोचीः	अशोचिष्टम्	अशोचिष्ट	म० पु०
अशोचिषम्	अशोचिष्व	अशोचिष्म	उ० पु०

णबादि

शुशोच	शुशुचतुः	शुशुचुः	प्र० पु०
शुशोचिथ	शुशुचथुः	शुशुच	म० पु०
शुशोच	शुशुचिव	शुशुचिम	उ० पु०

क्यादादि

शुच्यात्	शुच्यास्ताम्	शुच्यासुः	प्र० पु०
शुच्याः	शुच्यास्तम्	शुच्यास्त	म० पु०
शुच्यासम्	शुच्यास्व	शुच्यास्म	उ० पु०

तादि

शोचिता	शोचितारौ	शोचितारः	प्र० पु०
शोचितासि	शोचितास्थः	शोचितास्थ	म० पु०
शोचितास्मि	शोचितास्वः	शोचितास्मः	उ० पु०

स्यत्यादि

शोचिष्यति	शोचिष्यतः	शोचिष्यन्ति	प्र० पु०
शोचिष्यसि	शोचिष्यथः	शोचिष्यथ	म० पु०
शोचिष्यामि	शोचिष्यावः	शोचिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अशोचिष्यत्	अशोचिष्यताम्	अशोचिष्यन्	प्र० पु०
अशोचिष्यः	अशोचिष्यतम्	अशोचिष्यत	म० पु०
अशोचिष्यम्	अशोचिष्याव	अशोचिष्याम	उ० पु०

१८. गम्लृं—गतौ (जाना)

तिबादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	म० पु०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः	उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

तुबादि				दिबादि		
गच्छतु, गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु	प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
गच्छ, गच्छतात्	गच्छतम्	गच्छत	म० पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम	उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

ञादि				णबादि		
अगमत्	अगमताम्	अगमन्	प्र० पु०	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
अगमः	अगमतम्	अगमत	म० पु०	जगमिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
अगमम्	अगमाव	अगममाम	उ० पु०	जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम

क्यादादि				तादि		
गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः	प्र० पु०	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
गम्याः	गम्यास्तम्	गम्यास्त	म० पु०	गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ
गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यास्म	उ० पु०	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति	प्र० पु०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्
गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ	म० पु०	अगमिष्यः	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत
गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः	उ० पु०	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम

१९. दृशिंर्—प्रेक्षणे (देखना)

तिबादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति	प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ	म० पु०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः	उ० पु०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

तुबादि				दिबादि		
पश्यतु, पश्यतात्	पश्यताम्	पश्यन्तु	प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
पश्य, पश्यतात्	पश्यतम्	पश्यत	म० पु०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
पश्यानि	पश्याव	पश्याम	उ० पु०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

ह्यादि (१)				ह्यादि (२)		
अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्	प्र० पु०	अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः
अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत	म० पु०	अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम	उ० पु०	अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म

णबादि				क्यादादि		
ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः	प्र० पु०	दृश्यात्	दृश्यास्ताम्	दृश्यासुः
ददर्शिथ, ददृष्ठ	ददृशथुः	ददृश	म० पु०	दृश्याः	दृश्यास्तम्	दृश्यास्त
ददर्श	ददृशिव	ददृशिम	उ० पु०	दृश्यासम्	दृश्यास्व	दृश्यास्म

तादि				स्यत्यादि		
द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टारः	प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
द्रष्टासि	द्रष्टास्थः	द्रष्टास्थ	म० पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
द्रष्टास्मि	द्रष्टास्वः	द्रष्टास्मः	उ० पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

स्यदादि			
अद्रक्ष्यत्	अद्रक्ष्यताम्	अद्रक्ष्यन्	प्र० पु०
अद्रक्ष्यः	अद्रक्ष्यतम्	अद्रक्ष्यत	म० पु०
अद्रक्ष्यम्	अद्रक्ष्याव	अद्रक्ष्याम	उ० पु०

२०. वदिङ्—अभिवादनस्तुत्यो :

(अभिवादन करना, स्तुति करना)

तिबादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वन्दते	वन्देते	वन्दन्ते	प्र० पु०	वन्देत	वन्देयाताम्	वन्देरन्
वन्दसे	वन्देथे	वन्दध्वे	म० पु०	वन्देथाः	वन्देयाथाम्	वन्देध्वम्
वन्दे	वन्दावहे	वन्दामहे	उ० पु०	वन्देय	वन्देवहि	वन्देमहि

तुबादि				दिबादि		
वन्दताम्	वन्देताम्	वन्दन्ताम्	प्र० पु०	अवन्दत	अवन्देताम्	अवन्दन्त
वन्दस्व	वन्देथाम्	वन्दध्वम्	म० पु०	अवन्दथाः	अवन्देथाम्	अवन्दध्वम्
वन्दै	वन्दावहै	वन्दामहै	उ० पु०	अवन्दे	अवन्दावहि	अवन्दामहि

ह्यादि				णबादि		
अवन्दिष्ट	अवन्दिषाताम्	अवन्दिषत	प्र० पु०	ववन्दे	ववन्दाते	ववन्दिरे
अवन्दिष्ठाः	अवन्दिषाथाम्	अवन्दिढ्वम्, अवन्दिध्वम्	म० पु०	ववन्दिषे	ववन्दाथे	ववन्दिध्वे
अवन्दिषि	अवन्दिष्वहि	अवन्दिष्महि	उ० पु०	ववन्दे	ववन्दिवहे	ववन्दिमहे

क्यादादि **तादि**

वन्दिषीष्ट वन्दिषीयास्ताम् वन्दिषीरन् प्र० पु० वन्दिता वन्दितारौ वन्दितारः
वन्दिषीष्ठाः वन्दिषीयास्थाम् वन्दिषीध्वम् म० पु० वन्दितासे वन्दितासाथे वन्दिताध्वे
वन्दिषीय वन्दिषीवहि वन्दिषीमहि उ. पु० वन्दिताहे वन्दितास्वहे वन्दितास्महे

स्यत्यादि **स्यदादि**

वन्दिष्यते वन्दिष्येते वन्दिष्यन्ते प्र० पु० अवन्दिष्यत अवन्दिष्येताम् अवन्दिष्यन्त
वन्दिष्यसे वन्दिष्येथे वन्दिष्यध्वे म० पु० अवन्दिष्यथाः अवन्दिष्येथाम् अवदिष्यध्वम्
वन्दिष्ये वन्दिष्यावहे वन्दिष्यामहे उ० पु० अवन्दिष्ये अवन्दिष्यावहि अवन्दिष्यामहि

२१. अदं—भक्षणे (खाना)

तिबादि **यादादि**

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अत्ति	अत्तः	अदन्ति	प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
अत्सि	अत्थः	अत्थ	म० पु०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
अद्मि	अद्वः	अद्मः	उ० पु०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

तुबादि **दिबादि**

अत्तु,अत्तात्	अत्ताम्	अदन्तु	प्र० पु०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
अद्धि, अत्तात्	अत्तम्	अत्त	म० पु०	आदः	आत्तम्	आत्त
अदानि	अदाव	अदाम	उ० पु०	आदम्	आद्व	आद्म

द्यादि **णबादि (१)**

अघसत्	अघसताम्	अघसन्	प्र० पु०	जघास	जक्षतुः	जक्षुः
अघसः	अघसतम्	अघसत	म० पु०	जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष
अघसम्	अघसाव	अघसाम	उ० पु०	जघास, जघस	जक्षिव	जक्षिम

णबादि (२) **क्यादादि**

आद	आदतुः	आदुः	प्र० पु०	अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासुः
आदिथ	आदथुः	आद	म० पु०	अद्याः	अद्यास्तम्	अद्यास्त
आद	आदिव	आदिम	उ० पु०	अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म

तादि **स्यत्यादि**

अत्ता	अत्तारौ	अत्तारः	प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
अत्तासि	अत्तास्थः	अत्तास्थ	म० पु०	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः	उ० पु०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

स्यदादि

आत्स्यत्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्	प्र० पु०
आत्स्यः	आत्स्यतम्	आत्स्यत	म० पु०
आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम	उ० पु०

२२. यांक्—गतौ (जाना)

तिबादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
याति	यातः	यान्ति	प्र० पु०	यायात्	यायाताम्	यायुः
यासि	याथः	याथ	म० पु०	यायाः	यायातम्	यायात
यामि	यावः	यामः	उ० पु०	यायाम्	यायाव	यायाम

तुबादि				दिबादि		
यातु, यातात्	यिताम्	यान्तु	प्र० पु०	अयात्	अयाताम्	अयुः
याहि, यातात्	यातम्	यात	म० पु०	अयाः	अयातम्	अयात
यानि	याव	याम	उ० पु०	अयाम्	अयाव	अयाम

ह्यादि				णबादि		
अयासीत्	अयासिष्टाम्	अयासिषुः	प्र० पु०	ययौ	ययतुः	ययुः
अयासीः	अयासिष्टम्	अयासिष्ट	म० पु०	ययिथ, ययाथ	ययथुः	यय
अयासिषम्	अयासिष्व	अयासिष्व	उ० पु०	ययौ	ययिव	ययिम

क्र्यादादि				तादि		
यायात्	यायास्ताम्	यायासुः	प्र० पु०	याता	यातारौ	यातारः
यायाः	यायास्तम्	यायास्त	म० पु०	यातासि	यातास्थः	यातास्थ
यायासम्	यायास्व	यायास्म	उ० पु०	यातास्मि	यातास्वः	यातास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
यास्यति	यास्यतः	यास्यन्ति	प्र० पु०	अयास्यत्	अयास्यताम्	अयास्यन्
यास्यसि	यास्यथः	यास्यथ	म० पु०	अयास्यः	अयास्यतम्	अयास्यत
यास्यामि	यास्यावः	यास्यामः	उ० पु०	अयास्यम्	अयास्याव	अयास्याम

२३. रुदृक् – अश्रुविमोचने (रोना)

तिबादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रोदिति	रुदितः	रुदन्ति	प्र० पु०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ	म० पु०	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः	उ० पु०	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

तुबादि				दिबादि		
रोदितु, रुदितात्	रुदिताम्	रुदन्तु	प्र० पु०	अरोदीत्, अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्
रुदिहि, रुदितात्	रुदितम्	रुदित	म० पु०	अरोदीः, अरोदः	अरुदितम्	अरुदित
रोदानि	रोदाव	रोदाम	उ० पु०	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

द्यादि (१) **द्यादि (२)**

अरोदीत्	अरोदिष्टाम्	अरोदिषुः	प्र० पु०	अरुदत्	अरुदताम्	अरुदन्
अरोदीः	अरोदिष्टम्	अरोदिष्ट	म० पु०	अरुदः	अरुदतम्	अरुदत
अरोदिषम्	अरोदिष्व	अरोदिष्म	उ० पु०	अरुदम्	अरुदाव	अरुदाम

णबादि **क्र्यादादि**

रुरोद	रुरुदतुः	रुरुदुः	प्र० पु०	रुद्यात्	रुद्यास्ताम्	रुद्यासुः
रुरोदिथ	रुरुदथुः	रुरुद	म० पु०	रुद्याः	रुद्यास्तम्	रुद्यास्त
रुरोद	रुरुदिव	रुरुदिम	उ० पु०	रुद्यासम्	रुद्यास्व	रुद्यास्म

तादि **स्यत्यादि**

रोदिता	रोदितारौ	रोदितारः	प्र० पु०	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
रोदितासि	रोदितास्थः	रोदितास्थ	म० पु०	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
रोदितास्मि	रोदितास्वः	रोदितास्मः	उ० पु०	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः

स्यदादि

अरोदिष्यत्	अरोदिष्यताम्	अरोदिष्यन्	प्र० पु०
अरोदिष्यः	अरोदिष्यतम्	अरोदिष्यत	म० पु०
अरोदिष्यम्	अरोदिष्याव	अरोदिष्याम	उ० पु०

२४. जागृक्—निद्राक्षये (जागना)

तिबादि **यादादि**

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
जागर्ति	जागृतः	जाग्रति	प्र० पु०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
जागर्षि	जागृथः	जागृथ	म० पु०	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
जागर्मि	जागृवः	जागृमः	उ० पु०	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम

तुबादि **दिबादि**

जागर्तु, जागृतात्	जागृताम्	जाग्रतु	प्र० पु०	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
जागृहि, जागृतात्	जागृतम्	जागृत	म० पु०	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
जागराणि	जागराव	जागराम	उ० पु०	अजागरम्	अजागृव	अजागृम

द्यादि **णबादि (१)**

अजागरीत् अजागरिष्टाम् अजागरिषुः प्र० पु० जजागार जजागरतुः जजागरुः
अजागरीः अजागरिष्टम् अजागरिष्ट म० पु० जजागरिथ जजागरथुः जजागर
अजागरिषम् अजागरिष्व अजागरिष्म उ० पु०

जजागार, जजागर जजागरिव जजागरिम

णबादि (२)

जागराञ्चकार	जागराञ्चक्रतुः	जागराञ्चक्रुः	प्र० पु०
जागराञ्चक्रिथ	जागराञ्चक्रथुः	जागराञ्चक्र	म० पु०
जागराञ्चकार, जागराञ्चकर	जागराञ्चक्रिव	जागराञ्चक्रिम	उ० पु०

णबादि (३)

जागरांबभूव	जागरांबभूवतुः	जागरांबभूवुः	प्र० पु०
जागरांबभूविथ	जागरांबभूवथुः	जागरांबभूव	म० पु०
जागरांबभूव	जागरांबभूविव	जागरांबभूविम	उ० पु०

णबादि (४) **क्यादादि**

जागरामास जागरामासतुः जागरामासुः प्र० पु० जागृयात् जागृयास्ताम् जागृयासुः
जागरामासिथ जागरामासथुः जागरामास म० पु० जागृयाः जागृयास्तम् जागृयास्त
जागरामास जागरामासिव जागरामासिम उ. पु. जागृयासम् जागृयास्व जागृयास्म

तादि

जागरिता	जागरितारौ	जागरितारः	प्र० पु०
जागरितासि	जागरितास्थः	जागरितास्थ	म० पु०
जागरितास्मि	जागरितास्वः	जागरितास्मः	उ० पु०

स्यत्यादि

जागरिष्यति	जागरिष्यतः	जागरिष्यन्ति	प्र० पु०
जागरिष्यसि	जागरिष्यथः	जागरिष्यथ	म० पु०
जागरिष्यामि	जागरिष्यावः	जागरिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अजागरिष्यत्	अजागरिष्यताम्	अजागरिष्यन्	प्र० पु०
अजागरिष्यः	अजागरिष्यतम्	अजागरिष्यत	:म० पु०
अजागरिष्यम्	अजागरिष्याव	अजागरिष्याम	उ० पु०

२५. विदंक्—ज्ञाने (जानना)

तिबादि (१)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वेत्ति	वित्तः	विदन्ति	प्र० पु०	वेद	विदतुः	विदुः
वेत्सि	वित्थः	वित्थ	म० पु०	वेत्थ	विदथुः	विद
वेद्मि	विद्वः	विद्मः	उ० पु०	वेद	विद्व	विद्म

यादादि **तुबादि (१)**

विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः	प्र० पु०	वेत्तु, वित्तात्	वित्ताम्	विदन्तु
विद्याः	विद्यातम्	विद्यात	म० पु०	विद्धि, वित्तात्	वित्तम्	वित्त
विद्याम्	विद्याव	विद्याम	उ० पु०	वेदानि	वेदाव	वेदाम

तुबादि (२)

त्रिदांकरोतु, विदांकुरुतात्	विदांकुरुताम्	विदांकुर्वन्तु	प्र० पु०
विदांकुरु, विदांकुरुतात्	विदांकुरुतम्	विदांकुरुत	म० पु०
विदांकरवाणि	विदांकरवाव	विदांकरवाम	उ० पु०

दिवादि **द्यादि**

अवेत्, अवेद्	अवित्ताम्	अविदुः	प्र० पु० अवेदीत्	अवेदिष्टाम्	अवेदिषुः
अवेत्, अवेः	अवित्तम्	अवित्त	म० पु० अवेदीः	अवेदिष्टम्	अवेदिष्ट
अवेदम्	अविद्व	अविद्म	उ० पु० अवेदिषम्	अवेदिष्व	अवेदिष्म

णबादि (१)

विदांचकार	विदांचक्रतुः	विदांचक्रुः	प्र० पु०
विदांचक्रिथ	विदांचक्रथुः	विदांचक्र	म० पु०
विदांचकार, विदांचकर	विदांचक्रिव	विदांचक्रिम	उ० पु०

णबादि (२) **णबादि (३)**

विदांबभूव	विदांबभूवतुः	विदांबभूवुः	प्र० पु०	विदामास	विदामासतुः	विदामासुः
विदांबभूविथ	विदांबभूवथुः	विदांबभूव	म० पु०	विदामासिथ	विदामासथुः	विदामास
विदांबभूव	विदांबभूविव	विदांबभूविम	उ० पु०	विदामास	विदामासिव	विदामासिम

णबादि (४) **क्यादादि**

विवेद	विविदतुः	विविदुः	प्र० पु०	विद्यात्	विद्यास्ताम्	विद्यासुः
विवेदिथ	विविदथुः	विविद	म० पु०	विद्याः	विद्यास्तम्	विद्यास्त
विवेद	विविदिव	विविदिम	उ० पु०	विद्यासम्	विद्यास्व	विद्यास्म

तादि **स्यत्यादि**

वेदिता	वेदितारौ	वेदितारः	प्र० पु०	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
वेदितासि	वेदितास्थः	वेदितास्थ	म० पु०	वेदिष्यसि	वेदिष्यथः	वेदिष्यथ
वेदितास्मि	वेदितास्वः	वेदितास्मः	उ० पु०	वेदिष्यामि	वेदिष्यावः	वेदिष्यामः

स्यदादि

अवेदिष्यत्	अवेदिष्यताम्	अवेदिष्यन्	प्र० पु०
अवेदिष्यः	अवेदिष्यतम्	अवेदिष्यत	म० पु०
अवेदिष्यम्	अवेदिष्याव	अवेदिष्याम	उ० पु०

२६. हनंक्—हिंसागत्योः (मारना, जाना)

तिबादि **यादादि**

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
हन्ति	हतः	घ्नन्ति	प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
हन्सि	हथः	हथ	म० पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
हन्मि	हन्वः	हन्मः	उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

तुवादि			दिवादि		
हन्तु, हतात्	हताम्	घ्नन्तु	प्र० पु० अहन्	अहताम्	अघ्नन्
जहि, हतात्	हतम्	हत	म० पु० अहन्	अहतम्	अहत
हनानि	हनाव	हनाम	उ० पु० अहनम्	अहन्व	अहन्म

द्यादि			णवादि		
अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः	प्र० पु० जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः
अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट	म० पु० जघनिथ, जघन्थ	जघ्नथुः	जघ्न
अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म	उ० पु० जघान, जघन	जघ्निव	जघ्निम

क्र्यादादि			तादि		
वध्यात्	वध्यास्ताम्	वध्यासुः	प्र० पु० हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः
वध्याः	वध्यास्तम्	वध्यास्त	म० पु० हन्तासि	हन्तास्थः	हन्तास्थ
वध्यासम्	वध्यास्व	वध्यास्म	उ० पु० हन्तास्मि	हन्तास्वः	हन्तास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि		
हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति	प्र० पु० अहनिष्यत्	अहनिष्यताम्	अहनिष्यन्
हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ	म० पु० अहनिष्यः	अहनिष्यतम्	अहनिष्यत
हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः	उ० पु० अहनिष्यम्	अहनिष्याव	अहनिष्याम

२७. असक्—भुवि (होना)

तिवादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अस्ति	स्तः	सन्ति	प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
असि	स्थः	स्थ	म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
अस्मि	स्वः	स्मः	उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम

तुवादि			दिवादि		
अस्तु, स्तात्	स्ताम्	सन्तु	प्र० पु० आसीत्	आस्ताम्	आसन्
एधि, स्तात्	स्तम्	स्त	म० पु० आसीः	आस्तम्	आस्त
असानि	असाव	असाम	उ० पु० आसम्	आस्व	आस्म

द्यादि			णवादि		
अभूत्	अभूताम्	अभूवन्	प्र० पु० बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
अभूः	अभूतम्	अभूत	म० पु० बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
अभूवम्	अभूव	अभूम	उ० पु० बभूव	बभूविव	बभूविम

क्यादादि				तादि		
भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः	प्र० पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः
भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त	म० पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म	उ० पु०	भवतास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म० पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ० पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

२८. शीङ्क्—स्वप्ने (सोना)

तिबादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
शेते	शयाते	शेरते	प्र० पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
शेषे	शयाथे	शेध्वे	म० पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
शये	शेवहे	शेमहे	उ० पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

तुबादि				दिबादि		
शेताम्	शयाताम्	शेरताम्	प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्	म० पु०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
शयै	शयावहै	शयामहै	उ० पु०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

ह्यादि			
अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत	प्र० पु०
अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिध्वम्, अशयिढ्वम्	म० पु०
अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि	उ० पु०

णबादि				क्र्यादादि		
शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे	प्र. पु.	शयिषीष्ट	शयिषीयास्ताम्	शयिषीरन्
शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिध्वे, शिश्यिढ्वे	म. पु.	शयिषीष्ठाः	शयिषीयास्थाम्	शयिषीध्वम्
शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे	उ. पु.	शयिषीय	शयिषीवहि	शयिषीमहि

तादि				स्यत्यादि		
शयिता	शयितारौ	शयितारः	प्र० पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे	म० पु०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे	उ० पु०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

स्यदादि			
अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यन्त	प्र० पु०
अशयिष्यथाः	अशयिष्येथाम्	अशयिष्यध्वम्	म० पु०
अशयिष्ये	अशयिष्यावहि	अशयिष्यामहि	उ० पु०

२९. आसङ्क्—उपवेशने (बैठना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
आस्ते	आसाते	आसते	प्र० पु०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
आस्से	आसाथे	आस्ध्वे	म० पु०	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
आसे	आस्वहे	आस्महे	उ० पु०	आसीय	आसीवहि	आसीमहि
तुबादि				**दिबादि**		
आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्	प्र० पु०	आस्त	आसाताम्	आसत
आस्स्व	आसाथाम्	आस्ध्वम्	म० पु०	आस्थाः	आसाथाम्	आस्ध्वम्
आसै	आसावहै	आसामहै	उ० पु०	आसि	आस्वहि	आस्महि

स्यादि **णबादि (१)**

आसिष्ट आसिषाताम् आसिषत प्र० पु० आसाञ्चक्रे आसाञ्चक्राते आसाञ्चक्रिरे
आसिष्ठाः आसिषाथाम् आसिध्वम् म० पु० आसाञ्चकृषे आसाञ्चक्राथे आसञ्चकृढ्वे
आसिषि आसिष्वहि आसिष्महि उ० पु० आसाञ्चक्रे आसाञ्चकृवहे आसाञ्चकृमहे

णबादि (२)

आसाम्बभूवे	आसाम्बभूवाते	आसाम्बभूविरे	प्र० पु०
आसाम्बभूविषे	आसाम्बभूवाथे	आसाम्बभूविढ्वे, आसाम्बभूविध्वे	म० पु०
आसाम्बभूवे	आसाम्बभूविवहे	आसाम्बभूविमहे	उ० पु०

णबादि (३)

आसामासे	आसामासाते	आसामासिरे	प्र० पु०
आसामासिषे	आसामासाथे	आसामासिध्वे	म० पु०
आसामासे	आसामासिवहे	आसामासिमहे	उ० पु०

क्यादादि

आसिषीष्ट	आसिषीयास्ताम्	आसिषीरन्	प्र० पु०
आसिषीष्ठाः	आसिषीयास्थाम्	आसिषीध्वम्	म० पु०
आसिषीय	आसिषीवहि	आसिषीमहि	उ० पु०

तादि **स्यत्यादि**

आसिता	आसितारौ	आसितारः	प्र० पु०	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
आसितासे	आसितासाथे	आसिताध्वे	म० पु०	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
आसिताहे	आसितास्वहे	आसितास्महे	उ० पु०	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

स्यदादि

आसिष्यत	आसिष्येताम्	आसिष्यन्त	प्र० पु०
आसिष्यथाः	आसिष्येथाम्	आसिष्यध्वम्	म० पु०
आसिष्ये	आसिष्यावहि	आसिष्यामहि	उ० पु०

३०. ष्टुंन्क् स्तुतौ (उभयपदी) स्तुति करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
स्तौति, स्तवीति	स्तुतः	स्तुवन्ति	प्र० पु०	स्तुयात्	स्तुयाताम्	स्तुयुः
स्तौषि, स्तवीषि	स्तुथः	स्तुथ	म० पु०	स्तुयाः	स्तुयातम्	स्तुयात
स्तौमि, स्तवीमि	स्तुवः	स्तुमः	उ० पु०	स्तुयाम्	स्तुयाव	स्तुयाम
तुबादि				**दिबादि**		
स्तौतु, स्तवीतु, स्तुतात्	स्तुताम्	स्तुवन्तु	प्र० पु०	अस्तौत्, अस्तवीत्	अस्तुताम्	अस्तुवन्
स्तुहि, स्तुतात्	स्तुतम्	स्तुत	म० पु०	अस्तौः, अस्तवीः	अस्तुतम्	अस्तुत
स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम	उ० पु०	अस्तवम्	अस्तुव	अस्तुम
ञ्यादि				**णबादि**		
अस्तावीत्	अस्ताविष्टाम्	अस्ताविषुः	प्र० पु०	तुष्टाव	तुष्टुवतुः	तुष्टुवुः
अस्तावीः	अस्ताविष्टम्	अस्ताविष्ट	म० पु०	तुष्टोथ	तुष्टुवथुः	तुष्टुव
अस्ताविषम्	अस्ताविष्व	अस्ताविष्म	उ० पु०	तुष्टाव	तुष्टुव	तुष्टुम
क्यादादि				**तादि**		
स्तूयात्	स्तूयास्ताम्	स्तूयासुः	प्र० पु०	स्तोता	स्तोतारौ	स्तोतारः
स्तूयाः	स्तूयास्तम्	स्तूयास्त	म० पु०	स्तोतासि	स्तोतास्थः	स्तोतास्थ
स्तूयासम्	स्तूयास्व	स्तूयास्म	उ० पु०	स्तोतास्मि	स्तोतास्वः	स्तोतास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
स्तोष्यति	स्तोष्यतः	स्तोष्यन्ति	प्र० पु०	अस्तोष्यत्	अस्तोष्यताम्	अस्तोष्यन्
स्तोष्यसि	स्तोष्यथः	स्तोष्यथ	म० पु०	अस्तोष्यः	अस्तोष्यतम्	अस्तोष्यत
स्तोष्यामि	स्तोष्यावः	स्तोष्यामः	उ० पु०	अस्तोष्यम्	अस्तोष्याव	अस्तोष्यामः

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
स्तुते	स्तुवाते	स्तुवते	प्र० पु०	स्तुवीत	स्तुवीयाताम्	स्तुवीरन्
स्तुषे	स्तुवाथे	स्तुध्वे	म० पु०	स्तुवीथाः	स्तुवीयाथाम्	स्तुवीध्वम्
स्तुवे	स्तुवहे	स्तुमहे	उ० पु०	स्तुवीय	स्तुवीवहि	स्तुवीमहि

तुबादि				दिबादि		
स्तुताम्	स्तुवाताम्	स्तुवताम्	प्र० पु०	अस्तुत	अस्तुवाताम्	अस्तुवत
स्तुष्व	स्तुवाथाम्	स्तुध्वम्	म० पु०	अस्तुथाः	अस्तुवाथाम्	अस्तुध्वम्
स्तवै	स्तवावहै	स्तवामहै	उ० पु०	अस्तुवि	अस्तुवहि	अस्तुमहि

द्यादि			
अस्तोष्ट	अस्तोषाताम्	अस्तोषत	प्र० पु०
अस्तोष्ठाः	अस्तोषाथाम्	अस्तोध्वम्, अस्तोढ्वम्	म० पु०
अस्तोषि	अस्तोष्वहि	अस्तोष्महि	उ० पु०

णबादि				क्यादादि		
तुष्टुवे	तुष्टुवाते	तुष्टुविरे	प्र० पु०	स्तोषीष्ट	स्तोषीयास्ताम्	स्तोषीरन्
तुष्टुविषे	तुष्टुवाथे	तुष्टुढ्वे, तुष्टुध्वे	म० पु०	स्तोषीष्ठाः	स्तोषीयास्थाम्	स्तोषीढ्वम्
तुष्टुवे	तुष्टुवहे	तुष्टुमहे	उ० पु०	स्तोषीय	स्तोषीवहि	स्तोषीमहि

तादि				स्त्यादि		
स्तोता	स्तोतारौ	स्तोतारः	प्र० पु०	स्तोष्यते	स्तोष्येते	स्तोष्यन्ते
स्तोतासे	स्तोतासाथे	स्तोताध्वे	म० पु०	स्तोष्यसे	स्तोष्येथे	स्तोष्यध्वे
स्तोताहे	स्तोतास्वहे	स्तोतास्महे	उ० पु०	स्तोष्ये	स्तोष्यावहे	स्तोष्यामहे

स्यदादि			
अस्तोष्यत	अस्तोष्येताम्	अस्तोष्यन्त	प्र० पु०
अस्तोष्यथाः	अस्तोष्येथाम्	अस्तोष्यध्वम्	म० पु०
अस्तोष्ये	अस्तोष्यावहे	अस्तोष्यामहे	उ० पु०

३१. ब्रूंन्क्—व्यक्तायां वाचि (उभयपदी) बोलना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि			यादादि		
ब्रवीति, आह	ब्रूतः, आहतुः	ब्रुवन्ति	प्र० पु० ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
ब्रवीषि, आत्थ	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूथ	म० पु० ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः	उ० पु० ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम
तुबादि			दिबादि		
ब्रवीतु, ब्रूतात्	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	प्र० पु० अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
ब्रूहि, ब्रूतात्	ब्रूतम्	ब्रूत	म० पु० अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	उ० पु० अब्रुवम्	अब्रूव	अब्रूम

ङादि				**णबादि**		
अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्	प्र० पु०	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
अवोचः	अवोचतम्	अवोचत्	म० पु०	उवचिथ, उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम	उ० पु०	उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम

क्यादादि				**तादि**		
उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासुः	प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
उच्याः	उच्यास्तम्	उच्यास्त	म० पु०	वक्तासि	वक्तास्थः	वक्तास्थ
उच्यासम्	उच्यास्व	उच्यास्म	उ० पु०	वक्तास्मि	वक्तास्वः	वक्तास्मः

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्
वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ	म० पु०	अवक्ष्यः	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत
वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः	उ० पु०	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते	प्र० पु०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे	म० पु०	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे	उ० पु०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

तुबादि				**दिबादि**		
ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्	प्र० पु०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
ब्रूस्व	ब्रुवाथाम्	ब्रुध्वम्	म० पु०	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै	उ० पु०	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

ङादि				**णबादि**		
अवोचत	अवोचेताम्	अवोचन्त	प्र० पु०	ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
अवोचथाः	अवोचेथाम्	अवोचध्वम्	म० पु०	ऊचिषे	ऊचाथे	ऊचिध्वे
अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि	उ० पु०	ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे

क्यादादि				**तादि**		
वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्	प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
वक्षीष्ठाः	वक्षीयास्थाम्	वक्षीध्वम्	म० पु०	वक्तासे	वक्तासाथे	वक्ताध्वे
वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि	उ० पु०	वक्ताहे	वक्तास्वहे	वक्तास्महे

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते	प्र० पु०	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त
वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे	म० पु०	अवक्ष्यथाः	अवक्ष्येथाम्	अवक्ष्यध्वम्
वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे	उ० पु०	अवक्ष्ये	अवक्ष्यावहि	अवक्ष्यामहि

३२. दुहंन्क्—क्षरणे (उभयपदी) दुहना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	प्र० पु०	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध	म० पु०	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः	उ० पु०	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम
तुबादि				**दिबादि**		
दोग्धु, दुग्धात्	दुग्धाम्	दुहन्तु	प्र० पु०	अधोक्, अधोग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
दुग्धि, दुग्धात्	दुग्धम्	दुग्ध	म० पु०	अधोक्, अधोग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
दोहानि	दोहाव	दोहाम	उ० पु०	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म
ह्यादि				**णबादि**		
अधुक्षत्	अधुक्षताम्	अधुक्षन्	प्र० पु०	दुदोह	दुदुहतुः	दुदुहुः
अधुक्षः	अधुक्षतम्	अधुक्षत	म० पु०	दुदोहिथ	दुदुहथुः	दुदुह
अधुक्षम्	अधुक्षाव	अधुक्षाम	उ० पु०	दुदोह	दुदुहिव	दुदुहिम
क्यादादि				**तादि**		
दुह्यात्	दुह्यास्ताम्	दुह्यासुः	प्र० पु०	दोग्धा	दोग्धारौ	दोग्धारः
दुह्याः	दुह्यास्तम्	दुह्यास्त	म० पु०	दोग्धासि	दोग्धास्थः	दोग्धास्थ
दुह्यासम्	दुह्यास्व	दुह्यास्म	उ० पु०	दोग्धास्मि	दोग्धास्वः	दोग्धास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अधोक्ष्यत्	अधोक्ष्यताम्	अधोक्ष्यन्
धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ	म० पु०	अधोक्ष्यः	अधोक्ष्यतम्	अधोक्ष्यत
धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः	उ० पु०	अधोक्ष्यम्	अधोक्ष्याव	अधोक्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
दुग्धे	दुहाते	दुहते	प्र० पु०	दुहीत	दुहीयाताम्	दुहीरन्
धुक्षे	दुहाथे	धुग्ध्वे	म० पु०	दुहीथाः	दुहीयाथाम्	दुहीध्वम्
दुहे	दुह्वहे	दुह्महे	उ० पु०	दुहीय	दुहीयवहि	दुहीयमहि
तुबादि				**दिबादि**		
दुग्धाम्	दुहाताम्	दुहताम्	प्र० पु०	अदुग्ध	अदुहाताम्	अदुहत
धुक्ष्व	दुहाथाम्	धुग्ध्वम्	म० पु०	अदुग्धाः	अदुहाथाम्	अधुग्ध्वम्
दोहै	दोहावहै	दोहामहै	उ० पु०	अदुहि	अदुह्वहि	अदुह्महि

धादि

अदुग्ध, अधुक्षत	अधुक्षाताम्	अधुक्षन्त	प्र० पु०
अदुग्धाः, अधुक्षथाः	अधुक्षाथाम्	अधुग्ध्वम्, अधुक्षध्वम्	म० पु०
अधुक्षि	अदुह्वहि, अधुक्षावहि	अदुह्महि, अधुक्षामहि	उ० पु०

णबादि

दुदुहे	दुदुहाते	दुदुहिरे	प्र० पु०
दुदुहिषे, दुधुक्षे	दुदुहाथे	दुदुहिध्वे, दुदुहिढ्वे	म० पु०
दुदुहे	दुदुहिवहे	दुदुहिमहे	उ० पु०

क्यादादि **तादि**

धुक्षीष्ट	धुक्षीयास्ताम्	धुक्षीरन्	प्र० पु०	दोग्धा	दोग्धारौ	दोग्धारः
धुक्षीष्ठाः	धुक्षीयास्थाम्	धुक्षीध्वम्	म० पु०	दोग्धासे	दोग्धासाथे	दोग्धाध्वे
धुक्षीय	धुक्षीवहि	धुक्षीमहि	उ० पु०	दोग्धाहे	दोग्धास्वहे	दोग्धास्महे

स्यत्यादि **स्यदादि**

धोक्ष्यते	धोक्ष्येते	धोक्ष्यन्ते	प्र० पु०	अधोक्ष्यत	अधोक्ष्येताम्	अधोक्ष्यन्त
धोक्ष्यसे	धोक्ष्येथे	धोक्ष्यध्वे	म० पु०	अधोक्ष्यथाः	अधोक्ष्येथाम्	अधोक्ष्यध्वम्
धोक्ष्ये	धोक्ष्यावहे	धोक्ष्यामहे	उ० पु०	अधोक्ष्ये	अधोक्ष्यावहि	अधोक्ष्यामहि

३३. ञिभींक्—भये (डरना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
तिबादि			
बिभेति	बिभितः, बिभीतः	बिभ्यति	प्र० पु०
बिभेषि	बिभिथः, बिभीथः	बिभिथ, बिभीथ	म० पु०
बिभेमि	बिभिवः, बिभीवः	बिभिमः, बिभीमः	उ० पु०

यादादि

बिभियात्, बिभीयात्	बिभियाताम्, बिभीयाताम्	बिभियुः, बिभीयुः	प्र० पु०
बिभियाः, बिभीयाः	बिभियातम्, बिभीयातम्	बिभियात, बिभीयात	म० पु०
बिभियाम्, बिभीयाम्	बिभियाव, बिभीयाव	बिभियाम, बिभीयाम	उ० पु०

तुबादि

बिभेतु, बिभितात्, बिभीतात्	बिभिताम्, बिभीताम्	बिभ्यतु	प्र० पु०
बिभिहि, बिभीहि, बिभितात्, बिभीतात्	बिभितम्, बिभीतम्	बिभित, बिभीत	म० पु०
बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम	उ० पु०

दिवादि

अबिभेत्	अबिभिताम्, अबिभीताम्	अबिभयुः	प्र० पु०
अबिभेः	अबिभितम्, अबिभीतम्	अबिभित, अबिभीत	म० पु०
अबिभयम्	अबिभिव, अबिभीव	अबिभिम, अबिभीम	उ० पु०

द्यादि

अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषुः	प्र० पु०
अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट	म० पु०
अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म	उ० पु०

णबादि (१)

बिभयाञ्चकार	बिभयाञ्चक्रतुः	बिभयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
बिभयाञ्चकर्थ	बिभयाञ्चक्रथुः	बिभयाञ्चक्र	म० पु०
बिभयाञ्चकार, बिभयाञ्चकर	बिभयाञ्चकृव	बिभयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि २

बिभयांबभूव	बिभयांबभूवतुः	बिभयांबभूवुः	प्र० पु०
बिभयांबभूविथ	बिभयांबभूवथुः	बिभयांबभूव	म० पु०
बिभयांबभूव	बिभयांबभूविव	बिभयांबभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

बिभयामास	बिभयामासतुः	बिभयामासुः	प्र. पु.
बिभयामासिथ	बिभयामासथुः	बिभयामास	म. पु.
बिभयामास	बिभयामासिव	बिभयामासिम	उ. पु.

णबादि (४)

बिभाय	बिभ्यतुः	बिभ्युः
बिभयिथ, बिभेथ	बिभ्यथुः	बिभ्य
बिभाय, बिभय	बिभ्यिव	बिभ्यिम

क्र्यादादि

भीयात्	भीयास्ताम्	भीयासुः	प्र० पु०
भीयाः	भीयास्तम्	भीयास्त	म० पु०
भीयासम्	भीयास्व	भीयास्म	उ० पु०

तादि

भेता	भेतारौ	भेतारः
भेतासि	भेतास्थः	भेतास्थ
भेतास्मि	भेतास्वः	भेतास्मः

स्यत्यादि

भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

स्यदादि

प्र० पु०	अभेष्यत्	अभेष्यताम्	अभेष्यन्
म० पु०	अभेष्यः	अभेष्यतम्	अभेष्यत
उ० पु०	अभेष्यम्	अभेष्याव	अभेष्याम

३४. डुदांनक्—दाने (उभयपदी) देना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
ददाति	दत्तः	ददति	प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
ददासि	दत्थः	दत्थ	म० पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
ददामि	दद्वः	दद्मः	उ० पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
तुबादि				**दिबादि**		
ददातु, दत्तात्	दत्ताम्	ददतु	प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
देहि, दत्तात्	दत्तम्	दत्त	म० पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
ददानि	ददाव	ददाम	उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म
ञादि				**णबादि**		
अदात्	अदाताम्	अदुः	प्र० पु०	ददौ	ददतुः	ददुः
अदाः	अदातम्	अदात	म० पु०	ददिथ, ददाथ	ददथुः	दद
अदाम्	अदाव	अदाम	उ० पु०	ददौ	ददिव	ददिम
क्यादादि				**तादि**		
देयात्	देयास्ताम्	देयासुः	प्र० पु०	दाता	दातारौ	दातारः
देयाः	देयास्तम्	देयास्त	म० पु०	दातासि	दातास्थः	दातास्थ
देयासम्	देयास्व	देयास्म	उ० पु०	दातास्मि	दातास्वः	दातास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	प्र० पु०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्
दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ	म० पु०	अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत
दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः	उ० पु०	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
दत्ते	ददाते	ददते	प्र० पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
दत्से	ददाथे	दद्ध्वे	म० पु०	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
ददे	दद्वहे	दद्महे	उ० पु०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
तुबादि				**दिबादि**		
दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्	प्र० पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत
दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्	म० पु०	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
ददै	ददावहै	ददामहै	उ० पु०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

द्यादि				**णबादि**		
अदित	अदिषाताम्	अदिषत	प्र० पु०	ददे	ददाते	ददिरे
अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिढ्वम्, अदिढ्वम्	म० पु०	ददिषे	ददाथे	ददिढ्वे
अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि	उ० पु०	ददे	ददिवहे	ददिमहे
क्र्यादि				**तादि**		
दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्	प्र० पु०	दाता	दातारौ	दातारः
दासीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्	म० पु०	दातासे	दातासाथे	दाताध्वे
दासीय	दासीवहि	दासीमहि	उ० पु०	दाताहे	दातास्वहे	दातास्महे
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते	प्र० पु०	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त
दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे	म० पु०	अदास्यथाः	अदास्येथाम्	अदास्यध्वम्
दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे	उ० पु०	अदास्ये	अदास्यावहि	अदास्यामहि

३५. नृतीच्—नर्तने (नाचना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति	प्र० पु०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ	म० पु०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः	उ० पु०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम
तुबादि				**दिबादि**		
नृत्यतु, नृत्यतात्	नृत्यताम्	नृत्यन्तु	प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
नृत्य, नृत्यतात्	नृत्यतम्	नृत्यत	म० पु०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम	उ० पु०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम
द्यादि				**णबादि**		
अनर्तीत्	अनर्तिष्टाम्	अनर्तिषुः	प्र० पु०	ननर्त	ननृततुः	ननृतुः
अनर्तीः	अनर्तिष्टम्	अनर्तिष्ट	म० पु०	ननर्तिथ	ननृतथुः	ननृत
अनर्तिषम्	अनर्तिष्व	अनर्तिष्म	उ० पु०	ननर्त	ननृतिव	ननृतिम
क्र्यादि				**तादि**		
नृत्यात्	नृत्यास्ताम्	नृत्यासुः	प्र० पु०	नर्तिता	नर्तितारौ	नर्तितारः
नृत्याः	नृत्यास्तम्	नृत्यास्त	म० पु०	नर्तितासि	नर्तितास्थः	नर्तितास्थ
नृत्यासम्	नृत्यास्व	नृत्यास्म	उ० पु०	नर्तितास्मि	नर्तितास्वः	नर्तितास्मः
स्यत्यादि (१)				**स्यत्यादि (२)**		
नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति	प्र० पु०	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ	म० पु०	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः	उ० पु०	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

स्यदादि (१)				स्यदादि (२)		
अनर्तिष्यत्	अनर्तिष्यताम्	अनर्तिष्यन्	प्र० पु०	अनर्त्स्यत्	अनर्त्स्यताम्	अनर्त्स्यन्
अनर्तिष्यः	अनर्तिष्यतम्	अनर्तिष्यत	म० पु०	अनर्त्स्यः	अनर्त्स्यतम्	अनर्त्स्यत
अनर्तिष्यम्	अनर्तिष्याव	अनर्तिष्याम	उ० पु०	अनर्त्स्यम्	अनर्त्स्याव	अनर्त्स्याम

३६. णशूच्—अदर्शने (उपलब्ध न होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति	प्र० पु०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ	म० पु०	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः	उ० पु०	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम
तुबादि				**दिबादि**		
नश्यतु, नश्यतात्	नश्यताम्	नश्यन्तु	प्र० पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
नश्य, नश्यतात्	नश्यतम्	नश्यत	म० पु०	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
नश्यानि	नश्याव	नश्याम	उ० पु०	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम
द्यादि (१)				**द्यादि (२)**		
अनेशत्	अनेशताम्	अनेशन्	प्र० पु०	अनशत्	अनशताम्	अनशन्
अनेशः	अनेशतम्	अनेशत	म० पु०	अनशः	अनशतम्	अनशत
अनेशम्	अनेशाव	अनेशाम	उ० पु०	अनशम्	अनशाव	अनशाम
णबादि				**क्यादादि**		
ननाश	नेशतुः	नेशुः	प्र० पु०	नश्यात्	नश्यास्ताम्	नश्यासुः
नेशिथ	नेशथुः	नेश	म० पु०	नश्याः	नश्यास्तम्	नश्यास्त
ननाश, ननश	नेशिव	नेशिम	उ० पु०	नश्यासम्	नश्यास्व	नश्यास्म
तादि (१)				**तादि (२)**		
नंष्टा	नंष्टारौ	नंष्टारः	प्र० पु०	नशिता	नशितारौ	नशितारः
नंष्टासि	नंष्टास्थः	नंष्टास्थ	म० पु०	नशितासि	नशितास्थः	नशितास्थ
नंष्टास्मि	नंष्टास्वः	नंष्टास्मः	उ० पु०	नशितास्मि	नशितास्वः	नशितास्मः
स्यत्यादि (१)				**स्यत्यादि (२)**		
नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति	प्र० पु०	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथः	नङ्क्ष्यथ	म० पु०	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः	उ० पु०	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

स्यदादि (१)				स्यदादि (२)		
अनङ्क्ष्यत्	अनङ्क्ष्यताम्	अनङ्क्ष्यन्	प्र. पु.	अनशिष्यत्	अनशिष्यताम्	अनशिष्यन्
अनङ्क्ष्यः	अनङ्क्ष्यतम्	अनङ्क्ष्यत	म. पु.	अनशिष्यः	अनशिष्यतम्	अनशिष्यत
अनङ्क्ष्यम्	अनङ्क्ष्याव	अनङ्क्ष्याम	उ. पु.	अनशिष्यम्	अनशिष्याव	अनशिष्याम

३७. बुधंङ्—ज्ञाने (जानना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
बुध्यते	बुध्येते	बुध्यन्ते	प्र० पु०	बुध्येत	बुध्येयाताम्	बुध्येरन्
बुध्यसे	बुध्येथे	बुध्यध्वे	म० पु०	बुध्येथाः	बुध्येयाथाम्	बुध्येध्वम्
बुध्ये	बुध्यावहे	बुध्यामहे	उ० पु०	बुध्येय	बुध्येवहि	बुध्येमहि
तुबादि				**दिबादि**		
बुध्यताम्	बुध्येताम्	बुध्यन्ताम्	प्र० पु०	अबुध्यत	अबुध्येताम्	अबुध्यन्त
बुध्यस्व	बुध्येथाम्	बुध्यध्वम्	म० पु०	अबुध्यथाः	अबुध्येथाम्	अबुध्यध्वम्
बुध्यै	बुध्यावहै	बुध्यामहै	उ० पु०	अबुध्ये	अबुध्यावहि	अबुध्यामहि
ष्यादि				**णबादि**		
अबोधि, अबुद्ध	अभुत्साताम्	अभुत्सत	प्र० पु०	बुबुधे	बुबुधाते	बुबुधिरे
अबुद्धाः	अभुत्साथाम्	अभुद्ध्वम्	म० पु०	बुबुधिषे	बुबुधाथे	बुबुधिध्वे
अभुत्सि	अभुत्स्वहि	अभुत्स्महि	उ० पु०	बुबुधे	बुबुधिवहे	बुबुधिमहे
क्यादादि				**तादि**		
भुत्सीष्ट	भुत्सीयास्ताम्	भुत्सीरन्	प्र० पु०	बोद्धा	बोद्धारौ	बोद्धारः
भुत्सीष्ठाः	भुत्सीयास्थाम्	भुत्सीध्वम्	म० पु०	बोद्धासे	बोद्धासाथे	बोद्धाध्वे
भुत्सीय	भुत्सीवहि	भुत्सीमहि	उ० पु०	बोद्धाहे	बोद्धास्वहे	बोद्धास्महे
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
भोत्स्यते	भोत्स्येते	भोत्स्यन्ते	प्र० पु०	अभोत्स्यत	अभोत्स्येताम्	अभोत्स्यन्त
भोत्स्यसे	भोत्स्येथे	भोत्स्यध्वे	म० पु०	अभोत्स्यथाः	अभोत्स्येथाम्	अभोत्स्यध्वम्
भोत्स्ये	भोत्स्यावहे	भोत्स्यामहे	उ० पु०	अभोत्स्ये	अभोत्स्यावहि	अभोत्स्यामहि

३८. मनंङ्च्—ज्ञाने (जानना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
मन्यते	मन्येते	मन्यन्ते	प्र० पु०	मन्येत	मन्येयाताम्	मन्येरन्
मन्यसे	मन्येथे	मन्यध्वे	म० पु०	मन्येथाः	मन्येयाथाम्	मन्येध्वम्
मन्ये	मन्यावहे	मन्यामहे	उ० पु०	मन्येय	मन्येवहि	मन्येमहि

तुबादि				दिबादि		
मन्यताम्	मन्येताम्	मन्यन्ताम्	प्र० पु०	अमन्यत	अमन्येताम्	अमन्यन्त
मन्यस्व	मन्येथाम्	मन्यध्वम्	म० पु०	अमन्यथाः	अमन्येथाम्	अमन्यध्वम्
मन्यै	मन्यावहै	मन्यामहै	उ० पु०	अमन्ये	अमन्यावहि	अमन्यामहि

द्यादि			णबादि		
अमंस्त	अमंसाताम्	अमंसत	प्र० पु०	मेने	मेनाते	मेनिरे
अमंस्थाः	अमंसाथाम्	अमन्दध्वम्, अमन्ध्वम्	म० पु०	मेनिषे	मेनाथे	मेनिध्वे
अमंसि	अमंस्वहि	अमंस्महि	उ० पु०	मेने	मेनिवहे	मेनिमहे

क्यादादि			तादि		
मंसीष्ट	मंसीयास्ताम्	मंसीरन्	प्र० पु०	मन्ता	मन्तारौ	मन्तारः
मंसीष्ठाः	मंसीयास्थाम्	मंसीध्वम्	म० पु०	मन्तासे	मन्तासाथे	मन्ताध्वे
मंसीय	मंसीवहि	मंसीमहि	उ० पु०	मन्ताहे	मन्तास्वहे	मन्तास्महे

स्यत्यादि			स्यदादि			
मंस्यते	मंस्येते	मंस्यन्ते	प्र० पु०	अमंस्यत	अमंस्येताम्	अमंस्यन्त
मंस्यसे	मंस्येथे	मंस्यध्वे	म० पु०	अमंस्यथाः	अमंस्येथाम्	अमंस्यध्वम्
मंस्ये	मंस्यावहे	मंस्यामहे	उ० पु०	अमंस्ये	अमंस्यावहि	अमंस्यामहि

३९. रञ्जंन्च्—रागे (उभयपदो) रंजित होना

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
रज्यति	रज्यतः	रज्यन्ति	प्र० पु०	रज्येत्	रज्येताम्	रज्येयुः
रज्यसि	रज्यथः	रज्यथ	म० पु०	रज्येः	रज्येतम्	रज्येत
रज्यामि	रज्यावः	रज्यामः	उ० पु०	रज्येयम्	रज्येव	रज्येम

तुबादि				दिबादि		
रज्यतु, रज्यतात्	रज्यताम्	रज्यन्तु	प्र० पु०	अरज्यत्	अरज्यताम्	अरज्यन्
रज्य, रज्यतात्	रज्यतम्	रज्यत	म० पु०	अरज्यः	अरज्यतम्	अरज्यत
रज्यानि	रज्याव	रज्याम	उ० पु०	अरज्यम्	अरज्याव	अरज्याम

द्यादि				णबादि		
अराङ्क्षीत्	अराङ्क्ताम्	अराङ्क्षुः	प्र० पु०	ररञ्ज	ररञ्जतुः	ररञ्जुः
अराङ्क्षीः	अराङ्क्तम्	अराङ्क्त	म० पु०	ररञ्जिथ, ररङ्क्थ	ररञ्जथुः	ररञ्ज
अराङ्क्षम्	अराङ्क्ष्व	अराङ्क्ष्म	उ० पु०	ररञ्ज	ररञ्जिव	ररञ्जिम

क्यादि				तादि		
रज्यात्	रज्यास्ताम्	रज्यासुः	प्र० पु०	रङ्क्ता	रङ्क्तारौ	रङ्क्तारः
रज्याः	रज्यास्तम्	रज्यास्त	म० पु०	रङ्क्तासि	रङ्क्तास्थः	रङ्क्तास्थ
रज्यासम्	रज्यास्व	रज्यास्म	उ० पु०	रङ्क्तास्मि	रङ्क्तास्वः	रङ्क्तास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
रङ्क्ष्यति	रङ्क्ष्यतः	रङ्क्ष्यन्ति	प्र० पु०	अरङ्क्ष्यत्	अरङ्क्ष्यताम्	अरङ्क्ष्यन्
रङ्क्ष्यसि	रङ्क्ष्यथः	रङ्क्ष्यथ	म० पु०	अरङ्क्ष्यः	अरङ्क्ष्यतम्	अरङ्क्ष्यत
रङ्क्ष्यामि	रङ्क्ष्यावः	रङ्क्ष्यामः	उ० पु०	अरङ्क्ष्यम्	अरङ्क्ष्याव	अरङ्क्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				यादि		
रज्यते	रज्येते	रज्यन्ते	प्र० पु०	रज्येत	रज्येताम्	रज्येरन्
रज्यसे	रज्येथे	रज्यध्वे	म० पु०	रज्येथाः	रज्येथाम्	रज्येध्वम्
रज्ये	रज्यावहे	रज्यामहे	उ० पु०	रज्येय	रज्येवहि	रज्येमहि

तुबादि				दिबादि		
रज्यताम्	रज्येताम्	रज्यन्ताम्	प्र० पु०	अरज्यत	अरज्येताम्	अरज्यन्त
रज्यस्व	रज्येथाम्	रज्यध्वम्	म० पु०	अरज्यथाः	अरज्येथाम्	अरज्यध्वम्
रज्यै	रज्यावहै	रज्यामहै	पु० उ०	अरज्ये	अरज्यावहि	अरज्यामहि

श्यादि			
अरङ्क्त	अरङ्क्षाताम्	अरङ्क्षत	प्र० पु०
अरङ्क्थाः	अरङ्क्षाथाम्	अरङ्ग्ढ्वम्, अरङ्ग्ध्वम्	म० पु०
अरङ्क्षि	अरङ्क्ष्वहि	अरङ्क्ष्महि	उ० पु०

णबादि				क्यादि		
ररञ्जे	ररञ्जाते	ररञ्जिरे	प्र० पु०	रङ्क्षीष्ट	रङ्क्षीयास्ताम्	रङ्क्षीरन्
ररञ्जिषे	ररञ्जाथे	ररञ्जिध्वे	म० पु०	रङ्क्षीष्ठाः	रङ्क्षीयास्थाम्	रङ्क्षीध्वम्
ररञ्जे	ररञ्जिवहे	ररञ्जिमहे	उ० पु०	रङ्क्षीय	रङ्क्षीवहि	रङ्क्षीमहि

तादि				स्यत्यादि		
रङ्क्ता	रङ्क्तारौ	रङ्क्तारः	प्र० पु०	रङ्क्ष्यते	रङ्क्ष्येते	रङ्क्ष्यन्ते
रङ्क्तासे	रङ्क्तासाथे	रङ्क्ताध्वे	म० पु०	रङ्क्ष्यसे	रङ्क्ष्येते	रङ्क्ष्यध्वे
रङ्क्ताहे	रङ्क्तास्वहे	रङ्क्तास्महे	उ० पु०	रङ्क्ष्ये	रङ्क्ष्यावहे	रङ्क्ष्यामहे

स्यदादि			
अरङ्क्ष्यत	अरङ्क्ष्येताम्	अरङ्क्ष्यन्त	प्र० पु०
अरङ्क्ष्यथाः	अरङ्क्ष्येथाम्	अरङ्क्ष्यध्वम्	म० पु०
अरङ्क्ष्ये	अरङ्क्ष्यावहि	अरङ्क्ष्यामहि	उ० पु०

४०. श्रुंत्—श्रवणे (सुनना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	प्र० पु०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	म० पु०	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
शृणोमि	शृण्वः, शृणुवः	शृण्मः, शृणुमः	उ० पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम
तुबादि						
शृणोतु, शृणुतात्		शृणुताम्	शृण्वन्तु	प्र० पु०		
शृणु, शृणुतात्		शृणुतम्	शृणुत	म० पु०		
शृणवानि		शृणवाव	शृणवाम	उ० पु०		
दिबादि						
अशृणोत्	अशृणुताम्		अशृण्वन्	प्र० पु०		
अशृणोः	अशृणुतम्		अशृणुत	म० पु०		
अशृणवम्	अशृणुव, अशृण्व		अशृणुम, अशृण्म	उ० पु०		
ष्यादि				**णबादि**		
अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः	प्र० पु०	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट	म० पु०	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म	उ० पु०	शुश्राव, शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम
क्यादादि				**तादि**		
श्रूयात्	श्रूयास्ताम्	श्रूयासुः	प्र० पु०	श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः
श्रूयाः	श्रूयास्तम्	श्रूयास्त	म० पु०	श्रोतासि	श्रोतास्थः	श्रोतास्थ
श्रूयासम्	श्रूयास्व	श्रूयास्म	उ० पु०	श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोतास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	प्र० पु०	अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्
श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ	म० पु०	अश्रोष्यः	अश्रोष्यतम्	अश्रोष्यत
श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः	उ० पु०	अश्रोष्यम्	अश्रोष्याव	अश्रोष्याम

४१. इं—गतौ (जाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
अयति	अयतः	अयन्ति	प्र० पु०	अयेत्	अयेताम्	अयेयुः
अयसि	अयथः	अयथ	म० पु०	अयेः	अयेतम्	अयेत
अयामि	अयावः	अयामः	उ० पु०	अयेयम्	अयेव	अयेम

तुबादि				दिबादि		
अयतु, अयतात्	अयताम्	अयन्तु	प्र० पु०	आयत्	आयताम्	आयन्
अय, अयतात्	अयतम्	अयत	म० पु०	आयः	आयतम्	आयत
अयानि	अयाव	अयाम	उ० पु०	आयम्	आयाव	आयाम

द्यादि				णबादि		
ऐषीत्	ऐष्टाम्	ऐषुः	प्र० पु०	इयाय	इयतुः	इयुः
ऐषीः	ऐष्टम्	ऐष्ट	म० पु०	इययिथ, इयेथ	इयथुः	इय
ऐषम्	ऐष्व	ऐष्म	उ० पु०	इयाय, इयय	इयिव	इयिम

क्र्यादादि				तादि		
ईयात्	ईयास्ताम्	ईयासुः	प्र० पु०	एता	एतारौ	एतारः
ईयाः	ईयास्तम्	ईयास्त	म० पु०	एतासि	एतास्थः	एयास्थ
ईयासम्	ईयास्व	ईयास्म	उ० पु०	एतास्मि	एतास्वः	एतास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति	प्र० पु०	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्
एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ	म० पु०	ऐष्यः	ऐष्यतम्	ऐष्यत
एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः	उ० पु०	ऐष्यम्	ऐष्याव	ऐष्याम

४२. प्रच्छंज् – ज्ञीप्सायाम् (पूछना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति	प्र० पु०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ	म० पु०	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः	उ० पु०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

तुबादि				दिबादि		
पृच्छतु, पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु	प्र० पु०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
पृच्छ, पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत	म० पु०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाव	उ० पु०	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

द्यादि				णबादि		
अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः	प्र० पु०	पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः
अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट	म० पु०	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ
अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म	उ० पु०	पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम

क्यादादि			तादि		
पृच्छ्यात्	पृच्छ्यास्ताम्	पृच्छ्यासुः	प्र० पु० प्रष्टा	प्रष्टारौ	प्रष्टारः
पृच्छ्याः	पृच्छ्यास्तम्	पृच्छ्यास्त	म० पु० प्रष्टासि	प्रष्टास्थः	प्रष्टास्थ
पृच्छ्यासम्	पृच्छ्यास्व	पृच्छ्यास्म	उ० पु० प्रष्टास्मि	प्रष्टास्वः	प्रष्टास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि		
प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति	प्र० पु० अप्रक्ष्यत्	अप्रक्ष्यताम्	अप्रक्ष्यन्
प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ	म० पु० अप्रक्ष्यः	अप्रक्ष्यतम्	अप्रक्ष्यत
प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः	उ० पु० अप्रक्ष्यम्	अप्रक्ष्याव	अप्रक्ष्याम

४३. मृङ्—प्राणत्यागे (मरना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते	प्र० पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे	म० पु०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे	उ० पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि
तुबादि				दिबादि		
म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्	प्र० पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्	म० पु०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै	उ० पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
द्यादि				णबादि		
अमृत	अमृषाताम्	अमृषत	प्र० पु०	ममार	मम्रतुः	मम्रुः
अमृथाः	अमृषाथाम्	अमृढ्वम्, अमृध्वम्	म० पु०	ममर्थ	मम्रथुः	मम्र
अमृषि	अमृष्वहि	अमृष्महि	उ० पु०	ममार, ममर	मम्रिव	मम्रिम

क्यादादि				तादि		
मृषीष्ट	मृषीयास्ताम्	मृषीरन्	प्र० पु०	मर्ता	मर्तारौ	मर्तारः
मृषीष्ठाः	मृषीयास्थाम्	मृषीढ्वम्	म० पु०	मर्तासि	मर्तास्थः	मर्तास्थ
मृषीय	मृषीवहि	मृषीमहि	उ० पु०	मर्तास्मि	मर्तास्वः	मर्तास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति	प्र० पु०	अमरिष्यत्	अमरिष्यताम्	अमरिष्यन्
मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ	म० पु०	अमरिष्यः	अमरिष्यतम्	अमरिष्यत
मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः	उ० पु०	अमरिष्यम्	अमरिष्याव	अमरिष्याम

४४. रुधृं न्र्– आवरणे (उभयपदी) रोकना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	प्र० पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	म० पु०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
रुणद्धि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	उ० पु०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

तुबादि

रुणद्धु, रुन्द्धात्	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु	प्र० पु०
रुन्द्धि, रुन्द्धात्	रुन्द्धम्	रुन्द्ध	म० पु०
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	उ० पु०

दिबादि

अरुणत्, अरुणद्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	प्र० पु०
अरुणः, अरुणत्, अरुणद्	अरुन्धम्	अरुन्द्ध	म० पु०
अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	उ० पु०

द्यादि (१)				**द्यादि (२)**		
अरुधत्	अरुधताम्	अरुधन्	प्र० पु०	अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सुः
अरुधः	अरुधतम्	अरुधत	म० पु०	अरौत्सीः	अरौद्धम्	अरौद्ध
अरुधम्	अरुधाव	अरुधाम	उ० पु०	अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म

णबादि				**क्र्यादादि**		
रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः	प्र० पु०	रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासुः
रुरोधिथ	रुरुधथुः	रुरुध	म० पु०	रुध्याः	रुध्यास्तम्	रुध्यास्त
रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम	उ० पु०	रुध्यासम्	रुध्यास्व	रुध्यास्म

तादि				**स्यत्यादि**		
रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः	प्र० पु०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
रोद्धासि	रोद्धास्थः	रोद्धास्थ	म० पु०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
रोद्धास्मि	रोद्धास्वः	रोद्धास्मः	उ० पु०	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

स्यदादि

अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	अरोत्स्यन्	प्र० पु०
अरोत्स्यः	अरोत्स्यतम्	अरोत्स्यत	म० पु०
अरोत्स्यम्	अरोत्स्याव	अरोत्स्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि				यादादि		
रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते	प्र० पु०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्द्ध्वे	म० पु०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे	उ० पु०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

तुबादि				दिबादि		
रुन्द्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्	प्र० पु०	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्द्ध्वम्	म० पु०	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्द्ध्वम्
रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै	उ० पु०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

द्यादि				णवादि		
अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत	प्र० पु०	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुद्ध्वम्	म० पु०	रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिध्वे
अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि	उ० पु०	रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे

क्यादादि				तादि		
रुत्सीष्ट	रुत्सीयास्ताम्	रुत्सीरन्	प्र० पु०	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
रुत्सीष्ठाः	रुत्सीयास्थाम्	रुत्सीध्वम्	म० पु०	रोद्धासे	रोद्धासाथे	रोद्धाध्वे
रुत्सीय	रुत्सीवहि	रुत्सीमहि	उ० पु०	रोद्धाहे	रोद्धास्वहे	रोद्धास्महे

स्यत्यादि				स्यदादि		
रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते	प्र० पु०	अरोत्स्यत	अरोत्स्येताम्	अरोत्स्यन्त
रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे	म० पु०	अरोत्स्यथाः	अरोत्स्येथाम्	अरोत्स्यध्वम्
रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे	उ० पु०	अरोत्स्ये	अरोत्स्यावहि	अरोत्स्यामहि

४५. भिद् ंन्र्—विदारणे (उभयपदी) भेदन करना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि			
भिनत्ति	भिन्तः	भिन्दति	प्र० पु०	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्युः	
भिनत्सि	भिन्त्थः	भिन्त्थ	म० पु०	भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात	
भिनद्मि	भिन्द्वः	भिन्द्मः	उ० पु०	भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम	

तुबादि				
भिनत्तु, भिन्तात्	भिन्ताम्	भिन्दन्तु	प्र० पु०	
भिन्द्धि, भिन्तात्	भिन्तम्	भिन्त	म० पु०	
भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम	उ० पु०	

दिवादि

अभिनत्, अभिनद्	अभिन्ताम्	अभिन्दन्	प्र० पु०
अभिनः, अभिनत्, अभिनद्	अभिन्तम्	अभिन्त	म० पु०
अभिनदम्	अभिन्द्व	अभिन्द्म	उ० पु०

द्यादि (१)

अभिदत्	अभिदताम्	अभिदन्	प्र० पु०
अभिदः	अभिदतम्	अभिदत	म० पु०
अभिदम्	अभिदाव	अभिदाम	उ० पु०

द्यादि (२)

अभैत्सीत्	अभैत्ताम्	अभैत्सुः	प्र० पु०
अभैत्सीः	अभैत्तम्	अभैत्त	म० पु०
अभैत्सम्	अभैत्सव	अभैत्स्म	उ० पु०

णबादि

बिभेद	बिभिदतुः	बिभिदुः	प्र० पु०
बिभेदिथ	बिभिदथुः	बिभिद	म० पु०
बिभेद	बिभिदिव	बिभिदिम	उ० पु०

क्यादादि

भिद्यात्	भिद्यास्ताम्	भिद्यासुः	प्र० पु०
भिद्याः	भिद्यास्तम्	भिद्यास्त	म० पु०
भिद्यासम्	भिद्यास्व	भिद्यास्म	उ० पु०

तादि

भेत्ता	भेत्तारौ	भेत्तारः	प्र० पु०
भेत्तासि	भेत्तास्थः	भेत्तास्थ	म० पु०
भेत्तास्मि	भेत्तास्वः	भेत्तास्मः	उ० पु०

स्यत्यादि

भेत्स्यति	भेत्स्यतः	भेत्स्यन्ति	प्र० पु०
भेत्स्यसि	भेत्स्यथः	भेत्स्यथ	म० पु०
भेत्स्यामि	भेत्स्यावः	भेत्स्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अभेत्स्यत्	अभेत्स्यताम्	अभेत्स्यन्	प्र० पु०
अभेत्स्यः	अभेत्स्यतम्	अभेत्स्यत	म० पु०
अभेत्स्यम्	अभेत्स्याव	अभेत्स्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि

भिन्ते	भिन्दाते	भिन्दते	प्र० पु०
भिन्त्से	भिन्दाथे	भिन्द्ध्वे	म० पु०
भिन्दे	भिन्द्वहे	भिन्द्महे	उ० पु०

यादादि

भिन्दीत	भिन्दीयाताम्	भिन्दीरन्	प्र० पु०
भिन्दीथाः	भिन्दीयाथाम्	भिन्दीध्वम्	म० पु०
भिन्दीय	भिन्दीवहि	भिन्दीमहि	उ० पु०

तुबादि

भिन्ताम्	भिन्दाताम्	भिन्दताम्	प्र० पु०
भिन्त्स्व	भिन्दाथाम्	भिन्द्ध्वम्	म० पु०
भिनदै	भिनदावहै	भिनदामहै	उ० पु०

दिवादि

अभिन्त	अभिन्दाताम्	अभिन्दत	प्र० पु०
अभिन्त्थाः	अभिन्दाथाम्	अभिन्द्ध्वम्	म० पु०
अभिन्दि	अभिन्द्वहि	अभिन्द्महि	उ० पु०

द्यादि

अभित्त	अभित्साताम्	अभित्सत	प्र० पु०
अभित्थाः	अभित्साथाम्	अभिद्ध्वम्	म० पु०
अभित्सि	अभित्स्वहि	अभित्स्महि	उ० पु०

णबादि

बिभिदे	बिभिदाते	बिभिदिरे	प्र० पु०
बिभिदिषे	बिभिदाथे	बिभिदिध्वे	म० पु०
बिभिदे	बिभिदिवहे	बिभिदिमहे	उ० पु०

क्यादादि				तादि		
भित्सीष्ट	भित्सीयास्ताम्	भित्सीरन्	प्र० पु०	भेत्ता	भेत्तारौ	भेत्तारः
भित्सीष्ठाः	भित्सीयास्थाम्	भित्सीध्वम्	म० पु०	भेत्तासे	भेत्तासाथे	भेत्ताध्वे
भित्सीय	भित्सीवहि	भित्सीमहि	उ० पु०	भेत्ताहे	भेत्तास्वहे	भेत्तास्महे

स्यत्यादि				स्यदादि		
भेत्स्यते	भेत्स्येते	भेत्स्यन्ते	प्र० पु०	अभेत्स्यत	अभेत्स्येताम्	अभेत्स्यन्त
भेत्स्यसे	भेत्स्येथे	भेत्स्यध्वे	म० पु०	अभेत्स्यथाः	अभेत्स्येथाम्	अभेत्स्यध्वम्
भेत्स्ये	भेत्स्यावहे	भेत्स्यामहे	उ० पु०	अभेत्स्ये	अभेत्स्यावहि	अभेत्स्यामहि

४६. पिष्लृं ऱ्—संचूर्णने (पीसना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
पिनष्टि	पिंष्टः	पिंषन्ति	प्र० पु०	पिंष्यात्	पिंष्याताम्	पिंष्युः
पिनक्षि	पिंष्ठः	पिंष्ठ	म० पु०	पिंष्याः	पिंष्यातम्	पिंष्यात
पिनष्मि	पिंष्वः	पिंष्मः	उ० पु०	पिंष्याम्	पिंष्याव	पिंष्याम

तुबादि			
पिनष्टु, पिंष्टात्	पिंष्टाम्	पिंषन्तु	प्र० पु०
पिण्ढि, पिंष्टात्	पिंष्टम्	पिंष्ट	म० पु०
पिनषाणि	पिनषाव	पिनषाम	उ० पु०

दिवादि			
अपिनट्, अपिनड्	अपिंष्टाम्	अपिंषन्	प्र० पु०
अपिनट्, अपिनड्	अपिंष्टम्	अपिंष्ट	म० पु०
अपिनषम्	अपिंष्व	अपिंष्म	उ० पु०

द्यादि				णबादि		
अपिषत्	अपिषताम्	अपिषन्	प्र० पु०	पिपेष	पिपिषतुः	पिपिषुः
अपिषः	अपिषतम्	अपिषत	म० पु०	पिपेषिथ	पिपिषथुः	पिपिष
अपिषम्	अपिषाव	अपिषाम	उ० पु०	पिपेष	पिपिषिव	पिपिषिम

क्यादादि				तादि		
पिष्यात्	पिष्यास्ताम्	पिष्यासुः	प्र० पु०	पेष्टा	पेष्टारौ	पेष्टारः
पिष्याः	पिष्यास्तम्	पिष्यास्त	म० पु०	पेष्टासि	पेष्टास्थः	पेष्टास्थ
पिष्यासम्	पिष्यास्व	पिष्यास्म	उ० पु०	पेष्टास्मि	पेष्टास्वः	पेष्टास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
पेक्ष्यति	पेक्ष्यतः	पेक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अपेक्ष्यत्	अपेक्ष्यताम्	अपेक्ष्यन्
पेक्ष्यसि	पेक्ष्यथः	पेक्ष्यथ	म० पु०	अपेक्ष्यः	अपेक्ष्यतम्	अपेक्ष्यत
पेक्ष्यामि	पेक्ष्यावः	पेक्ष्यामः	उ० पु०	अपेक्ष्यम्	अपेक्ष्याव	अपेक्ष्याम

४७. तनुन्व्– विस्तारे (उभयपदी) विस्तार करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
तनोषि	तनुथः	तनुथ	म० पु०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
तनोमि	तनुवः, तन्वः	तनुमः, तन्मः	उ० पु०	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

तुबादि

तनोतु, तनुतात्	तनुताम्	तन्वन्तु	प्र० पु०
तनु, तनुतात्	तनुतम्	तनुत	म० पु०
तनवानि	तनवाव	तनवाम	उ० पु०

दिबादि

अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	प्र० पु०
अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	म० पु०
अतनवम्	अतन्व, अतनुव	अतन्म, अतनुम	उ० पु०

द्यादि (१)				**द्यादि (२)**		
अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः	प्र० पु०	अतनीत्	अतनिष्टाम्	अतनिषुः
अतानीः	अतानिष्टम्	अतानिष्ट	म० पु०	अतनीः	अतनिष्टम्	अतनिष्ट
अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म	उ० पु०	अतनिषम्	अतनिष्व	अतनिष्म
णबादि				**क्यादादि**		
ततान	तेनतुः	तेनुः	प्र० पु०	तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः
तेनिथ	तेनथुः	तेन	म० पु०	तन्याः	तन्यास्तम्	तन्यास्त
ततान, ततन	तेनिव	तेनिम	उ० पु०	तन्यासम्	तन्यास्व	तन्यास्म

तादि				**स्यत्यादि**		
तनिता	तनितारौ	तनितारः	प्र० पु०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
तनितासि	तनितास्थः	तनितास्थ	म० पु०	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
तनितास्मि	तनितास्वः	तनितास्मः	उ० पु०	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

स्यदादि

अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्	प्र० पु०
अतनिष्यः	अतनिष्यतम्	अतनिष्यत	म० पु०
अतनिष्यम्	अतनिष्याव	अतनिष्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि **यादादि**

तनुते	तन्वाते	तन्वते	प्र० पु०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे	म० पु०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
तन्वे	तन्वहे, तनुवहे	तन्महे, तनुमहे	उ० पु०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

तुबादि

तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्	प्र० पु०
तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्	म० पु०
तनवै	तनवावहै	तनवामहै	उ० पु०

दिबादि

अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत	प्र० पु०
अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्	म० पु०
अतन्वि	अतन्वहि, अतनुवहि	अतन्महि, अतनुमहि	उ० पु०

द्यादि

अतत, अतनिष्ट	अतनिषाताम्	अतनिषत	प्र० पु०
अतथाः, अतनिष्ठाः	अतनिषाथाम्	अतनिध्वम्, अतनिढ्वम्	म० पु०
अतनिषि	अतनिष्वहि	अतनिष्महि	उ० पु०

णबादि **क्यादादि**

तेने	तेनाते	तेनिरे	प्र० पु०	तनिषीष्ट	तनिषीयास्ताम्	तनिषीरन्
तेनिषे	तेनाथे	तेनिध्वे	म० पु०	तनिषीष्ठाः	तनिषीयास्थाम्	तनिषीध्वम्
तेने	तेनिवहे	तेनिमहे	उ० पु०	तनिषीय	तनिषीवहि	तनिषीमहि

तादि **स्यत्यादि**

तनिता	तनितारौ	तनितारः	प्र० पु०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
तनितासे	तनितासाथे	तनिताध्वे	म० पु०	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
तनिताहे	तनितास्वहे	तनितास्महे	उ० पु०	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

स्यदादि

अतनिष्यत	अतनिष्येताम्	अतनिष्यन्त	प्र० पु०
अतनिष्यथाः	अतनिष्येथाम्	अतनिष्यध्वम्	म० पु०
अतनिष्ये	अतनिष्यावहि	अतनिष्यामहि	उ० पु०

४८. ज्ञांश्—अवबोधने (जानना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
जानाति	जानीतः	जानन्ति	प्र० पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
जानासि	जानीथः	जानीथ	म० पु०	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
जानामि	जानीवः	जानीमः	उ० पु०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम
तुबादि				**दिबादि**		
जानातु, जानीतात्		जानीताम्	जानन्तु	प्र० पु०	अजानीताम्	अजानन्
जानीहि, जानीतात्		जानीतम्	जानीत	म० पु०	अजानीतम्	अजानीत
जानानि		जानाव	जानाम	उ० पु०	अजानीव	अजानीम
द्यादि				**णबादि**		
अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः	प्र० पु०	जज्ञौ	जज्ञतुः	जज्ञुः
अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट	म० पु०	जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञथुः	जज्ञ
अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म	उ० पु०	जज्ञौ	जज्ञिव	जज्ञिम
क्यादादि (१)				**क्यादादि (२)**		
ज्ञायात्	ज्ञायास्ताम्	ज्ञायासुः	प्र० पु०	ज्ञेयात्	ज्ञेयास्ताम्	ज्ञेयासुः
ज्ञायाः	ज्ञायास्तम्	ज्ञायास्त	म० पु०	ज्ञेयाः	ज्ञेयास्तम्	ज्ञेयास्त
ज्ञायासम्	ज्ञायास्व	ज्ञायास्म	उ० पु०	ज्ञेयासम्	ज्ञेयास्व	ज्ञेयास्म
तादि				**स्यत्यादि**		
ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः	प्र० पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
ज्ञातासि	ज्ञातास्थः	ज्ञातास्थ	म० पु०	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
ज्ञातास्मि	ज्ञातास्वः	ज्ञातास्मः	उ० पु०	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः
स्यदादि						
अज्ञास्यत्	अज्ञास्यताम्	अज्ञास्यन्	प्र० पु०			
अज्ञास्यः	अज्ञास्यतम्	अज्ञास्यत	म० पु०			
अज्ञास्यम्	अज्ञास्याव	अज्ञास्याम	उ० पु०			

४९. ग्रहन्श् – उपादाने (उभयपदी) ग्रहण करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति	प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ	म० पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः	उ० पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

तुबादि **दिवादि**

गृह्णातु,	गृह्णीतात्	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु	प्र० पु० अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
गृहाण,	गृह्णीतात्	गृह्णीतम्	गृह्णीत	म० पु० अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
गृह्णानि		गृह्णाव	गृह्णाम	उ० पु० अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

स्वादि **णबादि**

अग्रहीत्	अग्रहिष्टाम्	अग्रहिषुः	प्र० पु० जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः
अग्रहीः	अग्रहिष्टम्	अग्रहिष्ट	म० पु० जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह
अग्रहिषम्	अग्रहिष्व	अग्रहिष्म	उ० पु० जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम

क्यादादि **तादि**

गृह्यात्	गृह्यास्ताम्	गृह्यासुः	प्र० पु० ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः
गृह्याः	गृह्यास्तम्	गृह्यास्त	म० पु० ग्रहीतासि	ग्रहीतास्थः	ग्रहीतास्थ
गृह्यासम्	गृह्यास्व	गृह्यास्म	उ० पु० ग्रहीतास्मि	ग्रहीतास्वः	ग्रहीतास्मः

स्त्यादि **स्यदादि**

ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति	प्र० पु० अग्रहीष्यत्	अग्रहीष्यताम्	अग्रहीष्यन्
ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ	म० पु० अग्रहीष्यः	अग्रहीष्यतम्	अग्रहीष्यत
ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः	उ० पु० अग्रहीष्यम्	अग्रहीष्याव	अग्रहीष्याम

आत्मनेपद

तिबादि **यादादि**

गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते	प्र० पु० गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे	म० पु० गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे	उ० पु० गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

तुबादि **दिवादि**

गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्	प्र० पु० अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्	म० पु० अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै	उ० पु० अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

स्वादि **णबादि**

अग्रहीष्ट	अग्रहीषाताम्	अग्रहीषत	प्र० पु० जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
अग्रहीष्ठाः	अग्रहीषाथाम्	अग्रहीध्वम्, अग्रहीढ्वम्	म. पु० जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिध्वे
अग्रहीषि	अग्रहीष्वहि	अग्रहीष्महि	उ० पु० जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे

क्यादादि **तादि**

ग्रहीषीष्ट	ग्रहीषीयास्ताम्	ग्रहीषीरन्	प्र० पु० ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः
ग्रहीषीष्ठाः	ग्रहीषीयास्थाम्	ग्रहीषीध्वम्	म० पु० ग्रहीतासे	ग्रहीतासाथे	ग्रहीताध्वे
ग्रहीषि	ग्रहीष्वहि	ग्रहीष्महि	उ० पु० ग्रहीताहे	ग्रहीतास्वहे	ग्रहीतास्महे

स्यत्यादि				स्यदादि		
ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते	प्र० पु०	अग्रहीष्यत	अग्रहीष्येताम्	अग्रहीष्यन्त
ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे	म० पु०	अग्रहीष्यथाः	अग्रहीष्येथाम्	अग्रहीष्यध्वम्
ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे	उ० पु०	अग्रहीष्ये	अग्रहीष्यावहि	अग्रहीष्यामहि

५०. चुरण्—स्तेये (चुराना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	उ० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

तुबादि

चोरयतु, चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु	प्र० पु०
चोरय, चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत	म० पु०
चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	उ० पु०

दिबादि				द्यादि		
अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	प्र० पु०	अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्
अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत	म० पु०	अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत
अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	उ० पु०	अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम

णबादि (१)

चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र	म० पु०
चोरयाञ्चकार, चोरयाञ्चकर	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

चोरयाम्बभूव	चोरयाम्बभूवतुः	चोरयाम्बभूवुः	प्र० पु०
चोरयाम्बभूविथ	चोरयाम्बभूबथुः	चोरयाम्बभूव	म० पु०
चोरयाम्बभूव	चोरयाम्बभूविव	चोरयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

चोरयामास	चोरयामासतुः	चोरयामासुः	प्र० पु०
चोरयामासिथ	चोरयामासथुः	चोरयामास	म० पु०
चोरयामास	चोरयामासिव	चोरयामासिम	उ० पु०

क्यादादि				तादि		
चोर्यात्	चोर्यास्ताम्	चोर्यासुः	प्र० पु०	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः
चोर्याः	चोर्यास्तम्	चोर्यास्त	म० पु०	चोरयितासि	चोरयितास्थः	चोरयितास्थ
चोर्यासम्	चोर्यास्व	चोर्यास्म	उ. पु०	चोरयितास्मि	चोरयितास्वः	चोरयितास्मः

स्यत्यादि

चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति	प्र० पु०
चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ	म० पु०
चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	अचोरयिष्यन्	प्र० पु०
अचोरयिष्यः	अचोरयिष्यतम्	अचोरयिष्यत	म० पु०
अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम	उ० पु०

५१. अज – क्षेपणे च (चकाराद् गतौ) फेंकना और जाना

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
अजति	अजतः	अजन्ति	प्र० पु०	अजेत्	अजेताम्	अजेयुः
अजसि	अजथः	अजथ	म० पु०	अजेः	अजेतम्	अजेत
अजामि	अजावः	अजामः	उ० पु०	अजेयम्	अजेव	अजेम
तुबादि				**दिबादि**		
अजतु, अजतात्	अजताम्	अजन्तु	प्र० पु०	आजत्	आजताम्	आजन्
अज, अजतात्	अजतम्	अजत	म० पु०	आजः	आजतम्	आजत
अजानि	अजाव	अजाम	उ० पु०	आजम्	आजाव	आजाम

ह्यादि

अवैषीत्	अवैष्टाम्	अवैषुः	प्र० पु०
अवैषीः	अवैष्टम्	अवैष्ट	म० पु०
अवैषम्	अवैष्व	अवैष्म	उ० पु०

णव्यादि

विवाय	विव्यतुः	विव्युः	प्र० पु०
विवयिथ, विवेथ, आजिथ	विव्यथुः	विव्य	म० पु०
विवाय, विवय	विव्यिव, आजिव	विव्यिम, आजिम	उ०पु०

क्यादादि **तादि (१)**

वीयात् वीयास्ताम् वीयासुः प्र० पु० अजिता अजितारौ अजितारः
वीयाः वीयास्तम् वीयास्त म० पु० अजितासि अजितास्थः अजितास्थ
वीयासम् वीयास्व वीयास्म उ० पु० अजितास्मि अजितास्वः अजितास्मः

तादि (२) **स्यत्यादि (१)**

वेता वेतारौ वेतारः प्र० पु० अजिष्यति अजिष्यतः अजिष्यन्ति
वेतासि वेतास्थः वेतास्थ म० पु० अजिष्यसि अजिष्यथः अजिष्यथ
वेतास्मि वेतास्वः वेतास्मः उ० पु० अजिष्यामि अजिष्यावः अजिष्यामः

स्यत्यादि (२) **स्यदादि**

वेष्यति वेष्यतः वेष्यन्ति प्र० पु० आजिष्यत् आजिष्यताम् आजिष्यन्
वेष्यसि वेष्यथः वेष्यथ म० पु० आजिष्यः आजिष्यतम् आजिष्यत
वेष्यामि वेष्यावः वेष्यामः उ० पु० आजिष्यम् आजिष्याव आजिष्याम

५२. वज—गतौ (जाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
वजति	वजतः	वजन्ति	प्र० पु०	वजेत्	वजेताम्	वजेयुः
वजसि	वजथः	वजथ	म० पु०	वजेः	वजेतम्	वजेत
वजामि	वजावः	वजामः	उ० पु०	वजेयम्	वजेव	वजेम
तुबादि				**दिबादि**		
वजतु, वजतात्	वजताम्	वजन्तु	प्र० पु०	अवजत्	अवजताम्	अवजन्
वज, वजतात्	वजतम्	वजत	म० पु०	अवजः	अवजतम्	अवजत
वजानि	वजाव	वजाम	उ० पु०	अवजम्	अवजाव	अवजाम
द्यादि (१)				**द्यादि (२)**		
अवाजीत्	अवाजिष्टाम्	अवाजिषुः	प्र० पु०	अवजीत्	अवजिष्टाम्	अवजिषुः
अवाजीः	अवाजिष्टम्	अवाजिष्ट	म० पु०	अवजीः	अवजिष्टम्	अवजिष्ट
अवाजिषम्	अवाजिष्व	अवाजिष्म	उ० पु०	अवजिषम्	अवजिष्व	अवजिष्म
णबादि				**क्यादादि**		
ववाज	ववजतुः	ववजुः	प्र० पु०	वज्यात्	वज्यास्ताम्	वज्यासुः
ववजिथ	ववजथुः	ववज	म० पु०	वज्याः	वज्यास्तम्	वज्यास्त
ववाज, ववज	ववजिव	ववजिम	उ० पु०	वज्यासम्	वज्यास्व	वज्यास्म
तादि				**स्यत्यादि**		
वजिता	वजितारौ	वजितारः	प्र० पु०	वजिष्यति	वजिष्यतः	वजिष्यन्ति
वजितासि	वजितास्थः	वजितास्थ	म० पु०	वजिष्यसि	वजिष्यथः	वजिष्यथ
वजितास्मि	वजितास्वः	वजितास्मः	उ० पु०	वजिष्यामि	वजिष्यावः	वजिष्यामः

स्यदादि

अवजिष्यत्	अवजिष्यताम्	अवजिष्यन्	प्र० पु०
अवजिष्यः	अवजिष्यतम्	अवजिष्यत	म० पु०
अवजिष्यम्	अवजिष्याव	अवजिष्याम	उ० पु०

५३. व्रज—गतौ (जाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
व्रजति	व्रजतः	व्रजन्ति	प्र० पु०	व्रजेत्	व्रजेताम्	व्रजेयुः
व्रजसि	व्रजथः	व्रजथ	म० पु०	व्रजेः	व्रजेतम्	व्रजेत
व्रजामि	व्रजावः	व्रजामः	उ० पु०	व्रजेयम्	व्रजेव	व्रजेम
तुबादि				**दिबादि**		
व्रजतु, व्रजतात्	व्रजताम्	व्रजन्तु	प्र० पु०	अव्रजत्	अव्रजताम्	अव्रजन्
व्रज, व्रजतात्	व्रजतम्	व्रजत	म० पु०	अव्रजः	अव्रजतम्	अव्रजत
व्रजानि	व्रजाव	व्रजाम	उ० पु०	अव्रजम्	अव्रजाव	अव्रजाम
ण्यादि				**णबादि**		
अव्राजीत्	अव्राजिष्टाम्	अव्राजिषुः	प्र० पु०	वव्राज	वव्रजतुः	वव्रजुः
अव्राजीः	अव्राजिष्टम्	अव्राजिष्ट	म० पु०	वव्रजिथ	वव्रजथुः	वव्रज
अव्राजिषम्	अव्राजिष्व	अव्राजिष्म	उ० पु०	वव्राज	वव्रजिव	वव्रजिम
क्यादादि				**तादि**		
व्रज्यात्	व्रज्यास्ताम्	व्रज्यासुः	प्र० पु०	व्रजिता	व्रजितारौ	व्रजितारः
व्रज्याः	व्रज्यास्तम्	व्रज्यास्त	म० पु०	व्रजितासि	व्रजितास्थः	व्रजितास्थ
व्रज्यासम्	व्रज्यास्व	व्रज्यास्म	उ० पु०	व्रजितास्मि	व्रजितास्वः	व्रजितास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
व्रजिष्यति	व्रजिष्यतः	व्रजिष्यन्ति	प्र० पु०	अव्रजिष्यत्	अव्रजिष्यताम्	अव्रजिष्यन्
व्रजिष्यसि	व्रजिष्यथः	व्रजिष्यथ	म० पु०	अव्रजिष्यः	अव्रजिष्यतम्	अव्रजिष्यत
व्रजिष्यामि	व्रजिष्यावः	व्रजिष्यामः	उ० पु०	अव्रजिष्यम्	अव्रजिष्याव	अव्रजिष्याम

५४. उषु—दाहे (जलना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
ओषति	ओषतः	ओषन्ति	प्र० पु०	ओषेत्	ओषेताम्	ओषेयुः
ओषसि	ओषथः	ओषथ	म० पु०	ओषेः	ओषेतम्	ओषेत
ओषामि	ओषावः	ओषामः	उ० पु०	ओषेयम्	ओषेव	ओषेम

तुवादि **दिवादि**

ओषतु, ओषतात्	ओषताम्	ओषन्तु	प्र० पु०	औषत्	औषताम्	औषन्
ओष, ओषतात्	ओषतम्	ओषत	म० पु०	औषः	औषतम्	औषत
ओषाणि	ओषाव	ओषाम	उ० पु०	औषम्	औषाव	औषाम

द्यादि

औषीत्	औषिष्टाम्	औषिषुः	प्र० पु०
औषीः	औषिष्टम्	औषिष्ट	म० पु०
औषिषम्	औषिष्व	औषिष्म	उ० पु०

णबादि (१)

ओषाञ्चकार	ओषाञ्चक्रतुः	ओषाञ्चक्रुः	प्र० पु०
ओषाञ्चकर्थ	ओषाञ्चक्रथुः	ओषाञ्चक्र	म० पु०
ओषाञ्चकार, ओषाञ्चकर	ओषाञ्चकृव	ओषाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

ओषाम्बभूव	ओषाम्बभूवतुः	ओषाम्बभूवुः	प्र० पु०
ओषाम्बभूविथ	ओषाम्बभूवथुः	ओषाम्बभूव	म० पु०
ओषाम्बभूव	ओषाम्बभूविव	ओषाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

ओषामास	ओषामासतुः	ओषामासुः	प्र० पु०
ओषामासिथ	ओषामासथुः	ओषामास	म० पु०
ओषामास	ओषामासिव	ओषामासिथ	उ० पु०

णबादि (४) **क्यादादि**

उवोष	ऊषतुः	ऊषुः	प्र० पु०	उष्यात्	उष्यास्ताम्	उष्यासुः
उवोषिथ	ऊषथुः	ऊष	म० पु०	उष्याः	उष्तास्तम्	उष्यास्त
उवोष	ऊषिव	ऊषिम	उ० पु०	उष्यासम्	उष्यास्व	उष्यास्म

तादि **स्यत्यादि**

ओषिता	ओषितारौ	ओषितारः	प्र० पु०	ओषिष्यति	ओषिष्यतः	ओषिष्यन्ति
ओषितासि	ओषितास्थः	ओषितास्थ	म० पु०	ओषिष्यसि	ओषिष्यथः	ओषिष्यथ
ओषितास्मि	ओषितास्वः	ओषितास्मः	उ० पु०	ओषिष्यामि	ओषिष्यावः	ओषिष्यामः

स्यदादि

औषिष्यत्	औषिष्यताम्	औषिष्यन्	प्र० पु०
औषिष्यः	औषिष्यतम्	औषिष्यत	म० पु०
औषिष्यम्	औषिष्याव	औषिष्याम	उ० पु०

५५. लुञ्च्—अपनयने (दूर करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
लुञ्चति	लुञ्चतः	लुञ्चन्ति	प्र० पु०	लुञ्चेत्	लुञ्चेताम्	लुञ्चेयुः
लुञ्चसि	लुञ्चथः	लुञ्चथ	म० पु०	लुञ्चेः	लुञ्चेतम्	लुञ्चेत
लुञ्चामि	लुञ्चावः	लुञ्चामः	उ० पु०	लुञ्चेयम्	लुञ्चेव	लुञ्चेम
तुबादि				**दिबादि**		
लुञ्चतु, लुञ्चतात्		लुञ्चताम्	लुञ्चन्तु	प्र० पु०	अलुञ्चत्	अलुञ्चताम् अलुञ्चन्
लुञ्च, लुञ्चतात्		लुञ्चतम्	लुञ्चत	म० पु०	अलुञ्चः	अलुञ्चतम् अलुञ्चत
लुञ्चानि		लुञ्चाव	लुञ्चाम	उ० पु०	अलुञ्चम्	अलुञ्चाव अलुञ्चाम
ष्ठादि				**णबादि**		
अलुञ्चीत्	अलुञ्चिष्टाम्	अलुञ्चिषुः	प्र० पु०	लुलुञ्च	लुलुञ्चतुः	लुलुञ्चुः
अलुञ्चीः	अलुञ्चिष्टम्	अलुञ्चिष्ट	म० पु०	लुलुञ्चिथ	लुलुञ्चथुः	लुलुञ्च
अलुञ्चिषम्	अलुञ्चिष्व	अलुञ्चिष्म	उ० पु०	लुलुञ्च	लुलुञ्चिव	लुलुञ्चिम
क्यादादि				**तादि**		
लुच्यात्	लुच्यास्ताम्	लुच्यासुः	प्र० पु०	लुञ्चिता	लुञ्चितारौ	लुञ्चितारः
लुच्याः	लुच्यास्तम्	लुच्यास्त	म० पु०	लुञ्चितासि	लुञ्चितास्थः	लुञ्चितास्थ
लुच्यासम्	लुच्यास्व	लुच्यास्म	उ० पु०	लुञ्चितास्मि	लुञ्चितास्वः	लुञ्चितास्मः

स्यत्यादि

लुञ्चिष्यति	लुञ्चिष्यतः	लुञ्चिष्यन्ति	प्र० पु०
लुञ्चिष्यसि	लुञ्चिष्यथः	लुञ्चिष्यथ	म० पु०
लुञ्चिष्यामि	लुञ्चिष्यावः	लुञ्चिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अलुञ्चिष्यत्	अलुञ्चिष्यताम्	अलुञ्चिष्यन्	प्र० पु०
अलुञ्चिष्यः	अलुञ्चिष्यतम्	अलुञ्चिष्यत	म० पु०
अलुञ्चिष्यम्	अलुञ्चिष्याव	अलुञ्चिष्याम	उ० पु०

५६. अर्ह—पूजायाम् (पूजा करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
अर्हति	अर्हतः	अर्हन्ति	प्र० पु०	अर्हेत्	अर्हेताम्	अर्हेयुः
अर्हसि	अर्हथः	अर्हथ	म० पु०	अर्हेः	अर्हेतम्	अर्हेत
अर्हामि	अर्हावः	अर्हामः	उ० पु०	अर्हेयम्	अर्हेव	अर्हेम

तुबादि			दिबादि		
अर्हतु, अर्हतात्	अर्हताम्	अर्हन्तु	प्र० पु० आर्हत्	आर्हताम्	आर्हन्
अर्ह, अर्हतात्	अर्हतम्	अर्हत	म० पु० आर्हः	आर्हतम्	आर्हत
अर्हाणि	अर्हाव	अर्हाम	उ० पु० आर्हम्	आर्हाव	आर्हाम
द्यादि			**णबादि**		
आर्हीत्	आर्हिष्टाम्	आर्हिषुः	प्र० पु० आनर्ह	आनर्हतुः	आनर्हुः
आर्हीः	आर्हिष्टम्	आर्हिष्ट	म० पु० आनर्हिथ	आनर्हथुः	आनर्ह
आर्हिषम्	आर्हिष्व	आर्हिष्म	उ० पु० आनर्ह	आनर्हिव	आनर्हिम
क्यादादि			**तादि**		
अर्ह्यात्	अर्ह्यास्ताम्	अर्ह्यासुः	प्र० पु० अर्हिता	अर्हितारौ	अर्हितारः
अर्ह्याः	अर्ह्यास्तम्	अर्ह्यास्त	म० पु० अर्हितासि	अर्हितास्थः	अर्हितास्थ
अर्ह्यासम्	अर्ह्यास्व	अर्ह्यास्म	उ० पु० अर्हितास्मि	अर्हितास्वः	अर्हितास्मः
स्यत्यादि			**स्यदादि**		
अर्हिष्यति	अर्हिष्यतः	अर्हिष्यन्ति	प्र० पु० आर्हिष्यत्	आर्हिष्यताम्	आर्हिष्यन्
अर्हिष्यसि	अर्हिष्यथः	अर्हिष्यथ	म० पु० आर्हिष्यः	आर्हिष्यतम्	आर्हिष्यत
अर्हिष्यामि	अर्हिष्यावः	अर्हिष्यामः	उ० पु० आर्हिष्यम्	आर्हिष्याव	आर्हिष्याम

५७. तर्ज (भर्त्सने) भर्त्सना करना

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि			**यादादि**		
तर्जति	तर्जतः	तर्जन्ति	प्र० पु० तर्जेत्	तर्जेताम्	तर्जेयुः
तर्जसि	तर्जथः	तर्जथ	म० पु० तर्जेः	तर्जेतम्	तर्जेत
तर्जामि	तर्जावः	तर्जामः	उ० पु० तर्जेयम्	तर्जेव	तर्जेम
तुबादि			**दिबादि**		
तर्जतु, तर्जतात्	तर्जताम्	तर्जन्तु	प्र० पु० अतर्जत्	अतर्जताम्	अतर्जन्
तर्ज, तर्जतात्	तर्जतम्	तर्जत	म० पु० अतर्जः	अतर्जतम्	अतर्जत
तर्जानि	तर्जाव	तर्जाम	उ० पु० अतर्जम्	अतर्जाव	अतर्जाम
द्यादि			**णबादि**		
अतर्जीत्	अतर्जिष्टाम्	अतर्जिषुः	प्र० पु० ततर्ज	ततर्जतुः	ततर्जुः
अतर्जीः	अतर्जिष्टम्	अतर्जिष्ट	म० पु० ततर्जिथ	ततर्जथुः	ततर्ज
अतर्जिषम्	अतर्जिष्व	अतर्जिष्म	उ० पु० ततर्ज	ततर्जिव	ततर्जिम
क्यादादि			**तादि**		
तर्ज्यात्	तर्ज्यास्ताम्	तर्ज्यासुः	प्र० पु० तर्जिता	तर्जितारौ	तर्जितारः
तर्ज्याः	तर्ज्यास्तम्	तर्ज्यास्त	म० पु० तर्जितासि	तर्जितास्थः	तर्जितास्थ
तर्ज्यासम्	तर्ज्यास्व	तर्ज्यास्म	उ० पु० तर्जितास्मि	तर्जितास्वः	तर्जितास्मः

स्यत्यादि **स्यदादि**

तर्जिष्यति तर्जिष्यतः तर्जिष्यन्ति प्र० पु० अतर्जिष्यत् अतर्जिष्यताम् अतर्जिष्यन्
तर्जिष्यसि तर्जिष्यथः तर्जिष्यथ म० पु० अतर्जिष्यः अतर्जिष्यतम् अतर्जिष्यत
तर्जिष्यामि तर्जिष्यावः तर्जिष्यामः उ० पु० अतर्जिष्यम् अतर्जिष्याव अतर्जिष्याम

५८. अञ्चु—गतौ च (चकाराद् पूजायाम्) जाना और पूजा करना

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
अञ्चति	अञ्चतः	अञ्चन्ति	प्र० पु०	अञ्चेत्	अञ्चेताम्	अञ्चेयुः
अञ्चसि	अञ्चथः	अञ्चथ	म० पु०	अञ्चेः	अञ्चेतम्	अञ्चेत
अञ्चामि	अञ्चावः	अञ्चामः	उ० पु०	अञ्चेयम्	अञ्चेव	अञ्चेम
तुबादि				**दिबादि**		
अञ्चतु, अञ्चतात्	अञ्चताम्	अञ्चन्तु	प्र० पु०	आञ्चत्	आञ्चताम्	आञ्चन्
अञ्च, अञ्चतात्	अञ्चतम्	अञ्चत	म० पु०	आञ्चः	आञ्चतम्	आञ्चत
अञ्चानि	अञ्चाव	अञ्चाम	उ० पु०	आञ्चम्	आञ्चाव	आञ्चाम
ह्यादि				**णबादि**		
आञ्चीत्	आञ्चिष्टाम्	आञ्चिषुः	प्र० पु०	आनञ्च	आनञ्चतुः	आनञ्चुः
आञ्चीः	आञ्चिष्टम्	आञ्चिष्ट	म० पु०	आनञ्चिथ	आनञ्चथुः	आनञ्च
आञ्चिषम्	आञ्चिष्व	आञ्चिष्म	उ० पु०	आनञ्च	आनञ्चिव	आनञ्चिम
क्यादादि				**पूजायाम्**		
अच्यात्	अच्यास्ताम्	अच्यासुः	प्र० पु०	अञ्च्यात्	अञ्च्यास्ताम्	अञ्च्यासुः
अच्याः	अच्यास्तम्	अच्यास्त	म० पु०	अञ्च्याः	अञ्च्यास्तम्	अञ्च्यास्त
अच्यासम्	अच्यास्व	अच्यास्म	उ० पु०	अञ्च्यासम्	अञ्च्यास्व	अञ्च्यास्म

तादि

अञ्चिता	अञ्चितारौ	अञ्चितारः	प्र० पु०
अञ्चितासि	अञ्चितास्थः	अञ्चितास्थ	म० पु०
अञ्चितास्मि	अञ्चितास्वः	अञ्चितास्मः	उ० पु०

स्यत्यादि

अञ्चिष्यति	अञ्चिष्यतः	अञ्चिष्यन्ति	प्र० पु०
अञ्चिष्यसि	अञ्चिष्यथः	अञ्चिष्यथ	म० पु०
अञ्चिष्यामि	अञ्चिष्यावः	अञ्चिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

आञ्चिष्यत्	आञ्चिष्यताम्	आञ्चिष्यन्	प्र० पु०
आञ्चिष्यः	आञ्चिष्यतम्	आञ्चिष्यत	म० पु०
आञ्चिष्यम्	आञ्चिष्याव	आञ्चिष्याम	उ० पु०

५९. एजृ—कम्पने (कम्पित होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
एजति	एजतः	एजन्ति	प्र० पु०	एजेत्	एजेताम्	एजेयुः
एजसि	एजथः	एजथ	म० पु०	एजेः	एजेतम्	एजेत
एजामि	एजावः	एजामः	उ० पु०	एजेयम्	एजेव	एजेम
तुबादि				**दिबादि**		
एजतु, एजतात्	एजताम्	एजन्तु	प्र० पु०	ऐजत्	ऐजताम्	ऐजन्
एज, एजतात्	एजतम्	एजत	म० पु०	ऐजः	ऐजतम्	ऐजत
एजानि	एजाव	एजाम	उ० पु०	ऐजम्	ऐजाव	ऐजाम

लादि

ऐजीत्	ऐजिष्टाम्	ऐजिषुः	प्र० पु०
ऐजीः	ऐजिष्टम्	ऐजिष्ट	म० पु०
ऐजिषम्	ऐजिष्व	ऐजिष्म	उ० पु०

णबादि (१)

एजाञ्चकार	एजाञ्चक्रतुः	एजाञ्चक्रुः	प्र० पु०
एजाञ्चकर्थ	एजाञ्चक्रथुः	एजाञ्चक्र	म० पु०
एजाञ्चकार, एजाञ्चकर	एजाञ्चकृव	एजाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२) **णबादि (३)**

एजाम्बभूव एजाम्बभूवतुः एजाम्बभूवुः प्र. पु. एजामास एजामासतुः एजामासुः
एजाम्बभूविथ एजाम्बभूवथुः एजाम्बभूव म. पु. एजामासिथ एजामासथुः एजामास
एजाम्बभूव एजाम्बभूविव एजाम्बभूविम उ. पु. एजामास एजामासिव एजामासिम

क्यादादि **स्यत्यादि**

एज्यात्	एज्यास्ताम्	एज्यासुः	प्र० पु०	एजिष्यति	एजिष्यतः	एजिष्यन्ति
एज्याः	एज्यास्तम्	एज्यास्त	म० पु०	एजिष्यसि	एजिष्यथः	एजिष्यथ
एज्यासम्	एज्यास्व	एज्यास्म	उ० पु०	एजिष्यामि	एजिष्यावः	एजिष्यामः

स्यदादि

ऐजिष्यत्	ऐजिष्यताम्	ऐजिष्यन्	प्र० पु०
ऐजिष्यः	ऐजिष्यतम्	ऐजिष्यत	म० पु०
ऐजिष्यम्	ऐजिष्याव	ऐजिष्याम	उ० पु०

६०. हसे—हसने (हंसना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
हसति	हसतः	हसन्ति	प्र० पु०	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
हससि	हसथः	हसथ	म० पु०	हसेः	हसेतम्	हसेत
हसामि	हसावः	हसामः	उ० पु०	हसेयम्	हसेव	हसेम
तुबादि				**दिबादि**		
हसतु, हसतात्	हसताम्	हसन्तु	प्र० पु०	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
हस, हसतात्	हसतम्	हसत	म० पु०	अहसः	अहसतम्	अहसत
हसानि	हसाव	हसाम	उ० पु०	अहसम्	अहसाव	अहसाम
ङादि (१)				**ङादि (२)**		
अहसीत्	अहसिष्टाम्	अहसिषुः	प्र. पु.	अहासीत्	अहासिष्टाम्	अहासिषुः
अहसीः	अहसिष्टम्	अहसिष्ट	म. पु.	अहासीः	अहासिष्टम्	अहासिष्ट
अहसिषम्	अहसिष्व	अहसिष्म	उ. पु.	अहासिषम्	अहासिष्व	अहासिष्म
णबादि				**क्यादादि**		
जहास	जहसतुः	जहसुः	प्र० पु०	हस्यात्	हस्यास्ताम्	हस्यासुः
जहसिथ	जहसथुः	जहस	म० पु०	हस्याः	हस्यास्तम्	हस्यास्त
जहास, जहस	जहसिव	जहसिम	उ० पु०	हस्यासम्	हस्यास्व	हस्यास्म
तादि				**स्यत्यादि**		
हसिता	हसितारौ	हसितारः	प्र० पु०	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
हसितासि	हसितास्थः	हसितास्थ	म० पु०	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
हसितास्मि	हसितास्वः	हसितास्मः	उ० पु०	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

स्यदादि

अहसिष्यत्	अहसिष्यताम्	अहसिष्यन्	प्र० पु०
अहसिष्यः	अहसिष्यतम्	अहसिष्यत	म० पु०
अहसिष्यम्	अहसिष्याव	अहसिष्याम	उ० पु०

६१. जीव—प्राणधारणे (जीना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
जीवति	जीवतः	जीवन्ति	प्र० पु०	जीवेत्	जीवेताम्	जीवेयुः
जीवसि	जीवथः	जीवथ	म० पु०	जीवेः	जीवेतम्	जीवेत
जीवामि	जीवावः	जीवामः	उ० पु०	जीवेयम्	जीवेव	जीवेम

तुवादि				दिवादि		
जीवतु, जीवतात्	जीवताम्	जीवन्तु	प्र० पु०	अजीवत्	अजीवताम्	अजीवन्
जीव, जीवतात्	जीवतम्	जीवत	म० पु०	अजीवः	अजीवतम्	अजीवत
जीवानि	जीवाव	जीवाम	उ० पु०	अजीवम्	अजीवाव	अजीवाम

क्र्यादि				णबादि		
अजीवीत्	अजीविष्टाम्	अजीविषुः	प्र० पु०	जिजीव	जिजीवतुः	जिजीवुः
अजीवीः	अजीविष्टम्	अजीविष्ट	म० पु०	जिजीविथ	जिजीवथुः	जिजीव
अजीविषम्	अजीविष्व	अजीविष्म	उ० पु०	जिजीव	जिजीविव	जिजीविम

क्र्यादि				तादि		
जीव्यात्	जीव्यास्ताम्	जीव्यासुः	प्र० पु०	जीविता	जीवितारौ	जीवितारः
जीव्याः	जीव्यास्तम्	जीव्यास्त	म० पु०	जीवितासि	जीवितास्थः	जीवितास्थ
जीव्यासम्	जीव्यास्व	जीव्यास्म	उ० पु०	जीवितास्मि	जीवितास्वः	जीवितास्मः

स्यत्यादि			
जीविष्यति	जीविष्यतः	जीविष्यन्ति	प्र० पु०
जीविष्यसि	जीविष्यथः	जीविष्यथ	म० पु०
जीविष्यामि	जीविष्यावः	जीविष्यामः	उ० पु०

स्यदादि			
अजीविष्यत्	अजीविष्यताम्	अजीविष्यन्	प्र० पु०
अजीविष्यः	अजीविष्यतम्	अजीविष्यत	म० पु०
अजीविष्यम्	अजीविष्याव	अजीविष्याम	उ० पु०

६२. त्यजं—हानौ (छोडना)

एकवचन	द्विवचन	बहुचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
त्यजति	त्यजतः	त्यजन्ति	प्र० पु०	त्यजेत्	त्यजेताम्	त्यजेयुः
त्यजसि	त्यजथः	त्यजथ	म० पु०	त्यजेः	त्यजेतम्	त्यजेत
त्यजामि	त्यजावः	त्यजामः	उ० पु०	त्यजेयम्	त्यजेव	त्यजेम

तुवादि				दिवादि		
त्यजतु, त्यजतात्	त्यजताम्	त्यजन्तु	प्र० पु०	अत्यजत्	अत्यजताम्	अत्यजन्
त्यज, त्यजतात्	त्यजतम्	त्यजत	म० पु०	अत्यजः	अत्यजतम्	अत्यजत
त्यजानि	त्यजाव	त्यजाम	उ० पु०	अत्यजम्	अत्यजाव	अत्यजाम

ह्यादि				**णबादि**		
अत्याक्षीत्	अत्याक्ताम्	अत्याक्षुः	प्र० पु०	तत्याज	तत्यजतुः	तत्यजुः
अत्याक्षीः	अत्याक्तम्	अत्याक्त	म० पु०	तत्यक्थ	तत्यजथुः	तत्यज
अत्याक्षम्	अत्याक्ष्व	अत्याक्ष्म	उ० पु०	तत्याज, तत्यज	तत्यजिव	तत्यजिम

क्यादादि				**तादि**		
त्यज्यात्	त्यज्यास्ताम्	त्यज्यासुः	प्र० पु०	त्यक्ता	त्यक्तारौ	त्यक्तारः
त्यज्याः	त्यज्यास्तम्	त्यज्यास्त	म० पु०	त्यक्तासि	त्यक्तास्थः	त्यक्तास्थ
त्यज्यासम्	त्यज्यास्व	त्यज्यास्म	उ० पु०	त्यक्तास्मि	त्यक्तास्वः	त्यक्तास्मः

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
त्यक्ष्यति	त्यक्ष्यतः	त्यक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अत्यक्ष्यत्	अत्यक्ष्यताम्	अत्यक्ष्यन्
त्यक्ष्यसि	त्यक्ष्यथः	त्यक्ष्यथ	म० पु०	अत्यक्ष्यः	अत्यक्ष्यतम्	अत्यक्ष्यत
त्यक्ष्यामि	त्यक्ष्यावः	त्यक्ष्यामः	उ० पु०	अत्यक्ष्यम्	अत्यक्ष्याव	अत्यक्ष्याम

६३. भूष—अलंकारे (अलंकार करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
भूषति	भूषतः	भूषन्ति	प्र० पु०	भूषेत्	भूषेताम्	भूषेयुः
भूषसि	भूषथः	भूषथ	म० पु०	भूषेः	भूषेतम्	भूषेत
भूषामि	भूषावः	भूषामः	उ० पु०	भूषेयम्	भूषेव	भूषेम

तुबादि				**दिबादि**		
भूषतु, भूषतात्	भूषताम्	भूषन्तु	प्र० पु०	अभूषत्	अभूषताम्	अभूषन्
भूष, भूषतात्	भूषतम्	भूषत	म० पु०	अभूषः	अभूषतम्	अभूषत
भूषाणि	भूषाव	भूषाम	उ० पु०	अभूषम्	अभूषाव	अभूषाम

ह्यादि				**णबादि**		
अभूषीत्	अभूषिष्टाम्	अभूषिषुः	प्र० पु०	बुभूष	बुभूषतुः	बुभूषुः
अभूषीः	अभूषिष्टम्	अभूषिष्ट	म० पु०	बुभूषिथ	बुभूषथुः	बुभूष
अभूषिषम्	अभूषिष्व	अभूषिष्म	उ० पु०	बुभूष	बुभूषिव	बुभूषिम

क्यादादि				**तादि**		
भूष्यात्	भूष्यास्ताम्	भूष्यासुः	प्र० पु०	भूषिता	भूषितारौ	भूषितारः
भूष्याः	भूष्यास्तम्	भूष्यास्त	म० पु०	भूषितासि	भूषितास्थः	भूषितास्थ
भूष्यासम्	भूष्यास्व	भूष्यास्म	उ० पु०	भूषितास्मि	भूषितास्वः	भूषितास्मः

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
भूषिष्यति	भूषिष्यतः	भूषिष्यन्ति	प्र० पु०	अभूषिष्यत्	अभूषिष्यताम्	अभूषिष्यन्
भूषिष्यसि	भूषिष्यथः	भूषिष्यथ	म० पु०	अभूषिष्यः	अभूषिष्यतम्	अभूषिष्यत
भूषिष्यामि	भूषिष्यावः	भूषिष्यामः	उ० पु०	अभूषिष्यम्	अभूषिष्याव	अभूषिष्याम

६४. वद—व्यक्तायां वाचि (बोलना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
वदति	वदतः	वदन्ति	प्र० पु०	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
वदसि	वदथः	वदथ	म० पु०	वदेः	वदेतम्	वदेत
वदामि	वदावः	वदामः	उ० पु०	वदेयम्	वदेव	वदेम
तुवादि				**दिवादि**		
वदतु, वदतात्	वदताम्	वदन्तु	प्र० पु०	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
वद, वदतात्	वदतम्	वदत	म० पु०	अवदः	अवदतम्	अवदत
वदानि	वदाव	वदाम	उ० पु०	अवदम्	अवदाव	अवदाम
ञ्यादि				**णबादि**		
अवादीत्	अवादिष्टाम्	अवादिषुः	प्र० पु०	उवाद	ऊदतुः	ऊदुः
अवादीः	अवादिष्टम्	अवादिष्ट	म० पु०	उवदिथ	ऊदथुः	ऊद
अवादिषम्	अवादिष्व	अवादिष्म	उ० पु०	उवाद, उवद	ऊदिव	ऊदिम
क्यादादि				**तादि**		
उद्यात्	उद्यास्ताम्	उद्यासुः	प्र० पु०	वदिता	वदितारौ	वदितारः
उद्याः	उद्यास्तम्	उद्यास्त	म० पु०	वदितासि	वदितास्थः	वदितास्थ
उद्यासम्	उद्यास्व	उद्यास्म	उ० पु०	वदितास्मि	वदितास्वः	वदितास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति	प्र० पु०	अवदिष्यत्	अवदिष्यताम्	अवदिष्यन्
वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ	म० पु०	अवदिष्यः	अवदिष्यतम्	अवदिष्यत
वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः	उ० पु०	अवदिष्यम्	अवदिष्याव	अवदिष्याम

६५. णमं—नमने (झुकना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
नमति	नमतः	नमन्ति	प्र० पु०	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
नमसि	नमथः	नमथ	म० पु०	नमेः	नमेतम्	नमेत
नमामि	नमावः	नमामः	उ० पु०	नमेयम्	नमेव	नमेम
तुबादि				**दिबादि**		
नमतु, नमतात्	नमताम्	नमन्तु	प्र० पु०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
नम, नमतात्	नमतम्	नमत	म० पु०	अनमः	अनमतम्	अनमत
नमानि	नमाव	नमाम	उ० पु०	अनमम्	अनमाव	अनमाम

ह्यादि				**णबादि**		
अनंसीत्	अनंसिष्टाम्	अनंसिषुः	प्र० पु०	ननाम	नेमतुः	नेमुः
अनंसीः	अनंसिष्टम्	अनंसिष्ट	म० पु०	नेमिथ, ननन्थ	नेमथुः	नेम
अनंसिषम्	अनंसिष्व	अनंसिष्म	उ० पु०	ननाम, ननम	नेमिव	नेमिम
क्यादादि				**तादि**		
नम्यात्	नम्यास्ताम्	नम्यासुः	प्र० पु०	नन्ता	नन्तारौ	नन्तारः
नम्याः	नम्यास्तम्	नम्यास्त	म० पु०	नन्तासि	नन्तास्थः	नन्तास्थ
नम्यासम्	नम्यास्व	नम्यास्म	उ० पु०	नन्तास्मि	नन्तास्वः	नन्तास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति	प्र० पु०	अनंस्यत्	अनंस्यताम्	अनंस्यन्
नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ	म० पु०	अनंस्यः	अनंस्यतम्	अनंस्यत
नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः	उ० पु०	अनंस्यम्	अनंस्याव	अनंस्याम

६६. दहं—भस्मीकरणे (जलाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
दहति	दहतः	दहन्ति	प्र० पु०	दहेत्	दहेताम्	दहेयुः
दहसि	दहथः	दहथ	म० पु०	दहेः	दहेतम्	दहेत
दहामि	दहावः	दहामः	उ० पु०	दहेयम्	दहेव	दहेम
तुबादि				**दिबादि**		
दहतु, दहतात्	दहताम्	दहन्तु	प्र० पु०	अदहत्	अदहताम्	अदहन्
दह, दहतात्	दहतम्	दहत	म० पु०	अदहः	अदहतम्	अदहत
दहानि	दहाव	दहाम	उ० पु०	अदहम्	अदहाव	अदहाम
ह्यादि				**णबादि**		
अधाक्षीत्	अदाग्धाम्	अधाक्षुः	प्र० पु०	ददाह	देहतुः	देहुः
अधाक्षीः	अदाग्धम्	अदाग्ध	म० पु०	देहिथ, ददग्ध	देहथुः	देह
अधाक्षम्	अधाक्ष्व	अधाक्ष्म	उ० पु०	ददाह, ददह	देहिव	देहिम
क्यादादि				**तादि**		
दह्यात्	दह्याताम्	दह्यासुः	प्र० पु०	दग्धा	दग्धारौ	दग्धारः
दह्याः	दह्यास्तम्	दह्यास्त	म० पु०	दग्धासि	दग्धास्थः	दग्धास्थ
दह्यासम्	दह्यास्व	दह्यास्म	उ० पु०	दग्धास्मि	दग्धास्वः	दग्धास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
धक्ष्यति	धक्ष्यतः	धक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अधक्ष्यत्	अधक्ष्यताम्	अधक्ष्यन्
धक्ष्यसि	धक्ष्यथः	धक्ष्यथ	म० पु०	अधक्ष्यः	अधक्ष्यतम्	अधक्ष्यत
धक्ष्यामि	धक्ष्यावः	धक्ष्यामः	उ० पु०	अधक्ष्यम्	अधक्ष्याव	अधक्ष्याम

६७. वसं—निवासे (रहना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
वसति	वसतः	वसन्ति	प्र० पु०	वसेत्	वसेताम्	वसेयुः
वससि	वसथः	वसथ	म० पु०	वसेः	वसेतम्	वसेत
वसामि	वसावः	वसामः	उ० पु०	वसेयम्	वसेव	वसेम
तुबादि				**दिबादि**		
वसतु, वसतात्	वसताम्	वसन्तु	प्र० पु०	अवसत्	अवसताम्	अवसन्
वस, वसतात्	वसतम्	वसत	म० पु०	अवसः	अवसतम्	अवसत
वसानि	वसाव	वसाम	उ० पु०	अवसम्	अवसाव	अवसाम
ञादि				**णबादि**		
अवात्सीत्	अवात्ताम्	अवात्सुः	प्र० पु०	उवास	ऊषतुः	ऊषुः
अवात्सीः	अवात्तम्	अवात्त	म० पु०	उवस्थ, उवसिथ	ऊषथुः	ऊष
अवात्सम्	अवात्स्व	अवात्स्म	उ० पु०	उवास, उवस	ऊषिव	ऊषिम
क्यादादि				**तादि**		
उष्यात्	उष्यास्ताम्	उष्यासुः	प्र० पु०	वस्ता	वस्तारौ	वस्तारः
उष्याः	उष्यास्तम्	उष्यास्त	म० पु०	वस्तासि	वस्तास्थः	वस्तास्थ
उष्यासम्	उष्यास्व	उष्यास्म	उ० पु०	वस्तास्मि	वस्तास्वः	वस्तास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति	प्र० पु०	अवत्स्यत्	अवत्स्यताम्	अवत्स्यन्
वत्स्यसि	वत्स्यथः	वत्स्यथ	म० पु०	अवत्स्यः	अवत्स्यतम्	अवत्स्यत
वत्स्यामि	वत्स्यावः	वत्स्यामः	उ० पु०	अवत्स्यम्	अवत्स्याव	अवत्स्याम

६८. गुपू—रक्षणे (रक्षा करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
गोपायति	गोपायतः	गोपायन्ति	प्र० पु०	गोपायेत्	गोपायेताम्	गोपायेयुः
गोपायसि	गोपायथः	गोपायथ	म० पु०	गोपायेः	गोपायेतम्	गोपायेत
गोपायामि	गोपायावः	गोपायामः	उ० पु०	गोपायेयम्	गोपायेव	गोपायेम
तुबादि						
गोपायतु, गोपायतात्		गोपायताम्		गोपायन्तु	प्र० पु०	
गोपाय, गोपायतात्		गोपायतम्		गोपायत	म० पु०	
गोपायानि		गोपायाव		गोपायाम	उ० पु०	

दिवादि

अगोपायत्	अगोपायताम्	अगोपायन्	प्र० पु०
अगोपायः	अगोपायतम्	अगोपायत	म० पु०
अगोपायम्	अगोपायाव	अगोपायाम	उ० पु०

च्लादि (१)

अगोपायीत्	अगोपायिष्टाम्	अगोपायिषुः	प्र० पु०
अगोपायीः	अगोपायिष्टम्	अगोपायिष्ट	म० पु०
अगोपायिषम्	अगोपायिष्व	अगोपायिष्म	उ० पु०

च्लादि (२)

अगोपीत्	अगोपिष्टाम्	अगोपिषुः	प्र० पु०
अगोपीः	अगोपिष्टम्	अगोपिष्ट	म० पु०
अगोपिषम्	अगोपिष्व	अगोपिष्म	उ० पु०

च्लादि (३)

अगौप्सीत्	अगौप्ताम्	अगौप्सुः	प्र० पु०
अगौप्सीः	अगौप्तम्	अगौप्त	म० पु०
अगौप्सम्	अगौप्स्व	अगौप्स्म	उ० पु०

णबादि (१)

गोपायाञ्चकार	गोपायाञ्चक्रतुः	गोपायञ्चक्रुः	प्र० पु०
गोपायाञ्चकर्थ	गोपायाञ्चक्रथुः	गोपायाञ्चक्र	म० पु०
गोपायाञ्चकार, गोपायाञ्चकर	गोपायाञ्चकृव	गोपायाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

गोपायाम्बभूव	गोपायाम्बभूवतुः	गोपायाम्बभूवुः	प्र० पु०
गोपायाम्बभूविथ	गोपायाम्बभूवथुः	गोपायाम्बभूव	म० पु०
गोपायाम्बभूव	गोपायाम्बभूविव	गोपायाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

गोपायामास	गोपायामासतुः	गोपायामासुः	प्र० पु०
गोपायामासिथ	गोपायामासथुः	गोपायामास	म० पु०
गोपायामास	गोपायामासिव	गोपायामासिम	उ० पु०

णबादि (४)

जुगोप	जुगुपतुः	जुगुपुः	प्र० पु०
जुगोपिथ	जुगुपथुः	जुगुप	म० पु०
जुगोप	जुगुपिव	जुगुपिम	उ० पु०

क्यादादि (१)

गुप्यात्	गुप्यास्ताम्	गुप्यासुः	प्र० पु०
गुप्याः	गुप्यास्तम्	गुप्यास्त	म० पु०
गुप्यासम्	गुप्यास्व	गुप्यास्म	उ० पु०

क्यादादि (२)

गोपाय्यात्	गोपाय्यास्ताम्	गोपाय्यासुः	प्र० पु०
गोपाय्याः	गोपाय्यास्तम्	गोपाय्यास्त	म० पु०
गोपाय्यासम्	गोपाय्यास्व	गोपाय्यास्म	उ० पु०

तादि (१)

गोपायिता	गोपायितारौ	गोपायितारः	प्र. पु.
गोपायितासि	गोपायितास्थः	गोपायितास्थ	म. पु.
गोपायितास्मि	गोपायितास्वः	गोपायितास्मः	उ. पु.

तादि (२)

गोप्ता	गोप्तारौ	गोप्तारः	प्र. पु.
गोप्तासि	गोप्तास्थः	गोप्तास्थ	म. पु.
गोप्तास्मि	गोप्तास्वः	गोप्तास्मः	उ. पु.

स्यत्यादि (१)

गोपिष्यति	गोपिष्यतः	गोपिष्यन्ति	प्र० पु०
गोपिष्यसि	गोपिष्यथः	गोपिष्यथ	म० पु०
गोपिष्यामि	गोपिष्यावः	गोपिष्यामः	उ० पु०

स्यत्यादि (२)

गोपायिष्यति	गोपायिष्यतः	गोपायिष्यन्ति	प्र० पु०
गोपायिष्यसि	गोपायिष्यथः	गोपायिष्यथ	म० पु०
गोपायिष्यामि	गोपायिष्यावः	गोपायिष्यामः	उ० पु०

स्यत्यादि (३)

गोप्स्यति	गोप्स्यतः	गोप्स्यन्ति	प्र० पु०
गोप्स्यसि	गोप्स्यथः	गोप्स्यथ	म० पु०
गोप्स्यामि	गोप्स्यावः	गोप्स्यामः	उ० पु०

स्यदादि (१)

अगोपिष्यत्	अगोपिष्यताम्	अगोपिष्यन्	प्र० पु०
अगोपिष्यः	अगोपिष्यतम्	अगोपिष्यत	म० पु०
अगोपिष्यम्	अगोपिष्याव	अगोपिष्याम	उ० पु०

स्यदादि (२)

अगोपायिष्यत्	अगोपायिष्यताम्	अगोपायिष्यन्	प्र० पु०
अगोपायिष्यः	अगोपायिष्यतम्	अगोपायिष्यत	म० पु०
अगोपायिष्यम्	अगोपायिष्याव	अगोपायिष्याम	उ० पु०

स्यदादि (३)

अगोप्स्यत्	अगोप्स्यताम्	अगोप्स्यन्	प्र० पु०
अगोप्स्यः	अगोप्स्यतम्	अगोप्स्यत	म० पु०
अगोप्स्यम्	अगोप्स्याव	अगोप्स्याम	उ० पु०

६९. एधङ्—वृद्धौ (बढना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
एधते	एधेते	एधन्ते	प्र० पु०	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन्
एधसे	एधेथे	एधध्वे	म० पु०	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम्
एधे	एधावहे	एधामहे	उ० पु०	एधेय	एधेवहि	एधेमहि
तुबादि				**दिबादि**		
एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्	प्र० पु०	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्	म० पु०	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
एधै	एधावहै	एधामहै	उ० पु०	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

द्यादि

ऐधिष्ट	ऐधिषाताम्	ऐधिषत	प्र० पु०
ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथाम्	ऐधिढ्वम्, ऐधिध्वम्	म० पु०
ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि	उ० पु०

णबादि (१)

एधाञ्चक्रे	एधाञ्चक्राते	एधाञ्चक्रिरे	प्र० पु०
एधाञ्चकृषे	एधाञ्चक्राथे	एधाञ्चकृढ्वे	म० पु०
एधाञ्चक्रे	एधाञ्चकृवहे	एधाञ्चकृमहे	उ० पु०

णबादि (२)

एधाम्बभूव एधाम्बभूवतुः एधाम्बभूवुः प्र० पु०
एधाम्बभूविथ एधाम्बभूवथुः एधाम्बभूव म० पु०
एधाम्बभूव एधाम्बभूविव एधाम्बभूविम उ. पु.

णबादि (३)

एधामास एधामासतुः एधामासुः
एधामासिथ एधामासथुः एधामास
एधामास एधामासिव एधामासिम

क्यादादि

एधिषीष्ट एधिषीयास्ताम् एधिषीरन्
एधिषीष्ठाः एधिषीयास्थाम् एधिषीध्वम्
एधिषीय एधिषीवहि एधिषीमहि

तादि

प्र० पु० एधिता एधितारौ एधितारः
म० पु० एधितासे एधितासाथे एधिताध्वे
उ० पु० एधिताहे एधितास्वहे एधितास्महे

स्यत्यादि

एधिष्यते एधिष्येते एधिष्यन्ते
एधिष्यसे एधिष्येथे एधिष्यध्वे
एधिष्ये एधिष्यावहे एधिष्यामहे

स्यदादि

प्र० पु० ऐधिष्यत ऐधिष्येताम् ऐधिष्यन्त
म० पु० ऐधिष्यथाः ऐधिष्येथाम् ऐधिष्यध्वम्
उ० पु० ऐधिष्ये ऐधिष्यावहि ऐधिष्यामहि

७०. ईक्षङ्—दर्शने (देखना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
ईक्षते	ईक्षेते	ईक्षन्ते	प्र० पु०	ईक्षेत	ईक्षेयाताम्	ईक्षेरन्
ईक्षसे	ईक्षेथे	ईक्षध्वे	म० पु०	ईक्षेथाः	ईक्षेयाथाम्	ईक्षेध्वम्
ईक्षे	ईक्षावहे	ईक्षामहे	उ० पु०	ईक्षेय	ईक्षेवहि	ईक्षेमहि

तुबादि

ईक्षताम् ईक्षेताम् ईक्षन्ताम् प्र० पु०
ईक्षस्व ईक्षेथाम् ईक्षध्वम् म० पु०
ईक्षै ईक्षावहै ईक्षामहै उ० पु०

दिबादि

ऐक्षिष्ट ऐक्षिषाताम् ऐक्षिषत
ऐक्षिष्ठाः ऐक्षिषाथाम् ऐक्षिढ्वम्, ऐक्षिध्वम्
ऐक्षिषि ऐक्षिष्वहि ऐक्षिष्महि

द्यादि				**णबादि**		
ऐक्षत	ऐक्षेताम्	ऐक्षन्त	प्र० पु०	ईक्षाञ्चक्रे	ईक्षाञ्चक्राते	ईक्षाञ्चक्रिरे
ऐक्षथाः	ऐक्षेथाम्	ऐक्षध्वम्	म० पु०	ईक्षाञ्चकृषे	ईक्षाञ्चक्राथे	ईक्षाञ्चकृढ्वे
ऐक्षे	ऐक्षावहि	ऐक्षामहि	उ० पु०	ईक्षाञ्चक्रे	ईक्षाञ्चकृवहे	ईक्षाञ्चकृमहे

क्यादादि				**तादि**		
ईक्षिषीष्ट	ईक्षिषीयास्ताम्	ईक्षिषीरन्	प्र० पु०	ईक्षिता	ईक्षितारौ	ईक्षितारः
ईक्षिषीष्ठाः	ईक्षिषीयास्थाम्	ईक्षिषीध्वम्	म० पु०	ईक्षितासे	ईक्षितासाथे	ईक्षिताध्वे
ईक्षिषीय	ईक्षिषीवहि	ईक्षिषीमहि	उ० पु०	ईक्षिताहे	ईक्षितास्वहे	ईक्षितास्महे

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
ईक्षिष्यते	ईक्षिष्येते	ईक्षिष्यन्ते	प्र० पु०	ऐक्षिष्यत	ऐक्षिष्येताम्	ऐक्षिष्यन्त
ईक्षिष्यसे	ईक्षिष्येथे	ईक्षिष्यध्वे	म० पु०	ऐक्षिष्यथाः	ऐक्षिष्येथाम्	ऐक्षिष्यध्वम्
ईक्षिष्ये	ईक्षिष्यावहे	ईक्षिष्यामहे	उ० पु०	ऐक्षिष्ये	ऐक्षिष्यावहि	ऐक्षिष्यामहि

७१. वृतुङ्—वर्तने (वर्तन करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते	प्र० पु०	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे	म० पु०	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे	उ० पु०	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि
तुबादि				**दिबादि**		
वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्	प्र० पु०	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्	म० पु०	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै	उ० पु०	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

द्यादि (१)			
अवर्तिष्ट	अवर्तिषाताम्	अवर्तिषत	प्र० पु०
अवर्तिष्ठाः	अवर्तिषाथाम्	अवर्तिढ्वम्, अवर्तिध्वम्	म० पु०
अवर्तिषि	अवर्तिष्वहि	अवर्तिष्महि	उ० पु०

द्यादि (२)				**णबादि**		
अवृतत्	अवृतताम्	अवृतन्	प्र० पु०	ववृते	ववृताते	ववृतिरे
अवृतः	अवृततम्	अवृतत	म० पु०	ववृतिषे	ववृताथे	ववृतिध्वे
अवृतम्	अवृताव	अवृताम	उ० पु०	ववृते	ववृतिवहे	ववृतिमहे

क्यादादि			
वर्तिषीष्ट	वर्तिषीयास्ताम्	वर्तिषीरन्	प्र० पु०
वर्तिषीष्ठाः	वर्तिषीयास्थाम्	वर्तिषीध्वम्	म० पु०
वर्तिषीय	वर्तिषीवहि	वर्तिषीमहि	उ० पु०

तादि **स्त्यादि (१)**

वर्तिता	वर्तितारौ	वर्तितारः	प्र० पु०	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
वर्तितासे	वर्तितासाथे	वर्तिताध्वे	म० पु०	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
वर्तिताहे	वर्तितास्वहे	वर्तितास्महे	उ० पु०	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

स्त्यादि (२) **स्यदादि (१)**

वर्त्स्यति	वर्त्स्यतः	वर्त्स्यन्ति	प्र० पु०	अवर्तिष्यत	अवर्तिष्येताम्	अवर्तिष्यन्त
वर्त्स्यसि	वर्त्स्यथः	वर्त्स्यथ	म० पु०	अवर्तिष्यथाः	अवर्तिष्येथाम्	अवर्तिष्यध्वम्
वर्त्स्यामि	वर्त्स्यावः	वर्त्स्यामः	उ० पु०	अवर्तिष्ये	अवर्तिष्यावहि	अवर्तिष्यामहि

स्यदादि (२)

अवर्त्स्यत्	अवर्त्स्यताम्	अवर्त्स्यन्	प्र० पु०
अवर्त्स्यः	अवर्त्स्यतम्	अवर्त्स्यत	म० पु०
अवर्त्स्यम्	अवर्त्स्याव	अवर्त्स्याम	उ० पु०

७२. वृधुङ्—वृद्धौ (बढना)

एकवचम	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते	प्र० पु०	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे	म० पु०	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे	उ० पु०	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि
तुबादि				**दिबादि**		
वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्	प्र० पु०	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्	म० पु०	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै	उ० पु०	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

द्यादि (१)

अवर्धिष्ट	अवर्धिषाताम्	अवर्धिषत	प्र० पु०
अवर्धिष्ठाः	अवर्धिषाथाम्	अवर्धिढ्वम्, अवर्धिध्वम्	म० पु०
अवर्धिषि	अवर्धिष्वहि	अवर्धिष्महि	उ० पु०

द्यादि (२) **णबादि**

अवृधत्	अवृधताम्	अवृधन्	प्र० पु०	ववृधे	ववृधाते	ववृधिरे
अवृधः	अवृधतम्	अवृधत	म० पु०	ववृधिषे	ववृधाथे	ववृधिध्वे
अवृधम्	अवृधाव	अवृधाम	उ० पु०	ववृधे	ववृधिवहे	ववृधिमहे

स्त्यादि (१) **स्त्यादि (२)**

वर्धिष्येते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते	प्र० पु०	वर्त्स्यति	वर्त्स्यतः	वर्त्स्यन्ति
वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे	म० पु०	वर्त्स्यसि	वर्त्स्यथ	वर्त्स्यथ
वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे	उ० पु०	वर्त्स्यामि	वर्त्स्यावः	वर्त्स्यामः

स्यदादि (१)

अवधिष्यत	अवधिष्येताम्	अवधिष्यन्त	प्र० पु०
अवधिष्यथाः	अवधिष्येथाम्	अवधिष्यध्वम्	म० पु०
अवधिष्ये	अवधिष्यावहि	अवधिष्यामहि	उ० पु०

स्यदादि (२)

अवर्त्स्यत्	अवर्त्स्यताम्	अवर्त्स्यन्	प्र० पु०
अवर्त्स्यः	अवर्त्स्यतम्	अवर्त्स्यत	म० पु०
अवर्त्स्यम्	अवर्त्स्याव	अवर्त्स्याम	उ० पु०

७३. भ्रंसुङ्—अवस्रंसने (नष्ट होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
भ्रंशते	भ्रंशेते	भ्रंशन्ते	प्र० पु०	भ्रंशेत	भ्रंशेयाताम्	भ्रंशेरन्
भ्रंशसे	भ्रंशेथे	भ्रंशध्वे	म० पु०	भ्रंशेथाः	भ्रंशेयाथाम्	भ्रंशेध्वम्
भ्रंशे	भ्रंशावहे	भ्रंशामहे	उ० पु०	भ्रंशेय	भ्रंशेवहि	भ्रंशेमहि
तुबादि				**दिबादि**		
भ्रंशताम्	भ्रंशेताम्	भ्रंशन्ताम्	प्र० पु०	अभ्रंशत	अभ्रंशेताम्	अभ्रंशन्त
भ्रंशस्व	भ्रंशेथाम्	भ्रंशध्वम्	म० पु०	अभ्रंशथाः	अभ्रंशेथाम्	अभ्रंशध्वम्
भ्रंशै	भ्रंशावहै	भ्रंशामहै	उ० पु०	अभ्रंशे	अभ्रंशावहि	अभ्रंशामहि

द्यादि (१)

अभ्रंशिष्ट	अभ्रंशिषाताम्	अभ्रंशिषत	प्र० पु०
अभ्रंशिष्ठाः	अभ्रंशिषाथाम्	अभ्रंशिढ्वम्, अभ्रंशिध्वम्	म० पु०
अभ्रंशिषि	अभ्रंशिष्वहि	अभ्रंशिष्महि	उ० पु०

द्यादि (२) **णबादि**

अभ्रशत्	अभ्रशताम्	अभ्रशन्	प्र० पु०	बभ्रंशे	बभ्रंशाते	बभ्रंशिरे
अभ्रशः	अभ्रशतम्	अभ्रशत	म० पु०	बभ्रंशिषे	बभ्रंशाथे	बभ्रंशिध्वे
अभ्रशम्	अभ्रशाव	अभ्रशाम	उ० पु०	बभ्रंशे	बभ्रंशिवहे	बभ्रंशिमहे

क्यादादि

भ्रंशिषीष्ट	भ्रंशिषीयास्ताम्	भ्रंशिषीरन्	प्र० पु०
भ्रंशिषीष्ठाः	भ्रंशिषीयास्थाम्	भ्रंशिषीध्वम्	म० पु०
भ्रंशिषीय	भ्रंशिषीवहि	भ्रंशिषीमहि	उ० पु०

तादि				स्यत्यादि		
भ्रंशिता	भ्रंशितारौ	भ्रंशितारः	प्र० पु०	भ्रंशिष्यते	भ्रंशिष्येते	भ्रंशिष्यन्ते
भ्रंशितासे	भ्रंशितासाथे	भ्रंशिताध्वे	म० पु०	भ्रंशिष्यसे	भ्रंशिष्येथे	भ्रंशिष्यध्वे
भ्रंशिताहे	भ्रंशितास्वहे	भ्रंशितास्महे	उ० पु०	भ्रंशिष्ये	भ्रंशिष्यावहे	भ्रंशिष्यामहे

स्यदादि

अभ्रंशिष्यत	अभ्रंशिष्येताम्	अभ्रंशिष्यन्त	प्र० पु०
अभ्रंशिष्यथाः	अभ्रंशिष्येथाम्	अभ्रंशिष्यध्वम्	म० पु०
अभ्रंशिष्ये	अभ्रंशिष्यावहि	अभ्रंशिष्यामहि	उ० पु०

७४. श्रिन्—सेवायाम् (उभयपदी) सेवा करना
परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
श्रयति	श्रयतः	श्रयन्ति	प्र० पु०	श्रयेत्	श्रयेताम्	श्रयेयुः
श्रयसि	श्रयथः	श्रयथ	म० पु०	श्रयेः	श्रयेतम्	श्रयेत
श्रयामि	श्रयावः	श्रयामः	उ० पु०	श्रयेयम्	श्रयेव	श्रयेम
तुबादि				**दिबादि**		
श्रयतु, श्रयतात्	श्रयताम्	श्रयन्तु	प्र० पु०	अश्रयत्	अश्रयताम्	अश्रयन्
श्रय, श्रयतात्	श्रयतम्	श्रयत	म० पु०	अश्रयः	अश्रयतम्	अश्रयत
श्रयाणि	श्रयाव	श्रयाम	उ० पु०	अश्रयम्	अश्रयाव	अश्रयाम

ञ्नादि **णबादि**

अशिश्रियत् अशिश्रियताम् अशिश्रियन् प्र० पु० शिश्राय शिश्रियतुः शिश्रियुः
अशिश्रियः अशिश्रियतम् अशिश्रियत म० पु० शिश्रयिथ शिश्रियथुः शिश्रिय
अशिश्रियम् अशिश्रियाव अशिश्रियाम उ० पु० शिश्राय, शिश्रय शिश्रियिव शिश्रियिम

क्र्यादादि				तादि		
श्रीयात्	श्रीयास्ताम्	श्रीयासुः	प्र० पु०	श्रयिता	श्रयितारौ	श्रयितारः
श्रीयाः	श्रीयास्तम्	श्रीयास्त	म० पु०	श्रयितासि	श्रयितास्थः	श्रयितास्थ
श्रीयासम्	श्रीयास्व	श्रीयास्म	उ० पु०	श्रयितास्मि	श्रयितास्वः	श्रयितास्म
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
श्रयिष्यति	श्रयिष्यतः	श्रयिष्यन्ति	प्र० पु०	अश्रयिष्यत्	अश्रयिष्यताम्	अश्रयिष्य
श्रयिष्यसि	श्रयिष्यथः	श्रयिष्यथ	म० पु०	अश्रयिष्यः	अश्रयिष्यतम्	अश्रयिष्य
श्रयिष्यामि	श्रयिष्यावः	श्रयिष्यामः	उ० पु०	अश्रयिष्यम्	अश्रयिष्याव	अश्रयिष्या

आत्मनेपद

तिबादि **यादादि**

श्रयते	श्रयेते	श्रयन्ते	प्र० पु०	श्रयेत	श्रयेयाताम्	श्रयेरन्
श्रयसे	श्रयेथे	श्रयध्वे	म० पु०	श्रयेथाः	श्रयेयाथाम्	श्रयेध्वम्
श्रये	श्रयावहे	श्रयामहे	उ० पु०	श्रयेय	श्रयेवहि	श्रयेमहि

तुबादि **दिबादि**

श्रयताम्	श्रयेताम्	श्रयन्ताम्	प्र० पु०	अश्रयत	अश्रयेताम्	अश्रयन्त
श्रयस्व	श्रयेथाम्	श्रयध्वम्	म० पु०	अश्रयथाः	अश्रयेथाम्	अश्रयध्वम्
श्रयै	श्रयावहै	श्रयामहै	उ० पु०	अश्रये	अश्रयावहि	अश्रयामहि

द्यादि

अशिश्रियत	अशिश्रियेताम्	अशिश्रियन्त	प्र० पु०
अशिश्रियथाः	अशिश्रियेथाम्	अशिश्रियध्वम्	म० पु०
अशिश्रिये	अशिश्रियावहि	अशिश्रियामहि	उ० पु०

णत्रादि

शिश्रिये	शिश्रियाते	शिश्रियिरे	प्र० पु०
शिश्रिषे	शिश्रियाथे	शिश्रियिढ्वे, शिश्रियिध्वे	म० पु०
शिश्रिये	शिश्रियिवहे	शिश्रियिमहे	उ० पु०

क्र्यादादि

श्रयिषीष्ट	श्रयिषीयास्ताम्	श्रयिषीरन्	प्र० पु०
श्रयिषीष्ठाः	श्रयिषीयास्थाम्	श्रयिषीढ्वम्, श्रयिषीध्वम्	म० पु०
श्रयिषीय	श्रयिषीवहि	श्रयिषीमहि	उ० पु०

तादि **स्यत्यादि**

श्रयिता	श्रयितारौ	श्रयितारः	प्र० पु०	श्रयिष्यते	श्रयिष्येते	श्रयिष्यन्ते
श्रयितासे	श्रयितासाथे	श्रयिताध्वे	म० पु०	श्रयिष्यसे	श्रयिष्येते	श्रयिष्यध्वे
श्रयिताहे	श्रयितास्वहे	श्रयितास्महे	उ० पु०	श्रयिष्ये	श्रयिष्यावहे	श्रयिष्यामहे

स्यदादि

अश्रयिष्यत	अश्रयिष्येताम्	अश्रयिष्यन्त	प्र० पु०
अश्रयिष्यथाः	अश्रयिष्येथाम्	अश्रयिष्यध्वम्	म० पु०
अश्रयिष्ये	अश्रयिष्यावहि	अश्रयिष्यामहि	उ० पु०

७५. गुहूत्—संवरणे (उभयपदी) छिपाना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
गूहति	गूहतः	गूहन्ति	प्र० पु०	गूहेत्	गूहेताम्	गूहेयुः
गूहसि	गूहथः	गूहथ	म० पु०	गूहेः	गूहेतम्	गूहेत
गूहामि	गूहावः	गूहामः	उ० पु०	गूहेयम्	गूहेव	गूहेम
तुबादि				**दिबादि**		
गूहतु, गूहतात्	गूहताम्	गूहन्तु	प्र० पु०	अगूहत्	अगूहताम्	अगूहन्
गूह, गूहतात्	गूहतम्	गूहत	म० पु०	अगूहः	अगूहतम्	अगूहत
गूहानि	गूहाव	गूहाम	उ० पु०	अगूहम्	अगूहाव	अगूहाम
द्यादि (१)				**द्यादि (२)**		
अगूहीत्	अगूहिष्टाम्	अगूहिषुः	प्र० पु०	अघुक्षत्	अघुक्षताम्	अघुक्षन्
अगूहीः	अगूहिष्टम्	अगूहिष्ट	म० पु०	अघुक्षः	अघुक्षतम्	अघुक्षत
अगूहिषम्	अगूहिष्व	अगूहिष्म	उ० पु०	अघुक्षम्	अघुक्षाव	अघुक्षाम
णबादि				**क्यादादि**		
जुगूह	जुगुहतुः	जुगुहुः	प्र० पु०	गुह्यात्	गुह्यास्ताम्	गुह्यासुः
जुगूहिथ	जुगुहथुः	जुगुह	म० पु०	गुह्याः	गुह्यास्तम्	गुह्यास्त
जुगूह	जुगुहिव	जुगुहिम	उ० पु०	गुह्यासम्	गुह्यास्व	गुह्यास्म
तादि (१)				**तादि (२)**		
गूहिता	गूहितारौ	गूहितारः	प्र० पु०	गोढा	गोढारौ	गोढारः
गूहितासि	गूहितास्थः	गूहितास्थ	म० पु०	गोढासि	गोढास्थः	गोढास्थ
गूहितास्मि	गूहितास्वः	गूहितास्मः	उ० पु०	गोढास्मि	गोढास्वः	गोढास्मः
स्यत्यादि (१)				**स्यत्यादि (२)**		
गूहिष्यति	गूहिष्यतः	गूहिष्यन्ति	प्र० पु०	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
गूहिष्यसि	गूहिष्यथः	गूहिष्यथ	म० पु०	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
गूहिष्यामि	गूहिष्यावः	गूहिष्यामः	उ० पु०	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः
स्यदादि (१)				**स्यदादि (२)**		
अगूहिष्यत्	अगूहिष्यताम्	अगूहिष्यन्	प्र० पु०	अधोक्ष्यत्	अधोक्ष्यताम्	अधोक्ष्यन्
अगूहिष्यः	अगूहिष्यतम्	अगूहिष्यत	म० पु०	अधोक्ष्यः	अधोक्ष्यतम्	अधोक्ष्यत
अगूहिष्यम्	अगूहिष्याव	अगूहिष्याम	उ० पु०	अधोक्ष्यम्	अधोक्ष्याव	अधोक्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि **यादादि**

गूहते	गूहेते	गूहन्ते	प्र० पु०	गूहेत	गूहेयाताम्	गूहेरन्
गूहसे	गूहेथे	गूहध्वे	म० पु०	गूहेथाः	गूहेयाथाम्	गूहेध्वम्
गूहे	गूहावहे	गूहामहे	उ० पु०	गूहेय	गूहेवहि	गूहेमहि

तुबादि **दिबादि**

गूहताम्	गूहेताम्	गूहन्ताम्	प्र० पु०	अगूहत	अगूहेताम्	अगूहन्त
गूहस्व	गूहेथाम्	गूहध्वम्	म० पु०	अगूहथाः	अगूहेथाम्	अगूहध्वम्
गूहै	गूहावहै	गूहामहै	उ० पु०	अगूहे	अगूहावहि	अगूहामहि

सादि (१)

अगूहिष्ट	अगूहिषाताम्	अगूहिषत	प्र० पु०
अगूहिष्ठाः	अगूहिषाथाम्	अगूहिढ्वम्, अगूहिध्वम्	म० पु०
अगूहिषि	अगूहिष्वहि	अगूहिष्महि	उ० पु०

सादि (२)

अगूढ, अघुक्षत	अघुक्षाताम्	अघुक्षन्त	प्र० पु०
अगूढाः, अघुक्षथाः	अघुक्षाथाम्	अघुक्षध्वम्, अघूढ्वम्	म० पु०
अघुक्षि	अगुह्वहि, अघुक्षावहि	अघुक्षामहि	उ० पु०

णबादि **क्र्यादादि (१)**

जुगुहे	जुगुहाते	जुगुहिरे	प्र० पु०	गूहिषीष्ट	गूहिषीयास्ताम्	गूहिषीरन्
जुगुहिषे	जुगुहाथे	जुगुहिध्वे, जुगुहिढ्वे	म. पु०	गूहिषीष्ठाः	गूहिषीयास्थाम्	गूहिषीध्वम्
जुगुहे	जुगुहिवहे	जुगुहिमहे	उ० पु०	गूहिषीय	गूहिषीवहि	गूहिषीमहि

क्र्यादादि (२) **तादि (१)**

घुक्षीष्ट	घुक्षीयास्ताम्	घुक्षीरन्	प्र० पु०	गूहिता	गूहितारौ	गूहितारः
घुक्षीष्ठाः	घुक्षीयास्थाम्	घुक्षीध्वम्	म० पु०	गूहितासे	गूहितासाथे	गूहिताध्वे
घुक्षीय	घुक्षीवहि	घुक्षीमहि	उ० पु०	गूहिताहे	गूहितास्वहे	गूहितास्महे

तादि (२) **स्यत्यादि (१)**

गोढा	गोढारौ	गोढारः	प्र० पु०	गूहिष्यते	गूहिष्येते	गूहिष्यन्ते
गोढासे	गोढासाथे	गोढाध्वे	म० पु०	गूहिष्यसे	गूहिष्येथे	गूहिष्यध्वे
गोढाहे	गोढास्वहे	गोढास्महे	उ० पु०	गूहिष्ये	गूहिष्यावहे	गूहिष्यामहे

स्यत्यादि (२) **स्यदादि (१)**

घोक्ष्यते	घोक्ष्येते	घोक्ष्यन्ते	प्र० पु०	अगूहिष्यत	अगूहिष्येताम्	अगूहिष्यन्त
घोक्ष्यसे	घोक्ष्येथे	घोक्ष्यध्वे	म० पु०	अगूहिष्यथाः	अगूहिष्येथाम्	अगूहिष्यध्वम्
घोक्ष्ये	घोक्ष्यावहे	घोक्ष्यामहे	उ० पु०	अगूहिष्ये	अगूहिष्यावहि	अगूहिष्यामहि

स्यदादि (२)

अघोक्ष्यत	अघोक्ष्येताम्	अघोक्ष्यन्त	प्र० पु०
अघोक्ष्यथाः	अघोक्ष्येथाम्	अघोक्ष्यध्वम्	म० पु०
अघोक्ष्ये	अघोक्ष्यावहि	अघोक्ष्यामहि	उ० पु०

७६. यजंन् – देवपूजासंगतिकरणदानेषु (उभयपदी) देवपूजा करना, संगति करना और देना।

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
यजति	यजतः	यजन्ति	प्र० पु०	यजेत्	यजेताम्	यजेयुः
यजसि	यजथः	यजथ	म० पु०	यजेः	यजेतम्	यजेत
यजामि	यजावः	यजामः	उ० पु०	यजेयम्	यजेव	यजेम
तुबादि				**दिबादि**		
यजतु, यजतात्	यजताम्	यजन्तु	प्र० पु०	अयजत्	अयजताम्	अयजन्
यज, यजतात्	यजतम्	यजत	म० पु०	अयजः	अयजतम्	अयजत
यजानि	यजाव	यजाम	उ० पु०	अयजम्	अयजाव	अयजाम
ञादि				**णबादि**		
अयाक्षीत्	अयाष्टाम्	अयाक्षुः	प्र० पु०	इयाज	ईजतुः	ईजुः
अयाक्षीः	अयाष्टम्	अयाष्ट	म० पु०	इयजिथ, इयष्ठ	ईजथुः	ईज
अयाक्षम्	अयाक्ष्व	अयाक्ष्म	उ० पु०	इयाज, इयज	ईजिव	ईजिम
क्यादादि				**तादि**		
इज्यात्	इज्यास्ताम्	इज्यासुः	प्र० पु०	यष्टा	यष्टारौ	यष्टारः
इज्याः	इज्यास्तम्	इज्यास्त	म० पु०	यष्टासि	यष्टास्थः	यष्टास्थ
इज्यासम्	इज्यास्व	इज्यास्म	उ० पु०	यष्टास्मि	यष्टास्वः	यष्टास्मः
स्त्यादि				**स्यदादि**		
यक्ष्यति	यक्ष्यतः	यक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अयक्ष्यत्	अयक्ष्यताम्	अयक्ष्यन्
यक्ष्यसि	यक्ष्यथः	यक्ष्यथ	म० पु०	अयक्ष्यः	अयक्ष्यतम्	अयक्ष्यत
यक्ष्यामि	यक्ष्यावः	यक्ष्यामः	उ० पु०	अयक्ष्यम्	अयक्ष्याव	अयक्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
यजते	यजेते	यजन्ते	प्र० पु०	यजेत	यजेयाताम्	यजेरन्
यजसे	यजेथे	यजध्वे	म० पु०	यजेथाः	यजेयाथाम्	यजेध्वम्
यजे	यजावहे	यजामहे	उ० पु०	यजेय	यजेवहि	यजेमहि

तुबादि				दिबादि		
यजताम्	यजेताम्	यजन्ताम्	प्र० पु० अयजत	अयजेताम्	अयजन्त
यजस्व	यजेथाम्	यजध्वम्	म० पु० अयजथाः	अयजेथाम्	अयजध्वम्
यजै	यजावहै	यजामहै	उ० पु० अयजे	अयजावहि	अयजामहि

ष्ठादि			णबादि		
अयष्ट	अयक्षाताम्	अयक्षत	प्र० पु० ईजे	ईजाते	ईजिरे
अयष्ठाः	अयक्षाथाम्	अयड्ढ्वम्, अयग्ढ्वम्	म० पु० ईजिषे	ईजाथे	ईजिध्वे
अयक्षि	अयक्ष्वहि	अयक्ष्महि	उ० पु० ईजे	ईजिवहे	ईजिमहे

क्यादादि			तादि		
यक्षीष्ट	यक्षीयास्ताम्	यक्षीरन्	प्र० पु० यष्टा	यष्टारौ	यष्टारः
यक्षीष्ठाः	यक्षीयास्थाम्	यक्षीध्वम्	म० पु० यष्टासे	यष्टासाथे	यष्टाध्वे
यक्षीय	यक्षीवहि	यक्षीमहि	उ० पु० यष्टाहे	यष्टास्वहे	यष्टास्महे

स्यत्यादि			स्यदादि		
यक्ष्यते	यक्ष्येते	यक्ष्यन्ते	प्र० पु० अयक्ष्यत	अयक्ष्येताम्	अयक्ष्यन्त
यक्ष्यसे	यक्ष्येथे	यक्ष्यध्वे	म० पु० अयक्ष्यथाः	अयक्ष्येथाम्	अयक्ष्यध्वम्
यक्ष्ये	यक्ष्यावहे	यक्ष्यामहे	उ० पु० अयक्ष्ये	अयक्ष्यावहि	अयक्ष्यामहि

७७. वेंन्—तन्तुसन्ताने (उभयपदी) सीना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
वयति	वयतः	वयन्ति	प्र० पु०	वयेत्	वयेताम्	वयेयुः
वयसि	वयथः	वयथ	म० पु०	वयेः	वयेतम्	वयेत
वयामि	वयावः	वयामः	उ० पु०	वयेयम्	वयेव	वयेम

तुबादि				दिबादि		
वयतु, वयतात्	वयताम्	वयन्तु	प्र० पु०	अवयत्	अवयताम्	अवयन्
वय, वयतात्	वयतम्	वयत	म० पु०	अवयः	अवयतम्	अवयत
वयानि	वयाव	वयाम	उ० पु०	अवयम्	अवयाव	अवयाम

ष्ठादि			णबादि (१)			
अवासीत्	अवासिष्टाम्	अवासिषुः	प्र० पु०	उवाय	ऊयतुः	ऊयुः
अवासीः	अवासिष्टम्	अवासिष्ट	म० पु०	उवयिथ	ऊयथुः	ऊय
अवासिषम्	अवासिष्व	अवासिष्म	उ० पु०	उवाय, उवय	ऊयिव	ऊयिम

णबादि (२)

ववौ	ववतुः	ववुः	प्र० पु०	ववौ	ऊवतुः	ऊवुः
ववित्थ, ववाथ	ववथुः	वव	म० पु०	ववित्थ, ववाथ	ऊवथुः	ऊव
ववौ	विव	विम	उ० पु०	ववौ	ऊविव	ऊविम

क्यादादि **तादि**

ऊयात्	ऊयास्ताम्	ऊयासुः	प्र० पु०	वाता	वातारौ	वातारः
ऊयाः	ऊयास्तम्	ऊयास्त	म० पु०	वातासि	वातास्थः	वातास्थ
ऊयासम्	ऊयास्व	ऊयास्म	उ० पु०	वातास्मि	वातास्वः	वातास्मः

स्त्यादि **स्यदादि**

वास्यति	वास्यतः	वास्यन्ति	प्र० पु०	अवास्यत्	अवास्यताम्	अवास्यन्
वास्यसि	वास्यथः	वास्यथ	म० पु०	अवास्यः	अवास्यतम्	अवास्यत
वास्यामि	वास्यावः	वास्यामः	उ० पु०	अवास्यम्	अवास्याव	अवास्याम

आत्मनेपद

तिबादि **यजादि**

वयते	वयेते	वयन्ते	प्र० पु०	वयेत	वयेयाताम्	वयेरन्
वयसे	वयेथे	वयध्वे	म० पु०	वयेथाः	वयेयाथाम्	वयेध्वम्
वये	वयावहे	वयामहे	उ० पु०	वयै	वयावहै	वयामहै

तुदादि **दिवादि**

वयताम्	वयेताम्	वयन्ताम्	प्र० पु०	अवयत	अवयेताम्	अवयन्त
वयस्व	वयेथाम्	वयध्वम्	म० पु०	अवयथाः	अवयेथाम्	अवयध्वम्
वयै	वयावहै	वयामहै	उ० पु०	अवये	अवयावहि	अवयामहि

द्यादि **णबादि (१)**

अवास्त	अवासाताम्	अवासत	प्र० पु०	ऊये	ऊयाते	ऊयिरे
अवास्थाः	अवासाथाम्,	अवाद्ध्वम् अवाध्वम्	म० पु०	ऊयिषे	ऊयाथे	ऊयिध्वे ऊयिढ्वे
अवासि	अवास्वहि	अवास्महि	उ० पु०	ऊये	ऊयिवहे	ऊयिमहे

णबादि (२) **णबादि (३)**

ववे	ववाते	वविरे	प्र० पु०	ऊवे	ऊवाते	ऊविरे
वविषे	ववाथे	वविध्वे, वविढ्वे	म० पु०	ऊविषे	ऊवाथे	ऊविध्वे, ऊविढ्वे
ववे	विवहे	विमहे	उ० पु०	ऊवे	ऊविवहे	ऊविमहे

क्यादादि **तादि**

वासीष्ट	वासीयास्ताम्	वासीरन्	प्र० पु०	वाता	वातारौ	वातारः
वासीष्ठाः	वासीयास्थाम्	वासीध्वम्	म. पु०	वातासे	वातासाथे	वाताध्वे
वासीय	वासीवहि	वासीमहि	उ० पु०	वाताहे	वातास्वहे	वातास्महे

स्यत्यादि				स्यदादि		
वास्यते	वास्येते	वास्यन्ते	प्र० पु० अवास्यत	अवास्येताम्	अवास्यन्त
वास्यसे	वास्येथे	वास्यध्वे	म० पु० अवास्यथाः	अवास्येथाम्	अवास्यध्वम्
वास्ये	वास्यावहे	वास्यामहे	उ० पु० अवास्ये	अवास्यावहि	अवास्यामहि

७८. ह्वेञ्—स्पर्धाशब्दयोः (उभयपदी) स्पर्धा और शब्द करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
ह्वयति	ह्वयतः	ह्वयन्ति	प्र० पु०	ह्वयेत्	ह्वयेताम्	ह्वयेयुः
ह्वयसि	ह्वयथः	ह्वयथ	म० पु०	ह्वयेः	ह्वयेतम्	ह्वयेत
ह्वयामि	ह्वयावः	ह्वयामः	उ० पु०	ह्वयेयम्	ह्वयेव	ह्वयेम
तुबादि				दिबादि		
ह्वयतु, ह्वयतात्	ह्वयताम्	ह्वयन्तु	प्र० पु०	अह्वयत्	अह्वयताम्	अह्वयन्
ह्वय, ह्वयतात्	ह्वयतम्	ह्वयत	म० पु०	अह्वयः	अह्वयतम्	अह्वयत
ह्वयानि	ह्वयाव	ह्वयाम	उ० पु०	अह्वयम्	अह्वयाव	अह्वयाम
द्यादि				णबादि		
आह्वत्	आह्वताम्	आह्वन्	प्र० पु०	जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः
आह्वः	आह्वतम्	आह्वत	म० पु०	जुहोथ, जुहविथ	जुहुवथुः	जुहुव
आह्वम्	आह्वाव	आह्वाम	उ० पु०	जुहाव, जुहव	जुहुविव	जुहुविम
क्र्यादि				तादि		
हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः	प्र० पु०	ह्वाता	ह्वातारौ	ह्वातारः
हूयाः	हूयास्तम्	हूयास्त	म० पु०	ह्वातासि	ह्वातास्थः	ह्वातास्थ
हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म	उ० पु०	ह्वातास्मि	ह्वातास्वः	ह्वातास्मः
स्यत्यादि				स्यदादि		
ह्वास्यति	ह्वास्यतः	ह्वास्यन्ति	प्र० पु०	अह्वास्यत्	अह्वास्यताम्	अह्वास्यन्
ह्वास्यसि	ह्वास्यथः	ह्वास्यथ	म० पु०	अह्वास्यः	अह्वास्यतम्	अह्वास्यत
ह्वास्यामि	ह्वास्यावः	ह्वास्यामः	उ० पु०	अह्वास्यम्	अह्वास्याव	अह्वास्याम

आत्मनेपद

तिबादि				यादादि		
ह्वयते	ह्वयेते	ह्वयन्ते	प्र० पु०	ह्वयेत	ह्वयेयाताम्	ह्वयेरन
ह्वयसे	ह्वयेथे	ह्वयध्वे	म० पु०	ह्वयेथाः	ह्वयेयाथाम्	ह्वयेध्वम्
ह्वये	ह्वयावहे	ह्वयामहे	उ० पु०	ह्वयै	ह्वयेवहि	ह्वयेमहि

तुबादि				दिबादि		
ह्वयताम्	ह्वयेताम्	ह्वयन्ताम्	प्र० पु०	अह्वयत	अह्वयेताम्	अह्वयन्त
ह्वयस्व	ह्वयेथाम्	ह्वयध्वम्	म० पु०	अह्वयथाः	अह्वयेथाम्	अह्वयध्वम्
ह्वयै	ह्वयावहै	ह्वयामहै	उ० पु०	अह्वये	अह्वयावहि	अह्वयामहि

द्यादि (१)				द्यादि (२)		
अह्वास्त	अह्वासाताम्	अह्वासत	प्र० पु०	अह्वत	अह्वेताम्	अह्वन्त
अह्वास्थाः	अह्वासाथाम्	अह्वाद्ध्वम्, अह्वाध्वम्	म. पु.	अह्वथाः	अह्वेथाम्	अह्वध्वम्
अह्वासि	अह्वास्वहि	अह्वास्महि	उ० पु०	अह्वे	अह्वावहि	अह्वामहि

णबादि				क्यादादि		
जुहुवे	जुहुवाते	जुहुविरे	प्र० पु०	ह्वासीष्ट	ह्वासीयास्ताम्	ह्वासीरन्
जुहुविषे	जुहुवाथे	जुहुविध्वे, जुहुविढ्वे	म० पु०	ह्वासीष्ठाः	ह्वासीयास्थाम्	ह्वासीध्वम्
जुहुवे	जुहुविवहे	जुहुविमहे	उ० पु०	ह्वासीय	ह्वासीवहि	ह्वासीमहि

तादि				स्यत्यादि		
ह्वाता	ह्वातारौ	ह्वातारः	प्र० पु०	ह्वास्यते	ह्वास्येते	ह्वास्यन्ते
ह्वातासे	ह्वातासाथे	ह्वाताध्वे	म० पु०	ह्वास्यसे	ह्वास्येथे	ह्वास्यध्वे
ह्वाताहे	ह्वातास्वहे	ह्वातास्महे	उ० पु०	ह्वास्ये	ह्वास्यावहे	ह्वास्यामहे

स्यदादि				
अह्वास्यत	अह्वास्येताम्	अह्वास्यन्त	प्र० पु०	
अह्वास्यथाः	अह्वास्येथाम्	अह्वास्यध्वम्	म० पु०	
अह्वास्ये	अह्वास्यावहि	अह्वास्यामहि	उ० पु०	

७९. टुवपंन्—बीजसन्ताने (उभयपदी) बीज बोना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
वपति	वपतः	वपन्ति	प्र० पु०	वपेत्	वपेताम्	वपेयुः
वपसि	वपथः	वपथ	म० पु०	वपेः	वपेतम्	वपेत
वपामि	वपावः	वपामः	उ० पु०	वपेयम्	वपेव	वपेम

तुबादि				दिबादि		
वपतु, वपतात्	वपताम्	वपन्तु	प्र० पु०	अवपत्	अवपताम्	अवपन्
वप, वपतात्	वपतम्	वपत	म० पु०	अवपः	अवपतम्	अवपत
वपानि	वपाव	वपाम	उ० पु०	अवपम्	अवपाव	अवपाम

द्यादि				**णबादि**				
अवाप्सीत्	अवाप्ताम्	अवाप्सुः	प्र० पु०	उवाप	ऊपतुः	ऊपुः		
अवाप्सीः	अवाप्तम्	अवाप्त	म० पु०	उवपिथ, उवप्थ	ऊपथुः	ऊप		
अवाप्सम्	अवाप्स्व	अवाप्स्म	उ० पु०	उवाप, उवप	ऊपिव	ऊपिम		
क्यादादि				**तादि**				
उप्यात्	उप्यास्ताम्	उप्यासुः	प्र० पु०	वप्ता	वप्तारौ	वप्तारः		
उप्याः	उप्यास्तम्	उप्यास्त	म० पु०	वप्तासि	वप्तास्थः	वप्तास्थ		
उप्यासम्	उप्यास्व	उप्यास्म	उ० पु०	वप्तास्मि	वप्तास्वः	वप्तास्मः		
स्यत्यादि				**स्यदादि**				
वप्स्यति	वप्स्यतः	वप्स्यन्ति	प्र० पु०	अवप्स्यत्	अवप्स्यताम्	अवप्स्यन्		
वप्स्यसि	वप्स्यथः	वप्स्यथ	म० पु०	अवप्स्यः	अवप्स्यतम्	अवप्स्यत		
वप्स्यामि	वप्स्यावः	वप्स्यामः	उ० पु०	अवप्स्यम्	अवप्स्याव	अवप्स्याम		

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
वपते	वपेते	वपन्ते	प्र० पु०	वपेत	वपेयाताम्	वपेरन्
वपसे	वपेथे	वपध्वे	म० पु०	वपेथाः	वपेयाथाम्	वपेध्वम्
वपे	वपावहे	वपामहे	उ० पु०	वपेय	वपेवहि	वपेमहि
तुबादि				**दिबादि**		
वपताम्	वपेताम्	वपन्ताम्	प्र० पु०	अवपत	अवपेताम्	अवपन्त
वपस्व	वपेथाम्	वपध्वम्	म० पु०	अवपथाः	अवपेथाम्	अवपध्वम्
वपै	वपावहै	वपामहै	उ० पु०	अवपे	अवपावहि	अवपामहि
द्यादि				**णबादि**		
अवप्त	अवप्साताम्	अवप्सत	प्र० पु०	ऊपे	ऊपाते	ऊपिरे
अवप्थाः	अवप्साथाम्	अवब्ध्वम्,अवब्द्ध्वम्	म० पु०	ऊपिषे	ऊपाथे	ऊपिध्वे
अवप्सि	अवप्स्वहि	अवप्स्महि	उ० पु०	ऊपे	ऊपिवहे	ऊपिमहे
क्यादादि				**तादि**		
वप्सीष्ट	वप्सीयास्ताम्	वप्सीरन्	प्र० पु०	वप्ता	वप्तारौ	वप्तारः
वप्सीष्ठाः	वप्सीयास्थाम्	वप्सीध्वम्	म० पु०	वप्तासे	वप्तासाथे	वप्ताध्वे
वप्सीय	वप्सीवहि	वप्सीमहि	उ० पु०	वप्ताहे	वप्तास्वहे	वप्तास्महे
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
वप्स्यते	वप्स्येते	वप्स्यन्ते	प्र० पु०	अवप्स्यत	अवप्स्येताम्	अवप्स्यन्त
वप्स्यसे	वप्स्येथे	वप्स्यध्वे	म० पु०	अवप्स्यथाः	अवप्स्येथाम्	अवप्स्यध्वम्
वप्स्ये	वप्स्यावहे	वप्स्यामहे	उ० पु०	अवप्स्ये	अवप्स्यावहि	अवप्स्यामहि

८०. प्सांक्—भक्षणे (खाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
प्साति	प्सातः	प्सान्ति	प्र० पु०	प्सायात्	प्सायाताम्	प्सायुः
प्सासि	प्साथः	प्साथ	म० पु०	प्सायाः	प्सायातम्	प्सायात
प्सामि	प्सावः	प्सामः	उ० पु०	प्सायाम्	प्सायाव	प्सायाम
तुबादि				**दिवादि**		
प्सातु, प्सातात्	प्साताम्	प्सान्तु	प्र० पु०	अप्सात्	अप्साताम्	अप्सुः, अप्सान्
प्साहि, प्सातात्	प्सातम्	प्सात	म० पु०	अप्साः	अप्सातम्	अप्सात
प्सानि	प्साव	प्साम	उ० पु०	अप्साम्	अप्साव	अप्साम
क्रादि				**णबादि**		
अप्सासीत्	अप्सासिष्टाम्	अप्सासिषुः	प्र० पु०	पप्सौ	पप्सतुः	पप्सुः
अप्सासीः	अप्सासिष्टम्	अप्सासिष्ट	म० पु०	पप्सिथ, पप्साथ	पप्सथुः	पप्स
अप्सासिषम्	अप्सासिष्व	अप्सासिष्म	उ० पु०	पप्सौ	पप्सिव	पप्सिम
क्यादादि (१)				**क्यादादि (२)**		
प्सेयात्	प्सेयास्ताम्	प्सेयासुः	प्र० पु०	प्सायात्	प्सायास्ताम्	प्सायासुः
प्सेयाः	प्सेयास्तम्	प्सेयास्त	म० पु०	प्सायाः	प्सायास्तम्	प्सायास्त
प्सेयासम्	प्सेयास्व	प्सेयास्म	उ० पु०	प्सायासम्	प्सायास्व	प्सायास्म
तादि				**स्यत्यादि**		
प्साता	प्सातारौ	प्सातारः	प्र० पु०	प्सास्यति	प्सास्यतः	प्सास्यन्ति
प्सातासि	प्सातास्थः	प्सातास्थ	म० पु०	प्सास्यसि	प्सास्यथः	प्सास्यथ
प्सातास्मि	प्सातास्वः	प्सातास्मः	उ० पु०	प्सास्यामि	प्सास्यावः	प्सास्यामः
स्यदादि						
अप्सास्यत्	अप्सास्यताम्	अप्सास्यन्	प्र० पु०			
अप्सास्यः	अप्सास्यतम्	अप्सास्यत	म० पु०			
अप्सास्यम्	अप्सास्याव	अप्सास्याम	उ० पु०			

८१. षुंक्—प्रसवैश्वर्ययोः (उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
सौति	सुतः	सुवन्ति	प्र० पु०	सुयात्	सुयाताम्	सुयुः
सौषि	सुथः	सुथ	म० पु०	सुयाः	सुयातम्	सुयात
सौमि	सुवः	सुमः	उ० पु०	सुयाम्	सुयाव	सुयाम

तुबादि					दिबादि		
सौतु, सुतात्	सुताम्	सुवन्तु	प्र० पु०	असौत्	असुताम्	असुवन्
सुहि, सुतात्	सुतम्	सुत	म० पु०	असौः	असुतम्	असुत
सवानि	सवाव	सवाम	उ० पु०	असवम्	असुव	असुम

ष्यादि					णबादि	
असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः	प्र० पु०	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः
असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट	म० पु०	सुषविथ, सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव
असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म	उ० पु०	सुषाव, सुषव	सुषुविव	सुषुविम

क्यादादि					तादि	
सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः	प्र० पु०	सोता	सोतारौ	सोतारः
सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त	म० पु०	सोतासि	सोतास्थः	सोतास्थ
सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म	उ० पु०	सोतास्मि	सोतास्वः	सोतास्मः

स्यत्यादि					स्यदादि	
सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति	प्र० पु०	असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्
सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ	म० पु०	असोष्यः	असोष्यतम्	असोष्यत
सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः	उ० पु०	असोष्यम्	असोष्याव	असोष्याम

८२. ष्वपंक्—शये (सोना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति	प्र० पु०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ	म० पु०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः	उ० पु०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

तुबादि			
स्वपितु, स्वपितात्	स्वपिताम्	स्वपिन्तु	प्र० पु०
स्वपिहि, स्वपितात्	स्वपितम्	स्वपित	म० पु०
स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम	उ० पु०

दिबादि			
अस्वपत्, अस्वपीत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्	प्र० पु०
अस्वपः, अस्वपीः	अस्वपितम्	अस्वपित	म० पु०
अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम	उ० पु०

ष्यादि					णबादि	
अस्वाप्सीत्	अस्वाप्ताम्	अस्वाप्सुः	प्र० पु०	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
अस्वाप्सीः	अस्वाप्तम्	अस्वाप्त	म० पु०	सुष्वपिथ, सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुष्वप
अस्वाप्सम्	अस्वाप्स्व	अस्वाप्स्म	उ० पु०	सुष्वाप, सुष्वप	सुषुपिव	सुषुपिम

क्यादादि				तादि		
सुप्यात्	सुप्यास्ताम्	सुप्यासुः	प्र० पु०	स्वप्ता	स्वप्तारौ	स्वप्तारः
सुप्याः	सुप्यास्तम्	सुप्यास्त	म० पु०	स्वप्तासि	स्वप्तास्थः	स्वप्तास्थ
सुप्यासम्	सुप्यास्व	सुप्यास्म	उ० पु०	स्वप्तास्मि	स्वप्तास्वः	स्वप्तास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति	प्र० पु०	अस्वप्स्यत्	अस्वप्स्यताम्	अस्वप्स्यन्
स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ	म० पु०	अस्वप्स्यः	अस्वप्स्यतम्	अस्वप्स्यत
स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः	उ० पु०	अस्वप्स्यम्	अस्वप्स्याव	अस्वप्स्याम

८३. चकासृक्—दीप्तौ (दीप्त होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
चकास्ति	चकास्तः	चकासति	प्र० पु०	चकास्यात्	चकास्याताम्	चकास्युः
चकास्सि	चकास्थः	चकास्थ	म० पु०	चकास्याः	चकास्यातम्	चकास्यात
चकास्मि	चकास्वः	चकास्मः	उ० पु०	चकास्याम्	चकास्याव	चकास्याम

तुबादि

चकास्तु, चकास्तात्	चकास्ताम्	चकासतु	प्र० पु०
चकाद्धि, चकाधि	चकास्तम्	चकास्त	म० पु०
चकासानि	चकासाव	चकासाम	उ० पु०

दिबादि

अचकात्	अचकास्ताम्	अचकासुः	प्र० पु०
अचकाः, अचकात्	अचकास्तम्	अचकास्त	म० पु०
अचकासम्	अचकास्व	अचकास्म	उ० पु०

द्यादि

अचकासीत्	अचकासिष्टाम्	अचकासिषुः	प्र० पु०
अचकासीः	अचकासिष्टम्	अचकासिष्ट	म० पु०
अचकासिषम्	अचकासिष्व	अचकासिष्म	उ० पु०

णबादि (१)

चकासाञ्चकार	चकासाञ्चक्रतुः	चकासाञ्चक्रुः	प्र० पु०
चकासाञ्चकर्थ	चकासाञ्चक्रथुः	चकासाञ्चक्र	म० पु०
चकासाञ्चकार, चकासाञ्चकर	चकासाञ्चकृव	चकासाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

चकासाम्बभूव	चकासाम्बभूवतुः	चकासाम्बभूवुः	प्र० पु०
चकासाम्बभूविथ	चकासाम्बभूवथुः	चकासाम्बभूव	म० पु०
चकासाम्बभूव	चकासाम्बभूविव	चकासाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

चकासामास	चकासामासतुः	चकासामासुः	प्र० पु०
चकासामासिथ	चकासामासथुः	चकासामास	म० पु०
चकासामास	चकासामासिव	चकासामासिम	उ० पु०

क्यादादि

चकास्यात्	चकास्यास्ताम्	चकास्यासुः	प्र० पु०
चकास्याः	चकास्यास्तम्	चकास्यास्त	म० पु०
चकास्यासम्	चकास्यास्व	चकास्यास्म	उ० पु०

तादि

चकासिता	चकासितारौ	चकासितारः	प्र० पु०
चकासितासि	चकासितास्थः	चकासितास्थ	म० पु०
चकासितास्मि	चकासितास्वः	चकासितास्मः	उ० पु०

स्यत्यादि

चकासिष्यति	चकासिष्यतः	चकासिष्यन्ति	प्र० पु०
चकासिष्यसि	चकासिष्यथः	चकासिष्यथः	म० पु०
चकासिष्यामि	चकासिष्यावः	चकासिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अचकासिष्यत्	अचकासिष्यताम्	अचकासिष्यन्	प्र० पु०
अचकासिष्यः	अचकासिष्यतम्	अचकासिष्यत	म० पु०
अचकासिष्यम्	अचकासिष्याव	अचकासिष्याम	उ० पु०

८४. शासुक् – अनुशिष्टौ (अनुशासन करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
शास्ति	शिष्टः	शासति	प्र० पु०	शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्युः
शास्सि	शिष्ठः	शिष्ठ	म० पु०	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात
शास्मि	शिष्वः	शिष्मः	उ० पु०	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम

तुवादि				दिबादि		
शास्तु, शिष्टात्	शिष्टाम्	शासतु	प्र० पु०	अशात्	अशिष्टाम्	अशासुः
शाधि, शिष्टात्	शिष्टम्	शिष्ट	म० पु०	अशाः, अशात्	अशिष्टम्	अशिष्ट
शासानि	शासाव	शासाम	उ० पु०	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म

ह्वादि				णबादि		
अशिषत्	अशिषताम्	अशिषन्	प्र० पु०	शशास	शशासतुः	शशासुः
अशिषः	अशिषतम्	अशिषत	म० पु०	शशासिथ	शशासथुः	शशास
अशिषम्	अशिषाव	अशिषाम	उ० पु०	शशास	शशासिव	शशासिम

क्र्यादि				तादि		
शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्यासुः	प्र० पु०	शासिता	शासितारौ	शासितारः
शिष्याः	शिष्यास्तम्	शिष्यास्त	म० पु०	शासितासि	शासितास्थः	शासितास्थ
शिष्यासम्	शिष्यास्व	शिष्यास्म	उ० पु०	शासितास्मि	शासितास्वः	शासितास्मः

स्यत्यादि

शासिष्यति	शासिष्यतः	शासिष्यन्ति	प्र० पु०
शासिष्यसि	शासिष्यथः	शासिष्यथ	म० पु०
शासिष्यामि	शासिष्यावः	शासिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अशासिष्यत्	अशासिष्यताम्	अशासिष्यन्	प्र० पु०
अशासिष्यः	अशासिष्यतम्	अशासिष्यत	म० पु०
अशासिष्यम्	अशासिष्याव	अशासिष्याम	उ० पु०

८५. वचंक्—भाषणे (बोलना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
वक्ति	वक्तः	वचन्ति	प्र० पु०	वच्यात्	वच्यातम्	वच्युः
वक्षि	वक्थः	वक्थ	म० पु०	वच्याः	वच्यातम्	वच्यात
वच्मि	वच्वः	वच्मः	उ० पु०	वच्याम्	वच्याव	वच्याम

तुबादि				दिबादि		
वक्तु, वक्तात्	वक्ताम्	वचन्तु	प्र० पु०	अवक्, अवग्	अवक्ताम्	अवचन्
वग्धि, वक्तात्	वक्तम्	वक्त	म० पु०	अवक्, अवग्	अवक्तम्	अवक्त
वचानि	वचाव	वचाम	उ० पु०	अवचम्	अवच्व	अवच्म

ङादि				**णबादि**		
अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्	प्र० पु०	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
अवोचः	अवोचतम्	अवोचत	म० पु०	उवचिथ, उवक्थ	ऊचथुः	ऊच
अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम	उ० पु०	उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम
क्यादादि				**तादि**		
उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासुः	प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
उच्याः	उच्यास्तम्	उच्यास्त	म० पु०	वक्तासि	वक्तास्थः	वक्तास्थ
उच्यासम्	उच्यास्व	उच्यास्म	उ० पु०	वक्तास्मि	वक्तास्वः	वक्तास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्
वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ	म० पु०	अवक्ष्यः	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत
वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः	उ० पु०	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम

८६. मृजूक्—शुद्धौ (साफ करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
मार्ष्टि	मृष्टः	मृजन्ति, मार्जन्ति	प्र० पु०	मृज्यात्	मृज्याताम्	मृज्युः
मार्क्षि	मृष्ठः	मृष्ठ	म० पु०	मृज्याः	मृज्यातम्	मृज्यात
मार्ज्मि	मृज्वः	मृज्मः	उ० पु०	मृज्याम्	मृज्याव	मृज्याम

तुबादि

मार्ष्टु, मृष्टात्	मृष्टाम्	मार्जन्तु, मृजन्तु	प्र० पु०
मृड्ढि, मृष्टात्	मृष्टम्	मृष्ट	म० पु०
मार्जानि	मार्जाव	मार्जाव	उ० पु०

दिबादि

अमार्ट्, अर्माड्	अमृष्टाम्	अमार्जन्, अमृजन्	प्र० पु०
अमार्ट्, अर्माड्	अमृष्टम्	अमृष्ट	म० पु०
अमार्जम्	अमृज्व	अमृज्म	उ० पु०

ङादि (१)				**ङादि (२)**		
अमार्क्षीत्	अमार्ष्टाम्	अमार्क्षुः	प्र० पु०	अमार्जीत्	अमार्जिष्टाम्	अमार्जिषुः
अमार्क्षीः	अमार्ष्टम्	अमार्ष्ट	म० पु०	अमार्जीः	अमार्जिष्टम्	अमार्जिष्ट
अमार्क्षम्	अमार्क्ष्व	अमार्क्ष्म	उ० पु०	अमार्जिषम्	अमार्जिष्व	अमार्जिष्म

णबादि

ममार्ज	ममार्जतुः, ममृजतुः	ममार्जुः, ममृजुः	प्र० पु०
ममार्जिथ	ममार्जथुः, ममृजथुः	ममार्ज, ममृज	म० पु०
ममार्ज	ममार्जिव, ममृजिव	ममार्जिम, ममृजिम	उ० पु०

क्यादादि **तादि (१)**

मृज्यात्	मृज्यास्ताम्	मृज्यासुः	प्र० पु० माष्टा	माष्टारौ	माष्टारः
मृज्याः	मृज्यास्तम्	मृज्यास्त	म० पु० माष्टासि	माष्टास्थः	माष्टास्थ
मृज्यासम्	मृज्यास्व	मृज्यास्म	उ० पु० माष्टास्मि	माष्टास्वः	माष्टास्मः

तादि (२) **स्यत्यादि (१)**

मार्जिता	मार्जितारौ	मार्जितारः	प्र० पु० मार्क्ष्यति	मार्क्ष्यतः	मार्क्ष्यन्ति
मार्जितासि	मार्जितास्थः	मार्जितास्थ	म० पु० मार्क्ष्यसि	मार्क्ष्यथः	मार्क्ष्यथ
मार्जितास्मि	मार्जितास्वः	मार्जितास्मः	उ० पु० मार्क्ष्यामि	मार्क्ष्यावः	मार्क्ष्यामः

स्यत्यादि (२) **स्यदादि (१)**

मार्जिष्यति	मार्जिष्यतः	मार्जिष्यन्ति	प्र० पु० अमार्क्ष्यत्	अमार्क्ष्यताम्	अमार्क्ष्यन्
मार्जिष्यसि	मार्जिष्यथः	मार्जिष्यथ	म० पु० अमार्क्ष्यः	अमार्क्ष्यतम्	अमार्क्ष्यत
मार्जिष्यामि	मार्जिष्यावः	मार्जिष्यामः	उ० पु० अमार्क्ष्यम्	अमार्क्ष्याव	अमार्क्ष्याम

स्यदादि (२)

अमार्जिष्यत्	अमार्जिष्यताम्	अमार्जिष्यन्	प्र० पु०
अमार्जिष्यः	अमार्जिष्यतम्	अमार्जिष्यत	म० पु०
अमार्जिष्यम्	अमार्जिष्याव	अमार्जिष्याम	उ० पु०

८७. इंङ्क्—अध्ययने (अध्ययन करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
अधीते	अधीयाते	अधीयते	प्र. पु.	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे	म. पु.	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
अधीये	अधीवहे	अधीमहे	उ. पु.	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि
तुबादि				**दिबादि**		
अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्	प्र० पु०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्	म० पु०	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै	उ० पु०	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि
द्यादि (१)				**द्यादि (२)**		
अध्यगीष्ट	अध्यगीषाताम्	अध्यगीषत	प्र० पु०	अध्यैष्ट	अध्यैषाताम्	अध्यैषत
अध्यगीष्ठाः	अध्यगीषाथाम्	अध्यगीढ्वम्	म० पु०	अध्यैष्ठाः	अध्यैषाथाम्	अध्यैढ्वम्
अध्यगीषि	अध्यगीष्वहि	अध्यगीष्महि	उ० पु०	अध्यैषि	अध्यैष्वहि	अध्यैष्महि

शबादि

अधिजगे	अधिजगाते	अधिजगिरे	प्र० पु०
अधिजगिषे	अधिजगाथे	अधिजगिध्वे	म० पु०
अधिजगे	अधिजगिवहे	अधिजगिमहे	उ० पु०

क्र्यादि **तादि**

अध्येषीष्ट	अध्येषीयास्ताम्	अध्येषीरन्	प्र० पु०	अध्येता	अध्येतारौ	अध्येतारः
अध्येषीष्ठाः	अध्येषीयास्थाम्	अध्येषीढ्वम्	म० पु०	अध्येतासे	अध्येतासाथे	अध्येताध्वे
अध्येषीय	अध्येषीवहि	अध्येषीमहि	उ० पु०	अध्येताहे	अध्येतास्वहे	अध्येतास्महे

स्यत्यादि

अध्येष्यते	अध्येष्येते	अध्येष्यन्ते	प्र० पु०
अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे	म० पु०
अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यामहे	उ० पु०

स्यदादि (१)

अध्यगीष्यत	अध्यगीष्येताम्	अध्यगीष्यन्त	प्र० पु०
अध्यगीष्यथाः	अध्यगीष्येथाम्	अध्यगीष्यध्वम्	म० पु०
अध्यगीष्ये	अध्यगीष्यावहि	अध्यगीष्यामहि	उ० पु०

स्यदादि (२)

अध्यैष्यत	अध्यैष्येताम्	अध्यैष्यन्त	प्र० पु०
अध्यैष्यथाः	अध्यैष्येथाम्	अध्यैष्यध्वम्	म० पु०
अध्यैष्ये	अध्यैष्यावहि	अध्यैष्यामहि	उ० पु०

८८. षूङ्क्—प्राणिगर्भविमोचने (उत्पन्न होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
सूते	सुवाते	सुवते	प्र० पु०	सुवीत	सुवीयाताम्	सुवीरन्
सूषे	सुवाथे	सूध्वे	म० पु०	सुवीथाः	सुवीयाथाम्	सुवीध्वम्
सुवे	सूवहे	सूमहे	उ० पु०	सुवीय	सुवीवहि	सुवीमहि
तुवादि				**दिवादि**		
सूताम्	सुवाताम्	सुवताम्	प्र० पु०	असूत	असुवाताम्	असुवत
सूष्व	सुवाथाम्	सूध्वम्	म० पु०	असूथाः	असुवाथाम्	असूध्वम्
सुवै	सुवावहै	सुवामहै	उ० पु०	असुवि	असूवहि	असूमहि

स्यादि (१)

असविष्ट	असविषाताम्	असविषत	प्र० पु०
असविष्ठाः	असविषाथाम्	असविढ्वम्, असविध्वम्	म० पु०
असविषि	असविष्वहि	असविष्महि	उ० पु०

ह्यादि (२)

असोष्ट	असोषाताम्	असोषत	प्र० पु०
असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोढ्वम्, असोध्वम्	म० पु०
असोषि	असोष्वहि	असोष्महि	उ० पु०

णबादि

सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे	प्र० पु०
सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे, सुषुविढ्वे	म० पु०
सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे	उ० पु०

क्र्यादादि (१)

सविषीष्ट	सविषीयास्ताम्	सविषीरन्	प्र० पु०
सविषीष्ठाः	सविषीयास्थाम्	सविषीढ्वम्, सविषीध्वम्	म० पु०
सविषीय	सविषीवहि	सविषीमहि	उ० पु०

क्र्यादादि (२)

सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्	प्र० पु०
सोषीष्ठाः	सोषीयास्थाम्	सोषीढ्वम्, सोषीध्वम्	म० पु०
सोषीय	सोषीवहि	सोषीमहि	उ० पु०

तादि (१)

सविता	सवितारौ	सवितारः	प्र० पु०
सवितासे	सवितासाथे	सविताध्वे	म० पु०
सविताहे	सवितास्वहे	सवितास्महे	उ० पु०

तादि (२)

सोता	सोतारौ	सोतारः	प्र० पु०
सोतासे	सोतासाथे	सोताध्वे	म० पु०
सोताहे	सोतास्वहे	सोतास्महे	उ० पु०

स्यत्यादि (१)

सविष्यते	सविष्येते	सविष्यन्ते	प्र० पु०
सविष्यसे	सविष्येथे	सविष्यध्वे	म० पु०
सविष्ये	सविष्यावहे	सविष्यामहे	उ० पु०

स्यत्यादि (२)

सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते	प्र० पु०
सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे	म० पु०
सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे	उ० पु०

स्यदादि (१)

असविष्यत	असविष्येताम्	असविष्यन्त	प्र. पु.
असविष्यथाः	असविष्येथाम्	असविष्यध्वम्	म. पु.
असविष्ये	असविष्यावहि	असविष्यामहि	उ. पु.

स्यदादि (२)

असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यन्त	प्र. पु.
असोष्यथाः	असोष्येथाम्	असोष्यध्वम्	म. पु.
असोष्ये	असोष्यावहि	असोष्याम	उ. पु.

८९. ईडङ्क्—स्तुतौ (स्तुति करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
ईट्टे	ईडाते	ईडते	प्र० पु०	ईडीत	ईडीयाताम्	ईडीरन्
ईडिषे	ईडाथे	ईडिध्वे	म० पु०	ईडीथाः	ईडीयाथाम्	ईडीध्वम्
ईडे	ईड्वहे	ईड्महे	उ० पु०	ईडीय	ईडीवहि	ईडीमहि

तुवादि				दिवादि		
ईट्टाम्	ईडाताम्	ईडताम्	प्र० पु०	ऐट्ट	ऐडाताम्	ऐडत
ईडिष्व	ईडाथाम्	ईडिढ्वम्	म० पु०	ऐट्ठाः	ऐडाथाम्	ऐड्ढ्वम्
ईडे	ईडावहै	ईडामहै	उ० पु०	ऐडिषि	ऐड्वहि	ऐड्महि

सादि

ऐडिष्ट	ऐडिषाताम्	ऐडिषत	प्र० पु०
ऐडिष्ठाः	ऐडिषाथाम्	ऐडिढ्वम्, ऐडिढ्वम्	म० पु०
ऐडिषि	ऐडिष्वहि	ऐडिष्महि	उ० पु०

णबादि (१)

ईडाञ्चक्रे	ईडाञ्चक्राते	ईडाञ्चक्रिरे	प्र० पु०
ईडाञ्चकृषे	ईडाञ्चक्राथे	ईडाञ्चकृढ्वे	म० पु०
ईडाञ्चक्रे	ईडाञ्चकृवहे	ईडाञ्चकृमहे	उ० पु०

णबादि (२) **णबादि (३)**

ईडाम्बभूव ईडाम्बभूवतुः ईडाम्बभूवुः प्र० पु० ईडामास ईडामासतुः ईडामासुः
ईडाम्बभूविथ ईडाम्बभूवथुः ईडाम्बभूव म० पु० ईडामासिथ ईडामासथुः ईडामास
ईडाम्बभूव ईडाम्बभूविव ईडाम्बभूविम उ० पु० ईडामास ईडामासिव ईडामासिम

क्यादादि				स्यत्यादि		
ईडिषीष्ट	ईडिषीयास्ताम्	ईडिषीरन्	प्र० पु०	ईडिष्यते	ईडिष्येते	ईडिष्यन्ते
ईडिषीष्ठाः	ईडिषीयास्थाम्	ईडिषीध्वम्	म० पु०	ईडिष्यसे	ईडिष्येथे	ईडिष्यध्वे
ईडिषीय	ईडिषीवहि	ईडिषीमहि	उ० पु०	ईडिष्ये	ईडिष्यावहे	ईडिष्यामहे

स्मदादि

ऐडिष्यत	ऐडिष्येताम्	ऐडिष्यन्त	प्र० पु०
ऐडिष्यथाः	ऐडिष्येथाम्	ऐडिष्यध्वम्	म० पु०
ऐडिष्ये	ऐडिष्यावहि	ऐडिष्यामहि	उ० पु०

९०. चक्षङ्क्—व्यक्तायां वाचि (बोलना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
आचष्टे	आचक्षाते	आचक्षते	प्र० पु०	आचक्षीत	आचक्षीयाताम्	आचक्षीरन्
आचक्षे	आचक्षाथे	आचड्ढ्वे	म० पु०	आचक्षीथाः	आचक्षीयाथाम्	आचक्षीध्वम्
आचक्षे	आचक्ष्वहे	आचक्ष्महे	उ० पु०	आचक्षीय	आचक्षीवहि	आचक्षीमहि

तुवादि				दिवादि			
आचष्टाम्	आचक्षाताम्	आचक्षताम्	प्र० पु०	आचष्ट	आचक्षाताम्	आचक्षत
आचक्ष्व	आचक्षाथाम्	आचड्ढ्वम्	म० पु०	आचष्ठाः	आचक्षाथाम्	आचड्ढ्वम्
आचक्षै	आचक्षावहै	आचक्षामहै	उ० पु०	आचक्षि	आचक्ष्वहि	आचक्ष्महि

द्यादि (१)

आक्शासीत्	आक्शासिष्टाम्	आक्शासिषुः	प्र० पु०
आक्शासीः	आक्शासिष्टम्	आक्शासिष्ट	म० पु०
आक्शासिषम्	आक्शासिष्व	आक्शासिष्म	उ० पु०

द्यादि (२)

आक्ष्शासीत्	आक्ष्शासिष्टाम्	आक्ष्शासिषुः	प्र० पु०
आक्ष्शासीः	आक्ष्शासिष्टम्	आक्ष्शासिष्ट	म० पु०
आक्ष्शासिषम्	आक्ष्शासिष्व	आक्ष्शासिष्म	उ० पु०

द्यादि (३)

आक्शास्त	आक्शासाताम्	आक्शासत	प्र० पु०
आक्शास्थाः	आक्शासाथाम्	आक्शाद्ध्वम्, आक्शाध्वम्	म० पु०
आक्शासि	आक्शास्वहि	आक्शास्महि	उ० पु०

द्यादि (४)

आक्ष्शास्त	आक्ष्शासाताम्	आक्ष्शासत	प्र० पु०
आक्ष्शास्थाः	आक्ष्शासाथाम्	आक्ष्शाद्ध्वम्, आक्ष्शाध्वम्	म० पु०
आक्ष्शासि	आक्ष्शास्वहि	आक्ष्शास्महि	उ० पु०

द्यादि (५)				**द्यादि (६)**		
आख्यत्	आख्यताम्	आख्यन्	प्र० पु०	आख्यत	आख्येताम्	आख्यन्त
आख्यः	आख्यतम्	आख्यत	म० पु०	आख्यथाः	आख्येथाम्	आख्यध्वम्
आख्यम्	आख्याव	आख्याम	उ० पु०	आख्ये	आख्यावहि	आख्यामहि

णबादि (१)

आचक्शौ	आचक्शतुः	आचक्शुः	प्र० पु०
आचक्शिथ, आचक्शाथ	आचक्शथुः	आचक्श	म० पु०
आचक्शौ	आचक्शिव	आचक्शिम	उ० पु०

णबादि (२)

आचक्ष्शौ	आचक्ष्शतुः	आचक्ष्शुः	प्र० पु०
आचक्ष्शिथ, आचक्ष्शाथ	आचक्ष्शथुः	आचक्ष्श	म० पु०
आचक्ष्शौ	आचक्ष्शिव	आचक्ष्शिम	उ० पु०

णबादि (३)

आचक्शे	आचक्शाते	आचक्शिरे	प्र० पु०
आचक्शिषे	आचक्शाथे	आचक्शिध्वे	म० पु०
आचक्शे	आचक्शिवहे	आचक्शिमहे	उ० पु०

णबादि (४)

प्र० पु० आचक्ष्शे	आचक्ष्शाते	आचक्ष्शिरे	
म० पु० आचक्ष्शिषे	आचक्ष्शाथे	आचक्ष्शिध्वे	
उ० पु० आचक्ष्शे	आचक्ष्शिवहे	आचक्ष्शिमहे	

णबादि (५)

आचख्यौ	आचख्यतुः	आचख्युः	प्र० पु०
आचख्यिथ, आचख्याथ	आचख्यथुः	आचख्य	म० पु०
आचख्यौ	आचख्यिव	आचख्यिम	उ० पु०

णबादि (६)

आचख्ये	आचख्याते	आचख्यिरे	प्र० पु०
आचख्यिषे	आचख्याथे	आचख्यिध्वे, आचख्यिढ्वे	म० पु०
आचख्ये	आचख्यिवहे	आचख्यिमहे	उ० पु०

णबादि (७)

आचचक्षे	आचचक्षाते	आचचक्षिरे	प्र० पु०
आचचक्षिषे	आचचक्षाथे	आचचक्षिध्वे, आचचक्षिढ्वे	म० पु०
आचचक्षे	आचचक्षिवहे	आचचक्षिमहे	उ० पु०

क्यादादि (१)

आक्शायात्	आक्शायास्ताम्	आक्शायासुः	प्र० पु०
आक्शायाः	आक्शायास्तम्	आक्शायास्त	म० पु०
आक्शायासम्	आक्शायास्व	आक्शायास्म	उ० पु०

क्यादादि (२)

आक्ष्शायात्	आक्ष्शायास्ताम्	आक्ष्शायासुः	प्र० पु०
आक्ष्शायाः	आक्ष्शायास्तम्	आक्ष्शायास्त	म० पु०
आक्ष्शायासम्	आक्ष्शायास्व	आक्ष्शायास्म	उ० पु०

क्यादादि (३)

आक्शेयात्	आक्शेयास्ताम्	आक्शेयासुः	प्र० पु०
आक्शेयाः	आक्शेयास्तम्	आक्शेयास्त	म० पु०
आक्शेयासम्	आक्शेयास्व	आक्शेयास्म	उ० पु०

क्यादादि (४)

आक्ष्शेयात्	आक्ष्शेयास्ताम्	आक्ष्शेयासुः	प्र० पु०
आक्ष्शेयाः	आक्ष्शेयास्तम्	आक्ष्शेयास्त	म० पु०
आक्ष्शेयासम्	आक्ष्शेयास्व	आक्ष्शेयास्म	उ० पु०

क्र्यादादि (५)

आख्येयात्	आख्येयास्ताम्	आख्येयासुः	प्र० पु०
आख्येयाः	आख्येयास्तम्	आख्येयास्त	म० पु०
आख्येयासम्	आख्येयास्व	आख्येयास्म	उ० पु०

क्र्यादादि (६)

आख्यायात्	आख्यायास्ताम्	आख्यायासुः	प्र० पु०
आख्यायाः	आख्यायास्तम्	आख्यायास्त	म० पु०
आख्यायासम्	आख्यायास्व	आख्यायास्म	उ० पु०

क्र्यादादि (७)

आक्शासीष्ट	आक्शासीयास्ताम्	आक्शासीरन्	प्र० पु०
आक्शासीष्ठाः	आक्शासीयास्थाम्	आक्शासीध्वम्	म० पु०
आक्शासीय	आक्शासीवहि	आक्शासीमहि	उ० पु०

क्र्यादादि (८)

आख्शासीष्ट	आख्शासीयास्ताम्	आख्शासीरन्	प्र० पु०
आख्शासीष्ठाः	आख्शासीयास्थाम्	आख्शासीध्वम्	म० पु०
आख्शासीय	आख्शासीवहि	आख्शासीमहि	उ० पु०

क्र्यादादि (९)

आख्यासीष्ट	आख्यासीयास्ताम्	आख्यासीरन्	प्र० पु०
आख्यासीष्ठाः	आख्यासीयास्थाम्	आख्यासीध्वम्	म० पु०
आख्यासीय	आख्यासीवहि	आख्यासीमहि	उ० पु०

तादि (१)

आक्शाता	आक्शातारौ	आक्शातारः	प्र० पु०
आक्शातासि	आक्शातास्थः	आक्शातास्थ	म० पु०
आक्शातास्मि	आक्शातास्वः	आक्शातास्मः	उ० पु०

तादि (२)

आख्शाता	आख्शातारौ	आख्शातारः	प्र० पु०
आख्शातासि	आख्शातास्थः	आख्शातास्थ	म० पु०
आख्शातास्मि	आख्शातास्वः	आख्शातास्मः	उ० पु०

तादि (३)

आख्याता	आख्यातारौ	आख्यातारः	प्र० पु०
आख्यातासि	आख्यातास्थः	आख्यातास्थ	म० पु०
आख्यातास्मि	आख्यातास्वः	आख्यातास्मः	उ० पु०

तादि (४)

आक्शाता	आक्शातारौ	आक्शातारः	प्र० पु०
आक्शातासे	आक्शातासाथे	आक्शाताध्वे	म० पु०
आक्शाताहे	आक्शातास्वहे	आक्शातास्महे	उ० पु०

तादि (५)

आक्शाता	आक्शातारौ	आक्शातारः	प्र० पु०
आक्शातासे	आक्शातासाथे	आक्शाताध्वे	म० पु०
आक्शाताहे	आक्शातास्वहे	आक्शातास्महे	उ० पु०

तादि (६)

आख्याता	आख्यातारौ	आख्यातारः	प्र० पु०
आख्यातासे	आख्यातासाथे	आख्याताध्वे	म० पु०
आख्याताहे	आख्यातास्वहे	आख्यातास्महे	उ० पु०

स्यत्यादि (१)

आक्शास्यति	आक्शास्यतः	आक्शास्यन्ति	प्र० पु०
आक्शास्यसि	आक्शास्यथः	आक्शास्यथ	म० पु०
आक्शास्यामि	आक्शास्यावः	आक्शास्यामः	उ० पु०

स्यत्यादि (२)

आक्शास्यति	आक्शास्यतः	आक्शास्यन्ति	प्र० पु०
आक्शास्यसि	आक्शास्यथः	आक्शास्यथ	म० पु०
आक्शास्यामि	आक्शास्यावः	आक्शास्यामः	उ० पु०

स्यत्यादि (३)

आख्यास्यति	आख्यास्यतः	आख्यास्यन्ति	प्र० पु०
आख्यास्यसि	आख्यास्यथः	आख्यास्यथ	म० पु०
आख्यास्यामि	आख्यास्यावः	आख्यास्यामः	उ० पु०

स्यत्यादि (४)

आक्शास्यते	आक्शास्येते	आक्शास्यन्ते	प्र० पु०
आक्शास्यसे	आक्शास्येथे	आक्शास्यध्वे	म० पु०
आक्शास्ये	आक्शास्यावहे	आक्शास्यामहे	उ० पु०

स्यत्यादि (५)

आक्शास्यते	आक्शास्येते	आक्शास्यन्ते	प्र० पु०
आक्शास्यसे	आक्शास्येथे	आक्शास्यध्वे	म० पु०
आक्शास्ये	आक्शास्यावहे	आक्शास्यामहे	उ० पु०

स्त्यादि (६)

आख्यास्यते	आख्यास्येते	आख्यास्यन्ते	प्र० पु०
आख्यास्यसे	आख्यास्येथे	आख्यास्यध्वे	म० पु०
आख्यास्ये	आख्यास्यावहे	आख्यास्यामहे	उ० पु०

स्यदादि (१)

आक्शास्यत्	आक्शास्यताम्	आक्शास्यन्	प्र० पु०
आक्शास्यः	आक्शास्यतम्	आक्शास्यत	म० पु०
आक्शास्यम्	आक्शास्याव	आक्शास्याम	उ० पु०

स्यदादि (२)

आख्शास्यत्	आख्शास्यताम्	आख्शास्यन्	प्र० पु०
आख्शास्यः	आख्शास्यतम्	आख्शास्यत	म० पु०
आख्शास्यम्	आख्शास्याव	आख्शास्याम	उ० पु०

स्यदादि (३)

आख्यास्यत्	आख्यास्यताम्	आख्यास्यन्	प्र० पु०
आख्यास्यः	आख्यास्यतम्	आख्यास्यत	म० पु०
आख्यास्यम्	आख्यास्याव	आख्यास्याम	उ० पु०

स्यदादि (४)

आक्शास्यत	आक्शास्येताम्	आक्शास्यन्त	प्र० पु०
आक्शास्यथाः	आक्शास्येथाम्	आक्शास्यध्वम्	म० पु०
आक्शास्ये	आक्शास्यावहि	आक्शास्यामहि	उ० पु०

स्यदादि (५)

आख्शास्यत	आख्शास्येताम्	आख्शास्यन्त	प्र० पु०
आख्शास्यथाः	आख्शास्येथाम्	आख्शास्यध्वम्	म० पु०
आख्शास्ये	आख्शास्यावहि	आख्शास्यामहि	उ० पु०

स्यदादि (६)

आख्यास्यत	आख्यास्येताम्	आख्यास्यन्त	प्र० पु०
आख्यास्यथाः	आख्यास्येथाम्	आख्यास्यध्वम्	म० पु०
आख्यास्ये	आख्यास्यावहि	आख्यास्यामहि	उ० पु०

९१. द्विषंनक्—अप्रीतौ (उभयपदी) द्वेष करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
द्वेष्टि	द्विष्टः	द्विषन्ति	प्र० पु०	द्विष्यात्	द्विष्याताम्	द्विष्युः
द्वेक्षि	द्विष्ठः	द्विष्ठ	म० पु०	द्विष्याः	द्विष्यातम्	द्विष्यात
द्वेष्मि	द्विष्वः	द्विष्मः	उ० पु०	द्विष्याम्	द्विष्याव	द्विष्याम
तुबादि				**दिबादि**		
द्वेष्टु, द्विष्टात्	द्विष्टाम्	द्विषन्तु	प्र० पु०	अद्वेट्, अद्वेड्	अद्विष्टाम्	अद्विषुः, अद्विषन्
द्विड्ढि, द्विष्टात्	द्विष्टम्	द्विष्ट	म० पु०	अद्वेट्, अद्वेड्	अद्विष्टम्	अद्विष्ट
द्वेषाणि	द्वेषाव	द्वेषाम	उ० पु०	अद्वेषम्	अद्विष्व	अद्विष्म
द्यादि				**णबादि**		
अद्विक्षत्	अद्विक्षताम्	अद्विक्षन्	प्र० पु०	दिद्वेष	दिद्विषतुः	दिद्विषुः
अद्विक्षः	अद्विक्षतम्	अद्विक्षत	म० पु०	दिद्वेषिथ	दिद्विषथुः	दिद्विष
अद्विक्षम्	अद्विक्षाव	अद्विक्षाम	उ० पु०	दिद्वेष	दिद्विषिव	दिद्विषिम
क्यादादि				**तादि**		
द्विष्यात्	द्विष्यास्ताम्	द्विष्यासुः	प्र० पु०	द्वेष्टा	द्वेष्टारौ	द्वेष्टारः
द्विष्याः	द्विष्यास्तम्	द्विष्यास्त	म० पु०	द्वेष्टासि	द्वेष्टास्थः	द्वेष्टास्थ
द्विष्यासम्	द्विष्यास्व	द्विष्यास्म	उ० पु०	द्वेष्टास्मि	द्वेष्टास्वः	द्वेष्टास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
द्वेक्ष्यति	द्वेक्ष्यतः	द्वेक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अद्वेक्ष्यत्	अद्वेक्ष्यताम्	अद्वेक्ष्यन्
द्वेक्ष्यसि	द्वेक्ष्यथः	द्वेक्ष्यथ	म० पु०	अद्वेक्ष्यः	अद्वेक्ष्यतम्	अद्वेक्ष्यत
द्वेक्ष्यामि	द्वेक्ष्यावः	द्वेक्ष्यामः	उ० पु०	अद्वेक्ष्यम्	अद्वेक्ष्याव	अद्वेक्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
द्विष्टे	द्विषाते	द्विषते	प्र० पु०	द्विषीत	द्विषीयास्ताम्	द्विषीरन्
द्विक्षे	द्विषाथे	द्विड्ढ्वे	म० पु०	द्विषीथाः	द्विषीयास्थाम्	द्विषीध्वम्
द्विषे	द्विष्वहे	द्विष्महे	उ० पु०	द्विषीय	द्विषीवहि	द्विषीमहि
तुबादि				**दिबादि**		
द्विष्टाम्	द्विषाताम्	द्विषताम्	प्र० पु०	अद्विष्ट	अद्विषाताम्	अद्विषत
द्विक्ष्व	द्विषाथाम्	द्विड्ढ्वम्	म० पु०	अद्विष्ठाः	अद्विषाथाम्	अद्विड्ढ्वम्
द्वेषै	द्वेषावहै	द्वेषामहै	उ० पु०	अद्विषि	अद्विष्वहि	अद्विष्महि

आदि				**णबादि**		
अद्विक्षत	अद्विक्षाताम्	अद्विक्षन्त	प्र० पु०	दिद्विषे	दिद्विषाते	दिद्विषिरे
अद्विक्षथाः	अद्विक्षाथाम्	अद्विक्षध्वम्	म० पु०	दिद्विषिषे	दिद्विषाथे	दिद्विषिध्वे
अद्विक्षि	अद्विक्षावहि	अद्विक्षामहि	उ० पु०	दिद्विषे	दिद्विषिवहे	दिद्विषिमहे
क्र्यादादि				**तादि**		
द्विक्षीष्ट	द्विक्षीयास्ताम्	द्विक्षीरन्	प्र० पु०	द्वेष्टा	द्वेष्टारौ	द्वेष्टारः
द्विक्षीष्ठाः	द्विक्षीयास्थाम्	द्विक्षीध्वम्	म० पु०	द्वेष्टासे	द्वेष्टासाथे	द्वेष्टाध्वे
द्विक्षीय	द्विक्षीवहि	द्विक्षीमहि	उ० पु०	द्वेष्टाहे	द्वेष्टास्वहे	द्वेष्टास्महे
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
द्वेक्ष्यते	द्वेक्ष्येते	द्वेक्ष्यन्ते	प्र० पु०	अद्वेक्ष्यत	अद्वेक्ष्येताम्	अद्वेक्ष्यन्त
द्वेक्ष्यसे	द्वेक्ष्येथे	द्वेक्ष्यध्वे	म० पु०	अद्वेक्ष्यथाः	अद्वेक्ष्येथाम्	अद्वेक्ष्यध्वम्
द्वेक्ष्ये	द्वेक्ष्यावहे	द्वेक्ष्यामहे	उ० पु०	अद्वेक्ष्ये	अद्वेक्ष्यावहि	अद्वेक्ष्यामहि

९२. लिहंन्क्—आस्वादने (उभयपदी) आस्वादन करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
लेढि	लीढः	लिहन्ति	प्र० पु०	लिह्यात्	लिह्याताम्	लिह्युः
लेक्षि	लीढः	लीढ	म० पु०	लिह्याः	लिह्यातम्	लिह्यात
लेह्मि	लिह्वः	लिह्मः	उ० पु०	लिह्याम्	लिह्याव	लिह्याम
सुबादि				**दिबादि**		
लेढु, लीढात्	लीढाम्	लिहन्तु	प्र० पु०	अलेड्, अलेट्	अलीढाम्	अलिहन्
लीढि, लीढात्	लीढम्	लीढ	म० पु०	अलेड्, अलेट्	अलीढम्	अलीढ
लेहानि	लेहाव	लेहाम	उ० पु०	अलेहम्	अलिह्व	अलिह्म
आदि				**णबादि**		
अलिक्षत्	अलिक्षताम्	अलिक्षन्	प्र० पु०	लिलेह	लिलिहतुः	लिलिहुः
अलिक्षः	अलिक्षतम्	अलिक्षत	म० पु०	लिलेहिथ	लिलिहथुः	लिलिह
अलिक्षम्	अलिक्षाव	अलिक्षाम	उ० पु०	लिलेह	लिलिहिव	लिलिहिम
क्र्यादादि				**तादि**		
लिह्यात्	लिह्यास्ताम्	लिह्यासुः	प्र० पु०	लेढा	लेढारौ	लेढारः
लिह्याः	लिह्यास्तम्	लिह्यास्त	म० पु०	लेढासि	लेढास्थः	लेढास्थ
लिह्यासम्	लिह्यास्व	लिह्यास्म	उ० पु०	लेढामि	लेढास्वः	लेढास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि		
लेक्ष्यति	लेक्ष्यतः	लेक्ष्यन्ति	प्र० पु० अलेक्ष्यत्	अलेक्ष्यताम्	अलेक्ष्यन्
लेक्ष्यसि	लेक्ष्यथः	लेक्ष्यथ	म० पु० अलेक्ष्यः	अलेक्ष्यतम्	अलेक्ष्यत
लेक्ष्यामि	लेक्ष्यावः	लेक्ष्यामः	उ० पु० अलेक्ष्यम्	अलेक्ष्याव	अलेक्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि			यादादि		
लीढे	लिहाते	लिहते	प्र० पु० लिहीत	लिहीयाताम्	लिहीरन्
लिक्षे	लिहाथे	लीढ्वे	म० पु० लिहीथाः	लिहीयाथाम्	लिहीध्वम्
लिहे	लिह्वहे	लिह्महे	उ० पु० लिहीय	लिहीवहि	लिहीमहि

तुबादि			दिबादि		
लीढाम्	लिहाताम्	लिहताम्	प्र० पु० अलीढ	अलिहाताम्	अलिहत
लिक्ष्व	लिहाथाम्	लीढ्वम्	म० पु० अलीढाः	अलिहाथाम्	अलीढ्वम्
लेहै	लेहावहै	लेहामहै	उ० पु० अलिहि	अलिह्वहि	अलिह्महि

धादि

अलीढ, अलिक्षत	अलिक्षाताम्	अलिक्षन्त	प्र० पु०
अलीढाः, अलिक्षथाः	अलिक्षाथाम्	अलीढ्वम्, अलिक्षध्वम्	म० पु०
अलिक्षि	अलिक्षावहि, अलिह्वहि	अलिक्षामहि	उ० पु०

णबादि

लिलिहे	लिलिहाते	लिलिहिरे	प्र० पु०
लिलिहिषे	लिलिहाथे	लिलिहिढ्वे, लिलिहिध्वे	म० पु०
लिलिहे	लिलिहिवहे	लिलिहिमहे	उ० पु०

क्यादादि			तादि		
लिक्षीष्ट	लिक्षीयास्ताम्	लिक्षीरन्	प्र० पु० लेढा	लेढारौ	लेढारः
लिक्षीष्ठाः	लिक्षीयास्थाम्	लिक्षीध्वम्	म० पु० लेढासे	लेढासाथे	लेढाध्वे
लिक्षीय	लिक्षीवहि	लिक्षीमहि	उ० पु० लेढाहे	लेढास्वहे	लेढास्महे

स्यत्यादि			स्यदादि		
लेक्ष्यते	लेक्ष्येते	लेक्ष्यन्ते	प्र० पु० अलेक्ष्यत	अलेक्ष्येताम्	अलेक्ष्यन्त
लेक्ष्यसे	लेक्ष्येथे	लेक्ष्यध्वे	म० पु० अलेक्ष्यथाः	अलेक्ष्येथाम्	अलेक्ष्यध्वम्
लेक्ष्ये	लेक्ष्यावहे	लेक्ष्यामहे	उ० पु० अलेक्ष्ये	अलेक्ष्यावहि	अलेक्ष्यामहि

९३. ओहांक्—त्यागे (छोडना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि			**यादादि**		
जहाति	जहितः, जहीतः	जहति	प्र० पु० जह्यात्	जह्याताम्	जह्युः
जहासि	जहिथः, जहीथः	जहिथ, जहीथ	म० पु० जह्याः	जह्यातम्	जह्यात
जहामि	जहिवः, जहीवः	जहिमः, जहीमः	उ० पु० जह्याम्	जह्याव	जह्याम

तुवादि

जहातु, जहितात्, जहीतात्	जहिताम्, जहीताम्	जहतु	प्र० पु०
जहाहि, जहिहि, जहीहि	जहितम्, जहीतम्	जहित, जहीत	म० पु०
जहानि	जहाव	जहाम	उ० पु०

दिवादि

अजहात्	अजहिताम्, अजहीताम्	अजहुः	प्र० पु०
अजहाः	अजहितम्, अजहीतम्	अजहित, अजहीत	म० पु०
अजहाम्	अजहिव, अजहीव	अजहिम, अजहीम	उ० पु०

क्र्यादि

अहासीत्	अहासिष्टाम्	अहासिषुः	प्र० पु०
अहासीः	अहासिष्टम्	अहासिष्ट	म० पु०
अहासिषम्	अहासिष्व	अहासिष्म	उ० पु०

णवादि

जहौ	जहतुः	जहुः	प्र० पु०
जहिथ, जहाथ	जहथुः	जह	म० पु०
जहौ	जहिव	जहिम	उ० पु०

क्र्यादि

हेयात्	हेयास्ताम्	हेयासुः	प्र० पु०
हेयाः	हेयास्तम्	हेयास्त	म० पु०
हेयासम्	हेयास्व	हेयास्म	उ० पु०

तादि

हाता	हातारौ	हातारः	प्र० पु०
हातासि	हातास्थः	हातास्थ	म० पु०
हातास्मि	हातास्वः	हातास्मः	उ० पु०

स्यत्यादि

हास्यति	हास्यतः	हास्यन्ति	प्र० पु०
हास्यसि	हास्यथः	हास्यथ	म० पु०
हास्यामि	हास्यावः	हास्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अहास्यत्	अहास्यताम्	अहास्यन्	प्र० पु०
अहास्यः	अहास्यतम्	अहास्यत	म० पु०
अहास्यम्	अहास्याव	अहास्याम	उ० पु०

९४. डुधांनक्—धारणे च (चकारात् दाने) धारण करना (उभयपदी)

परस्मैपद

तिबादि

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
दधाति	धत्तः	दधति
दधासि	धत्थः	धत्थ
दधामि	दध्वः	दध्मः

यादादि

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	प्र. पु.
दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	म. पु.
दध्याम्	दध्याव	दध्याम	उ. पु.

तुवादि

दधातु, धत्तात्	धत्ताम्	दधतु	प्र० पु०
धेहि, धत्तात्	धत्तम्	धत्त	म० पु०
दधानि	दधाव	दधाम	उ० पु०

दिवादि

अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	प्र० पु०
अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	म० पु०
अदधाम्	अदध्व	अदध्म	उ० पु०

द्यादि				**णबादि**		
अधात्	अधाताम्	अधुः	प्र० पु० दधौ		दधतुः	दधुः
अधाः	अधातम्	अधात	म० पु० दधिथ, दधाथ		दधथुः	दध
अधाम्	अधाव	अधाम	उ० पु० दधौ		दधिव	दधिम
क्र्यादि				**तादि**		
धेयात्	धेयास्ताम्	धेयासुः	प्र० पु० धाता		धातारौ	धातारः
धेयाः	धेयास्तम्	धेयास्त	म० पु० धातासि		धातास्थः	धातास्थ
धेयासम्	धेयास्व	धेयास्म	उ० पु० धातास्मि		धातास्वः	धातास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति	प्र० पु० अधास्यत्	अधास्यताम्		अधास्यन्
धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ	म० पु० अधास्यः	अधास्यतम्		अधास्यत
धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः	उ० पु० अधास्यम्	अधास्याव		अधास्याम

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
धत्ते	दधाते	दधते	प्र० पु० दधीत		दधीयाताम्	दधीरन्
धत्से	दधाथे	धद्ध्वे	म० पु० दधीथाः		दधीयाथाम्	दधीध्वम्
दधे	दध्वहे	दध्महे	उ० पु० दधीय		दधीवहि	दधीमहि
तुबादि				**दिबादि**		
धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्	प्र० पु० अधत्त	अदधाताम्		अदधत
धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्	म० पु० अधत्थाः	अदधाथाम्		अधद्ध्वम्
दधै	दधावहै	दधामहै	उ० पु० अदधि	अदध्वहि		अदध्महि
द्यादि				**णबादि**		
अधित	अधिषाताम्	अधिषत	प्र० पु० दधे		दधाते	दधिरे
अधिथाः	अधिषाथाम्	अधिढ्वम्	म० पु० दधिषे		दधाथे	दधिध्वे
अधिषि	अधिष्वहि	अधिष्महि	उ० पु० दधे		दधिवहे	दधिमहे
क्र्यादि				**तादि**		
धासीष्ट	धासीयास्ताम्	धासीरन्	प्र० पु० धाता		धातारौ	धातारः
धासीष्ठाः	धासीयास्थाम्	धासीध्वम्	म० पु० धातासे		धातासाथे	धाताध्वे
धासीय	धासीवहि	धासीमहि	उ० पु० धाताहे		धातास्वहे	धातास्महे
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते	प्र० पु० अधास्यत	अधास्येताम्		अधास्यन्त
धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे	म० पु० अधास्यथाः	अधास्येथाम्		अधास्यध्वम्
धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे	उ० पु० अधास्ये	अधास्यावहि		अधास्यामहि

६५. डुभृंञ्क्—पोषणे च (चकाराद् धारणे) पोषण करना (उभयपदी) परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
बिभर्ति	बिभृतः	बिभ्रति	प्र० पु०	बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयुः
बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ	म० पु०	बिभृयाः	बिभृयातम्	बिभृयात
बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः	उ० पु०	बिभृयाम्	बिभृयाव	बिभृयाम
तुबादि				**दिबादि**		
बिभर्तु, बिभृतात्	बिभृताम्	बिभ्रतु	प्र० पु०	अबिभः	अबिभृताम्	अबिभरुः
बिभृहि, बिभृतात्	बिभृतम्	बिभृत	म० पु०	अबिभः	अबिभृतम्	अबिभृत
बिभराणि	बिभराव	बिभराम	उ० पु०	अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम
सादि				**णबादि (१)**		
अभार्षीत्	अभार्ष्टाम्	अभार्षुः	प्र० पु०	बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः
अभार्षीः	अभार्ष्टम्	अभार्ष्ट	म० पु०	बभर्थ	बभ्रथुः	बभ्र
अभार्षम्	अभार्ष्व	अभार्ष्म	उ० पु०	बभार, बभर	बभृव	बभृम

णबादि (२)

बिभराञ्चकार	बिभराञ्चक्रतुः	बिभराञ्चक्रुः	प्र० पु०
बिभराञ्चकर्थ	बिभराञ्चक्रथुः	बिभराञ्चक्र	म० पु०
बिभराञ्चकार, बिभराञ्चकर	बिभराञ्चकृव	बिभराञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (३)

बिभराम्बभूव	बिभराम्बभूवतुः	बिभराम्बभूवुः	प्र० पु०
बिभराम्बभूविथ	बिभराम्बभूवथुः	बिभराम्बभूव	म० पु०
बिभराम्बभूव	बिभराम्बभूविव	बिभराम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (४)

बिभरामास	बिभरामासतुः	बिभरामासुः	प्र० पु०
बिभरामासिथ	बिभरामासथुः	बिभरामास	म० पु०
बिभरामास	बिभरामासिव	बिभरामासिम	उ० पु०

क्यादादि				**तादि**		
भ्रियात्	भ्रियास्ताम्	भ्रियासुः	प्र० पु०	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
भ्रियाः	भ्रियास्तम्	भ्रियास्त	म० पु०	भर्तासि	भर्तास्थः	भर्तास्थ
भ्रियासम्	भ्रियास्व	भ्रियास्म	उ० पु०	भर्तास्मि	भर्तास्वः	भर्तास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति	प्र० पु०	अभरिष्यत्	अभरिष्यताम्	अभरिष्यन्
भरिष्यसि	भरिष्यथः	भरिष्यथ	म० पु०	अभरिष्यः	अभरिष्यतम्	अभरिष्यत
भरिष्यामि	भरिष्यावः	भरिष्यामः	उ० पु०	अभरिष्यम्	अभरिष्याव	अभरिष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				यादादि		
बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते	प्र० पु०	बिभ्रीत	बिभ्रीयाताम्	बिभ्रीरन्
बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे	म० पु०	बिभ्रीथाः	बिभ्रीयाथाम्	बिभ्रीध्वम्
बिभ्रे	बिभृवहे	बिभृमहे	उ० पु०	बिभ्रीय	बिभ्रीवहि	बिभ्रीमहि

तुबादि				दिबादि		
बिभृताम्	बिभ्राताम्	बिभ्रताम्	प्र० पु०	अबिभृत	अबिभ्राताम्	अबिभ्रत
बिभृष्व	बिभ्राथाम्	बिभृध्वम्	म० पु०	अबिभृथाः	अबिभ्राथाम्	अबिभृध्वम्
बिभरै	बिभरावहै	बिभरामहै	उ० पु०	अबिभ्रि	अबिभृवहि	अबिभृमहि

द्यादि				णबादि		
अभृत	अभृषाताम्	अभृषत	प्र० पु०	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे
अभृथाः	अभृषाथाम्	अभृढ्वम्	म० पु०	बभृषे	बभ्राथे	बभृढ्वे
अभृषि	अभृष्वहि	अभृष्महि	उ० पु०	बभ्रे	बभृवहे	बभृमहे

क्यादादि				तादि		
भृषीष्ट	भृषीयास्ताम्	भृषीरन्	प्र० पु०	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
भृषीष्ठाः	भृषीयास्तम्	भृषीढ्वम्	म० पु०	भर्तासे	भर्तासाथे	भर्ताध्वे
भृषीय	भृषीवहि	भृषीमहि	उ० पु०	भर्ताहे	भर्तास्वहे	भर्तास्महे

स्यत्यादि				स्यदादि		
भरिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते	प्र० पु०	अभरिष्यत	अभरिष्येताम्	अभरिष्यन्त
भरिष्यसे	भरिष्येथे	भरिष्यध्वे	म० पु०	अभरिष्यथाः	अभरिष्येथाम्	अभरिष्यध्वम्
भरिष्ये	भरिष्यावहे	भरिष्यामहे	उ० पु०	अभरिष्ये	अभरिष्यावहि	अभरिष्यामहि

९६. दिवुच्—क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्ति-गतिषु (रमण करना, जीतना, व्यवहार करना, जुआ खेलना, स्तुति करना, प्रसन्न होना, मद करना, स्वप्न लेना, दीप्त होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति	प्र० पु०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ	म० पु०	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः	उ० पु०	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

तुबादि				दिबादि		
दीव्यतु,	दीव्यतात्	दीव्यताम्	दीव्यन्तु	प्र० पु० अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
दीव्य,	दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत	म० पु० अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
दीव्यानि		दीव्याव	दीव्याम	उ० पु० अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

स्वादि				णबादि		
अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः		प्र० पु० दिदेव	दिदिवतुः	दिदिवुः
अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट		म० पु० दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव
अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म		उ० पु० दिदेव	दिदिविव	दिदिविम

क्यादादि				तादि		
दीव्यात्	दीव्यास्ताम्	दीव्यासुः		प्र० पु० देविता	देवितारौ	देवितारः
दीव्याः	दीव्यास्तम्	दीव्यास्त		म० पु० देवितासि	देवितास्थः	देवितास्थ
दीव्यासम्	दीव्यास्व	दीव्यास्म		उ० पु० देवितास्मि	देवितास्वः	देवितास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति		प्र० पु० अदेविष्यत्	अदेविष्यताम्	अदेविष्यन्
देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ		म० पु० अदेविष्यः	अदेविष्यतम्	अदेविष्यत
देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः		उ० पु० अदेविष्यम्	अदेविष्याव	अदेविष्याम

९७. क्रुधंच्—कोपे (क्रोध करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
क्रुध्यति	क्रुध्यतः	क्रुध्यन्ति	प्र० पु०	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्येयुः
क्रुध्यसि	क्रुध्यथः	क्रुध्यथ	म० पु०	क्रुध्येः	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः	उ० पु०	क्रुध्येयम्	क्रुध्येव	क्रुध्येम

तुबादि				दिबादि		
क्रुध्यतु,	क्रुध्यतात्	क्रुध्यताम्	क्रुध्यन्तु	प्र० पु० अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
क्रुध्य,	क्रुध्यतात्	क्रुध्यतम्	क्रुध्यत	म० पु० अक्रुध्यः	अक्रुध्यतम्	अक्रुध्यत
क्रुध्यानि		क्रुध्याव	क्रुध्याम	उ० पु० अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	अक्रुध्याम

स्वादि				णबादि		
अक्रुधत्	अक्रुधताम्	अक्रुधन्		प्र० पु० चुक्रोध	चुक्रुधतुः	चुक्रुधुः
अक्रुधः	अक्रुधतम्	अक्रुधत		म० पु० चुक्रोधिथ	चुक्रुधथुः	चुक्रुध
अक्रुधम्	अक्रुधाव	अक्रुधाम		उ० पु० चुक्रोध	चुक्रुधिव	चुक्रुधिम

क्यादादि				तादि		
क्रुध्यात्	क्रुध्यास्ताम्	क्रुध्यासुः		प्र० पु० क्रोद्धा	क्रोद्धारौ	क्रोद्धारः
क्रुध्याः	क्रुध्यास्तम्	क्रुध्यास्त		म० पु० क्रोद्धासि	क्रोद्धास्थः	क्रोद्धास्थ
क्रुध्यासम्	क्रुध्यास्व	क्रुध्यास्म		उ० पु० क्रोद्धास्मि	क्रोद्धास्वः	क्रोद्धास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	क्रोत्स्यन्ति	प्र० पु०	अक्रोत्स्यत्	अक्रोत्स्यताम्	अक्रोत्स्यन्
क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथः	क्रोत्स्यथ	म० पु०	अक्रोत्स्यः	अक्रोत्स्यतम्	अक्रोत्स्यत
क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः	उ० पु०	अक्रोत्स्यम्	अक्रोत्स्याव	अक्रोत्स्याम

९८. हृषच्—तुष्टौ (प्रसन्न होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
हृष्यति	हृष्यतः	हृष्यन्ति	प्र० पु०	हृष्येत्	हृष्येताम्	हृष्येयुः
हृष्यसि	हृष्यथः	हृष्यथ	म० पु०	हृष्येः	हृष्येतम्	हृष्येत
हृष्यामि	हृष्यावः	हृष्यामः	उ० पु०	हृष्येयम्	हृष्येव	हृष्येम
तुबादि				**दिबादि**		
हृष्यतु, हृष्यतात्		हृष्यताम्	हृष्यन्तु	प्र० पु०	अहृष्यत्	अहृष्यताम्	अहृष्यन्
हृष्य, हृष्यतात्		हृष्यतम्	हृष्यत	म० पु०	अहृष्यः	अहृष्यतम्	अहृष्यत
हृष्याणि		हृष्याव	हृष्याम	उ० पु०	अहृष्यम्	अहृष्याव	अहृष्याम
श्यादि				**णबादि**		
अहृषत्	अहृषताम्	अहृषन्	प्र० पु०	जहर्ष	जहृषतुः	जहृषुः
अहृषः	अहृषतम्	अहृषत	म० पु०	जहर्षिथ	जहृषथुः	जहृष
अहृषम्	अहृषाव	अहृषाम	उ० पु०	जहर्ष	जहृषिव	जहृषिम
क्र्यादादि				**तादि**		
हृष्यात्	हृष्यास्ताम्	हृष्यासुः	प्र० पु०	हर्षिता	हर्षितारौ	हर्षितारः
हृष्याः	हृष्यास्तम्	हृष्यास्त	म० पु०	हर्षितासि	हर्षितास्थः	हर्षितास्थ
हृष्यासम्	हृष्यास्व	हृष्यास्म	उ० पु०	हर्षितास्मि	हर्षितास्वः	हर्षितास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
हर्षिष्यति	हर्षिष्यतः	हर्षिष्यन्ति	प्र० पु०	अहर्षिष्यत्	अहर्षिष्यताम्	अहर्षिष्यन्
हर्षिष्यसि	हर्षिष्यथः	हर्षिष्यथ	म० पु०	अहर्षिष्यः	अहर्षिष्यतम्	अहर्षिष्यत
हर्षिष्यामि	हर्षिष्यावः	हर्षिष्यामः	उ० पु०	अहर्षिष्यम्	अहर्षिष्याव	अहर्षिष्याम

९९. जनीङ्च्—प्रादुर्भावे (उत्पन्न होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
जायते	जायेते	जायन्ते	प्र० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
जायसे	जायेथे	जायध्वे	म० पु०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
जाये	जायावहे	जायामहे	उ० पु०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

तुबादि				दिबादि		
जायताम्	जायेताम्	जायेरन्	प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
जायस्व	जायेथाम्	जायेध्वम्	म० पु०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
जायै	जायावहै	जायामहै	उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

च्यादि			
अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत	प्र० पु०
अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिढ्वम्, अजनिध्वम्	म० पु०
अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि	उ० पु०

णबादि				क्यादादि		
जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे	प्र० पु०	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	जनिषीरन्
जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे	म० पु०	जनिषीष्ठाः	जनिषीयास्थाम्	जनिषीध्वम्
जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे	उ० पु०	जनिषीय	जनिषीवहि	जनिषीमहि

तादि				स्यत्यादि		
जनिता	जनितारौ	जनितारः	प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
जनितासे	जनितासाथे	जनिताध्वे	म० पु०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
जनिताहे	जनितास्वहे	जनितास्महे	उ० पु०	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

स्यदादि			
अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	अजनिष्यन्त	प्र० पु०
अजनिष्यथाः	अजनिष्येथाम्	अजनिष्यध्वम्	म० पु०
अजनिष्ये	अजनिष्यावहि	अजनिष्यामहि	उ० पु०

१००. खिदंङ्च्—दैन्ये (खिन्न होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
खिद्यते	खिद्येते	खिद्यन्ते	प्र० पु०	खिद्येत	खिद्येयाताम्	खिद्येरन्
खिद्यसे	खिद्येथे	खिद्यध्वे	म० पु०	खिद्येथाः	खिद्येयाथाम्	खिद्येध्वम्
खिद्ये	खिद्यावहे	खिद्यामहे	उ० पु०	खिद्येय	खिद्येवहि	खिद्येमहि

तुबादि				दिबादि		
खिद्यताम्	खिद्येताम्	खिद्यन्ताम्	प्र० पु०	अखिद्यत	अखिद्येताम्	अखिद्यन्त
खिद्यस्व	खिद्येथाम्	खिद्यध्वम्	म० पु०	अखिद्यथाः	अखिद्येथाम्	अखिद्यध्वम्
खिद्यै	खिद्यावहै	खिद्यामहै	उ० पु०	अखिद्ये	अखिद्यावहि	अखिद्यामहि

द्यादि					**णबादि**		
अखित्त	अखित्साताम्	अखित्सत	प्र० पु०	चिखिदे	चिखिदाते	चिखिदिरे
अखित्थाः	अखित्साथाम्	अखिद्ध्वम्	म० पु०	चिखिदिषे	चिखिदाथे	चिखिदिध्वे
अखित्सि	अखित्स्वहि	अखित्स्महि	उ० पु०	चिखिदे	चिखिदिवहे	चिखिदिमहे
क्यादादि					**तादि**		
खित्सीष्ट	खित्सीयास्ताम्	खित्सीरन्	प्र० पु०	खेत्ता	खेत्तारौ	खेत्तारः
खित्सीष्ठाः	खित्सीयास्थाम्	खित्सीध्वम्	म० पु०	खेत्तासे	खेत्तासाथे	खेत्ताध्वे
खित्सीय	खित्सीवहि	खित्सीमहि	उ० पु०	खेत्ताहे	खेत्तास्वहे	खेत्तास्महे
स्यत्यादि					**स्यदादि**		
खेत्स्यते	खेत्स्येते	खेत्स्यन्ते	प्र० पु०	अखेत्स्यत	अखेत्स्येताम्	अखेत्स्यन्त
खेत्स्यसे	खेत्स्येथे	खेत्स्यध्वे	म० पु०	अखेत्स्यथाः	अखेत्स्येथाम्	अखेत्स्यध्वम्
खेत्स्ये	खेत्स्यावहे	खेत्स्यामहे	उ० पु०	अखेत्स्ये	अखेत्स्यावहि	अखेत्स्यामहि

१०१. युधंङ्च्—सम्प्रहारे (युद्ध करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते	प्र० पु०	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे	म० पु०	युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे	उ० पु०	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि
तुबादि				**दिबादि**		
युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्	प्र० पु०	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्	म० पु०	अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै	उ० पु०	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि
द्यादि				**णबादि**		
अयुद्ध	अयुत्साताम्	अयुत्सत	प्र० पु०	युयुधे	युयुधाते	युयुधिरे
अयुद्धाः	अयुत्साथाम्	अयुद्ध्वम्	म० पु०	युयुधिषे	युयुधाथे	युयुधिध्वे
अयुत्सि	अयुत्स्वहि	अयुत्स्महि	उ० पु०	युयुधे	युयुधिवहे	युयुधिमहे
क्यादादि				**तादि**		
युत्सीष्ट	युत्सीयास्ताम्	युत्सीरन्	प्र० पु०	योद्धा	योद्धारौ	योद्धारः
युत्सीष्ठाः	युत्सीयास्थाम्	युत्सीध्वम्	म० पु०	योद्धासे	योद्धासाथे	योद्धाध्वे
युत्सीय	युत्सीवहि	युत्सीमहि	उ० पु०	योद्धाहे	योद्धास्वहे	योद्धास्महे
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते	प्र० पु०	अयोत्स्यत	अयोत्स्येताम्	अयोत्स्यन्त
योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे	म० पु०	अयोत्स्यथाः	अयोत्स्येथाम्	अयोत्स्यध्वम्
योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे	उ० पु०	अयोत्स्ये	अयोत्स्यावहि	अयोत्स्यामहि

१०२. क्लिशङ्च्—उपतापे (पीडा देना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
क्लिश्यते	क्लिश्येते	क्लिश्यन्ते	प्र० पु०	क्लिश्येत	क्लिश्येयाताम्	क्लिश्येरन्
क्लिश्यसे	क्लिश्येथे	क्लिश्यध्वे	म० पु०	क्लिश्येथाः	क्लिश्येयाथाम्	क्लिश्येध्वम्
क्लिश्ये	क्लिश्यावहे	क्लिश्यामहे	उ० पु०	क्लिश्येय	क्लिश्येवहि	क्लिश्येमहि

तुबादि

क्लिश्यताम्	क्लिश्येताम्	क्लिश्यन्ताम्	प्र० पु०
क्लिश्यस्व	क्लिश्येथाम्	क्लिश्यध्वम्	म० पु०
क्लिश्यै	क्लिश्यावहै	क्लिश्यामहै	उ० पु०

दिबादि

अक्लिश्यत	अक्लिश्येताम्	अक्लिश्यन्त	प्र० पु०
अक्लिश्यथाः	अक्लिश्येथाम्	अक्लिश्यध्वम्	म० पु०
अक्लिश्ये	अक्लिश्यावहि	अक्लिश्यामहि	उ० पु०

ह्यादि

अक्लेशिष्ट	अक्लेशिषाताम्	अक्लेशिषत	प्र० पु०
अक्लेशिष्ठाः	अक्लेशिषाथाम्	अक्लेशिढ्वम्, अक्लेशिध्वम्	म० पु०
अक्लेशिषि	अक्लेशिष्वहि	अक्लेशिष्महि	उ० पु०

णबादि

चिक्लिशे	चिक्लिशाते	चिक्लिशिरे	प्र० पु०
चिक्लिशिषे	चिक्लिशाथे	चिक्लिशिध्वे	म० पु०
चिक्लिशे	चिक्लिशिवहे	चिक्लिशिमहे	उ० पु०

क्र्यादि

क्लेशिषीष्ट	क्लेशिषीयास्ताम्	क्लेशिषीरन्	प्र० पु०
क्लेशिषीष्ठाः	क्लेशिषीयास्थाम्	क्लेशिषीध्वम्	म० पु०
क्लेशिषीय	क्लेशिषीवहि	क्लेशिषीमहि	उ० पु०

तादि **स्यत्यादि**

क्लेशिता क्लेशितारौ क्लेशितारः प्र० पु० क्लेशिष्यते क्लेशिष्येते क्लेशिष्यन्ते
क्लेशितासे क्लेशितासाथे क्लेशिताध्वे म० पु० क्लेशिष्यसे क्लेशिष्येथे क्लेशिष्यध्वे
क्लेशिताहे क्लेशितास्वहे क्लेशितास्महे उ० पु० क्लेशिष्ये क्लेशिष्यावहे क्लेशिष्यामहे

स्यदादि

अक्लेशिष्यत	अक्लेशिष्येताम्	अक्लेशिष्यन्त	प्र० पु०
अक्लेशिष्यथाः	अक्लेशिष्येथाम्	अक्लेशिष्यध्वम्	म० पु०
अक्लेशिष्ये	अक्लेशिष्यावहि	अक्लेशिष्यामहि	उ० पु०

१०३. चिन्त्—चयने (उभयपदी) चयन करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति	प्र० पु०	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः
चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ	म० पु०	चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात
चिनोमि	चिनुवः	चिन्वः, चिनुमः, चिन्मः	उ० पु०	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

तुबादि

चिनोतु, चिनुतात्	चिनुताम्	चिन्वन्तु	प्र० पु०
चिनु, चिनुतात्	चिनुतम्	चिनुत	म० पु०
चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम	उ० पु०

दिबादि				**द्यादि**		
अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्	प्र० पु०	अचैषीत्	अचैष्टाम्	अचैषुः
अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत	म० पु०	अचैषीः	अचैष्टम्	अचैष्ट
अचिनवम्	अचिनुव, अचिन्व	अचिनुम, अचिन्म	उ० पु०	अचैषम्	अचैष्व	अचैष्म

णबादि (१)				**णबादि (२)**		
चिचाय	चिच्यतुः	चिच्युः	प्र० पु०	चिकाय	चिक्यतुः	चिक्युः
चिचयिथ, चिचेथ	चिच्यथुः	चिच्य	म० पु०	चिकयिथ, चिकेथ	चिक्यथुः	चिक्य
चिचाय, चिचय	चिच्यिव	चिच्यिम	उ० पु०	चिकाय, चिकय	चिक्यिव	चिक्यिम

क्यादादि				**तादि**		
चीयात्	चीयास्ताम्	चीयासुः	प्र० पु०	चेता	चेतारौ	चेतारः
चीयाः	चीयास्तम्	चीयास्त	म० पु०	चेतासि	चेतास्थः	चेतास्थ
चीयासम्	चीयास्व	चीयास्म	उ० पु०	चेतास्मि	चेतास्वः	चेतास्मः

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति	प्र० पु०	अचेष्यत्	अचेष्यताम्	अचेष्यन्
चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ	म० पु०	अचेष्यः	अचेष्यतम्	अचेष्यत
चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः	उ० पु०	अचेष्यम्	अचेष्याव	अचेष्याम

आत्मनेपद

तिबादि

चिनुते	चिन्वाते	चिन्वते	प्र० पु०
चिनुषे	चिन्वाथे	चिनुध्वे	म० पु०
चिन्वे	चिनुवहे, चिन्वहे	चिनुमहे, चिन्महे	उ० पु०

यादादि **तुबादि**

चिन्वीत चिन्वीयाताम् चिन्वीरन् प्र० पु० चिनुताम् चिन्वाताम् चिन्वताम्
चिन्वीथाः चिन्वीयाथाम् चिन्वीध्वम् म० पु० चिनुष्व चिन्वाथाम् चिनुध्वम्
चिन्वीय चिन्वीवहि चिन्वीमहि उ० पु० चिनवै चिनवावहै चिनवामहै

दिबादि

अचिनुत अचिन्वाताम् अचिन्वत प्र० पु०
अचिनुथाः अचिन्वाथाम् अचिनुध्वम् म० पु०
अचिन्वि अचिनुवहि, अचिन्वहि अचिनुमहि, अचिन्महि उ० पु०

द्यादि **णबादि (१)**

अचेष्ट अचेषाताम् अचेषत प्र० पु० चिच्ये चिच्याते चिच्यिरे
अचेष्ठाः अचेषाथाम् अचेढ्वम् म० पु० चिच्यिषे चिच्याथे चिच्यिध्वे, चिच्यिढ्वे
अचेषि अचेष्वहि अचेष्महि उ० पु० चिच्ये चिच्यिवहे चिच्यिमहे

णबादि (२) **क्यादादि**

चिक्ये चिक्याते चिक्यिरे प्र० पु० चेषीष्ट चेषीयास्ताम् चेषीरन्
चिक्यिषे चिक्याथे चिक्यिध्वे, चिक्यिढ्वे म० पु० चेषीष्ठाः चेषीयास्थाम् चेषीढ्वम्
चिक्ये चिक्यिवहे चिक्यिमहे उ० पु० चेषीय चेषीवहि चेषीमहि

तादि **स्यत्यादि**

चेता चेतारौ चेतारः प्र० पु० चेष्यते चेष्येते चेष्यन्ते
चेतासे चेतासाथे चेताध्वे म० पु० चेष्यसे चेष्येथे चेष्यध्वे
चेताहे चेतास्वहे चेतास्महे उ० पु० चेष्ये चेष्यावहे चेष्यामहे

स्यदादि

अचेष्यत अचेष्येताम् अचेष्यन्त प्र० पु०
अचेष्यथाः अचेष्येथाम् अचेष्यध्वम् म० पु०
अचेष्ये अचेष्यावहि अचेष्यामहि उ० पु०

१०४. वृन्त्—वरणे (उभयपदी) वरण करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि			**यादादि**			
वृणोति	वृणुतः	वृण्वन्ति	प्र० पु०	वृणुयात्	वृणुयाताम्	वृणुयुः
वृणोषि	वृणुथः	वृणुथ	म० पु०	वृणुयाः	वृणुयातम्	वृणुयात
वृणोमि	वृणुवः, वृण्वः	वृणुमः, वृण्मः	उ० पु०	वृणुयाम्	वृणुयाव	वृणुयाम

तुआदि

वृणोतु, वृणुतात्	वृणुताम्	वृण्वन्तु	प्र० पु०
वृणु, वृणुतात्	वृणुतम्	वृणुत	म० पु०
वृणवानि	वृणवाव	वृणवाम	उ० पु०

दिवादि

अवृणोत्	अवृणुताम्	अवृण्वन्	प्र० पु०
अवृणोः	अवृणुतम्	अवृणुत	म० पु०
अवृणवम्	अवृणुव, अवृण्व	अवृणुम, अवृण्म	उ० पु०

च्वादि

अवारीत्	अवारिष्टाम्	अवारिषुः	प्र० पु०
अवारीः	अवारिष्टम्	अवारिष्ट	म० पु०
अवारिषम्	अवारिष्व	अवारिष्म	उ० पु०

णबादि

ववार	वव्रतुः	वव्रुः	प्र० पु०
ववरिथ	वव्रथुः	वव्र	म० पु०
ववार, ववर	वव्रव	वव्रम	उ० पु०

क्यादादि

व्रियात्	व्रियास्ताम्	व्रियासुः	प्र० पु०
व्रियाः	व्रियास्तम्	व्रियास्त	म० पु०
व्रियासम्	व्रियास्व	व्रियास्म	उ० पु०

तादि (१)

वरिता	वरितारौ	वरितारः	प्र० पु०
वरितासि	वरितास्थः	वरितास्थ	म० पु०
वरितास्मि	वरितास्वः	वरितास्मः	उ० पु०

तादि (२)

वरीता	वरीतारौ	वरीतारः	प्र० पु०
वरीतासि	वरीतास्थः	वरीतास्थ	म० पु०
वरीतास्मि	वरीतास्वः	वरीतास्मः	उ० पु०

स्यत्यादि (१)

वरिष्यति	वरिष्यतः	वरिष्यन्ति	प्र० पु०
वरिष्यसि	वरिष्यथः	वरिष्यथ	म० पु०
वरिष्यामि	वरिष्यावः	वरिष्यामः	उ० पु०

स्यत्यादि (२)

वरीष्यति	वरीष्यतः	वरीष्यन्ति	प्र० पु०
वरीष्यसि	वरीष्यथः	वरीष्यथ	म० पु०
वरीष्यामि	वरीष्यावः	वरीष्यामः	उ० पु०

स्यदादि (१)

अवरिष्यत्	अवरिष्यताम्	अवरिष्यन्	प्र० पु०
अवरिष्यः	अवरिष्यतम्	अवरिष्यत	म० पु०
अवरिष्यम्	अवरिष्याव	अवरिष्याम	उ० पु०

स्यदादि (२)

अवरीष्यत्	अवरीष्यताम्	अवरीष्यन्	प्र० पु०
अवरीष्यः	अवरीष्यतम्	अवरीष्यत	म० पु०
अवरीष्यम्	अवरीष्याव	अवरीष्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि

वृणुते	वृण्वाते	वृण्वते	प्र० पु०
वृणुषे	वृण्वाथे	वृणुध्वे	म० पु०
वृण्वे	वृणुवहे, वृण्वहे	वृणुमहे, वृण्महे	उ० पु०

यादादि

वृण्वीत	वृण्वीयाताम्	वृण्वीरन्	प्र० पु०
वृण्वीथाः	वृण्वीयाथाम्	वृण्वीध्वम्	म० पु०
वृण्वीय	वृण्वीवहि	वृण्वीमहि	उ० पु०

तुबादि

वृणुताम्	वृण्वाताम्	वृण्वताम्	प्र० पु०
वृणुष्व	वृण्वाथाम्	वृणुध्वम्	म० पु०
वृणवै	वृणवावहै	वृणवामहै	उ० पु०

दिबादि

अवृणुत	अवृण्वाताम्	अवृण्वत	प्र० पु०
अवृणुथाः	अवृण्वाथाम्	अवृणुध्वम्	म० पु०
अवृण्वि	अवृणुवहि, अवृण्वहि	अवृणुमहि, अवृण्महि	उ० पु०

ञादि (१)

अवृत अवृषाताम् अवृषत प्र. पु.

अवृथाः अवृषाथाम् अवृढ्वम् म. पु.

अवृषि अवृष्वहि अवृष्महि उ. पु.

ञादि (२)

अवरिष्ट अवरिषाताम् अवरिषत

अवरिष्ठाः अवरिषाथाम् अवरिढ्वम्, अवरिध्वम

अवरिषि अवरिष्वहि अवरिष्महि

ञादि (३)

अवरीष्ट अवरीषाताम् अवरीषत

अवरीष्ठाः अवरीषाथाम् अवरीढ्वम्, अवरीध्वम्

अवरीषि अवरीष्वहि अवरीष्महि

णबादि

प्र० पु० वव्रे	वव्राते	वव्रिरे
म० पु० ववृषे	वव्राथे	ववृढ्वे
उ० पु० वव्रे	ववृवहे	ववृमहे

क्यादादि (१)

वरिषीष्ट	वरिषीयास्ताम्	वरिषीरन्	प्र० पु०
वरिषीष्ठाः	वरिषीयास्थाम्	वरिषीढ्वम्, वरिषीध्वम्	म० पु०
वरिषीय	वरिषीवहि	वरिषीमहि	उ० पु०

क्यादादि (२)

वृषीष्ट वृषीयास्ताम् वृषीरन्

वृषीष्ठाः वृषीयास्थाम् वृषीध्वम्

वृषीय वृषीवहि वृषीमहि

तादि (१)

प्र० पु० वरिता	वरितारौ	वरितारः
म० पु० वरितासे	वरितासाथे	वरिताध्वे
उ० पु० वरिताहे	वरितास्वहे	वरितास्महे

तादि (२)

वरीता वरीतारौ वरीतारः

वरीतासे वरीतासाथे वरीताध्वे

वरीताहे वरीतास्वहे वरीतास्महे

स्यत्यादि (१)

प्र० पु० वरिष्यते	वरिष्येते	वरिष्यन्ते
म० पु० वरिष्यसे	वरिष्येथे	वरिष्यध्वे
उ० पु० वरिष्ये	वरिष्यावहे	वरिष्यामहे

स्यत्यादि (२)

वरीष्यते वरीष्येते वरीष्यन्ते

वरीष्यसे वरीष्येथे वरीष्यध्वे

वरीष्ये वरीष्यावहे वरीष्यामहे

स्यदादि (१)

अवरिष्यत अवरिष्येताम् अवरिष्यन्त

अवरिष्यथाः अवरिष्येथाम् अवरिष्यध्वम्

अवरिष्ये अवरिष्यावहि अवरिष्यामहि

स्यदादि (२)

अवरीष्यत	अवरीष्येताम्	अवरीष्यन्त	प्र० पु०
अवरीष्यथाः	अवरीष्येथाम्	अवरीष्यध्वम्	म० पु०
अवरीष्ये	अवरीष्यावहि	अवरीष्यामहि	उ० पु०

१०५. शक्लृंत्—शक्तौ (समर्थ होना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति	प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ	म० पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः	उ० पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
तुबादि				**दिबादि**		
शक्नोतु, शक्नुतात्	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु	प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
शक्नुहि, शक्नुतात्	शक्नुतम्	शक्नुत	म० पु०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम	उ० पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम
ह्यादि				**णबादि**		
अशकत्	अशकताम्	अशकन्	प्र० पु०	शशाक	शेकतुः	शेकुः
अशकः	अशकतम्	अशकत	म० पु०	शेकिथ, शशक्थ	शेकथुः	शेक
अशकम्	अशकाव	अशकाम	उ० पु०	शशाक, शशक	शेकिव	शेकिम
क्यादादि				**तादि**		
शक्यात्	शक्यास्ताम्	शक्यासुः	प्र० पु०	शक्ता	शक्तारौ	शक्तारः
शक्याः	शक्यास्तम्	शक्यास्त	म० पु०	शक्तासि	शक्तास्थः	शक्तास्थ
शक्यासम्	शक्यास्व	शक्यास्म	उ० पु०	शक्तास्मि	शक्तास्वः	शक्तास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अशक्ष्यत्	अशक्ष्यताम्	अशक्ष्यन्
शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ	म० पु०	अशक्ष्यः	अशक्ष्यतम्	अशक्ष्यत
शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः	उ० पु०	अशक्ष्यम्	अशक्ष्याव	अशक्ष्याम

१०६. आप्लृंत्—व्याप्तौ (पाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	प्र० पु०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	म० पु०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः	उ० पु०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

तुबादि				**दिवादि**		
आप्नोतु, आप्नुतात्	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	प्र० पु०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
आप्नुहि, आप्नुतात्	आप्नुतम्	आप्नुत	म० पु०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम	उ० पु०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लादि				**णबादि**		
आपत्	आपताम्	आपन्	प्र० पु०	आप	आपतुः	आपुः
आपः	आपतम्	आपत	म० पु०	आपिथ	आपथुः	आप
आपम्	आपाव	आपाम	उ० पु०	आप	आपिव	आपिम

क्ष्यादादि				**तादि**		
आप्यात्	आप्यास्ताम्	आप्यासुः	प्र० पु०	आप्ता	आप्तारौ	आप्तारः
आप्याः	आप्यास्तम्	आप्यास्त	म० पु०	आप्तासि	आप्तास्थः	आप्तास्थ
आप्यासम्	आप्यास्व	आप्यास्म	उ० पु०	आप्तास्मि	आप्तास्वः	आप्तास्मः

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति	प्र० पु०	आप्स्यत्	आप्स्यताम्	आप्स्यन्
आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ	म० पु०	आप्स्यः	आप्स्यतम्	आप्स्यत
आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः	उ० पु०	आप्स्यम्	आप्स्याव	आप्स्याम

१०७. मुच्लृंन्ज्—मोक्षणे (उभयपदी) छोडना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति	प्र० पु०	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ	म० पु०	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः	उ० पु०	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम

तुबादि				**दिवादि**		
मुञ्चतु, मुञ्चतात्	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु	प्र० पु०	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
मुञ्च, मुञ्चतात्	मुञ्चतम्	मुञ्चत	म० पु०	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम	उ० पु०	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम

लादि				**णबादि**		
अमुचत्	अमुचताम्	अमुचन्	प्र० पु०	मुमोच	मुमुचतुः	मुमुचुः
अमुचः	अमुचतम्	अमुचत	म० पु०	मुमोचिथ	मुमुचथुः	मुमुच
अमुचम्	अमुचाव	अमुचाम	उ० पु०	मुमोच	मुमुचिव	मुमुचिम

क्यादादि				तादि		
मुच्यात्	मुच्यास्ताम्	मुच्यासुः	प्र० पु०	मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः
मुच्याः	मुच्यास्तम्	मुच्यास्त	म० पु०	मोक्तासि	मोक्तास्थः	मोक्तास्थ
मुच्यासम्	मुच्यास्व	मुच्यास्म	उ० पु०	मोक्तास्मि	मोक्तास्वः	मोक्तास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अमोक्ष्यत्	अमोक्ष्यताम्	अमोक्ष्यन्
मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथः	मोक्ष्यथ	म० पु०	अमोक्ष्यः	अमोक्ष्यतम्	अमोक्ष्यत
मोक्ष्यामि	मोक्ष्यावः	मोक्ष्यामः	उ० पु०	अमोक्ष्यम्	अमोक्ष्याव	अमोक्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				यादादि		
मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते	प्र० पु०	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे	म० पु०	मुञ्चेथाः	मुञ्चेयाथाम्	मुञ्चेध्वम्
मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे	उ० पु०	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि

तुबादि				दिबादि		
मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्	प्र० पु०	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्	म० पु०	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै	उ० पु०	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि

द्यादि				णबादि		
अमुक्त	अमुक्षाताम्	अमुक्षत	प्र० पु०	मुमुचे	मुमुचाते	मुमुचिरे
अमुक्थाः	अमुक्षाथाम्	अमुग्ढ्वम्, अमुग्ध्वम्	म० पु०	मुमुचिषे	मुमुचाथे	मुमुचिध्वे
अमुक्षि	अमुक्ष्वहि	अमुक्ष्महि	उ० पु०	मुमुचे	मुमुचिवहे	मुमुचिमहे

क्यादादि				तादि		
मुक्षीष्ट	मुक्षीयास्ताम्	मुक्षीरन्	प्र० पु०	मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः
मुक्षीष्ठाः	मुक्षीयास्थाम्	मुक्षीध्वम्	म० पु०	मोक्तासे	मोक्तासाथे	मोक्ताध्वे
मुक्षीय	मुक्षीवहि	मुक्षीवहि	उ० पु०	मोक्ताहे	मोक्तास्वहे	मोक्तास्महे

स्यत्यादि				स्यदादि		
मोक्ष्यते	मोक्ष्येते	मोक्ष्यन्ते	प्र० पु०	अमोक्ष्यत	अमोक्ष्येताम्	अमोक्ष्यन्त
मोक्ष्यसे	मोक्ष्येथे	मोक्ष्यध्वे	म० पु०	अमोक्ष्यथाः	अमोक्ष्येथाम्	अमोक्ष्यध्वम्
मोक्ष्ये	मोक्ष्यावहे	मोक्ष्यामहे	उ० पु०	अमोक्ष्ये	अमोक्ष्यावहि	अमोक्ष्यामहि

१०८. इषज्—इच्छायाम् (इच्छा करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति	प्र० पु०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ	म० पु०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः	उ० पु०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम
तुबादि				**दिबादि**		
इच्छतु, इच्छतात्	इच्छताम्	इच्छन्तु	प्र० पु०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
इच्छ, इच्छतात्	इच्छतम्	इच्छत	म० पु०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम	उ० पु०	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम
द्यादि				**णबादि**		
ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषुः	प्र० पु०	इयेष	ईषतुः	ईषुः
ऐषीः	ऐषिष्टम्	ऐषिष्ट	म० पु०	इयेषिथ	ईषथुः	ईष
ऐषिषम्	ऐषिष्व	ऐषिष्म	उ० पु०	इयेष	ईषिव	ईषिम
क्यादादि				**तादि**		
इष्यात्	इष्यास्ताम्	इष्यासुः	प्र० पु०	एष्टा	एष्टारौ	एष्टारः
इष्याः	इष्यास्तम्	इष्यास्त	म० पु०	एष्टासि	एष्टास्थः	एष्टास्थ
इष्यासम्	इष्यास्व	इष्यास्म	उ० पु०	एष्टास्मि	एष्टास्वः	एष्टास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति	प्र० पु०	ऐषिष्यत्	ऐषिष्यताम्	ऐषिष्यन्
एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ	म० पु०	ऐषिष्यः	ऐषिष्यतम्	ऐषिष्यत
एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः	उ० पु०	ऐषिष्यम्	ऐषिष्याव	ऐषिष्याम

१०९. लिखज्—अक्षरविन्यासे (लिखना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
लिखति	लिखतः	लिखन्ति	प्र० पु०	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
लिखसि	लिखथः	लिखथ	म० पु०	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
लिखामि	लिखावः	लिखामः	उ० पु०	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम
तुबादि				**दिबादि**		
लिखतु, लिखतात्	लिखताम्	लिखन्तु	प्र० पु०	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
लिख, लिखतात्	लिखतम्	लिखत	म० पु०	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
लिखानि	लिखाव	लिखाम	उ० पु०	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

स्वादि				णबादि		
अलेखीत्	अलेखिष्टाम्	अलेखिषुः	प्र० पु०	लिलेख	लिलिखतुः	लिलिखुः
अलेखीः	अलेखिष्टम्	अलेखिष्ट	म० पु०	लिलेखिथ	लिलिखथुः	लिलिख
अलेखिषम्	अलेखिष्व	अलेखिष्म	उ० पु०	लिलेख	लिलिखिव	लिलिखिम

क्यादादि				तादि		
लिख्यात्	लिख्यास्ताम्	लिख्यासुः	प्र० पु०	लेखिता	लेखितारौ	लेखितारः
लिख्याः	लिख्यास्तम्	लिख्यास्त	म० पु०	लेखितासि	लेखितास्थः	लेखितास्थ
लिख्यासम्	लिख्यास्व	लिख्यास्म	उ० पु०	लेखितास्मि	लेखितास्वः	लेखितास्मः

स्यत्यादि			
लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति	प्र० पु०
लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ	म० पु०
लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि			
अलेखिष्यत्	अलेखिष्यताम्	अलेखिष्यन्	प्र० पु०
अलेखिष्यः	अलेखिष्यतम्	अलेखिष्यत	म० पु०
अलेखिष्यम्	अलेखिष्याव	अलेखिष्याम	उ० पु०

११०. कुचज्—संकोचने (संकोच करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
कुचति	कुचतः	कुचन्ति	प्र० पु०	कुचेत्	कुचेताम्	कुचेयुः
कुचसि	कुचथः	कुचथ	म० पु०	कुचेः	कुचेतम्	कुचेत
कुचामि	कुचावः	कुचामः	उ० पु०	कुचेयम्	कुचेव	कुचेम

तुबादि				दिबादि		
कुचतु, कुचतात्	कुचताम्	कुचन्तु	प्र० पु०	अकुचत्	अकुचताम्	अकुचन्
कुच, कुचतात्	कुचतम्	कुचत	म० पु०	अकुचः	अकुचतम्	अकुचत
कुचानि	कुचाव	कुचाम	उ० पु०	अकुचम्	अकुचाव	अकुचाम

स्वादि				णबादि		
अकुचीत्	अकुचिष्टाम्	अकुचिषुः	प्र० पु०	चुकोच	चुकुचतु	चुकुचुः
अकुचीः	अकुचिष्टम्	अकुचिष्ट	म० पु०	चुकोचिथ	चुकुचथुः	चुकुच
अकुचिषम्	अकुचिष्व	अकुचिष्म	उ० पु०	चुकोच, चुकुच	चुकुचिव	चुकुचिम

क्यादादि				तादि		
कुच्यात्	कुच्यास्ताम्	कुच्यासुः	प्र० पु०	कुचिता	कुचितारौ	कुचितारः
कुच्याः	कुच्यास्तम्	कुच्यास्त	म० पु०	कुचितासि	कुचितास्थः	कुचितास्थ
कुच्यासम्	कुच्यास्व	कुच्यास्म	उ० पु०	कुचितास्मि	कुचितास्वः	कुचितास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
कुचिष्यति	कुचिष्यतः	कुचिष्यन्ति	प्र. पु.	अकुचिष्यत्	अकुचिष्यताम्	अकुचिष्यन्
कुचिष्यसि	कुचिष्यथः	कुचिष्यथ	म. पु.	अकुचिष्यः	अकुचिष्यतम्	अकुचिष्यत
कुचिष्यामि	कुचिष्यावः	कुचिष्यामः	उ. पु.	अकुचिष्यम्	अकुचिष्याव	अकुचिष्याम

१११. स्पृशंज्—स्पर्शे (छूना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति	प्र० पु०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ	म० पु०	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः	उ० पु०	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम
तुबादि				**दिबादि**		
स्पृशतु, स्पृशतात्		स्पृशताम्	स्पृशन्तु	प्र० पु०	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
स्पृश, स्पृशतात्		स्पृशतम्	स्पृशत	म० पु०	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
स्पृशानि		स्पृशाव	स्पृशाम	उ० पु०	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

ङ्यादि (१)				**ङ्यादि (२)**		
अस्प्राक्षीत्	अस्प्राष्टाम्	अस्प्राक्षुः	प्र० पु०	अस्पृक्षत्	अस्पृक्षताम्	अस्पृक्षन्
अस्प्राक्षीः	अस्प्राष्टम्	अस्प्राष्ट	म० पु०	अस्पृक्षः	अस्पृक्षतम्	अस्पृक्षत
अस्प्राक्षम्	अस्प्राक्ष्व	अस्प्राक्ष्म	उ० पु०	अस्पृक्षम्	अस्पृक्षाव	अस्पृक्षाम

णबादि				क्यादादि		
पस्पर्श	पस्पृशतुः	पस्पृशुः	प्र० पु०	स्पृश्यात्	स्पृश्यास्ताम्	स्पृश्यासुः
पस्पर्शिथ	पस्पृशथुः	पस्पृश	म० पु०	स्पृश्याः	स्पृश्यास्तम्	स्पृश्यास्त
पस्पर्श	पस्पृशिव	पस्पृशिम	उ० पु०	स्पृश्यासम्	स्पृश्यास्व	स्पृश्यास्म

तादि (१)				**तादि (२)**		
स्प्रष्टा	स्प्रष्टारौ	स्प्रष्टारः	प्र० पु०	स्पर्ष्टा	स्पर्ष्टारौ	स्पर्ष्टारः
स्प्रष्टासि	स्प्रष्टास्थः	स्प्रष्टास्थ	म० पु०	स्पर्ष्टासि	स्पर्ष्टास्थः	स्पर्ष्टास्थ
स्प्रष्टास्मि	स्प्रष्टास्वः	स्प्रष्टास्मः	उ० पु०	स्पर्ष्टास्मि	स्पर्ष्टास्वः	स्पर्ष्टास्मः

स्यत्यादि (१)				**स्यत्यादि (२)**		
स्प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति	प्र० पु०	स्पर्क्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति
स्प्रक्ष्यसि	स्प्रक्ष्यथः	स्प्रक्ष्यथ	म० पु०	स्पर्क्ष्यसि	स्पर्क्ष्यथः	स्पर्क्ष्यथ
स्प्रक्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः	स्प्रक्ष्यामः	उ० पु०	स्पर्क्ष्यामि	स्पर्क्ष्यावः	स्पर्क्ष्यामः

स्यदादि (१)				स्यदादि (२)		
अस्प्रक्ष्यत्	अस्प्रक्ष्यताम्	अस्प्रक्ष्यन्	प्र० पु०	अस्पर्क्ष्यत्	अस्पर्क्ष्यताम्	अस्पर्क्ष्यन्
अस्प्रक्ष्यः	अस्प्रक्ष्यतम्	अस्प्रक्ष्यत	म० पु०	अस्पर्क्ष्यः	अस्पर्क्ष्यतम्	अस्पर्क्ष्यत
अस्प्रक्ष्यम्	अस्प्रक्ष्याव	अस्प्रक्ष्याम	उ० पु०	अस्पर्क्ष्यम्	अस्पर्क्ष्याव	अस्प्रर्क्ष्याम

११२. विशंज्—प्रवेशने (घुसना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
विशति	विशतः	विशन्ति	प्र० पु०	विशेत्	विशेताम्	विशेयुः
विशसि	विशथः	विशथ	म० पु०	विशेः	विशेतम्	विशेत
विशामि	विशावः	विशामः	उ० पु०	विशेयम्	विशेव	विशेम
तुबादि				**दिबादि**		
विशतु, विशतात्	विशताम्	विशन्तु	प्र० पु०	अविशत्	अविशताम्	अविशन्
विश, विशतात्	विशतम्	विशत	म० पु०	अविशः	अविशतम्	अविशत
विशानि	विशाव	विशाम	उ० पु०	अविशम्	अविशाव	अविशाम
द्यादि				**णबादि**		
अविक्षत्	अविक्षताम्	अविक्षन्	प्र० पु०	विवेश	विविशतुः	विविशुः
अविक्षः	अविक्षतम्	अविक्षत	म० पु०	विवेशिथ	विविशथुः	विविश
अविक्षम्	अविक्षाव	अविक्षाम	उ० पु०	विवेश	विविशिव	विविशिम
क्र्यादादि				**तादि**		
विश्यात्	विश्यास्ताम्	विश्यासुः	प्र० पु०	वेष्टा	वेष्टारौ	वेष्टारः
विश्याः	विश्यास्तम्	विश्यास्त	म० पु०	वेष्टासि	वेष्टास्थः	वेष्टास्थ
विश्यासम्	विश्यास्व	विश्यास्म	उ० पु०	वेष्टास्मि	वेष्टास्वः	वेष्टास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
वेक्ष्यति	वेक्ष्यतः	वेक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अवेक्ष्यत्	अवेक्ष्यताम्	अवेक्ष्यन्
वेक्ष्यसि	वेक्ष्यथः	वेक्ष्यथ	म० पु०	अवेक्ष्यः	अवेक्ष्यतम्	अवेक्ष्यत
वेक्ष्यामि	वेक्ष्यावः	वेक्ष्यामः	उ० पु०	अवेक्ष्यम्	अवेक्ष्याव	अवेक्ष्याम

११३. भुजंर्—पालनाभ्यवहारयोः (उभयपदी) पालन करना, खाना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति	प्र० पु०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ	म० पु०	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः	उ० पु०	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम

तुबादि

भुनक्तु, भुङ्क्तात्	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु	प्र० पु०
भुङ्ग्धि, भुङ्क्तात्	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त	म० पु०
भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम	उ० पु०

दिबादि **द्यादि**

अभुनक्, अभुनग्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्	प्र० पु०	अभौक्षीत्	अभौक्ताम्	अभौक्षुः
अभुनक्, अभुनग्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त	म० पु०	अभौक्षीः	अभौक्तम्	अभौक्त
अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म	उ० पु०	अभौक्षम्	अभौक्ष्व	अभौक्ष्म

णबादि **क्यादादि**

बुभोज बुभुंजतुः	बुभुजुः	प्र० पु०	भुज्यात्	भुज्यास्ताम्	भुज्यासुः
बुभोजिथ बुभुजथुः	बुभुज	म० पु०	भुज्याः	भुज्यास्तम्	भुज्यास्त
बुभोज बुभुजिव	बुभुजिम	उ० पु०	भुज्यासम्	भुज्यास्व	भुज्यास्व

तादि **स्यत्यादि**

भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः	प्र० पु०	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
भोक्तासि	भोक्तास्थः	भोक्तास्थ	म० पु०	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ
भोक्तास्मि	भोक्तास्वः	भोक्तास्मः	उ० पु०	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः

स्यदादि

अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्यताम्	अभोक्ष्यन्	प्र० पु०
अभोक्ष्यः	अभोक्ष्यतम्	अभोक्ष्यत	म० पु०
अभोक्ष्यम्	अभोक्ष्याव	अभोक्ष्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि **यादादि**

भङ्क्ते भुञ्जाते	भुञ्जते	प्र० पु०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
भुङ्क्षे भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे	म० पु०	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
भुञ्जे भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे	उ० पु०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

तुबादि **दिबादि**

भुङ्क्ताम् भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्	प्र० पु०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
भुङ्क्ष्व भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्	म० पु०	अभुक्ङ्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
भुनजै भुनजावहै	भुनजामहै	उ० पु०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

द्यादि **णबादि**

अभुक्त अभुक्षाताम्	अभुक्षत	प्र० पु०	बुभुजे	बुभुजाते	बुभुजिरे
अभुक्थाः अभुक्षाथाम्	अभुग्ध्वम्, अभुग्ढ्वम्	म० पु०	बुभुजिषे	बुभुजाथे	बुभुजिध्वे
अभुक्षि अभुक्ष्वहि	अभुक्ष्महि	उ० पु०	बुभुजे	बुभुजिवहे	बुभुजिमहे

क्र्यादि				तादि		
भुक्षीष्ट	भुक्षीयास्ताम्	भुक्षीरन्	प्र० पु०	भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः
भुक्षीष्ठाः	भुक्षीयास्थाम्	भुक्षीध्वम्	म० पु०	भोक्तासे	भोक्तासाथे	भोक्ताध्वे
भुक्षीय	भुक्षीवहि	भुक्षीमहि	उ० पु०	भोक्ताहे	भोक्तास्वहे	भोक्तास्महे
स्यत्यादि				स्यदादि		
भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते	प्र० पु०	अभोक्ष्यत	अभोक्ष्येताम्	अभोक्ष्यन्त
भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे	म० पु०	अभोक्ष्यथाः	अभोक्ष्येथाम्	अभोक्ष्यध्वम्
भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे	उ० पु०	अभोक्ष्ये	अभोक्ष्यावहि	अभोक्ष्यामहि

११४. युज् ंन्र्—योगे (उभयपदी) जोडना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि		
युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति	प्र० पु०	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः
युनक्षि	युङ्क्थः	युङ्क्थ	म० पु०	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात
युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः	उ० पु०	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम

तुबादि

युनक्तु, युङ्क्तात्	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु	प्र० पु०
युङ्ग्धि, युङ्क्तात्	युङ्क्तम्	युङ्क्त	म० पु०
युनजानि	युनजाव	युनजाम	उ० पु०

दिवादि				श्यादि (१)		
अयुनक्, अयुनग्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्	प्र० पु०	अयुजत्	अयुजताम्	अयुजन्
अयुनक्,अयुनग्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त	म० पु०	अयुजः	अयुजतम्	अयुजत
अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म	उ० पु०	अयुजम्	अयुजाव	अयुजाम
श्यादि (२)				णबादि		
अयौक्षीत्	अयौक्ताम्	अयौक्षुः	प्र० पु०	युयोज	युयुजतुः	युयुजुः
अयौक्षीः	अयौक्तम्	अयौक्त	म० पु०	युयोजिथ	युयुजथुः	युयुज
अयौक्षम्	अयौक्ष्व	अयौक्ष्म	उ० पु०	युयोज	युयुजिव	युयुजिम
क्यादादि				तादि		
युज्यात्	युज्यास्ताम्	युज्यासुः	प्र० पु०	योक्ता	योक्तारौ	योक्तारः
युज्याः	युज्यास्तम्	युज्यास्त	म० पु०	योक्तासि	योक्तास्थः	योक्तास्थ
युज्यासम्	युज्यास्व	युज्यास्म	उ० पु०	योक्तास्मि	योक्तास्वः	योक्तास्मः

स्यत्यादि **स्यदादि**

योक्ष्यति	योक्ष्यतः	योक्ष्यन्ति	प्र० पु०	अयोक्ष्यत्	अयोक्ष्यताम्	अयोक्ष्यन्
योक्ष्यसि	योक्ष्यथः	योक्ष्यथ	म० पु०	अयोक्ष्यः	अयोक्ष्यतम्	अयोक्ष्यत
योक्ष्यामि	योक्ष्यावः	योक्ष्यामः	उ० पु०	अयोक्ष्यम्	अयोक्ष्याव	अयोक्ष्याम

आत्मनेपद

तिबादि **यादादि**

युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते	प्र० पु०	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे	म० पु०	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे	उ० पु०	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि

तुबादि **दिबादि**

युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्	प्र० पु०	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
युङ्क्ष्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्	म० पु०	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
युनजै	युनजावहै	युनजामहै	उ० पु०	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि

धादि

अयुक्त	अयुक्षाताम्	अयुक्षत	प्र० पु०
अयुक्थाः	अयुक्षाथाम्	अयुग्ध्वम्, अयुग्ढ्वम्	म० पु०
अयुक्षि	अयुक्ष्वहि	अयुक्ष्महि	उ० पु०

णबादि **क्र्यादि**

युयुजे	युयुजाते	युयुजिरे	प्र० पु०	युक्षीष्ट	युक्षीयास्ताम्	युक्षीरन्
युयुजिषे	युयुजाथे	युयुजिध्वे	म० पु०	युक्षीष्ठाः	युक्षीयास्थाम्	युक्षीध्वम्
युयुजे	युयुजिवहे	युयुजिमहे	उ० पु०	युक्षीय	युक्षीवहि	युक्षीमहि

तादि **स्यत्यादि**

योक्ता	योक्तारौ	योक्तारः	प्र० पु०	योक्ष्यते	योक्ष्येते	योक्ष्यन्ते
योक्तासे	योक्तासाथे	योक्ताध्वे	म० पु०	योक्ष्यसे	योक्ष्येथे	योक्ष्यध्वे
योक्ताहे	योक्तास्वहे	योक्तास्महे	उ० पु०	योक्ष्ये	योक्ष्यावहे	योक्ष्यामहे

स्यदादि

अयोक्ष्यत	अयोक्ष्येताम्	अयोक्ष्यन्त	प्र० पु०
अयोक्ष्यथाः	अयोक्ष्येथाम्	अयोक्ष्यध्वम्	म० पु०
अयोक्ष्ये	अयोक्ष्यावहि	अयोक्ष्यामहि	उ० पु०

११५. छिदृं न्र्—द्वैधीकरणे (उभयपदी) काटना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
छिनत्ति	छिन्तः	छिन्दन्ति	प्र० पु०	छिन्द्यात्	छिन्द्याताम्	छिन्द्युः
छिनत्सि	छिन्थः	छिन्त्थ	म० पु०	छिन्द्याः	छिन्द्यातम्	छिन्द्यात
छिनद्मि	छिन्द्वः	छिन्द्मः	उ० पु०	छिन्द्याम्	छिन्द्याव	छिन्द्याम

तुबादि

छिनत्तु, छिन्तात्	छिन्ताम्	छिन्दन्तु	प्र० पु०
छिन्द्धि, छिन्तात्	छिन्तम्	छिन्त	म० पु०
छिनदानि	छिनदाव	छिनदाम	उ० पु०

दिबादि

अच्छिनत्, अच्छिनद्	अच्छिन्ताम्	अच्छिन्दन्	प्र० पु०
अच्छिनः, अच्छिनत्, अच्छिनद्	अच्छिन्तम्	अच्छिन्त	म० पु०
अच्छिनदम्	अच्छिन्द्व	अच्छिन्द्म	उ० पु०

द्यादि (१)				**द्यादि (२)**		
अच्छिदत्	अच्छिदताम्	अच्छिदन्	प्र० पु०	अच्छैत्सीत्	अच्छैत्ताम्	अच्छैत्सुः
अच्छिदः	अच्छिदतम्	अच्छिदत	म० पु०	अच्छैत्सीः	अच्छैत्तम्	अच्छैत्त
अच्छिदम्	अच्छिदाव	अच्छिदाम	उ० पु०	अच्छैत्सम्	अच्छैत्स्व	अच्छैत्स्म

णबादि				**क्र्यादादि**		
चिच्छेद	चिच्छिदतुः	चिच्छिदुः	प्र० पु०	छिद्यात्	छिद्यास्ताम्	छिद्यासुः
चिच्छेदिथ	चिच्छिदथुः	चिच्छिद	म० पु०	छिद्याः	छिद्यास्तम्	छिद्यास्त
चिच्छेद	चिच्छिदिव	चिच्छिदिम	उ० पु०	छिद्यासम्	छिद्यास्व	छिद्यास्म

तादि				**स्यत्यादि**		
छेत्ता	छेत्तारौ	छेत्तारः	प्र० पु०	छेत्स्यति	छेत्स्यतः	छेत्स्यन्ति
छेत्तासि	छेत्तास्थः	छेत्तास्थ	म० पु०	छेत्स्यसि	छेत्स्यथः	छेत्स्यथ
छेत्तास्मि	छेत्तास्वः	छेत्तास्मः	उ० पु०	छेत्स्यामि	छेत्स्यावः	छेत्स्यामः

स्यदादि

अच्छेत्स्यत्	अच्छेत्स्यताम्	अच्छेत्स्यन्	प्र० पु०
अच्छेत्स्यः	अच्छेत्स्यतम्	अच्छेत्स्यत	म० पु०
अच्छेत्स्यम्	अच्छेत्स्याव	अच्छेत्स्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि				यादादि		
छिन्त्ते	छिन्दाते	छिन्दते	प्र० पु०	छिन्दीत	छिन्दीयाताम्	छिन्दीरन्
छिन्त्से	छिन्दाथे	छिन्द्ध्वे	म० पु०	छिन्दीथाः	छिन्दीयाथाम्	छिन्दीध्वम्
छिन्दे	छिन्द्वहे	छिन्द्महे	उ० पु०	छिन्दीय	छिन्दीवहि	छिन्दीमहि

तुबादि				दिबादि		
छिन्त्ताम्	छिन्दाताम्	छिन्दताम्	प्र० पु०	अच्छिन्त्त	अच्छिन्दाताम्	अच्छिन्दत
छिन्त्स्व	छिन्दाथाम्	छिन्द्ध्वम्	म० पु०	अच्छिन्त्थाः	अच्छिन्दाथाम्	अच्छिन्द्ध्वम्
छिनदै	छिनदावहै	छिनदामहै	उ० पु०	अच्छिन्दि	अच्छिन्द्वहि	अच्छिन्द्महि

श्यादि				णबादि		
अच्छित्त	अच्छित्साताम्	अच्छित्सत	प्र० पु०	चिच्छिदे	चिच्छिदाते	चिच्छिदिरे
अच्छित्थाः	अच्छित्साथाम्	अच्छिद्ध्वम्	म० पु०	चिच्छिदिषे	चिच्छिदाथे	चिच्छिदिध्वे
अच्छित्सि	अच्छित्स्वहि	अच्छित्स्महि	उ० पु०	चिच्छिदे	चिच्छिदिवहे	चिच्छिदिमहे

क्र्यादि				तादि		
छित्सीष्ट	छित्सीयास्ताम्	छित्सीरन्	प्र० पु०	छेत्ता	छेत्तारौ	छेत्तारः
छित्सीष्ठाः	छित्सीयास्थाम्	छित्सीध्वम्	म० पु०	छेत्तासे	छेत्तासाथे	छेत्ताध्वे
छित्सीय	छित्सीवहि	छित्सीमहि	उ० पु०	छेत्ताहे	छेत्तास्वहे	छेत्तास्महे

स्यत्यादि				स्यदादि		
छेत्स्यते	छेत्स्येते	छेत्स्यन्ते	प्र० पु०	अच्छेत्स्यत	अच्छेत्स्येताम्	अच्छेत्स्यन्त
छेत्स्यसे	छेत्स्येथे	छेत्स्यध्वे	म० पु०	अच्छेत्स्यथाः	अच्छेत्स्येथाम्	अच्छेत्स्यध्वम्
छेत्स्ये	छेत्स्यावहे	छेत्स्यामहे	उ० पु०	अच्छेत्स्ये	अच्छेत्स्यावहि	अच्छेत्स्यामहि

११६. विचृंन्र्—पृथग्भावे (उभयपदी) पृथक् करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
विनक्ति	विङ्क्तः	विञ्चन्ति	प्र० पु०	विञ्च्यात्	विञ्च्याताम्	विञ्च्युः
विनक्षि	विङ्क्थः	विङ्क्थ	म० पु०	विञ्च्याः	विञ्च्यातम्	विञ्च्यात
विनच्मि	विञ्च्वः	विञ्च्मः	उ० पु०	विञ्च्याम्	विञ्च्याव	विञ्च्याम

तुबादि

विनक्तु, विङ्क्तात्	विङ्क्ताम्	विञ्चन्तु	प्र० पु०
विङ्ग्धि, विङ्क्तात्	विङ्क्तम्	विङ्क्त	म० पु०
विनचानि	विनचाव	विनचाम	उ० पु०

दिबादि					ग्रादि		
अविनक्, अविनग्		अविङ्क्ताम्		अविञ्चन्	प्र० पु० अविचत्	अविचताम्	अविचन्
अविनक्, अविनग्		अविङ्क्तम्		अविङ्क्त	म० पु० अविचः	अविचतम्	अविचत
अविनचम्		अविञ्च्व		अविञ्च्म	उ० पु० अविचम्	अविचाव	अविचाम

णबादि			क्यादादि		
विवेच	विविचतुः	विविचुः	प्र० पु० विच्यात्	विच्यास्ताम्	विच्यासुः
विवेचिथ	विविचथुः	विविच	म० पु० विच्याः	विच्यास्तम्	विच्यास्त
विवेच	विविचिव	विविचिम	उ० पु० विच्यासम्	विच्यास्व	विच्यास्म

तादि			स्यत्यादि		
वेक्ता	वेक्तारौ	वेक्तारः	प्र० पु० वेक्ष्यति	वेक्ष्यतः	वेक्ष्यन्ति
वेक्तासि	वेक्तास्थः	वेक्तास्थ	म० पु० वेक्ष्यसि	वेक्ष्यथः	वेक्ष्यथ
वेक्तास्मि	वेक्तास्वः	वेक्तास्मः	उ० पु० वेक्ष्यामि	वेक्ष्यावः	वेक्ष्यामः

स्यदादि			
अवेक्ष्यत्	अवेक्ष्यताम्	अवेक्ष्यन्	प्र० पु०
अवेक्ष्यः	अवेक्ष्यतम्	अवेक्ष्यत	म० पु०
अवेक्ष्यम्	अवेक्ष्याव	अवेक्ष्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि					यादादि		
विङ्क्ते	विञ्चाते	विञ्चते	प्र० पु०	विञ्चीत	विञ्चीयाताम्	विञ्चीरन्	
विङ्क्षे	विञ्चाथे	विङ्ग्ध्वे	म० पु०	विञ्चीथाः	विञ्चीयाथाम्	विङ्ग्ध्वम्	
विञ्चे	विञ्च्वहे	विञ्च्महे	उ० पु०	विञ्चीय	विञ्चीवहि	विञ्चीमहि	

तुबादि				दिबादि		
विङ्क्ताम्	विञ्चाताम्	विञ्चताम्	प्र० पु०	अविङ्क्त	अविञ्चाताम्	अविञ्चत
विङ्क्ष्व	विञ्चाथाम्	विङ्ग्ध्वम्	म० पु०	अविङ्क्थाः	अविञ्चाथाम्	अविङ्ग्ध्वम्
विनचै	विनचावहै	विनचामहै	उ० पु०	अविञ्चि	अविञ्च्वहि	अविञ्च्महि

ग्रादि			
अविक्त	अविक्षाताम्	अविक्षत	प्र० पु०
अविक्थाः	अविक्षाथाम्	अविग्ध्वम्, अविग्ढ्ध्वम्	म० पु०
अविक्षि	अविक्ष्वहि	अविक्ष्महि	उ० पु०

णबादि			क्यादादि		
विविचे	विविचाते	विविचिरे	प्र० पु० विक्षीष्ट	विक्षीयास्ताम्	विक्षीरन्
विविचिषे	विविचाथे	विविचिध्वे	म० पु० विक्षीष्ठाः	विक्षीयास्थाम्	विक्षीध्वम्
विविचे	विविचिवहे	विविचिमहे	उ० पु० विक्षीय	विक्षीवहि	विक्षीमहि

तादि				स्यत्यादि		
वेक्ता	वेक्तारौ	वेक्तारः	प्र० पु०	वेक्ष्यते	वेक्ष्येते	वेक्ष्यन्ते
वेक्तासे	वेक्तासाथे	वेक्ताध्वे	म० पु०	वेक्ष्यसे	वेक्ष्येथे	वेक्ष्यध्वे
वेक्ताहे	वेक्तास्वहे	वेक्तास्महे	उ० पु०	वेक्ष्ये	वेक्ष्यावहे	वेक्ष्यामहे

स्यदादि

अवेक्ष्यत	अवेक्ष्येताम्	अवेक्ष्यन्त	प्र० पु०
अवेक्ष्यथाः	अवेक्ष्येथाम्	अवेक्ष्यध्वम्	म० पु०
अवेक्ष्ये	अवेक्ष्यावहि	अवेक्ष्यामहि	उ० पु०

११७. डुक्रीञ्—द्रव्यविनिमये (उभयपदी) खरीदना

परस्मैपद

तिबादि	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		यादादि	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	प्र० पु०		क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	म० पु०		क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	उ० पु०		क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

तुबादि				दिबादि		
क्रीणातु, क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
क्रीणीहि, क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत	म० पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	उ० पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

सादि				णबादि		
अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः	प्र० पु०	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः
अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट	म० पु०	चिक्रयिथ, चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म	उ० पु०	चिक्राय, चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम

क्र्यादादि				तादि		
क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः	प्र० पु०	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
क्रीयाः	क्रीयास्तम्	क्रीयास्त	म० पु०	क्रेतासि	क्रेतास्थः	क्रेतास्थ
क्रीयासम्	क्रीयास्व	क्रीयास्म	उ० पु०	क्रेतास्मि	क्रेतास्वः	क्रेतास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति	प्र० पु०	अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम्	अक्रेष्यन्
क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ	म० पु०	अक्रेष्यः	अक्रेष्यतम्	अक्रेष्यत
क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः	उ० पु०	अक्रेष्यम्	अक्रेष्याव	अक्रेष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				यादादि		
क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते	प्र० पु०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे	म० पु०	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे	उ० पु०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि
तुबादि				दिबादि		
क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्	प्र० पु०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्	म० पु०	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै	उ० पु०	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि
द्यादि				णबादि		
अक्रेष्ट	अक्रेषाताम्	अक्रेषत	प्र० पु०	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
अक्रेष्ठाः	अक्रेषाथाम्	अक्रेढ्वम्	म० पु०	चिक्रियषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे, चिक्रियिढ्वे
अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि	उ० पु०	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे
क्र्यादि				तादि		
क्रेषीष्ट	क्रेषीयास्ताम्	क्रेषीरन्	प्र० पु०	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
क्रेषीष्ठाः	क्रेषीयास्थाम्	क्रेषीढ्वम्	म० पु०	क्रेतासे	क्रेतासाथे	क्रेताध्वे
क्रेषीय	क्रेषीवहि	क्रेषीमहि	उ० पु०	क्रेताहे	क्रेतास्वहे	क्रेतास्महे
स्यत्यादि				स्यदादि		
क्रेष्यते	क्रेष्यते	क्रेष्यन्ते	प्र० पु०	अक्रेष्यत	अक्रेष्येताम्	अक्रेष्यन्त
क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे	म० पु०	अक्रेष्यथाः	अक्रेष्येथाम्	अक्रेष्यध्वम्
क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे	उ० पु०	अक्रेष्ये	अक्रेष्यावहि	अक्रेष्यामहि

११८. पूनृश्—पवने (उभयपदी) साफ करना

परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि			
पुनाति	पुनीतः	पुनन्ति	प्र० पु०	पुनीयात्	पुनीयाताम्		पुनीयुः
पुनासि	पुनीथः	पुनीथ	म० पु०	पुनीयाः	पुनीयातम्		पुनीयात
पुनामि	पुनीवः	पुनीमः	उ० पु०	पुनीयाम्	पुनीयाव		पुनीयाम
तुबादि				दिबादि			
पुनातु, पुनीतात्		पुनीताम्	पुनन्तु	प्र० पु०	अपुनात्	अपुनीताम्	अपुनन्
पुनीहि, पुनीतात्		पुनीतम्	पुनीत	म० पु०	अपुनाः	अपुनीतम्	अपुनीत
पुनानि		पुनाव	पुनाम	उ० पु०	अपुनाम्	अपुनीव	अपुनीम

ञादि				**णबादि**		
अपावीत्	अपाविष्टाम्	अपाविषुः	प्र० पु०	पुपाव	पुपुवतुः	पुपुवुः
अपावीः	अपाविष्टम्	अपाविष्ट	म० पु०	पुपविथ	पुपुवथुः	पुपुव
अपाविषम्	अपाविष्व	अपाविष्म	उ० पु०	पुपाव, पुपव	पुपुविव	पुपुविम

क्यादादि				**तादि**		
पूयात्	पूयास्ताम्	पूयासुः	प्र० पु०	पविता	पवितारौ	पवितारः
पूयाः	पूयास्तम्	पूयास्त	म० पु०	पवितासि	पवितास्थः	पवितास्थ
पूयासम्	पूयास्व	पूयास्म	उ० पु०	पवितास्मि	पवितास्वः	पवितास्मः

स्यत्यादि				**स्यदादि**		
पविष्यति	पविष्यतः	पविष्यन्ति	प्र० पु०	अपविष्यत्	अपविष्यताम्	अपविष्यन्
पविष्यसि	पविष्यथः	पविष्यथ	म० पु०	अपविष्यः	अपविष्यतम्	अपविष्यत
पविष्यामि	पविष्यावः	पविष्यामः	उ० पु०	अपविष्यम्	अपविष्याव	अपविष्याम

आत्मनेपद

तिबादि				**यादादि**		
पुनीते	पुनाते	पुनते	प्र० पु०	पुनीत	पुनीयाताम्	पुनीरन्
पुनीषे	पुनाथे	पुनीध्वे	म० पु०	पुनीथाः	पुनीयाथाम्	पुनीध्वम्
पुने	पुनीवहे	पुनीमहे	उ० पु०	पुनीय	पुनीवहि	पुनीमहि

तुबादि				**दिबादि**		
पुनीताम्	पुनाताम्	पुनताम्	प्र० पु०	अपुनीत	अपुनाताम्	अपुनत
पुनीष्व	पुनाथाम्	पुनीध्वम्	म० पु०	अपुनीथाः	अपुनाथाम्	अपुनीध्वम्
पुनै	पुनावहै	पुनामहै	उ० पु०	अपुनि	अपुनीवहि	अपुनीमहि

ञादि			
अपविष्ट	अपविषाताम्	अपविषत	प्र० पु०
अपविष्ठाः	अपविषाथाम्	अपविढ्वम्, अपविध्वम्	म० पु०
अपविषि	अपविष्वहि	अपविष्महि	उ० पु०

णबादि			
पुपुवे	पुपुवाते	पुपुविरे	प्र० पु०
पुपुविषे	पुपुवाथे	पुपुविढ्वे, पुपुविध्वे	म० पु०
पुपुवे	पुपुविवहे	पुपुविमहे	उ० पु०

क्यादादि			
पविषीष्ट	पविषीयास्ताम्	पविषीरन्	प्र० पु०
पविषीष्ठाः	पविषीयास्थाम्	पविषीढ्वम्, पविषीध्वम्	म० पु०
पविषीय	पविषीवहि	पविषीमहि	उ० पु०

तादि				स्यत्यादि		
पविता	पवितारौ	पवितारः	प्र० पु०	पविष्यते	पविष्येते	पविष्यन्ते
पवितासे	पवितासाथे	पविताध्वे	म० पु०	पविष्यसे	पविष्येथे	पविष्यध्वे
पविताहे	पवितास्वहे	पवितास्महे	उ० पु०	पविष्ये	पविष्यावहे	पविष्यामहे

स्यदादि			
अपविष्यत	अपविष्येताम्	अपविष्यन्त	प्र० पु०
अपविष्यथाः	अपविष्येथाम्	अपविष्यध्वम्	म० पु०
अपविष्ये	अपविष्यावहि	अपविष्यामहि	उ० पु०

११९. लून्श्—छेदने (उभयपदी) काटना

परस्मैपद

तिबादि				यादादि		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लुनाति	लुनीतः	लुनन्ति	प्र० पु०	लुनीयात्	लुनीयाताम्	लुनीयुः
लुनासि	लुनीथः	लुनीथ	म० पु०	लुनीयाः	लुनीयातम्	लुनीयात
लुनामि	लुनीवः	लुनीमः	उ० पु०	लुनीयाम्	लुनीयाव	लुनीयाम

तुबादि				दिबादि		
लुनातु, लुनीतात्	लुनीताम्	लुनन्तु	प्र० पु०	अलुनात्	अलुनीताम्	अलुनन्
लुनीहि, लुनीतात्	लुनीतम्	लुनीत	म० पु०	अलुनाः	अलुनीतम्	अलुनीत
लुनानि	लुनाव	लुनाम	उ० पु०	अलुनाम्	अलुनीव	अलुनीम

ङ्यादि				णबादि		
अलावीत्	अलाविष्टाम्	अलाविषुः	प्र० पु०	लुलाव	लुलुवतुः	लुलुवुः
अलावीः	अलाविष्टम्	अलाविष्ट	म० पु०	लुलविथ	लुलुवथुः	लुलुव
अलाविषम्	अलाविष्व	अलाविष्म	उ० पु०	लुलाव, लुलव	लुलुविव	लुलुविम

क्र्यादादि				तादि		
लूयात्	लूयास्ताम्	लूयासुः	प्र० पु०	लविता	लवितारौ	लवितारः
लूयाः	लूयास्तम्	लूयास्त	म० पु०	लवितासि	लवितास्थः	लवितास्थ
लूयासम्	लूयास्व	लूयास्म	उ० पु०	लवितास्मि	लवितास्वः	लवितास्मः

स्यत्यादि				स्यदादि		
लविष्यति	लविष्यतः	लविष्यन्ति	प्र० पु०	अलविष्यत्	अलविष्यताम्	अलविष्यन्
लविष्यसि	लविष्यथः	लविष्यथ	म० पु०	अलविष्यः	अलविष्यतम्	अलविष्यत
लविष्यामि	लविष्यावः	लविष्यामः	उ० पु०	अलविष्यम्	अलविष्याव	अलविष्याम

आत्मनेपद

तिबादि **यादादि**

लुनीते	लुनाते	लुनते	प्र० पु० लुनीत	लुनीयाताम्	लुनीरन्
लुनीषे	लुनाथे	लुनीध्वे	म० पु० लुनीथाः	लुनीयाथाम्	लुनीध्वम्
लुने	लुनीवहे	लुनीमहे	उ० पु० लुनीय	लुनीवहि	लुनीमहि

तुबादि **दिबादि**

लुनीताम्	लुनाताम्	लुनताम्	प्र० पु० अलुनीत	अलुनाताम्	अलुनत
लुनीष्व	लुनाथाम्	लुनीध्वम्	म० पु० अलुनीथाः	अलुनाथाम्	अलुनीध्वम्
लुनै	लुनावहै	लुनामहै	उ० पु० अलुनि	अलुनीवहि	अलुनीमहि

ञादि

अलविष्ट	अलविषाताम्	अलविषत	प्र० पु०
अलविष्ठाः	अलविषाथाम्	अलविढ्वम्, अलविध्वम्	म० पु०
अलविषि	अलविष्वहि	अलविष्महि	उ० पु०

णबादि

लुलुवे	लुलुवाते	लुलुविरे	प्र० पु०
लुलुविषे	लुलुवाथे	लुलुविढ्वे, लुलुविध्वे	म० पु०
लुलुवे	लुलुविवहे	लुलुविमहे	उ० पु०

क्यादादि

लविषीष्ट	लविषीयास्ताम्	लविषीरन्	प्र० पु०
लविषीष्ठाः	लविषीयास्थाम्	लविषीढ्वम्, लविषीध्वम्	म० पु०
लविषीय	लविषीवहि	लविषीमहि	उ० पु०

तादि

लविता	लवितारौ	लवितारः	प्र० पु०
लवितासे	लवितासाथे	लविताध्वे	म० पु०
लविताहे	लवितास्वहे	लवितास्महे	उ० पु०

स्यत्यादि **स्यदादि**

लविष्यते	लविष्येते	लविष्यन्ते	प्र० पु० अलविष्यत	अलविष्येताम्	अलविष्यन्त
लविष्यसे	लविष्येथे	लविष्यध्वे	म० पु० अलविष्यथाः	अलविष्येथाम्	अलविष्यध्वम्
लविष्ये	लविष्यावहे	लविष्यामहे	उ० पु० अलविष्ये	अलविष्यावहि	अलविष्यामहि

१२०. स्तॄञ्—आच्छादने (उभयपदी) आच्छादन करना

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
स्तृणाति	स्तृणीतः	स्तृण्न्ति	प्र० पु०	स्तृणीयात्	स्तृणीयाताम्	स्तृणीयुः
स्तृणासि	स्तृणीथः	स्तृणीथ	म० पु०	स्तृणीयाः	स्तृणीयातम्	स्तृणीयात
स्तृणामि	स्तृणीवः	स्तृणीमः	उ० पु०	स्तृणीयाम्	स्तृणीयाव	स्तृणीयाम
तुबादि				**दिबादि**		
स्तृणात्, स्तृणीतात्	स्तृणीताम्	स्तृणन्तु	प्र० पु०	अस्तृणात्	अस्तृणीताम्	अस्तृणन्
स्तृणीहि, स्तृणीतात्	स्तृणीतम्	स्तृणीत	म० पु०	अस्तृणाः	अस्तृणीतम्	अस्तृणीत
स्तृणानि	स्तृणाव	स्तृणाम	उ० पु०	अस्तृणाम्	अस्तृणीव	अस्तृणीम
ष्यादि				**णबादि**		
अस्तारीत्	अस्तारिष्टाम्	अस्तारिषुः	प्र० पु०	तस्तार	तस्तरतुः	तस्तरुः
अस्तारीः	अस्तारिष्टम्	अस्तारिष्ट	म० पु०	तस्तरिथ	तस्तरथुः	तस्तर
अस्तारिषम्	अस्तारिष्व	अस्तारिष्म	उ० पु०	तस्तार,तस्तर	तस्तरिव	तस्तरिम
क्यादादि				**तादि**		
स्तीर्यात्	स्तीर्यास्ताम्	स्तीर्यासुः	प्र० पु०	स्तरिता	स्तरितारौ	स्तरितारः
स्तीर्याः	स्तीर्यास्तम्	स्तीर्यास्त	म० पु०	स्तरितासि	स्तरितास्थः	स्तरितास्थ
स्तीर्यासम्	स्तीर्यास्व	स्तीर्यास्म	उ० पु०	स्तरितास्मि	स्तरितास्वः	स्तरितास्मः
स्यत्यादि (१)				**स्यत्यादि (२)**		
स्तरिष्यति	स्तरिष्यतः	स्तरिष्यन्ति	प्र० पु०	स्तरीष्यति	स्तरीष्यतः	स्तरीष्यन्ति
स्तरिष्यसि	स्तरिष्यथः	स्तरिष्यथ	म० पु०	स्तरीष्यसि	स्तरीष्यथः	स्तरीष्यथ
स्तरिष्यामि	स्तरिष्यावः	स्तरिष्यामः	उ० पु०	स्तरीष्यामि	स्तरीष्यावः	स्तरीष्यामः

स्यदादि (१)

अस्तरिष्यत्	अस्तरिष्यताम्	अस्तरिष्यन्	प्र० पु०
अस्तरिष्यः	अस्तरिष्यतम्	अस्तरिष्यत	म० पु०
अस्तरिष्यम्	अस्तरिष्याव	अस्तरिष्याम	उ० पु०

स्यदादि (२)

अस्तरीष्यत्	अस्तरीष्यताम्	अस्तरीष्यन्	प्र० पु०
अस्तरीष्यः	अस्तरीष्यतम्	अस्तरीष्यत	म० पु०
अस्तरीष्यम्	अस्तरीष्याव	अस्तरीष्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि				यादादि		
स्तृणीते	स्तृणाते	स्तृणते	प्र० पु०	स्तृणीत	स्तृणीयाताम्	स्तृणीरन्
स्तृणीषे	स्तृणाथे	स्तृणीध्वे	म० पु०	स्तृणीथाः	स्तृणीयाथाम्	स्तृणीध्वम्
स्तृणै	स्तृणीवहे	स्तृणीमहे	उ० पु०	स्तृणीय	स्तृणीवहि	स्तृणीमहि

तुबादि				दिबादि		
स्तृणीताम्	स्तृणाताम्	स्तृणताम्	प्र० पु०	अस्तृणीत	अस्तृणाताम्	अस्तृणत
स्तृणीष्व	स्तृणाथाम्	स्तृणीध्वम्	म० पु०	अस्तृणीथाः	अस्तृणाथाम्	अस्तृणीध्वम्
स्तृणै	स्तृणावहै	स्तृणामहै	उ० पु०	अस्तृणि	अस्तृणीवहि	अस्तृणीमहि

ह्यादि (१)

अस्तरिष्ट	अस्तरिषाताम्	अस्तरिषत	प्र० पु०
अस्तरिष्ठाः	अस्तरिषाथाम्	अस्तरिढ्वम्, अस्तरिध्वम्	म० पु०
अस्तरिषि	अस्तरिष्वहि	अस्तरिष्महि	उ० पु०

ह्यादि (२)

अस्तरीष्ट	अस्तरीषाताम्	अस्तरीषत	प्र० पु०
अस्तरीष्ठाः	अस्तरीषाथाम्	अस्तरीढ्वम्, अस्तरीध्वम्	म० पु०
अस्तरीषि	अस्तरीष्वहि	अस्तरीष्महि	उ० पु०

ह्यादि (३)

अस्तीर्ष्ट	अस्तीर्षाताम्	अस्तीर्षत	प्र० पु०
अस्तीर्ष्ठाः	अस्तीर्षाथाम्	अस्तीढ्वम्, अस्तीर्ध्वम्	म० पु०
अस्तीर्षि	अस्तीर्ष्वहि	अस्तीर्ष्महि	उ० पु०

णबादि

तस्तरे	तस्तराते	तस्तरिरे	प्र० पु०
तस्तरिषे	तस्तराथे	तस्तरिध्वे, तस्तरिढ्वे	म० पु०
तस्तरे	तस्तरिवहे	तस्तरिमहे	उ० पु०

क्र्यादादि (१)

स्तरिषीष्ट	स्तरिषीयास्ताम्	स्तरिषीरन्	प्र० पु०
स्तरिषीष्ठाः	स्तरिषीयास्थाम्	स्तरिषीढ्वम्, स्तरिषीध्वम्	म० पु०
स्तरिषीय	स्तरिषीवहि	स्तरिषीमहि	उ० पु०

क्र्यादादि (२)

स्तीर्षीष्ट	स्तीर्षीयास्ताम्	स्तीर्षीरन्	प्र० पु०
स्तीर्षीष्ठाः	स्तीर्षीयास्थाम्	स्तीर्षीढ्वम्, स्तीर्षीध्वम्	म० पु०
स्तीर्षीय	स्तीर्षीवहि	स्तीर्षीमहि	उ० पु०

तादि (१)				तादि (२)		
स्तरिता	स्तरितारौ	स्तरितारः	प्र० पु०	स्तरीता	स्तरीतारौ	स्तरीतारः
स्तरितासे	स्तरितासाथे	स्तरिताध्वे	म० पु०	स्तरीतासे	स्तरीतासाथे	स्तरीताध्वे
स्तरिताहे	स्तरितास्वहे	स्तरितास्महे	उ० पु०	स्तरीताहे	स्तरीतास्वहे	स्तरीतास्महे

स्यत्यादि (१)				स्यत्यादि (२)		
स्तरिष्यते	स्तरिष्येते	स्तरिष्यन्ते	प्र० पु०	स्तरीष्यते	स्तरीष्येते	स्तरीष्यन्ते
स्तरिष्यसे	स्तरिष्येथे	स्तरिष्यध्वे	म० पु०	स्तरीष्यसे	स्तरीष्येथे	स्तरीष्यध्वे
स्तरिष्ये	स्तरिष्यावहे	स्तरिष्यामहे	उ० पु०	स्तरीष्ये	स्तरीष्यावहे	स्तरीष्यामहे

स्यदादि (१)

अस्तरिष्यत	अस्तरिष्येताम्	अस्तरिष्यन्त	प्र० पु०
अस्तरिष्यथाः	अस्तरिष्येथाम्	अस्तरिष्यध्वम्	म० पु०
अस्तरिष्ये	अस्तरिष्यावहि	अस्तरिष्यामहि	उ० पु०

स्यदादि (२)

अस्तरीष्यत	अस्तरीष्येताम्	अस्तरीष्यन्त	प्र० पु०
अस्तरीष्यथाः	अस्तरीष्येथाम्	अस्तरीष्यध्वम्	म० पु०
अस्तरीष्ये	अस्तरीष्यावहि	अस्तरीष्यामहि	उ० पु०

१२१. मन्थश्—विलोडने (मथना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
मथ्नाति	मथ्नीतः	मथ्नन्ति	प्र० पु०	मथ्नीयात्	मथ्नीयाताम्	मथ्नीयुः
मथ्नासि	मथ्नीथः	मथ्नीथ	म० पु०	मथ्नीयाः	मथ्नीयातम्	मथ्नीयात
मथ्नामि	मथ्नीवः	मथ्नीमः	उ० पु०	मथ्नीयाम्	मथ्नीयाव	मथ्नीयाम
तुबादि				**दिबादि**		
मथ्नातु, मथ्नीतात्	मथ्नीताम्	मथ्नन्तु	प्र० पु०	अमथ्नात्	अमथ्नीताम्	अमथ्नन्
मथान, मथ्नीतात्	मथ्नीतम्	मथ्नीत	म० पु०	अमथ्नाः	अमथ्नीतम्	अमथ्नीत
मथ्नानि	मथ्नाव	मथ्नाम	उ० पु०	अमथ्नाम्	अमथ्नीव	अमथ्नीम
ष्ठादि				**णबादि**		
अमन्थीत्	अमन्थिष्टाम्	अमन्थिषुः	प्र० पु०	ममन्थ	ममन्थतुः	ममन्थुः
अमन्थीः	अमन्थिष्टम्	अमन्थिष्ट	म० पु०	ममन्थिथ	ममन्थथुः	ममन्थ
अमन्थिषम्	अमन्थिष्व	अमन्थिष्म	उ० पु०	ममन्थ	ममन्थिव	ममन्थिम
क्यादादि				**तादि**		
मथ्यात्	मथ्यास्ताम्	मथ्यासुः	प्र० पु०	मन्थिता	मन्थितारौ	मन्थितारः
मथ्याः	मथ्यास्तम्	मथ्यास्त	म० पु०	मन्थितासि	मन्थितास्थः	मन्थितास्थ
मथ्यासम्	मथ्यास्व	मथ्यास्म	उ० पु०	मन्थितास्मि	मन्थितास्वः	मन्थितास्मः

यत्स्यादि

मन्थिष्यति	मन्थिष्यतः	मन्थिष्यन्ति	प्र० पु०
मन्थिष्यसि	मन्थिष्यथः	मन्थिष्यथ	म० पु०
मन्थिष्यामि	मन्थिष्यावः	मन्थिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अमन्थिष्यत्	अमन्थिष्यताम्	अमन्थिष्यन्	प्र० पु०
अमन्थिष्यः	अमन्थिष्यतम्	अमन्थिष्यत	म० पु०
अमन्थिष्यम्	अमन्थिष्याव	अमन्थिष्याम	उ० पु०

१२२. बन्धश्—बन्धने (बांधना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति	प्र० पु०	बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः
बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ	म० पु०	बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात
बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः	उ० पु०	बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम
तुबादि				**दिबादि**		
बध्नातु, बध्नीतात्	बध्नीताम्	बध्नन्तु	प्र० पु०	अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्
बधान, बध्नीतात्	बध्नीतम्	बध्नीत	म० पु०	अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत
बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम	उ० पु०	अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम
ञ्यादि				**णबादि**		
अभान्त्सीत्	अबान्द्धाम्	अभान्त्सुः	प्र० पु०	बबन्ध	बबन्धतुः	बबन्धुः
अभान्त्सीः	अबान्द्धम्	अबान्द्ध	म० पु०	बबन्द्ध, बबन्धिथ	बबन्धथुः	बबन्ध
अभान्त्सम्	अभान्त्स्व	अभान्त्स्म	उ० पु०	बबन्ध	बबन्धिव	बबन्धिम
क्यादादि				**तादि**		
बध्यात्	बध्यास्ताम्	बध्यासुः	प्र० पु०	बन्द्धा	बन्द्धारौ	बन्द्धारः
बध्याः	बध्यास्तम्	बध्यास्त	म० पु०	बन्द्धासि	बन्द्धास्थः	बन्द्धास्थ
बध्यासम्	बध्यास्व	बध्यास्म	उ० पु०	बन्द्धास्मि	बन्द्धास्वः	बन्द्धास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
भन्त्स्यति	भन्त्स्यतः	भन्त्स्यन्ति	प्र० पु०	अभन्त्स्यत्	अभन्त्स्यताम्	अभन्त्स्यन्
भन्त्स्यसि	भन्त्स्यथः	भन्त्स्यथ	म० पु०	अभन्त्स्यः	अभन्त्स्यतम्	अभन्त्स्यत
भन्त्स्यामि	भन्त्स्यावः	भन्त्स्यामः	उ० पु०	अभन्त्स्यम्	अभन्त्स्याव	अभन्त्स्याम

१२३. अशश्—भोजने (खाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
अश्नाति	अश्नीतः	अश्नन्ति	प्र० पु०	अश्नीयात्	अश्नीयाताम्	अश्नीयुः
अश्नासि	अश्नीथः	अश्नीथ	म० पु०	अश्नीयाः	अश्नीयातम्	अश्नीयात
अश्नामि	अश्नीवः	अश्नीमः	उ० पु०	अश्नीयाम्	अश्नीयाव	अश्नीयाम
तुबादि				**दिबादि**		
अश्नातु, अश्नीतात्	अश्नीताम्	अश्नन्तु	प्र० पु०	आश्नात्	आश्नीताम्	आश्नन्
अशान, अश्नीतात्	अश्नीतम्	अश्नीत	म० पु०	आश्नाः	आश्नीतम्	आश्नीत
अश्नानि	अश्नाव	अश्नाम	उ० पु०	आश्नाम्	आश्नीव	आश्नीम
ह्यादि				**णबादि**		
आशीत्	आशिष्टाम्	आशिषुः	प्र० पु०	आश	आशतुः	आशुः
आशीः	आशिष्टम्	आशिष्ट	म० पु०	आशिथ	आशथुः	आश
आशिषम्	आशिष्व	आशिष्म	उ० पु०	आश	आशिव	आशिम
क्यादादि				**तादि**		
अश्यात्	अश्यास्ताम्	अश्यासुः	प्र० पु०	अशिता	अशितारौ	अशितारः
अश्याः	अश्यास्तम्	अश्यास्त	म० पु०	अशितासि	अशितास्थः	अशितास्थ
अश्यासम्	अश्यास्व	अश्यास्म	उ० पु०	अशितास्मि	अशितास्वः	अशितास्मः
स्यत्यादि				**स्यदादि**		
अशिष्यति	अशिष्यतः	अशिष्यन्ति	प्र० पु०	आशिष्यत्	आशिष्यताम्	आशिष्यन्
अशिष्यसि	अशिष्यथः	अशिष्यथ	म० पु०	आशिष्यः	आशिष्यतम्	आशिष्यत
अशिष्यामि	अशिष्यावः	अशिष्यामः	उ० पु०	आशिष्यम्	आशिष्याव	आशिष्याम

१२४. पुषश्—पुष्टौ (पुष्ट करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
पुष्णाति	पुष्णीतः	पुष्णन्ति	प्र० पु०	पुष्णीयात्	पुष्णीयाताम्	पुष्णीयुः
पुष्णासि	पुष्णीथः	पुष्णीथ	म० पु०	पुष्णीयाः	पुष्णीयातम्	पुष्णीयात
पुष्णामि	पुष्णीवः	पुष्णीमः	उ० पु०	पुष्णीयाम्	पुष्णीयाव	पुष्णीयाम
तुबादि				**दिबादि**		
पुष्णातु, पुष्णीतात्	पुष्णीताम्	पुष्णन्तु	प्र० पु०	अपुष्णात्	अपुष्णीताम्	अपुष्णन्
पुषाण, पुष्णीतात्	पुष्णीतम्	पुष्णीत	म० पु०	अपुष्णाः	अपुष्णीतम्	अपुष्णीत
पुष्णानि	पुष्णाव	पुष्णाम	उ० पु०	अपुष्णाम्	अपुष्णीव	अपुष्णीम

द्यादि			णबादि		
अपोषीत्	अपोषिष्टाम्	अपोषिषुः	प्र० पु० पुपोष	पुपुषतुः	पुपुषुः
अपोषीः	अपोषिष्टम्	अपोषिष्ट	म० पु० पुपोषिथ	पुपुषथुः	पुपुष
अपोषिषम्	अपोषिष्व	अपोषिष्म	उ० पु० पुपोष	पुपुषिव	पुपुषिम

क्र्यादि			तादि		
पुष्यात्	पुष्यास्ताम्	पुष्यासुः	प्र० पु० पोषिता	पोषितारौ	पोषितारः
पुष्याः	पुष्यास्तम्	पुष्यास्त	म० पु० पोषितासि	पोषितास्थः	पोषितास्थ
पुष्यासम्	पुष्यास्व	पुष्यास्म	उ० पु० पोषितास्मि	पोषितास्वः	पोषितास्मः

स्यत्यादि			स्यदादि		
पोषिष्यति	पोषिष्यतः	पोषिष्यन्ति	प्र. पु. अपोषिष्यत्	अपोषिष्यताम्	अपोषिष्यन्
पोषिष्यसि	पोषिष्यथः	पोषिष्यथ	म. पु. अपोषिष्यः	अपोषिष्यतम्	अपोषिष्यत
पोषिष्यामि	पोषिष्यावः	पोषिष्यामः	उ. पु. अपोषिष्यम्	अपोषिष्याव	अपोषिष्याम

१२५. पूजण्—पूजायाम् (पूजा करना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				यादादि			
	पूजयति	पूजयतः	पूजयन्ति	प्र० पु०	पूजयेत्	पूजयेताम्	पूजयेयुः
	पूजयसि	पूजयथः	पूजयथ	म० पु०	पूजयेः	पूजयेतम्	पूजयेत
	पूजयामि	पूजयावः	पूजयामः	उ० पु०	पूजयेयम्	पूजयेव	पूजयेम

तुबादि			दिबादि		
पूजयतु, पूजयतात्	पूजयताम्	पूजयन्तु	प्र० पु० अपूजयत्	अपूजयताम्	अपूजयन्
पूजय, पूजयतात्	पूजयतम्	पूजयत	म० पु० अपूजयः	अपूजयतम्	अपूजयत
पूजयानि	पूजयाव	पूजयाम	उ० पु० अपूजयम्	अपूजयाव	अपूजयाम

द्यादि			
अपूपुजत्	अपूपुजताम्	अपूपुजन्	प्र० पु०
अपूपुजः	अपूपुजतम्	अपूपुजत	म० पु०
अपूपुजम्	अपूपुजाव	अपूपुजाम	उ० पु०

णबादि (१)			
पूजयाञ्चकार	पूजयाञ्चक्रतुः	पूजयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
पूजयाञ्चकर्थ	पूजयाञ्चक्रथुः	पूजयाञ्चक्र	म० पु०
पूजयाञ्चकार, पूजयाञ्चकर	पूजयाञ्चक्रव	पूजयाञ्चक्रम	उ० पु०

णबादि (२)

पूजयाम्बभूव	पूजयाम्बभूवतुः	पूजयाम्बभूवुः	प्र० पु०
पूजयाम्बभूविथ	पूजयाम्बभूवथुः	पूजयाम्बभूव	म० पु०
पूजयाम्बभूव	पूजयाम्बभूविव	पूजयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

पूजयामास	पूजयामासतुः	पूजयामासुः	प्र० पु०
पूजयामासिथ	पूजयामासथुः	पूजयामास	म० पु०
पूजयामास	पूजयामासिव	पूजयामासिम	उ० पु०

क्यादादि **तादि**

पूज्यात्	पूज्यास्ताम्	पूज्यासुः	प्र० पु० पूजयिता	पूजयितारौ	पूजयितारः
पूज्याः	पूज्यास्तम्	पूज्यास्त	म० पु० पूजयितासि	पूजयितास्थः	पूजयितास्थ
पूज्यासम्	पूज्यास्व	पूज्यास्म	उ० पु० पूजयितास्मि	पूजयितास्वः	पूजयितास्मः

स्यत्यादि

पूजयिष्यति	पूजयिष्यतः	पूजयिष्यन्ति	प्र० पु०
पूजयिष्यसि	पूजयिष्यथः	पूजयिष्यथ	म० पु०
पूजयिष्यामि	पूजयिष्यावः	पूजयिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अपूजयिष्यत्	अपूजयिष्यताम्	अपूजयिष्यन्	प्र० पु०
अपूजयिष्यः	अपूजयिष्यतम्	अपूजयिष्यत	म० पु०
अपूजयिष्यम्	अपूजयिष्याव	अपूजयिष्याम	उ० पु०

१२६. पलण्—रक्षणे (रक्षा करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
पालयति	पालयतः	पालयन्ति	प्र० पु०	पालयेत्	पालयेताम्	पालयेयुः
पालयसि	पालयथः	पालयथ	म० पु०	पालयेः	पालयेतम्	पालयेत
पालयामि	पालयावः	पालयामः	उ० पु०	पालयेयम्	पालयेव	पालयेम

तुबादि

पालयतु, पालयतात्	पालयताम्	पालयन्तु	प्र० पु०
पालय, पालयतात्	पालयतम्	पालयत	म० पु०
पालयानि	पालयाव	पालयाम	उ० पु०

दिवादि				ह्यादि		
अपालयत्	अपालयताम्	अपालयन्	प्र० पु०	अपीपलत्	अपीपलताम्	अपीपलन्
अपालयः	अपालयतम्	अपालयत	म० पु०	अपीपलः	अपीपलतम्	अपीपलत
अपालयम्	अपालयाव	अपालयाम	उ० पु०	अपीपलम्	अपीपलाव	अपीपलाम

णबादि (१)

पालयाञ्चकार	पालयाञ्चक्रतुः	पालयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
पालयाञ्चकर्थ	पालयाञ्चक्रथुः	पालयाञ्चक्र	म० पु०
पालयाञ्चकार, पालयाञ्चकर	पालयाञ्चकृव	पालयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

पालयाम्बभूव	पालयाम्बभूवतुः	पालयाम्बभूवुः	प्र० पु०
पालयाम्बभूविथ	पालयाम्बभूवथुः	पालयाम्बभूव	म० पु०
पालयाम्बभूव	पालयाम्बभूविव	पालयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

पालयामास	पालयामासतुः	पालयामासुः	प्र० पु०
पालयामासिथ	पालयामासथुः	पालयामास	म० पु०
पालयामास	पालयामासिव	पालयामासिम	उ० पु०

क्र्यादि				तादि		
पाल्यात्	पाल्यास्ताम्	पाल्यासुः	प्र० पु०	पालयिता	पालयितारौ	पालयितारः
पाल्याः	पाल्यास्तम्	पाल्यास्त	म० पु०	पालयितासि	पालयितास्थः	पालयितास्थ
पाल्यासम्	पाल्यास्व	पाल्यास्म	उ० पु०	पालयितास्मि	पालयितास्वः	पालयितास्मः

स्यत्यादि

पालयिष्यति	पालयिष्यतः	पालयिष्यन्ति	प्र० पु०
पालयिष्यसि	पालयिष्यथः	पालयिष्यथ	म० पु०
पालयिष्यामि	पालयिष्यावः	पालयिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अपालयिष्यत्	अपालयिष्यताम्	अपालयिष्यन्	प्र० पु०
अपालयिष्यः	अपालयिष्यतम्	अपालयिष्यत	म० पु०
अपालयिष्यम्	अपालयिष्याव	अपालयिष्याम	उ० पु०

१२७. स्निहण्—स्नेहने (स्नेह करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
स्नेहयति	स्नेहयतः	स्नेहयन्ति	प्र० पु०	स्नेहयेत्	स्नेहयेताम्	स्नेहयेयुः
स्नेहयसि	स्नेहयथः	स्नेहयथ	म० पु०	स्नेहयेः	स्नेहयेतम्	स्नेहयेत
स्नेहयामि	स्नेहयावः	स्नेहयामः	उ० पु०	स्नेहयेयम्	स्नेहयेव	स्नेहयेम

तुआदि		**दिवादि**	
स्नेहयतु, स्नेहयतात्	स्नेहयताम् स्नेहयन्तु	अस्नेहयत्	अस्नेहयताम् अस्नेहयन्
स्नेहय, स्नेहयतात्	स्नेहयतम् स्नेहयत	अस्नेहयः	अस्नेहयतम् अस्नेहयत
स्नेहयानि	स्नेहयाव स्नेहयाम	अस्नेहयम्	अस्नेहयाव अस्नेहयाम

द्यादि

असिष्णिहत्	असिष्णिहताम्	असिष्णिहन्	प्र० पु०
असिष्णिहः	असिष्णिहतम्	असिष्णिहत	म० पु०
असिष्णिहम्	असिष्णिहाव	असिष्णिहाम	उ० पु०

णबादि (१)

स्नेहयाञ्चकार	स्नेहयाञ्चक्रतुः	स्नेहयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
स्नेहयाञ्चकर्थ	स्नेहयाञ्चक्रथुः	स्नेहयाञ्चक्र	म० पु०
स्नेहयाञ्चकार, स्नेहयाञ्चकर	स्नेहयाञ्चकृव	स्नेहयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

स्नेहयाम्बभूव	स्नेहयाम्बभूवतुः	स्नेहयाम्बभूवुः	प्र० पु०
स्नेहयाम्बभूविथ	स्नेहयाम्बभूवथुः	स्नेहयाम्बभूव	म० पु०
स्नेहयाम्बभूव	स्नेहयाम्बभूविव	स्नेहयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

स्नेहयामास	स्नेहयामासतुः	स्नेहयामासुः	प्र० पु०
स्नेहयामासिथ	स्नेहयामासथुः	स्नेहयामास	म० पु०
स्नेहयामास	स्नेहयामासिव	स्नेहयामासिम	उ० पु०

क्र्यादि			**तादि**		
स्नेह्यात्	स्नेह्यास्ताम्	स्नेह्यासुः	प्र० पु० स्नेहयिता	स्नेहयितारौ	स्नेहयितारः
स्नेह्याः	स्नेह्यास्तम्	स्नेह्यास्त	म० पु० स्नेहयितासि	स्नेहयितास्थः	स्नेहयितास्थ
स्नेह्यासम्	स्नेह्यास्व	स्नेह्यास्म	उ० पु० स्नेहयितास्मि	स्नेहयितास्वः	स्नेहयितास्मः

स्यत्यादि

स्नेहयिष्यति	स्नेहयिष्यतः	स्नेहयिष्यन्ति	प्र० पु०
स्नेहयिष्यसि	स्नेहयिष्यथः	स्नेहयिष्यथ	म० पु०
स्नेहयिष्यामि	स्नेहयिष्यावः	स्नेहयिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अस्नेहयिष्यत्	अस्नेहयिष्यताम्	अस्नेहयिष्यन्	प्र० पु०
अस्नेहयिष्यः	अस्नेहयिष्यतम्	अस्नेहयिष्यत	म० पु०
अस्नेहयिष्यम्	अस्नेहयिष्याव	अस्नेहयिष्याम	उ० पु०

१२८. मन्त्रङ्—गुप्तभाषणे (मन्त्रणा करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
तिबादि				**यादादि**			
मन्त्रयते	मन्त्रयेते	मन्त्रयन्ते	प्र० पु०	मन्त्रयेत	मन्त्रयेयाताम्	मन्त्रयेरन्	
मन्त्रयसे	मन्त्रयेथे	मन्त्रयध्वे	म० पु०	मन्त्रयेथाः	मन्त्रयेयाथाम्	मन्त्रयेध्वम्	
मन्त्रये	मन्त्रयावहे	मन्त्रयामहे	उ० पु०	मन्त्रयेय	मन्त्रयेवहि	मन्त्रयेमहि	
तुबादि				**दिबादि**			
मन्त्रयताम्	मन्त्रयेताम्	मन्त्रयन्ताम्	प्र० पु०	अमन्त्रयत	अमन्त्रयेताम्	अमन्त्रयन्त	
मन्त्रयस्व	मन्त्रयेथाम्	मन्त्रयध्वम्	म० पु०	अमन्त्रयथाः	अमन्त्रयेथाम्	अमन्त्रयध्वम्	
मन्त्रयै	मन्त्रयावहै	मन्त्रयामहै	उ० पु०	अमन्त्रये	अमन्त्रयावहि	अमन्त्रयामहि	

ह्यादि

अममन्त्रत	अममन्त्रेताम्	अममन्त्रन्त	प्र० पु०
अममन्त्रथाः	अममन्त्रेथाम्	अममन्त्रध्वम्	म० पु०
अममन्त्रे	अममन्त्रावहि	अममन्त्रामहि	उ० पु०

णबादि (१)

मन्त्रयाञ्चक्रे	मन्त्रयाञ्चक्राते	मन्त्रयाञ्चक्रिरे	प्र० पु०
मन्त्रयाञ्चकृषे	मन्त्रयाञ्चक्राथे	मन्त्रयाञ्चकृढ्वे	म० पु०
मन्त्रयाञ्चक्रे	मन्त्रयाञ्चकृवहे	मन्त्रयाञ्चकृमहे	उ० पु०

णबादि (२)

मन्त्रयाम्बभूव	मन्त्रयाम्बभूवतुः	मन्त्रयाम्बभूवुः	प्र० पु०
मन्त्रयाम्बभूविथ	मन्त्रयाम्बभूवथुः	मन्त्रयाम्बभूव	म० पु०
मन्त्रयाम्बभूव	मन्त्रयाम्बभूविव	मन्त्रयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

मन्त्रयामास	मन्त्रयामासतुः	मन्त्रयामासुः	प्र० पु०
मन्त्रयामासिथ	मन्त्रयामासथुः	मन्त्रयामास	म० पु०
मन्त्रयामास	मन्त्रयामासिव	मन्त्रयामासिम	उ० पु०

क्यादादि

मन्त्रयिषीष्ट	मन्त्रयिषीयास्ताम्	मन्त्रयिषीरन्	प्र० पु०
मन्त्रयिषीष्ठाः	मन्त्रयिषीयास्थाम्	मन्त्रयिषीढ्वम्, मन्त्रयिषीध्वम्	म० पु०
मन्त्रयिषीय	मन्त्रयिषीवहि	मन्त्रयिषीमहि	उ० पु०

तादि

मन्त्रयिता	मन्त्रयितारौ	मन्त्रयितारः	प्र० पु०
मन्त्रयितासे	मन्त्रयितासाथे	मन्त्रयिताध्वे	म० पु०
मन्त्रयिताहे	मन्त्रयितास्वहे	मन्त्रयितास्महे	उ० पु०

स्यत्यादि

मन्त्रयिष्यते	मन्त्रयिष्येते	मन्त्रयिष्यन्ते	प्र० पु०
मन्त्रयिष्यसे	मन्त्रयिष्येथे	मन्त्रयिष्यध्वे	म० पु०
मन्त्रयिष्ये	मन्त्रयिष्यावहे	मन्त्रयिष्यामहे	उ० पु०

स्यदादि

अमन्त्रयिष्यत	अमन्त्रयिष्येताम्	अमन्त्रयिष्यन्त	प्र० पु०
अमन्त्रयिष्यथाः	अमन्त्रयिष्येथाम्	अमन्त्रयिष्यध्वम्	म० पु०
अमन्त्रयिष्ये	अमन्त्रयिष्यावहि	अमन्त्रयिष्यामहि	उ० पु०

१२९. स्पृहण्—ईप्सायाम् (चाहना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
स्पृहयति	स्पृहयतः	स्पृहयन्ति	प्र० पु०	स्पृहयेत्	स्पृहयेताम्	स्पृहयेयुः
स्पृहयसि	स्पृहयथः	स्पृहयथ	म० पु०	स्पृहयेः	स्पृहयेतम्	स्पृहयेत
स्पृहयामि	स्पृहयाव	स्पृहयाम	उ० पु०	स्पृहयेयम्	स्पृहयेव	स्पृहयेम

तुबादि **दिबादि**

स्पृहयतु, स्पृहयतात्	स्पृहयताम्	स्पृहयन्तु	प्र० पु०	अस्पृहयत्	अस्पृहयताम्	अस्पृहयन्
स्पृहय, स्पृहयतात्	स्पृहयतम्	स्पृहयत	म० पु०	अस्पृहयः	अस्पृहयतम्	अस्पृहयत
स्पृहयाणि	स्पृहयाव	स्पृहयाम	उ० पु०	अस्पृहयम्	अस्पृहयाव	अस्पृहयाम

द्यादि

अपस्पृहत्	अपस्पृहताम्	अपस्पृहन्	प्र० पु०
अपस्पृहः	अपस्पृहतम्	अपस्पृहत	म० पु०
अपस्पृहम्	अपस्पृहाव	अपस्पृहाम	उ० पु०

णबादि (१)

स्पृहयाञ्चकार	स्पृहयाञ्चक्रतुः	स्पृहयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
स्पृहयाञ्चकर्थ	स्पृहयाञ्चक्रथुः	स्पृहयाञ्चक्र	म० पु०
स्पृहयाञ्चकार, स्पृहयाञ्चकर	स्पृहयाञ्चकृव	स्पृहयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

स्पृहयाम्बभूव	स्पृहयाम्बभूवतुः	स्पृहयाम्बभूवुः	प्र० पु०
स्पृहयाम्बभूविथ	स्पृहयाम्बभूवथुः	स्पृहयाम्बभूव	म० पु०
स्पृहयाम्बभूव	स्पृहयाम्बभूविव	स्पृहयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

स्पृहयामास	स्पृहयामासतुः	स्पृहयामासुः	प्र० पु०
स्पृहयामासिथ	स्पृहयामासथुः	स्पृहयामास	म० पु०
स्पृहयामास	स्पृहयामासिव	स्पृहयामासिम	उ० पु०

क्र्यादि **तादि**

स्पृह्यात् स्पृह्यास्ताम् स्पृह्यासुः प्र० पु० स्पृहयिता स्पृहयितारौ स्पृहयितारः
स्पृह्याः स्पृह्यास्तम् स्पृह्यास्त म० पु० स्पृहयितासि स्पृहयितास्थः स्पृहयितास्थ
स्पृह्यासम् स्पृह्यास्व स्पृह्यास्म उ० पु० स्पृहयितास्मि स्पृहयितास्वः स्पृहयितास्मः

स्यत्यादि

स्पृहयिष्यति	स्पृहयिष्यतः	स्पृहयिष्यन्ति	प्र० पु०
स्पृहयिष्यसि	स्पृहयिष्यथः	स्पृहयिष्यथ	म० पु०
स्पृहयिष्यामि	स्पृहयिष्यावः	स्पृहयिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अस्पृहयिष्यत्	अस्पृहयिष्यताम्	अस्पृहयिष्यन्	प्र० पु०
अस्पृहयिष्यः	अस्पृहयिष्यतम्	अस्पृहयिष्यत	म० पु०
अस्पृहयिष्यम्	अस्पृहयिष्याव	अस्पृहयिष्याम	उ० पु०

१३०. मार्गण्—अन्वेषणे (खोजना)

एकवचन द्विवचन बहुवचन एकवचन द्विवचन बहुवचन

तिबादि **यादि**

मार्गयति मार्गयतः मार्गयन्ति प्र० पु० मार्गयेत् मार्गयेताम् मार्गयेयुः
मार्गयसि मार्गयथः मार्गयथ म० पु० मार्गयेः मार्गयेतम् मार्गयेत
मार्गयामि मार्गयावः मार्गयामः उ० पु० मार्गयेयम् मार्गयेव मार्गयेम

तुबादि **दिबादि**

मार्गयतु, मार्गयतात् मार्गयताम् मार्गयन्तु प्र० पु० अमार्गयत् अमार्गयताम् अमार्गयन्
मार्गय, मार्गयतात् मार्गयतम् मार्गयत म० पु० अमार्गयः अमार्गयतम् अमार्गयत
मार्गयाणि मार्गयाव मार्गयाम उ० पु० अमार्गयम् अमार्गयाव अमार्गयाम

द्यादि

अममार्गत्	अममार्गताम्	अममार्गन्	प्र० पु०
अममार्गः	अममार्गतम्	अममार्गत	म० पु०
अममार्गम्	अममार्गाव	अममार्गाम	उ० पु०

णबादि (१)

मार्गयाञ्चकार	मार्गयाञ्चक्रतुः	मार्गयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
मार्गयाञ्चकर्थ	मार्गयाञ्चक्रथुः	मार्गयाञ्चक्र	म० पु०
मार्गयाञ्चकार, मार्गयाञ्चकर	मार्गयाञ्चकृव	मार्गयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

मार्गयाम्बभूव	मार्गयाम्बभूवतुः	मार्गयाम्बभूवुः	प्र० पु०
मार्गयाम्बभूविथ	मार्गयाम्बभूवथुः	मार्गयाम्बभूव	म० पु०
मार्गयाम्बभूव	मार्गयाम्बभूविव	मार्गयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

मार्गयामास	मार्गयामासतुः	मार्गयामासुः	प्र० पु०
मार्गयामासिथ	मार्गयामासथुः	मार्गयामास	म० पु०
मार्गयामास	मार्गयामासिव	मार्गयामासिम	उ० पु०

क्यादादि **तादि**

मार्ग्यात् मार्ग्यास्ताम् मार्ग्यासुः प्र० पु० मार्गयिता मार्गयितारौ मार्गयितारः
मार्ग्याः मार्ग्यास्तम् मार्ग्यास्त म० पु० मार्गयितासि मार्गयितास्थः मार्गयितास्थ
मार्ग्यास्म मार्ग्यास्व मार्ग्यास्म उ० पु० मार्गयितास्मि मार्गयितास्वः मार्गयितास्मः

स्यत्यादि

मार्गयिष्यति	मार्गयिष्यतः	मार्गयिष्यन्ति	प्र० पु०
मार्गयिष्यसि	मार्गयिष्यथः	मार्गयिष्यथ	म० पु०
मार्गयिष्यामि	मार्गयिष्यावः	मार्गयिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अमार्गयिष्यत्	अमार्गयिष्यताम्	अमार्गयिष्यन्	प्र० पु०
अमार्गयिष्यः	अमार्गयिष्यतम्	अमार्गयिष्यत	म० पु०
अमार्गयिष्यम्	अमार्गयिष्याव	अमार्गयिष्याम	उ० पु०

१३१. हिंसिण्—हिंसायाम् (हिंसा करना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि			**यादादि**		
हिंसयति	हिंसयतः	हिंसयन्ति	प्र० पु० हिंसयेत्	हिंसयेताम्	हिंसयेयुः
हिंसयसि	हिंसयथः	हिंसयथ	म० पु० हिंसयेः	हिंसयेतम्	हिंसयेत
हिंसयामि	हिंसयावः	हिंसयामः	उ० पु० हिंसयेयम्	हिंसयेव	हिंसयेम

तुबादि **दिबादि**

हिंसयतु, हिंसयतात् हिंसयताम् हिंसयन्तु प्र० पु० अहिंसयत् अहिंसयताम् अहिंसयन्
हिंसय, हिंसयतात् हिंसयतम् हिंसयत म० पु० अहिंसयः अहिंसयतम् अहिंसयत
हिंसयानि हिंसयाव हिंसयाम उ० पु० अहिंसयम् अहिंसयाव अहिंसयाम

द्यादि

अजिहिंसत्	अजिहिंसताम्	अजिहिंसन्	प्र० पु०
अजिहिंसः	अजिहिंसतम्	अजिहिंसत	म० पु०
अजिहिंसम्	अजिहिंसाव	अजिहिंसाम	उ० पु०

णबादि (१)

हिंसयाञ्चकार	हिंसयाञ्चक्रतुः	हिंसयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
हिंसयाञ्चकर्थ	हिंसयाञ्चक्रथुः	हिंसयाञ्चक्र	म० पु०
हिंसयाञ्चकार, हिंसयाञ्चकर	हिंसयाञ्चकृव	हिंसयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

हिंसयाम्बभूव	हिंसयाम्बभूवतुः	हिंसयाम्बभूवुः	प्र० पु०
हिंसयाम्बभूविथ	हिंसयाम्बभूवथुः	हिंसयाम्बभूव	म० पु०
हिंसयाम्बभूव	हिंसयाम्बभूविव	हिंसयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

हिंसयामास	हिंसयामासतुः	हिंसयामासुः	प्र० पु०
हिंसयामासिथ	हिंसयामासथुः	हिंसयामास	म० पु०
हिंसयामास	हिंसयामासिव	हिंसयामासिम	उ० पु०

क्यादादि **तादि**

हिंस्यात्	हिंस्यास्ताम्	हिंस्यासुः	प्र० पु०	हिंसयिता	हिंसयितारौ	हिंसयितारः
हिंस्याः	हिंस्यास्तम्	हिंस्यास्त	म० पु०	हिंसयितासि	हिंसयितास्थः	हिंसयितास्थ
हिंस्यासम्	हिंस्यास्व	हिंस्यास्म	उ० पु०	हिंसयितास्मि	हिंसयितास्वः	हिंसयितास्मः

स्यत्यादि

हिंसयिष्यति	हिंसयिष्यतः	हिंसयिष्यन्ति	प्र० पु०
हिंसयिष्यसि	हिंसयिष्यथः	हिंसयिष्यथ	म० पु०
हिंसयिष्यामि	हिंसयिष्यावः	हिंसयिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अहिंसयिष्यत्	अहिंयिष्यताम्	अहिंसयिष्यन्	प्र० पु०
अहिंसयिष्यः	अहिंसयिष्यतम्	अहिंसयिष्यत	म० पु०
अहिंसयिष्यम्	अहिंसयिष्याव	अहिंसयिष्याम	उ० पु०

१३२. रचण्—प्रतियत्ने (बनाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
रचयति	रचयतः	रचयन्ति	प्र० पु०	रचयेत्	रचयेताम्	रचयेयुः
रचयसि	रचयथः	रचयथ	म० पु०	रचयेः	रचयेतम्	रचयेत
रचयामि	रचयावः	रचयामः	उ० पु०	रचयेयम्	रचयेव	रचयेम

तुवादि **दिवादि**

रचयतु, रचयतात्	रचयताम्	रचयन्तु	प्र० पु०	अरचयत्	अरचयताम्	अरचयन्
रचयय, रचयतात्	रचयतम्	रचयत	म० पु०	अरचयः	अरचयतम्	अरचयत
रचयानि	रचयाव	रचयाम	उ० पु०	अरचयम्	अरचयाव	अरचयाम

ह्वादि

अररचत्	अररचताम्	अररचन्	प्र० पु०
अररचः	अररचतम्	अररचत	म० पु०
अररचम्	अररचाव	अररचाम	उ० पु०

णबादि (१)

रचयाञ्चकार	रचयाञ्चक्रतुः	रचयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
रचयाञ्चकर्थ	रचयाञ्चक्रथुः	रचयाञ्चक्र	म० पु०
रचयाञ्चकार, रचयाञ्चकर	रचयाञ्चकृव	रचयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

रचयाम्बभूव	रचयाम्बभूवतुः	रचयाम्बभूवुः	प्र० पु०
रचयाम्बभूविथ	रचयाम्बभूवथुः	रचयाम्बभूव	म० पु०
रचयाम्बभूव	रचयाम्बभूविव	रचयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३) **क्यादादि**

रचयामास	रचयामासतुः	रचयामासुः	प्र० पु०	रच्यात्	रच्यास्ताम्	रच्यासुः
रचयामासिथ	रचयामासथुः	रचयामास	म० पु०	रच्याः	रच्यास्तम्	रच्यास्त
रचयामास	रचयामासिव	रचयामासिम	उ० पु०	रच्यासम्	रच्यास्व	रच्यास्म

तादि **स्यत्यादि**

रचयिता	रचयितारौ	रचयितारः	प्र० पु०	रचयिष्यति	रचयिष्यतः	रचयिष्यन्ति
रचयितासि	रचयितास्थः	रचयितास्थ	म० पु०	रचयिष्यसि	रचयिष्यथः	रचयिष्यथ
रचयितास्मि	रचयितास्वः	रचयितास्मः	उ० पु०	रचयिष्यामि	रचयिष्यावः	रचयिष्यामः

स्यदादि

अरचयिष्यत्	अरचयिष्यताम्	अरचयिष्यन्	प्र० पु०
अरचयिष्यः	अरचयिष्यतम्	अरचयिष्यत	म० पु०
अरचयिष्यम्	अरचयिष्याव	अरचयिष्याम	उ० पु०

धातुओं की संक्षिप्त रूपावली

नोट—णबादि के रूपों में ३ का अर्थ है चकार, बभूव, मास। धातु के रूप के आगे इनके रूप जुड़ेंगे। आत्मनेपद में चकार के स्थान पर चक्रे होगा।

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
अकिङ्	अङ्कते	अङ्केत	अङ्कताम्	आङ्कत
अघण्	अघयति	अघयेत्	अघयतु	आघयत्
अञ्जूर्	अनक्ति	अञ्ज्यात्	अनक्तु	आनक्
अट	अटति	अटेत्	अटतु	आटत्
अण	अणति	अणेत्	अणतु	आणत्
अत	अतति	अतेत्	अततु	आतत्
अन	अनिति	अन्यात्	अनितु	आनत्
अन्धण्	अन्धयति	अन्धयेत्	अन्धयतु	आन्धयत्
अयङ्	अयते	अयेत	अयताम्	आयत
अर्कण्	अर्कयति	अर्कयेत्	अर्कयतु	आर्कयत्
अर्च	अर्चति	अर्चेत्	अर्चतु	आर्चत्
अर्ज	अर्जति	अर्जेत्	अर्जतु	आर्जत्
अव	अवति	अवेत्	अवतु	आवत्
अशूङ्त्	अश्नुते	अश्नुवीत	अश्नुताम्	आश्नुत
असु	असूयति	असूयेत्	असूयतु	आसूयत्
असुच्	अस्यति	अस्येत्	अस्यतु	आस्यत्
इदि	इन्दति	इन्देत्	इन्दतु	ऐन्दत्
इन्धीङ्र्	इन्धे	इन्धीत	इन्द्धाम्	ऐन्द्ध
इरस्	इरस्यति	इरस्येत्	इरस्यतु	ऐरस्यत्
ईङ्च्	ईयते	ईयेत	ईयताम्	ऐयत
ईरण्	ईरयति	ईरयेत्	ईरयतु	ऐरयत्
ईर्ष्य	ईर्ष्यति	ईर्ष्येत्	ईर्ष्यतु	ऐर्ष्यत्
ईशङ्क्	ईष्टे	ईशीत	ईष्टाम्	ऐष्ट
ईहङ्	ईहते	ईहेत	ईहताम्	ऐहत
उज्झज्	उज्झति	उज्झेत्	उज्झतु	औज्झत्
ऊर्जण्	ऊर्जयति	ऊर्जयेत्	ऊर्जयतु	और्जयत्
ऊर्णुन्क्	ऊर्णौति	ऊर्णुयात्	ऊर्णौतु	और्णोत्

ह्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
आङ्क्ष्ट	आनङ्के	अङ्क्यात्	अङ्किता	अङ्किष्यते	आङ्क्ष्यत
आजिघत्	अघयाञ्चकार ३	अघ्यात्	अघयिता	अघयिष्यति	आघयिष्यत्
आञ्जीत्	आनञ्ज	अज्यात्	अञ्जिता	अञ्जिष्यति	आञ्जिष्यत्
आटीत्	आट	अट्यात्	अटिता	अटिष्यति	आटिष्यत्
आणीत्	आण	अण्यात्	अणिता	अणिष्यति	आणिष्यत्
आतीत्	आत	अत्यात्	अतिता	अतिष्यति	आतिष्यत्
आनीत्	आन	अन्यात्	अनिता	अनिष्यति	आनिष्यत्
आन्दिधत्	अन्धयाञ्चकार ३	अन्ध्यात्	अन्धिता	अन्धिष्यति	आन्धिष्यत्
आयिष्ट	अयाञ्चक्रे ३	अयिषीष्ट	अयिता	अयिष्यते	आयिष्यत
आर्चिकत्	अर्कयाम्बभूव ३	अर्क्यात्	अर्कयिता	अर्कयिष्यति	आर्कयिष्यत्
आर्चीत्	आनर्च	अर्च्यात्	अर्चिता	अर्चिष्यति	आर्चिष्यत्
आर्जीत्	आनर्ज	अर्ज्यात्	अर्जिता	अर्जिष्यति	आर्जिष्यत्
आवीत्	आव	अव्यात्	अविता	अविष्यति	आविष्यत्
आशिष्ट	आनशे	अशिषीष्ट	अशिता	अशिष्यते	आशिष्यत
आसूयीत्	असूयाञ्चकार ३	असूयिता	असूय्यात्	असूयिष्यति	आसूयिष्यत्
आस्थत्	आस	अस्यात्	असिता	असिष्यति	आसिष्यत्
ऐन्दीत्	इदांचकार ३	इन्द्यात्	इन्दिता	इन्दिष्यति	ऐन्दिष्यत्
ऐन्धिष्ट	इन्धाञ्चक्रे ३	इन्धिषीष्ट	इन्धिता	इन्धिष्यते	ऐन्धिष्यत
ऐरसीत्	इरसाञ्चकार ३	इरस्यात्	इरसिता	इरसिष्यति	ऐरसिष्यत्
ऐष्ट	अयाञ्चक्रे ३	ऐषीष्ट	एता	एष्यते	ऐष्यत
ऐरिरत्	ईरयाञ्चकार ३	ईर्यात्	ईरयिता	ईरयिष्यति	ऐरयिष्यत्
ऐर्ष्यीत्	ईर्ष्याञ्चकार ३	ईर्ष्यात्	ईर्ष्यिता	ईर्ष्यिष्यति	ऐर्ष्यिष्यत्
ऐशिष्ट	ईशाञ्चक्रे ३	ईशिषीष्ट	ईशिता	ईशिष्यते	ऐशिष्यत
ऐहिष्ट	ईहाञ्चक्रे ३	ईहिषीष्ट	ईहिता	ईहिष्यते	ऐहिष्यत
औज्झीत्	उज्झाञ्चकार ३	उज्झ्यात्	उज्झिता	उज्झिष्यति	औज्झिष्यत्
और्जिजत्	ऊर्जयाञ्चकार ३	ऊर्ज्यात्	ऊर्जयिता	ऊर्जयिष्यति	और्जयिष्यत्
और्णावीत्	ऊर्णुनाव	ऊर्णूयात्	ऊर्णुविता	ऊर्णविष्यति	और्णविष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
ऊहङ्	ऊहते	ऊहेत	ऊहताम्	औहत
कटे	कटति	कटेत्	कटतु	अकटत्
कडज्	कडति	कडेत्	कडतु	अकडत्
कण्डून्	कण्डूयति	कण्डूयेत्	कण्डूयतु	अकण्डूयत्
कण	कणति	कणेत्	कणतु	अकणत्
कत्थङ्	कत्थते	कत्थेत	कत्थताम्	अकत्थत
कथण्	कथयति	कथयेत्	कथयतु	अकथयत्
	कथयते	कथयेत	कथयताम्	अकथयत्
कनी	कनति	कनेत्	कनतु	अकनत्
कपिङ्	कम्पते	कम्पेत	कम्पताम्	अकम्पत
कमुङ्	कामयते	कामयेत	कामयताम्	अकामयत
कलण्	कलयति	कलयेत्	कलयतु	अकलयत
कलङ्	कलते	कलेत	कलताम्	अकलत
काक्षि	काङ्क्षति	काङ्क्षेत्	काङ्क्षतु	अकाङ्क्षत्
काशृङ्	काशते	काशेत	काशताम्	अकाशत
कासृङ्	कासते	कासेत	कासताम्	अकासत
कित	चिकित्सति	चिकित्सेत्	चिकित्सतु	अचिकित्सत्
कुचज्	कोचति	कोचेत्	कोचतु	अकोचत्
कुटज्	कुटति	कुटेत्	कुटतु	अकुटत्
कुपच्	कुप्यति	कुप्येत्	कुप्यतु	अकुप्यत्
कृतीज्	कृन्तति	कृन्तेत्	कृन्ततु	अकृन्तत्
कृपूङ्	कल्पते	कल्पेत	कल्पताम्	अकल्पत
कृशच्	कृश्यति	कृश्येत्	कृश्यतु	अकृश्यत्
कृषं	कर्षति	कर्षेत्	कर्षतु	अकर्षत्
कृषंनज्	कृषति	कृषेत्	कृषतु	अकृषत्
	कृषते	कृषेत	कृषताम्	अकृषत
कॄनृश्	कृणाति	कृणीयात्	कृणातु	अकृणात्
	कृणीते	कृणीत	कृणीताम्	अकृणीत

ञ्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
औहिष्ट	ऊहाञ्चक्रे ३	ऊहिषीष्ट	ऊहिता	ऊहिष्यते	औहिष्यत
अकटीत्	चकाट	कट्यात्	कटिता	कटिष्यति	अकटिष्यत्
अकाडीत्, अकडीत्	चकाड	कड्यात्	कडिता	कडिष्यति	अकडिष्यत्
अकण्डूयीत्	कण्डूयाञ्चकार ३	कण्डूय्यात्	कण्डूयिता	कण्डूयिष्यति	अकण्डूयिष्यत्
अकणीत्	चकाण	कण्यात्	कणिता	कणिष्यति	अकणिष्यत्
अकत्थिष्ट	चकत्थे	कत्थिषीष्ट	कत्थिता	कत्थिष्यते	अकत्थिष्यत
अचकथत्	कथयाञ्चकार ३	कथ्यात्	कथयिता	कथयिष्यति	अकथयिष्यत्
अचकथत	कथयाञ्चक्रे ३	कथयिषीष्ट	कथयिता	कथयिष्यते	अकथयिष्यत
अकनीत्	चकान	कन्यात्	कनिता	कनिष्यति	अकनिष्यत्
अकम्पिष्ट	चकम्पे	कम्पिषीष्ट	कम्पिता	कम्पिष्यते	अकम्पिष्यत
अचीकमत्	कामयाञ्चक्रे ३ चकमे	कामयिषीष्ट	कामयिता कमिता	कामयिष्यते	अकामयिष्यत
अचकलत्	कलयामास ३	कल्यात्	कलयिता	कलयिष्यति	अकलयिष्यत्
अकलिष्ट	चकले	कलिषीष्ट	कलिता	कलिष्यते	अकलिष्यत
अकाङ्क्षीत्	चकांक्ष	कांक्ष्यात्	कांक्षिता	कांक्षिष्यति	अकांक्षिष्यत्
अकाशिष्ट	चकाशे	काशिषीष्ट	काशिता	काशिष्यते	अकाशिष्यत
अकासिष्ट	कासाञ्चक्रे ३	कासिषीष्ट	कासिता	कासिष्यते	अकासिष्यत
अचिकित्सीत्	चिकित्साञ्चकार ३	चिकित्स्यात्	चिकित्सिता	चिकित्सिष्यति	अचिकित्सिष्यत्
अकोचीत्	चुकोच	कुच्यात्	कोचिता	कोचिष्यति	अकोचिष्यत्
अकुटीत्	चुकोट	कुट्यात्	कुटिता	कुटिष्यति	अकुटिष्यत्
अकुपत्	चुकोप	कुप्यात्	कोपिता	कोपिष्यति	अकोपिष्यत्
अकर्तीत्	चकर्त	कृत्यात्	कर्तिता	कर्तिष्यति	अकर्तिष्यत्
अक्लृपत् (त)	चक्लृपे	कल्पिषीष्ट	कल्पिता	कल्पिष्यते	अकल्पिष्यत
अक्लपिष्ट		क्लृप्सीष्ट	कल्प्ता	कल्प्स्यते (ति)	अकल्प्स्यत् (त)
अकृशत्	चकर्श	कृश्यात्	कर्शिता	कर्शिष्यति	अकर्शिष्यत्
अक्राक्षीत्	चकर्ष	कृष्यात्	क्रष्टा, कर्ष्टा	कर्क्ष्यति	अकर्क्ष्यत्
अकार्क्षीत्	अकृक्षत				अक्रक्ष्यत्
अकार्क्षीत्, अकृक्षत् (त)	चकर्ष	कृष्यात्	क्रष्टा	कर्क्ष्यति	अकर्क्ष्यत्
अक्राक्षीत्, अकृष्ट	चकृषे	कृक्षीष्ट	कर्ष्टा	क्रक्ष्यते	अक्रक्ष्यत
अकारीत्	चकार	कीर्यात्	करिता	करिष्यति	अकरिष्यत्
अकरिष्ट	चकरे	करिषीष्ट		करिष्यते	अकरिष्यत

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
कृज्	किरति	किरेत्	किरतु	अकिरत्
कृतण्	कीर्तयति	कीर्तयेत्	कीर्तयतु	अकीर्तयत्
क्नूयीङ्	क्नूयते	क्नूयेत	क्नूयताम्	अक्नूयत
क्रदि	क्रन्दति	क्रन्देत्	क्रन्दतु	अक्रन्दत्
क्रपङ्	क्रपते	क्रपेत	क्रपताम्	अक्रपत
क्रमु	क्रामति, क्राम्यति	क्रामेत्, क्राम्येत्	क्रामतु, क्राम्यतु	अक्रामत्, अक्राम्यत्
क्रीङ्	क्रीडति	क्रीडेत्	क्रीडतु	अक्रीडत्
क्रुशं	क्रोशति	क्रोशेत्	क्रोशतु	अक्रोशत्
क्लदि	क्लन्दति	क्लन्देत्	क्लन्दतु	अक्लन्दत्
क्लमुच्	क्लाम्यति, क्लामति	क्लाम्येत्	क्लाम्यतु	अक्लाम्यत्
क्लिदूच्	क्लिद्यति	क्लिद्येत्	क्लिद्यतु	अक्लिद्यत्
क्षणुन्	क्षणोति	क्षणुयात्	क्षणोतु	अक्षणोत्
	क्षणुते	क्षण्वीत	क्षणुताम्	अक्षणुत
क्षमुच्	क्षाम्यति	क्षाम्येत्	क्षाम्यतु	अक्षाम्यत्
क्षमूषङ्	क्षमते	क्षमेत	क्षमताम्	अक्षमत
क्षर	क्षरति	क्षरेत्	क्षरतु	अक्षरत्
क्षलण्	क्षालयति	क्षालयेत्	क्षालयतु	अक्षालयत्
क्षि	क्षयति	क्षयेत्	क्षयतु	अक्षयत्
क्षिपंच्	क्षिप्यति	क्षिप्येत्	क्षिप्यतु	अक्षिप्यत्
क्षिपंन्ज्	क्षिपति	क्षिपेत्	क्षिपतु	अक्षिपत्
	क्षिपते	क्षिपेत	क्षिप्ताम्	अक्षिपत
क्षिवु	क्षेवति	क्षेवेत्	क्षेवतु	अक्षेवत्
क्षिवुच्	क्षीव्यति	क्षीव्येत्	क्षीव्यतु	अक्षीव्यत्
क्षुधंच्	क्षुध्यति	क्षुध्येत्	क्षुध्यतु	अक्षुध्यत्
क्षुभच्	क्षुभ्यति	क्षुभ्येत्	क्षुभ्यतु	अक्षुभ्यत्
क्ष्विदाच्	क्ष्विद्यति	क्ष्विद्येत्	क्ष्विद्यतु	अक्ष्विद्यत्
खजि	खञ्जति	खञ्जेत्	खञ्जतु	अखञ्जत्
खडिण्	खण्डयति	खण्डयेत	खण्डयतु	अखण्डयत्

द्यादि	णवादि	क्र्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अकारीत्	चकार	कीर्यात्	करिता	करिष्यति	अकरिष्यत्
			करीता	करीष्यति	अकरीष्यत्
अचीकृतत्	कीर्तयांचकार ३	कीर्त्यात्	कीर्तयिता	कीर्तयिष्यति	अकीर्तयिष्यत
अचीकीर्तत्					
अक्नूयिष्ट	चुक्नूये	क्नूयिषीष्ट	क्नूयिता	क्नूयिष्यते	अक्नूयिष्यत
अक्रन्दीत्	चक्रन्द	क्रन्द्यात्	क्रन्दिता	क्रन्दिष्यति	अक्रन्दिष्यत्
अक्रपिष्ट	चक्रपे	क्रपिषीष्ट	क्रपिता	क्रपिष्यते	अक्रपिष्यत
अक्रमीत्	चक्राम	क्रम्यात्	क्रमिता	क्रमिष्यति	अक्रमिष्यत्
अक्रीडीत्	चिक्रीड	क्रीड्यात्	क्रीडिता	क्रीडिष्यति	अक्रीडिष्यत्
अक्रुक्षत्	चुक्रोश	क्रुश्यात्	क्रोष्टा	क्रोक्ष्यति	अक्रोक्ष्यत्
अक्लन्दीत्	चक्लन्द	क्लन्द्यात्	क्लन्दिता	क्लन्दिष्यति	अक्लन्दिष्यत्
अक्लमत्	चक्लाम	क्लम्यात्	क्लमिता	क्लमिष्यति	अक्लमिष्यत्
अक्लिदत्	चिक्लेद	क्लिद्यात्	क्लेदिता	क्लेदिष्यति	अक्लेदिष्यत्
			क्लेत्ता	क्लेत्स्यति	अक्लेत्स्यत्
अक्षणीत्	चक्षाण	क्षण्यात्	क्षणिता	क्षणिष्यति	अक्षणिष्यत्
अक्षत,अक्षणिष्ट	चक्षणे	क्षणिषीष्ट	क्षणिता	क्षणिष्यते	अक्षणिष्यत
अक्षमत्	चक्षाम	क्षम्यात्	क्षमिता, क्षन्ता	क्षमिष्यति	अक्षमिष्यत्
				क्षंस्यति	अक्षंस्यत्
अक्षमिष्ट	चक्षमे	क्षमिषीष्ट	क्षमिता	क्षमिष्यते	अक्षमिष्यत
अक्षारीत्	चक्षार	क्षर्यात्	क्षरिता	क्षरिष्यति	अक्षरिष्यत्
अचिक्षलत्	क्षालयांचकार ३	क्षाल्यात्	क्षालयिता	क्षालयिष्यति	अक्षालयिष्यत्
अक्षैषीत्	चिक्षाय	क्षीयात्	क्षेता	क्षेष्यति	अक्षेष्यत्
अक्षैप्सीत्	चिक्षेप	क्षिप्यात्	क्षेप्ता	क्षेप्स्यति	अक्षेप्स्यत्
अक्षैप्सीत्	चिक्षेप	क्षिप्यात्	क्षेप्ता	क्षेप्स्यति	अक्षेप्स्यत्
अक्षिप्त	चिक्षिपे	क्षिप्सीष्ट	क्षेप्ता	क्षेप्स्यते	अक्षेप्स्यत
अक्षेवीत्	चिक्षेव	क्षीव्यात्	क्षेविता	क्षेविष्यति	अक्षेविष्यत्
अक्षेवीत्	चिक्षेव	क्षीव्यात्	क्षेविता	क्षेविष्यति	अक्षेविष्यत्
अक्षुधत्	चुक्षोध	क्षुध्यात्	क्षुद्धा	क्षोत्स्यते	अक्षोत्स्यत्
अक्षुभत्	चुक्षोभ	क्षुभ्यात्	क्षोभिता	क्षोभिष्यति	अक्षोभिष्यत्
अक्ष्वेदीत्	चिक्ष्वेद	क्ष्विद्यात्	क्ष्वेदिता	क्ष्वेदिष्यति	अक्ष्वेदिष्यत्
अखञ्जीत्	चखञ्ज	खञ्ज्यात्	खञ्जिता	खञ्जिष्यति	अखञ्जिष्यत्
अचखण्डत्	खण्डयांचकार ३	खण्ड्यात्	खण्डयिता	खण्डयिष्यति	अखण्डयिष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
खनुन्	खनति	खनेत्	खनतु	अखनत्
	खनते	खनेत	खनताम्	अखनत
खादृ	खादति	खादेत्	खादतु	अखादत्
ख्याक्	ख्याति	ख्यायात्	ख्यातु	आख्यात्
गणण्	गणयति	गणयेत्	गणयतु	अगणयत्
गद	गदति	गदेत्	गदतु	अगदत्
गद्गद	गद्गदति	गद्गदेत्	गद्गदतु	अगद्गदत्
गर्ज	गर्जति	गर्जेत्	गर्जतु	अगर्जत्
गर्द	गर्दति	गर्देत्	गर्दतु	अगर्दत्
गर्व	गर्वति	गर्वेत्	गर्वतु	अगर्वत्
गर्हङ्	गर्हते	गर्हेत	गर्हताम्	अगर्हत
गल	गलति	गलेत	गलतु	अगलत्
गवेषण्	गवेषयति	गवेषयेत्	गवेषयतु	अगवेषयत्
गांङ्	गाते	गेत	गाताम्	अगात
गाहूङ्	गाहते	गाहेत	गाहताम्	अगाहत
गुजि	गुञ्जति	गुञ्जेत्	गुञ्जतु	अगुञ्जत्
गुपङ्	जुगुप्सते	जुगुप्सेत	जुगुप्सताम्	अजुगुप्सत
गुम्फज्	गुम्फति	गुम्फेत्	गुम्फतु	अगुम्फत्
गृधुच्	गृध्यति	गृध्येत्	गृध्यतु	अगृध्यत्
गृहूङ्	गर्हते	गर्हेत	गर्हताम्	अगर्हत
गॄज्	गिरति	गिरेत्	गिरतु	अगिरत्
गॄश्	गृणाति	गृणीयात्	गृणातु	अगृणात्
गै	गायति	गायेत्	गायतु	अगायत्
ग्रन्थण्	ग्रन्थयति	ग्रन्थयेत्	ग्रन्थयतु	अग्रन्थयत्
ग्रन्थश्	ग्रथ्नाति	ग्रथ्नीयात्	ग्रथ्नातु	अग्रथ्नात्
ग्रसुङ्	ग्रसते	ग्रसेत	ग्रसताम्	अग्रसत
ग्लै	ग्लायति	ग्लायेत्	ग्लायतु	अग्लायत्
घटङ्	घटते	घटेत	घटताम्	अघटत
घसॢं	घसति	घसेत्	घसतु	अघसत्

ञादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अखनीत्	चखान	खन्यात्	खनिता	खनिष्यति	अखनिष्यत्
अखनिष्ट	चख्ने	खनिषीष्ट	खनिता	खनिष्यते	अखनिष्यत
अखादीत्	चखाद	खाद्यात्	खादिता	खादिष्यति	अखादिष्यत्
आख्यत्	आचख्यौ	ख्या (ये) यात्	ख्याता	ख्यास्यति	अख्यास्यत्
अजीगणत्	गणयांचकार	३ गण्यात्	गणयिता	गणयिष्यति	अगणयिष्यत्
अगादीत्	जगाद	गद्यात्	गदिता	गदिष्यति	अगदिष्यत्
अगद्गदीत्	गद्गदांचकार	गद्गद्यात्	गद्गदिता	गद्गदिष्यति	अगद्गदिष्यत्
अगर्जीत्	जगर्ज	गर्ज्यात्	गर्जिता	गर्जिष्यति	अगर्जिष्यत्
अगर्दीत्	जगर्द	गर्द्यात्	गर्दिता	गर्दिष्यति	अगर्दिष्यत्
अगर्वीत्	जगर्व	गर्व्यात्	गर्विता	गर्विष्यति	अगर्विष्यत्
अगर्हिष्ट	जगर्हे	गर्हिषीष्ट	गर्हिता	गर्हिष्यते	अगर्हिष्यत
अगलीत् अगालीत्	जगाल	गल्यात्	गलिता	गलिष्यति	अगलिष्यत्
अजगवेषत्	गवेषयांचकार	३ गवेष्यात्	गवेषयिता	गवेषयिष्यति	अगवेषयिष्यत्
अगास्त	जगे	गासीष्ट	गाता	गास्यते	अगास्यत
अगाहिष्ट, अगाढ	जगाहे	गाहिषीष्ट	गाहिता	गाहिष्यते	अगाहिष्यत
अगुञ्जीत्	जुगुञ्ज	गुञ्ज्यात्	गुञ्जिता	गुञ्जिष्यति	अगुञ्जिष्यत्
अजुगुप्सिष्ट	जुगुप्सांचक्रे	३ जुगुप्सिषीष्ट	जुगुप्सिता	जुगुप्सिष्यते	अजुगुप्सिष्यत
अगुम्फीत्	जुगुम्फ	गुफ्यात्	गुम्फिता	गुम्फिष्यति	अगुम्फिष्यत्
अगृधत्	जगर्ध	गृध्यात्	गर्धिता	गर्धिष्यति	अगर्धिष्यत्
अगर्हिष्ट, अघृक्षत	जगृहे	घृक्षीष्ट गर्हिषीष्ट	गर्हिता गर्द्धा	गर्हिष्यते घर्क्ष्यते	अगर्हिष्यत अघर्क्ष्यत
अगारीत्	जगार	गीर्यात्	गरिता	गरिष्यति	अगरिष्यत्
अगारीत्	जगार	गीर्यात्	गरिता	गरिष्यति	अगरिष्यत्
अगासीत्	जगौ	गेयात्	गाता	गास्यति	अगास्यत्
अजग्रन्थत्	ग्रन्थयांचकार	३ ग्रन्थ्यात्	ग्रन्थिता	ग्रन्थिष्यति	अग्रन्थिष्यत्
अग्रन्थीत्	जग्रन्थ	ग्रथ्यात्	ग्रन्थिता	ग्रन्थिष्यति	अग्रन्थिष्यत्
अग्रसिष्ट	जग्रसे	ग्रसिषीष्ट	ग्रसिता	ग्रसिष्यते	अग्रसिष्यत
अग्लासीत्	जग्लौ	ग्लायात्, ग्लेयात्	ग्लाता	ग्लास्यति	अग्लास्यत्
अघटिष्ट	जघटे	घटिषीष्ट	घटिता	घटिष्यते	अघटिष्यत
अघसत्	जघास	घस्यात्	घस्ता	घत्स्यति	अघत्स्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
घृषु	घर्षति	घर्षेत्	घर्षतु	अघर्षत्
घ्रां	जिघ्रति	जिघ्रेत्	जिघ्रतु	अजिघ्रत्
चडिङ्	चण्डते	चण्डेत	चण्डताम्	अचण्डत
चतेन्	चतति	चतेत्	चततु	अचतत्
	चतते	चतेत	चतताम्	अचतत
चमु	आचामति	आचामेत्	आचामतु	आचामत्
चर	चरति	चरेत्	चरतु	अचरत्
चर्व	चर्वति	चर्वेत्	चर्वतु	अचर्वत्
चल	चलति	चलेत्	चलतु	अचलत्
चितिण्	चिन्तयति	चिन्तयेत्	चिन्तयतु	अचिन्तयत्
चिती	चेतति	चेतेत्	चेततु	अचेतत्
चित्रण्	चित्रयति	चित्रयेत्	चित्रयतु	अचित्रयत्
चुटि	चुण्टयति	चुण्टयेत्	चुण्टयतु	अचुण्टयत्
चुप	चोपति	चोपेत्	चोपतु	अचोपत्
चुबि	चुम्बति	चुम्बेत्	चुम्बतु	अचुम्बत्
चूष	चूषति	चूषेत्	चूषतु	अचूषत्
चेष्टङ्	चेष्टते	चेष्टेत	चेष्टताम्	अचेष्टत
छदण्	छादयति	छादयेत्	छादयतु	अच्छादयत्
छृदण्	छर्दयति	छर्दयेत्	छर्दयतु	अच्छर्दयत्
छेदण्	छेदयति	छेदयेत्	छेदयतु	अच्छेदयत्
जक्षक्	जक्षिति	जक्ष्यात्	जक्षितु	अजक्षीत्
जप	जपति	जपेत्	जपतु	अजपत्
जल्प	जल्पति	जल्पेत्	जल्पतु	अजल्पत्
जसुच्	जस्यति	जस्येत्	जस्यतु	अजस्यत्
जसुण्	जासयति	जासयेत्	जासयतु	अजासयत्
जिमु	जेमति	जेमेत्	जेमतु	अजेमत्
जूष	जूषति	जूषेत्	जूषतु	अजूषत्
जृभिङ्	जृम्भते	जृम्भेत	जृम्भताम्	अजृम्भत
जृष्	जीर्यति	जीर्येत्	जीर्यतु	अजीर्यत्

ष्ठादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अघर्षीत्	जघर्ष	घर्ष्यात्	घर्षिता	घर्षिष्यति	अघर्षिष्यत्
अघ्रात्	जघ्रौ	घ्रायात्	घ्राता	घ्रास्यति	अघ्रास्यत्
अघ्रासीत्		घ्रेयात्			
अचण्डिष्ट	चचण्डे	चण्डिषीष्ट	चण्डिता	चण्डिष्यते	अचण्डिष्यत
अचतीत्	चचात	चत्यात्	चतिता	चतिष्यति	अचतिष्यत्
अचतिष्ट	चेते	चतिषीष्ट	चतिता	चतिष्यते	अचतिष्यत
आचमीत्	आचचाम	आचम्यात्	आचमिता	आचमिष्यति	आचमिष्यत्
अचारीत्	चचार	चर्यात्	चरिता	चरिष्यति	अचरिष्यत्
अचर्वीत्	चचर्व	चर्व्यात्	चर्विता	चर्विष्यति	अचर्विष्यत्
अचालीत्	चचाल	चल्यात्	चलिता	चलिष्यति	अचलिष्यत्
अचिचिन्तत्	चिन्तयांचकार ३	चिन्त्यात्	चिन्तयिता	चिन्तयिष्यति	अचिन्तयिष्यत्
अचेतीत्	चिचेत	चित्यात्	चेतिता	चेतिष्यति	अचेतिष्यत्
अचिचित्रत्	चित्रयांचकार ३	चित्र्यात्	चित्रयिता	चित्रयिष्यति	अचित्रयिष्यत्
अचुचुटत्	चुटयांचकार ३	चुण्ट्यात्	चुण्टयिता	चुण्टयिष्यति	अचुण्टयिष्यत्
अचोपीत्	चुचोप	चुप्यात्	चोपिता	चोपिष्यति	अचोपिष्यत्
अचुम्बीत्	चुचुम्ब	चुम्ब्यात्	चुम्बिता	चुम्बिष्यति	अचुम्बिष्यत्
अचूषीत्	चुचूष	चूष्यात्	चूषिता	चूषिष्यति	अचूषिष्यत्
अचेष्टिष्ट	चिचेष्टे	चेष्टिषीष्ट	चेष्टिता	चेष्टिष्यते	अचेष्टिष्यत
अचिच्छदत्	छादयांचकार ३	छाद्यात्	छादयिता	छादयिष्यति	अछादयिष्यत्
अचिच्छृदत्, अचच्छर्दत्	छर्दयांचकार ३	छर्द्यात्	छर्दयिता	छर्दयिष्यति	अच्छर्दयिष्यत्
अचिच्छेदत्	छेदयांचकार ३	छेद्यात्	छेदयिता	छेदयिष्यति	अच्छेदयिष्यत्
अजक्षीत्	जजक्ष	जक्ष्यात्	जक्षिता	जक्षिष्यति	अजक्षिष्यत्
अजपीत्	जजाप	जप्यात्	जपिता	जपिष्यति	अजपिष्यत्
अजापीत्					
अजल्पीत्	जजल्प	जल्प्यात्	जल्पिता	जल्पिष्यति	अजल्पिष्यत्
अजसत्	जजास	जस्यात्	जसिता	जसिष्यति	अजसिष्यत्
अजीजसत्	जासयांचकार ३	जास्यात्	जासयिता	जासयिष्यति	अजासयिष्यत्
अजेमीत्	जिजेम	जिम्यात्	जेमिता	जेमिष्यति	अजेमिष्यत्
अजूषीत्	जुजूष	जूष्यात्	जूषिता	जूषिष्यति	अजूषिष्यत्
अजृम्भिष्ट	जजृम्भे	जृम्भिषीष्ट	जृम्भिता	जृम्भिष्यते	अजृम्भिष्यत
अजारीत्	जजार	जीर्यात्	जरिता	जरिष्यति	अजरिष्यत्
अजरत्			जरीता	जरीष्यति	अजरीष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
ज्ञाण्	ज्ञपयति	ज्ञपयेत्	ज्ञपयतु	अज्ञपयत्
ज्यांश्	जिनाति	जिनीयात्	जिनातु	अजिनात्
ज्वर	ज्वरति	ज्वरेत्	ज्वरतु	अज्वरत्
ज्वल	ज्वलति	ज्वलेत्	ज्वलतु	अज्वलत्
टकिण्	टङ्कयति	टङ्कयेत्	टङ्कयतु	अटङ्कयत्
टीकृङ्	टीकते	टीकेत	टीकताम्	अटीकत
डीङ्	डयते	डयेत	डयताम्	अडयत
डीङ्च्	डीयते	डीयेत	डीयताम्	अडीयत
ढौकृङ्	ढौकते	ढौकेत	ढौकताम्	अढौकत
णट	नटति	नटेत्	नटतु	अनटत्
णद	नदति	नदेत्	नदतु	अनदत्
णहंन्च्	नह्यति	नह्येत्	नह्यतु	अनह्यत्
	नह्यते	नह्येत	नह्यताम्	अनह्यत
णिदि	निन्दति	निन्देत्	निन्दतु	अनिन्दत्
णींन्	नयति	नयेत्	नयतु	अनयत्
	नयते	नयेत	नयताम्	अनयत
णुंक्	नौति	नुयात्	नौतु	अनौत्
णुदंज्	नुदति	नुदेत्	नुदतु	अनुदत्
तक	तकति	तकेत्	तकतु	अतकत्
तकि	तङ्कति	तङ्केत्	तङ्कतु	अतङ्कत्
तक्षू	तक्षति	तक्षेत्	तक्षतु	अतक्षत्
	तक्ष्णोति	तक्ष्णुयात्	तक्ष्णोतु	अतक्ष्णोत्
तडण्	ताडयति	ताडयेत्	ताडयतु	अताडयत्
तपं	तपति	तपेत्	तपतु	अतपत्
तमुच्	ताम्यति	ताम्येत्	ताम्यतु	अताम्यत्
तर्जङ्ण्	तर्जयते	तर्जयेत	तर्जयताम्	अतर्जयत
तायृङ्	तायते	तायेत	तायताम्	अतायत
तिजङ्	तितिक्षते	तितिक्षेत	तितिक्षताम्	अतितिक्षत
तुटज्	तुटति	तुटेत्	तुटतु	अतुटत्

ण्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अजिज्ञपत्	ज्ञपयांचकार ३	ज्ञप्यात्	ज्ञपयिता	ज्ञपयिष्यति	अज्ञपयिष्यत्
अज्यासीत्	जिज्यौ	जीयात्	ज्याता	ज्यास्यति	अज्यास्यत्
अज्वारीत्	जज्वार	ज्वर्यात्	ज्वरिता	ज्वरिष्यति	अज्वरिष्यत्
अज्वालीत्	जज्वाल	ज्वल्यात्	ज्वलिता	ज्वलिष्यति	अज्वलिष्यत्
अटटङ्कत्	टङ्कयाम्बभूव ३	टङक्यात्	टङ्कयिता	टङ्कयिष्यति	अटङ्कयिष्यत्
अटीकिष्ट	टिटीके	टीकिषीष्ट	टीकिता	टीकिष्यते	अटीकिष्यत
अडयिष्ट	डिड्ये	डयिषीष्ट	डयिता	डयिष्यते	अडयिष्यत
अडयिष्ट	डिड्ये	डयिषीष्ट	डयिता	डयिष्यते	अडयिष्यत
अढौकिष्ट	ढुढौके	ढौकिषीष्ट	ढौकिता	ढौकिष्यते	अढौकिष्यत
अनाटीत् अनटीत्	ननाट	नट्यात्	नटिता	नटिष्यति	अनटिष्यत्
अनादीत् अनदीत्	ननाद	नद्यात्	नदिता	नदिष्यति	अनदिष्यत्
अनात्सीत्	ननाह	नह्यात्	नद्धा	नत्स्यति	अनत्स्यत्
अनद्ध	नेहे	नत्सीष्ट	नद्धा	नत्स्यते	अनत्स्यत
अनिन्दीत्	निनिन्द	निन्द्यात्	निन्दिता	निन्दिष्यति	अनिन्दिष्यत्
अनैषीत्	निनाय	नीयात्	नेता	नेष्यति	अनेष्यत्
अनेष्ट	निन्ये	नेषीष्ट	नेता	नेष्यते	अनेष्यत
अनावीत्	नुनाव	नूयात्	नविता	नविष्यति	अनविष्यत्
अनौत्सीत्	नुनोद	नुद्यात्	नोत्ता	नोत्स्यति	अनोत्स्यत्
अताकीत् अतकीत्	ततक	तक्यात्	तकिता	तकिष्यति	अतकिष्यत्
अतङ्कीत्	ततङ्क	तङ्क्यात्	तङ्किता	तङ्किष्यति	अतङ्किष्यत्
अतक्षीत् अताक्षीत्	ततक्ष	तक्ष्यात्	तक्षिता तष्टा	तक्षिष्यति तक्ष्यति	अतक्षिष्यत् अतक्ष्यत्
अतीतडत्	ताडयांचकार ३	ताड्यात्	ताडयिता	ताडयिष्यति	अताडयिष्यत्
अताप्सीत्	ताप	तप्यात्	तप्ता	तप्स्यति	अतप्स्यत्
अतमत्	ताम	तम्यात्	तमिता	तमिष्यति	अतमिष्यत्
अततर्जयत	तर्जयांचक्रे ३	तर्जयिषीष्ट	तर्जयिता	तर्जयिष्यते	अतर्जयिष्यत
अतायि अतायिष्ट	ताये	तायिषीष्ट	तायिता	तायिष्यते	अतायिष्यत
अतितिक्षिष्ट	तितिक्षांचक्रे ३	तितिक्षिषीष्ट	तितिक्षिता	तितिक्षिष्यते	अतितिक्षिष्यत
अतुटीत्	तुतोट	तुट्यात्	तुटिता	तुटिष्यति	अतुटिष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
तुदंन्‌ज्	तुदति	तुदेत्	तदतु	अतुदत्
	तुदते	तुदेत	तुदताम्	अतुदत
तुलण्	तोलयति	तोलयेत्	तोलयतु	अतोलयत्
तुषंच्	तुष्यति	तुष्येत्	तुष्यतु	अतुष्यत्
तृपूच्	तृप्यति	तृप्येत्	तृप्यतु	अतृप्यत्
त्रितृपच्	तृष्यति	तृष्येत्	तृष्यतु	अतृष्यत्
त्रपूषङ्	त्रपते	त्रपेत	त्रपताम्	अत्रपत
त्रसीच्	त्रस्यति	त्रस्येत्	त्रस्यतु	अत्रस्यत्
	त्रसति	त्रसेत्	त्रसतु	अत्रसत्
त्रुटङ्‌ण्	त्रोटयते	त्रोटयेत	त्रोटयताम्	अत्रोटयत
त्रैंङ्	त्रायते	त्रायेत	त्रायताम्	अत्रायत
त्वरषङ्	त्वरते	त्वरेत	त्वरताम्	अत्वरत
दंश	दशति	दशेत्	दशतु	अदशत्
दंशङ्‌ण्	दंशयते	दंशयेत	दंशयताम्	अदंशयत
दण्डण्	दण्डयति	दण्डयेत्	दण्डयतु	अदण्डयत्
ददङ्	ददते	ददेत	ददताम्	अददत
दधङ्	दधते	दधेत	दधताम्	अदधत
दमुच्	दाम्यति	दाम्येत्	दाम्यतु	अदाम्यत्
दम्भुत्	दभ्नोति	दभ्नुयात्	दभ्नोतु	अदभ्नोत्
दयङ्	दयते	दयेत	दयताम्	अदयत
दरिद्राक्	दरिद्राति	दरिद्रियात्	दरिद्रातु	अदरिद्रात्
दल	दलति	दलेत्	दलतु	अदलत्
दलण्	दालयति	दालयेत्	दालयतु	अदालयत्
दांम्	यच्छति	यच्छेत्	यच्छतु	अयच्छत्
दांपक्	दाति	दायात्	दातु	अदात्
दिशंन्‌ज्	दिशति	दिशेत्	दिशतु	अदिशत्
	दिशते	दिशेत	दिशताम्	अदिशत

द्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अतौत्सीत्	तुतोद	तुद्यात्	तोत्ता	तोत्स्यति	अतोत्स्यत्
अतुत्त	तुतुदे	तुत्सीष्ट	तोत्ता	तोत्स्यते	अतोत्स्यत
अतूतुलत्	तोलयांचकार ३	तोल्यात्	तोलयिता	तोलयिष्यति	अतोलयिष्यत्
अतुषत्	तुतोष	तुष्यात्	तोष्टा	तोक्ष्यति	अतोक्ष्यत्
अत्राप्सीत्	ततर्प	तृप्यात्	त्रप्ता	तर्प्स्यति	अतर्प्स्यत्
अतर्पीत्, अतृपत्			तर्पिता	तर्पिष्यति	अतर्पिष्यत्
अताप्सीत्			तर्प्ता	त्रप्स्यति	अत्रप्स्यत्
अतृषत्	ततर्ष	तृष्यात्	तर्षिता	तर्षिष्यति	अतर्षिष्यत्
अत्रपिष्ट	त्रेपे	त्रपिषीष्ट	त्रपिता	त्रपिष्यते	अत्रपिष्यत
अत्रप्त			त्रप्ता	त्रप्स्यते	अत्रप्स्यत
अत्रसीत्	तत्रास	त्रस्यात्	त्रसिता	त्रसिष्यति	अत्रसिष्यत्
अत्रासीत्					
अतुत्रुटत	त्रोटयांचक्रे ३	त्रोटयिषीष्ट	त्रोटयिता	त्रोटयिष्यते	अत्रोटयिष्यत
अत्रास्त	तत्रे	त्रासीष्ट	त्राता	त्रास्यते	अत्रास्यत
अत्वरिष्ट	तत्वरे	त्वरिषीष्ट	त्वरिता	त्वरिष्यते	अत्वरिष्यत
अदाङ्क्षीत्	ददंश	दश्यात्	दंष्टा	दङ्क्ष्यति	अदङ्क्ष्यत्
अददंशत	दंशयाञ्चक्रे ३	दंशयिषीष्ट	दंशयिता	दंशयिष्यते	अदंशयिष्यत
अददण्डत्	दण्डयाञ्चकार ३	दण्ड्यात्	दण्डयिता	दण्डयिष्यति	अदण्डयिष्यत्
अददिष्ट	दददे	ददिषीष्ट	ददिता	ददिष्यते	अददिष्यत
अदधिष्ट	देधे	दधिषीष्ट	दधिता	दधिष्यते	अदधिष्यत
अदमत्	ददाम	दम्यात्	दमिता	दमिष्यति	अदमिष्यत्
अदम्भीत्	ददम्भ	दभ्यात्	दम्भिता	दम्भिष्यति	अदम्भिष्यत्
अदयिष्ट	दयाञ्चक्रे ३	दयिषीष्ट	दयिता	दयिष्यते	अदयिष्यत
अदरिद्रीत्	दरिद्राञ्चकार ३	दरिद्र्यात्	दरिद्रिता	दरिद्रिष्यति	अदरिद्रिष्यत्
अदरिद्रासीत्	ददरिद्रौ				
अदालीत्	ददाल	दल्यात्	दलिता	दलिष्यति	अदलिष्यत्
अदीदलत्	दलयाञ्चकार ३	दाल्यात्	दालयिता	दालयिष्यति	अदालयिष्यत्
अदात्	ददौ	देयात्	दाता	दास्यति	अदास्यत्
अदासीत्	ददौ	दायात्	दाता	दास्यति	अदास्यत्
अदिक्षत्	दिदेश	दिश्यात्	देष्टा	देक्ष्यति	अदेक्ष्यत्
अदिक्षत	दिदिशे	दिक्षीष्ट	देष्टा	देक्ष्यते	अदेक्ष्यत

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
दिहंनक्	देग्धि	दिह्यात्	देग्धु	अधेक्
	दिग्धे	दिहीत	दिग्धाम्	अदिग्ध
दीक्षङ्	दीक्षते	दीक्षेत	दीक्षताम्	अदीक्षत
दीपीङ्च्	दीप्यते	दीप्येत	दीप्यताम्	अदीप्यत
दुंत्	दुनोति	दुनुयात्	दुनोतु	अदुनोत्
दुःखण्	दुःखयति	दुःखयेत्	दुःखयतु	अदुःखयत्
दुषंच्	दुष्यति	दुष्येत्	दुष्यतु	अदुष्यत्
दूङ्च्	दूयते	दूयेत	दूयताम्	अदूयत
देंङ्	दयते	दयेत	दयताम्	अदयत
दैंप्	दायति	दायेत्	दायतु	अदायत्
दोंच्	द्यति	द्येत्	द्यतु	अद्यत्
द्युतङ्	द्योतते	द्योतेत	द्योतताम्	अद्योतत
द्रुं	द्रवति	द्रवेत्	द्रवतु	अद्रवत्
द्रुहूच्	द्रुह्यति	द्रुह्येत्	द्रुह्यतु	अद्रुह्यत्
धावुन्	धावति	धावेत्	धावतु	अधावत्
	धावते	धावेत	धावताम्	अधावत
धिवित्	धिनोति	धिनुयात्	धिनोतु	अधिनोत्
धूनत्	धूनोति	धूनुयात्	धूनोतु	अधूनोत्
धूनण्	धूनयति	धूनयेत्	धूनयतु	अधूनयत्
धूप	धूपायति	धूपायेत्	धूपायतु	अधूपायत्
धृंन्	धरति	धरेत्	धरतु	अधरत्
	धरते	धरेत	धरताम्	अधरत
धृङ्ज्	ध्रियते	ध्रियेत	ध्रियताम्	अध्रियत
ध्मां	धमति	धमेत्	धमतु	अधमत्
ध्रुंज्	ध्रुवति	ध्रुवेत्	ध्रुवतु	अध्रुवत्
ध्वन	ध्वनति	ध्वनेत्	ध्वनतु	अध्वनत्
ध्वंसुङ्	ध्वंसते	ध्वंसेत	ध्वंसताम्	अध्वंसत
नदि	नन्दति	नन्देत्	नन्दतु	अनन्दत्
नाथृङ्	नाथते	नाथेत	नाथताम्	अनाथत

अदादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अधिक्षत्	दिदेह	दिह्यात्	देग्धा	धेक्ष्यति	अधेक्ष्यत्
अदिग्ध, अधिक्षत	दिदिहे	धिक्षीष्ट	देग्धा	धेक्ष्यते	अधेक्ष्यत
अदीक्षिष्ट	दिदीक्षे	दीक्षिषीष्ट	दीक्षिता	दीक्षिष्यते	अदीक्षिष्यत
अदीपिष्ट	दिदीपे	दीपिषीष्ट	दीपिता	दीपिष्यते	अदीपिष्यत
अदौषीत्	दुदाव	दूयात्	दोता	दोष्यति	अदोष्यत्
अदुदुःखत्	दुःखयाञ्चकार ३	दुःख्यात्	दुःखयिता	दुःखयिष्यति	अदुःखयिष्यत्
अदुषत्	दुदोष	दुष्यात्	दोष्टा	दोक्ष्यति	अदोक्ष्यत्
अदविष्ट	दुदुवे	दविषीष्ट	दविता	दविष्यते	अदविष्यत
अदित	दिग्ये	दासीष्ट	दाता	दास्यते	अदास्यत
अदासीत्	ददौ	दायात्	दाता	दास्यति	अदास्यत्
अदात्	ददौ	देयात्	दाता	दास्यति	अदास्यत्
अद्युतत्, अद्योतिष्ट	दिद्युते	द्योतिषीष्ट	द्योतिता	द्योतिष्यते	अद्योतिष्यत
अदुद्रुवत्	दुद्राव	द्रूयात्	द्रोता	द्रोष्यति	अद्रोष्यत्
अद्रुहत्	दुद्रोह	द्रुह्यात्	द्रोहिता, द्रोढा	द्रोहिष्यति	अद्रोहिष्यत्
			द्रोग्धा	ध्रोक्ष्यति	अध्रोक्ष्यत्
अधावीत्	दधाव	धाव्यात्	धाविता	धाविष्यति	अधाविष्यत्
अधाविष्ट	दधावे	धाविषीष्ट	धाविता	धाविष्यते	अधाविष्यत
अधिन्वीत्	दिधिन्व	धिन्व्यात्	धिन्विता	धिन्विष्यति	अधिन्विष्यत्
अधावीत्	दुधाव	धूयात्	धविता	धोष्यति,	अधोष्यत्,
			धोता	धविष्यति	अधविष्यत्
अदूधुनत्	धूनयाञ्चकार ३	धून्यात्	धूनयिता	धूनयिष्यति	अधूनयिष्यत्
अधूपायीत्	धूपायाञ्चकार ३,	धूपाय्यात्	धूपायिता	धूपायिष्यति	अधूपायिष्यत्
अधूपीत्	दुधूप	धूप्यात्	धूपिता	धूपिष्यति	अधूपिष्यत्
अधार्षीत्	दधार	ध्रियात्	धर्ता	धरिष्यति	अधरिष्यत्
अधृत	दध्रे	धृषीष्ट		धरिष्यते	अधरिष्यत
अधृत	दध्रे	धृषीष्ट	धर्ता	धरिष्यते	अधरिष्यत
अध्मासीत्	दध्मौ	ध्मायात्, ध्मेयात्	ध्माता	ध्मास्यति	अध्मास्यत्
अध्रुषीत्	दुध्राव	ध्रूयात्	ध्रुता	ध्रुष्यति	अध्रुष्यत्
अध्वानीत्	दध्वान	ध्वन्यात्	ध्वनिता	ध्वनिष्यति	अध्वनिष्यत्
अध्वंसिष्ट	दध्वंसे	ध्वंसिषीष्ट	ध्वंसिता	ध्वंसिष्यते	अध्वंसिष्यत
अनन्दीत्	ननन्द	नन्द्यात्	नन्दिता	नन्दिष्यति	अनन्दिष्यत्
अनाथिष्ट	ननाथे	नाथिषीष्ट	नाथिता	नाथिष्यते	अनाथिष्यत

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
पचंषन्	पचति	पचेत्	पचतु	अपचत्
	पचते	पचेत	पचताम्	अपचत
पचिण्	पञ्चयति	पञ्चयेत्	पञ्चयतु	अपञ्चयत्
पट	पटति	पटेत्	पटतु	अपटत्
पणङ्	पणते	पणेत	पणताम्	अपणत
पत्लृं	पतति	पतेत्	पततु	अपतत्
पथे	पथति	पथेत्	पथतु	अपथत्
पदंङ्च्	पद्यते	पद्येत	पद्यताम्	अपद्यत
पर्दङ्	पर्दते	पर्देत	पर्दताम्	अपर्दत
पांक्	पाति	पायात्	पातु	अपात्
पिडिण्	पिण्डयति	पिण्डयेत्	पिण्डयतु	अपिण्डयत्
पीङ्च्	पीयते	पीयेत	पीयताम्	अपीयत
पीडण्	पीडयति	पीडयेत्	पीडयतु	अपीडयत्
पुषंच्	पुष्यति	पुष्येत्	पुष्यतु	अपुष्यत्
पुष्पच्	पुष्प्यति	पुष्प्येत्	पुष्प्यतु	अपुष्प्यत्
पूङ्	पवते	पवेत	पवताम्	अपवत
पूरण्	पूरयति	पूरयेत्	पूरयतु	अपूरयत्
पूरीङ्च्	पूर्यते	पूर्येत	पूर्यताम्	अपूर्यत
पूष	पूषति	पूषेत्	पूषतु	अपूषत्
पृंक्	पिपर्त्ति	पिपृयात्	पिपर्तु	अपिपः
पृंत्	पृणोति	पृणुयात्	पृणोतु	अपृणोत्
पृण्	पारयति	पारयेत्	पारयतु	अपारयत्
प्यायीङ्	प्यायते	प्यायेत	प्यायताम्	अप्यायत
प्रथण्	प्राथयति	प्राथयेत्	प्राथयतु	अप्राथयत्
प्रींन्श्	प्रीणाति	प्रीणीयात्	प्रीणातु	अप्रीणात्
	प्रीणीते	प्रीणीत	प्रीणीताम्	अप्रीणीत
प्रीङ्च्	प्रीयते	प्रीयेत	प्रीयताम्	अप्रीयत
प्लुषु	प्लोषति	प्लोषेत्	प्लोषतु	अप्लोषत्

द्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अपाक्षीत्	पपाच	पच्यात्	पक्ता	पक्ष्यति	अपक्ष्यत्
अपक्त	पेचे	पक्षीष्ट	पक्ता	पक्ष्यते	अपक्ष्यत
अपपञ्चत्	पंचयाञ्चकार ३	पञ्च्यात्	पञ्चयिता	पञ्चयिष्यति	अपञ्चयिष्यत्
अपाटीत्, अपटीत्	पपाट	पट्यात्	पटिता	पटिष्यति	अपटिष्यत्
अपणिष्ट	पेणे	पणिषीष्ट	पणिता	पणिष्यते	अपणिष्यत
अपप्तत्	पपात	पत्यात्	पतिता	पतिष्यति	अपतिष्यत्
अपथीत्	पपाथ	पथ्यात्	पथिता	पथिष्यति	अपथिष्यत्
अपादि	पेदे	पत्षीष्ट	पत्ता	पत्स्यते	अपत्स्यत
अपर्दिष्ट	पपर्दे	पर्दिषीष्ट	पर्दिता	पर्दिष्यते	अपर्दिष्यत
अपासीत्	पपौ	पायात्	पाता	पास्यति	अपास्यत्
अपिपिण्डत्	पिण्डयाञ्चकार ३	पिण्डय्यात्	पिण्डयिता	पिण्डयिष्यति	अपिण्डयिष्यत्
अपेस्त	पिप्ये	पेषीष्ट	पेता	पेष्यते	अपेष्यत
अपीपिडत् अपिपीडत्	पीडयाञ्चकार ३	पीड्यात्	पीडयिता	पीडयिष्यति	अपीडयिष्यत्
अपुषत्	पुपोष	पुष्यात्	पोष्टा	पोक्ष्यति	अपोक्ष्यत्
अपुष्पीत्	पुपुष्प	पुष्यात्	पुष्पिता	पुष्पिष्यति	अपुष्पिष्यत्
अपविष्ट	पुपुवे	पविषीष्ट	पविता	पविष्यते	अपविष्यत
अपूपुरत्	पूरयाञ्चकार ३	पूरय्यात्	पूरयिता	पूरयिष्यति	अपूरयिष्यत्
अपूरि अपूरिष्ट	पुपूरे	पूरिषीष्ट	पूरिता	पूरिष्यते	अपूरिष्यत
अपूषीत्	पुपूष	पूष्यात्	पूषिता	पूषिष्यति	अपूषिष्यत्
अपार्षीत्	पपार	प्रियात्	पर्ता	परिष्यति	अपरिष्यत्
अपार्षीत्	पपार	प्रियात्	पर्ता	परिष्यति	अपरिष्यत्
अपीपरत्	पारयाञ्चकार ३	पार्य्यात्	पारयिता	पारयिष्यति	अपारयिष्यत्
अप्यायि अप्यायिष्ट	पिप्ये	प्याय्यते	प्यायिता	प्यायिष्यते	अप्यायिष्यत
अपप्रथत्	प्राथयाञ्चकार ३	प्राथ्यात्	प्राथयिता	प्राथयिष्यति	अप्राथयिष्यत्
अप्रैषीत्	पिप्राय	प्रीयात्	प्रेता	प्रेष्यति	अप्रेष्यत्
अप्रायि	पिप्रिये	प्रेषीष्ट	प्रेता	प्रेष्यते	अप्रेष्यत
अप्रेष्ट	पिप्रिये	प्रेषीष्ट	प्रेता	प्रेष्यते	अप्रेष्यत
अप्लोषीत्	पुप्लोष	प्लुष्यात्	प्लोषिता	प्लोषिष्यति	अप्लोषिष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
फुल्ल	फुल्लति	फुल्लेत्	फुल्लतु	अफुल्लत्
बल	बलति	बलेत्	बलतु	अबलत्
बाधृङ्	बाधते	बाधेत	बाधताम्	अबाधत
बुक्क	बुक्कति	बुक्केत्	बुक्कतु	अबुक्कत्
बुध	बोधति	बोधेत्	बोधतु	अबोधत्
ब्रुडज्	ब्रुडति	ब्रुडेत्	ब्रुडतु	अब्रुडत्
भक्षन्	भक्षति	भक्षेत्	भक्षतु	अभक्षत्
	भक्षते	भक्षेत	भक्षताम्	अभक्षत
भञ्जोंर्	भनक्ति	भञ्ज्यात्	भनक्तु	अभनक्
भण	भणति	भणेत्	भणतु	अभणत्
भर्त्सङ्ण्	भर्त्सयते	भर्त्सयेत	भर्त्सयताम्	अभर्त्सयत
भांक्	भाति	भायात्	भातु	अभात्
भाषङ्	भाषते	भाषेत	भाषताम्	अभाषत
भासृङ्	भासते	भासेत	भासताम्	अभासत
भिक्षङ्	भिक्षते	भिक्षेत	भिक्षताम्	अभिक्षत
भिषज्	भिषज्यति	भिषज्येत्	भिषज्यतु	अभिषज्यत्
भृंन्	भरति	भरेत्	भरतु	अभरत्
	भरते	भरेत	भरताम्	अभरत
भ्रंशुच्	भ्रश्यति	भ्रश्येत्	भ्रश्यतु	अभ्रश्यत्
भ्रमु	भ्रम्यति, भ्रमति	भ्रम्येत्, भ्रमेत्	भ्रम्यतु, भ्रमतु	अभ्रम्यत्, अभ्रमत्
भ्रमुच्	भ्राम्यति, भ्रमति	भ्राम्येत्, भ्रमेत्	भ्राम्यतु, भ्रमतु	अभ्राम्यत्, अभ्रमत्
भ्राजृङ्	भ्राजते	भ्राजेत	भ्राजताम्	अभ्राजत
भ्राशृङ्	भ्राशते	भ्राशेत	भ्राशताम्	अभ्राशत
	भ्राश्यते	भ्राश्येत	भ्राश्यताम्	अभ्राश्यत
म्लक्षन्	म्लक्षति	म्लक्षेत्	म्लक्षतु	अम्लक्षत्
	म्लक्षते	म्लक्षेत	म्लक्षताम्	अम्लक्षत
म्लाशृङ्	म्लाशते	म्लाशेत	म्लाशताम्	अम्लाशत
	म्लाश्यते	म्लाश्येत	म्लाश्यताम्	अम्लाश्यत
मडि	मण्डति	मण्डेत्	मण्डतु	अमण्डत्
मथे	मथति	मथेत्	मथतु	अमथत्

ञ्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अफुल्लीत्	पुफुल्ल	फुल्ल्यात्	फुल्लिता	फुल्लिष्यति	अफुल्लिष्यत्
अबालीत्	बबाल	बल्यात्	बलिता	बलिष्यति	अबलिष्यत्
अबाधिष्ट	बबाधे	बाधिषीष्ट	बाधिता	बाधिष्यते	अबाधिष्यत
अबुक्कीत्	बुबुक्क	बुक्क्यात्	बुक्किता	बुक्किष्यति	अबुक्किष्यत्
अबोधीत्	बुबोध	बुध्यात्	बोधिता	बोधिष्यति	अबोधिष्यत्
अब्रोडीत्	बुब्रोड	ब्रुड्यात्	ब्रुडिता	ब्रुडिष्यति	अब्रुडिष्यत्
अभक्षीत्	बभक्ष	भक्ष्यात्	भक्षिता	भक्षिष्यति	अभक्षिष्यत्
अभक्षिष्ट	बभक्षे	भक्षिषीष्ट	भक्षिता	भक्षिष्यते	अभक्षिष्यत
अभाङ्क्षीत्	बभञ्ज	भज्यात्	भङ्क्ता	भङ्क्ष्यति	अभङ्क्ष्यत्
अभाणीत् अभणीत्	बभाण	भण्यात्	भणिता	भणिष्यति	अभणिष्यत्
अबभर्त्सत	भर्त्सयांचक्रे ३	भर्त्सयिषीष्ट	भर्त्सयिता	भर्त्सयिष्यते	अभर्त्सयिष्यत
अभासीत्	बभौ	भायात्	भाता	भास्यति	अभास्यत्
अभाषिष्ट	बभाषे	भाषिषीष्ट	भाषिता	भाषिष्यते	अभाषिष्यत
अभासिष्ट	बभासे	भासिषीष्ट	भासिता	भासिष्यते	अभासिष्यत
अभिक्षिष्ट	बिभिक्षे	भिक्षिषीष्ट	भिक्षिता	भिक्षिष्यते	अभिक्षिष्यत
अभिषजीत्	भिषजाञ्चकार ३	भिषज्यात्	भिषजिता	भिषजिष्यति	अभिषजिष्यत्
अभार्षीत्	बभार	भ्रियात्	भर्ता	भरिष्यति	अभरिष्यत्
अभृत	बभ्रे	भृषीष्ट	भर्ता	भरिष्यते	अभरिष्यत
अभ्रशत्	बभ्रंश	भ्रश्यात्	भ्रंशिता	भ्रंशिष्यति	अभ्रंशिष्यत्
अभ्रमीत्	बभ्राम	भ्रम्यात्	भ्रमिता	भ्रमिष्यति	अभ्रमिष्यत्
अभ्रमत्	बभ्राम	भ्रम्यात्	भ्रमिता	भ्रमिष्यति	अभ्रमिष्यत्
अभ्राजिष्ट	बभ्राजे	भ्राजिषीष्ट	भ्राजिता	भ्राजिष्यते	अभ्राजिष्यत
अभ्राशिष्ट	भ्रेशे बभ्राशे	भ्राशिषीष्ट	भ्राशिता	भ्राशिष्यते	अभ्राशिष्यत
अभ्लक्षीत्	बभ्लक्ष	भ्लक्ष्यात्	भ्लक्षिता	भ्लक्षिष्यति	अभ्लक्षिष्यत्
अभ्लक्षिष्ट	बभ्लक्षे	भ्लक्षिषीष्ट	भ्लक्षिता	भ्लक्षिष्यते	अभ्लक्षिष्यत
अभ्लाशिष्ट	भ्लेशे बभ्लाशे	भ्लाशिषीष्ट	भ्लाशिता	भ्लाशिष्यते	अभ्लाशिष्यत
अमण्डीत्	ममण्ड	मण्ड्यात्	मण्डिता	मण्डिष्यति	अमण्डिष्यत्
अमथीत्	ममाथ	मथ्यात्	मथिता	मथिष्यति	अमथिष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
मदीच्	माद्यति	माद्येत्	माद्यतु	अमाद्यत्
मनुङ्व्	मनुते	मन्वीत	मनुताम्	अमनुत
मन्तु	मन्तूयति	मन्तूयेत्	मन्तूयतु	अमन्तूयत्
मस्जोंज्	मज्जति	मज्जेत्	मज्जतु	अमज्जत्
मह	महति	महेत्	महतु	अमहत्
मांक्	माति	मायात्	मातु	अमात्
मानण्	मानयति	मानयेत्	मानयतु	अमानयत्
मिलज्	मिलति	मिलेत्	मिलतु	अमिलत्
मिश्रण्	मिश्रयति	मिश्रयेत्	मिश्रयतु	अमिश्रयत्
मिहं	मेहति	मेहेत्	मेहतु	अमेहत्
मील	मीलति	मीलेत्	मीलतु	अमीलत्
मुदङ्	मोदते	मोदेत	मोदताम्	अमोदत
मुर्च्छा	मूर्च्छति	मूर्च्छेत्	मूर्च्छतु	अमूर्च्छत्
मुषश्	मुष्णाति	मुष्णीयात्	मुष्णातु	अमुष्णात्
मुह्लच्	मुह्यति	मुह्येत्	मुह्यतु	अमुह्यत्
मूत्रण्	मूत्रयति	मूत्रयेत्	मूत्रयतु	अमूत्रयत्
मूल	मूलति	मूलेत्	मूलतु	अमूलत्
मूष	मूषति	मूषेत्	मूषतु	अमूषत्
मृगङ्ण्	मृगयते	मृगयेत	मृगयताम्	अमृगयत
मृश्	मृणाति	मृणीयात्	मृणातु	अमृणात्
मेङ्	मयते	मयेत	मयताम्	अमयत
मेधा	मेधायति	मेधायेत्	मेधायतु	अमेधायत्
मोक्षण्	मोक्षयति	मोक्षयेत्	मोक्षयतु	अमोक्षयत्
म्नां	मनति	मनेत्	मनतु	अमनत्
म्रदषङ्	म्रदते	म्रदेत	म्रदताम्	अम्रदत
म्रुचु	म्रोचति	म्रोचेत्	म्रोचतु	अम्रोचत्
म्लुचु	म्लोचति	म्लोचेत्	म्लोचतु	अम्लोचत्
म्लेच्छण्	म्लेच्छयति	म्लेच्छयेत्	म्लेच्छयतु	अम्लेच्छयत्
म्लें	म्लायति	म्लायेत्	म्लायतु	अम्लायत्

द्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अमदत्	ममाद	मद्यात्	मदिता	मदिष्यति	अमदिष्यत्
अमनिष्ट, अमत	मेने	मनिषीष्ट	मनिता	मनिष्यते	अमनिष्यत
अमन्तूयीत्	मन्तूयाञ्चकार ३	मन्तूय्यात्	मन्तूयिता	मन्तूयिष्यति	अमन्तूयिष्यत्
अमाङ्क्षीत्	ममज्ज	मज्ज्यात्	मङ्क्ता	मङ्क्ष्यति	अमङ्क्ष्यत्
अमहीत्	ममाह	मह्यात्	महिता	महिष्यति	अमहिष्यत्
अमासीत्	ममौ	मेयात्	माता	मास्यति	अमास्यत्
अमीमनत्	मानयाञ्चकार ३	मान्यात्	मानयिता	मानयिष्यति	अमानयिष्यत्
अमेलीत्	मिमेल	मिल्यात्	मेलिता	मेलिष्यति	अमेलिष्यति
अमिमिश्रत्	मिश्रयाञ्चकार ३	मिश्र्यात्	मिश्रयिता	मिश्रयिष्यति	अमिश्रयिष्यत्
अमिक्षत्	मिमेह	मिह्यात्	मेढा	मेक्ष्यति	अमेक्ष्यत्
अमीलीत्	मिमील	मील्यात्	मीलिता	मीलिष्यति	अमीलिष्यत्
अमोदिष्ट	मुमुदे	मोदिषीष्ट	मोदिता	मोदिष्यते	अमोदिष्यत
अमूर्च्छीत्	मुमूर्च्छ	मूर्छ्यात्	मूर्छिता	मूर्च्छिष्यति	अमूर्च्छिष्यत्
अमोषीत्	मुमोष	मुष्यात्	मोषिता	मोषिष्यति	अमोषिष्यत्
अमुहत्	मुमोह	मुह्यात्	मोग्धा मोढा, मोहिता	मोहिष्यति मोक्ष्यति	अमोहिष्यत् अमोक्ष्यत्
अमुमूत्रत्	मूत्रयाञ्चकार ३	मूत्र्यात्	मूत्रयिता	मूत्रयिष्यति	अमूत्रयिष्यत्
अमूलीत्	मुमूल	मूल्यात्	मूलिता	मूलिष्यति	अमूलिष्यत्
अमूषीत्	मुमूष	मूष्यात्	मूषिता	मूषिष्यति	अमूषिष्यत्
अममृगत	मृगयाञ्चक्रे ३	मृगयिषीष्ट	मृगयिता	मृगयिष्यते	अमृगयिष्यत
अमारीत्	ममार	मूर्यात्	मरिता	मरिष्यति	अमरिष्यत्
अमास्त	मम	मासीष्ट	माता	मास्यते	अमास्यत
अमेधायीत्	मेधायाञ्चकार ३	मेधाय्यात्	मेधायिता	मेधायिष्यति	अमेधायिष्यत्
अमुमोक्षत्	मोक्षयाञ्चकार ३	मोक्ष्यात्	मोक्षयिता	मोक्षयिष्यति	अमोक्षयिष्यत्
अम्नासीत्	मम्नौ	म्नायात्, म्नेयात्	म्नाता	म्नास्यति	अम्नास्यत्
अम्रदिष्ट	मम्रदे	म्रदिषीष्ट	म्रदिता	म्रदिष्यते	अम्रदिष्यत
अम्रुचत् अम्रोचीत्	मुम्रोच	म्रुच्यात्	म्रोचिता	म्रोचिष्यति	अम्रोचिष्यत्
अम्लोचीत् अम्लुचत्	मुम्लोच	म्लुच्यात्	म्लोचिता	म्लोचिष्यति	अम्लोचिष्यत्
अमिम्लेच्छत्	म्लेच्छयाञ्चकार ३	म्लेच्छ्यात्	म्लेच्छयिता	म्लेच्छयिष्यति	अम्लेच्छयिष्यत्
अम्लासीत्	मम्लौ	म्लायात्, म्लेयात्	म्लाता	म्लास्यति	अम्लास्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
यतीङ्	यतते	यतेत	यतताम्	अयतत
यत्रिण्	यन्त्रयति	यन्त्रयेत्	यन्त्रयतु	अयन्त्रयत्
यभं	यभति	यभेत्	यभतु	अयभत्
यमुं	यच्छति	यच्छेत्	यच्छतु	अयच्छत्
यसुच्	यस्यति	यस्येत्	यस्यतु	अयस्यत्
याचृन्	याचति	याचेत्	याचतु	अयाचत्
	याचते	याचेत	याचताम्	अयाचत
युंनश्	युनाति	युनीयात्	युनातु	अयुनात्
	युनीते	युनीत	युनीताम्	अयुनीत
युक्	यौति	युयात्	यौतु	अयौत्
युजंङ्च्	युज्यते	युज्येत	युज्यताम्	अयुज्यत
युजण्	योजयति	योजयेत्	योजयतु	अयोजयत्
रक्ष	रक्षति	रक्षेत्	रक्षतु	अरक्षत्
रघिङ्	रङ्घते	रङ्घेत	रङ्घताम्	अरङ्घत
रचण्	रचयति	रचयेत्	रचयतु	अरचयत्
रञ्जंन्च्	रज्यति	रज्येत्	रज्यतु	अरज्यत्
	रज्यते	रज्येत	रज्यताम्	अरज्यत
रण	रणति	रणेत्	रणतु	अरणत्
रद	रदति	रदेत्	रदतु	अरदत्
रभंङ्	रभते	रभेत	रभताम्	अरभत
रमंङ्	रमते	रमेत	रमताम्	अरमत
रसण्	रसयति	रसयेत्	रसयतु	अरसयत्
राजृन्	राजति	राजेत्	राजतु	अराजत्
	राजते	राजेत	राजताम्	अराजत
राधंत्	राध्नोति	राध्नुयात्	राध्नोतु	अराध्नोत्
रि	रियति	रियेत्	रियतु	अरियत्
रिचृंन्र्	रिणक्ति	रिञ्च्यात्	रिणक्तु	अरिणक्
	रिङ्क्ते	रिञ्चीत	रिङ्क्ताम्	अरिङ्क्त
रिष	रेषति	रेषेत्	रेषतु	अरेषत्
रीश्	रिणाति	रिणीयात्	रिणातु	अरिणात्

द्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अयतिष्ट	येते	यतिषीष्ट	यतिता	यतिष्यते	अयतिष्यत
अययन्त्रत्	यन्त्रयाञ्चकार ३	यन्त्र्यात्	यन्त्रयिता	यन्त्रयिष्यति	अयन्त्रयिष्यत्
अयाप्सीत्	ययाभ	यभ्यात्	यब्धा	यप्स्यति	अयप्स्यत्
अयंसीत्	ययाम	यम्यात्	यन्ता	यंस्यति	अयंस्यत्
अयसत्	ययास	यस्यात्	यसिता	यसिष्यति	अयसिष्यत्
अयाचीत्	ययाच	याच्यात्	याचिता	याचिष्यति	अयाचिष्यत्
अयाचिष्ट	ययाचे	याचिषीष्ट	याचिता	याचिष्यते	अयाचिष्यत
अयौषीत्	युयाव	यूयात्	योता	योष्यति	अयोष्यत्
अयोष्ट	युयुवे	योषीष्ट	योता	योष्यते	अयोष्यत
अयावीत्	युयाव	यूयात्	यविता	यविष्यति	अयविष्यत्
अयुक्त	युयुजे	युक्षीष्ट	योक्ता	योक्ष्यते	अयोक्ष्यत
अयूयुजत्	योजयाञ्चकार ३	योज्यात्	योजयिता	योजयिष्यति	अयोजयिष्यत्
अरक्षीत्	ररक्ष	रक्ष्यात्	रक्षिता	रक्षिष्यति	अरक्षिष्यत्
अरङ्घिष्ट	ररङ्घे	रङ्घिषीष्ट	रङ्घिता	रङ्घिष्यते	अरङ्घिष्यत
अररचत्	रचयाञ्चकार ३	रच्यात्	रचयिता	रचयिष्यति	अरचयिष्यत्
अराङ्क्षीत्	ररञ्ज	रज्यात्	रङ्क्ता	रङ्क्ष्यति	अरङ्क्ष्यत्
अरङ्क्त	ररञ्जे	रङ्क्षीष्ट	रङ्क्ता	रङ्क्ष्यते	अरङ्क्ष्यत
अराणीत्	रराण	रण्यात्	रणिता	रणिष्यति	अरणिष्यत्
अरणीत्					
अरदीत्	रराद	रद्यात्	रदिता	रदिष्यति	अरदिष्यत्
अरादीत्					
अरब्ध	रेभे	रप्सीष्ट	रब्धा	रप्स्यते	अरप्स्यत
अरंस्त	रेमे	रंसीष्ट	रन्ता	रंस्यते	अरंस्यत
अररसत्	रसयाञ्चकार ३	रस्यात्	रसयिता	रसयिष्यति	अरसयिष्यत्
अराजीत्	रराज	राज्यात्	राजिता	राजिष्यति	अराजिष्यत्
अराजिष्ट	रेजे	राजिषीष्ट	राजिता	राजिष्यते	अराजिष्यत
अरात्सीत्	रराध	राध्यात्	राद्धा	रात्स्यति	अरात्स्यत्
अरैषीत्	रिराय	रीयात्	रेता	रेष्यति	अरेष्यत्
अरिचत्	रिरेच	रिच्यात्	रेक्ता	रेक्ष्यति	अरेक्ष्यत्
अरिक्त	रिरिचे	रिक्षीष्ट	रेक्ता	रेक्ष्यते	अरेक्ष्यत
अरेषीत्	रिरेष	रिष्यात्	रेषिता	रेषिष्यति	अरेषिष्यत्
अरैषीत्	रिराय	रीयात्	रेता	रेष्यति	अरेष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
रु	रौति, रवीति	रुयात्	रौतु, रवीतु	अरौत्
रुचङ्	रोचते	रोचेत	रोचताम्	अरोचत
रुजण्	रोजयति	रोजयेत्	रोजयतु	अरोजयत्
रुजोंज्	रुजति	रुजेत्	रुजतु	अरुजत्
रुटण्	रोटति	रोटेत्	रोटतु	अरोटत्
रुषंच्	रुष्यति	रुष्येत्	रुष्यतु	अरुष्यत्
रुषण्	रोषयति	रोषयेत्	रोषयतु	अरोषयत्
रुहं	रोहति	रोहेत्	रोहतु	अरोहत्
रूपण्	रूपयति	रूपयेत्	रूपयतु	अरूपयत्
रैं	रायति	रायेत्	रायतु	अरायत्
लक्षङ्ण्	लक्षयते	लक्षयेत	लक्षयताम्	अलक्षयत
लक्षन्ण्	लक्षयति	लक्षयेत्	लक्षयतु	अलक्षयत्
	लक्षयते	लक्षयेत	लक्षयताम्	अलक्षयत
लघिङ्	लङ्घते	लङ्घेत	लङ्घताम्	अलङ्घत
लजीङ्	लजते	लजेत	लजताम्	अलजत
लप	लपति	लपेत्	लपतु	अलपत्
लबिङ्	लम्बते	लम्बेत	लम्बताम्	अलम्बत
लभंषङ्	लभते	लभेत	लभताम्	अलभत
ललङ्ण्	लालयते	लालयेत	लालयताम्	अलालयत
लषन्	लषति, लष्यति	लषेत्, लष्येत्	लषतु, लष्यतु	अलषत्,अलष्यत्
	लषते, लष्यते	लषेत, लष्येत	लषताम्,लष्यताम्	अलषत,अलष्यत
लस्जीङ्ज्	लज्जते	लज्जेत	लज्जताम्	अलज्जत
लांक्	लाति	लायात्	लातु	अलात्
लिंपन्ज्	लिम्पति	लिम्पेत्	लिम्पतु	अलिम्पत्
	लिम्पते	लिम्पेत	लिम्पताम्	अलिम्पत
लीङ्च्	लीयते	लीयेत	लीयताम्	अलीयत
लीण्	लीनयति	लीनयेत्	लीनयतु	अलीनयत्
लुट	लोटति	लोटेत्	लोटतु	अलोटत्
लुटि	लुण्टति	लुण्टेत्	लुण्टतु	अलुण्टत्
लुण्टण्	लुण्टयति	लुण्टयेत्	लुण्टयतु	अलुण्टयत्

द्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अरावीत्	रुराव	रूयात्	रविता	रविष्यति	अरविष्यत्
अरोचिष्ट अरुचत्	रुरुचे	रोचिषीष्ट	रोचिता	रोचिष्यते	अरोचिष्यत
अरूरुजत्	रोजयाञ्चकार ३	रोज्यात्	रोजयिता	रोजयिष्यति	अरोजयिष्यत्
अरौक्षीत्	रुरोज	रुज्यात्	रोक्ता	रोक्ष्यति	अरोक्ष्यत्
अरूरुटत्	रुरोट	रोट्यात्	रोटिता	रोटिष्यति	अरोटिष्यत्
अरुषत्	रुरोष	रुष्यात्	रोषिता,रोष्टा	रोषिष्यति	अरोषिष्यत्
अरूरुषत्	रोषयाञ्चकार ३	रोष्यात्	रोषिता	रोषिष्यति	अरोषिष्यत्
अरुक्षत्	रुरोह	रुह्यात्	रोढा	रोक्ष्यति	अरोक्ष्यत्
अरुरूपत्	रूपयाञ्चकार	रूप्यात्	रूपयिता	रूपयिष्यति	अरूपयिष्यत्
अरासीत्	ररौ	रायात्	राता	रास्यति	अरास्यत्
अललक्षत	लक्षयाञ्चक्रे ३	लक्षयिषीष्ट	लक्षयिता	लक्षयिष्यते	अलक्षयिष्यत
अललक्षत्	लक्षयामास ३	लक्ष्यात्	लक्षयिता	लक्षयिष्यति	अलक्षयिष्यत्
अललक्षत	लक्षयाञ्चक्रे ३	लक्षयिषीष्ट	लक्षयिता	लक्षयिष्यते	अलक्षयिष्यत
अलङ्घिष्ट	ललङ्घे	लङ्घिषीष्ट	लङ्घिता	लङ्घिष्यते	अलङ्घिष्यत
अलजिष्ट	लेजे	लजिषीष्ट	लजिता	लजिष्यते	अलजिष्यत
अलापीत्, अलपीत्	लताप	लप्यात्	लपिता	लपिष्यति	अलपिष्यत्
अलम्बिष्ट	ललम्बे	लम्बिषीष्ट	लम्बिता	लम्बिष्यते	अलम्बिष्यत
अलब्ध	लेभे	लप्सीष्ट	लब्धा	लप्स्यते	अलप्स्यत
अलीललत	लालयाञ्चक्रे ३	लालयिषीष्ट	लालयिता	लालयिष्यते	अलालयिष्यत
अलषीत्	ललाष	लष्यात्	लषिता	लषिष्यति	अलषिष्यत्
अलषिष्ट	लेषे	लषिषीष्ट	लषिता	लषिष्यते	अलषिष्यत
अलज्जिष्ट	ललज्जे	लज्जिषीष्ट	लज्जिता	लज्जिष्यते	अलज्जिष्यत
अलासीत्	ललौ	लायात्	लाता	लास्यति	अलास्यत्
अलिपत्	लिलेप	लिप्यात्	लेप्ता	लेप्स्यति	अलेप्स्यत्
अलिपत	लिलेपे	लिप्सीष्ट	लेप्ता	लेप्स्यते	अलेप्स्यत
अलास्त	लिल्ये	लासीष्ट	लाता	लास्यते	अलास्यत
अलेष्ट		लेषीष्ट	लेता	लेष्यते	अलेष्यत
अलीलिनत्	लीनयामास ३	लीन्यात्	लीनयिता	लीनयिष्यति	अलीनयिष्यत्
अलोटीत्	लुलोट	लुट्यात्	लोटिता	लोटिष्यति	अलोटिष्यत्
अलुण्टीत्	लुलुण्ट	लुण्ट्यात्	लुण्टिता	लुण्टिष्यति	अलुण्टिष्यत्
अलुलुण्टत्	लुण्टयाञ्चकार ३	लुण्ट्यात्	लुण्टयिता	लुण्टयिष्यति	अलुण्टयिष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
लुपच्	लुप्यति	लुप्येत्	लुप्यतु	अलुप्यत्
लुभच्	लुभ्यति	लुभ्येत्	लुभ्यतु	अलुभ्यत्
लुभज्	लुभति	लुभेत्	लुभतु	अलुभत्
लूष	लूषति	लूषेत्	लूषतु	अलूषत्
लूषण्	लूषयति	लूषयेत्	लूषयतु	अलूषयत्
लोकृङ्	लोकते	लोकेत	लोकताम्	अलोकत
लोचृङ्	लोचते	लोचेत	लोचताम्	अलोचत
वकिङ्	वङ्कते	वङ्केत	वङ्कताम्	अवङ्कत
वचण्	वाचयति	वाचयेत्	वाचयतु	अवाचयत्
वञ्चङ्ण्	वञ्चयते	वञ्चयेत	वञ्चयताम्	अवञ्चयत
वटिण्	वण्टयति	वण्टयेत्	वण्टयतु	अवण्टयत्
वदङ्ण्	वादयति	वादयेत्	वादयतु	अवादयत्
वमु	वमति	वमेत्	वमतु	अवमत्
वर्णण्	वर्णयति	वर्णयेत्	वर्णयतु	अवर्णयत्
वलङ्	वलते	वलेत	वलताम्	अवलत
वल्लङ्	वल्लते	वल्लेत	वल्लताम्	अवल्लत
वशक्	वष्टि	उश्यात्	वष्टु	अवट्
वहंन्	वहति	वहेत्	वहतु	अवहत्
	वहते	वहेत	वहताम्	अवहत
वांक्	वाति	वायात्	वातु	अवात्
विदंङ्च्	विद्यते	विद्येत	विद्यताम्	अविद्यत
विद्लृंन्ज्	विन्दति	विन्देत्	विन्दतु	अविन्दत्
	विन्दते	विन्देत	विन्दताम्	अविन्दत
वृङ्श्	वृणीते	वृणीत	वृणीताम्	अवृणीत
वृजीण्	वर्जयति	वर्जयेत्	वर्जयतु	अवर्जयत्
वृतुङ्	वर्तते	वर्तेत	वर्तताम्	अवर्तत

ह्वादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अलुपत्	लुलोप	लुप्यात्	लोपिता	लोपिष्यति	अलोपिष्यत्
अलुभत्	लुलोभ	लुभ्यात्	लोभिता लोब्धा	लोभिष्यति	अलोभिष्यत्
अलोभीत्	लुलोभ	लुभ्यात्	लोभिता लोब्धा	लोभिष्यति	अलोभिष्यत्
अलूषीत्	लुलूष	लूष्यात्	लूषिता	लूषिष्यति	अलूषिष्यत्
अलूलुषत्	लूषयाञ्चकार ३	लूष्यात्	लूषयिता	लूषयिष्यति	अलूषयिष्यत्
अलोकिष्ट	लुलोके	लोकिषीष्ट	लोकिता	लोकिष्यते	अलोकिष्यत
अलोचिष्ट	लुलोचे	लोचिषीष्ट	लोचिता	लोचिष्यते	अलोचिष्यत
अवङ्किष्ट	ववङ्के	वङ्किषीष्ट	वङ्किता	वङ्किष्यते	अवङ्किष्यत
अवीवचत्	वाचयाञ्चकार ३	वाच्यात्	वाचयिता	वाचयिष्यति	अवाचयिष्यत्
अववञ्चत	वञ्चयाञ्चक्रे ३	वञ्चयिषीष्ट	वञ्चयिता	वञ्चयिष्यते	अवञ्चयिष्यत
अववण्टत्	वण्टयाञ्चकार ३	वण्ट्यात्	वण्टयिता	वण्टयिष्यति	अवण्टयिष्यत्
अवीवदत्	वादयाञ्चकार ३	वाद्यात्	वादयिता	वादयिष्यति	अवादयिष्यत्
अवमीत्	ववाम	वम्यात्	वमिता	वमिष्यति	अवमिष्यत्
अववर्णत्	वर्णयाञ्चकार ३	वर्ण्यात्	वर्णयिता	वर्णयिष्यति	अवर्णयिष्यत्
अवलिष्ट	ववले	वलिषीष्ट	वलिता	वलिष्यते	अवलिष्यत
अवल्लिष्ट	ववल्ले	वल्लिषीष्ट	वल्लिता	वल्लिष्यते	अवल्लिष्यत
अवाशीत् अवशीत्	उवाश	उश्यात्	वशिता	वशिष्यति	अवशिष्यत्
अवाक्षीत्	उवाह	उह्यात्	वोढा	वक्ष्यति	अवक्ष्यत्
अवोढ	ऊहे	वक्षीष्ट	वोढा	वक्ष्यते	अवक्ष्यत
अवासीत्	ववौ	वायात्	वाता	वास्यति	अवास्यत्
अवित्त	विविदे	वित्सीष्ट	वेत्ता	वेत्स्यते	अवेत्स्यत
अविदत्	विवेद	विद्यात्	वेत्ता	वेत्स्यति	अवेत्स्यत्
अवित्त	विविदे	वित्सीष्ट	वेत्ता	वेत्स्यते	अवेत्स्यत
अवरिष्ट	वव्रे	वरिषीष्ट	वरिता	वरिष्यते	अवरिष्यत
अवरीष्ट अवृत		वृषीष्ट	वरीता	वरीष्यते	अवरीष्यत
अवीवृजत्	वर्जयाञ्चकार ३	वर्ज्यात्	वर्जयिता	वर्जयिष्यति	अवर्जयिष्यत्
अवृतत्, अवर्तिष्ट	ववृते	वर्तिषीष्ट	वर्तिता	वर्तिष्यते	अवर्तिष्यत

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
वृश्	वृणाति	वृणीयात्	वृणातु	अवृणात्
वेपृङ्	वेपते	वेपेत	वेपताम्	अवेपत
व्यथषङ्	व्यथते	व्यथेत	व्यथताम्	अव्यथत
व्यधंच्	विध्यति	विध्येत्	विध्यतु	अविध्यत्
व्येंन्	व्ययति	व्ययेत्	व्ययतु	अव्ययत्
	व्ययते	व्ययेत	व्ययताम्	अव्ययत
व्रश्चूज्	वृश्चति	वृश्चेत्	वृश्चतु	अवृश्चत्
व्रींश्	व्रीणाति	व्रीणीयात्	व्रीणातु	अव्रीणात्
व्रीडच्	व्रीड्यति	व्रीड्येत्	व्रीड्यतु	अव्रीड्यत्
शंसु	शंसति	शंसेत्	शंसतु	अशंसत्
शकंन्च्	शक्यते	शक्येत	शक्यताम्	अशक्यत
	शक्यति	शक्येत्	शक्यतु	अशक्यत्
शकिङ्	शङ्कते	शङ्केत	शङ्कताम्	अशङ्कत
शठ	शठति	शठेत्	शठतु	अशठत्
शद्लृं	शीयते	शीयेत	शीयताम्	अशीयत
शपंन्	शपति	शपेत्	शपतु	अशपत्
	शपते	शपेत	शपताम्	अशपत
शमु	शाम्यति	शाम्येत्	शाम्यतु	अशाम्यत्
शसिङ्	शंसते	शंसेत	शंसताम्	अशंसत
शसु	शसति	शसेत्	शसतु	अशसत्
शासुङ्क्	शास्ते	शासीत	शास्ताम्	अशास्त
शिक्षङ्	शिक्षते	शिक्षेत	शिक्षताम्	अशिक्षत
शिष्लृंर्	शिनष्टि	शिष्यात्	शिनष्टु	अशिनट्
शुधच्	शुध्यति	शुध्येत्	शुध्यतु	अशुध्यत्
शुभि	शुम्भति	शुम्भेत्	शुम्भतु	अशुम्भत्
शुषंच्	शुष्यति	शुष्येत्	शुष्यतु	अशुष्यत्
शृश्	शृणाति	शृणीयात्	शृणातु	अशृणात्
शांच्	श्यति	श्येत्	श्यतु	अश्यत्

द्यादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अवारीत्	ववार	वूर्यात्	वरिता	वरिष्यति	अवरिष्यत्
			वरीता	वरीष्यति	अवरीष्यत्
अवेपिष्ट	विवेपे	वेपिषीष्ट	वेपिता	वेपिष्यते	अवेपिष्यत
अव्यथिष्ट	विव्यथे	व्यथिषीष्ट	व्यथिता	व्यथिष्यते	अव्यथिष्यत
अव्यात्सीत्	विव्याध	विध्यात्	व्यद्धा	व्यत्स्यति	अव्यत्स्यत्
अव्यासीत्	विव्याय	वीयात्	व्याता	व्यास्यति	अव्यास्यत्
अव्यास्त	विव्ये	व्यासीष्ट	व्याता	व्यास्यते	अव्यास्यत
अव्रश्चीत्	वव्रश्च	वृश्च्यात्	व्रश्चिता	व्रश्चिष्यति	अव्रश्चिष्यत्
अव्राक्षीत्			व्रष्टा	व्रक्ष्यति	अव्रक्ष्यत्
अव्रैषीत्	विव्राय	व्रीयात्	व्रेता	व्रेष्यति	अव्रेष्यत्
अव्रीडीत्	विव्रीड	व्रीड्यात्	व्रीडिता	व्रीडिष्यति	अव्रीडिष्यत्
अशंसीत्	शशंस	शस्यात्	शंसिता	शंसिष्यति	अशंसिष्यत्
अशक्त	शेके	शक्षीष्ट	शक्ता	शक्ष्यते	अशक्ष्यत
अशाक्षीत्	शशाक	शक्यात्	शक्ता	शक्ष्यति	अशक्ष्यत्
अशङ्किष्ट	शशङ्के	शङ्किषीष्ट	शङ्किता	शङ्किष्यते	अशङ्किष्यत
अशाठीत्	शशाठ	शठ्यात्	शठिता	शठिष्यति	अशठिष्यत्
अशठीत्					
अशदत्	शशाद	शद्यात्	शत्ता	शत्स्यति	अशत्स्यत्
अशाप्सीत्	शशाप	शप्यात्	शप्ता	शप्स्यति	अशप्स्यत्
अशप्त	शेपे	शप्सीष्ट	शप्ता	शप्स्यते	अशप्स्यत
अशमत्	शशाम	शम्यात्	शमिता	शमिष्यति	अशमिष्यत्
अशंसिष्ट	शशंसे	शंसिषीष्ट	शंसिता	शंसिष्यते	अशंसिष्यत
अशसीत्	शशास	शस्यात्	शसिता	शसिष्यति	अशसिष्यत्
अशासिष्ट	शसासे	शासिषीष्ट	शासिता	शासिष्यते	अशासिष्यत
अशिक्षिष्ट	शिशिक्षे	शिक्षिषीष्ट	शिक्षिता	शिक्षिष्यते	अशिक्षिष्यत
अशिषत्	शिशेष	शिष्यात्	शेष्टा	शेक्ष्यति	अशेक्ष्यत्
अशुधत्	शुशोध	शुध्यात्	शोद्धा	शोत्स्यति	अशोत्स्यत्
अशुम्भीत्	शुशुम्भ	शुभ्यात्	शुम्भिता	शुम्भिष्यति	अशुम्भिष्यत्
अशुषत्	शुशोष	शुष्यात्	शोष्टा	शोक्ष्यति	अशोक्ष्यत्
अशारीत्	शशार	शीर्यात्	शरिता	शरिष्यति	अशरिष्यत्
			शरीता	शरीष्यति	अशरीष्यत्
अशात्	शशौ	शाता	शायात्	शास्यति	अशास्यत्
अशासीत्					

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
श्रमुच्	श्राम्यति	श्राम्येत्	श्राम्यतु	अश्राम्यत्
श्लाघृङ्	श्लाघते	श्लाघेत	श्लाघताम्	अश्लाघत
श्लिषंच्	श्लिष्यति	श्लिष्येत्	श्लिष्यतु	अश्लिष्यत्
श्लिषण्	श्लेषयति	श्लेषयेत्	श्लेषयतु	अश्लेषयत्
श्वसक्	श्वसिति	श्वस्यात्	श्वसितु	अश्वसत्
षञ्जं	सजति	सजेत्	सजतु	असजत्
षद्लृं	सीदति	सीदेत्	सीदतु	असीदत्
षहृङ्	सहते	सहेत	सहताम्	असहत
षिचंन्ज्	सिञ्चति	सिञ्चेत्	सिञ्चतु	असिञ्चत्
षिधुंच्	सिध्यति	सिध्येत्	सिध्यतु	असिध्यत्
षिवुच्	सीव्यति	सीव्येत्	सीव्यतु	असीव्यत्
षुहच्	सुह्यति	सुह्येत्	सुह्यतु	असुह्यत्
षूङ्च्	सूयते	सूयेत	सूयताम्	असूयत
षेवृङ्	सेवते	सेवेत	सेवताम्	असेवत
षोंच्	स्यति	स्येत्	स्यतु	अस्यत्
ष्ट्यैं	ष्ट्यायति	ष्ट्यायेत्	ष्ट्यायतु	अष्ट्यायत्
ष्ठिवु	ष्ठीवति	ष्ठीवेत्	ष्ठीवतु	अष्ठीवत्
ष्णांक्	स्नाति	स्नायात्	स्नातु	अस्नात्
ष्णिहूच्	स्निह्यति	स्निह्येत्	स्निह्यतु	अस्निह्यत्
ष्णैं	स्नायति	स्नायेत्	स्नायतु	अस्नायत्
ष्मिंङ्	स्मयते	स्मयेत	स्मयताम्	अस्मयत
सपर	सपर्यति	सपर्येत्	सपर्यतु	असपर्यत्
समर	समर्यति	समर्येत्	समर्यतु	असमर्यत
सर्ज	सर्जति	सर्जेत्	सर्जतु	असर्जत्
साधंत्	साध्नोति	साध्नुयात्	साध्नोतु	असाध्नोत्

ञादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अश्रमत्	शश्राम	श्रम्यात्	श्रमिता	श्रमिष्यति	अश्रमिष्यत्
अश्लाघिष्ट	शश्लाघे	श्लाघिषीष्ट	श्लाघिता	श्लाघिष्यते	अश्लाघिष्यत
अश्लिक्षत्, अश्लिषत्	शिश्लेष	श्लिष्यात्	श्लेष्टा	श्लेक्ष्यति	अश्लेक्ष्यत्
अशिश्लिषत्	श्लेषयाञ्चकार ३	श्लेष्यात्	श्लेषयिता	श्लेषयिष्यति	अश्लेषयिष्यत्
अश्वासीत्, अश्वसीत्	शश्वास	श्वस्यात्	श्वसिता	श्वसिष्यति	अश्वसिष्यत्
असाङ्क्षीत्	ससञ्ज	सज्यात्	सङ्क्ता	सङ्क्ष्यति	असङ्क्ष्यत्
असदत्	ससाद	सद्यात्	सत्ता	सत्स्यति	असत्स्यत्
असहिष्ट	सेहे	सहिषीष्ट	सहिता, सोढा	सहिष्यते	असहिष्यत
असिचत्	सिषेच	सिच्यात्	सेक्ता	सेक्ष्यति	असेक्ष्यत्
असिधत्	सिषेध	सिध्यात्	सेद्धा	सेत्स्यति	असेत्स्यत्
असेवीत्	सिषेव	सीव्यात्	सेविता	सेविष्यति	असेविष्यत्
असोहीत्	सुषोह	सुह्यात्	सोहिता	सोहिष्यति	असोहिष्यत्
असविष्ट, असोष्ट	सुषुवे	सविषीष्ट सोषीष्ट	सविता सोता	सविष्यते सोष्यते	असविष्यत असोष्यत
असेविष्ट	सिषेवे	सेविषीष्ट	सेविता	सेविष्यते	असेविष्यत
असात्, असासीत्	ससौ	सेयात्	साता	सास्यति	असास्यत्
अष्ट्यासीत्	टष्ट्यौ	ष्ट्येयात् ष्ट्यायात्	ष्ट्याता	ष्ट्यास्यति	अष्ट्यास्यत्
अष्ठेवीत्	तिष्ठेव, टिष्ठेव	ष्ठीव्यात्	ष्ठेविता	ष्ठेविष्यति	अष्ठेविष्यत्
अस्नासीत्	सस्नौ	स्नेयात्,स्नायात्	स्नाता	स्नास्यति	अस्नास्यत्
अस्निहत्	सिष्णेह	स्निह्यात्	स्नेग्धा, स्नेढा स्नेहिता	स्नेहिष्यति स्नेक्ष्यति	अस्नेहिष्यत् अस्नेक्ष्यत्
अस्नासीत्	सस्नौ	स्नेयात्,स्नायात्	स्नाता	स्नास्यति	अस्नास्यत्
अस्मेष्ट	सिष्मिये	स्मेषीष्ट	स्मेता	स्मेष्यते	अस्मेष्यत
असपरीत्	सपराञ्चकार ३	सपर्यात्	सपरिता	सपरिष्यति	असपरिष्यत्
असमरीत्	समराञ्चकार ३	समर्यात्	समरिता	समरिष्यति	असमरिष्यत्
असर्जीत्	ससर्ज	सर्ज्यात्	सर्जिता	सर्जिष्यति	असर्जिष्यत्
असात्सीत्	ससाध	साध्यात्	साद्धा	सात्स्यति	असात्स्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
सुं	सवति	सवेत्	सवतु	असवत्
सुखण्	सुखयति	सुखयेत्	सुखयतु	असुखयत्
सूचण्	सूचयति	सूचयेत्	सूचयतु	असूचयत्
सूत्रण्	सूत्रयति	सूत्रयेत्	सूत्रयतु	असूत्रयत्
सृं	सरति	सरेत्	सरतु	असरत्
सृजंज्	सृजति	सृजेत्	सृजतु	असृजत्
सृप्लृं	सर्पति	सर्पेत्	सर्पतु	असर्पत्
स्कन्दृं	स्कन्दति	स्कन्देत्	स्कन्दतु	अस्कन्दत्
स्तृंन्त्	स्तृणोति	स्तृणुयात्	स्तृणोतु	अस्तृणोत्
	स्तृणुते	स्तृण्वीत	स्तृणुताम्	अस्तृणुत
स्तनण्	स्तनयति	स्तनयेत्	स्तनयतु	अस्तनयत्
स्तेनण्	स्तेनयति	स्तेनयेत्	स्तेनयतु	अस्तेनयत्
स्त्यैं	स्त्यायति	स्त्यायेत्	स्त्यायतु	अस्त्यायत्
स्पदिङ्	स्पन्दते	स्पन्देत	स्पन्दताम्	अस्पन्दत
स्पर्धङ्	स्पर्द्धते	स्पर्द्धेत	स्पर्द्धताम्	अस्पर्द्धत
स्फुटङ्	स्फोटते	स्फोटेत	स्फोटताम्	अस्फोटत
स्फुरज्	स्फुरति	स्फुरेत्	स्फुरतु	अस्फुरत्
स्मृं	स्मरति	स्मरेत्	स्मरतु	अस्मरत्
स्यन्दूङ्	स्यन्दते	स्यन्देत	स्यन्दताम्	अस्यन्दत
स्रंसुङ्	स्रंसते	स्रंसेत	स्रंसताम्	अस्रंसत
स्वदङ्	स्वदते	स्वदेत	स्वदताम्	अस्वदत
स्वन	स्वनति	स्वनेत्	स्वनतु	अस्वनत्

ष्ठादि	णबादि	क्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
असावीत्	सुसाव	सूयात्	सोता	सोष्यति	असोष्यत्
असुसुखत्	सुखयाञ्चकार ३	सुख्यात्	सुखयिता	सुखयिष्यति	असुखयिष्यत्
असुसूचत्	सूचयाञ्चकार ३	सूच्यात्	सूचयिता	सूचयिष्यति	असूचयिष्यत्
असुसूत्रत्	सूत्रयाञ्चकार ३	सूत्र्यात्	सूत्रयिता	सूत्रयिष्यति	असूत्रयिष्यत्
असार्षीत् असरत्	ससार	स्रियात्	सर्ता	सरिष्यति	असरिष्यत्
असस्राक्षीत्	ससर्ज	सृज्यात्	स्रष्टा	स्रक्ष्यति	असस्रक्ष्यत्
असृपत्	ससर्प	सृप्यात्	स्रप्ता,सर्प्ता	स्रप्स्यति सर्प्स्यति	असस्रप्स्यत् असर्प्स्यत्
अस्कदत् अस्कान्त्सीत्	चस्कन्द	स्कद्यात्	स्कन्ता	स्कन्त्स्यति	अस्कन्त्स्यत्
अस्तार्षीत्	तस्तार	स्तर्यात्	स्तर्ता	स्तरिष्यति	अस्तरिष्यत्
अस्तरिष्ट अस्तीर्ष्ट अस्तरीष्ट	तस्तरे	स्तरिषीष्ट स्तृषीष्ट	स्तर्ता	स्तरिष्यते	अस्तरिष्यत
अतस्तनत्	स्तनयाञ्चकार ३	स्तन्यात्	स्तनयिता	स्तनयिष्यति	अस्तनयिष्यत्
अतिस्तेनत्	स्तेनयामास ३	स्तेन्यात्	स्तेनयिता	स्तेनयिष्यति	अस्तेनयिष्यत्
अस्त्यासीत्	तस्त्यौ	स्त्येयात् स्त्यायात्	स्त्याता	स्त्यास्यति	अस्त्यास्यत्
अस्पन्दिष्ट	पस्पन्दे	स्पन्दिषीष्ट	स्पन्दिता	स्यन्दिष्यते	अस्पन्दिष्यत
अस्पर्द्धिष्ट	पस्पर्द्धे	स्पर्द्धिषीष्ट	स्पर्द्धिता	स्पर्द्धिष्यते	अस्पर्द्धिष्यत
अस्फोटिष्ट	पुस्फुटे	स्फोटिषीष्ट	स्फोटिता	स्फोटिष्यते	अस्फोटिष्यत
अस्फुरीत्	पुस्फोर	स्फूर्यात्	स्फुरिता	स्फुरिष्यति	अस्फुरिष्यत्
अस्मार्षीत्	सस्मार	स्मर्यात्	स्मर्ता	स्मरिष्यति	अस्मरिष्यत्
अस्यदत्	सस्यन्दे	स्यन्दिषीष्ट	स्यन्दिता	स्यन्दिष्यते	अस्यन्दिस्यत
अस्यन्दि अस्यन्त		स्यन्तषीष्ट	स्यन्ता	स्यन्त्स्यते स्यन्त्स्यति	अस्यन्त्स्यत अस्यन्त्स्यत्
अस्रसत् अस्रंसिष्ट	सस्रंसे	स्रंसिशीष्ट	स्रंसिता	स्रंसिष्यते	अस्रंसिष्यत
अस्वदिष्ट	सस्वदे	स्वदिषीष्ट	स्वदिता	स्वदिष्यते	अस्वदिष्यत
अस्वनीत् अस्वानीत्	सस्वान	स्वन्यात्	स्वनिता	स्वनिष्यति	अस्वनिष्यत्

धातु	तिबादि	यादादि	तुबादि	दिबादि
स्वादङ्	स्वादते	स्वादेत	स्वादताम्	अस्वादत
स्वृ	स्वरति	स्वरेत्	स्वरतु	अस्वरत्
हठ	हठति	हठेत्	हठतु	अहठत्
हदंङ्	हदते	हदेत	हदताम्	अहदत
हिक्कन्	हिक्कति	हिक्केत्	हिक्कतु	अहिक्कत्
	हिक्कते	हिक्केत	हिक्कताम्	अहिक्कत
हिंसि	हिनस्ति	हिंस्यात्	हिनस्तु	अहिनत् (द्)
हुंक्	जुहोति	जुहुयात्	जुहोतु	अजुहोत्
हुर्च्छा	हूर्च्छति	हूर्च्छेत्	हूर्च्छतु	अहूर्च्छत्
ह्रींछ्	ह्रीच्छति	ह्रीच्छेत्	ह्रीच्छतु	अह्रीच्छत्

स्वादि	णबादि	क्र्यादादि	तादि	स्यत्यादि	स्यदादि
अस्वादिष्ट	सस्वादे	स्वादिषीष्ट	स्वादिता	स्वादिष्यते	अस्वादिष्यत
अस्वारीत्	सस्वार	स्वर्यात्	स्वर्ता	स्वरिष्यति	अस्वरिष्यत्
अस्वार्षीत्			स्वरिता		
अहाठीत्	जहाठ	हठ्यात्	हठिता	हठिष्यति	अहठिष्यत्
अहठीत्					
अहत्त	जहदे	हत्सीष्ट	हत्ता	हत्स्यते	अहत्स्यत
अहिक्कीत्	जिहिक्क	हिक्क्यात्	हिक्किता	हिक्किष्यति	अहिक्किष्यत्
अहिक्किष्ट	जिहिक्के	हिक्किषीष्ट	हिक्किता	हिक्किष्यते	अहिक्किष्यत
अहिंसीत्	जिहिंस	हिंस्यात्	हिंसिता	हिंसिष्यति	अहिंसिष्यत्
अहौषीत्	जुहवाञ्चकार ३ जुहाव	हूयात्	होता	होष्यति	अहोष्यत्
अहूच्छीत्	जुहूच्छ	हूच्छ्यात्	हूच्छिता	हूच्छिष्यति	अहूच्छिष्यत्
अह्रीच्छीत्	जिह्रीच्छ	ह्रीच्छ्यात्	ह्रीच्छिता	ह्रीच्छिष्यति	अह्रीच्छिष्यत्

परिशिष्ट ३

अिन्नन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त और भावकर्म की एक-एक धातु का पहले विस्तार से सारे रूप दिए गए हैं। उसके आगे चार्ट में ३९५ धातुओं के संक्षिप्त रूप तिबादि और द्यादि के प्रथम पुरुष के एकवचन के रूप दिए गए हैं। यङ्लुगन्त के रूप चार्ट में न आने से अलग दिए हैं। उभयपदी धातुओं के संक्षिप्त रूप में परस्मैपद के रूप के आगे आत्मनेपद के रूप के लिए अन्तिम एक शब्द दिया है जो परस्मैपद और आत्मनेपद का भेद दिखाता है। जैसे—भू धातु अिन्नन्त का तिबादि का एक वचन का रूप भावयति है, उसके आगे (ते) दिया गया है जिसका पूरा रूप बनता है भावयते। भाव्य शब्द दोनों में समान होने से नहीं दिया गया है। इसी प्रकार द्यादि के परस्मैपद और आत्मनेपद के रूप की (त) से भिन्नता दिखाई गई है। यङन्त के रूप आत्मनेपद और यङ्लुगन्त के रूप परस्मैपद में ही चलते हैं।

जिसके रूप नहीं बनते हैं वहां × का चिह्न दिया गया है। परिशिष्ट ३ की धातुओं का अर्थ और क्रम परिशिष्ट २ से पहले धातुओं की अकारादि अनुक्रमणिका (पृष्ठ २९६ से ३१९ तक) में देखें।

१. भू—सत्तायाम् (अिन्नन्त रूप)

परस्मैपद

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
भावयति	भावयतः	भावयन्ति	प्र० पु०	भावयेत्	भावयेताम्	भावयेयुः
भावयसि	भावयथः	भावयथ	म० पु०	भावयेः	भावयेतम्	भावयेत
भावयामि	भावयावः	भावयामः	उ० पु०	भावयेयम्	भावयेव	भावयेम

तुबादि			
भावयतु, भावयतात्	भावयताम्	भावयन्तु	प्र० पु०
भावय, भावयतात्	भावयतम्	भावयत	म० पु०
भावयानि	भावयाव	भावयाम	उ० पु०

दिबादि				**द्यादि**		
अभावयत्	अभावयताम्	अभावयन्	प्र० पु०	अबीभवत्	अबीभवताम्	अबीभवन्
अभावयः	अभावयतम्	अभावयत	म० पु०	अबीभवः	अबीभवतम्	अबीभवत
अभावयम्	अभावयाव	अभावयाम	उ० पु०	अबीभवम्	अबीभवाव	अबीभवाम

णबादि (१)

भावयाञ्चकार	भावयाञ्चक्रतुः	भावयाञ्चक्रुः	प्र० पु०
भावयाञ्चकर्थ	भावयाञ्चक्रथुः	भावयाञ्चक्र	म० पु०
भावयाञ्चकार, भावयाञ्चकर	भावयाञ्चकृव	भावयाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

भावयाम्बभूव	भावयाम्बभूवतुः	भावयाम्बभूवुः	प्र० पु०
भावयाम्बभूविथ	भावयाम्बभूवथुः	भावयाम्बभूव	म० पु०
भावयाम्बभूव	भावयाम्बभूविव	भावयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

भावयामास	भावयामासतुः	भावयामासुः	प्र० पु०
भावयामासिथ	भावयामासथुः	भावयामास	म० पु०
भावयामास	भावयामासिव	भावयामासिम	उ० पु०

क्यादादि **तादि**

भाव्यात् भाव्यास्ताम् भाव्यासुः प्र० पु० भावयिता भावयितारौ भावयितारः
भाव्याः भाव्यास्तम् भाव्यास्त म० पु० भावयितासि भावयितास्थः भावयितास्थ
भाव्यासम् भाव्यास्व भाव्यास्म उ० पु० भावयितास्मि भावयितास्वः भावयितास्मः

स्यत्यादि

भावयिष्यति	भावयिष्यतः	भावयिष्यन्ति	प्र० पु०
भावयिष्यसि	भावयिष्यथः	भावयिष्यथ	म० पु०
भावयिष्यामि	भावयिष्यावः	भावयिष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अभावयिष्यत्	अभावयिष्यताम्	अभावयिष्यन्	प्र० पु०
अभावयिष्यः	अभावयिष्यतम्	अभावयिष्यत	म० पु०
अभावयिष्यम्	अभावयिष्याव	अभावयिष्याम	उ० पु०

आत्मनेपद

तिबादि **यादादि**

भावयते	भावयेते	भावयन्ते	प्र० पु० भावयेत	भावयेयाताम्	भावयेरन्
भावयसे	भावयेथे	भावयध्वे	म० पु० भावयेथाः	भावयेयाथाम्	भावयेध्वम्
भावये	भावयावहे	भावयामहे	उ० पु० भावयेय	भावयेवहि	भावयेमहि

तुबादि **दिबादि**

भावयताम्	भावयेताम्	भावयन्ताम्	प्र० पु० अभावयत	अभावयेताम्	अभावयन्त
भावयस्व	भावयेथाम्	भावयध्वम्	म० पु० अभावयथाः	अभावयेथाम्	अभावयध्वम्
भावयै	भावयावहै	भावयामहै	उ० पु० अभावये	अभावयावहि	अभावयामहि

द्यादि

अबीभवत	अबीभवेताम्	अबीभवन्त	प्र० पु०
अबीभवथाः	अबीभवेथाम्	अबीभवध्वम्	म० पु०
अबीभवे	अबीभवावहि	अबीभवामहि	उ० पु०

णबादि (१)

भावयाञ्चक्रे	भावयाञ्चक्राते	भावयाञ्चक्रिरे	प्र० पु०
भावयाञ्चकृषे	भावयाञ्चक्राथे	भावयाञ्चकृढ्वे	म० पु०
भावयाञ्चक्रे	भावयाञ्चकृवहे	भावयाञ्चकृमहे	उ० पु०

णबादि (२)

भावयाम्बभूव	भावयाम्बभूवतुः	भावयाम्बभूवुः	प्र० पु०
भावयाम्बभूविथ	भावयाम्बभूवथुः	भावयाम्बभूव	म० पु०
भावयाम्बभूव	भावयाम्बभूविव	भावयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

भावयामास	भावयामासतुः	भावयामासुः	प्र० पु०
भावयामासिथ	भावयामासथुः	भावयामास	म० पु०
भावयामास	भावयामासिव	भावयामासिम	उ० पु०

क्यादादि

भावयिषीष्ट	भावयिषीयास्ताम्	भावयिषीरन्	प्र० पु०
भावयिषीष्ठाः	भावयिषीयास्थाम्	भावयिषीढ्वम्, भावयिषीध्वम्	म० पु०
भावयिषीय	भावयिषीवहि	भावयिषीमहि	उ० पु०

तादि

भावयिता	भावयितारौ	भावयितारः	प्र० पु०
भावयितासे	भावयितासाथे	भावयिताध्वे	म० पु०
भावयिताहे	भावयितास्वहे	भावयितास्महे	उ० पु०

स्यत्यादि

भावयिष्यते	भावयिष्येते	भावयिष्यन्ते	प्र० पु०
भावयिष्यसे	भावयिष्येथे	भावयिष्यध्वे	म० पु०
भावयिष्ये	भावयिष्यावहे	भावयिष्यामहे	उ० पु०

स्यदादि

अभावयिष्यत	अभावयिष्येताम्	अभावयिष्यन्त	प्र० पु०
अभावयिष्यथाः	अभावयिष्येथाम्	अभावयिष्यध्वम्	म० पु०
अभावयिष्ये	अभावयिष्यावहि	अभावयिष्यामहि	उ० पु०

२. भू—सत्तायाम् (सन्नन्त रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
बुभूषति	बुभूषतः	बुभूषन्ति	प्र० पु०	बुभूषेत्	बुभूषेताम्	बुभूषेयुः
बुभूषसि	बुभूषथः	बुभूषथ	म० पु०	बुभूषेः	बुभूषेतम्	बुभूषेत
बुभूषामि	बुभूषावः	बुभूषामः	उ० पु०	बुभूषेयम्	बुभूषेव	बुभूषेम
तुबादि				**दिबादि**		
बुभूषतु, बुभूषतात्	बुभूषताम्	बुभूषन्तु	प्र० पु०	अबुभूषत्	अबुभूषताम्	अबुभूषन्
बुभूष, बुभूषतात्	बुभूषतम्	बुभूषत	म० पु०	अबुभूषः	अबुभूषतम्	अबुभूषत
बुभूषाणि	बुभूषाव	बुभूषाम	उ० पु०	अबुभूषम्	अबुभूषाव	अबुभूषाव
धादि						
अबुभूषीत्	अबुभूषिष्टाम्	अबुभूषिषुः	प्र० पु०			
अबुभूषीः	अबुभूषिष्टम्	अबुभूषिष्ट	म० पु०			
अबुभूषिषम्	अबुभूषिष्व	अबुभूषिष्म	उ० पु०			
णबादि (१)						
बुभूषाञ्चकार		बुभूषाञ्चक्रतुः		बुभूषाञ्चक्रुः		प्र० पु०
बुभूषाञ्चकर्थ		बुभूषाञ्चक्रथुः		बुभूषाञ्चक्र		म० पु०
बुभूषाञ्चकार, बुभूषाञ्चकर		बुभूषाञ्चक्रव		बुभूषाञ्चक्रम		उ० पु०
णबादि (२)						
बुभूषाम्बभूव	बुभूषाम्बभूवतुः	बुभूषाम्बभूवुः	प्र० पु०			
बुभूषाम्बभूविथ	बुभूषाम्बभूवथुः	बुभूषाम्बभूव	म० पु०			
बुभूषाम्बभूव	बुभूषाम्बभूविव	बुभूषाम्बभूविम	उ० पु०			
णबादि (३)				**क्यादादि**		
बुभूषामास	बुभूषामासतुः	बुभूषामासुः	प्र० पु०	बुभूष्यात्	बुभूष्यास्ताम्	बुभूष्यासुः
बुभूषामासिथ	बुभूषामासथुः	बुभूषामास	म० पु०	बुभूष्याः	बुभूष्यास्तम्	बुभूष्यास्त
बुभूषामास	बुभूषामासिव	बुभूषामासिम	उ० पु०	बुभूष्यासम्	बुभूष्यास्व	बुभूष्यास्म
तादि				**स्यत्यादि**		
बुभूषिता	बुभूषितारौ	बुभूषितारः	प्र० पु०	बुभूषिष्यति	बुभूषिष्यतः	बुभूषिष्यन्ति
बुभूषितासि	बुभूषितास्थः	बुभूषितास्थ	म० पु०	बुभूषिष्यसि	बुभूषिष्यथः	बुभूषिष्यथ
बुभूषितास्मि	बुभूषितास्वः	बुभूषितास्मः	उ० पु०	बुभूषिष्यामि	बुभूषिष्यावः	बुभूषिष्यामः
स्यदादि						
अबुभूषिष्यत्	अबुभूषिष्यताम्	अबुभूषिष्यन्	प्र० पु०			
अबुभूषिष्यः	अबुभूषिष्यतम्	अबुभूषिष्यत	म० पु०			
अबुभूषिष्यम्	अबुभूषिष्याव	अबुभूषिष्याम	उ० पु०			

३. रभङ्—राभस्ये (सन्नन्त रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
तिबादि				**यादादि**			
आरिप्सते	आरिप्सेते	आरिप्सन्ते	प्र० पु०	आरिप्सेत	आरिप्सेयाताम्	आरिप्सेरन्	
आरिप्ससे	आरिप्सेथे	आरिप्सध्वे	म० पु०	आरिप्सेथाः	आरिप्सेयाथाम्	आरिप्सेध्वम्	
आरिप्से	आरिप्सावहे	आरिप्सामहे	उ० पु०	आरिप्सेय	आरिप्सेवहि	आरिप्सेमहि	
तुबादि				**दिबादि**			
आरिप्सताम्	आरिप्सेताम्	आरिप्सन्ताम्	प्र० पु०	आरिप्सत	आरिप्सेताम्	आरिप्सन्त	
आरिप्सस्व	आरिप्सेथाम्	आरिप्सध्वम्	म० पु०	आरिप्सथाः	आरिप्सेथाम्	आरिप्सध्वम्	
आरिप्से	आरिप्सावहै	आरिप्सामहै	उ० पु०	आरिप्से	आरिप्सावहि	आरिप्सामहि	
द्यादि							
आरिप्सिष्ट	आरिप्सिषाताम्		आरिप्सिषत				प्र० पु०
आरिप्सिष्ठाः	आरिप्सिषाथाम्		आरिप्सिढ्वम्, आरिप्सिध्वम्				म० पु०
आरिप्सिषि	आरिप्सिष्वहि		आरिप्सिष्महि				उ० पु०
णबादि							
आरिप्साञ्चक्रे	आरिप्साञ्चक्राते		आरिप्साञ्चक्रिरे				प्र० पु०
आरिप्साञ्चकृषे	आरिप्साञ्चक्राथे		आरिप्साञ्चकृढ्वे				म० पु०
आरिप्साञ्चक्रे	आरिप्साञ्चकृवहे		आरिप्साञ्चकृमहे				उ० पु०
क्यादादि							
आरिप्सिषीष्ट	आरिप्सिषीयास्ताम्		आरिप्सिषीरन्				प्र० पु०
आरिप्सिषीष्ठाः	आरिप्सिषीयास्थाम्		आरिप्सिषीध्वम्				म० पु०
आरिप्सिषीय	आरिप्सिषीवहि		आरिप्सिषीमहि				उ० पु०
तादि							
आरिप्सिता	आरिप्सितारौ		आरिप्सितारः				प्र० पु०
आरिप्सितासे	आरिप्सितासाथे		आरिप्सिताध्वे				म० पु०
आरिप्सिताहे	आरिप्सितास्वहे		आरिप्सितास्महे				उ० पु०
स्यत्यादि							
आरिप्सिष्यते	आरिप्सिष्येते		आरिप्सिष्यन्ते				प्र० पु०
आरिप्सिष्यसे	आरिप्सिष्येथे		आरिप्सिष्यध्वे				म० पु०
आरिप्सिष्ये	आरिप्सिष्यावहे		आरिप्सिष्यामहे				उ० पु०
स्यदादि							
आरिप्सिष्यत	आरिप्सिष्येताम्		आरिप्सिष्यन्त				प्र० पु०
आरिप्सिष्यथाः	आरिप्सिष्येथाम्		आरिप्सिष्यध्वम्				म० पु०
आरिप्सिष्ये	आरिप्सिष्यावहि		आरिप्सिष्यामहि				उ० पु०

४. भू—सत्तायाम् (यङन्त रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
बोभूयते	बोभूयेते	बोभूयन्ते	प्र० पु०	बोभूयेत	बोभूयेयाताम्	बोभूयेरन्
बोभूयसे	बोभूयेथे	बोभूयध्वे	म० पु०	बोभूयेथाः	बोभूयेयाथाम्	बोभूयेध्वम्
बोभूये	बोभूयावहे	बोभूयामहे	उ० पु०	बोभूयेय	बोभूयेवहि	बोभूयेमहि
तुबादि				**दिबादि**		
बोभूयताम्	बोभूयेताम्	बोभूयन्ताम्	प्र० पु०	अबोभूयत	अबोभूयेताम्	अबोभूयन्त
बोभूयस्व	बोभूयेथाम्	बोभूयध्वम्	म० पु०	अबोभूयथाः	अबोभूयेथाम्	अबोभूयध्वम्
बोभूये	बोभूयावहे	बोभूयामहे	उ० पु०	अबोभूये	अबोभूयावहि	अबोभूयामहि

सादि

अबोभूयिष्ट	अबोभूयिषाताम्	अबोभूयिषत	प्र० पु०
अबोभूयिष्ठाः	अबोभूयिषाथाम्	अबोभूयिढ्वम्, अबोभूयिध्वम्	म० पु०
अबोभूयिषि	अबोभूयिष्वहि	अबोभूयिष्महि	उ० पु०

णबादि (१)

बोभूयाञ्चक्रे	बोभूयाञ्चक्राते	बोभूयाञ्चक्रिरे	प्र० पु०
बोभूयाञ्चकृषे	बोभूयाञ्चक्राथे	बोभूयाञ्चकृढ्वे	म० पु०
बोभूयाञ्चक्रे	बोभूयाञ्चकृवहे	बोभूयाञ्चकृमहे	उ० पु०

णबादि (२)

बोभूयाम्बभूव	बोभूयाम्बभूवतुः	बोभूयाम्बभूवुः	प्र० पु०
बोभूयाम्बभूविथ	बोभूयाम्बभूवथुः	बोभूयाम्बभूव	म० पु०
बोभूयाम्बभूव	बोभूयाम्बभूविव	बोभूयाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

बोभूयामास	बोभूयामासतुः	बोभूयामासुः	प्र० पु०
बोभूयामासिथ	बोभूयामासथुः	बोभूयामास	म० पु०
बोभूयामास	बोभूयामासिव	बोभूयामासिम	उ० पु०

क्यादादि

बोभूयिषीष्ट	बोभूयिषीयास्ताम्	बोभूयिषीरन्	प्र० पु०
बोभूयिषीष्ठाः	बोभूयिषीयास्थाम्	बोभूयिषीढ्वम्, बोभूयिषीध्वम्	म० पु०
बोभूयिषीय	बोभूयिषीवहि	बोभूयिषीमहि	उ० पु०

तादि

बोभूयिता	बोभूयितारौ	बोभूयितारः	प्र० पु०
बोभूयितासे	बोभूयितासाथे	बोभूयिताध्वे	म० पु०
बोभूयिताहे	बोभूयितास्वहे	बोभूयितास्महे	उ० पु०

स्यत्यादि

बोभूयिष्यते	बोभूयिष्येते	बोभूयिष्यन्ते	प्र० पु०
बोभूयिष्यसे	बोभूयिष्येथे	बोभूयिष्यध्वे	म० पु०
बोभूयिष्ये	बोभूयिष्यावहे	बोभूयिष्यामहे	उ० पु०

स्यदादि

अबोभूयिष्यत	अबोभूयिष्येताम्	अबोभूयिष्यन्त	प्र० पु०
अबोभूयिष्यथाः	अबोभूयिष्येथाम्	अबोभूयिष्यध्वम्	म० पु०
अबोभूयिष्ये	अबोभूयिष्यावहि	अबोभूयिष्यामहि	उ० पु०

४. भू—सत्तायाम् (यङ्लुगन्त के रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि			**यादादि**		
बोभवीति, बोभोति	बोभूतः	बोभुवति	प्र० पु० बोभूयात्	बोभूयाताम्	बोभूयुः
बोभवीषि, बोभोषि	बोभूथः	बोभूथ	म० पु० बोभूयाः	बोभूयातम्	बोभूयात
बोभवीमि, बोभोमि	बोभूवः	बोभूमः	उ० पु० बोभूयाम्	बोभूयाव	बोभूयाम

तुबादि

बोभवीतु, बोभोतु	बोभूताम्	बोभुवतु	प्र० पु०
बोभूहि	बोभूतम्	बोभूत	म० पु०
बोभवानि	बोभवाव	बोभवाम	उ० पु०

दिबादि

अबोभवीत्, अबोभोत्	अबोभूताम्	अबोभवुः	प्र० पु०
अबोभवीः, अबोभोः	अबोभूतम्	अबोभूत	म० पु०
अबोभवम्	अबोभूव	अबोभूम	उ० पु०

ह्यादि

अबोभोत्	अबोभोताम्	अबोभूवन्	प्र० पु०
अबोभोः	अबोभोतम्	अबोभोत	म० पु०
अबोभूवम्	अबोभोव	अबोभोम	उ० पु०

णबादि (१)

बोभवाञ्चकार	बोभवाञ्चक्रतुः	बोभवाञ्चक्रुः	प्र० पु०
बोभवाञ्चकर्थ	बोभवाञ्चक्रथुः	बोभवाञ्चक्र	म० पु०
बोभवाञ्चकार, बोभवाञ्चकर	बोभवाञ्चकृव	बोभवाञ्चकृम	उ० पु०

णबादि (२)

बोभवाम्बभूव	बोभवाम्बभूवतुः	बोभवाम्बभूवुः	प्र० पु०
बोभवाम्बभूविथ	बोभवाम्बभूवथुः	बोभवाम्बभूव	म० पु०
बोभवाम्बभूव	बोभवाम्बभूविव	बोभवाम्बभूविम	उ० पु०

णबादि (३)

बोभवामास	बोभवामासतुः	बोभवामासुः	प्र० पु०
बोभवामासिथ	बोभवामासथुः	बोभवामास	म० पु०
बोभवामास	बोभवामासिव	बोभवामासिम	उ० पु०

क्यादादि				**तादि**		
बोभूयात्	बोभूयास्ताम्	बोभूयासुः	प्र० पु०	बोभविता	बोभवितारौ	बोभवितारः
बोभूयाः	बोभूयास्तम्	बोभूयास्त	म० पु०	बोभवितासि	बोभवितास्थः	बोभवितास्थ
बोभूयासम्	बोभूयास्व	बोभूयास्म	उ० पु०	बोभवितास्मि	बोभवितास्वः	बोभवितास्मः

स्यत्यादि

बोभविष्यति	बोभविष्यतः	बोभविष्यन्ति	प्र० पु०
बोभविष्यसि	बोभविष्यथः	बोभविष्यथ	म० पु०
बोभविष्यामि	बोभविष्यावः	बोभविष्यामः	उ० पु०

स्यदादि

अबोभविष्यत्	अबोभविष्यताम्	अबोभविष्यन्	प्र० पु०
अबोभविष्यः	अबोभविष्यतम्	अबोभविष्यत	म० पु०
अबोभविष्यम्	अबोभविष्याव	अबोभविष्याम	उ० पु०

५. डुदांन्क्—दाने (भावकर्म के रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
दीयते	दीयेते	दीयन्ते	प्र० पु०	दीयेत	दीयेयाताम्	दीयेरन्
दीयसे	दीयेथे	दीयध्वे	म० पु०	दीयेथाः	दीयेयाथाम्	दीयेध्वम्
दीये	दीयावहे	दीयामहे	उ० पु०	दीयेय	दीयेवहि	दीयेमहि
तुबादि				**दिबादि**		
दीयताम्	दीयेताम्	दीयन्ताम्	प्र० पु०	अदीयत	अदीयेताम्	अदीयन्त
दीयस्व	दीयेथाम्	दीयध्वम्	म० पु०	अदीयथाः	अदीयेथाम्	अदीयध्वम्
दीयै	दीयावहै	दीयामहै	उ० पु०	अदीये	अदीयावहि	अदीयामहि

ह्यादि (१)				**ह्यादि (२)**		
अदायि	अदायिषाताम्	अदायिषत	प्र० पु०	अदायि	अदिषाताम्	अदिषत
अदायिष्ठाः	अदायिषाथाम्	अदायिढ्वम्	म० पु०	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिढ्वम्
अदायिषि	अदायिष्वहि	अदायिष्महि	उ० पु०	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

णबादि				**क्यादादि (१)**		
ददे	ददाते	ददिरे	प्र० पु०	दायिषीष्ट	दायिषीयास्ताम्	दायिषीरन्
ददिषे	ददाथे	ददिध्वे	म० पु०	दायिषीष्ठाः	दायिषीयास्थाम्	दायिषीढ्वम्, दायिषीध्वम्
ददे	ददिवहे	ददिमहे	उ० पु०	दायिषीय	दायिषीवहि	दायिषीमहि

क्यादादि (२)				**तादि (१)**		
दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्	प्र० पु०	दायिता	दायितारौ	दायितारः
दासीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्	म० पु०	दायितासे	दायितासाथे	दायिताध्वे
दासीय	दासीवहि	दासीमहि	उ० पु०	दायिताहे	दायितास्वहे	दायितास्महे

तादि (२)				**स्यत्यादि (१)**		
दाता	दातारौ	दातारः	प्र० पु०	दायिष्यते	दायिष्येते	दायिष्यन्ते
दातासे	दातासाथे	दाताध्वे	म० पु०	दायिष्यसे	दायिष्येथे	दायिष्यध्वे
दाताहे	दातास्वहे	दातास्महे	उ० पु०	दायिष्ये	दायिष्यावहे	दायिष्यामहे

स्यत्यादि (२)				**स्यदादि (१)**		
दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते	प्र० पु०	अदायिष्यत	अदायिष्येताम्	अदायिष्यन्त
दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे	म० पु०	अदायिष्यथाः	अदायिष्येथाम्	अदायिष्यध्वम्
दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे	उ० पु०	अदायिष्ये	अदायिष्यावहि	अदायिष्यामहि

स्यदादि (२)			
अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त	प्र० पु०
अदास्यथाः	अदास्येथाम्	अदास्यध्वम्	म० पु०
अदास्ये	अदास्यावहि	अदास्यामहि	उ० पु०

६. जप—मानसे च (भावकर्म के रूप)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तिबादि				**यादादि**		
जप्यते	जप्येते	जप्यन्ते	प्र० पु०	जप्येत	जप्येयाताम्	जप्येरन्
जप्यसे	जप्येथे	जप्यध्वे	म० पु०	जप्येथाः	जप्येयाथाम्	जप्येध्वम्
जप्ये	जप्यावहे	जप्यामहे	उ० पु०	जप्येय	जप्येवहि	जप्येमहि
तुबादि				**दिबादि**		
जप्यताम्	जप्येताम्	जप्यन्ताम्	प्र० पु०	अजप्यत	अजप्येताम्	अजप्यन्त
जप्यस्व	जप्येथाम्	जप्यध्वम्	म० पु०	अजप्यथाः	अजप्येथाम्	अजायध्वम्
जप्यै	जप्यावहै	जप्यामहै	उ० पु०	अजप्ये	अजप्यावहि	अजप्यामहि

ङादि (१)

अजापि	अजापिषाताम्	अजापिषत	प्र० पु०
अजापिष्ठाः	अजापिषाथाम्	अजापिढ्वम्, अजापिध्वम्	म० पु०
अजापिषि	अजापिष्वहि	अजापिष्महि	उ० पु०

ङादि (२)

अजपि	अजपिषाताम्	अजपिषत	प्र० पु०
अजपिष्ठाः	अजपिषाथाम्	अजपिढ्वम्, अजपिध्वम्	म० पु०
अजपिषि	अजपिष्वहि	अजपिष्महि	उ० पु०

णबादि

जेपे	जेपाते	जेपिरे	प्र० पु०
जेपिषे	जेपाथे	जेपिध्वे	म० पु०
जेपे	जेपिवहे	जेपिमहे	उ० पु०

क्यादादि

जपिषीष्ट	जपिषीयास्ताम्	जपिषीरन्
जपिषीष्ठाः	जपिषीयास्थाम्	जपिषीध्वम्
जपिषीय	जपिषीवहि	जपिषीमहि

तादि

जपिता	जपितारौ	जपितारः	प्र० पु०
जपितासे	जपितासाथे	जपिताध्वे	म० पु०
जपिताहे	जपितास्वहे	जपितास्महे	उ० पु०

स्यत्यादि

जपिष्यते	जपिष्येते	जपिष्यन्ते
जपिष्यसे	जपिष्येथे	जपिष्यध्वे
जपिष्ये	जपिष्यावहे	जपिष्यामहे

स्यदादि

अजपिष्यत	अजपिष्येताम्	अजपिष्यन्त	प्र० पु०
अजपिष्यथाः	अजपिष्येथाम्	अजपिष्यध्वम्	म० पु०
अजपिष्ये	अजपिष्यावहि	अजपिष्यामहि	उ० पु०

संक्षिप्त धातु रूपावली

	जिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	**तिबादि**	**द्यादि**	**तिबादि**	**द्यादि**
भू	भावयति-ते	अबीभवत्-त	बुभूषति	अबुभूषीत्
पां	पाययति	अपीप्यत्	पिपासति	अपिपासीत्
घ्रां	घ्रापयति-ते	अजिघ्रपत्-त	जिघ्रासति	अजिघ्रासीत्
ध्मां	ध्मापयति-ते	अदिध्मपत्-त	दिध्मासति	अदिध्मासीत्
म्नां	म्नापयति-ते	अमिम्नपत्-त	मिम्नासति	अमिम्नासीत्
दांम्	दापयति-ते	अदीदपत्-त	दित्सति	अदित्सीत्
सुं	सावयति-ते	असूसवत्-त	सुषूषति	असुषूषीत्
सृं	सारयति-ते	असीसरत्-त	सिसीर्षति	असिसीर्षीत्
तृ	तारयति-ते	अतीतरत्-त	तितरिषति तितीर्षति	अतितरिषीत्
धेंट्	धापयति-ते	अदीधपत्-त	धित्सति	अधित्सीत्
ध्यैं	ध्यापयति-ते	अदिध्यपत्-त	दिध्यासति	अदिध्यासीत्
गैं	गापयति-ते	अजीगपत्-त	जिगासति	अजिगासीत्
लघि	लङ्घयति-ते	अललङ्घत्-त	लिलङ्घिषति	अलिलङ्घिषीत्
शुच	शोचयति-ते	अशूशुचत्-त	शुशुचिषति शुशोचिषति	अशुशुचिषीत् अशुशोचिषीत्
लुञ्च	लुञ्चयति-ते	अलुलुञ्चत्-त	लुलुञ्चिषति	अलुलुञ्चिषीत्
अर्च	अर्चयति-ते	आर्चिचत्-त	अर्चिचिषति	आर्चिचिषीत्
अञ्चु	अञ्चयति-ते	आञ्चिचत्-त	अञ्चिचिषति	आञ्चिचिषीत्
वञ्चु	वञ्चयति-ते	अववञ्चत्-त	विवञ्चिषति	अविवञ्चिषीत्
वाछि	वाञ्छयति-ते	अववाञ्छत्-त	विवाञ्छिषति	अविवाञ्छिषीत
व्रज	व्राजयति-ते	अविव्रजत्-त	विव्रजिषति	अविव्रजिषीत्
अर्ज	अर्जयति-ते	आर्जिजत्-त	अर्जिजिषति	आर्जिजिषीत्
एजृ	एजयति-ते	ऐजिजत्-त	एजिजिषति	ऐजिजिषीत्
तर्ज	तर्जयति-ते	अततर्जत्-त	तितर्जिषति	अतितर्जिषीत्
गर्ज	गर्जयति-ते	अजगर्जत्-त	जिगर्जिषति	अजिगर्जिषीत
त्यजं	त्याजयति-ते	अतित्यजत्-त	तित्यक्षति	अतित्यक्षीत्
षञ्जं	सञ्जयति-ते	अससञ्जत्-त	सिसङ्क्षति	असिसङ्क्षीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
भूयते	अभावि	बोभूयते	अबोभूयिष्ट
पीयते	अपायि	पेपीयते	अपेपीयिष्ट
घ्रायते	अघ्रायि	जेघ्रीयते	अजेघ्रीयिष्ट
ध्मायते	अध्मायि	देध्मीयते	अदेध्मीयिष्ट
म्नायते	अम्नायि	माम्नायते	अमाम्नायिष्ट
दीयते	अदायि	देदीयते	अदेदीयिष्ट
सूयते	असावि	सोसूयते	असोसूयिष्ट
स्रियते	असारि	सेस्रीयते	असेस्रीयिष्ट
तीर्यते	अतारि अतरी, अतरि	तेतीर्यते	अतेतीरिष्ट
धीयते	अधायि	देधीयते	अदेधीयिष्ट
ध्यायते	अध्यायि	दाध्यायते	अदाध्यायिष्ट
गीयते	अगायि	जेगीयते	अजेगीयिष्ट
लङ्घ्यते	अलङ्घि	लालङ्घ्यते	अलालङ्घिष्ट
शुच्यते	अशोचि	शोशुच्यते	अशोशुचिष्ट
लुच्यते	अलुञ्चि	लोलुच्यते	अलोलुचिष्ट
अर्च्यते	आर्चि	×	×
अच्यते	आञ्चि	×	×
वच्यते	अवञ्चि	वनीवच्यते	अवनीवचिष्ट
वाञ्छ्यते	अवाञ्छि	वावाञ्छ्यते	अवावाञ्छिष्ट
व्रज्यते	अव्राजि, अव्रजि	वाव्रज्यते	अवाव्रजिष्ट
अर्ज्यते	आर्जि	×	×
एज्यते	ऐजि	×	×
तर्ज्यते	अतर्जि	तातर्ज्यते	अतार्तर्जिष्ट
गर्ज्यते	अगर्जि	जागर्ज्यते	अजागर्जिष्ट
त्यज्यते	अत्याजि	तात्यज्यते	अतात्यजिष्ट
सज्यते	असञ्जि	सासज्यते	असासजिष्ट

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
कटे	काटयति	अचीकटत्	चिकटिषति	अचिकटिषीत्
शट	शाटयति-ते	अशीशटत्-त	शिशटिषति	अशिशटिषीत्
खिट्	खेटयति-ते	अचीखिटत्-त	चिखिटिषति	अचिखिटिषीत्
णट	नाटयति-ते	अनीनटत्-त	निनटिषति	अनिनटिषीत्
लुट	लोटयति-ते	अलूलुटत्-त अलुलोटत्-त	लुलुटिषति	अलुलुटिषीत्
स्फुट	स्फोटयति-ते	अपुस्फुटत्-त	पुस्फुटिषति	अपुस्फुटिषीत्
पठ	पाठयति-ते	अपीपठत्-त	पिपठिषति	अपिपठिषीत्
हठ	हाठयति-ते	अजीहठत्-त	जिहठिषति	अजिहठिषीत्
क्रीड्	क्रीडयति-ते	अचिक्रीडत्-त	चिक्रीडिषति	अचिक्रीडिषीत्
लड	लाडयति-ते	अलीलडत्-त	लिलडिषति	अलिलडिषीत्
रण	राणयति-ते	अरराणत्-त अरीरणत्-त	रिरणिषति	अरिरणिषीत्
भण	भाणयति-ते	अबभाणत्-त अबीभणत्-त	बिभणिषति	अबिभणिषीत्
कण	काणयति-ते	अचकाणत्-त अचीकणत्-त	चिकणिषति	अचिकणिषीत्
क्वण	क्वाणयति-ते	अचिक्वणत्-त	चिक्वणिषति	अचिक्वणिषीत्
ओण	ओणयति-ते	औणिणत्-त	ओणिणिषति	औणिणिषीत्
चिती	चेतयति-ते	अचीचितत्-त	चिचेतिषति चिचितिषति	अचिचेतिषीत् अचिचितिषीत्
अत	आतयति-ते	आतितत्-त	अतितिषति	आतितिषीत्
श्च्युतृ	श्च्योतयति-ते	अचुश्च्युतत्-त	चुश्च्युतिषति	अचुश्च्युतिषीत्
खाद	खादयति	अचखादत्	चिखादिषति	अचिखादिषीत्
गद	गादयति-ते	अजीगदत्-त	जिगदिषति	अजिगदिषीत्
इदि	इन्दयति-ते	ऐन्दिदत्-त	इन्दिदिषति	ऐन्दिदिषीत्
णिदि	निन्दयति-ते	अनिनिन्दत्-त	निनन्दिषति	अनिनन्दिषीत्
नदि	नन्दयति-ते	अननन्दत्-त	निनन्दिषति	अनिनन्दिषीत्
क्रदि	क्रन्दयति-ते	अचक्रन्दत्-त	चिक्रन्दिषति	अचिक्रन्दिषीत्
स्कन्दृं	स्कन्दयति-ते	अचस्कन्दत्-त	चिस्कन्त्सति	अचिस्कन्त्सीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
कट्यते	अकाटि	चाकट्यते	अचाकटिष्ट
शट्यते	अशाटि	शाशट्यते	अशाशटिष्ट
खिट्यते	अखेटि	चेखिट्यते	अचेखिटिष्ट
नटचते	अनाटि, अनटि	नानट्यते	अनानटिष्ट
लुट्यते	अलोटि	लोलुट्यते	अलोलुटिष्ट
स्फुटचते	अस्फोटि	पोस्फुट्यते	अपोस्फुटिष्ट
पठचते	अपाठि, अपठि	पापठ्यते	अपापठिष्ट
हठचते	अहाठि, अहठि	जाहठ्यते	अजाहठिष्ट
क्रीडचते	अक्रीडि	चेक्रीड्यते	अचेक्रीडिष्ट
लडचते	अलाडि, अलडि	लालड्यते	अलालडिष्ट
रण्यते	अराणि, अरणि	रंरण्यते	अरंरणिष्ट
भण्यते	अभाणि, अभणि	बंभण्यते	अबंभणिष्ट
कण्यते	अकाणि, अकणि	चंकण्यते	अचंकणिष्ट
क्वण्यते	अक्वाणि, अक्वणि	चक्वण्यते	अचंक्वणिष्ट
ओण्यते	औणि	×	×
चित्यते	अचेति	चेचित्यते	अचेचितिष्ट
अत्यते	आति	×	×
श्चुत्यते	अश्च्योति	चोश्च्युत्यते	अचोश्च्युतिष्ट
खाद्यते	अखादि	चाखाद्यते	अचाखादिष्ट
गद्यते	अगादि, अगदि	जागद्यते	अजागदिष्ट
इन्द्यते	ऐन्दि	×	×
निन्द्यते	अनिन्दि	नेनिन्द्यते	अनेनिन्दिष्ट
नन्द्यते	अनन्दि	नानन्द्यते	अनानन्दिष्ट
क्रन्द्यते	अक्रन्दि	चाक्रन्द्यते	अचाक्रन्दिष्ट
स्कद्यते	अस्कन्दि	चनीस्कद्यते	अचनीस्कदिष्ट

	णिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
षिधु	षेधयति-ते	अषीषिधत्-त	सिसिधिषति	असिसिधिषीत्
ध्वन	ध्वनयति-ते	अदिध्वनत्-त	दिध्वनिषति	अदिध्वनिषीत्
स्वन	स्वानयति-ते	असिस्वनत्-त	सिस्वनिषति	असिस्वनिषीत्
गुपू	गोपयति-ते	अजूगुपत्-त	जुगोपायिषति	अजुगोपायिषीत्
			जुगुपिषति	अजुगुपिसीत्
	गोपाययति-ते	अजुगोपायत्-त	जुगोपिषति	अजुगोपिसीत्
			जुगुप्सति	अजुगुप्सीत्
तपं	तापयति-ते	अतीतपत्-त	तितप्सति	अतितप्सीत्
धूप	धूपयति-ते	अदूधुपत्-त	दुधूपिषति	अदुधूपिषीत्
	धूपाययति-ते	अदुधूपायत्-त		
लप	लापयति-ते	अललापत्-त	लिलपिषति	अलिलपिषीत्
		अलीलपत्-त		
जल्प	जल्पयति-ते	अजजल्पत्-त	जिजल्पिषति	अजिजल्पिषीत्
जप	जापयति-ते	अजीजपत्-त	जिजपिषति	अजिजपिषीत्
सृप्लृं	सर्पयति-ते	अससर्पत्-त	सिसृप्सति	असिसृप्सीत्
		असीसृपत्-त		
चुप	चोपयति-ते	अचूचुपत्-त	चुचुपिषति	अचुचुपिषीत्
चुबि	चुम्बयति-ते	अचुचुम्बत्-त	चुचुम्बिषति	अचुचुम्बिषीत्
जिमु	जेमयति	अजीजिमत्	जिजिमिषति	अजिजिमिषीत्
क्रमु	क्रमयति-ते	अचिक्रमत्-त	चिक्रमिषति	अचिक्रमिषीत्
यमुं	यामयति-ते	अयीयमत्-त	यियंसति	अयियंसीत्
	यमयति-ते			
चर	चारयति-ते	अचीचरत्-त	चिचरिषति	अचिचरिषीत्
दल	दालयति-ते	अदीदलत्-त	दिदलिषति	अदिदलिषीत्
मील	मीलयति-ते	अमीमिलत्-त	मिमीलिषति	अमिमीलिषीत्
		अमिमीलत्-त		
मूल	मूलयति-ते	अमूमुलत्-त	मुमूलिषति	अमुमूलिषीत्
फल	फालयति-ते	अपीफलत्-त	पिफलिषति	अपिफलिषीत्
फुल्ल	फुल्लयति-ते	अपुफुल्लत्-त	पुफुल्लिषति	अपुफुल्लिषीत्
वेला	वेलयति	अविवेलत्	विवेलिषति	अविवेलिषीत्
खेला	खेलयति	अचिखेलत्	चिखेलिषति	अचिखेलिषीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
सिध्यते	असेधि	सेसिध्यते	असेसिधिष्ट
ध्वन्यते	अध्वानि, अध्वनि	दंध्वन्यते	अदंध्वनिष्ट
स्वन्यते	अस्वानि, अस्वनि	संस्वन्यते	असंस्वनिष्ट
गुप्यते	अगोपि	जोगुप्यते	अजोगुपिष्ट
तप्यते	अतापि	तातप्यते	अतातपिष्ट
धूपाप्यते	अधूपायि	दोधूप्यते	अदोधूपिष्ट
लप्यते	अलापि, अलपि	लालप्यते	अलालपिष्ट
जल्प्यते	अजल्पि	जाजल्प्यते	अजाजल्पिष्ट
जप्यते	अजापि, अजपि	जंजप्यते	अजंजपिष्ट
सृप्यते	असर्पि	सरीसृप्यते	असरीसृपिष्ट
चुप्यते	अचोपि	चोचुप्यते	अचोचुपिष्ट
चुम्ब्यते	अचुम्बि	चोचुम्ब्यते	अचोचुम्बिष्ट
जिम्यते	अजेमि	जेजिम्यते	अजेजिमिष्ट
क्रम्यते	अक्रमि	चंक्रम्यते	अचंक्रमिष्ट
यम्यते	अयामि	यंयम्यते	अयंयमिष्ट
चर्यते	अचारि, अचरि	चंचूर्यते	अचंचूरिष्ट
दल्यते	अदालि, अदलि	दंदल्यते	अदंदलिष्ट
मील्यते	अमीलि	मेमील्यते	अमेमीलिष्ट
मूल्यते	अमूलि	मोमूल्यते	अमोमूलिष्ट
फल्यते	अफालि, अफलि	पंफुल्यते	अपंफुलिष्ट
फुल्ल्यते	अफुल्लि	पोफुल्ल्यते	अपोफुल्लिष्ट
वेल्यते	अवेलि	वेवेल्यते	अवेवेलिष्ट
खेल्यते	अखेलि	चेखेल्यते	अचेखेलिष्ट

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
स्खल	स्खालयति	अचिस्खलत्	चिस्खलिषति	अचिस्खलिषीत्
गल	गालयति	अजीगलत्	जिगलिषति	अजिगलिषीत्
चर्व	चर्वयति	अचिचर्वत्	चिचर्विषति	अचिचर्विषीत्
गर्व	गर्वयति	अजिगर्वत्	जिगर्विषति	अजिगर्विषीत्
जीव	जीवयति-ते	अजिजीवत्-त अजीजिवत्-त	जिजीविषति	अजिजीविषीत्
घुष्	घोषयति-ते	अजुघुषत्-त	जुघुषिषति जुघोषिषति	अजुघुषिषीत् अजुघोषिषीत्
कृषं	कर्षयति-ते	अचीकृषत्-त अचकर्षत्-त	चिकृक्षति	अचिकृक्षीत्
भष	भाषयति-ते	अबीभषत्-त	बिभषिषति	अबिभषिषीत्
विष	वेषयति-ते	अवीविषत्-त	विविषिषति विवेषिषति	अविविषिषीत् अविवेषिषीत्
मृष्	मर्षयति-ते	अमीमृषत्-त अममर्षत्-त	मिमर्षिषति	अमिमर्षिषीत्
प्लुष्	प्लोषयति-ते	अपुप्लुषत्-त	पुप्लुषिषति पुप्लोषिषति	अपुप्लुषिषीत् अपुप्लोषिषीत्
घृषु	घर्षयति-ते	अजीघर्षत्-त अजघर्षत्-त	जिघर्षिषति	अजिघर्षिषीत्
पुष	पोषयति-ते	अपुपुषत्-त	पुपुषिषति पुपोषिषति	अपुपुषिषीत् अपुपोषिषीत्
भूष	भूषयति-ते	अबुभुषत्-त	बुभूषिषति	अबुभूषिषीत्
रस	रासयति-ते	अरीरसत्-त	रिरसिषति	अरिरसिषीत्
लस	लासयति-ते	अलीलसत्-त	लिलसिषति	अलिलसिषीत्
हसे	हासयति	अजीहसत्	जिहसिषति	अजिहसिषीत्
शंसु	शंसयति-ते	अशशंसत्-त	शिशंसिषति	अशिशंसिषीत्
दहं	दाहयति-ते	अदीदहत्-त	दिधक्षति	अदिधक्षीत्
अर्ह	अर्हयति-ते	आजिर्हत्-त	अर्जिहिषति	आर्जिहिषीत्
उक्ष	उक्षयति-ते	औचिक्षत्-त	उचिक्षिषति	औचिक्षिषीत्
रक्ष	रक्षयति-ते	अररक्षत्-त	रिरक्षिषति	अरिरक्षिषीत्
तक्ष	तक्षयति-ते	अततक्षत्-त	तितक्षिषति	अतितक्षिषीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
स्खल्यते	अस्खालि, अस्खलि	चंस्खल्यते	अचंस्खलिष्ट
गल्यते	अगालि, अगलि	जंगल्यते	अजंगलिष्ट
चर्व्यते	अचर्वि	चाचर्व्यते	अचाचर्विष्ट
गर्व्यते	अगर्वि	जागर्व्यते	अजागर्विष्ट
जीव्यते	अजीवि	जेजीव्यते	अजेजीविष्ट
घुष्यते	अघोषि	जोघुष्यते	अजोघुषिष्ट
कृष्यते	अकर्षि	चरीकृष्यते	अचरीकृषिष्ट
भष्यते	अभाषि, अभषि	बाभष्यते	अबाभषिष्ट
विष्यते	अवेषि	वेविष्यते	अवेविषिष्ट
मर्ष्यते	अमर्षि	मरीमृष्यते	अमरीमृषिष्ट
प्लुष्यते	अप्लोषि	पोप्लुष्यते	अपोप्लुषिष्ट
घृष्यते	अघर्षि	जरीघृष्यते	अजरीघृषिष्ट
पुष्यते	अपोषि	पोपुष्यते	अपोपुषिष्ट
भूष्यते	अभूषि	बोभूष्यते	अबोभूषिष्ट
रस्यते	अरासि, अरसि	रारस्यते	अरारसिष्ट
लस्यते	अलासि, अलसि	लालस्यते	अलालसिष्ट
हस्यते	अहासि, अहसि	जाहस्यते	अजाहसिष्ट
शस्यते	अशंसि	शाशस्यते	अशाशसिष्ट
दह्यते	अदाहि	दादह्यते	अदादहिष्ट
अर्ह्यते	आर्हि	×	×
उक्ष्यते	औक्षि	×	×
रक्ष्यते	अरक्षि	रारक्ष्यते	अरारक्षिष्ट
तक्ष्यते	अतक्षि	तातक्ष्यते	अतातक्षिष्ट

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
काक्षि	काङ्क्षयति-ते	अचकाङ्क्षत्-त	चिकाङ्क्षिषति	अचिकाङ्क्षिषीत्
ष्मिङ्	स्माययते	असिष्मयत	सिस्मयिषते	असिस्मयिषिष्ट
	स्मायति	असिष्मयत्		
डीङ्	डाययति-ते	अडीडयत्-त	डिडयिषते	अडिडयिषिष्ट
कुङ्	कावयति-ते	अचूकवत्-त	चुकूषते	अचुकूषिष्ट
मेङ्	मापयति-ते	अमीमपत्-त	मित्सते	अमित्सिष्ट
देङ्	दापयति-ते	अदीदपत्-त	दित्सते	अदित्सिष्ट
लोकृङ्	लोकयति-ते	अलुलोकत्-त	लुलोकिषते	अलुलोकिषिष्ट
रेकृङ्	रेकयति-ते	अरिरेकत्-त	रिरेकिषते	अरिरेकिषिष्ट
शकिङ्	शङ्कयति-ते	अशशङ्कत्-त	शिशङ्किषते	अशिशङ्किषिष्ट
चकङ्	चकयति-ते	अचीचकत्-त	चिचकिषते	अचिचकिषिष्ट
ढौकृङ्	ढौकयति-ते	अडुढौकत्-त	डुढौकिषते	अडुढौकिषिष्ट
त्रौकृङ्	त्रौकयति-ते	अतुत्रौकत्-त	तुत्रौकिषते	अतुत्रौकिषिष्ट
टीकृङ्	टीकयति-ते	अटिटीकत्-त	टिटीकिषते	अटिटीकिषिष्ट
लघिङ्	लङ्घयति-ते	अललङ्घत्-त	लिलङ्घिषते	अलिलङ्घिषिष्ट
श्लाघृङ्	श्लाघयति-ते	अशश्लाघत्-त	शिश्लाघिषते	अशिश्लाघिषिष्ट
ऋज्	अर्जयति-ते	आर्जिजत्-त	अर्जिजिषते	आर्जिजिषिष्ट
तिजङ्	तितिक्षयति	अतितिक्षत्	तितिक्षिषते	अतितिक्षिषिष्ट
	तेजयति-ते	अतीतिजत्-त		
पिडिङ्	पिण्डयति-ते	अपिपिण्डत्-त	पिपिण्डिषते	अपिपिण्डिषिष्ट
खडिण्	खण्डयति-ते	अचखण्डत्-त	चिखण्डिषते	अचिखण्डिषिष्ट
भडिङ्	भण्डयति-ते	अबभण्डत्-त	बिभण्डिषते	अबिभण्डिषिष्ट
हेडङ्	हेडयति-ते	अजिहेडत्-त	जिहेडिषते	अजिहेडिषिष्ट
हिडि	हिण्डयति-ते	अजिहिण्डत्-त	जिहिण्डिषते	अजिहिण्डिषिष्ट
घृण्	घोणयति-ते	अजुघुणत्-त	जुघुणिषते	अजुघुणिषिष्ट
पणङ्	पणाययति-ते	अपपणायत्-त	पिपणिषते	अपिपणिषिष्ट
	पाणयति-ते	अपीपणत्-त		
यतीङ्	यातयति-ते	अयीयतत्-त	यियतिषते	अयियतिषिष्ट
नाथृङ्	नाथयति-ते	अननाथत्-त	निनाथिषते	अनिनाथिषिष्ट
वदिङ्	वन्दयति-ते	अववन्दत्-त	विवन्दिषते	अविवन्दिषिष्ट

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
कांक्ष्यते	अकाङ्क्षि	चाकाङ्क्ष्यते	अचाकाङ्क्षिष्ट
स्मीयते	अस्मायि	सेष्मीयते	असेस्मीयिष्ट
डीयते	अडायि, अडयि	डेडीयते	अडेडीयिष्ट
कूयते	अकावि	चोकूयते	अचोकूयिष्ट
मीयते	अमायि	मेमीयते	अमेमीयिष्ट
दीयते	अदायि	देदीयते	अदेदीयिष्ट
लोक्यते	अलोकि	लोलोक्यते	अलोलोकिष्ट
रेक्यते	अरेकि	रेरेक्यते	अरेरेकिष्ट
शंक्यते	अशङ्कि	शाशङ्क्यते	अशाशङ्किष्ट
चक्यते	अचाकि, अचकि	चाचक्यते	अचाचकिष्ट
ढौक्यते	अढौकि	डोढौक्यते	अडोढौकिष्ट
त्रौक्यते	अत्रौकि	तोत्रौक्यते	अतोत्रौकिष्ट
टीक्यते	अटीकि	टेटीक्यते	अटेटीकिष्ट
लंघ्यते	अलङ्घि	लालङ्घ्यते	अलालङ्घिष्ट
श्लाघ्यते	अश्लाघि	शाश्लाघ्यते	अशाश्लाघिष्ट
ऋज्यते	आर्जि	×	×
तितिक्ष्यते	अतितिक्षि	तेतिज्यते	अतेतिजिष्ट
पिण्ड्यते	अपिण्डि	पेपिण्ड्यते	अपेपिण्डिष्ट
खण्ड्यते	अखण्डि	चाखण्ड्यते	अचाखण्डिष्ट
भण्ड्यते	अभण्डि	बाभण्ड्यते	अबाभण्डिष्ट
हेड्यते	अहेडि	जेहेड्यते	अजेहेडिष्ट
हिण्ड्यते	अहिण्डि	जेहिण्ड्यते	अजेहिण्डिष्ट
घुण्यते	अघोणि	जोघुण्यते	अजोघुणिष्ट
पणाय्यते	अपणायि	पम्पण्यते	अपम्पणिष्ट
यत्यते	अयाति, अयति	यायत्यते	अयायतिष्ट
नाथ्यते	अनाथि	नानथ्यते	अनानथिष्ट
वन्द्यते	अवन्दि	वावन्द्यते	अवावन्दिष्ट

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
मुदङ्	मोदयति-ते	अमूमुदत्-त	मुमुदिषते	अमुमुदिषिष्ट
			मुमोदिषते	अमुमोदिषिष्ट
ददङ्	दादयति-ते	अदीददत्-त	दिददिषते	अदिददिषिष्ट
हदंङ्	हादयति-ते	अजीहदत्-त	जिहत्सते	अजिहत्सिष्ट
स्वदङ्	स्वादयति-ते	असिष्वदत्-त	सिस्वदिषते	असिस्वदिषिष्ट
कूर्द	कूर्दयति-ते	अचुकूर्दत्-त	चुकूर्दिषते	अचुकूर्दिषिष्ट
ह्लाद	ह्लादयति-ते	अजिह्लदत्-त	जिह्लादिषते	अजिह्लादिषिष्ट
पर्दङ्	पर्दयति-ते	अपपर्दत्-त	पिपर्दिषते	अपिपर्दिषिष्ट
एधङ्	एधयति-ते	ऐदिधत्-त	एदिधिषते	ऐदिधिषिष्ट
स्पर्धंङ्	स्पर्धयति-ते	अपस्पर्धत्-त	पिस्पर्धिषते	अपिस्पर्धिषिष्ट
बाधृङ्	बाधयति-ते	अबबाधत्-त	बिबाधिषते	अबिबाधिषिष्ट
दधङ्	दाधयति-ते	अदीदधत्-त	दिदधिषते	अदिदधिषिष्ट
वेपृङ्	वेपयति	अविवेपत्	विवेपिषते	अविवेपिसिष्ट
कपिङ्	कम्पयति	अचकम्पत्	चकम्पिषते	अचिकम्पपिष्ट
त्रपूषङ्	त्रापयति-ते	अतित्रपत्-त	तित्रपिषते	अतित्रपिषिष्ट
			तित्रप्सते	अतित्रप्सिष्ट
गुपङ्	गोपयति-ते	अजूगुपत्-त	जुगुप्सिषते	अजुगुप्सिषिष्ट
			जुगोपिषते	अजुगोपिषिष्ट
			जुगुपिषते	अजुगुपिपिष्ट
			जुगोपयिषति	अजुगोपयिषीत्
लबिङ्	लम्बयति-ते	अललम्बत्-त	लिलम्बिषते	अलिलम्बिषिष्ट
कबृङ्	काबयति-ते	अचकाबत्-त	चिकबिषते	अचिकबिषिष्ट
लभिङ्	लम्भयति-ते	अललम्भत्-त	लिलम्भिषते	अलिलम्भिषिष्ट
ष्टुभिङ्	स्तम्भयति-ते	अतस्तम्भत्-त	तिस्तम्भिषते	अतिस्तम्भिषिष्ट
जृभिङ्	जृम्भयति-ते	अजिजृम्भत्-त	जिजृम्भिषते	अजिजृम्भिषिष्ट
क्षमूषङ्	क्षमयति-ते	अचिक्षमत्-त	चिक्षमिषते	अचिक्षमिसिष्ट
			चिक्षंसते	अचिक्षंसिष्ट
अयङ्	आययति-ते	आयियत्-त	अयियिषते	आयियिषिष्ट
दयङ्	दाययति-ते	अदीदयत्-त	दिदयिषते	अदिदयिषिष्ट
प्यायीङ्	प्याययति-ते	अपिप्ययत्-त	पिप्यायिषते	अपिप्यायिषिष्ट
तायृङ्	तायययति-ते	अततायत्-त	तितायिषते	अतितायिषिष्ट

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
मुद्यते	अमोदि	मोमुद्यते	अमोमुदिष्ट
दद्यते	अदादि, अददि	दादद्यते	अदाददिष्ट
हद्यते	अहादि	जाहद्यते	अजाहदिष्ट
स्वद्यते	अस्वादि, अस्वदि	सास्वद्यते	असास्वदिष्ट
कूर्द्यते	अकूर्दि	चोकूर्द्यते	अचोकूर्दिष्ट
ह्लाद्यते	अह्लादि	जाह्लाद्यते	अजाह्लादिष्ट
पर्द्यते	अपर्दि	पापर्द्यते	अपापर्दिष्ट
एध्यते	ऐधि	×	×
स्पर्ध्यते	अपर्धि	पास्पर्ध्यते	अपास्पर्धिष्ट
बाध्यते	अबाधि	बाबाध्यते	अबाबाधिष्ट
दध्यते	अदाधि, अददि	दादध्यते	अदादधिष्ट
वेप्यते	अवेपि	वेवेप्यते	अवेवेपिष्ट
कम्प्यते	अकम्पि	चाकम्प्यते	अचाकम्पिष्ट
त्रप्यते	अत्रापि, अत्रपि	तात्रप्यते	अतात्रपिष्ट
जुगुप्स्यते	अजुगुप्सि	जोगुप्यते	अजोगुपिष्ट
लम्ब्यते	अलम्बि	लालम्ब्यते	अलालम्बिष्ट
कब्यते	अकाबि	चाकब्यते	अचाकबिष्ट
लम्भ्यते	अलम्भि	लालम्भ्यते	अलालम्भिष्ट
स्तम्भ्यते	अस्तम्भि	तोष्टुभ्यते	अतोष्टुभिष्ट
जृम्भ्यते	अजृम्भि	जरीजृम्भ्यते	अजरीजृम्भिष्ट
क्षम्यते	अक्षमि	चंक्षम्यते	अचंक्षमिष्ट
अय्यते	आयि	×	×
दय्यते	अदायि, अदयि	दादय्यते	अदादयिष्ट
प्याय्यते	अप्यायि	पाप्याय्यते	अपाप्यायिष्ट
ताय्यते	अतायि	तातायते	अतातायिष्ट

		णिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि		तिबादि	द्यादि
वलङ्	वालयति-ते	अवीवलत्-त		विवलिषते	अविवलिषिष्ट
कलङ्	कालयति-ते	अचीकलत्-त		चिकलिषते	अचिकलिषिष्ट
षेवृङ्	सेवयति-ते	असिषेवत्-त		सिसेविषते	असिसेविषिष्ट
काशृङ्	काशयति-ते	अचकाशत्-त		चिकाशिषते	अचिकाशिषिष्ट
भाषङ्	भाषयति-ते	अबभाषत्-त अबीभषत्-त		बिभाषिषते	अबिभाषिषिष्ट
एषृङ्	एषयति-ते	ऐषिषत्-त		एषिषिषते	ऐषिषिषिष्ट
हेषृङ्	हेषयति-ते	अजिहेषत्-त		जिहेषिषते	अजिहेषिषिष्ट
कासृङ्	कासयति-ते	अचकासत्-त		चिकासिषते	अचिकासिषिष्ट
ईहङ्	ईहयति-ते	ऐजिहत्-त		ईजिहिषते	ऐजिहिषिष्ट
गर्हृङ्	गर्हयति-ते	अजगर्हत्-त		जिगर्हिषते	अजिगर्हिषिष्ट
द्राहङ्	द्राहयति-ते	अदद्राहत्-त		दिद्राहिषते	अदिद्राहिषिष्ट
ऊहङ्	ऊहयति-ते	औजिहत्-त		ऊजिहिषते	औजिहिषिष्ट
गाहूङ्	गाहयति-ते	अजीगहत्-त		जिगाहिषते जिघाक्षते	अजिगाहिषिष्ट अजिघाक्षिष्ट
घुक्ष	घुक्षयति-ते	अदुधुक्षत्-त		दुधुक्षिषते	अदुधुक्षिषिष्ट
शिक्षङ्	शिक्षयति-ते	अशिशिक्षत्-त		शिशिक्षिषते	अशिशिक्षिषिष्ट
भिक्षङ्	भिक्षयति-ते	अबिभिक्षत्-त		बिभिक्षिषते	अबिभिक्षिषिष्ट
दीक्षङ्	दीक्षयति-ते	अदिदीक्षत्-त		दिदीक्षिषते	अदिदीक्षिषिष्ट
श्रिन्	श्राययति-ते	अशिश्रयत्-त		शिश्रयिषति-ते	अशिश्रयिषीत् अशिश्रयिषिष्ट
हृंन्	हारयति-ते	अजीहरत्-त		जिहीर्षति-ते	अजिहीर्षीत् अजिहीर्षिष्ट
भृंन्	भारयति-ते	अबीभरत्-त		बिभरिषति-ते बुभूर्षति	अबिभरिषीत् अबुभूर्षीत्
धृंन्	धारयति-ते	अदीधरत्-त		दिधीर्षति-ते	अदिधीर्षीत् अदिधीर्षिष्ट
कृंन्	कारयति-ते	अचीकरत्-त		चिकीर्षति-ते	अचिकीर्षीत् अचिकीर्षिष्ट
याचृन्	याचयति-ते	अययाचत्-त		यियाचिषति-ते	अयियाचिषीत् अयियाचिषिष्ट

	भावकर्म	यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
वल्यते	अवालि, अवलि	वावल्यते	अवावलिष्ट
कल्यते	अकालि, अकलि	चाकल्यते	अचाकलिष्ट
सेव्यते	असेवि	सेसेव्यते	असेसेविष्ट
काश्यते	अकाशि	चाकाश्यते	अचाकाशिष्ट
भाष्यते	अभाषि	बाभाष्यते	अबाभाषिष्ट
एष्यते	ऐषि	×	×
हेष्यते	अहेषि	जेहेष्यते	अजेहेषिष्ट
कास्यते	अकासि	चाकास्यते	अचाकासिष्ट
ईहचते	ऐहि	×	×
गर्हचते	अगर्हि	जागर्ह्यते	अजागर्हिष्ट
द्राह्यते	अद्राहि	दाद्राह्यते	अदाद्राहिष्ट
ऊहचते	औहि	×	×
गाहचते	अगाहि	जागाह्यते	अजागाहिष्ट
धुक्ष्यते	अधुक्षि	दोधुक्ष्यते	अदोधुक्षिष्ट
शिक्ष्यते	अशिक्षि	शेशिक्ष्यते	अशेशिक्षिष्ट
भिक्ष्यते	अभिक्षि	बेभिक्ष्यते	अबेभिक्षिष्ट
दीक्ष्यते	अदीक्षि	देदीक्ष्यते	अदेदीक्षिष्ट
श्रीयते	अश्रायि, अश्रयि	शेश्रीयते	अशेश्रीयिष्ट
ह्रियते	अह्रारि	जेह्रीयते	अजेह्रीयिष्ट
भ्रियते	अभ्रारि	बेभ्रीयते	अबेभ्रीयिष्ट
धार्यते	अधारि	देध्रीयते	अदेध्रीयिष्ट
क्रियते	अकारि	चेक्रीयते	अचेक्रीयिष्ट
याच्यते	अयाचि	यायाच्यते	अयायाचिष्ट

		णिन्नन्त		सन्नन्त
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
पचंपन्	पाचयति-ते	अपीपचत्-त	पिपक्षति-ते	अपिपक्षीत् अपिपक्षिषिष्ट
भजंन्	भाजयति-ते	अबीभजत्-त	बिभक्षति-ते	अबिभक्षीत्, अबिभक्षिष्ट
बुधन्	बोधयति-ते	अबूबुधत्-त	बुबुधिषति-ते	अबुबुधिषीत् अबुबुधिषिष्ट
दांनन्	दानयति-ते	अदीदनत्-त	दिदांसिषति-ते	अदिदांसिषीत् अदिदांसिषिष्ट
शपंन्	शापयति-ते	अशीशपत्-त	शिशप्सति-ते	अशिशप्सीत् अशिशप्सिष्ट
धावुन्	धावयति-ते	अदीधवत्-त	दिधाविषति-ते	अदिधाविषीत् अदिधाविषिष्ट
लषन्	लाषयति-ते	अलीलषत्-त	लिलषिषति-ते	अलिलषिषीत् अलिलषिषिष्ट
चषन्	चाषयति-ते	अचीचषत्-त	चिचषिषति-ते	अचिचषिषीत् अचिचषिषिष्ट
भ्लक्षन्	भ्लक्षयति-ते	अबभ्लक्षत्-त	बिभ्लक्षिषति-ते	अबिभ्लक्षिषीत् अबिभ्लक्षिषिष्ट
द्युतङ्	द्योतयति-ते	अदिद्युतत्-त	दिद्युतिषते	अदिद्युतिषिष्ट
रुचङ्	रोचयति-ते	अरूरुचत्-त	रुरुचिषते	अरुरुचिषिष्ट
शुभ	शोभयति-ते	अशूशुभत्-त	शुशुभिषते	अशुशुभिषिष्ट
स्रम्भुङ्	स्रम्भयति-ते	असस्रम्भत्-त	सिस्रम्भिषते	असिस्रम्भिषिष्ट
भ्रंशुङ्	भ्रंशयति-ते	अबभ्रंशत्-त	बिभ्रंशिषते	अबिभ्रंशिषिष्ट
स्रंसुङ्	स्रंसयति-ते	असस्रंसत्-त	सिस्रंसिषते	असिस्रंसिषिष्ट
ध्वंसुङ्	ध्वंसयति-ते	अदध्वंसत्-त	दिध्वंसिषते	अदिध्वंसिसिष्ट
स्यन्दूङ्	स्यन्दयति-ते	असस्यन्दत्-त	सिस्यन्दिषते	असिस्यन्दिषिष्ट
वृधुङ्	वर्धयति-ते	अवीवृधत्-त अववर्धत्-त	विवर्धिषते	अविवर्धिषिष्ट
कुच	कोचयति-ते	अचूकुचत्-त	चुकुचिषति चुकोचिषति	अचुकुचिषीत् अचुकोचिषीत्
पत्लृं	पातयति-ते	अपीपतत्-त	पिपतिषति	अपिपतिषीत्
षद्लृं	सादयति-ते	असीषदत्-त	सिषत्सति	असिषत्सीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
पच्यते	अपाचि	पापच्यते	अपापचिष्ट
भज्यते	अभाजि	बाभज्यते	अबाभजिष्ट
बुध्यते	अबोधि	बोबुध्यते	अबोबुधिष्ट
दीदांस्यते	अदीदांसि	दादान्यते	अदादानिष्ट
शप्यते	अशापि	शाशप्यते	अशाशपिष्ट
धाव्यते	अधावि	दाधाव्यते	अदाधाविष्ट
लष्यते	अलाषि, अलषि	लालष्यते	अलालषिष्ट
चष्यते	अचाषि, अचषि	चाचष्यते	अचाचषिष्ट
भ्लक्ष्यते	अभ्लक्षि	बाभ्लक्ष्यते	अबाभ्लक्षिष्ट
द्युत्यते	अद्योति	देद्युत्यते	अदेद्युतिष्ट
रुच्यते	अरोचि	रोरुच्यते	अरोरुचिष्ट
शुभ्यते	अशोभि	शोशुभ्यते	अशोशुभिष्ट
स्रभ्यते	अस्रम्भि	सास्रम्भ्यते	असास्रम्भिष्ट
भ्रश्यते	अभ्रंशि	बनीभ्रश्यते	अबनीभ्रशिष्ट
स्रस्यते	अस्रंसि	सनीस्रस्यते	असनीस्रसिष्ट
ध्वस्यते	अध्वंसि	दनीध्वस्यते	अदनीध्वसिष्ट
स्यद्यते	अस्यन्दि	सास्यद्यते	असास्यदिष्ट
वृध्यते	अवर्धि, अवृधि	वरीवृध्यते	अवरीवृधिष्ट
कुच्यते	अकोचि	चोकुच्यते	अचोकुचिष्ट
पत्यते	अपाति, अपति	पनीपत्यते	अपनीपतिष्ट
सद्यते	असादि	सासद्यते	असासदिष्ट

	णिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
बुध	बोधयति	अबूबुधत्	बुबुधिषति	अबुबुधिषीत्
वमु	वामयति-ते	अवीवमत्-त	विवमिषति	अविवमिषीत्
भ्रमु	भ्रमयति	अबिभ्रमत्	बिभ्रमिषति	अबिभ्रमिषीत्
क्षर	क्षारयति-ते	अचिक्षरत्-त	चिक्षरिषति	अचिक्षरिषीत्
चल	चलयति-ते चालयति-ते	अचीचलत्-त	चिचलिषति	अचिचलिसीत्
शल	शालयति-ते	अशीशलत्-त	शिशलिषति	अशिशलिषीत्
क्रुशं	क्रोशयति-ते	अचुक्रुशत्-त	चुक्रुक्षति	अचुक्रुक्षीत्
कस	कासयति-ते	अचीकसत्-त	चिकसिषति	अचिकसिषीत्
यजंन्	याजयति-ते	अयीयजत्-त	यियक्षति-ते	अयियक्षीत्, अयियक्षिष्ट
वपंन्	वापयति-ते	अवीवपत्-त	विवप्सति-ते	अविवप्सीत्, अविवप्सिष्ट
वहंन्	वाहयति-ते	अवीवहत्-त	विवक्षति-ते	अविवक्षीत्, अविवक्षिष्ट
वद	वादयति-ते	अवीवदत्-त	विवदिषति	अविवदिषीत्
वसं	वासयति-ते	अवीवसत्-त	विवत्सति	अविवत्सीत्
प्रथषङ्	प्रथयति-ते	अपप्रथत्-त	पिप्रथिषते	अपिप्रथिषिष्ट
क्रदि	क्रन्दयति-ते	अचक्रन्दत्-त	चिक्रन्दिषते	अचिक्रन्दिषिष्ट
लगे	लगयति-ते	अलीलगत्-त	लिलगिषति	अलिलगिषीत्
ष्ठगे	स्थगयति-ते	अतिष्ठगत्-त	तिस्थगिषति	अतिस्थगिषीत्
मदी	मदयति-ते	अमीमदत्-त	मिमदिषति	अमिमदिषीत्
		अदादिगण		
अदं	आदयति-ते	आदिदत्-त	जिघत्सति	अजिघत्सीत्
प्सांक्	प्सापयति	अपिप्सपत्	पिप्सासति	अपिप्सासीत्
भांक्	भापयति-ते	अबीभपत्-त	बिभासति	अबिभासीत्
यांक्	यापयति	अयीयपत्	यियासति	अयियासीत्
द्रांक्	द्रापयति-ते	अदिद्रपत्-त	दिद्रासति	अदिद्रासीत्
रांक्	रापयति-ते	अरीरपत्-त	रिरासति	अरिरासीत्
दांपक्	दापयति-ते	अदीदपत्-त	दिदासति	अदिदासीत्
ख्यांक्	ख्यापयति-ते	अचिख्यपत्-त	चिख्यासति	अचिख्यासीत्
मांक्	मापयति-ते	अमीमपत्-त	मित्सति	अमित्सीत्
षुंक्	सावयति-ते	असूषवत्-त	सुसूषति	असुसूषीत्
तुंक्	तावयति-ते	अतूतवत्-त	तुतूषति	अतुतूषीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
बुध्यते	अबोधि	बोबुध्यते	अबोबुधिष्ट
वम्यते	अवामि, अवमि	वंवम्यते	अवंवमिष्ट
भ्रम्यते	अभ्रमि	बम्भ्रम्यते	अबम्भ्रमिष्ट
क्षर्यते	अक्षारि, अक्षरि	चाक्षर्यते	अचाक्षरिष्ट
चल्यते	अचालि, अचलि	चाचल्यते	अचाचलिष्ट
शल्यते	अशालि, अशलि	शाशल्यते	अशाशलिष्ट
क्रुश्यते	अक्रोशि	चोक्रुश्यते	अचोक्रुशिष्ट
कस्यते	अकासि, अकसि	चनीकस्यते	अचनीकसिष्ट
इज्यते	अयाजि	यायज्यते	अयायजिष्ट
उप्यते	अवापि	वावप्यते	अवावपिष्ट
उह्यते	अवाहि	वावह्यते	अवावहिष्ट
उद्यते	अवादि, अवदि	वावद्यते	अवावदिष्ट
उष्यते	अवासि	वावस्यते	अवावसिष्ट
प्रथ्यते	अप्राथि, अप्रथि	पाप्रथ्यते	अपाप्रथिष्ट
क्रन्द्यते	अक्रन्दि	चाक्रन्द्यते	अचाक्रन्दिष्ट
लग्यते	अलागि, अलगि	लालग्यते	अलालगिष्ट
स्थग्यते	अस्थागि, अस्थगि	तास्थग्यते	अतास्थगिष्ट
मद्यते	अमादि, अमदि	मामद्यते	अमामदिष्ट
अद्यते	अघासि	×	×
प्सायते	अप्सायि	पाप्सायते	अपाप्सायिष्ट
भायते	अभायि	बाभायते	अबाभायिष्ट
यायते	अयायि	यायायते	अयायायिष्ट
द्रायते	अद्रायि	दाद्रायते	अदाद्रायिष्ट
रायते	अरायि	रारायते	अरारायिष्ट
दायतें	अदायि	दादायते	अदादायिष्ट
ख्यायते	अख्यायि	चाख्यायते	अचाख्यायिष्ट
मीयते	अमायि	मेमीयते	अमेमीयिष्ट
सूयते	असावि	सोषूयते	असोषूयिष्ट
तूयते	अतावि	तोतूयते	अतोतूयिष्ट

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
णुक्	नावयति-ते	अनूनवत्-त	नुनूषति	अनुनूषीत्
क्षणुक्	क्षणावयति-ते	अचुक्षणवत्-त	चुक्षणूषति	अचुक्षणूषीत्
स्नुक्	स्नावयति-ते	असुस्नवत्-त	सुस्नूषति	असुस्नूषीत्
टुक्षु	क्षावयति-ते	अचुक्षवत्-त	चुक्षूषति	अचुक्षूषीत्
कुंक्	कावयति	अचूकवत्	चुकूषति	अचुकूषीत्
रुदृक्	रोदयति-ते	अरूरुदत्-त	रुरुदिषति	अरुरुदिषीत्
अन	आनयति-ते	आनिनत्-त	अनिनिषति	आनिनिषीत्
श्वसक्	श्वासयति-ते	अशिश्वसत्-त	शिश्वसिषति	अशिश्वसिषीत्
जक्षक्	जक्षयति-ते	अजजक्षत्-त	जिजक्षिषति	अजिजक्षिषीत्
दरिद्राक्	दरिद्रयति-ते	अददरिद्रत्-त	दिदरिद्रासति	अदिदरिद्रासीत्
			दिदरिद्रिषति	अदिदरिद्रिषीत्
जागृक्	जागरयति-ते	अजजागरत्-त	जिजागरिषति	अजिजागरिषीत्
वचंक्	वाचयति-ते	अवीवचत्-त	विवक्षति	अविवक्षीत्
मृजूक्	मार्जयति-ते	अमीमृजत्-त	मिमार्जिषति	अमिमार्जिषीत्
		अममार्जत्-त	मिमृक्षति	अमिमृक्षीत्
विदक्	वेदयति-ते	अवीविदत्-त	विविदिषति	अविविदिषीत्
हनंक्	घातयति-ते	अजीघतत्-त	जिघांसति	अजिघांसीत्
वशक्	वाशयति-ते	अवीवशत्-त	विवशिषति	अविवशिषीत्
असक्	भावयति-ते	अबीभवत्-त	बुभूषति	अबुभूषीत्
शीङ्क्	शाययति	अशीशयत्	शिशयिषते	अशिशयिषिष्ट
हृ नुंङ्क्	ह्वावयति-ते	अजुह्वत्-त	जुहूषते	अजुहूषिष्ट
षूङ्क्	सावयति-ते	असूषवत्-त	सुसूषते	असुसूषिष्ट
पृचीङ्	पर्चयति-ते	अपीपृचत्-त	पिपर्चिषते	अपिपर्चिषिष्ट
		अपपर्चत्-त		
ईडङ्क्	ईडयति-ते	ऐडिडत्-त	ईडिडिषते	ऐडिडिषिष्ट
ईरङ्क्	ईरयति-ते	ऐरिरत्-त	ईरिरिषते	ऐरिरिषिष्ट
ईशङ्क्	ईशयति-ते	ऐशिशत्-त	ईशिशिषते	ऐशिशिषिष्ट
वसिक्	वासयति-ते	अवीवसत्-त	विवसिषते	अविवसिषिष्ट
आसङ्क्	आसयति-ते	आसिसत्-त	आसिसिषते	आसिसिषिष्ट
चक्षंङ्क्	ख्यापयति	अचिख्यपत्	चिख्यासति	अचिख्यासीत्
	ख्यापयते	अचिख्यपत	चिख्यासते	अचिख्यासिष्ट
	क्षापयति	अचिक्षपत्	चिक्षासति	अचिक्षासीत्
	क्षापयते	अचिक्षपत	चिक्षासते	अचिक्षासिष्ट

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
नूयते	अनावि, अनवि	नोनूयते	अनोनूयिष्ट
क्ष्णूयते	अक्ष्णावि, अक्ष्णवि	चोक्ष्णूयते	अचोक्ष्णूयिष्ट
स्नूयते	अस्नावि, अस्नवि	सोस्नूयते	असोस्नूयिष्ट
क्षूयते	अक्षावि, अक्षवि	चोक्षूयते	अचोक्षूयिष्ट
कूयते	अकावि	चोकूयते	अचोकूयिष्ट
रुद्यते	अरोदि	रोरुद्यते	अरोरुदिष्ट
अन्यते	आनि	×	×
श्वस्यते	अश्वासि, अश्वसि	शाश्वस्यते	अशाश्वसिष्ट
जक्ष्यते	अजक्षि	जाजक्ष्यते	अजाजक्षिष्ट
दरिद्र्यते	अदरिद्रि, अदरिद्रायि	ददरिद्रायते	अददरिद्रायिष्ट
जागर्यते	अजागरि, अजागारि	जजागर्यते	अजजागरिषिष्ट
उच्यते	अवाचि	वावच्यते	अवावचिष्ट
मृज्यते	अमार्जि	मरीमृज्यते	अमरीमृजिष्ट
विद्यते	अवेदि	वेविद्यते	अवेविदिष्ट
हन्यते	अघानि, अवधि	जेघ्नीयते	अजेघ्नीयिष्ट
उश्यते	अवाशि, अवशि	वावश्यते	अवावशिष्ट
भूयते	अभावि	×	×
शय्यते	अशायि, अशयि	शाशय्यते	अशाशयिष्ट
ह्नूयते	अह्नावि	जोह्नूयते	अजोह्नूयिष्ट
सूयते	असावि, असवि	सोषूयते	असोषूयिष्ट
पृच्यते	अपर्चि	परीपृच्यते	अपरीपृचिष्ट
ईड्यते	ऐडि	×	×
ईर्यते	ऐरि	×	×
ईश्यते	ऐशि	×	×
वस्यते	अवासि, अवसि	वावस्यते	अवावसिष्ट
आस्यते	आसि	×	×
ख्यायते	अख्यायि	चाख्यायते	अचाख्यायिष्ट
क्शायते	अक्शायि	चाक्शायते	अचाक्शायिष्ट

	णिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
			चिरूशासति	अचिरूशासीत्
			चिरूशासते	अचिरूशासिष्ट
ऊर्णुन्क्	ऊर्णवयति-ते	और्णुनवत्-त	ऊर्णुनूषति-ते	और्णुनूषीत्, और्णुनूषिष्ट
ष्टुंन्क्	स्तावयति-ते	अतुष्टुवत्-त	तुष्टूषति-ते	अतुष्टुषीत्, अतुष्टूषिष्ट
ब्रूंन्क्	वाचयति-ते	अवीवचत्-त	विवक्षति	अविवक्षीत्
द्विषंन्क्	द्वेषयति-ते	अदिद्विषत्-त	दिद्विक्षति-ते	अदिद्विक्षीत् अदिद्विक्षिष्ट
दुहंन्क्	दोहयति-ते	अदूदुहत्-त	दुधुक्षति-ते	अदुधुक्षीत्, अदुधुक्षिष्ट
दिहंन्क्	देहयति-ते	अदीदिहत्-त	दिधिक्षति-ते	अदिधिक्षीत् अदिधिक्षिष्ट
लिहंन्क्	लेहयति-ते	अलीलिहत्-त	लिलिक्षति-ते	अलिलिक्षीत् अलिलिक्षिष्ट
हुंक्	हावयति-ते	अजूहवत्-त	जुहूषति	अजुहूषीत्
हांक्	हापयति-ते	अजीहपत्-त	जिहासति	अजिहासीत्
भींक्	भाययति-ते	अबीभयत्-त	बिभीषति	अबिभीषीत्
पॄक्	पारयति-ते	अपीपरत्-त	पुपूर्षति	अपुपूर्षीत्
ऋंक्	अर्पयति-ते	आर्पिपत्	अरिरिषति	आरिरिषीत्
धांन्क्	धापयति-ते	अदीधपत्-त	धित्सति-ते	अधित्सीत् अधित्सिष्ट
णिजक्	नेजयति-ते	अनीनिजत्-त	निनिक्षति-ते	अनिनिक्षीत् अनिनिक्षिष्ट
विजृंक्	वेजयति-ते	अवीविजत्-त	विविक्षति	अविविक्षीत्
विष	वेषयति-ते	अवीविषत्	विविक्षति-ते	अविविक्षीत् अविविक्षिष्ट
		अथ दिवादि		
दिवुच्	देवयति-ते	अदीदिवत्-त	दिदेविषति	अदिदेविषीत्
दोंच्	दापयति-ते	अदीदपत्-त	दित्सति	अदित्सीत्
व्रीडच्	व्रीडयति-ते	अविव्रिडत्-त	विव्रीडिषति	अविव्रीडिषीत्
नृतीच्	नर्तयति-ते	अनीनृतत्-त अननर्तत्-त	निनर्तिषति निनृत्सति	अनिनर्तिषीत् अनिनृत्सीत्
कुथच्	कोथयति-ते	अचूकुथत्-त	चुकुथिषति	अचुकुथिषीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
ख्शायते	अख्शायि		
ऊर्णूयते	और्णावि, और्णुवि, और्णवि	ऊर्णोनूयते	और्णोनूयिष्ट
स्तूयते	अस्तावि	तोष्टूयते	अतोष्टूयिष्ट
उच्यते	अवाचि	वावच्यते	अवावचिष्ट
द्विष्यते	अद्वेषि	देद्विष्यते	अदेद्विषिष्ट
दुह्यते	अदोहि	दोदुह्यते	अदोदुहिष्ट
दिह्यते	अदेहि	देदिह्यते	अदेदिहिष्ट
लिह्यते	अलेहि	लेलिह्यते	अलेलिहिष्ट
हूयते	अहावि	जोहूयते	अजोहूयिष्ट
हीयते	अहायि	जेहीयते	अजेहीयिष्ट
भीयते	अभायि	बेभीयते	अबेभीयिष्ट
प्रियते	अपारि	पेप्रीयते	अपेप्रीयिष्ट
अर्यते	आरि	अरार्यते	आरारिष्ट
धीयते	अधायि	देधीयते	अदेधीयिष्ट
निज्यते	अनेजि	नेनिज्यते	अनेनिजिष्ट
विज्यते	अवेजि	वेविज्यते	अवेविजिष्ट
विष्यते	अवेषि	वेविष्यते	अवेविषिष्ट
दीव्यते	अदेवि	देदीव्यते	अदेदीविष्ट
दीयते	अदायि	देदीयते	अदेदीयिष्ट
व्रीड्यते	अव्रीडि	वेव्रीड्यते	अवेव्रीडिष्ट
नृत्यते	अनर्ति	नरीनृत्यते	अनरीनृतिष्ट
कुथ्यते	अकोथि	चोकुथ्यते	अचोकुथिष्ट

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
गुधच्	गोधयति-ते	अजूगुधत्-त	जुगुधिषति	अजुगुधिषीत्
व्यधंच्	व्याधयति-ते	अविव्यधत्-त	विव्यत्सति	अविव्यत्सीत्
क्षिपंच्	क्षेपयति-ते	अचिक्षिपत्-त	चिक्षिप्सति	अचिक्षिप्सीत्
तिमच्	तेमयति-ते	अतीतिमत्-त	तितिमिषति	अतितिमिषीत्
			तितेमिषति	अतितेमिषीत्
तीमच्	तीमयति-ते	अतीतिमत्-त	तितीमिषति	अतितीमिषीत्
ष्टिमच्	स्तेमयति-ते	अतिष्टिमत्-त	तिस्तिमिषति	अतिस्तिमिषीत्
ष्टीमच्	स्तीमयति-ते	अतिष्टिमत्-त	तिस्तीमिषति	अतिस्तीमिषीत्
षिवुच्	सेवयति-ते	असीषिवत्-त	सिसेविषति	असिसेविषीत्
			सुस्यूषति	असुस्यूषीत्
ष्ठिवुच्	ष्ठेवयति-ते	अतिष्ठिवत्-त अटिष्ठिवत्	तिष्ठेविषति	अतिष्ठेविषीत्
त्रसीच्	त्रासयति-ते	अतित्रसत्-त	तित्रसिषति	अतित्रसिषीत्
षहच्	साहयति-ते	असीषहत्-त	सिसहिषति	असिसहिषीत्
पुषंच्	पोषयति-ते	अपूपुषत्-त	पुपुक्षति	अपुपुक्षीत्
लुट	लोटयति-ते	अलूलुटत्-त	लुलुटिषति	अलुलुटिषीत्
		अलुलोटत्-त	लुलोटिषति	अलुलोटिषीत्
ष्विदांच्	स्वेदयति-ते	असिष्विदत्-त	सिष्वित्सति	असिष्वित्सीत्
क्लिदूच्	क्लेदयति-ते	चिक्लिदत्-त	चिक्लिदिषति	अचिक्लिदिषीत्
			चिक्लेदिषति	अचिक्लेदिषीत्
			चिक्लित्सति	अचिक्लित्सीत्
शुधंच्	शोधयति-ते	अशूशुधत्-त	शुशुत्सति	अशुशुत्सीत्
क्रुधंच्	क्रोधयति-ते	अचुक्रुधत्-त	चुक्रुत्सति	अचुक्रुत्सीत्
ऋधूच्	अर्धयति-ते	आर्दिधत्-त	अर्दिधिषति, ईर्त्सति	आर्दिधिषीत्, ऐर्त्सीत्
गृधुच्	गर्धयति-ते	अजगर्धत्-त अजीगृधत्-त	जिगर्धिषति	अजिगर्धिषीत्
तृपूच्	तर्पयति-ते	अतीतृपत्-त	तितर्पिषति	अतितर्पिषीत्
		अततर्पत्-त	तितृप्सति	अतितृप्सीत्
दृपूच्	दर्पयति-ते	अदीदृपत्-त	दिदर्पिषति	अदिदर्पिषीत्
		अददर्पत्-त	दिदृप्सति	अदिदृप्सीत्
कुपच्	कोपयति-ते	अचूकुपत्-त	चुकोपिषति	अचुकोपिषीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
गुध्यते	अगोधि	जोगुध्यते	अजोगुधिष्ट
विध्यते	अव्याधि	वेविध्यते	अवेविधिष्ट
क्षिप्यते	अक्षेपि	चेक्षिप्यते	अचेक्षिपिष्ट
तिम्यते	अतेमि	तेतिम्यते	अतेतिमिष्ट
तीम्यते	अतीमि	तेतीम्यते	अतेतीमिष्ट
स्तिम्यते	अस्तेमि	तेष्टिम्यते	अतेष्टिमिष्ट
स्तीम्यते	अस्तीमि	तेष्टीम्यते	अतेष्टीमिष्ट
सीव्यते	असेवि	सेषीव्यते	असेषीविष्ट
ष्ठीव्यते	अष्ठेवि	तेष्ठिव्यते	अतेष्ठिविष्ट
त्रस्यते	अत्रासि, अत्रसि	तात्रस्यते	अतात्रसिष्ट
सह्यते	असाहि, असहि	सासह्यते	असासहिष्ट
पुष्यते	अपोषि	पोपुष्यते	अपोपुषिष्ट
लुट्यते	अलोटि	लोलुट्यते	अलोलुटिष्ट
स्विद्यते	अस्वेदि	सेष्विद्यते	असेष्विदिष्ट
क्लिद्यते	अक्लेदि	चेक्लिद्यते	अचेक्लिदिष्ट
शुध्यते	अशोधि	शोशुध्यते	अशोशुधिष्ट
क्रुध्यते	अक्रोधि	चोक्रुध्यते	अचोक्रुधिष्ट
ऋध्यते	आर्धि	×	×
गृध्यते	अगर्धि	जरीगृध्यते	अजरीगृधिष्ट
तृप्यते	अतर्पि	तरीतृप्यते	अतरीतृपिष्ट
दृप्यते	अदर्पि	दरीदृप्यते	अदरीदृपिष्ट
कुप्यते	अकोपि	चोकुप्यते	अचोकुपिष्ट

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
गुपच्	गोपयति-ते	अजूगुपत्-त	जुगोपिषति	अजुगोपिषीत्
			जुगुपिषति	अजुगुपिषीत्
लुभच्	लोभयति-ते	अलूलुभत्-त	लुलोभिषति	अलुलोभिषीत्
			लुलुभिषति	अलुलुभिषीत्
क्षुभच्	क्षोभयति-ते	अचुक्षुभत्-त	चुक्षोभिषति	अचुक्षोभिषीत्
णशूच्	नाशयति	अनीनशत्	निनशिषति	अनिनशिषीत्
			निनङ्क्षति	अनिनङ्क्षीत्
भृशुच्	भर्शयति	अबीभृशत्	बिभर्शिषति	अविभर्शिषीत्
		अबभर्शत्		
कृशच्	कर्शयति-ते	अचीकृशत्-त	चिकर्शिषति	अचिकर्शिषीत्
		अचकर्शत्-त		
श्लिषंच्	श्लेषयति-ते	अशिश्लिषत्-त	शिश्लिक्षति	अशिश्लिक्षीत्
प्लुषुच्	प्लोषयति-ते	अपुप्लुषत्-त	पुप्लुषिषति	अपुप्लुषिषीत्
तृपच्	तर्षयति-ते	अतीतृषत्-त	तितर्षिषति	अतितर्षिषीत्
		अततर्षत्-त		
तुषंच्	तोषयति-ते	अतूतुषत्-त	तुतुक्षति	अतुतुक्षीत्
हृषच्	हर्षयति-ते	अजीहृषत्-त	जिहर्षिषति	अजिहर्षिषीत्
		अजहर्षत्-त		
रुषंच्	रोषयति-ते	अरूरुषत्-त	रुरोषिषति	अरुरोषिषीत्
			रुरुषिषति	अरुरुषिषीत्
असुच्	आसयति-ते	आसिसत्-त	असिसिषति	आसिसिषीत्
यसुच्	यासयति-ते	अयीयसत्-त	यियसिषति	अयियसिषीत्
तमुच्	तमयति-ते	अतीतमत्-त	तितमिषति	अतितमिषीत्
क्षमूच्	क्षमयति-ते	अचिक्षमत्-त	चिक्षमिषति	अचिक्षमिषीत्
क्लमुच्	क्लमयति-ते	अचिक्लमत्-त	चिक्लमिषति	अचिक्लमिषीत्
मदीच्	मदयति-ते	अमीमदत्-त	मिमदिषति	अमिमदिषीत्
	मादयति-ते			
द्रुहूच्	द्रोहयति-ते	अदुद्रुहत्-त	दुद्रोहिषति	अदुद्रोहिषीत्
ष्णिहूच्	स्नेहयति-ते	असिष्णिहत्-त	सिस्नेहिषति	असिस्नेहिषीत्
श्रमुच्	श्रमयति-ते	अशिश्रमत्-त	शिश्रमिषति	अशिश्रमिषीत्
भ्रमुच्	भ्रमयति	अबिभ्रमत्	बिभ्रमिषति	अबिभ्रमिषीत्

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
गुप्यते	अगोपि	जोगुप्यते	अजोगुपिष्ट
लुभ्यते	अलोभि	लोलुभ्यते	अलोलुभिष्ट
क्षुभ्यते	अक्षोभि	चोक्षुभ्यते	अचोक्षुभिष्ट
नश्यते	अनाशि	नानश्यते	अनानशिष्ट
भृश्यते	अभर्शि	बरीभृश्यते	अबरीभृशिष्ट
कृश्यते	अकर्शि	चरीकृश्यते	अचरीकृशिष्ट
श्लिष्यते	अश्लेषि	शेश्लिष्यते	अशेश्लिषिष्ट
प्लुष्यते	अप्लोषि	पोप्लुष्यते	अपोप्लुषिष्ट
तृष्यते	अतर्षि	तरीतृष्यते	अतरीतृषिष्ट
तुष्यते	अतोषि	तोतुष्यते	अतोतुषिष्ट
हृष्यते	अहर्षि	जरीहृष्यते	अजरीहृषिष्ट
रुष्यते	अरोषि	रोरुष्यते	अरोरुषिष्ट
अस्यते	आसि	×	×
यस्यते	अयासि, अयसि	यायस्यते	अयायसिष्ट
तम्यते	अतमि	तन्तम्यते	अतन्तमिष्ट
क्षम्यते	अक्षमि	चंक्षम्यते	अचंक्षमिष्ट
क्लम्यते	अक्लमि	चंक्लम्यते	अचंक्लमिष्ट
मद्यते	अमादि, अमदि	मामद्यते	अमामदिष्ट
द्रुह्यते	अद्रोहि	दोद्रुह्यते	अदोद्रुहिष्ट
स्निह्यते	अस्नेहि	सेष्णिह्यते	असेष्णिहिष्ट
श्रम्यते	अश्रमि	शंश्रम्यते	अशंश्रमिष्ट
भ्रम्यते	अभ्रमि	बंम्भ्रम्यते	अबम्भ्रमिष्ट

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
भ्रंशुच्	भ्रंशयति-ते	अबभ्रंशत्-त	बिभ्रंशिषति	अबिभ्रंशिषीत्
लुपच्	लोपयति-ते	अलूलुपत्-त	लुलोपिषति	अलुलोपिषीत्
षूङ्च्	सावयति-ते	असूषवत्-त	सुसूषते	असुसूषिष्ट
दूङ्च्	दावयति-ते	अदूदवत्-त	दुदूषते	अदुदूषिष्ट
दीङ्च्	दापयति-ते	अदीदपत्-त	दिदीषते, दिदासते	अदिदीषिष्ट अदिदासिष्ट
डीङ्च्	डाययति-ते	अडीडयत्-त	डिडीषते	अडिडीषिष्ट
पीङ्च्	पाययति-ते	अपीपयत्-त	पिपीषते	अपिपीषिष्ट
ईङ्च्	आययति-ते	आयियत्-त	ईषिषते	ऐषिषिष्ट
प्रीङ्च्	प्राययति-ते	अपिप्रयत्-त	पिप्रीषते	अपिप्रीषिष्ट
युजंङ्च्	योजयति	अयूयुजत्	युयुक्षते	अयुयुक्षिष्ट
सृजंङ्च्	सर्जयति-ते	असीसृजत्-त असीसर्जत्-त	सिसृक्षते	असिसृक्षिष्ट
पदंङ्च्	पादयति-ते	अपीपदत्-त	पित्सते	अपित्सिष्ट
विदंङ्च्	वेदयति-ते	अवीविदत्-त	विवित्सते	अविवित्सिष्ट
खिदं ङ्च्	खेदयति-ते	अचीखिदत्-त	चिखित्सते	अचिखित्सिष्ट
युधंङ्च्	योधयति	अयूयुधत्	युयुत्सते	अयुयुत्सिष्ट
मनंङ्च्	मानयति-ते	अमीमनत्-त	मिमंसते	अमिमंसिष्ट
दीपीङ्च्	दीपयति-ते	अदीदिपत्-त	दिदीपिषते	अदिदीपिषिष्ट
तपंङ्च्	तापयति-ते	अतीतपत्-त	तितप्सते	अतितप्सिष्ट
पूरीङ्च्	पूरयति-ते	अपूपुरत्-त	पुपूरिषते	अपुपूरिषिष्ट
क्लिशङ्च्	क्लेशयति-ते	अचिक्लिशत्-त	चिक्लेशिषते चिक्लिशिषते	अचिक्लेशिषिष्ट अचिक्लिशिषिष्ट
काशच्	काशयति-ते	अचकाशत्-त	चिकाशिषते	अचिकाशिषिष्ट
वाशंन्च्	वाशयति-ते	अववाशत्-त	विवाशिषते	अविवाशिष्ट
शपंन्च्	शापयति-ते	अशीशपत्-त	शिशप्सति-ते	अशिशप्सीत् अशिशप्सिष्ट
मृषन्च्	मर्षयति-ते	अमीमृषत्-त अममर्षत्-त	मिमर्षिषति-ते	अमिमर्षिषीत् अमिमर्षिषिष्ट

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
भ्रश्यते	अभ्रंशि	बाभ्रश्यते	अबाभ्रशिष्ट
लुप्यते	अलोपि	लोलुप्यते	अलोलुपिष्ट
सूयते	असावि, असवि	सोसूयते	असोसूयिष्ट
दूयते	अदावि	दोदूयते	अदोदूयिष्ट
दीयते	अदायि	देदीयते	अदेदीयिष्ट
डीयते	अडायि, अडयि	डेडीयते	अडेडीयिष्ट
पीयते	अपायि	पेपीयते	अपेपीयिष्ट
ईयते	आयि	×	×
घ्रीयते	अघ्रायि	घेघ्रीयते	अघेघ्रीयिष्ट
युज्यते	अयोजि	योयुज्यते	अयोयुजिष्ट
सृज्यते	असर्जि	सरीसृज्यते	असरीसृजिष्ट
पद्यते	अपादि	पनीपद्यते	अपनीपदिष्ट
विद्यते	अवेदि	वेविद्यते	अवेविदिष्ट
खिद्यते	अखेदि	चेखिद्यते	अचेखिदिष्ट
युध्यते	अयोधि	योयुध्यते	अयोयुधिष्ट
मन्यते	अमानि	मम्मन्यते	अमम्मनिष्ट
दीप्यते	अदीपि	देदीप्यते	अदेदीपिष्ट
तप्यते	अतापि	तातप्यते	अतातपिष्ट
पूर्यते	अपूरि	पोपूर्यते	अपोपूरिष्ट
क्लिश्यते	अक्लेशि	चेक्लिश्यते	अचेक्लिशिष्ट
काश्यते	अकाशि	चाकाश्यते	अचाकाशिष्ट
वाश्यते	अवाशि	वावश्यते	अवावाशिष्ट
शप्यते	अशापि	शाशप्यते	अशाशपिष्ट
मृष्यते	अमर्षि	मरीमृष्यते	अमरीमृषिष्ट

	णिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
णहंन्च्	नाहयति-ते	अनीनहत्-त	निनत्सति-ते	अनिनत्सीत् अनिनत्सिष्ट
		स्वादिगण		
षुंन्त्	सावयति-ते	असूषवत्-त	सुषूषति-ते	असुसूषीत्, असुसूषिष्ट
षिन्त्	सासयति-ते	असीषयत्-त	सिसीषति-ते	असिसीषीत् असिसीषिष्ट
मिन्त्	मापयति-ते	अमीमपत्-त	मित्सति, मित्सते	अमित्सीत् अमित्सिष्ट
धून्त्	धूनयति	अदूधुनत्	दुधूषति-ते	अदुधूषीत् अदुधूषिष्ट
स्तृंन्त्	स्तारयति-ते	अतिस्तरत्-त	तिस्तीर्षति-ते	अतिस्तर्षीत् अतिस्तीर्षिष्ट
वृन्त्	वारयति-ते	अवीवरत्-त	विवरिषति-ते	अविवरिषीत् अविवरिषिष्ट
हिंत्	हाययति-ते	अजीहयत्-त	जिघीषति	अजिघीषीत्
पृंत्	पारयति-ते	अपीपरत्-त	पुपूर्षति	अपुपूर्षीत्
शक्लृंत्	शाकयति-ते	अशीशकत्-त	शिक्षति, शिक्षते	अशिक्षीत् अशिक्षिष्ट
राधंत्	राधयति-ते	अरीरधत्-त	रित्सति	अरित्सीत्
साधंत्	साधयति-ते	असीसधत्-त	सिसात्सति	असिसात्सीत्
आप्लृंत्	आपयति-ते	आपिपत्-त	ईप्सति	ऐप्सीत्
तृपत्	तर्पयति-ते	अतीतृपत्-त अततर्पत्-त	तितर्पिषति	अतितर्पिषीत्
दम्भुत्	दम्भयति-ते	अददम्भत्-त	दिदम्भिषति धीप्सति, धिप्सति	अदिदम्भिषीत् अधीप्सीत् अधिप्सीत्
धिवित्	धिन्वयति-ते	अदिधिन्वत्-त	दिधिन्विषति	अदिधिन्विषीत्
ष्टिघित्	स्तेघयति-ते	अतिष्टिघत्-त	तिस्तेघिषते	अतिस्तेघिषिष्ट
अशूङ्त्	आशयति-ते	आशिशत्-त	अशिशिषते	आशिशिषिष्ट
		तुदादिगण		
तुदंन्ज्	तोदयति-ते	अतूतुदत्-त	तुतुत्सति-ते	अतुतुत्सीत् अतुतुत्सिष्ट

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
नह्यते	अनाहि	नानह्यते	अनानहिष्ट
सूयते	असावि	सोषूयते	असोषूयिष्ट
सीयते	असायि	सेषीयते	असेषीयिष्ट
मीयते	अमायि	मेमीयते	अमेमीयिष्ट
धूयते	अधावि, अधवि	दोधूयते	अदोधूयिष्ट
स्तर्यते	अस्तारि, अस्तरि	तास्तर्यते	अतास्तरिष्ट
व्रियते	अवारि	वेव्रीयते	अवेव्रीयिष्ट
हीयते	अहायि	जेहीयते	अजेहीयिष्ट
प्रियते	अपारि	पेप्रीयते	अपेप्रीयिष्ट
शक्यते	अशाकि	शाशक्यते	अशाशकिष्ट
राध्यते	अराधि	राराध्यते	अराराधिष्ट
साध्यते	असाधि	सासाध्यते	असासाधिष्ट
आप्यते	आपि	×	×
तृप्यते	अतर्पि	तरीतृप्यते	अतरीतृपिष्ट
दभ्यते	अदम्भि	दादभ्यते	अदादभिष्ट
धिन्व्यते	अधिन्वि	देधिन्व्यते	अदेधिन्विष्ट
स्तिघ्यते	अस्तेघि	तेष्टिघ्यते	अतेष्टिघिष्ट
अश्यते	आशि	अशाश्यते	आशाशिष्ट
तुद्यते	अतोदि	तोतुद्यते	अतोतुदिष्ट

	णिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
भ्रस्जंन्ज्	भ्रज्जयति-ते	अबभ्रज्जत्-त	बिभ्रज्जिषति-ते	अबिभ्रज्जिषिष्ट
	भर्जयति-ते	अबभर्जत्-त	बिभर्जिषति-ते	अबिभ्रज्जिषीत्
क्षिपंन्ज्	क्षेपयति-ते	अचिक्षिपत्-त	चिक्षिप्सति-ते	अचिक्षिप्सीत्
				अचिक्षिप्सिष्ट
दिशंन्ज्	देशयति-ते	अदीदिशत्-त	दिदिक्षति-ते	अदिदिक्षीत्
				अदिदिक्षिष्ट
कृषंन्ज्	कर्षयति-ते	अचीकृषत्-त	चिकृक्षति-ते	अचिकृक्षीत्
		अचकर्षत्-त		अचिकृक्षिष्ट
मुच्लृंन्ज्	मोचयति-ते	अमूमुचत्-त	मुमुक्षति-ते	अमुमुक्षीत्
			मोक्षति-ते	अमुमुक्षिष्ट
				अमोमोक्षीत्
				अमोमोक्षिष्ट
षिचंन्ज्	सेचयति-ते	असीषिचत्-त	सिसिक्षति-ते	असिसिक्षीत्
				असिसिक्षिष्ट
विद्लृंन्ज्	वेदयति-ते	अवीविदत्-त	विवित्सति-ते	अविवित्सीत्
				अविवित्सिष्ट
लुप्लृंन्ज्	लोपयति-ते	अलूलुपत्-त	लुलुप्सति-ते	अलुलुप्सीत्
		अलुलोपत्-त		अलुलुप्सिष्ट
लिपंन्ज्	लेपयति-ते	अलीलिपत्-त	लिलिप्सति-ते	अलिलिप्सीत्
				अलिलिप्सिष्ट
कृतीज्	कर्तयति-ते	अचीकृतत्-त	चिकर्तिषति	अचिकर्तिषीत्
		अचकर्तत्-त	चिकृत्सति	अचिकृत्सीत्
मृंज्	मारयति-ते	अमीमरत्-त	मुमूर्षति	अमुमूर्षीत्
कृंज्	कारयति-ते	अचीकरत्-त	चिकरीषति	अचिकरीषीत्
गृंज्	गारयति-ते	अजीगरत्-त	जिगरीषति	अजिगरीषीत्
लिखज्	लेखयति-ते	अलीलिखत्-त	लिलेखिषति	अलिलेखिषीत्
			लिलिखिषति	अलिलिखिषीत्
व्रश्चूज्	व्रश्चयति-ते	अवव्रश्चत्-त	विव्रश्चिषति	अविव्रश्चिषीत्
			विव्रक्षति	अविव्रक्षीत्
सृजंज्	सर्जयति-ते	असीसृजत्-त	सिसृक्षति	असिसृक्षीत्
		अससर्जत्-त		

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
भृज्यते	अभर्जि	बरीभृज्यते	अबरीभृज्जिष्ट
भृज्यते	अभ्रज्जि	बरीभृज्यते	अबरीभृजिष्ट
क्षिप्यते	अक्षेपि	चेक्षिप्यते	अचेक्षिपिष्ट
दिश्यते	अदेशि	देदिश्यते	अदेदिशिष्ट
कृष्यते	अकर्षि	चरीकृष्यते	अचरीकृषिष्ट
मुच्यते	अमोचि	मोमुच्यते	अमोमुचिष्ट
सिच्यते	असेचि	सेसिच्यते	असेसिचिष्ट
विद्यते	अवेदि	वेविद्यते	अवेविदिष्ट
लुप्यते	अलोपि	लोलुप्यते	अलोलुपिष्ट
लिप्यते	अलेपि	लेलिप्यते	अलेलिपिष्ट
कृत्यते	अकर्ति	चरीकृत्यते	अचरीकृतिष्ट
म्रियते	अमारि	मेम्रीयते	अमेम्रीयिष्ट
कीर्यते	अकारि, अकरी, अकरि	चेकीर्यते	अचेकीरिष्ट
गीर्यते	अगारि, अगालि	जेगिल्यते	अजेगिलिष्ट
लिख्यते	अलेखि	लेलिख्यते	अलेलिखिष्ट
वृश्च्यते	अव्रश्चि	वरीवृश्च्यते	अवरीवृश्चिष्ट
सृज्यते	असर्जि	सरीसृज्यते	असरीसृजिष्ट

	णिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
मस्ज्रोंज्	मज्जयति-ते	अममज्जत्-त	मिमङ्क्षति	अमिमङ्क्षीत्
घुणज्	घोणयति-ते	अजूघुणत्-त	जुघोणिषति	अजुघोणिषीत्
			जुघुणिषति	अजुघुणिषीत्
णुदंज्	नोदयति-ते	अनूनुदत्-त	नुनुत्सति	अनुनुत्सीत्
विधज्	वेधयति-ते	अवीविधत्-त	विवेधिषति	अविवेधिषीत्
			विविधिषति	अविविधिषीत्
छुपंज्	छोपयति-ते	अचुच्छुपत्-त	चुच्छुप्सति	अचुच्छुप्सीत्
गुफज्	गोफयति-ते	अजूगुफत्-त	जुगोफिषति	अजुगोफिषीत्
			जुगुफिषति	अजुगुफिषीत्
गुम्फज्	गुम्फयति-ते	अजुगुम्फत्-त	जुगुम्फिषति	अजुगुम्फिषीत्
शुभज्	शोभयति-ते	अशूशुभत्-त	शुशोभिषति	अशुशोभिषीत्
शुम्भज्	शुम्भयति-ते	अशुशुम्भत्-त	शुशुम्भिषति	अशुशुम्भिषीत्
स्फलज्	स्फालयति-ते	अपिस्फलत्-त	पिस्फलिषति	अपिस्फलिषीत्
स्पृशंज्	स्पर्शयति-ते	अपिस्पृशत्-त	पिस्पृक्षति	अपिस्पृक्षीत्
		अपस्पर्शत्-त		
विशंज्	वेशयति-ते	अवीविशत्-त	विविक्षति	अविविक्षीत्
मृशंज्	मर्शयति-ते	अमीमृशत्-त	मिमृक्षति	अमिमृक्षीत्
		अममर्शत्-त		
इषज्	एषयति-ते	ऐषिषत्-त	एषिषिषति	ऐषिषिषीत्
मिषज्	मेषयति-ते	अमीमिषत्-त	मिमिषिषति	अमिमिषिषीत्
			मिमेषिषति	अमिमेषिषीत्
कुटज्	कोटयति-ते	अचूकुटत्-त	चुकुटिषति	अचुकुटिषीत्
णूज्	नावयति-ते	अनूनवत्-त	नुनूषति	अनुनूषीत्
धूज्	धावयति-ते	अदूधुवत्-त	दुधूषति-ते	अदुधूषीत्, अदुधूषिष्ट
कुचज्	कोचयति-ते	अचूकुचत्-त	चुकुचिषति	अचुकुचिषीत्
त्रुटज्	त्रोटयति-ते	अतुत्रुटत्-त	तुत्रुटिषति	अतुत्रुटिषीत्
स्फुटज्	स्फोटयति-ते	अपुस्फुटत्-त	पुस्फुटिषति	अपुस्फुटिषीत्
लुठज्	लोठयति-ते	अलूलुठत्-त	लुलुठिषति	अलुलुठिषीत्
पृङ्ज्	पारयति-ते	अपीपरत्-त	पिपरिषते	अपिपरिषिष्ट
लस्जीङ्ज्	लज्जयति-ते	अललज्जत्-त	लिलज्जिषते	अलिलज्जिषिष्ट

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
मज्ज्यते	अमज्जि	मामज्ज्यते	अमामज्जिष्ट
घुण्यते	अघोणि	जोघुण्यते	अजोघुणिष्ट
नुद्यते	अनोदि	नोनुद्यते	अनोनुदिष्ट
विध्यते	अवेधि	वेविध्यते	अवेविधिष्ट
छुप्यते	अछोपि	चोच्छुप्यते	अचोच्छुपिष्ट
गुफ्यते	अगोफि	जोगुफ्यते	अजोगुफिष्ट
गुफ्यते	अगुम्फि	जोगुफ्यते	अजोगुफिष्ट
शुभ्यते	अशोभि	शोशुभ्यते	अशोशुभिष्ट
शुभ्यते	अशुम्भि	शोशुभ्यते	अशोशुभिष्ट
स्फल्यते	अस्फालि, अस्फलि	पास्फल्यते	अपास्फलिष्ट
स्पृश्यते	अस्पर्शि	परीस्पृश्यते	अपरीस्पृशिष्ट
विश्यते	अवेशि	वेविश्यते	अवेविशिष्ट
मृश्यते	अमर्शि	मरीमृश्यते	अमरीमृशिष्ट
इष्यते	ऐषि	×	×
मिष्यते	अमेषि	मेमिष्यते	अमेमिषिष्ट
कुट्यते	अकोटि	चोकुट्यते	अचोकुटिष्ट
नूयते	अनावि, अनुवि	नोनूयते	अनोनूयिष्ट
धूयते	अधावि, अधुवि	दोधूयते	अदोधूयिष्ट
कुच्यते	अकोचि, अकुचि	चोकुच्यते	अचोकुचिष्ट
त्रुट्यते	अत्रोटि, अत्रुटि	तोत्रुट्यते	अतोत्रुटिष्ट
स्फुट्यते	अस्फोटि, अस्फुटि	पोस्फुट्यते	अपोस्फुटिष्ट
लुठ्यते	अलोठि, अलुठि	लोलुठ्यते	अलोलुठिष्ट
पार्यते	अपारि	पेप्रीयते	अपेप्रीयिष्ट
लज्ज्यते	अलज्जि	लालज्ज्यते	अलालज्जिष्ट

रुधादिगण

	णिजन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
विजीर्	वेजयति-ते	अवीविजत्-त	विविजिषते	अविविजिषिष्ट
रुधृंन्र्	रोधयति-ते	अरूरुधत्-त	रुरुत्सति-ते	अरुरुत्सीत् अरुरुत्सिष्ट
रिचृंन्र्	रेचयति-ते	अरीरिचत्-त	रिरिक्षति-ते	अरिरिक्षीत् अरिरिक्षिष्ट
विचृंन्र्	वेचयति-ते	अवीविचत्-त	विविक्षति-ते	अविविक्षीत् अविविक्षिष्ट
युजृंन्र्	योजयति-ते	अयूयुजत्-त	युयुक्षति-ते	अयुयुक्षीत्, अयुयुक्षिष्ट
भिदृंन्र्	भेदयति-ते	अबीभिदत्-त	बिभित्सति-ते	अबिभित्सीत् अबिभित्सिष्ट
छिदृंन्र्	छेदयति-ते	अचिच्छिदत्-त	चिच्छित्सति-ते	अचिच्छित्सीत् अचिच्छित्सिष्ट
पृचीर्	पर्चयति-ते	अपीपृचत्-त अपपर्चत्-त	पिपर्चिषति	अपिपर्चिषीत्
भञ्जोंर्	भञ्जयति-ते	अबभञ्जत्-त	बिभङ्क्षति	अविभङ्क्षीत्
भुजंर्	भोजयति-ते	अबूभुजत्-त	बुभुक्षति-ते	अबुभुक्षीत्, अबुभुक्षिष्ट
अञ्जूर्	अञ्जयति-ते	आञ्जिजत्-त	अञ्जिजिषति	आञ्जिजिषीत्
शिष्लृंर्	शेषयति-ते	अशीशिषत्-त	शिशिक्षति	अशिशिक्षीत्
पिष्लृंर्	पेषयति-ते	अपीपिषत्-त	पिपिक्षति	अपिपिक्षीत्
हिंसि	हिंसयति-ते	अजिहिंसत्-त	जिहिंसिषति	अजिहिंसिषीत्
तृहर्	तर्हयति-ते	अतीतृहत्-त अततर्हत्-त	तितर्हिषति	अतितर्हिषीत्
खिदंङ्र्	खेदयति-ते	अचीखिदत्-त	चिखित्सते	अचिखित्सिष्ट
विदंङ्र्	वेदयति-ते	अवीविदत्-त	विवित्सते	अविवित्सिष्ट
इन्धीङ्र्	इन्धयति-ते	ऐन्दिधत्-त	इन्दिधिषते	ऐन्दिधिषिष्ट

तनादिगण

तनुनव्	तानयति-ते	अतीतनत्-त	तितनिषति-ते तितांसति-ते तितंसति-ते	अतितनिषीत् अतितनिषिष्ट
षणुनव्	सानयति-ते	असीषणत्-त	सिसनिषति-ते	असिसनिषीत् असिसनिषिष्ट

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	ज्ञादि	तिबादि	ज्ञादि
विज्यते	अवेजि, अविजि	वेविज्यते	अवेविजिष्ट
रुध्यते	अरोधि	रोरुध्यते	अरोरुधिष्ट
रिच्यते	अरेचि	रेरिच्यते	अरेरिचिष्ट
विच्यते	अवेचि	वेविच्यते	अवेविचिष्ट
युज्यते	अयोजि	योयुज्यते	अयोयुजिष्ट
भिद्यते	अभेदि	बेभिद्यते	अबेभिदिष्ट
छिद्यते	अच्छेदि	चेच्छिद्यते	अचेच्छिदिष्ट
पृच्यते	अर्पि	परीपृच्यते	अपरीपृचिष्ट
भज्यते	अभाजि, अभञ्जि	बम्भज्यते	अबम्भजिष्ट
भुज्यते	अभोजि	बोभुज्यते	अबोभुजिष्ट
शिष्यते	अशेषि	शेशिष्यते	अशेशिषिष्ट
अज्यते	आञ्जि	×	×
पिष्यते	अपेषि	पेपिष्यते	अपेपिषिष्ट
हिंस्यते	अहिंसि	जेहिंस्यते	अजेहिंसिष्ट
तृह्यते	अतर्हि	तरीतृह्यते	अतरीतृहिष्ट
खिद्यते	अखेदि	चेखिद्यते	अचेखेदिष्ट
विद्यते	अवेदि	वेविद्यते	अवेवेदिष्ट
इध्यते	ऐन्धि	×	×
तन्यते	अतनि, अतानि	तंतन्यते	अतंतनिष्ट
सन्यते	असनि, असानि	सासयते	असासायिष्ट

	णिन्नन्त		सन्नन्त	
धातु	तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
वनुङ्व्	वानयति-ते	अवीवनत्-त	विवनिषते	अविवनिषिष्ट
		क्र्यादिगण		
प्रीन्श्	प्रीणयति-ते	अपिप्रीणत्-त	पिप्रीषति-ते	अपिप्रीषीत् अपिप्रीषिष्ट
मीन्श्	मापयति-ते	अमीमपत्-त	मित्सति-ते	अमित्सीत्, अमित्सिष्ट
ग्रहन्श्	ग्राहयति-ते	अजिग्रहत्-त	जिघृक्षति-ते	अजिघृक्षीत् अजिघृक्षिष्ट
पून्श्	पावयति-ते	अपीपवत्-त	पुपूषति-ते	अपुपूषीत्, अपुपूषिष्ट
स्तृन्श्	स्तारयति-ते	अतिस्तरत्-त	तिस्तरिषति-ते	अतिस्तरिषीत् अतिस्तरिषिष्ट
			तिस्तरीषति-ते	अतिस्तरीषीत् अतिस्तरीषिष्ट
			तिस्तीर्षति-ते	अतिस्तीर्षीत् अतिस्तीर्षिष्ट
लून्श्	लावयति-ते	अलीलवत्-त	लुलूषति-ते	अलुलूषीत्, अलुलूषिष्ट
		चुरादिगण		
चुरण्	चोरयति-ते	अचूचुरत्-त	चुचोरयिषति-ते	अचुचोरयिषीत् अचुचोरयिषिष्ट
पूजण्	पूजयति-ते	अपूपुजत्-त	पुपूजयिषति-ते	अपुपूजयिषीत् अपुपूजयिषिष्ट
तडण्	ताडयति-ते	अतीतडत्-त	तिताडयिषति-ते	अतिताडयिषीत् अतिताडयिषिष्ट
कथण्	कथयति-ते	अचकथत्-त	चिकथयिषति-ते	अचिकथयिषीत् अचिकथयिषिष्ट
शीलण्	शीलयति-ते	अशिशीलत्-त	शिशीलयिषति-ते	अशिशीलयिषीत् अशिशीलयिषिष्ट
महण्	महयति-ते	अममहत्-त	मिमहयिषति-ते	अमिमहयिषीत् अमिमहयिषिष्ट
स्पृहण्	स्पृहयति-ते	अपस्पृहत्-त	पिस्पृहयिषति-ते	अपिस्पृहयिषीत् अपिस्पृहयिषिष्ट

भावकर्म		यङन्त	
तिबादि	द्यादि	तिबादि	द्यादि
वन्यते	अवनि, अवानि	वंवन्यते	अवंवनिष्ट
प्रीयते	अप्रायि	पेप्रीयते	अपेप्रीयिष्ट
मीयते	अमायि	मेमीयते	अमेमीयिष्ट
गृह्यते	अग्राहि, अग्रहि	जरीगृह्यते	अजरीगृहिष्ट
पूयते	अपावि, अपवि	पोपूयते	अपोपूयिष्ट
स्तीर्यते	अस्तारि, अस्तरि	तेस्तीर्यते	अतेस्तीरिष्ट
लूयते	अलावि, अलवि	लोलूयते	अलोलूयिष्ट
चोर्यते	अचोरि	चोचुर्यते	अचोचुरिष्ट
पूज्यते	अपूजि, अपूजयि	पोपूज्यते	अपोपूजिष्ट
ताड्यते	अताडि, अताडयि	तातड्यते	अतातडिष्ट
कथ्यते	अकथि, अकथयि	चाकथ्यते	अचाकथिष्ट
शील्यते	अशीलि, अशीलयि	शेशील्यते	अशेशीलिष्ट
मह्यते	अमहि, अमहयि	मामह्यते	अमामहिष्ट
स्पृह्यते	अस्पृहि, अस्पृहयि	पस्पृह्यते	अपस्पृहिष्ट

यङ्लुगन्त

धातु	तिबादि	द्यादि
भू	बोभोति, बोभवीति	अबोभोत्
पां	पापेति, पापाति	अपापात्
घ्रा	जाघ्रेति, जाघ्राति	अजाघ्रासीत्
ध्मां	दाध्मेति, दाध्माति	अदाध्मासीत्
म्नां	माम्नेति, माम्नाति	अमाम्नासीत्
दांम्	दादेति, दादाति	अदादात्
सुं	सोसवीति, सोसोति	असोसावीत्
सृं	सरिसरीति, सरिसर्ति	असरिसारीत्
तॄ	तार्तर्ति	अतातारीत्
धेंट्	दाधेति, दाधाति	अदाधात्
ध्यैं	दाध्येति, दाध्याति	अदाध्यासीत्
गैं	जागेति, जागाति	अजागासीत्
लघि	लालङ्घीति, लालङ्घि	अलालङ्घीत्
शुच	शोशुचीति, शोशोक्ति	अशोशोचीत्
लुञ्च	लोलुञ्चीति, लोलुङ्क्ति	अलोलुञ्चीत्
वञ्चु	वनीवञ्चीति, वनीवङ्क्ति	अवनीवञ्चीत्
वाछि	वावञ्छीति, वावांष्टि	अवावाञ्छीत्
व्रज	वाव्रजीति, वाव्रक्ति	अवाव्राजीत्
तर्ज	तातर्जीति, तार्क्ति	अतातर्जीत्
गर्ज	जागर्जीति, जागर्क्ति	अजागर्जीत्
त्यजं	तात्यजीति, तात्यक्ति	अतात्याजीत्, अतात्यजीत्
षञ्जं	सासञ्जीति, सासङ्क्ति	असासञ्जीत्
कटे	चाकटीति, चाकट्टि	अचाकटीत्, अचाकाटीत्
शट	शाशटीति, शाशट्टि	अशाशटीत्, अशाशाटीत्
खिट्	चेखेट्टि, चेखिटीति	अचेखेटीत्
णट	नानटीति, नानट्टि	अनानाटीत्, अनानटीत्
लुट	लोलुटीति, लोलोट्टि	अलोलोटीत्
स्फुट	पोस्फुटीति, पोस्फोट्टि	अपोस्फोटीत्
पठ	पापठीति, पापट्टि	अपापाठीत्, अपापठीत्
हठ	जाहठीति, जाहट्टि	अजाहाठीत्, अजाहठीत्
क्रीड्	चेक्रीडीति, चेक्रीट्टि	अचेक्रीडीत्
लड	लालडीति, लालट्टि	अलालाडीत्, अलालडीत्
रण	रंरणीति, रंरण्टि	अरंराणीत्, अरंरणीत्

धातु	तिबादि	द्यादि
भण	बम्भणीति, बम्भण्टि	अबम्भाणीत्, अबम्भणीत्
कण	चंकणीति, चङ्कण्टि	अचङ्काणीत्, अचङ्कणीत्
क्वण्	चङ्क्वणीति, चङ्क्वण्टि	अचङ्क्वाणीत्, अचङ्क्वणीत्
चिती	चेचेत्ति, चेचितीति	अचेचेतीत्
श्च्युतृ	चोश्च्योत्ति, चोश्च्युतीति	अचोश्च्योतीत्
खादृ	चाखादीति, चाखात्ति	अचाखादीत्
गद	जागदीति, जागत्ति	अजागादीत्, अजागदीत्
णिदि	नेनिन्दीति, नेनिन्ति	अनेनिन्दीत्
नदि	नानन्दीति, नानन्ति	अनानन्दीत्
क्रदि	चाक्रन्दीति, चाक्रन्ति	अचाक्रन्दीत्
स्कन्दृं	चनीस्कन्दीति, चनीस्कन्ति	अचनीस्कन्दीत्
षिधु	सेषेद्धि, सेषिधीति	असेषेधीत्
ध्वन	दन्ध्वनीति, दन्ध्वन्ति	अदन्ध्वानीत्, अदन्ध्वनीत्
स्वन	संस्वनीति, संस्वन्ति	असंस्वानीत्, असंस्वनीत्
गुपू	जोगोप्ति, जोगुपीति	अजोगोपीत्
तपं	तातपीति, तातप्ति	अतातापीत्, अतातपीत्
धूप	दोधूपीति, दोधूप्ति	अदोधूपीत्
लप	लालपीति, लालप्ति	अलालापीत्, अलालपीत्
जल्प	जाजल्पीति, जाजल्प्ति	अजाजल्पीत्
जप	जञ्जपीति, जञ्जप्ति	अजञ्जापीत्, अजञ्जपीत्
सृप्लृं	सरिसृपीति, सरिसर्प्ति	असरिसर्पीत्
चुप	चोचुपीति, चोचोप्ति	अचोचोपीत्
चुबि	चोचुम्बीति, चोचुम्प्ति	अचोचुम्बीत्
जिमु	जेजिमीति, जेजेन्ति	अजेजेमीत्
क्रमु	चंक्रमीति, चंक्रन्ति	अचंक्रमीत्
यमुं	यंयमीति, यंयन्ति	अयंयसीत्
चर	चञ्चुरीति, चञ्चूर्ति	अचञ्चुरीत्
दल	दादलीति, दादल्ति	अदादालीत्
मील	मेमीलीति, मेमील्ति	अमेमीलीत्
मूल	मोमूलीति, मोमूल्ति	अमोमूलीत्
फल	पम्फुलीति, पम्फुल्ति	अपम्फुलीत्
फुल्लं	पोफुल्लीति, पोफुल्लिति	अपोफुल्लीत्
वेला	वेवेलीति, वेवेल्ति	अवेवेलीत्
खेला	चेखेलीति, चेखेल्ति	अचेखेलीत्

धातु	तिबादि	ह्यादि
स्खल	चास्खलीति, चास्खल्ति	अचास्खलीत्
गल	जागलीति, जागल्ति	अजागालीत्
चर्व	चाचर्वीति, चाचर्ति	अचाचर्वीत्
गर्व	जागर्वीति, जागर्ति	अजागर्वीत्
जीव	जेजीवीति, जेज्यौति	अजेजीवीत्
घुष्	जोघुषीति, जोघोष्टि	अजोघोषीत्
कृष	चरीकृषीति, चरीक्रष्टि	अचरीकर्षीत्
भष	बाभषीति, बाभष्टि	अबाभाषीत्, अबाभषीत्
त्विष	वेविषीति, वेवेष्टि	अवेवेषीत्
मृषण्	मरीमृषीति, मरीमर्ष्टि	अमरीमर्षीत्
प्लुषु	पोप्लुषीति, पोप्लोष्टि	अपोप्लोषीत्
घृषु	जरिघृषीति, जरिघर्ष्टि	अजरिघर्षीत्
पुष	पोपुषीति, पोपोष्टि	अपोपोषीत्
भूष	बोभूषीति, बोभूष्टि	अबोभूषीत्
रस	रारसीति, रारस्ति	अरारासीत्, अरारसीत्
लस	लालसीति, लालस्ति	अलालासीत्, अलालसीत्
हसे	जाहसीति, जाहस्ति	अजाहासीत्, अजाहसीत्
शंसु	शाशंसीति, शाशंस्ति	अशाशंसीत्
दहं	दन्दहीति, दन्दग्धि	अदन्दहीत्
रक्ष	रारक्षीति, रारष्टि	अरारक्षीत्
तक्षू	तातक्षीति, तातष्टि	अतातक्षीत्
काक्षि	चाकाङ्क्षीति, चाकाङ्क्टि	अचाकाङ्क्षीत्
ष्मिंङ्	सेष्मयीति, सेष्मेति	असेष्मायीत्
डीङ्	डेडयीति, डेडेति	अडेडायीत्
कुङ्	चोकवीति, चोकोति	अचोकावीत्
मेङ्	मामेति, मामाति	अमामासीत्
देङ्	दादेति, दादाति	अदादात्
लोकृङ्	लोलोकीति, लोलोक्ति	अलोलोकीत्
रेकृङ्	रेरेकीति, रेरेक्ति	अरेरेकीत्
शकिङ्	शाशङ्कीति, शाशङ्क्ति	अशाशङ्कीत्
चकङ्	चाचकीति, चाचक्ति	अचाचाकीत्, अचाचकीत्
ढौकृङ्	डोढौकीति, डोढौक्ति	अडोढौकीत्
त्रौकृङ्	तोत्रौकीति, तोत्रौक्ति	अतोत्रौकीत्

धातु	तिबादि	ह्यादि
टीकृङ्	टेटीकीति, टेटीक्ति	अटेटीकीत्
लघिङ्	लालङ्घीति, लालङ्ग्धि	अलालङ्घीत्
श्लाघृङ्	शाश्लाघीति, शाश्लाक्ति	अशाश्लाघीत्
तिजङ्	तेतेक्ति, तेतिजीति	अतेतेजीत्
पिडि	पेपिण्डीति, पेपिण्ट्टि	अपेपिण्डीत्
खडि	चाखण्डीति, चाखण्ट्टि	अचाखण्डीत्
भडिङ्	बाभण्डीति, बाभण्टि	अबाभण्डीत्
हेडृङ्	जेहेडीति, जेहेट्टि	अजेहेडीत्
हिडि	जेहिण्डीति, जेहिण्टि	अजेहिण्डीत्
घृण्	जोघुणीति, जोघोण्टि	अजोघोणीत्
पणङ्	पंपणीति, पंपण्टि	अपंपाणीत्, अपंपणीत्
यतीङ्	यायतीति, यायत्ति	अयायातीत्, अयायतीत्
नाथृङ्	नानाथीति, नानत्ति	अनानाथीत्
वदिङ्	वावन्दीति, वावन्ति	अवावन्दीत्
मुदङ्	मोमोत्ति, मोमुदीति	अमोमोदीत्
ददङ्	दाददीति, दादत्ति	अदादादीत्, अदाददीत्
स्वदङ्	सास्वदीति, सास्वत्ति	असास्वादीत्, असास्वदीत्
कूर्द	चोकूर्दीति, चोकूर्त्ति	अचोकूर्दीत्
ह्लाद	जाह्लादीति, जाह्लात्ति	अजाह्लादीत्
पर्दङ्	पापर्दीति, पापर्त्ति	अपापर्दीत्
स्पर्धङ्	पास्पर्धीति, पास्पर्द्धि	अपास्पर्धीत्
बाधृङ्	बाबधीति, बाबद्धि	अबाबाधीत्
दधङ्	दादधीति, दादद्धि	अदादाधीत्, अदादधीत्
बधि	बाबधीति, बावद्धि	अबाबाधीत्, अबाबधीत्
वेपृङ्	वेवेपीति, वेवेप्ति	अवेवेपीत्
कपिङ्	चाकम्पीति, चाकम्प्ति	अचाकम्पीत्
त्रपूषङ्	तात्रपीति, तात्रप्ति	अतात्रापीत्, अतात्रपीत्
गुपङ्	जोगोप्ति, जोगुपीति	अजोगोपीत्
लबिङ्	लालम्बीति, लालम्प्ति	अलालम्बीत्
कबृङ्	चाकबीति, चाकप्ति	अचाकाबीत्, अचाकबीत्
लभि	लालम्भीति, लालम्ब्धि	अलालम्भीत्
ष्टुभि	तास्तम्भीति, तास्तम्ब्धि	अतास्तम्भीत्
जृभिङ्	जरीजृम्भीति, जरीजृम्ब्धि	अजरीजृम्भीत्

धातु	तिबादि	द्यादि
क्षमूषङ्	चंक्षमीति, चंक्षन्ति	अचंक्षमीत्
दयङ्	दादयीति, दादति	अदादयीत्
प्यायीङ्	पेपयीति, पेपेति	अपेपायीत्
तायृङ्	तातायीति, तातति	अतातायीत्
वलङ्	वावलीति, वावल्ति	अवावालीत्
कलङ्	चाकलीति, चाकल्ति	अचाकालीत्
षेवृङ्	सेषेवीति, सेषयोति	असेषेवीत्
काशृङ्	चाकाशीति, चाकाष्टि	अचाकाशीत्
भाषङ्	बाभाषीति, बाभाष्टि	अबाभाषीत्
हेषृङ्	जेहेषीति, जेहेष्टि	अजेहेषीत्
कासृङ्	चाकासीति, चाकास्ति	अचाकासीत्
गर्हङ्	जागर्हीति, जागर्ढि	अजागर्हीत्
द्राहङ्	दाद्राहीति, दाद्राढि	अदाद्राहीत्
गाहूङ्	जागाहीति, जागाढि	अजागाहीत्
धुक्ष	दोधुक्षीति, दोधुष्टि	अदोधुक्षीत्
शिक्षङ्	शेशिक्षीति, शेशिष्टि	अशेशिक्षीत्
भिक्षङ्	बेभिक्षीति, बेभिष्टि	अबेभिक्षीत्
दीक्षङ्	देदीक्षीति, देदीष्टि	अदेदीक्षीत्
श्रिन्	शेश्रयीति, शेश्रेति	अशेश्रायीत्
हृन्	जरीहरीति, जरीहर्ति	अजरीहारीत्
भृन्	बरीभरीति, बरीभर्ति	अबरीभारीत्
धृन्	दरीधरीति, दरीधर्ति	अदरीधारीत्
कृन्	चरीकरीति, चरीकर्ति	अचरीकारीत्
याचून्	यायाचीति, यायाक्ति	अयायाचीत्
पचंषन्	पापचीति, पापक्ति	अपापाचीत्, अपापचीत्
भजंन्	बाभजीति, बाभक्ति	अबाभाजीत्, अबाभजीत्
बुधून्	बोबुधीति, बोबोद्धि	अबोबोधीत्
दांनन्	दादानीति, दादान्ति	अदादानीत्
शपंन्	शाशपीति, शाशप्ति	अशाशापीत्, अशाशपीत्
धावुन्	दाधावीति, दाधौति	अदाधावीत्
लषन्	लालषीति, लालष्टि	अलालाषीत्, अलालषीत्
चषन्	चाचषीति, चाचष्टि	अचाचाषीत्, अचाचषीत्
भ्लक्षन्	बाभ्लक्षीति, बाभ्लष्टि	अबाभ्लक्षीत्

धातु	तिबादि	द्यादि
द्युतङ्	देद्युतीति, देद्योत्ति	अदेद्योतीत्
रुचङ्	रोरुचीति, रोरोक्ति	अरोरोचीत्
शुभ	शोशुभीति, शोशोब्धि	अशोशोभीत्
स्तम्भङ्	सास्तम्भीति, सास्तम्ब्धि	असास्तम्भीत्
भ्रंशङ्	बनीभ्रंशीति, बनीभ्रंष्टि	अबनीभ्रंशीत्
स्रंसुङ्	सनीस्रंसीति, सनीस्रंस्ति	असनीस्रंसीत्
ध्वंसुङ्	दनीध्वंसीति, दनीध्वंस्ति	अदनीध्वंसीत्
स्यन्दूङ्	सास्यन्दीति, सास्यन्ति	असास्यन्दीत्
वृधुङ्	वरीवृधीति, वरीवर्धि	अवरीवर्धीत्
कुच	चोकुचीति, चोकोक्ति	अचोकोचीत्
पत्लृं	पनीपतीति, पनीपत्ति	अपनीपातीत्, अपनीपतीत्
षद्लृं	सासदीति, सासत्ति	असासादीत्, असासदीत्
बुध	बोबुधीति, बोबोद्धि	अबोबोधीत्
वमु	वंवमीति, वंवन्ति	अवंवमीत्
भ्रमु	बम्भ्रमीति, बम्भ्रन्ति	अबम्भ्रमीत्
क्षर	चाक्षरीति, चाक्षर्ति	अचाक्षारीत्
चल	चाचलीति, चाचल्ति	अचाचालीत्
शल	शाशलीति, शाशल्ति	अशाशालीत्
क्रुशं	चोक्रुशीति, चोक्रोष्टि	अचोक्रोशीत्
कस	चनीकसीति, चनीकस्ति	अचनीकासीत्, अचनीकसीत्
यजंन्	यायजीति, यायष्टि	अयायाजीत्, अयायजीत्
वपंन्	वावपीति, वावप्ति	अवावापीत्, अवावपीत्
वहंन्	वावहीति, वावोढि	अवावहीत्
वद	वावदीति, वावत्ति	अवावादीत्
वसं	वावसीति, वावस्ति	अवावासीत्, अवावसीत्
प्रथषङ्	पाप्रथीति, पाप्रत्ति	अपाप्राथीत्, अपाप्रथीत्
क्रदि	चाक्रन्दीति, चाक्रन्ति	अचाक्रन्दीत्
लगे	लालगीति, लालक्ति	अलालागीत्, अलालगीत्
ष्ठगे	तास्थगीति, तास्थक्ति	अतास्थागीत्, अतास्थगीत्
मदी	मामदीति, मामत्ति	अमामादीत्, अमामदीत्
प्सांक्	पाप्सेति, पाप्साति	अपाप्सासीत्
भांक्	बाभेति, बाभाति	अबाभासीत्
यांक्	यायेति, यायाति	अयायासीत्

धातु	तिबादि	द्यादि
द्रांक्	दाद्रेति, दाद्राति	अदाद्रासीत्
रांक्	रारेति, रारांति	अरारासीत्
दांपक्	दादेति, दादाति	अदादासीत्
ख्यांक्	चाख्येति, चाख्याति	अचाख्यासीत्
मांक्	मामेति, मामाति	अमामासीत्
षुंक्	सोषवीति, सोषोति	असोषावीत्
तुंक्	तोतवीति, तोतोति	अतोतावीत्
णुक्	नोनवीति, नोनोति	अनोनावीत्
क्ष्णुक्	चोक्ष्णवीति, चोक्ष्णोति	अचोक्ष्णावीत्
स्नुक्	सोस्नवीति, सोस्नोति	असोस्नावीत्
क्षु	चोक्षवीति, चोक्षोति	अचोक्षावीत्
कुंक्	चोकवीति, चोकोति	अचोकावीत्
रुदृक्	रोरुदीति, रोरोत्ति	अरोरोदीत्
श्वसक्	शाश्वसीति, शाश्वस्ति	अशाश्वासीत्, अशाश्वसीत्
जक्षक्	जाजक्षीति, जाजष्टि	अजाजक्षीत्
वचंक्	वावचीति, वावक्ति	अवावाचीत्, अवावचीत्
मृजूक्	मरीमृजीति, मरीमार्जीति	अमरीमार्जीत्
विदक्	वेविदीति, वेवेत्ति	अवेवेदीत्
हनंक्	जेघ्नयीति, जेघ्नेति	अजेघ्नायीत्
वशक्	वावशीति, वावष्टि	अवावाशीत्, अवावशीत्
शीङ्क्	शेशयीति, शेशेति	अशेशायीत्
हृनुङ्क्	जोहृनवीति, जोहृनोति	अजोहृनावीत्
षूङ्क्	सोषवीति, सोषोति	असोषावीत्
पृचीङ्क्	परीपृचीति, परीपर्क्ति	अपरीपर्चीत्
वसिक्	वावसीति, वावस्ति	अवावासीत्, अवावसीत्
चक्षङ्क्	चाख्येति, चाख्याति	अचाख्यासीत्
ऊर्णुन्क्	ऊर्णोनवीति, ऊर्णोनोति	और्णोनावीत्, और्णोनुवीत्
ष्टुन्क्	तोष्टवीति, तोष्टोति	अतोष्टावीत्
ब्रूंन्क्	वावचीति, वावक्ति	अवावाचीत्, अवावचीत्
द्विषंन्क्	देद्विषीति, देद्वेष्टि	अदेद्वेषीत्
दुहंन्क्	दोदुहीति, दोदोग्धि	अदोदोहीत्
दिहंन्क्	देदिहीति, देदेग्धि	अदेदेहीत्
लिहंन्क्	लेलिहीति, लेलेढि	अलेलेहीत्
हुंक्	जोहवीति, जोहोति	अजोहवीत्

धातु	तिबादि	द्यादि
हांक्	जहेति, जहाति	अजहासीत्
पॄक्	परीपरीति, परीपर्ति	अपरीपारीत्
ऋंक्	अरियरीति, अरियर्ति	आरियारीत्
धांन्क्	दाधेति, दाधाति	अदाधात्
णिजक्	नेनिजीति, नेनेक्ति	अनेनेजीत्
विजृंक्	वेविजीति, वेवेक्ति	अवेवेजीत्
विष	वेविषीति, वेवेष्टि	अवेवेषीत्
दिवुच्	देदिवीति, देद्योति	अदेदेवीत्
दोंच्	दादेति, दादाति	अदादात्
व्रीडच्	वेव्रीडीति, वेव्रीट्टि	अवेव्रीडीत्
नृतीच्	नरीनृतीति, नरीनर्त्ति	अनरीनर्तीत्
कुथच्	चोकोत्ति, चोकुथीति	अचोकोथीत्
गुधच्	जोगोद्धि, जोगुधीति	अजोगोधीत्
व्यधंच्	वेवेद्धि, वेविधीति	अवेवेधीत्
क्षिपंच्	चेक्षेप्ति, चेक्षिपीति	अचेक्षेपीत्
तिमच्	तेतेन्ति, तेतिमीति	अतेतेमीत्
तीमच्	तेतीमीति, तेतीन्ति	अतेतीमीत्
ष्टिमच्	तेष्टिमीति, तेष्टेन्ति	अतेष्टेमीत्
ष्टीमच्	तेष्टीमीति, तेष्टीन्ति	अतेष्टीमीत्
षिवुच्	सेषिवीति, सेष्योति	असेषेवीत्
ष्ठिवुच्	तेष्ठिवीति, तेष्ठ्योति	अतेष्ठेवीत्
त्रसीच्	तात्रसीति, तात्रस्ति	अतात्रासीत्, अतात्रसीत्
षहच्	सासहीति, सासोढि	असासहीत्
पुषंच्	पोपोष्टि, पोपुषीति	अपोपोषीत्
लुटच्	लोलुटीति, लोलोट्टि	अलोलोटीत्
ष्विदांच्	सेष्वेत्ति, सेष्विदीति	असेष्वेदीत्
क्लिदूच्	चेक्लेत्ति, चेक्लिदीति	अचेक्लेदीत्
शुधंच्	शोशोद्धि, शोशुधीति	अशोशोधीत्
क्रुधंच्	चोक्रोद्धि, चोक्रुधीति	अचोक्रुधीत्
गृधूच्	जरीगर्द्धि, जरीगृधीति	अजरीगर्धीत्
तृपूच्	तरीत्रप्ति, तरीतर्प्ति	अतरीतर्पीत्
दृपूच्	दरीद्रप्ति, दरीदर्प्ति	अदरीदर्पीत्
कुपच्	चोकोप्ति, चोकुपीति	अचोकोपीत्
लुभच्	लोलोब्धि, लोलुभीति	अलोलोभीत्

धातु	तिबादि	द्यादि
क्षुभच्	चोक्षुभीति, चोक्षोब्धि	अचोक्षोभीत्
णशूच्	नानशीति, नानंष्टि	अनानाशीत्, अनानशीत्
भृशुच्	बरीभर्ष्टि, बरीभृशीति	अबरीभर्शीत्
कृशच्	चरीकर्ष्टि, चरीकृशीति	अचरीकर्शीत्
श्लिषंच्	शेश्लेष्टि, शेश्लिषीति	अशेश्लेषीत्
प्लुषुच्	पोप्लोष्टि, पोप्लुषीति	अपोप्लोषीत्
तृषच्	तरीतर्ष्टि, तरीतृषीति	अतरीतर्षीत्
तुषं	तोतोष्टि, तोतुषीति	अतोतोषीत्
हृषच्	जरीहर्ष्टि, जरीहृषीति	अजरीहर्षीत्
रुषंच्	रोरोष्टि, रोरुषीति	अरोरोषीत्
यसुच्	यायसीति, यायस्ति	अयायासीत्, अयायसीत्
तमुच्	तंतमीति, तंतन्ति	अतंतमीत्
क्षमूच्	चंक्षमीति, चंक्षन्ति	अचंक्षमीत्
क्लमुच्	चंक्लमीति, चंक्लन्ति	अचंक्लमीत्
मदीच्	मामदीति, मामत्ति	अमामादीत्, अमामदीत्
द्रुहच्	दोद्रुहीति, दोद्रोढि	अदोद्रोहीत्
ष्णहच्	सेष्णेति, सेष्णेग्धि	असेष्णेहीत्
श्रमुच्	शंश्रमीति, शंश्रन्ति	अशंश्रमीत्
भ्रमुच्	बम्भ्रमीति, बम्भ्रन्ति	अबम्भ्रमीत्
भृशु	बरीभर्ष्टि, बरीभृशीति	अबरीभर्शीत्
भ्रंशुच्	बाभ्रंशीति, बाभ्रंष्टि	अबाभ्रंशीत्
लुपच्	लोलोप्ति, लोलुपीति	अलोलोपीत्
षूङ्च्	सोषवीति, सोषोति	असोषावीत्
दूङ्च्	दोदवीति, दोदोति	अदोदावीत्
दीङ्च्	देदयीति, देदेति	अदेदायीत्
डीङ्च्	डेडयीति, डेडेति	अडेडायीत्
पीङ्च्	पेपयीति, पेपेति	अपेपायीत्
प्रीङ्च्	पेप्रयीति, पेप्रेति	अपेप्रायीत्
युजंङ्च्	योयुजीति, योयोक्ति	अयोयोजीत्
सृजङ्च्	सरीस्रष्टि, सरीसृजीति	असरीसर्जीत्
पदंङ्च्	पनीपदीति, पनीपत्ति	अपनीपादीत्, अपनीपदीत्
विदंङ्च्	वेविदीति, वेवेत्ति	अवेवेदीत्
खिदंङ्च्	चेखेत्ति, चेखिदीति	अचेखेदीत्
युधंङ्च्	योयोद्धि, योयुधीति	अयोयोधीत्

धातु	तिबादि	ह्यादि
मनङ्च्	मंमनीति, मंमन्ति	अमंमानीत्, अमंमनीत्
दीपीङ्च्	देदीपीति, देदीप्ति	अदेदीपीत्
तपंङ्च्	तातपीति, तातप्ति	अतातापीत्, अतातपीत्
पूरीङ्च्	पोपूरीति, पोपूर्ति	अपोपूरीत्
क्लिशङ्च्	चेक्लिशीति, चेक्लेष्टि	अचेक्लेशीत्
काशच्	चाकाशीति, चाकाष्टि	अचाकाशीत्
वाशंङ्च्	वावाशीति, वावाष्टि	अवावाशीत्
शपंन्च्	शाशपीति, शाशप्ति	अशाशापीत्, अशाशपीत्
मृषन्च्	मरीमर्ष्टि, मरीमृषीति	अमरीमर्षीत्
णहंन्च्	नानहीति, नानद्धि	अनानहीत्
षुंन्त्	सोषवीति, सोषोति	असोषावीत्
षिंन्त्	सेषयीति, सेषेति	असेषायीत्
मिंन्त्	मेमयीति, मेमेति	अमेमायीत्
धूंन्त्	दोधवीति, दोधोति	अदोधावीत्
स्तृंन्त्	तरीस्तरीति, तरीस्तर्ति	अतरीस्तारीत्
वृंन्त्	वरीवरीति, वरीवर्ति	अवरीवारीत्
हिंत्	जेघयीति, जेघेति	अजेघायीत्
पृंत्	परीपरीति, परीपर्ति	अपरीपारीत्
शक्लृंत्	शाशकीति, शाशक्ति	अशाशाकीत्, अशाशकीत्
राधंत्	रारार्धीति, रारार्द्धि	अरारार्धीत्
साधंत्	सासार्धीति, सासार्द्धि	असासार्धीत्
तृपत्	तरीतृपीति, तरीतर्प्ति	अतरीतर्पीत्
दम्भृत्	दादम्भीति, दादम्ब्धि	अदादम्भीत्
धिवित्	देधिन्वीति, देधिनोति	अदेधिन्वीत्
ष्टिधित्	तेष्टेग्धि, तेष्टिधीति	अतेष्टेधीत्
अशूङ्त्	आशीति, आष्टि	आशीत्
तुदंन्ज्	तोतोत्ति, तोतुदीति	अतोतोदीत्
भ्रस्जंन्ज्	बरीभृज्जीति, बरीभृष्टि	अबरीभृज्जीत्
क्षिपंन्ज्	चेक्षेप्ति, चेक्षिपीति	अचेक्षेपीत्
दिशंन्ज्	देदेष्टि, देदिशीति	अदेदेशीत्
कृषंन्ज्	चरीकृषीति, चरीक्रष्टि	अचरीकर्षीत्
मुचलृंन्ज्	मोमोक्ति, मोमुचीति	अमोमोचीत्
षिचंन्ज्	सेषिचीति, सेषेक्ति	असेषेचीत्
विदलृंन्ज्	वेविदीति, वेवेत्ति	अवेवेदीत्

धातु	तिबादि	द्यादि
लुप्लृंन्ज्	लोलुपीति, लोलोप्ति	अलोलोपीत्
लिपंन्ज्	लेलेप्ति, लेलिपीति	अलेलेपीत्
कृतीज्	चरीकर्ति, चरीकृतीति	अचरीकर्तीत्
मृंज्	मरीमरीति, मरीर्मर्ति	अमरीमारीत्
कृज्	चाकरीति, चाकर्ति	अचाकारीत्
गृज्	जागलीति, जागल्ति	अजागालीत्
लिखज्	लेलेक्ति, लेलेखीति	अलेलेखीत्
व्रश्चूज्	वरीवृश्चीति, वरीवृष्टि	अवरीवृश्चीत्
सृजंज्	सरीस्रष्टि, सरीसृजीति	असरीसर्जीत्
मस्जोंज्	मामज्जीति, मामङ्क्ति	अमामज्जीत्
घृणज्	जोघृणीति, जोघोण्टि	अजोघोणीत्
णुदंज्	नोनोत्ति, नोनुदीति	अनोनोदीत्
विधज्	वेवेद्धि, वेविधीति	अवेवेधीत्
छुपंज्	चोच्छोप्ति, चोच्छुपीति	अचोच्छोपीत्
गुफज्	जोगोप्ति, जोगुफीति	अजोगोफीत्
गुम्फज्	जोगुम्फीति, जोगुम्प्ति	अजोगुम्फीत्
शुभज्	शोशोब्धि, शोशुभीति	अशोशोभीत्
शुम्भज्	शोशुम्भीति, शोशुम्ब्धि	अशोशुम्भीत्
स्फलज्	पास्फलीति, पास्फल्ति	अपास्फालीत्
स्पृशंज्	परीस्पृशीति, परीस्पर्ष्टि	अपरीस्पृशीत्
विशंज्	वेवेष्टि, वेविशीति	अवेवेशीत्
मृशंज्	मरीमृशीति, मरीर्मर्ष्टि	अमरीमृशीत्
मिषज्	मेमेष्टि, मेमिषीति	अमेमेषीत्
कुटज्	चोकोट्टि, चोकुटीति	अचोकोटीत्
णूज्	नोनवीति, नोनोति	अनोनावीत्
धूज्	दोधवीति, दोधोति	अदोधावीत्
कुचज्	चोकुचीति, चोकोक्ति	अचोकोचीत्
त्रुटज्	तोत्रोट्टि, तोत्रुटीति	अतोत्रोटीत्
स्फुटज्	पोस्फुटीति, पोस्फोट्टि	अपोस्फोटीत्
लुठज्	लोलोट्टि, लोलुठीति	अलोलुठीत्
पृङ्ज्	परीपरीति, परीपर्ति	अपरीपारीत्
लस्जीङ्ज्	लालज्जीति, लालक्ति	अलालज्जीत्
विजीर्	वेविजीति, वेवेक्ति	अवेवेजीत्
रुधृंन्र्	रोरुधीति, रोरोद्धि	अरोरोधीत्

धातु	तिबादि	ह्यादि
रिचृं॑न्॒र्	रेरेक्ति, रेरिचीति	अरेरेचीत्
विचृं॑न्॒र्	वेवेक्ति, वेविचीति	अवेवेचीत्
युजृं॑न्॒र्	योयुजीति, योयोक्ति	अयोयोजीत्
भिदृं॑न्॒र्	बेभेत्ति, बेभिदीति	अबेभेदीत्
छिदृं॑न्॒र्	चेच्छेत्ति, चेच्छिदीति	अचेच्छेदीत्
पृचीर्	परीपृचीति, परीपर्क्ति	अपरीपर्चीत्
भञ्जोंर्	बाभञ्जीति, बाभङ्क्ति	अबाभञ्जीत्
भुजंर्	बोभोक्ति, बोभुञ्जीति	अबोभोजीत्
शिष्लृंर्	शेशेष्टि, शेशिषीति	अशेशेषीत्
पिष्लृंर्	पेपेष्टि, पेपिषीति	अपेपेषीत्
हिसि	जेहिंसीति, जेहिंस्ति	अजेहिंसीत्
तृहर्	तरीतर्ढि, तरीतृहीति	अतरीतर्हीत्
खिदंङ्॒र्	चेखेत्ति, चेखिदीति	अचेखेदीत्
विदंङ्॒र्	वेविदीति, वेवेत्ति	अवेवेदीत्
तनुनॅ्व्	तंतनीति, तंतन्ति	अतंतानीत्, अतंतनीत्
षणुनॅ्व्	संसनीति, संसन्ति	असंसानीत्, असंसनीत्
वनुङ्॒व्	वंवनीति, वंवन्ति	अवंवानीत्, अवंवनीत्
प्रींन्॒श्	पेप्रयीति, पेप्रेति	अपेप्रायीत्
मींन्॒श्	मेमयीति, मेमेति	अमेमायीत्
ग्रहन्॒श्	जरीगृहीति, जरीगर्ढि	अजरीगर्हीत्
पून्॒श्	पोपवीति, पोपोति	अपोपावीत्
स्तृन्॒श्	तास्तरीति, तास्तर्ति	अतास्तारीत्
लून्॒श्	लोलवीति, लोलोति	अलोलावीत्
चुरण्	चोचुरीति, चोचोर्ति	अचोचोरीत्

परिशिष्ट ४

प्रत्ययरूपावली

इस परिशिष्ट में ४०३ धातुओं के प्रत्ययों के रूप दिए गए हैं। दूसरे परिशिष्ट से पहले (पृ० २९६ से ३१९ तक) धातुओं की अकरादि अनुक्रमणिका है। उसमें इन धातुओं का क्रम तथा अर्थ दिया गया है। शतृ और क्वसु प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं से होते हैं तथा शान और कान प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओं से होते हैं। उपसर्ग के संयोग से परस्मैपदी धातु भी आत्मनेपदी बन जाती है इसलिए उसके शान और कान प्रत्यय के रूप भी चार्ट से आगे स्वतंत्र दिए गए हैं। उभयपदी धातुओं के शतृ और क्वसु प्रत्ययों के रूप चार्ट में तथा शान और कान प्रत्ययों के रूप चार्ट से आगे दिए गए हैं। क्वसु और कान प्रत्ययों के कृ, भू और अस् धातु के संयोग से तीन-तीन रूप बनते हैं। इन तीन रूपों में से कोई एक रूप देकर उसके आगे ३ लिखा है। तीन रूप इस प्रकार बनेंगे—चक्रिवान्, बभूवान्, आसिवान्। आत्मनेपद में चक्राणः, बभूवानः और आसानः रूप बनता

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
अञ्चु	अञ्चितः	आञ्चकः	अञ्चिता	अञ्चन्	आचिवान्	अञ्चितव्यम्
अञ्जूर्	अक्तः	अञ्जकः	अङ्क्ता अञ्जिता	अञ्जन्	आजिवान्	अङ्कतव्यम् अञ्जितव्यम्
अट	अटितः	आटकः	अटिता	अटन्	आटिवान्	अटितव्यम्
अद	जग्धः	आदकः	अत्ता	अदन्	आदिवान् जक्षिवान्	अत्तव्यम्
अन	अनितः	आनकः	अनिता	अनन्	आनिवान्	अनितव्यम्
अर्च	अर्चितः	अर्चकः	अर्चिता	अर्चन्	आनर्च्वान्	अर्चितव्यम्
अर्ज	अर्जितः	अर्जकः	अर्जिता	अर्जन्	आनर्ज्वान्	अर्जितव्यम्
अर्ह	अर्हितः	अर्हकः	अर्हिता	अर्हन्	आनर्ह्वान्	अर्हितव्यम्
अव	अवितः	आवकः	अविता	अवन्	आविवान्	अवितव्यम्
अशश्	आशितः	आशकः	अशिता	अश्नन्	अनाश्वान्	अशितव्यम्
अशूङ्त्	अष्टः	आशकः	अशिता अष्टा	अश्नुवानः	आनशानः	अशितव्यम्

है। क्तवतु प्रत्यय के रूप स्थानाभाव के कारण चार्ट से निकाल दिए हैं। उसके रूप के लिए क्त प्रत्यय के रूपों के आगे 'वान्' शब्द लगा दें। जैसे—गतः क्त प्रत्यय का रूप है। क्तवतु प्रत्यय का रूप होगा गतवान्। अन्तिम कोष्ठक में स्त्रीलिंग में होने वाले क्ति, ङ और अ प्रत्ययों में से जिस धातु से जो रूप बनता है वह दिया गया है। पाणिनी व्याकरण में इन प्रत्ययों की संज्ञा भिन्न है। उन-उन प्रत्ययों की संज्ञाओं को नीचे कोष्ठक में दिया जा रहा है।

णक (ण्वुल्) शान (शानच्) कान (कानच्) तव्य (तव्यत्) अनीय (अनीयर्) अनट् (ल्युट्) तुम् (तुमन्) यप् (ल्यप्) क्ति (क्तिन्)। धातु रूपादर्श, क्रियारत्नसमुच्चय और हस्तलिखित प्रतियों में भी जो रूप नहीं मिले उसके लिए ० चिन्ह दिया गया है।

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
अञ्चनीयम्	अञ्चनम्	अञ्चितुम्	अक्त्वा अञ्चित्वा	०	अक्तिः
अञ्जनीयम्	अञ्जनम्	अङ्क्तुम् अञ्जितुम्	अङ्क्त्वा, अक्त्वा अञ्जित्वा	०	अक्तिः
अटनीयम्	अटनम्	अटितुम्	अटित्वा	पर्यट्य	अटितिः
अदनीयम्	अदनम्	अत्तुम्	जग्ध्वा	प्रजग्ध्य	जग्धिः
अननीयम्	अननम्	अनितुम्	अनित्वा	प्राण्य	अनितिः
अर्चनीयम्	अर्चनम्	अर्चितुम्	अर्चित्वा	समर्च्य	अर्चा
अर्जनीयम्	अर्जनम्	अर्जितुम्	अर्जित्वा	समर्ज्य	०
अर्हणीयम्	अर्हणम्	अर्हितुम्	अर्हित्वा	०	अर्हा
अवनीयम्	अवनम्	अवितुम्	अवित्वा	उपाव्य	ऊतिः
अशनीयम्	अशनम्	अशितुम्	अशित्वा	प्राश्य	आशितिः
अशनीयम्	अशनम्	अशितुम्	अशित्वा अष्ट्वा	समश्य	अष्टिः

धातु	क्त	ण्वुल्	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
असक्	भूतः	भावकः	भविता	सन्	बभूवान्	भवितव्यम्
असुच्	अस्तः	आसकः	असिता	अस्यन्	०	असितव्यम्
आप्लृंत्	आप्तः	आपकः	आप्ता	आप्नुवन्	आपिवान्	आप्तव्यम्
आसङ्क्	आसितः	आसकः	आसिता	आसीनः	आसाञ्चक्राणः	आसितव्यम्
इं	इतः	आयकः	एता	यन्	ईयिवान्	एतव्यम्
इङ्क्	अधीतः	अध्यायकः	अध्येता	अधीयानः	अधीयिवान्	अध्येतव्यम्
इषज्	इष्टः	ऐषकः	एषिता एष्टा	इच्छन्	ईषिवान्	एषितव्यम् एष्टव्यम्
ईक्षङ्	ईक्षितः	ईक्षकः	ईक्षिता	ईक्षमाणः	ईक्षाञ्चक्राणः	ईक्षितव्यम्
ईडङ्क्	ईडितः	ईडकः	ईडिता	ईडानः	ईडाञ्चक्राणः	ईडितव्यम्
ईहङ्	ईहितः	ईहकः	ईहिता	ईहमानः	ईहाञ्चक्राणः	ईहितव्यम्
ऊहङ्	ऊहितः	ऊहकः	ऊहिता	ऊहमानः	०	ऊहितव्यम्
ऋं	ऋतः	आरकः	अर्ता	ऋच्छन्	आरिवान्	अर्तव्यम्
ऋंक्	ऋतः	आरकः	अर्ता	ऋच्छन्	आरिवान्	अर्तव्यम्
एधङ्	एधितः	एधकः	एधिता	एधमानः	०	एधितव्यम्
कथण्	कथितः	काथकः कथकः	कथयिता	कथयन्	कथयाञ्चकृवान्	३ कथयितव्यम्
कपिङ्	कम्पितः	कम्पकः	कम्पिता	कम्पमानः	०	कम्पितव्यम्
कमुङ्	कामितः कान्तः	कामकः	कमिता कामयिता	चकमानः	०	कमितव्यम् कामयितव्यम्
कस	कसितः	कासकः	कसिता	कसन्	०	कसितव्यम्
काक्षि	कांक्षितः	काङ्क्षकः	कांक्षिता	कांक्षन्	०	कांक्षितव्यम्
काशृङ्	काशितः	काशकः	काशिता	काशमानः	०	काशितव्यम्
कुचज्	कुचितः	कोचकः	कुचिता	कुचन्	चुकुच्वान्	कुचितव्यम्
कुपच्	कुपितः	कोपकः	कोपिता कुपिता	कुप्यन्	०	कोपितव्यम्
कृतीज्	कृत्तः	कर्त्तकः	कर्त्तिता	कृन्तन्	चकृत्वान्	कर्त्तितव्यम्
कृन्	कृतः	कारकः	कर्ता	कुर्वन्	चकृवान्	कर्तव्यम्
कृपूङ्	कल्पः	कल्पकः	कल्पिता कल्प्ता	कल्पमानः	०	कल्पितव्यम् कल्पतव्यम्
कृषंन्ज्	कृष्टः	कर्षकः	कर्ष्टा	कर्षन्	चकृष्वान्	कर्ष्टव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
भवनीयम्	भवनम्	भवितुम्	भूत्वा	अनुभूय	भूतिः
असनीयम्	असनम्	असितुम्	अस्त्वा	प्रास्य	अस्तिः
			असित्वा		
आपनीयम्	आपनम्	आप्तुम्	आप्त्वा	प्राप्य	आप्तिः
आसनीयम्	आसनम्	आसितुम्	आसित्वा	उपास्य	०
अयनीयम्	अयनम्	एतुम्	इत्वा	समेत्य	इतिः
अध्ययनीयम्	अध्ययनम्	अध्येतुम्	०	अधीत्य	अधीतिः
एषणीयम्	एषणम्	एषितुम्	इष्ट्वा	समिष्य	इष्टिः
		एष्टुम्	एषित्वा		
ईक्षणीयम्	ईक्षणम्	ईक्षितुम्	ईक्षित्वा	समीक्ष्य	ईक्षा
ईडनीयम्	ईडनम्	ईडितुम्	ईडित्वा	समीड्य	ईडा
ईहनीयम्	ईहनम्	ईहितुम्	ईहित्वा	समीह्य	ईहा
ऊहनीयम्	ऊहनम्	ऊहितुम्	ऊहित्वा	समूह्य	ऊहा
अरणीयम्	अरणम्	अर्तुम्	ऋत्वा	समृत्य	ऋतिः
अरणीयम्	अरणम्	अर्तुम्	ऋत्वा	समृत्य	ऋतिः
एधनीयम्	एधनम्	एधितुम्	एधित्वा	समेध्य	एधा
कथनीयम्	कथनम्	कथयितुम्	कथयित्वा	संकथ्य	कथा
कम्पनीयम्	कम्पनम्	कम्पितुम्	कम्पयित्वा	प्रकम्प्य	कम्पितिः
कमनीयम्	कमनम्	कमितुम्	कामयित्वा	सङ्काम्य	कान्तिः
		कामयितुम्	कमित्वा, कान्त्वा		
कसनीयम्	कसनम्	कसितुम्	कसित्वा	विकस्य	०
कांक्षणीयम्	कांक्षणम्	कांक्षितुम्	कांक्षित्वा	आकांक्ष्य	कांक्षा
काशनीयम्	काशनम्	काशितुम्	काशित्वा	प्रकाश्य	०
कुचनीयम्	कुचनम्	कुचितुम्	कुचित्वा	सङ्कुच्य	०
कोपनीयम्	कोपनम्	कोपितुम्	कोपित्वा	संकुप्य	०
			कुपित्वा		
कर्त्तनीयम्	कर्त्तनम्	कर्त्तितुम्	कर्त्तित्वा	प्रकृत्य	कृत्तिः
करणीयम्	करणम्	कर्तुम्	कृत्वा	प्रकृत्य	कृतिः
कल्पनीयम्	कल्पनम्	कल्पितुम्	कल्पित्वा	प्रकल्प्य	क्लृप्तिः
		कल्पतुम्	क्लृप्त्वा		
कर्षणीयम्	कर्षणम्	कर्ष्टुम्, कृष्टुम्	कृष्ट्वा	प्रकृष्य	कृष्टिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
कृ॒ज्	कीर्णः	०	करिता करीता	किरन्	चिकीर्वान्	करितव्यम् करीतव्यम्
कृ॒तण्	कीर्त्तितः	कीर्त्तकः	कीर्त्तयिता	कीर्त्तयन्	०	कीर्त्तयितव्यम्
क्रदि	क्रन्दितः	क्रन्दकः	क्रन्दिता	क्रन्दन्	०	क्रन्दितव्यम्
क्रमु	क्रान्तः	क्रामकः क्रमकः	क्रमिता	क्राम्यन् क्रामन्	चक्रन्वान्	क्रमितव्यम्
क्रीङ्	क्रीडितः	क्रीडकः	क्रीडिता	क्रीडन्	०	क्रीडितव्यम्
क्रीन्॒श्	क्रीतः	क्रायकः	क्रेता	क्रीणन्	चिक्रीवान्	क्रेतव्यम्
क्रुधंच्	क्रुद्धः	क्रोधकः	क्रोद्धा	क्रुध्यन्	०	क्रोद्धव्यम्
क्रुशं	क्रुष्टः	क्रोशकः	क्रोष्टः	क्रोशन्	०	क्रोष्टव्यम्
क्लमुच्	क्लान्तः	क्लान्तकः क्लन्तकः	क्लमिता	क्लाम्यन् क्लामन्	चक्लन्वान्	क्लमितव्यम्
क्लिशश्	क्लिष्टः	क्लेशकः	क्लेशिता क्लेष्टा	क्लिशन्	०	क्लेशितव्यम् क्लेष्टव्यम्
क्वण्	क्वणितः	क्वाणकः	क्वणिता	क्वणन्	०	क्वणितव्यम्
क्षमूच्	क्षमितः क्षान्तः	क्षामकः	क्षमिता क्षंता	क्षाम्यन्	चक्षन्वान्	क्षमितव्यम् क्षंतव्यम्
क्षलण्	क्षालितः	क्षालकः	क्षालयिता	क्षालयन्	०	क्षालयितव्यम्
क्षि	क्षीणः	क्षायकः	क्षेता	क्षयन्	०	क्षेतव्यम्
क्षिपंन्॒ज्	क्षिप्तः	क्षेपकः	क्षेप्ता	क्षिपन्	०	क्षेप्तव्यम्
क्षुद्॒ंन्॒र्	क्षुण्णः	क्षोदकः	क्षोत्ता	क्षुन्दत्	०	क्षोतव्यम्
क्षुधंच्	क्षुद्धः	क्षोधकः	क्षोद्धा	क्षुध्यन्	०	क्षोद्धव्यम्
क्षुभच्	क्षुब्धः, क्षुभितः	क्षोभकः	क्षोभिता	क्षुभ्नत्	०	क्षोभितव्यम्
खनुन्	खातः	खनकः खानकः	खनिता	खनन्	चखन्वान्	खनितव्यम्
खादृ	खादितः	खादकः	खादिता	खादन्	०	खादितव्यम्
ख्यांक्	ख्यातः	ख्यायकः	ख्याता	ख्यन्	आचक्शिवान् आचख्यिवान्	ख्यातव्यम्
गणण्	गणितः	गणकः	गणयिता	गणयन्	गणयांचकृवान्	गणयितव्यम्
गद	गदितः	गादकः	गदिता	गदन्	गेदिवान्	गदितव्यम्
गम्लृं	गतः	गामकः	गन्ता	गच्छन्	जग्मिवान् जगन्वान्	गन्तव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
करणीयम्	करणम्	करितुम्	करित्वा करीत्वा	प्रकीर्य	कीर्णिः
कीर्त्तनीयम्	कीर्त्तनम्	कीर्त्तयितुम्	कीर्त्तयित्वा	०	कीर्त्तिः
क्रन्दनीयम्	क्रन्दनम्	क्रन्दितुम्	क्रन्दित्वा	आक्रन्द्य	क्रन्दितिः
क्रमणीयम्	क्रमणम्	क्रमितुम्	क्रमित्वा क्रान्त्वा	संक्रम्य	क्रान्तिः
क्रीडनीयम्	क्रीडनम्	क्रीडितुम्	क्रीडित्वा	संक्रीड्य	क्रीडा
क्रयणीयम्	क्रयणम्	क्रेतुम्	क्रीत्वा	विक्रीय	क्रीतिः
क्रोधनीयम्	क्रोधनम्	क्रोद्धुम्	क्रुद्ध्वा	संक्रुध्य	क्रुद्धिः
क्रोशनीयम्	क्रोशनम्	क्रोष्टुम्	क्रुष्ट्वा	आक्रुश्य	क्रुष्टिः
क्लमनीयम्	क्लमनम्	क्लमितुम्	क्लान्त्वा क्लमित्वा	परिक्लम्य	क्लान्तिः
क्लेशनीयम्	क्लेशनम्	क्लेशितुम् क्लेष्टुम्	क्लेशित्वा क्लिष्ट्वा	संक्लिश्य	क्लिष्टिः
क्वणनीयम्	क्वणनम्	क्वणितुम्	क्वणित्वा	प्रक्वण्य	०
क्षमणीयम्	क्षमणम्	क्षमितुम् क्षंतुम्	क्षमित्वा क्षान्त्वा	संक्षम्य	क्षान्तिः
क्षालणीयम्	क्षालणम्	क्षालयितुम्	क्षालयित्वा	प्रक्षाल्य	०
क्षयणीयम्	क्षयणम्	क्षेतुम्	क्षित्वा	प्रक्षीय	०
क्षेपणीयम्	क्षेपणम्	क्षेप्तुम्	क्षिप्त्वा	प्रक्षिप्य	क्षिप्तिः
क्षोदनीयम्	क्षोदनम्	क्षोत्तुम्	क्षुत्त्वा	संक्षुद्य	क्षुद्दिः
क्षोधनीयम्	क्षोधनम्	क्षोद्धुम्	क्षुधित्वा	संक्षुध्य	क्षुद्धिः
क्षोभणीयम्	क्षोभनम्	क्षोभितुम्	क्षुभित्वा	संक्षुभ्य	क्षुब्धिः
खननीयम्	खननम्	खनितुम्	खात्वा खनित्वा	प्रखन्य	खातिः
खादनीयम्	खादनम्	खादितुम्	खादित्वा	संखाद्य	०
ख्यानीयम्	ख्यानम्	ख्यातुम्	ख्यात्वा	संख्याय	ख्यातिः
गणनीयम्	गणनम्	गणयितुम्	गणयित्वा	विगणय्य विगण्य	गणना
गदनीयम्	गदनम्	गदितुम्	गदित्वा	अनुगद्य	०
गमनीयम्	गमनम्	गन्तुम्	गत्वा	आगत्य	गतिः

धातु	क्त	ण्वुल्	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
गर्ज	गर्जितः	गर्जकः	गर्जिता	गर्जन्	०	गर्जितव्यम्
गर्हङ्	गर्हितः	गर्हकः	गर्हिता	गर्हमाणः	०	गर्हितव्यम्
गल	गलितः	गालकः	गलिता	गलन्	०	गलितव्यम्
गवेषण्	गवेषितः	गवेषकः	गवेषयिता	गवेषयन्	गवेषयाञ्चक्रवान्	गवेषयितव्यम्
गाहूङ्	गाढः	गाहकः	गाहिता गाढा	गाहमानः	०	गाहितव्यम्
गुजि	गुञ्जितः	गुञ्जकः	गुञ्जिता	गुञ्जन्	०	गुञ्जितव्यम्
गुपङ्	जुगुप्सितः	जुगुप्सकः	जुगुप्सिता	जुगुप्समानः	०	जुगुप्सितव्यम्
गुपू	गोपायितः	गोपायकः	गोपायिता	गोपायन्	गोपायञ्चक्रवान्	गोपायितव्यम्
	गुप्तः	गोपकः	गोपिता गोप्ता			गोपितव्यम् गोप्तव्यम्
गुम्फंज्	गुम्फितः	गुम्फकः	गुम्फिता	गुम्फन्	०	गुम्फितव्यम्
गुहून्	गूढः	गूहकः	गूहिता गोढा	गूहन्	०	गूहितव्यम् गोढव्यम्
गॄज्	गीर्णः	गारकः	गरिता गरीता	गिरन्	जिगीर्वान्	गरितव्यम्
गैं	गीतः	गायकः	गाता	गायन्	जगिवान्	गातव्यम्
ग्रन्थश्	ग्रथितः	ग्रन्थकः	ग्रन्थिता ग्रथिता	ग्रन्थन्	ग्रेथिवान् जग्रथ्वान्	ग्रन्थितव्यम्
ग्रसुङ्	ग्रस्तः	ग्रासकः	ग्रसिता	ग्रसमानः	०	ग्रसितव्यम्
ग्रहन्श्	गृहीतः	ग्राहकः	ग्रहीता	गृह्णन्	जगृह्वान्	ग्रहीतव्यम्
ग्लैं	ग्लानः	ग्लायकः	ग्लाता	ग्लायन्	०	ग्लातव्यम्
घटषङ्	घटितः	घटकः घाटकः	घटिता	घटमानः	जघटानः	घटितव्यम्
घूर्णज्	घूर्णितः	घूर्णकः	घूर्णिता	घूर्णन्	०	घूर्णितव्यम्
घृषु	घृष्टः	घर्षकः	घर्षिता	घर्षन्	०	घर्षितव्यम्
घ्रां	घ्रातः,घ्राणः	घ्रायकः	घ्राता	जिघ्रन्	०	घ्रातव्यम्
चकासृक्	चकासितः	चकासकः	चकासिता	चकासन्	चकासांचक्रुवान्	चकासितव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्त/ङ/अ
गर्जनीयम्	गर्जनम्	गर्जितुम्	गर्जित्वा	संगर्ज्य	गर्जना
गर्हणीयम्	गर्हणम्	गर्हितुम्	गर्हित्वा	०	गर्हणा
गलनीयम्	गलनम्	गलितुम्	गलित्वा	निगल्य	०
गवेषणीयम्	गवेषणम्	गवेषयितुम्	गवेषयित्वा	संगवेष्य	गवेषणा
गाहनीयम्	गाहनम्	गाहितुम् गाढुम्	गाहित्वा गाढ्वा	अवगाह्य	गाढिः
गुञ्जनीयम्	गुञ्जनम्	गुञ्जितुम्	गुञ्जित्वा	संगुञ्ज्य	गुञ्जा
जुगुप्सनीयम्	जुगुप्सनम्	जुगुप्सितुम्	जुगुप्सित्वा	संजुगुप्स्य	जुगुप्सा
गोपायनीयम्	गोपायनम्	गोपायितुम्	गोपायित्वा	संगोपाय्य	गोपाया
गोपनीयम्	गोपनम्	गोपितुम् गोप्तुम्	गोपित्वा गुप्त्वा	संगुप्य	गुप्तिः
गुम्फनीयम्	गुम्फनम्	गुम्फितुम्	गुम्फित्वा गुफित्वा	संगुफ्य	गुम्फा
गूहनीयम्	गूहनम्	गूहितुम् गोढुम्	गोहित्वा गूढ्वा	संगुह्य	गूढिः
गरणीयम्	गरणम्	गरितुम् गरीतुम्	गरित्वा गरीत्वा	उद्गीर्य	गीर्णिः
गानीयम्	गानम्	गातुम्	गीत्वा	प्रगाय	गीतिः
ग्रन्थनीयम्	ग्रन्थनम् ग्रथनम्	ग्रन्थितुम्	ग्रन्थित्वा ग्रथित्वा	संग्रथ्य	ग्रन्थना
ग्रसनीयम्	ग्रसनम्	ग्रसितुम्	ग्रसित्वा, ग्रस्त्वा	संग्रस्य	ग्रस्तिः
ग्रहणीयम्	ग्रहणम्	ग्रहीतुम्	गृहीत्वा	संगृह्य	गृहीतिः
ग्लानीयम्	ग्लानम्	ग्लातुम्	ग्लात्वा	संग्लाय	ग्लानिः
घटनीयम्	घटनम्	घटितुम्	घटित्वा	संघट्य	घटा
घूर्णनीयम्	घूर्णनम्	घूर्णितुम्	घूर्णित्वा	संघूर्ण्य	घूर्णा
घर्षणीयम्	घर्षणम्	घर्षितुम्	घर्षित्वा घृष्ट्वा	संघृष्य	घृष्टिः
घ्राणीयम्	घ्राणम्	घ्रातुम्	घ्रात्वा	आघ्राय	घ्रातिः
चकासनीयम्	चकासनम्	चकासितुम्	चकासित्वा	सञ्चकास्य	०

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
चक्षङ्क्	ख्यातः	ख्यायकः	ख्याता	चक्षाणः	०	ख्यातव्यम्
चमु	चान्तः	चमकः चामकः	चमिता	चमन् चामन्	चेमिवान्	चमितव्यम्
चर	चरितः	चारकः	चरिता	चरन्	चेरिवान्	चरितव्यम्
चर्व	चर्वितः	चर्वकः	चर्विता चर्वयिता	चर्वन् चर्वयन्	०	चर्वितव्यम्
चल	चलितः	चालकः	चलिता	चलन्	चेलिवान्	चलितव्यम्
चिन्त्	चितः	चायकः	चेता	चिन्वन्	चिचिवान् चिकिवान्	चेतव्यम्
चिति्ण्	चिन्तितः	चिन्तकः	चिन्तयिता	चिन्तयन्	०	चिन्तयितव्यम्
चिती	चित्तः	चेतकः	चेतिता	चेतन्	०	चेतितव्यम्
चुदण्	चोदितः	चोदकः	चोदयिता	चोदयन्	०	चोदयितव्यम्
चुबि	चुम्बितः	चुम्बकः	चुम्बिता चुम्बयिता	चुम्बयन्	०	चुम्बितव्यम् चुम्बयितव्यम्
चुरण्	चोरितः	चोरकः	चोरयिता	चोरयन्	चोरयां-चक्रुवान्	चोरयितव्यम्
चेष्टङ्	चेष्टितः	चेष्टकः	चेष्टिता	चेष्टमानः	०	चेष्टितव्यम्
छदण्	छादितः छन्नः	छादकः	छादयिता छदिता	छदन्	०	छादयितव्यम् छदितव्यम्
छिद्ं न्र्	छिन्नः	छेदकः	छेत्ता	छिन्दन्	चिच्छिद्वान्	छेत्तव्यम्
जनीङ्च्	जातः	जनकः	जनिता	जायमानः	जज्ञिवान्	जनितव्यम्
जप	जपितः, जप्तः	जापकः	जपिता	जपन्	जेपिवान्	जपितव्यम्
जल्प	जल्पितः	जल्पकः	जल्पिता	जल्पन्	०	जल्पितव्यम्
जागृक्	जागरितः	जागरकः	जागरिता	जाग्रन्	जजागर्वान्	जागरितव्यम्
जि	जितः	०	जेता	जयन्	जिगिवान्	जेतव्यम्
जीव	जीवितः	जीवकः	जीविता	जीवन्	जिजीवान्	जीवितव्यम्
जृभिङ्	जृम्भितः	जृम्भकः	जृम्भिता	जृम्भमाणः	०	जृम्भितव्यम्
जॄश्	जीर्णः जारितः	जारकः	जारयिता जरीता जरिता	जारयन् जॄणन्	जिजीर्वान्	जरीतव्यम् जरितव्यम् जारयितव्यम्
ज्ञांश्	ज्ञातः	ज्ञायकः	ज्ञाता	जानन्	जज्ञिवान्	ज्ञातव्यम्
ज्ञाण्	ज्ञप्तः	ज्ञपकः	ज्ञपयिता	ज्ञापयन्	०	ज्ञपयितव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
ख्यानीयम्	ख्यानम्	ख्यातुम्	ख्यात्वा	संख्याय	ख्यातिः
चमनीयम्	चमनम्	चमितुम्	चमित्वा चान्त्वा	आचम्य	चान्तिः
चरणीयम्	चरणम्	चरितुम्	चरित्वा	आचर्य	चूर्तिः
चर्वणीयम्	चर्वणम्	चर्वितुम् चर्वयितुम्	चर्वयित्वा	संचर्व्य	चर्वा
चलनीयम्	चलनम्	चलितुम्	चलित्वा	प्रचल्य	०
चयनीयम्	चयनम्	चेतुम्	चित्वा	संचित्य	चितिः
चिन्तनीयम्	चिन्तनम्	चिन्तयितुम्	चिन्तयित्वा	संचिन्त्य	चिंता
चेतनीयम्	चेतनम्	चेतितुम्	चेतित्वा	संचिन्त्य	चित्तिः
चोदनीयम्	चोदनम्	चोदयितुम्	चोदयित्वा	संचोद्य	चोदना
चुम्बनीयम्	चुम्बनम्	चुम्बितुम् चुम्बयितुम्	चुम्बयित्वा चुम्बित्वा	संचुब्य	चुम्बा ०
चोरणीयम्	चोरणम्	चोरयितुम्	चोरयित्वा	संचोर्य	०
चेष्टनीयम्	चेष्टनम्	चेष्टितुम्	चेष्टित्वा	सञ्चेष्ट्य	चेष्टा
छादनीयम्	छदनम् छादनम्	छादयितुम् छदितुम्	छादयित्वा छदित्वा	संछाद्य संछद्य	छत्तिः
छेदनीयम्	छेदनम्	छेत्तुम्	छित्वा	संछिद्य	छित्तिः
जननीयम्	जननम्	जनितुम्	जनित्वा	संजाय	जातिः
जपनीयम्	जपनम्	जपितुम्	जपित्वा,जप्त्वा	प्रजप्य	जप्तिः
जल्पनीयम्	जल्पनम्	जल्पितुम्	जल्पित्वा	संजल्प्य	जल्पा
जागरणीयम्	जागरणम्	जागरितुम्	जागरित्वा	प्रजागर्य	जागर्या
जयनीयम्	जयनम्	जेतुम्	जित्वा	विजित्य	जितिः
जीवनीयम्	जीवनम्	जीवितुम्	जीवित्वा	संजीव्य	०
जृम्भणीयम्	जृम्भनम्	जृम्भितुम्	जृम्भित्वा	संजृम्भ्य	जृम्भा
जारणीयम्	जारणम्	जारयितुम्	जरीत्वा	सञ्जार्य	जारणा
जरणीयम्	जरणम्	जरीतुम् जरितुम्	जारयित्वा जरित्वा	सञ्जीर्य	जीर्त्तिः
ज्ञानीयम्	ज्ञानम्	ज्ञातुम्	ज्ञात्वा	विज्ञाय	ज्ञातिः
ज्ञपनीयम्	ज्ञपनम्	ज्ञपयितुम्	ज्ञपयित्वा	संज्ञप्य	ज्ञप्तिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
ज्यांश्	जीनः	ज्यायकः	ज्याता	जिनन्	जिजीवान्	ज्यातव्यम्
ज्वर	ज्वरितः	ज्वारकः	ज्वरिता	ज्वरन्	०	ज्वरितव्यम्
ज्वल	ज्वलितः	ज्वालकः	ज्वलिता	ज्वलन्	जज्वल्वान्	ज्वलितव्यम्
टकिण्	टङ्कितः	टङ्ककः	टङ्किता	टङ्कयन्	०	टङ्कयितव्यम्
डीङ्	डयितः, डीनः	डायकः	डयिता	डयमानः	०	डयितव्यम्
ढौकृङ्	ढौकितः	ढौककः	ढौकिता	ढौकमानः	०	ढौकितव्यम्
णट	नटितः	नाटकः	नटिता	नटन्	नेटिवान्	नटितव्यम्
णद	नदितः	नादकः	नदिता	नदन्	नेदिवान्	नदितव्यम्
णम	नतः	नामकः	नन्ता	नमन्	नेमिवान्	नन्तव्यम्
णशूच्	नष्टः	नाशकः	नशिता	नश्यन्	नेशिवान्	नशितव्यम्
			नंष्टा			नंष्टव्यम्
			नङ्ग्धा			नङ्ग्धव्यम्
णहंन्च्	नद्धः	नाहकः	नद्धा	नह्यन्	नेहिवान्	नद्धव्यम्
णिजक्	निक्तः	नेजकः	नेक्ता	नेनिजन्	०	नेक्तव्यम्
णिदि	निन्दितः	निन्दकः	निन्दिता	निन्दन्	०	निन्दितव्यम्
णीन्	नीतः	नायकः	नेता	नयन्	०	नेतव्यम्
णुक्	नुतः	नावकः	नविता	नुवन्	नुनुवान्	नवितव्यम्
			नोता			नोतव्यम्
णुदंज्	नुन्नः, नुत्तः	नोदकः	नोत्ता	नुदन्	नुनुद्वान्	नोत्तव्यम्
णूज्	नूतः	नौकः	नुविता	नुवन्	नुनूवान्	नुवितव्यम्
तसि	तंसितः	तंसकः	तंसिता	तंसन्	०	तंसितव्यम्
तक्षू	तष्टः	तक्षकः	तक्षिता	तक्षन्	०	तक्षितव्यम्
तनुन्व्	ततः	तानकः	तनिता	तन्वन्	तेनिवान्	तनितव्यम्
तपं	तप्तः	तापकः	तप्ता	तपन्	तेपिवान्	तप्तव्यम्
तमुच्	तान्तः	तमकः	तमिता	ताम्यन्	०	तमितव्यम्
तर्कण्	तर्कितः	तर्ककः	तर्कयिता	तर्कयन्	०	तर्कयितव्यम्
तर्जङ्ण्	तर्जितः	तर्जकः	तर्जयिता	तर्जयन्	०	तर्जितव्यम्
			तर्जिता			तर्जयितव्यम्
तिजङ्	तेजितः	तेजकः	तेजयिता	तेजयन्	०	तेजयितव्यम्
तुदंन्ज्	तुन्नः	तोदकः	तोत्ता	तुदन्	तुतुद्वान्	तोत्तव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
ज्यानीयम्	ज्यानम्	ज्यातुम्	जीत्वा	संज्याय	ज्यानिः
ज्वरणीयम्	ज्वरणम्	ज्वरितुम्	ज्वरित्वा	संज्वर्य	ज्वरा
ज्वलनीयम्	ज्वलनम्	ज्वलितुम्	ज्वलित्वा	प्रज्वल्य	०
टङ्कनीयम्	टङ्कनम्	टङ्कयितुम्	टङ्कयित्वा	उट्टङ्क्य	टङ्का
डयनीयम्	डयनम्	डयितुम्	डयित्वा	संडीय	०
ढौकनीयम्	ढौकनम्	ढौकितुम्	ढौकित्वा	संढौक्य	ढौका
नटनीयम्	नटनम्	नटितुम्	नटित्वा	सन्नट्य	०
नदनीयम्	नदनम्	नदितुम्	नदित्वा	सन्नद्य	०
नमनीयम्	नमनम्	नन्तुम्	नत्वा	प्रणम्य	नतिः
नशनीयम्	नशनम्	नशितुम्	नशित्वा	विनश्य	नग्धः
		नंष्टम्	न(नं)ष्ट्वा		नष्टिः
		नङ्ग्धुम्	नङ्ग्ध्वा		
नहनीयम्	नहनम्	नद्धुम्	नद्ध्वा	सन्नह्य	नद्धिः
नेजनीयम्	नेजनम्	निक्त्वा	नेक्तुम्	विनिज्य	निक्तिः
निन्दनीयम्	निन्दनम्	निन्दितुम्	निन्दित्वा	सन्निद्य	निन्दा
नयनीयम्	नयनम्	नेतुम्	नीत्वा	आनीय	नीतिः
नवनीयम्	नवनम्	नवितुम्	नवित्वा	सन्नुत्य	नुतिः
		नोतुम्	नुत्वा		
नोदनीयम्	नोदनम्	नोत्तुम्	नुत्त्वा	प्रणुद्य	नुत्तिः
नुवनीयम्	नुवनम्	नुवितुम्	नुवित्वा	प्रणूय	नूतिः
तंसनीयम्	तंसनम्	तंसितुम्	तंसित्वा	अवतंस्य	तंसा
तक्षणीयम्	तक्षणम्	तक्षितुम्	तक्षित्वा	संतक्ष्य	तष्टिः
			तष्ट्वा		
तननीयम्	तननम्	तनितुम्	तनित्वा, तत्वा	वितत्य	ततिः
तपनीयम्	तपनम्	तप्तुम्	तप्त्वा	संतप्य	तप्तिः
तमनीयम्	तमनम्	तमितुम्	तमित्वा	संतम्य	तान्तिः
			तान्त्वा		
तर्कणीयम्	तर्कणम्	तर्कयितुम्	तर्कयित्वा	संतर्क्य	तर्कणा
तर्जनीयम्	तर्जनम्	तर्जयितुम्	तर्जयित्वा	संतर्ज्य	तर्जना, तर्जा
		तर्जितुम्	तर्जित्वा		
तेजनीयम्	तेजनम्	तेजयितुम्	तेजयित्वा	संतेज्य	तेजना
तोदनीयम्	तोदनम्	तोत्तुम्	तुत्त्वा	संतुद्य	तुत्तिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
तुषंच्	तुष्टः	तोषकः	तोष्टा	तुष्यन्	०	तोष्टव्यम्
तृपूच्	तृप्तः	तर्पकः	तर्पिता	तृप्यन्	ततृप्वान्	तर्पितव्यम्
			तर्प्ता, त्रप्ता			तर्प्तव्यम्
						त्रप्तव्यम्
तॄ	तीर्णः	तारकः	तरिता	तरन्	तितीर्वान्	तरितव्यम्
त्यजं	त्यक्तः	त्याजकः	त्यक्ता	त्यजन्	तत्यज्वान्	त्यक्तव्यम्
त्रपूषङ्	त्रप्तः	त्रापकः	त्रपिता	त्रपमाणः	०	त्रपितव्यम्
			त्रप्ता			त्रप्तव्यम्
त्रसीच्	त्रस्तः	त्रासकः	त्रसिता	त्रसन्	त्रेसिवान्	त्रसितव्यम्
					तत्रस्वान्	
त्रुटज्	त्रुटितः	त्रोटकः	त्रुटिता	त्रुटन्	तुत्रुट्वान्	त्रुटितव्यम्
त्रैङ्	त्रातः, त्राणः	त्रायकः	त्राता	त्रायमाणः	तत्राणः	त्रातव्यम्
त्वरषङ्	त्वरितः, तूर्णः	त्वारकः	त्वरिता	त्वरमाणः	तत्वराणः	त्वरितव्यम्
दंश	दष्टः	दशकः	दंष्टा	दशन्	०	दंष्टव्यम्
दण्डण्	दण्डितः	दण्डकः	दण्डयिता	दण्डयन्	०	दण्डयितव्यम्
दमुच्	दान्तः	दमकः	दमिता	दाम्यन्	देमिवान्	दमितव्यम्
दम्भुत्	दब्धः	दम्भकः	दम्भिता	दभ्नवन्	देभिवान्	दम्भितव्यम्
दयङ्	दयितः	दायकः	दयिता	दयमानः	०	दयितव्यम्
दल	दलितः	दालकः	दलिता	दलन्	०	दलितव्यम्
दहं	दग्धः	दाहकः	दग्धा	दहन्	देहिवान्	दग्धव्यम्
दानंक्	दत्तः	दायकः	दाता	ददत्	ददिवान्	दातव्यम्
दिवुच्	द्यूतः, द्यूनः	देवकः	देविता	दीव्यन्	दिदिवान्	देवितव्यम्
दिशंन्ज्	दिष्टः	देशकः	देष्टा	दिशन्	दिदिश्वान्	देष्टव्यम्
दिहंन्क्	दिग्धः	देहकः	देग्धा	दिहन्	दिदिह्वान्	देग्धव्यम्
दीक्षङ्	दीक्षितः	दीक्षकः	दीक्षिता	दीक्षमाणः	०	दीक्षितव्यम्
दीपीङ्च्	दीप्तः	दीपकः	दीपिता	दीप्यमानः	दिदीपानः	दीपितव्यम्
दुंत्	दूनः	दावकः	दविता	दुन्वन्	दुदुवान्	दवितव्यम्
			दोता			दोतव्यम्
दुषंच्	दुष्टः	दोषकः	दोष्टा	दुष्यन्	दुदुष्वान्	दोष्टव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
तोषणीयम्	तोषणम्	तोष्टुम्	तुष्ट्वा	संतुष्य	तुष्टिः
तर्पणीयम्	तर्पणम्	तर्पितुम् त्रप्तुम्, तर्प्तुम्	त्रप्त्वा, तृप्त्वा तर्पित्वा	प्रतृप्य	तृप्तिः
तरणीयम्	तरणम्	तरितुम् तरीतुम्	तीर्त्वा	उत्तीर्य	०
त्यजनीयम्	त्यजनम्	त्यक्तुम्	त्यक्त्वा	परित्यज्य	त्यक्तिः
त्रपणीयम्	त्रपणम्	त्रपितुम् त्रप्तुम्	त्रपित्वा त्रप्त्वा	संत्रप्य	त्रपा
त्रसनीयम्	त्रसनम्	त्रसितुम्	त्रसित्वा	संत्रस्य	त्रस्तिः
त्रुटनीयम्	त्रुटनम्	त्रुटितुम्	त्रुटित्वा	संत्रुट्य	त्रुटिः
त्राणीयम्	त्राणम्	त्रातुम्	त्रात्वा	परित्राय	त्रातिः
त्वरणीयम्	त्वरणम्	त्वरितुम्	त्वरित्वा	संत्वर्य	त्वरा
दंशनीयम्	दंशनम्	दष्टुम्	दष्ट्वा	संदश्य	दष्टिः
दण्डनीयम्	दण्डनम्	दण्डयितुम्	दण्डयित्वा	संदण्ड्य	दण्डना
दमनीयम्	दमनम्	दमितुम्	दान्त्वा दमित्वा	संदम्य	दान्तिः
दम्भनीयम्	दम्भनम्	दम्भितुम्	दम्भित्वा दब्ध्वा	संदभ्य	दब्धिः
दयनीयम्	दयनम्	दयितुम्	दयित्वा	संदय्य	दया
दलनीयम्	दलनम्	दलितुम्	दलित्वा	संदल्य	०
दहनीयम्	दहनम्	दग्धुम्	दग्ध्वा	संदह्य	दग्धिः
दानीयम्	दानम्	दातुम्	दत्त्वा	आदाय	दत्तिः
देवनीयम्	देवनम्	देवितुम्	देवित्वा, द्यूत्वा	संदिव्य	द्यूतिः
देशनीयम्	देशनम्	देष्टुम्	दिष्ट्वा	उपदिश्य	दिष्टिः
देहनीयम्	देहनम्	देग्धुम्	दिग्ध्वा	उपदिहय	दिग्धिः
दीक्षणीयम्	दीक्षणम्	दीक्षितुम्	दीक्षित्वा	संदीक्ष्य	दीक्षा
दीपनीयम्	दीपनम्	दीपितुम्	दीपित्वा	संदीप्य	दीप्तिः
दवनीयम्	दवनम्	दवितुम् दोतुम्	दवित्वा दुत्वा	सन्दूय	०
दोषणीयम्	दोषणम्	दोष्टुम्	दुष्ट्वा	सन्दुष्य	दुष्टिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
दुहंन्क्	दुग्धः	दोहकः	दोग्धा	दुहन्	दुदुह्वान्	दोग्धव्यम्
दूङ्च्	दूनः	०	दविता	दूयमानः	दुदुवानः	दवितव्यम्
दृङ्ज्	दृतः	दारकः	दर्त्ता	द्रियमाणः	ददराणः	दर्तव्यम्
दृशं	दृष्टः	दर्शकः	द्रष्टा	पश्यन्	ददृशिवान् ददृश्वान्	द्रष्टव्यम्
दोंच्	दितः	०	दाता	द्यन्	ददिवान्	दातव्यम्
द्युतङ्	द्योतितः	द्योतकः	द्योतिता	द्योतमानः	दिद्युतानः	द्योतितव्यम्
द्रुहूच्	द्रुग्धः, द्रूढः	द्रोहकः	द्रोग्धा द्रोढा द्रोहिता	द्रुह्यन्	०	द्रोढव्यम् द्रोहितव्यम् द्रोग्धव्यम्
द्विषंन्क्	द्विष्टः	द्वेषकः	द्वेष्टा	द्विषन्	०	द्वेष्टव्यम्
धांन्क्	हितः	धायकः	धाता	दधत्	दधिवान्	धातव्यम्
धावुन्	धावितः	धावकः	धाविता	धावन्	०	धावितव्यम्
धूज्	धूतः	धौकः	धुविता	धुवन्	दुधूवान्	धुवितव्यम्
धून्त्	धूतः	धावकः	धविता धोता	धुन्वन्	०	धोतव्यम् धवितव्यम्
धूप	धूपायितः धूपितः	धूपायकः धूपकः	धूपायिता धूपिता	धूपायन् धूपयन्	दुधूष्वान्	धूपायनीयम् धूपनीयम्
धृंङ्ज्	धृतः	धारकः	धर्ता	धरन्	दधृवान्	धर्त्तव्यम्
धेंट्	धातः	धायकः	धाता	धयन्	०	धातव्यम्
ध्मां	ध्मातः	ध्मायकः	ध्माता	धमन्	०	ध्मातव्यम्
ध्यैं	ध्यातः	ध्यायकः	ध्याता	ध्यायन्	दध्यिवान्	ध्यातव्यम्
ध्वन	ध्वनितः	ध्वानकः	ध्वनिता	ध्वनन्	०	ध्वनितव्यम्
ध्वंसुङ्	ध्वस्तः	ध्वंसकः	ध्वंसिता	ध्वंसमानः	दध्वसानः	ध्वंसितव्यम्
नदि	नन्दितः	नन्दकः	नन्दिता	नन्दन्	०	नन्दितव्यम्
नृतीच्	नृत्तः	नर्त्तकः	नर्त्तिता	नृत्यन्	ननृत्वान्	नर्त्तितव्यम्
पचंषन्	पक्वः	पाचकः	पक्ता	पचन्	पेचिवान्	पक्तव्यम्
पठ	पठितः	पाठकः	पठिता	पठन्	पेठिवान्	पठितव्यम्
पणङ्	पणायितः पणितः	पणायकः पाणकः	पणायिता पणिता	पणायन्	०	पणायितव्यम् पणितव्यम्
पत्लृं	पतितः	पातकः	पतिता	पतन्	पेतिवान्	पतितव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्त/ङ/अ
दोहनीयम्	दोहनम्	दोग्धुम्	दुग्ध्वा	सन्दुह्य	दुग्धिः
दूनीयम्	दूनम्	दवितुम्	दूत्वा	संदूय	दूतिः
दरणीयम्	दरणम्	दर्तुम्	दृत्वा	आदृत्य	आदृतिः
दर्शनीयम्	दर्शनम्	द्रष्टुम्	दृष्ट्वा	संदृश्य	दृष्टिः
दानीयम्	दानम्	दातुम्	दित्वा	संदाय	दितिः
द्योतनीयम्	द्योतनम्	द्योतितुम्	द्योतित्वा	विद्युत्य	द्युतिः
द्रोहणीयम्	द्रोहणम्	द्रोहितुम्	द्रुग्ध्वा, द्रूढ्वा	सन्द्रुह्य	द्रुग्धिः
		द्रोग्धुम्	द्रु (द्रो) हित्वा		द्रूढिः
द्वेषणीयम्	द्वेषणम्	द्वेष्टुम्	द्विष्ट्वा	प्रद्विष्य	द्विष्टिः
धानीयम्	धानम्	धातुम्	हित्वा	विधाय	हितिः
धावनीयम्	धावनम्	धावितुम्	धावित्वा	प्रधाव्य	धौतिः
धुवनीयम्	धुवनम्	धुवितुम्	धूत्वा	विधूय	०
धवनीयम्	धवनम्	धवितुम्	धवित्वा	सन्धूय	धूतिः
		धोतुम्	धूत्वा		
धूपायनीयम्	धूपायनम्	धूपायितुम्	०	०	धूपाया
धूपनीयम्	धूपनम्	धूपितुम्			
धरणीयम्	धरणम्	धर्त्तुम्	धृत्वा	आधृत्य	धृतिः
धानीयम्	धानम्	धातुम्	धित्वा	सन्धाय	धितिः
ध्मानीयम्	ध्मानम्	ध्मातुम्	ध्मात्वा	आध्माय	ध्मातिः
ध्यानीयम्	ध्यानम्	ध्यातुम्	ध्यात्वा	संध्याय	ध्यातिः
ध्वननीयम्	ध्वननम्	ध्वनितुम्	ध्वनित्वा	सन्ध्वन्य	ध्वनिः
ध्वंसनीयम्	ध्वंसनम्	ध्वंसितुम्	ध्वंसित्वा	प्रध्वस्य	ध्वस्तिः
			ध्वस्त्वा		
नन्दनीयम्	नन्दनम्	नन्दितुम्	नन्दित्वा	सन्नद्य	नन्दा
नर्त्तनीयम्	नर्त्तनम्	नर्त्तितुम्	नर्त्तित्वा	प्रनृत्य	नृत्तिः
पचनीयम्	पचनम्	पक्तुम्	पक्त्वा	संपच्य	पक्तिः
पठनीयम्	पठनम्	पठितुम्	पठित्वा	संपठ्य	पठितिः
पणायनीयम्	पणायनम्	पणायितुम्	पणायित्वा	संपणाय्य	पणाया
पणयनीयम्	पणयनम्	पणितुम्	पणित्वा	सम्पण्य	०
पतनीयम्	पतनम्	पतितुम्	पतित्वा	निपत्य	०

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
पदंङ्च्	पन्नः	पादकः	पत्ता	पद्यमानः	पेदानः	पत्तव्यम्
पलण्	पालितः	पालकः	पालयिता	पालयन्	०	पालयितव्यम्
पां	पीतः	पायकः	पाता	पिबन्	पपिवान्	पातव्यम्
पांक्	पातः	पायकः	पाता	पान्	०	पातव्यम्
पिष्लृंर्	पिष्टः	पेषकः	पेष्टा	पिंषन्	पिपिष्वान्	पेष्टव्यम्
पीङ्च्	पीतः	०	पेता	पीयमानः	पिप्यानः	पेतव्यम्
पीडण्	पीडितः	पीडकः	पीडयिता	पीडयन्	०	पीडयितव्यम्
पुषश्	पुष्टः	पोषकः	पोषिता	पुष्णन्	पुपुष्वान्	पोषितव्यम्
पुषंच्	पुष्टः	पोषकः	पोष्टा	पुष्यन्	०	पोष्टव्यम्
पुष्पच्	पुष्पितः	०	पुष्पिता	पुष्प्यन्	०	पुष्पितव्यम्
पून्श्	पूतः	पावकः	पविता	पुनन्	पुपूवान्	पवितव्यतम्
पूङ्	पूतः, पवितः	पावकः	पविता	पवमानः	०	पवितव्यम्
पूजण्	पूजितः	पूजकः	पूजयिता	पूजयन्	०	पूजयितव्यम्
पूरण्	पूर्णः, पूरितः	पूरकः	पूरयिता	पूरयन्	०	पूरयितव्यम्
पूरीङ्च्	पूर्णः, पूर्त्तः	पूरकः	पूरिता	पूर्यमाणः	पुपूराणः	पूरितव्यम्
पृंक्	पूर्त्तः, पृतः	पारकः	परि(री)ता पर्त्ता	पिपुरन् पिप्रन्	पपृवान्	परि(री)तव्यम् पर्त्तव्यम्
पृचीर्	पृक्तः	०	पर्चिता	पृचन्	०	पर्चितव्यम्
पृ॒श्	पूर्तः	०	परि(री)ता	पृणन्	पपृवान्	परि(री)तव्यम्
प्यायीङ्	प्यानः	प्यायकः	प्यायिता	प्यायमानः	०	प्यायितव्यम्
प्रच्छंज्	पृष्टः	प्रच्छकः	प्रष्टा	पृच्छन्	पपृच्छवान्	प्रष्टव्यम्
प्रथषङ्	प्रथितः	प्राथकः	प्रथिता	प्रथमानः	पप्रथानः	प्रथितव्यम्
प्रींन्श्	प्रीतः	०	प्रेता	प्रीणन्	पिप्रीवान्	प्रेतव्यम्
प्रीङ्च्	प्रीतः	०	प्रेता	प्रीयमाणः	पिप्रियाणः	प्रेतव्यम्
प्लुंङ्	प्लवितः	प्लावकः	प्लविता	प्लवमाणः	०	प्लवितव्यम्
प्लुषु	प्लुष्टः	प्लोषकः	प्लोषिता	प्लोषन्	०	प्लोषितव्यम्
फुल्ल	फुल्लितः	फुल्लकः	फुल्लिता	फुल्लन्	०	फुल्लितव्यम्
बन्धंश्	बद्धः	बन्धकः	बन्द्धा	बध्नन्	बेधिवान्	बन्धव्यम्
बाधृङ्	बाधितः	बाधकः	बाधिता	बाधमानः	०	बाधितव्यम्
बुधंङ्च्	बुद्धः	बोधकः	बोद्धा	बुध्यमानः	बुबुधानः	बोद्धव्यम्
ब्रूंनक्	उक्तः	वाचकः	वक्ता	ब्रुवन्	ऊचिवान्	वक्तव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्त/ङ/अ
पदनीयम्	पदनम्	पत्तुम्	पत्त्वा	विपद्य	पत्तिः
पालनीयम्	पालनम्	पालयितुम्	पालयित्वा	सम्पाल्य	पालना
पानीयम्	पानम्	पातुम्	पीत्वा	आपाय	पीतिः
पानीयम्	पानम्	पातुम्	पीत्वा	आपाय	पातिः
पेषणीयम्	पेषणम्	पेष्टुम्	पिष्ट्वा	संपिष्य	पिष्टिः
पयनीयम्	पयनम्	पेतुम्	पीत्वा	निपीय	०
पीडनीयम्	पीडनम्	पीडयितुम्	पीडयित्वा	संपीड्य	पीडा
पोषणीयम्	पोषणम्	पोषितुम्	पोषित्वा	संपुष्य	पुष्टिः
पोषणीयम्	पोषणम्	पोष्टुम्	पुष्ट्वा	संपुष्य	पुष्टिः
पुष्पणीयम्	पुष्पणम्	पुष्पितुम्	पुष्पित्वा	संपुष्प्य	पुष्पा
पवनीयम्	पवनम्	पवितुम्	पूत्वा	संपूय	पूतिः
पवनीयम्	पवनम्	पवितुम्	पवित्वा, पूत्वा	सम्पूय	पूतिः
पूजनीयम्	पूजनम्	पूजयितुम्	पूजयित्वा	संपूज्य	पूजा
पूरणीयम्	पूरणम्	पूरयितुम्	पूरयित्वा	संपूर्य	पूरणा
पूरणीयम्	पूरणम्	पूरितुम्	पूरित्वा	संपूर्य	पूर्त्तिः
परणीयम्	परणम्	परि(री)तुम् पर्त्तुम्	पीर्त्वा, पृत्वा	आपूर्य आपृत्य	पूर्त्तिः पृत्तिः
पर्चनीयम्	पर्चनम्	पर्चितुम्	पर्चित्वा	सम्पृच्य	पृक्तिः
परणीयम्	परणम्	परि(री)तुम्	पूर्त्वा	प्रपूर्य	पूर्तिः
प्यायनीयम्	प्यायनम्	प्यायितुम्	प्यायित्वा	संप्याय्य	प्यातिः
प्रच्छनीयम्	प्रच्छनम्	प्रष्टुम्	पृष्ट्वा	संपृच्छ्य	पृष्टिः
प्रथनीयम्	प्रथनम्	प्रथितुम्	प्रथित्वा	सम्प्रथ्य	प्रथा
प्रयणीम्	प्रयणम्	प्रेतुम्	प्रीत्वा	सम्प्रीय	प्रीतिः
प्रयणीयम्	प्रयणम्	प्रेतुम्	प्रीत्वा	सम्प्रीय	प्रीतिः
प्लवनीयम्	प्लवनम्	प्लवितुम्	प्लवित्वा	संप्लव्य	०
प्लोषणीयम्	प्लोषणम्	प्लोषितुम्	प्लोषित्वा प्लुष्ट्वा	संप्लुष्य	प्लुष्टिः
फुल्लनीयम्	फुल्लनम्	फुल्लितुम्	फुल्लित्वा	सम्फुल्ल्य	फुल्लिः
बन्धनीयम्	बन्धनम्	बन्द्धुम्	बद्ध्वा	संबध्य	बद्धिः
बाधनीयम्	बाधनम्	बाधितुम्	बाधित्वा	अपबाध्य	बाधा
बोधनीयम्	बोधनम्	बोद्धुम्	बुद्ध्वा	संबुध्य	बुद्धिः
वचनीयम्	वचनम्	वक्तुम्	उक्त्वा	प्रोच्य	उक्तिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
भक्षण्	भक्षितः	भक्षकः	भक्षयिता	भक्षयन्	०	भक्षयितव्यम्
भजंन्	भक्तः	भाजकः	भक्ता	भजन्	भेजिवान्	भक्तव्यम्
भञ्जोंर्	भग्नः	भञ्जकः	भङ्क्ता	भञ्जन्	बभञ्ज्वान्	भङ्क्तव्यम्
भण	भणितः	भाणकः	भणिता	भणन्	बभण्वान्	भणितव्यम्
भांक्	भातः	भायकः	भाता	भान्	०	भातव्यम्
भाषङ्	भाषितः	भाषकः	भाषिता	भाषमाणः	०	भाषितव्यम्
भासृङ्	भासितः	भासकः	भासिता	भासमानः	०	भासितव्यम्
भिक्षङ्	भिक्षितः	भिक्षकः	भिक्षिता	भिक्षमाणः	०	भिक्षितव्यम
भिदं ंन्र्	भिन्नः	भेदकः	भेत्ता	भिन्दन्	बिभिद्वान्	भेत्तव्यम्
भींक्	भीतः	भायकः	भेता	बिभ्यन्	बिभयांचकृवान् बिभीवान्	भेतव्यम्
भुजंर्	भुक्तः	भोजकः	भोक्ता	भुञ्जन्	बुभुज्वान्	भोक्तव्यम्
भू	भूतः	भावकः	भविता	भवन्	बभूवान्	भवितव्यम्
भूष	भूषितः	भूषकः	भूषिता	भूषन्	०	भूषितव्यम्
भृंन्	भृतः	भारकः	भर्त्ता	भरन्	०	भर्त्तव्यम्
भृंन्क्	भृतः	भारकः	भर्त्ता	बिभ्रत्	बभृवान् बिभराञ्चकृवान्	भर्त्तव्यम्
भ्रमु	भ्रान्तः	भ्रमकः	भ्रमिता	भ्रमन्	बभ्रन्वान् भ्रेमिवान्	भ्रमितव्यम्
भ्रमुच्	भ्रामितः	भ्रमकः	भ्रमिता	भ्राम्यन्	बभ्रन्वान् भ्रेमिवान्	भ्रमितव्यम्
भ्रस्जंन्ज्	भर्जितः	भर्जकः	भर्जिता	भृज्जन्	बभृज्जवान्	भर्जितव्यम्
	भृष्टः	भृज्जकः	भ्रष्टा		बभृज्वान्	भ्रष्टव्यम्
मदीच्	मत्तः	मादकः	मदिता	माद्यन्	०	मदितव्यम्
मनंङ्च्	मतः	मानकः	मन्ता	मन्यमानः	मेनानः	मन्तव्यम्
मनुङ्व्	मतः	मानकः	मनिता	मन्वानः	मेनानः	मनितव्यम्
मन्त्रङ्ण्	मन्त्रितः	मन्त्रकः	मन्त्रयिता	मन्त्र्यमाणः	०	मन्त्रयितव्यम्
मन्थश्	मथितः	मन्थकः	मन्थिता	मथ्नन्	मेथिवान्	मन्थितव्यम्
मस्जोंज्	मग्नः	मज्जकः	मङ्क्ता	मज्जन्	ममज्ज्वान्	मङ्क्तव्यम्
मह	महितः	माहकः	महिता	महन्	०	महितव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्त/ङ/अ
भक्षणीयम्	भक्षणम्	भक्षयितुम्	भक्षयित्वा	संभक्ष्य	भक्षणा
भजनीयम्	भजनम्	भक्तुम्	भक्त्वा	विभज्य	भक्तिः
भञ्जनीयम्	भञ्जनम्	भङ्क्तुम्	भक्त्वा भङ्क्त्वा	प्रभज्य	भक्तिः
भणनीयम्	भणनम्	भणितुम्	भणित्वा	०	भणितिः
भानीयम्	भानम्	भातुम्	भात्वा	बिभाय	भातिः
भाषणीयम्	भाषणम्	भाषितुम्	भाषित्वा	संभाष्य	भाषा
भासनीयम्	भासनम्	भासितुम्	भासित्वा	संभास्य	भासा
भेदनीयम्	भेदनम्	भेत्तुम्	भित्त्वा	संभिद्य	०
भिक्षणीयम्	भिक्षणम्	भिक्षितुम्	भिक्षित्वा	संभिक्ष्य	भिक्षा
भयनीयम्	भयनम्	भेतुम्	भीत्वा	संभीय	भीतिः
भोजनीयम्	भोजनम्	भोक्तुम्	भुक्त्वा	संभुज्य	भुक्तिः
भवनीयम्	भवनम्	भवितुम्	भूत्वा	संभूय	भूतिः
भूषणीयम्	भूषणम्	भूषितुम्	भूषित्वा	सम्भूष्य	भूषणा
भरणीयम्	भरणम्	भर्तुम्	भृत्वा	संभृत्य	भृतिः
भरणीयम्	भरणम्	भर्तुम्	भृत्वा	संभृत्य	भृतिः
भ्रमणीयम्	भ्रमणम्	भ्रमितुम्	भ्रमित्वा	विभ्रम्य	भ्रान्तिः
भ्रमणीयम्	भ्रमणम्	भ्रमितुम्	भ्रमित्वा	संभ्रम्य	भ्रान्तिः
भर्जनीयम्	भर्जनम्	भर्जितुम्	भर्जित्वा	आभर्ज्य	भृष्टिः
भ्रज्जनीयम्	भ्रज्जनम्	भ्रष्टुम्	भृष्ट्वा	आभृज्य	०
मदनीयम्	मदनम्	मदितुम्	मदित्वा	प्रमद्य	०
मननीयम्	मननम्	मन्तुम्	मत्वा	संमत्य	मतिः
मननीयम्	मननम्	मनितुम्	मत्वा मनित्वा	अवमत्य	मतिः
मन्त्रणीयम्	मन्त्रणम्	मन्त्रयितुम्	मन्त्रयित्वा	आमन्त्र्य	मन्त्रणा
मन्थनीयम्	मन्थनम्	मन्थितुम्	मन्थित्वा मथित्वा	संमथ्य	मन्था
मज्जनीयम्	मज्जनम्	मङ्क्तुम्	मङ्क्त्वा	सम्मज्य	मङ्क्तः
महनीयम्	महनम्	महितुम्	महित्वा	सम्महय	माढिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
मांक्	मितः	मायकः	माता	मान्	ममिवान्	मातव्यम्
माङ्क्	मितः	मायकः	माता	मिमानः	ममानः	मातव्यम्
मानण्	मानितः	मानकः	मानयिता	मानयन्	०	मानयितव्यम्
			मानिता	मानन्	०	मानितव्यम्
मार्गण्	मार्गितः	मार्गकः	मार्गयिता	मार्गयन्	०	मार्गयितव्यम्
			मार्गिता	मार्गन्		मार्गितव्यम्
मिन्त्	मितः	मायकः	माता	मिन्वन्	मिमिवान्	मातव्यम्
मिलज्	मिलितः	मेलकः	मेलिता	मिलन्	०	मेलितव्यम्
मिश्रण्	मिश्रितः	मिश्रकः	मिश्रयिता	मिश्रयन्	०	मिश्रयितव्यम्
मिहं	मीढः	मेहकः	मेढा	मेहन्	०	मेढव्यम्
मींन्श्	मीतः	०	माता	मीनन्	मिमीवान्	मातव्यम्
मील	मीलितः	मीलकः	मीलिता	मीलन्	०	मीलितव्यम्
मुच्लृंन्ज्	मुक्तः	मोचकः	मोक्ता	मुञ्चन्	मुमुच्वान्	मोक्तव्यम्
मुदङ्	मुदितः	मोदकः	मोदिता	मोदमानः	मुमुदानः	मोदितव्यम्
मुर्च्छा	मूर्त्तः	मूर्च्छकः	मूर्च्छिता	मूर्च्छन्	०	मूर्च्छितव्यम्
मुषश्	मुषितः	मोषकः	मोषिता	मुष्णन्	मुमुष्वान्	मोषितव्यम्
मुहूच्	मुग्धः, मूढः	मोहकः	मोग्धा	मुह्यन्	मुमुह्वान्	मोहितव्यम्
			मोढा			मोग्धव्यम्
			मोहिता			मोढव्यम्
मृंज्	मृतः	मारकः	मर्त्ता	म्रियमाणः	ममृवान्	मर्तव्यम्
मृगङ्ण्	मृगितः	मृगकः	मृगयिता	मृगयमाणः	मृगयांचक्राणः	३ मृगयितव्यम्
मृजूक्	मृष्टः	मार्जकः	मार्ष्टा	मार्जन्	०	मार्ष्टव्यम्
			मार्जिता	मृजन्		मार्जितव्यम्
						ग्रष्टव्यम्
मृषन्च्	मर्षितः	मर्षकः	मर्षिता	मृष्यन्	ममृष्वान्	मर्षितव्यम्
मोक्षण्	मोक्षितः	मोक्षकः	मोक्षयिता	मोक्षयन्	०	मोक्षयितव्यम्
			मोक्षिता	मोक्षन्		मोक्षितव्यम्
म्नां	म्नातः	म्नायकः	म्नाता	मनन्	०	म्नातव्यम्
यजंन्	इष्टः	याजकः	यष्टा	यजन्	ईजिवान्	यष्टव्यम्
यतीङ्	यत्तः	यातकः	यतिता	यतमानः	०	यतितव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
मानीयम्	मानम्	मातुम्	मित्वा	प्रमाय	मितिः
मानीयम्	मानम्	मातुम्	मित्वा	उपमीय	मितिः
माननीयम्	माननम्	मानयितुम्	मानयित्वा	सम्मान्य	मानना
		मानितुम्	मानित्वा		
मार्गणीयम्	मार्गणम्	मार्गयितुम्	मार्गयित्वा	सम्मार्ग्य	मार्गणा
		मार्गितुम्	मार्गित्वा		
मानीयम्	मानम्	मातुम्	मित्वा	सम्माय	मितिः
मेलनीयम्	मेलनम्	मेलितुम्	मिलित्वा	संमिल्य	०
मिश्रणीयम्	मिश्रणम्	मिश्रयितुम्	मिश्रयित्वा	सम्मिश्र्य	मिश्रणा
मेहनीयम्	मेहनम्	मेढुम्	०	०	मीढिः
मानीयम्	मानम्	मातुम्	मीत्वा	प्रमाय	०
मीलनीयम्	मीलनम्	मीलयितुम्	मीलित्वा	सम्मील्य	मीला
मोचनीयम्	मोचनम्	मोक्तुम्	मुक्त्वा	विमुच्य	मुक्तिः
मोदनीयम्	मोदनम्	मोदितुम्	मुदित्वा	प्रमुद्य	०
मूर्च्छनीयम्	मूर्च्छनम्	मूर्च्छितुम्	मूर्च्छित्वा	सम्मूर्च्छ्य	मूर्त्तिः
मोषणीयम्	मोषणम्	मोषितुम्	मुषित्वा	प्रमुष्य	मुष्टिः
मोहनीयम्	मोहनम्	मोग्धुम्	मुग्ध्वा	संमुह्य	मुग्धिः
		मोढुम्	मूढ्वा		मूढिः
		मोहितुम्	मोहित्वा		
मरणीयम्	मरणम्	मर्तुम्	मृत्वा	प्रमृत्य	मृतिः
मृगणीयम्	मृगणम्	मृगयितुम्	मृगयित्वा	सम्मृग्य	मृगणा
मार्जनीयम्	मार्जनम्	मार्ष्टुम्	मृष्ट्वा	प्रमार्ज्य	मृजा
		मार्ष्टुम्	मार्जित्वा		
		मार्जितुम्			
मर्षणीयम्	मर्षणम्	मर्षितुम्	मृषित्वा	परिमृश्य	मृष्टिः
			मर्षित्वा		
मोक्षणीयम्	मोक्षणम्	मोक्षयितुम्	मोक्षयित्वा	सम्मोक्ष्य	मोक्षणा
		मोक्षितुम्	मोक्षित्वा		
म्नानीयम्	म्नानम्	म्नातुम्	म्नात्वा	सम्नाय	म्नातिः
यजनीयम्	यजनम्	यष्टुम्	इष्ट्वा	समिज्य	इष्टिः
यतनीयम्	यतनम्	यतितुम्	यतित्वा	आयत्य	यत्तिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शानच्	क्वसु/कानच्	तव्य
यमुं	यतः	यामकः यमकः	यन्ता	यच्छन्	येमिवान्	यन्तव्यम्
यसुच्	यस्तः	०	यसिता	यस्यन्, यसन्	०	यसितव्यम्
यांक्	यातः	यायकः	याता	यान्	ययिवान्	यातव्यम्
याचृन्	याचितः	याचकः	याचिता	याचन्	०	याचितव्यम्
युंनश्	युतः	०	यविता	युवन्	युयुवान्	यवितव्यम्
युंक्	युतः	०	यविता	युवन्	युयुवान्	यवितव्यम्
युजंङ्च्	युक्तः	योजकः	योक्ता	युज्यमानः	युयुजानः	योक्तव्यम्
युजृंन्र्	युक्तः	योजकः	योक्ता	युञ्जन्	युयुज्वान्	योक्तव्यम्
युधंङ्च्	युद्धः	योधकः	योद्धा	युध्यमानः	युयुधानः	योद्धव्यम्
रक्ष	रक्षितः	रक्षकः	रक्षिता	रक्षन्	०	रक्षितव्यम्
रचण्	रचितः	रचकः	रचयिता	रचयन्	रचयांञ्चकृवान्	३ रचयितव्यम्
रञ्जंन्च्	रक्तः	रञ्जकः	रङ्क्ता	रज्यन्	रेजिवान्	रङ्क्तव्यम्
रभंङ्	रब्धः	राभकः	रब्धा	रभमाणः	रेभाणः	रब्धव्यम्
रमङ्	रतः	रामकः	रन्ता	रममाणः	रेमाणः	रन्तव्यम्
रस	रसितः	रासकः	रसिता	रसन्	०	रसितव्यम्
रसण्	रसितः	रसकः	रसयिता	रसयन्	०	रसयितव्यम्
राजृन्	राजितः	राजकः	राजिता	राजन्	रराज्वान् रेजिवान्	राजितव्यम्
राधंत्	राद्धः	राधकः	राद्धा	राध्नुवन्	रराध्वान्	राद्धव्यम्
रिचृंन्र्	रिक्तः	रेचकः	रेक्ता	रिञ्चन्	रिरिच्वान्	रेक्तव्यम्
रु	रुतः	रावकः	रविता रोता	रवन्	रुरुवान्	रवितव्यम् रोतव्यम्
रुचङ्	रुचितः	रोचकः	रोचिता	रोचमानः	रुरुचानः	रोचितव्यम्
रुजण्	रुग्णः	रोजकः	रोक्ता	रुजन्	०	रोक्तव्यम्
रुजोंज्	रुग्णः	रोजकः	रोक्ता	रुजन्	०	रोक्तव्यम्
रुदृक्	रुदितः	रोदकः	रोदिता	रुदन्	रुरुद्वान्	रोदितव्यम्
रुधृंन्र्	रुद्धः	रोधकः	रोद्धा	रुन्धन्	रुरुध्वान्	रोद्धव्यम्
रुहं	रूढः	रोहकः	रोढा	रोहन्	रुरुह्वान्	रोढव्यम्
लक्षन्ण्	लक्षितः	लक्षकः	लक्षयिता	लक्षयन्	०	लक्षयितव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
यमनीयम्	यमनम्	यन्तुम्	यत्वा यमित्वा	संयम्य	यतिः
यसनीयम्	यसनम्	यसितुम्	यसित्वा यस्त्वा	प्रयस्य	यस्तिः
यानीयम्	यानम्	यातुम्	यात्वा	प्रयाय	यातिः
याचनीयम्	याचनम्	याचितुम्	याचित्वा	प्रयाच्य	याञ्चा
यवनीयम्	यवनम्	यवितुम्	युत्वा	संयुत्य	युतिः
यवनीयम्	यवनम्	यवितुम्	युत्वा	संयुत्य	युतिः
योजनीयम्	योजनम्	योक्तुम्	युक्त्वा	नियुज्य	युक्तिः
योजनीयम्	योजनम्	योक्तुम्	युक्त्वा	प्रयुज्य	युक्तिः
योधनीयम्	योधनम्	योद्धुम्	युद्ध्वा	प्रयुध्य	युद्धिः
रक्षणीयम्	रक्षणम्	रक्षितुम्	रक्षित्वा	संरक्ष्य	रक्षा
रचनीयम्	रचनम्	रचयितुम्	रचयित्वा	विरचय्य	रचना
रञ्जनीयम्	रञ्जनम्	रङ्क्तुम्	रक्त्वा रङ्क्त्वा	विरज्य	रक्तिः
रम्भणीयम्	रम्भणम्	रब्धुम्	रब्ध्वा	आरभ्य	रब्धिः
रमणीयम्	रमणम्	रन्तुम्	रत्वा,रमित्वा	विरम्य, विरत्य	रतिः
रसनीयम्	रसनम्	रसितुम्	रसित्वा	संरस्य	रसना
रसनीयम्	रसनम्	रसयितुम्	रसयित्वा	संरस्य	रसना
राजनीयम्	राजनम्	राजितुम्	राजित्वा	विराज्य	राजा
राधनीयम्	राधनम्	राद्धुम्	राद्ध्वा	आराध्य	राद्धिः
रेचनीयम्	रेचनम्	रेक्तुम्	रिक्त्वा	अतिरिच्य	रिक्तिः
रवणीयम्	रवणम्	रवितुम् रोतुम्	रुत्वा	आरुत्य	रुतिः
रोचनीयम्	रोचनम्	रोचितुम्	रो(रु)चित्वा	संरुच्य	रुक्तिः
रोजनीयम्	रोजनम्	रोक्तुम्	रुक्त्वा	संरुज्य	रुजा
रोजनीयम्	रोजनम्	रोक्तुम्	रुक्त्वा	संरुज्य	रुजा
रोदनीयम्	रोदनम्	रोदितुम्	रु(रो)दित्वा	प्ररुद्य	रुत्तिः
रोधनीयम्	रोधनम्	रोद्धुम्	रुद्ध्वा	विरुध्य	रुद्धिः
रोहणीयम्	रोहणम्	रोढुम्	रूढ्वा	आरुह्य	रूढिः
लक्षणीयम्	लक्षणम्	लक्षयितुम्	लक्षयित्वा	संलक्ष्य	लक्षणा

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
लघिङ्	लङ्घितः	लङ्घकः	लङ्घिता	लङ्घमानः	०	लङ्घितव्यम्
लप	लपितः	लापकः	लपिता	लपन्	०	लपितव्यम्
लबिङ्	लम्बितः	लम्बकः	लम्बिता	लम्बमानः	०	लम्बितव्यम्
लभंषङ्	लब्धः	लाभकः	लब्धा	लभमानः	लेभानः	लब्धव्यम्
लषन्	लषितः	लाषकः	लषिता	लषन्	०	लषितव्यम्
लस	लसितः	लासकः	लसिता	लसन्	०	लसितव्यम्
लस्जींङ्ज्	लग्नः	०	लज्जिता	लज्जमानः		लज्जितव्यम्
लिखज्	लिखितः	लेखकः	लेखिता	लिखन्	लिलिख्वान्	लेखितव्यम्
लिपंन्ज्	लिप्तः	लेपकः	लिप्ता	लिम्पन्	लिलिप्वान्	लेप्तव्यम्
लिहंन्क्	लीढः	लेहकः	लेढा	लिहन्	लिलिह्वान्	लेढव्यम्
लींङ्च्	लीनः	०	लेता, लाता	लीयमानः	लिल्यानः	लातव्यम् लेतव्यम्
लुठज्	लुठितः	लोठकः	लुठिता	लुठन्	लुलुठ्वान्	लुठितव्यम्
लुपच्	लुप्तः	लोपकः	लोपिता	लुप्यन्	लुलुप्वानू	लोपितव्यम्
लुप्लृंन्ज्	लुप्तः	लोपकः	लोप्ता	लुम्पन्	लुलुप्वान्	लोप्तव्यम्
लुभच्	लुब्धः	लोभकः	लोब्धा लोभिता	लुभ्यन्	लुलुभ्वान्	लोब्धव्यम् लोभितव्यम्
लुभज्	लुब्धः	लोभकः	लोब्धा लोभिता	लुभ्यन्	लुलुभ्वान्	लोब्धव्यम् लोभितव्यम्
लून्श्	लूनः	लावकः	लविता	लुनन्	लुलूवान्	लवितव्यम्
लोकृङ्	लोकितः	लोककः	लोकिता	लोकमानः	लुलोकानः	लोकितव्यम्
लोचृङ्	लोचितः	लोचकः	लोचिता	लोचमानः	लुलोचानः	लोचितव्यम्
वचंक्	उक्तः	वाचकः	वक्ता	वचन्	ऊचिवान्	वक्तव्यम्
वचण्	वाचितः	वाचकः	वाचयिता	वाचयन्	०	वाचयितव्यम्
वञ्चङ्ण्	वञ्चितः	वञ्चकः	वञ्चयिता	वञ्चयमानः	०	वञ्चयितव्यम्
वद	उदितः	वादकः	वदिता	वदन्	ऊदिवान्	वदितव्यम्
वदिङ्	वन्दितः	वन्दकः	वन्दिता	वन्दमानः	ववन्दानः	वन्दितव्यम्
वपंन्	उप्तः	वापकः	वप्ता	वपन्	ऊपिवान्	वप्तव्यम्
वर्णण्	वर्णितः	वर्णकः	वर्णयिता	वर्णयन्	०	वर्णयितव्यम्
वशक्	उशितः	वाशकः	वशिता	उशन्	ऊशिवान्	वशितव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
लङ्घनीयम्	लङ्घनम्	लङ्घितुम्	लङ्घित्वा	विलङ्घ्य	लङ्घः
लपनीयम्	लपनम्	लपितुम्	लपित्वा	विलप्य	लप्तिः
लम्बनीयम्	लम्बनम्	लम्बितुम्	लम्बित्वा	आलम्ब्य	लम्बा
लभनीयम्	लभनम्	लब्धुम्	लब्ध्वा	उपलभ्य	लब्धिः
लषणीयम्	लषणम्	लषितुम्	लषित्वा	अभिलष्य	लष्टिः
लसनीयम्	लसनम्	लसितुम्	लसित्वा	विलस्य	लस्तिः
लज्जनीयम्	लज्जनम्	लज्जितुम्	लज्जित्वा	०	लज्जा
लेखनीयम्	लेखनम्	लेखितुम्	लिखित्वा लेखित्वा	आलिख्य	०
लेपनीयम्	लेपनम्	लेप्तुम्	लिप्त्वा	संलिप्य	लिप्तिः
लेहनीयम्	लेहनम्	लेढ्म्	लीढ्वा	संलिहय	लीढिः
लयनीयम्	लयनम्	लातुम्	लीत्वा	संलीय, संलाय	लीतिः
लानीयम्	लानम्	लेतुम्			
लुठनीयम्	लुठनम्	लुठितुम्	लुठित्वा	विलुठ्य	०
लोपनीयम्	लोपनम्	लोपितुम्	लोपित्वा लुप्त्वा	संलुप्य	लुप्तिः
लोपनीयम्	लोपनम्	लोप्तुम्	लुप्त्वा	संलुप्य	लुप्तिः
लोभनीयम्	लोभनम्	लोब्धुम् लोभितुम्	लुब्ध्वा लो (लु) भित्वा	प्रलुभ्य	लुब्धिः
लोभनीयम्	लोभनम्	लोब्धुम् लोभितुम्	लोभित्वा लुभित्वा	प्रलुभ्य	लुब्धिः
लवनीयम्	लवनम्	लवितुम्	लवित्वा	संलूय	लूनिः
लोकनीयम्	लोकनम्	लोकितुम्	लोकित्वा	विलोक्य	लोका
लोचनीयम्	लोचनम्	लोचितुम्	लोचित्वा	आलोच्य	लोचा
वचनीयम्	वचनम्	वक्तुम्	उक्त्वा	प्रोच्य	उक्तिः
वाचनीयम्	वाचनम्	वाचयितुम्	वाचयित्वा	प्रवाच्य	वाचना
वञ्चनीयम्	वञ्चनम्	वञ्चयितुम्	वञ्चयित्वा	प्रवञ्च्य	वञ्चा
वदनीयम्	वदनम्	वदितुम्	उदित्वा	अनूद्य	उक्तिः
वन्दनीयम्	वन्दनम्	वन्दितुम्	वन्दित्वा	अभिवन्द्य	वन्दना
वपनीयम्	वपनम्	वप्तुम्	उप्त्वा	निरुप्य	उप्तिः
वर्णनीयम्	वर्णनम्	वर्णयितुम्	वर्णयित्वा	संवर्ण्य	वर्णना
वशनीयम्	वशनम्	वशितुम्	उशित्वा	न्युश्य	उष्टिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
वसं	उषितः	वासकः	वस्ता वसिता	वसन्	ऊषिवान्	वस्तव्यम्
वसिक्	वसितः	वासकः	वसिता	वसानः	ववसानः	वसितव्यम्
वहंन्	ऊढः	वाहकः	वोढा	वहन्	ऊहिवान्	वोढव्यम्
वांक्	वातः	वायकः	वाता	वान्	०	वातव्यम्
वाछि	वाञ्छितः	वाञ्छकः	वाञ्छिता	वाञ्छन्	०	वाञ्छितव्यम्
विच्ंन्र्	वित्तः	वेचकः	वित्ता	विञ्चन्	विविच्वान्	वेक्तव्यम्
विजृंक्	विग्नः	वेजकः	विजिता	वेविजत्	०	विजितव्यम्
विदंङ्च्	वित्तः	वेदकः	वेत्ता	विद्यमानः	०	वेत्तव्यम्
विदक्	विदितः	वेदकः	वेदिता	विदन्	०	वेदितव्यम्
विदलृंन्ज्	वित्तः विन्नः	वेदकः	वेत्ता	विन्दन्	विविद्वान्	वेत्तव्यम्
विशंज्	विष्टः	वेशकः	वेष्टा	विशन्	विविश्वान् विविशिवान्	वेष्टव्यम्
वृतुङ्	वृत्तः	वर्त्तकः	वर्त्तिता	वर्तमानः	ववृतानः	वर्त्तितव्यम्
वृधुङ्	वृद्धः	वर्धकः	वर्धिता	वर्धमानः	वृधानः	वर्धितव्यम्
वृन्त्	वृतः	वारकः	वरि (री) ता	वृण्वन्	ववृवान्	वरि (री) तव्यम्
वृष	वृष्टः	वर्षकः	वर्षिता	वर्षन्	ववृष्वान्	वर्षितव्यम्
वृश्	वूर्णः	वारकः	वरी (रि) ता	वृणानः	वुवूर्वान्	वरि (री) तव्यम्
वेंन्	ऊतः	वायकः	वाता	वयन्	ववान् ऊविवान्	वातव्यम्
वेपृङ्	वेपितः	वेपकः	वेपिता	वेपमानः	०	वेपितव्यम्
व्यथषङ्	व्यथितः	व्याथकः	व्यथिता	व्यथमानः	विव्यथानः	व्यथितव्यम्
व्यधंच्	विद्धः	व्याधकः	व्यद्धा	विध्यन्	०	व्यद्धव्यम्
व्येंन्	वीतः	व्यायकः	व्याता	व्ययन्	०	व्यातव्यम्
व्रज	व्रजितः	व्राजकः	व्रजिता	व्रजन्	वव्रज्वान्	व्रजितव्यम्
व्रश्चूज्	वृक्णः	व्रश्चकः	व्रश्चिता व्रष्टा	वृश्चन्	ववृश्च्वान्	व्रश्चितव्यम् व्रष्टव्यम्
शकंन्च्	शकितः	०	शकिता	शक्यन्	०	शकितव्यम्
शकिङ्	शंकितः	शंककः	शंकिता	शंकमानः	०	शंकितव्यम्
शक्लृंत्	शक्तः	०	शक्ता	शक्नुवन्	शेकिवान्	शक्तव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
वसनीयम्	वसनम्	वस्तुम् वसितुम्	उषित्वा	उषोष्य	उष्टिः
वसनीयम्	वसनम्	वसितुम्	वसित्वा	प्रवास्य	वस्तिः
वहनीयम्	वहनम्	वोढुम्	ऊढ्वा	प्रोह्य	ऊढिः
वानीयम्	वानम्	वातुम्	वात्वा	प्रवाय	वातिः
वाञ्छनीयम्	वाञ्छनम्	वाञ्छितुम्	वाञ्छित्वा	प्रवाञ्छ्य	वाञ्छा
वेचनीयम्	वेचनम्	वेक्तुम्	विक्त्वा	विविच्य	०
वेजनीयम्	वेजनम्	विजितुम्	विजित्वा	उद्विज्य	विक्तिः
वेदनीयम्	वेदनम्	वेत्तुम्	वित्त्वा	संविद्य	वित्तिः
वेदनीयम्	वेदनम्	वेदितुम्	विदित्वा	संविद्य	वित्तिः
वेदनीयम्	वेदनम्	वेत्तुम्	वित्त्वा	संविद्य	वित्तिः
वेशनीयम्	वेशनम्	वेष्टुम्	विष्ट्वा	प्रविश्य	विष्टिः
वर्त्तनीयम्	वर्त्तनम्	वर्त्तितुम्	वर्त्तित्वा	निवृत्य	वृत्तिः
वर्धनीयम्	वर्धनम्	वर्धितुम्	वर्धित्वा वृध्वा	संवृध्य	वृद्धिः
वरणीयम्	वरणम्	वरि(री)तुम्	वृत्वा	प्रवृत्य	वृतिः
वर्षणीयम्	वर्षणम्	वर्षितुम्	वर्षित्वा वृष्ट्वा	प्रवृष्य	वृष्टिः
वरणीयम्	वरणम्	वरि(री)तुम्	वूर्त्वा	प्रवृत्य	वूर्त्तिः
वानीयम्	वानम्	वातुम्	उत्वा	संवाय	ऊतिः
वेपनीयम्	वेपनम्	वेपितुम्	वेपित्वा	संवेप्य	वेपा
व्यथनीयम्	व्यथनम्	व्यथितुम्	व्यथित्वा	संव्यथ्य	व्यथा
व्यधनीयम्	व्यधनम्	व्यद्धुम्	विद्ध्वा	आविध्य	विद्धिः
व्यानीयम्	व्यानम्	व्यातुम्	वीत्वा	संवीय, संव्याय	वीतिः
व्रजनीयम्	व्रजनम्	व्रजितुम्	व्रजित्वा	प्रव्रज्य	व्रज्या
व्रश्चनीयम्	व्रश्चनम्	व्रश्चितुम् व्रष्टुम्	व्रश्चित्वा	संवृश्च्य	वृश्चिः
शकनीयम्	शकनम्	शकितुम्	शकित्वा	प्रशक्य	शक्तिः
शंकनीयम्	शंकनम्	शंकितुम्	शंकित्वा	आशंक्य	शंका
शकनीयम्	शकनम्	शक्तुम्	शक्त्वा	संशक्य	शक्तिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
शपंन्	शप्तः	शापकः	शप्ता	शपन्	०	शप्तव्यम्
शपंन्च्	शप्तः	शापकः	शप्ता	शप्यन्	०	शप्तव्यम्
शमु	शान्तः	शामकः	शमिता	शाम्यन्	शेमिवान्	शमितव्यम्
शासुक्	शिष्टः	शासकः	शासिता	शासन्	शिशिष्वान्	शासितव्यम्
शिक्षङ्	शिक्षितः	शिक्षकः	शिक्षिता	शिक्षमाणः	०	शिक्षितव्यम्
शिष्लृंर्	शिष्टः	शेषकः	शेष्टा	शिषन्	शिशिष्वान्	शेष्टव्यम्
शीङ्क्	शयितः	शायकः	शयिता	शयानः	शिश्यानः	शयितव्यम्
शुच	शुचितः	शोचकः	शोचिता	शोचन्	०	शोचितव्यम्
शुधंच्	शुद्धः	शोधकः	शोद्धा	शुध्यन्	०	शोद्धव्यम्
शुभज्	शोभितः	शोभकः	शोभिता	शोभमानः	०	शोभितव्यम्
शुषंच्	शुष्कः	शोषकः	शोष्टा	शुष्यन्	शुशुष्वान्	शोष्टव्यम्
श्रृश्	शीर्णः	०	शरिता	श्रृणन्	शिश्रृवान्	शरितव्यम्
			शरीता		शिशीर्वान्	शरीतव्यम्
शोंच्	शातः	०	शाता	श्यन्	शशिवान्	शातव्यम्
श्रमुच्	श्रान्तः	०	श्रमिता	श्राम्यन्	शश्रन्वान्	श्रमितव्यम्
श्रिन्	श्रितः	श्रायकः	श्रयिता	श्रयन्	शिश्रिवान्	श्रयितव्यम्
श्रुंत्	श्रुतः	श्रावकः	श्रोता	श्रृण्वन्	शुश्रुवान्	श्रोतव्यम्
श्लाघृङ्	श्लाघितः	श्लाघकः	श्लाघिता	श्लाघमानः	०	श्लाघितव्यम्
श्लिषंच्	श्लिष्टः	श्लेषकः	श्लेष्टा	श्लिष्यन्	शिश्लिष्वान्	श्लेष्टव्यम्
श्वसक्	श्वसितः	श्वासकः	श्वसिता	श्वसन्	शश्वस्वान्	श्वसितव्यम्
षञ्जं	सक्तः	षञ्जकः	सङ्क्ता	सजन्	सेजिवान्	सङ्क्तव्यम्
षणुन्व्	सातः	०	सनिता	सन्वन्	सेनिवान्	सनितव्यम्
षद्लृंज्	सन्नः	सादकः	सत्ता	सीदन्	सेदिवान्	सत्तव्यम्
षहङ्	सोढः	साहकः	सोढा	सहमानः	सेहानः	सोढव्यम्
			सहिता			सहितव्यम्
षिन्त्	सितः	सायकः	सेता	सिन्वन्	सिषिवान्	सेतव्यम्
				सिनन्		

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
शपनीयम्	शपनम्	शप्तुम्	शप्त्वा	अभिशप्य	शप्तिः
शपनीयम्	शपनम्	शप्तुम्	शप्त्वा	अभिशप्य	शप्तिः
शमनीयम्	शमनम्	शमितुम्	शान्त्वा शमित्वा	निशम्य	शान्तिः
शासनीयम्	शासनम्	शासितुम्	शिष्ट्वा शासित्वा	अनुशिष्य	शास्तिः
शिक्षणीयम्	शिक्षणम्	शिक्षितुम्	शिक्षित्वा	संशिक्ष्य	शिक्षा
शेषणीयम्	शेषणम्	शेष्टुम्	शिष्ट्वा	विशिष्य	शिष्टिः
शयनीयम्	शयनम्	शयितुम्	शयित्वा	प्रशय्य	शय्या
शोचनीयम्	शोचनम्	शोचितुम्	शो (शु) चित्वा	विशुच्य	शुक्तिः
शोधनीयम्	शोधनम्	शोद्धुम्	शुद्ध्वा	विशुध्य	शुद्धिः
शोभनीयम्	शोभनम्	शोभितुम्	शो (शु) भित्वा	उपशुभ्य	शोभा
शोषणीयम्	शोषणम्	शोष्टुम्	शुष्ट्वा	परिशुष्य	शुष्टिः
शरणीयम्	शरणम्	शरितुम् शरीतुम्	शीर्त्वा	विशीर्य	शीर्णिः
शानीयम्	शानम्	शातुम्	शात्वा शित्वा	संशाय	०
श्रमणीयम्	श्रमणम्	श्रमितुम्	श्रमित्वा श्रान्त्वा	परिश्रम्य	श्रान्तिः
श्रयणीयम्	श्रयणम्	श्रयितुम्	श्रयित्वा	आश्रित्य	श्रितिः
श्रवणीयम्	श्रवणम्	श्रोतुम्	श्रुत्वा	उपश्रुत्य	श्रुतिः
श्लाघनीयम्	श्लाघनम्	श्लाघितुम्	श्लाघित्वा	०	श्लाघा
श्लेषणीयम्	श्लेषणम्	श्लेष्टुम्	श्लिष्ट्वा	आश्लिष्य	श्लिष्टिः
श्वसनीयम्	श्वसनम्	श्वसितुम्	श्वसित्वा	विश्वस्य	श्वस्तिः
सञ्जनीयम्	सञ्जनम्	सङ्क्तुम्	सक्त्वा	प्रसज्य	सक्तिः
सननीयम्	सननम्	सनितुम्	सनित्वा सात्वा	प्रसाय	सातिः
सदनीयम्	सदनम्	सत्तुम्	सत्त्वा	निषद्य	सत्तिः
सहनीयम्	सहनम्	सोढुम् सहितुम्	सोढ्वा सहित्वा	संसह्य	सोढिः
सयनीयम्	सयनम्	सेतुम्	सित्वा	प्रसित्य	सितिः

धातु	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
षिचंन्ज्	सिक्तः	सेचकः	सेक्ता	सिञ्चन्	०	सेक्तव्यम्
षिधुंच्	सिद्धः	सेधकः	सेद्धा	सिध्यन्	सिषिद्ध्वान्	सेद्धव्यम्
षिवुच्	स्यूतः	सेवकः	सेविता	सीव्यन्	सिषिवान्	सेवितव्यम्
षुंक्	सुतः	सावकः	सोता	सुन्वन्	सुषुवान्	सोतव्यम्
षुंन्त्	सुतः	सावकः	सोता	सुन्वन्	सुषुवान्	सोतव्यम्
षूङ्क्	सूतः	सावकः	सविता सोता	सुवानः	सुषुवाणः	सवितव्यम् सोतव्यम्
षेवृङ्	सेवितः	सेवकः	सेविता	सेवमानः	०	सेवितव्यम्
षोंच्	सितः	सायकः	साता	स्यन्	ससिवान्	सातव्यम्
ष्टुंन्क्	स्तुतः	स्तावकः	स्तविता स्तोता	स्तुवन्	तुष्टुवान्	स्तोतव्यम् स्तवितव्यम्
ष्ठां	स्थितः	स्थायकः	स्थाता	तिष्ठन्	तस्थिवान्	स्थातव्यम्
ष्णांक्	स्नातः	स्नायकः	स्नाता	स्नान्	०	स्नातव्यम्
ष्णिहूच्	स्निग्धः स्नीढः	०	स्नेहिता स्नेग्धा स्नेढा	स्निह्यन्	०	स्नेहितव्यम् स्नेग्धव्यम् स्नेढव्यम्
ष्मिङ्	स्मितः	स्मायकः	स्मेता	स्मयमानः	सिष्मियाणः	स्मेतव्यम्
सान्त्वण्	सान्त्वितः	०	सान्त्वयिता	सान्त्वयन्	०	सान्त्वयितव्यम्
साधंत्	साद्धः	साधकः	साद्धा	साध्नुवन्	ससाध्वान्	साद्धव्यम्
सृं	सृतः	सारकः	सर्त्ता	सरन्	०	सर्त्तव्यम्
सृजंज्	सृष्टः	सर्जकः	स्रष्टा	सृजन्	०	स्रष्टव्यम्
सृप्लृं	सृप्तः	०	सर्प्ता स्रप्ता	सर्पन्	०	सर्प्तव्यम् स्रप्तव्यम्
स्कन्द्	स्कन्नः	स्कन्दकः	स्कन्ता	स्कन्दन्	०	स्कन्तव्यम्
स्खल	स्खलितः	स्खालकः	स्खलिता	स्खलन्	०	स्खलितव्यम्
स्पदिङ्	स्पन्दितः	स्पन्दकः	स्पन्दिता	स्पन्दमानः	पस्पन्दानः	स्पन्दितव्यम्
स्पर्धङ्	स्पर्द्धितः	स्पर्द्धकः	स्पर्द्धिता	स्पर्द्धमानः	पस्पर्धानः	स्पर्द्धितव्यम्
स्पृशंज्	स्पृष्टः	स्पर्शकः	स्पृष्टा स्पर्ष्टा	स्पृशन्	पस्पृश्वान्	स्प्रष्टव्यम् स्पर्ष्टव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
सेचनीयम्	सेचनम्	सेक्तुम्	सिक्त्वा	अभिषिच्य	सिक्तिः
सेधनीयम्	सेधनम्	सेद्धुम्	सिद्ध्वा सेधित्वा सिद्धित्वा	निषिध्य	सिद्धिः
सेवनीयम्	सेवनम् सीवनम्	सेवितुम्	सेवित्वा स्यूत्वा	संसीव्य	स्यूतिः
सवनीयम्	सवनम्	सोतुम्	सुत्वा	अभिषुत्य	सुतिः
सवनीयम्	सवनम्	सोतुम्	सुत्वा	प्रस्तुत्य	सुतिः
सवनीयम्	सवनम्	सवितुम् सोतुम्	सूत्वा	प्रसूय	सूतिः
सेवनीयम्	सेवनम्	सेवितुम्	सेवित्वा	निषेव्य	सेवा
सानीयम्	सानम्	सातुम्	सित्वा	अवसाय	सितिः
स्तवनीयम्	स्वतनम्	स्तोतुम् स्तवितुम्	स्तुत्वा	प्रस्तुत्य	स्तुतिः
स्थानीयम्	स्थातुम्	स्थानम्	स्थित्वा	प्रस्थाय	स्थितिः
स्नानीयम्	स्नानम्	स्नातुम्	स्नात्वा	उपस्नाय	स्नातिः
स्नेहनीयम्	स्नेहनम्	स्नेहितुम् स्नेग्धुम् स्नेढुम्	स्निग्ध्वा स्नीढ्वा स्नेहित्वा स्निहित्वा	संस्निह्य	स्नेहा
स्मयनीयम्	स्मयनम्	स्मेतुम्	स्मित्वा	विस्मित्य	स्मितिः
सान्त्वनीयम्	सान्त्वनम्	सान्त्वयितुम्	सान्त्वयित्वा	प्रसान्त्व्य	सान्त्वना
साधनीयम्	साधनम्	साद्धुम्	साद्ध्वा	प्रसाध्य	साद्धिः
सरणीयम्	सरणम्	सर्त्तुम्	सृत्वा	उपसृत्य	सृतिः
सर्जनीयम्	सर्जनम्	स्रष्टुम्	सृष्ट्वा	विसृज्य	सृष्टिः
सर्पणीयम्	सर्पणम्	सर्प्तुम्,स्रप्तुम्	सृप्त्वा	अपसृप्य	सृप्तिः
स्कन्दनीयम्	स्कन्दनम्	स्कन्तुम्	स्कन्त्वा	आस्कन्द्य	स्कन्तिः
स्खलनीयम्	स्खलनम्	स्खलितुम्	स्खलित्वा	प्रस्खल्य	०
स्पन्दनीयम्	स्पन्दनम्	स्पन्दितुम्	स्पन्दित्वा	निष्पद्य	स्पन्दा
स्पर्द्धनीयम्	स्पर्द्धनम्	स्पर्द्धितुम्	स्पर्द्धित्वा	आस्पर्द्ध्य	स्पर्द्धा
स्पर्शनीयम्	स्पर्शनम्	स्प्रष्टुम्	स्पृष्ट्वा	संस्पृश्य	स्पृष्टिः

	क्त	णक	तृच्	शतृ/शान	क्वसु/कान	तव्य
स्पृहण्	स्पृहितः	स्पृहकः	स्पृहयिता	स्पृहयन्	०	स्पृहयितव्यम्
स्फुटज्	स्फुटितः	स्फोटकः	स्फुटिता	स्फुटन्	०	स्फुटितव्यम्
स्फुरज्	स्फुरितः	स्फोरकः	स्फुरिता	स्फुरन्	पुस्फूर्वान्	स्फुरितव्यम्
स्मृ	स्मृतः	स्मारकः	स्मर्ता	स्मरन्	सस्मृवान्	स्मर्तव्यम्
स्यन्दूङ्	स्यन्नः	स्यन्दकः	स्यन्दिता स्यन्ता	स्यन्दमानः	०	स्यन्दितव्यम् स्यन्तव्यम्
स्रंसुङ्	स्रस्तः	स्रंसकः	स्रंसिता	स्रंसमानः	०	स्रंसितव्यम्
स्वपंक्	सुप्तः	स्वापकः	स्वप्ता	स्वपन्	सुषुप्वान्	स्वप्तव्यम्
हनंक्	हतः	घातकः	हन्ता	घ्नन्	जघ्निवान् जघन्वान्	हन्तव्यम्
हसे	हसितः	हासकः	हसिता	हसन्	०	हसितव्यम्
हांक्	हीनः	हायकः	हाता	जहन्	जहिवान्	हातव्यम्
हित्	हितः	हायकः	हेता	हिन्वन्	०	हेतव्यम्
हिंसि	हिंसितः	हिंसकः	हिंसिता	हिंसन्	जिहिंस्वान्	हिंसितव्यम्
हिंसिण्	हिंसितः	हिंसकः	हिंसयिता	हिंसयन्	जिहिंस्वान्	हिंसयितव्यम्
हुंक्	हुतः	हावकः	होता	जुह्वन्	जुहुवान्	होतव्यम्
हृंन्	हृतः	हारकः	हर्ता	हरन्	जहृवान्	हर्तव्यम्
हृषच्	हृष्टः हर्षितः	हर्षकः	हर्षिता	हृष्यन्	०	हर्षितव्यम्
हृ नुङ्क्	हृ नुतः	हृ नावकः	हृ नोता	हृ नुवानः	०	हृ नोतव्यम्
ह्रींक्	ह्रीणः ह्रीतः	ह्रायकः	ह्रेता	जिह्रियन्	जिह्रीवान् जिह्रीयांचकृवान्	ह्रेतव्यम्
ह्वेंन्	हूतः	ह्वायकः	ह्वाता	ह्वयन्	जुहूवान्	ह्वातव्यम्

अनीय	अनट्	तुम्	क्त्वा	यप्	क्ति/ङ/अ
स्पृहणीयम्	स्पृहणम्	स्पृहयितुम्	स्पृहयित्वा	उपस्पृह्य	स्पृहा
स्फुटनीयम्	स्फुटनम्	स्फुटितुम्	स्फुटित्वा	संस्फुट्य	स्फुट्टिः
स्फुरणीयम्	स्फुरणम्	स्फुरितुम्	स्फुरित्वा	संस्फुर्य	स्फूर्त्तिः
स्मरणीयम्	स्मरणम्	स्मर्तुम्	स्मृत्वा	विस्मृत्य	स्मृतिः
स्यन्दनीयम्	स्यन्दनम्	स्यन्दितुम् स्यन्तुम्	स्यन्दित्वा स्यन्त्वा	निष्यन्द्य	स्यन्तिः
स्रंसनीयम्	स्रंसनम्	स्रंसितुम्	स्रंसित्वा	विस्रस्य	स्रस्तिः
स्वपनीयम्	स्वपनम्	स्वप्तुम्	सुप्त्वा	संसुप्य	सुप्तिः
हननीयम्	हननम्	हन्तुम्	हत्वा	निहत्य	हतिः
हसनीयम्	हसनम्	हसितुम्	हसित्वा	विहस्य	हसितिः
हानीयम्	हानम्	हातुम्	हित्वा	विहाय	हानिः
हयनीयम्	हयनम्	हेतुम्	हित्वा	संहित्य	हितिः
हिंसनीयम्	हिंसनम्	हिंसितुम्	हिंसित्वा	विहिंस्य	हिंसा
हिंसनीयम्	हिंसनम्	हिंसयितुम्	हिंसयित्वा	उपहिंस्य	हिंसना
हवनीयम्	हवनम्	होतुम्	हुत्वा	आहुत्य	हुतिः
हरणीयम्	हरणम्	हर्तुम्	हृत्वा	संहृत्य	हृतिः
हर्षणीयम्	हर्षणम्	हर्षितुम्	हर्षित्वा हृष्ट्वा	प्रहृष्य	हृष्टिः
ह्नवनीयम्	ह्नवनम्	ह्नोतुम्	ह्नुत्वा	प्रह्नुत्य	ह्नुतिः
ह्नयणीयम्	ह्नयणम्	ह्नेतुम्	ह्नीत्वा	संह्नीय	ह्नीतिः
ह्वानीयम्	ह्वानम्	ह्वातुम्	हूत्वा	आहूय	हूतिः

उभयपदी धातुओं के शान प्रत्यय के रूप

धातु	रूप	धातु	रूप
कृंन्	कुर्वाणः	मृषव्च्	मृष्यमाणः
क्रींन्श्	क्रीणानः	यजंन्	यजमानः
क्षिपंन्ज्	क्षिपमाणः	याचून्	याचमानः
खनुन्	खनमानः	युजॅन्र्	युञ्जानः
गुहून्	गूहमानः	रञ्जंन्च्	रज्यमानः
ग्रहन्श्	गृह्णानः	राजृन्	राजमानः
चिन्त्	चिन्वानः	रिचॅन्र्	रिञ्चानः
छिदॅन्र्	छिन्दानः	रुधॅन्र्	रुन्धानः
णहंन्च्	नहमानः	लक्षन्ण्	लक्षयमाणः
णींन्	नयमानः	लिपंन्ज्	लिम्पमानः
तनुन्व्	तन्वानः	लिहंन्क्	लिहानः
दांन्क्	ददानः	लुप्लृंन्ज्	लुम्पमानः
दिशंन्ज्	दिशमानः	लून्श्	लूनानः
दिहंन्क्	दिहानः	वपंन्	वपमानः
दुहंन्क्	दुहानः	वहंन्	वहमानः
द्विषंन्क्	द्विषाणः	विचॅन्र्	विञ्चानः
धांन्क्	दधानः	विद्लृंन्ज्	विन्दमानः
धावुन्	धावमानः	वृन्त्	वृण्वानः
धून्त्	धून्वानः	वेंन्	वयमानः
पचंषन्	पचमानः	व्येंन्	व्ययमानः
पून्श्	पुनानः	शकंन्च्	शक्यमानः
प्रींन्श्	प्रीणानः	शपंन्	शपमानः
ब्रूंन्क्	ब्रुवाणः	शपंन्च्	शप्यमानः
भजंन्	भजमानः	श्रिन्	श्रयमाणः
भिदॅन्र्	भिन्दानः	षणुन्व्	सन्वानः
भृंन्	भरमाणः	षिन्त्	सिन्वानः, सिनानः
भृंन्क्	बिभ्राणः	षिचंन्ज्	सिञ्चमानः
भ्रस्जंन्ज्	भृज्जमानः	षुंन्त्	सुन्वानः
मिन्त्	मिन्वानः	ष्टुंन्क्	स्तुवानः
मींन्श्	मीनानः	हृंन्	हरमाणः
मुच्लृंन्ज्	मुञ्चमानः	ह्वेंन्	ह्वयमानः

उभयपदी धातुओं के कान प्रत्यय के रूप

धातु	रूप	धातु	रूप
क्रीन्श्	चिक्रियाण:	युज्ंन्र्	युयुजान:
खनुन्	चख्नान:	रञ्जंन्च्	रेजान:
ग्रहन्श्	जगृहाण:	रिचृंन्र्	रिरिचान:
चिनत्	चिच्यान:, चिक्यान:	रुधृंनर्	रुरुधान:
छिदृंन्र्	चिच्छिदान:	लिपंन्ज्	लिलिपान:
तनुन्व्	तेनान:	लिहंन्क्	लिलिहान:
तुदंन्ज्	तुतुदान:	लुपलृंन्ज्	लुलुपान:
दांन्क्	ददान:	लून्श्	लुलुवान:
दिशंन्ज्	दिदिशान:	वपंन्	ऊपान:
दुहंन्क्	दुदुहान:	वहंन्	ऊहान:
धांन्क्	दधान:	विचृंन्र्	विविचान:
पचंषन्	पेचान:	विद्लृंन्ज्	विविदान:
पून्श्	पुपूवान:	वृन्त्	वन्नाण:
प्रीन्श्	पिप्रियाण:	वेंन्	ववान:, ऊवान:
ब्रूंन्क्	ऊचान:	श्रिन्	शिश्रियाण:
भजंन्	भेजान:	षणुन्व्	सेनान:
भिदंनर्	बिभिदान:	षिन्त्	सिष्याण:
भृंन्क्	बभ्राण: बिभराञ्चक्राण:	षुंन्त्	सुषुवाण:
भ्रस्जंन्ज्	बभृज्जान:, बभृजान:	ष्टुंन्क्	तुष्टुवान:
मिन्त्	मिम्यान:	हनंक्	जघ्नान:
मींन्श्	मिमियान:	हृंन्	जह्राण:
मुचलृंन्ज्	मुमुचान:	ह्वेंन्	जुहुवान:
यजंन्	ईजान:		

परिशिष्ट ५
उपसर्गपूर्वक धातु के अर्थपरिवर्तन

उपसर्ग के संयोग से धातुओं के अर्थ बदलते हैं वे दिए गए हैं। धातुरूपादर्श में जिन धातुओं का संस्कृत अर्थ मिला उसको भी पाठक की सुविधा के लिए यहां दिया गया है।

१. अञ्चु (अञ्चति) जाना, पूजा करना

उपसर्ग अर्थ

परि (ऋजुगमने पार्श्वशयने वा, भ्रमणे) सीधा चलना, पसवाडे से सोना, घूमना
अप (दूरीकरणे) दूर करना
आ (नमने) झुकना
उप (निष्कासने) निकालना
वि (व्याप्तौ) व्याप्त होना
सम् (एकत्रीकरणे) इकट्ठा करना
उद् (व्यक्तवचने) स्पष्ट बोलना

२. अर्च (अर्चति) पूजा करना

सम् (पूजायां, स्थिरीकरणे संस्थापने च) पूजा करना, स्थिर करना, स्थापना करना

३. अर्जण् (अर्जयति) अर्जन करना

अति (गमने दूरीकरणे च) जाना, दूर करना
अनु (प्रेषणे) भेजना
अपि (योजने) जोडना
अव (प्रेषणे) भेजना

४. अर्थङ्ण् (अर्थयते) मांगना

प्र—प्रार्थना करना
अप—व्यर्थ करना
सम्—समर्थन करना
अनु—उसके जैसा होना
वि—व्यर्थ करना
अभि—याचना करना, स्वागत करना

५. अव (अवति) रक्षा करना

अनु (धैर्यदाने) धैर्य देना
उत् (ध्यानदाने प्रतीक्षायां प्रवृत्तकरणे च) ध्यान देना, प्रतीक्षा करना, प्रवृत्त करना
उप (स्नेहकरणे) स्नेह करना
सम् (तृप्तिकरणे संरक्षणे च) तृप्त करना, संरक्षण करना

६. अशूङ्त् (अश्नुते) व्याप्त होना

अनु (प्राप्तौ समानभवने) प्राप्त करना, समान होना
उद् (ऊर्ध्वगमने प्राप्तौ शासके च) ऊर्ध्व गमन करना, प्राप्त करना, शासन करना
उप (उपार्जने शासके) उपार्जन करना, शासन करना
परि (गमने समावेशे समाप्तौ च) गमन करना, समावेश करना, समाप्त करना

७. असुच् (अस्यति) फेंकना

वि (विस्तारे) विस्तार करना
सम् (संक्षेपीकरणे) संक्षेप करना
अनु (न्यक् स्थितौ) नीचे बैठना
अप (त्यागे) छोडना, दूर करना
नि (स्थापने) स्थापित करना
निर् (निष्कासने) निकालना
परि+उप (परितः आवृत्य स्थितौ उपासनायां च) पर्युपासना करना
प्र (गगनगतौ खण्डने अस्वीकारे च) आकाश में गति करना, तोडना, अस्वीकार करना
वि (विभागे) विभाग करना
वि+आ (विस्तारे अनुक्रमन्यासे च) विस्तार करना, अनुक्रम से रखना
सं+नि (संन्यासे) संन्यास लेना
सम् (एकत्रीकरणे) समास करना
उप (पूजाकरणे सेवायां च) पूजा करना, सेवा करना
उत्+आ (खंडने उपेक्षायां च) तोडना, उपेक्षा करना

८. आप्लृंत् (आप्नोति) प्राप्त करना

अभि+वि (परितो व्याप्तौ) चारों तरफ से व्याप्त होना
अव (प्राप्तौ) प्राप्त होना
उप (समीपागमने) समीप आना
सं+ (समाप्तौ) समाप्त होना
परि+वि (परितो व्याप्तौ) चारों तरफ से व्याप्त होना
सं+वि (सम्यक् व्याप्तौ) अच्छी तरह से व्याप्त होना

९. आसङ्क् (आस्ते) बैठना

उप (उपासने) उपासना करना
उत् (औदास्ये) उदास रहना
अधि—ठहरना

१०. इंण्क् (एति) जाना

प्र (परलोकगमने) परलोक में जाना
परा (परलोकगमने) परलोक में जाना
उत् (उद्यमने प्रकाशे वा) ऊंचा जाना, प्रकाशित होना
अनु (अनुगमने संबन्धे च) पीछे जाना, संबंध करना
अभि (अभिमुखगमने) सम्मुख जाना
उप (समीपगमने) समीप जाना
अभि+उप (स्वीकारे) स्वीकार करना
अभि+उद् (ऐश्वर्यादिकैः प्रसिद्धैः) ऐश्वर्य आदि से प्रसिद्धि पाना
निर् (निर्गमने दुर्गतौ च) निकलना, दुर्गति में जाना
अप+वि (व्यर्थनाशे) अपव्यय करना
आ (आगमने) आना
अधि (स्मरणे) स्मरण करना
वि+अति (विलोमे) प्रतिकूल होना
वि—व्यय करना
प्रति (विस्रम्भे प्रसिद्धौ ज्ञाने च) विश्वास करना, प्रसिद्ध होना, ज्ञान करना
अति (अतिक्रमे, विनाशे) अतिक्रमण करना, विनाश होना
अभि+प्र (अभिप्राये अनुसंदधाति) अनुसंधान करना
उद्—उदय होना
अभि+उप—स्वीकार करना
अप (विनाशे) विनाश होना

सं+उप (अभिमुखागमे) सम्मुख आना

११. इषज् (इच्छति) इच्छा करना

अधि (सत्कारे) सत्कार करना
प्रति (ग्रहणे, प्रतिवचने, दाने च) ग्रहण करना, उत्तर देना, देना
अनु (अन्वेषणे) अन्वेषण करना

१२ इषच् (इष्यति) जाना

प्र (प्रेषयति) भेजना

१३. ईक्षङ् (ईक्षते) देखना

प्र (बुद्धिपूर्वककरणे) बुद्धिपूर्वक करना
प्रति (प्रतीक्षायाम्) प्रतीक्षा करना
अप (आकांक्षायाम्, अवधिकरणे च) आकांक्षा करना, अवधि करना
सं (विवेचने) समीक्षा करना, आलोचना करना
अव—जागरूक होना
निर्—निरीक्षण करना
उप (उपेक्षायाम्) उपेक्षा करना
उत्+प्र (उत्प्रेक्षायाम्) उत्प्रेक्षा करना

१४. ऊहङ् (ऊहते) तर्क करना

प्र—तर्क करना
वि (व्यूहरचनायाम्) व्यूह रचना करना
अप (दूरीकरणे) दूर करना
निर् (वस्तिकर्मणि) वस्ति का प्रयोग करना,एनिमा लेना
सं (एकत्रीकरणे) इकट्ठा करना
प्रति (विघ्ने) विघ्न करना
प्र+वि (किञ्चित् प्रतीक्षायाम्) कुछ प्रतीक्षा करना

१५. ऋं (ऋच्छति) पाना

सं (संगतौ) साथ में जाना

१६. कलण् (कलयति) गिनना, जाना

सं (एकत्रीकरणे संघातकरणे च) संकलना करना
वि (वियोजने) खण्डित करना

१७. काशृङ् (काशते) चमकना

अव (महदन्तरे) फासला रखना
वि (मनसः स्फुटीभावेषु) विकाश करना
प्रति (सदृशे) सदृश होना
नि (सदृशे) सदृश होना
सं (सदृशे) सदृश होना
आ (गगने) आकाश

१८. कुषश् (कुष्णाति) बाहर निकालना

अव (सिद्धे, स्थापिते च) सिद्ध होना, स्थापित करना
निस् (आकृष्य बहिर्निष्काशने) खींचकर बाहर निकालना

१९. कृं (करोति, कुरुते) करना

प्र (प्रस्तावे) प्रस्ताव करना
सं—संस्कार करना
परा (निराकरणे) निराकरण करना
अप (अपकारे) अपकार करना
अनु (अनुकरणे) अनुकरण करना
निर्+आ (निराकरणे) निराकरण करना
अधि (अधिकारे) अधिकार करना
प्रति (प्रतिकारे) प्रतिकार करना
परि (परिष्कारे) परिष्कार करना
पुरस् (पुरस्कारे) पुरस्कार करना
आविस् (आविष्कारे) आविष्कार करना
प्रादुस् (प्रादुष्करोति) प्रकट करना
वि+आ—विस्तार सहित बोलना
नमस् (नमस्कारे) नमस्कार करना
साक्षात्—साक्षात् करना

उरी—स्वीकार करना
उरुरी—स्वीकार करना
तिरस् (पराभवे) तिरस्कार करना

२०. कृपूङ् (कल्पते) समर्थ होना

सं (संकल्पे) संकल्प करना

२१. कॄज् (किरति) फेंकना

प्रति (हिंसायाम्) हिंसा करना
उप (छेदने) छेदन करना
अव (व्रतलोपे) ब्रह्मचर्य व्रत का भंग होना
सं (मिश्रीकरणे) मिलाना
वि (दाने) देना

२२. क्रमु (क्राम्यति, क्रामति) चलना

प्र (आरम्भे) आरम्भ करना
परा (पराक्रमे) पराक्रम करना
उप (आरंभे) आरंभ करना
वि (विक्रमे) विपरीत जाना
अति (अतिक्रमे) अतिक्रमण करना
उत् (उत्क्रमणे) ऊपर जाना, चढना
आ (आक्रमणे) आक्रमण करना
सं (संक्रमे) संक्रमण करना, फैलाना

२३. क्रीञ्श् (क्रीणाति, क्रीणीते) खरीदना

वि (विनिमये) विनिमय करना
परि (नियमेन भृत्यादिना स्वीकरणे) वेतन निश्चय कर नौकर को काम पर रखना

२४. क्रीडृ (क्रीडति) क्रीडा करना

परिक्रीडते—खेलना
परिक्रीडति—अव्यक्त शब्द करते हुए खेलना

२५. क्रुशं (क्रोशति) बुलाना, रुलाना

अनु (दयायाम्) दया करना
नि (निन्दायाम्) निंदा करना
उप (दोषदाने) दोष देना
प्र (पूत्कारे) पुकारना

२६. क्षिपंन्ज् (क्षिपति, क्षिपते) फेंकना

प्र—प्रक्षेप करना
सं—संक्षेप करना
अव—नीचे फेंकना
नि—स्थापित करना, रखना
वि—व्याकुल होना
आ—आक्षेप करना
प्रति—खण्डन करना
प्रति+आ—वापस आक्षेप करना
परि—चारों तरफ से वींटना
उत्—ऊपर फेंकना

२७. ख्यांक् (ख्याति) प्रसिद्ध होना

प्र (प्रसिद्धौ) प्रख्यात करना
सं (संख्याकरणे) गिनना, संख्या करना
वि (प्रसिद्धौ) विख्यात करना
आ (आख्यायाम्) कहना
वि+आ (विवरणे) व्याख्यान करना
उप+आ (उपाख्याने) उपाख्यान करना
अभि+आ (मिथ्यारोपे, निह्नवे च) मिथ्या आरोप लगाना, चुगली करना
प्रति+आ (अस्वीकारे) प्रत्याख्यान करना

२८. गणण् (गणयति) गिनना

अव (अवज्ञायाम्) अवज्ञा करना
अधि (व्याख्यानस्तुतिगणनेषु) व्याख्यान देना, स्तुति करना, गणना करना

२९. गम्लृं (गच्छति) जाना

अप (निःसरणे) भाग जाना
सं (संगतौ) संगत करना
उप (ज्ञाने) जानना

उप (पार्श्वगमने) पास में जाना
आ—आना
उप+आ (निकटागमने) निकट आना, सामने आना
नि (ज्ञानप्राप्तौ) ज्ञान प्राप्त करना
दुर् (दुःखे गमने) दुर्दशा में जाना
निर् (बहिर्गमने) निकलना
परि (दक्षिणायां परितः व्याप्तौ) प्रदक्षिणा करना
अधि (मिलने प्राप्तौ वा) प्राप्त करना
अव—जानना
अभि+उप (स्वीकारे) स्वीकार करना
सं+आ (मिलने एकत्रीभावे च) मिलना, इकट्ठा करना
सु (सुष्ठुगमने) अच्छी तरह से जानना
प्रति+आ (प्रत्यागतौ) वापस लौटना
वि — विनाश होना

३०. गाहूङ् (गाहते) डुबकी लगाना

अव (स्नाने) स्नान करना, अवगाहन करना
वि (कम्पने) बिलोडन करना

३१. ग्रहन्श् (गृह्णाति) ग्रहण करना

सम् (संग्रहे) संग्रह करना
अव (वृष्टिप्रतिबंधे) वृष्टि की रुकावट करना
नि (निग्रहे, तिरस्कारे) निग्रह करना, तिरस्कार करना
वि (विग्रहे युद्धकरणे समस्तस्य पृथक्करणे च) कलह करना, युद्ध करना, समस्त पद के खंडों को अलग करना
प्रति (स्वीकारे) स्वीकार करना
आ (आग्रहे) आग्रह करना
अनु (अनुग्रहे) अनुग्रह करना
परि—परिग्रहण करना
अभि—अभिग्रह करना

३२. घटषङ् (घटते) चेष्टा करना

उत् (भाषणे प्रकाशे च) बोलना, प्रकट करना
वि (वियोजने) अलग करना
सम् (योजने) जोडना

३३. घट्टृण् (घट्टते) हिलना

परि (प्रसारे) फैलाना
वि (मज्जने शौचे विकारे च) मज्जन करना, शुद्ध करना, विकृत करना
सम् (संस्पर्शे) स्पर्श करना

३४. चक्षङ्क् (चक्षते) बोलना

वि+आ (विवरणे) व्याख्या करना

३५. चर (चरति) खाना, जाना

सम् (संक्रमणे) संक्रमण करना, संचार करना
उत् (उदये) उदय होना
अति+आ (आज्ञाभंगे) अनुचित आचरण करना
अनु (अनुसरणे) पीछे चलना, अनुकरण करना
अति (नियमोल्लंघने) नियम का उल्लंघन करना
परि+उप (सेवायाम्) सेवा करना
उप (अर्चनविधौ च) सेवा करना, पूजा करना
अप (नाशे) नष्ट होना
प्र (प्रसिद्धव्याप्तौ आचरणे च) प्रचार करना
उत् (आज्ञाभंगे देशात् निःसरणे भाषणे उदये च) आज्ञा भंग करना, उच्चारण करना, बाहर आना, ऊपर उठना
वि (विचारे) विचार करना

आ (उत्तमकार्ये करणे च) उत्तम कार्य करना, आचरण करना
सम्+आ (उपर्यारोहणे) ऊपर चढना
सम्+आ (प्रसिद्धौ श्रेष्ठाचरणे समाचरे च) प्रसिद्ध होना, श्रेष्ठ आचरण करना

३६. चिन्त् (चिनोति) चुनना

उप (वर्द्धने) बढना
अप (हीनकरणे) कम करना
सम्+उत् (समुच्चये) एक साथ इकट्ठा होना
अभि+उत् (अभ्युच्चये) उत्कर्ष होना, वृद्धि करना
सम् (सञ्चये) संचय करना
निस् (निश्चये) निश्चय करना
वि+निर् (सम्यग् निश्चये) विशेष रूप से निश्चय करना।
प्र (अतिशये) उपचय करना
नि (समूहे) समूह, संचय करना
अव (कुसमादिग्रहणे) चुनना
परि (अभ्यासे ज्ञाने सम्बन्धे च) अभ्यास करना, ज्ञान करना, संबंध करना

३७. जृभिङ् (जृम्भते) जंभाइ लेना

उत् (प्रकाशे) खिलना

३८. ज्ञांश् (जानाति) जानना

अनु (अनुमोदने) अनुमोदन करना
अव (अवमाने) अपमान करना
उप (प्रथमज्ञाने) प्रथम ज्ञान करना
प्रति (प्रतिज्ञायां वचनदाने च) प्रतिज्ञा करना, वचन देना
प्रति+सम् (प्रतिज्ञायां वचनदाने च) प्रतिज्ञा करना, वचन देना
प्रति+अभि (सकलितज्ञाने उपलक्षिते च) पहचान करना
वि (स्पष्टज्ञाने) स्पष्ट जानना
सम् (उत्कण्ठापूर्वकस्मरणे) उत्कण्ठापूर्वक स्मरण करना
परि (त्यागे) छोडना

३९. टकिण् (टङ्कयति) चिह्न लगाना

उत् (उल्लेखे) उल्लेख करना
निस् (बन्धने) बांधना

४०. णमं (नमति) झुकना

प्र (प्रणामे) प्रणाम करना
परि (परिणामे) परिणमन होना

४१. णहंन्च् (नह्यति) बांधना

सम् (कवचधारणे) युद्ध के लिए तैयारी करना
परि (परिणाहे) विस्तार करना

४२. णींन् (नयति, नयते) पाना

प्र (प्रेमकरणे संदेशे शिक्षाकरणे च) प्रेम करना, संदेश देना, शिक्षा देना
अप (दूरीकरणे) दूर करना
उप (समीपानयने) समीप लाना
उत् (उन्नयने) ऊंचा ले जाना
अभि (अभिनये) अभिनय करना
अनु (अनुनये) प्रार्थना करना
वि (विनये विगणने च) विनय करना, कर्ज चुकाना

४३. दांन्क् (ददाति) देना

आ (ग्रहणे) लेना
परि (दाने ऋणदाने पारितोषे च) देना, ऋण देना, पुरस्कार देना
प्र (दाने) देना
वि+आ (उद्घाटने) खोलना
सम् (सन्मतौ) स्वीकृति देना
अनु (दापने) दिलाना

४४. दिशंन्ज् (दिशति) दान देना

आ (आज्ञायाम्) आदेश देना
उत् (उद्देशे) संकेत या लक्ष्य करना, बतलाना।
अप (अपदेशे) बहाना करना
अति (अतिदेशे–तुल्यतया कथने) समान रूप से कहना।
वि+अप (व्यपदेशश्छलम् विपर्यये संज्ञाकरणे च) छल करना, नाम करना
नि (नियोगे) शासन करना
निर् (निर्देशे) निर्देश देना
प्र (नियुक्तौ) नियुक्त करना
प्रति+सम् (प्रतिदाने) देना
सम्+आ (मान्ये) मानना
सम्+उप (दूरस्थितवस्तुनः अंगुल्यादिभिर्दर्शने) अंगुलि से संकेत करना

४५. दिहंन्क् (देग्धि) लेप करना

सम्—संदेह करना
उप—उपलेप करना

४६. धांन्क् (दधाति) धारण करना

सम् (सन्धाने) संधि करना
अनु+सम् (अनुसंधाने) अनुसंधान करना
वि (विधाने) करना
अन्तर् (अन्तर्धाने) छिपना
श्रत् (श्रद्धायाम्) श्रद्धा करना
नि (निधाने) स्थापित करना
अभि (अभिधाने) कहना
परि (परिधाने) पहनना
प्र+नि (प्रणिधाने) समाधि लेना
सम्+नि (सन्निधाने) पास रखना
उप+आ (उपाधौ) उपाधि लेना
वि+आ (व्याधौ) व्याधि होना
वि+अव (व्यवधाने) अवरोध होना, छिपना
अव (अवधाने) ध्यान और एकाग्रता
उप (उपधाने–शयनोपकरणे भेदकरणे) तकिया लगाना
सम्+आ (समाधाने) समाधान देना
सम्+अव (सावधाने ध्यानदाने च) सावधान होना, ध्यान देना
आ (स्वीकारे करणे स्थापने च) स्वीकार करना, स्थापना करना, धारण करना
उप (उपकारे सहायदाने च) उपकार करना, सहायता देना।
अपि (आच्छादने) ढकना
प्रति+वि (प्रतिकारे निवारणे प्रत्युत्तरे च प्रतिकार करना, निवारण करना प्रत्युत्तर देना
सम्+प्र (चर्चाकरणे साधनकरणे च) चर्चा करना, साधन करना

४७. ध्यैं (ध्यायति) चिंतन करना

अप—बुरा ध्यान करना
नि—देखना
वि—बुझाना
प्रति+सम् (चर्चाकरणे साधनकरणे च) चर्चाकरना, साधन करना
सम्+नि (निकटे) निकट होना
सम् (मिलने) मिलना
सम्+आ (मनःस्थैर्ये शंकापनयने सुखे शान्तौ च) मन को स्थिर करना, शंका दूर करना, शान्ति प्राप्त होना।

४८. नंदि (नन्दति) प्रसन्न होना

आ (सुखीभवने) आनन्दित होना
अभि (इच्छायां स्वीकारे सम्वर्द्धने स्तुतौ च) इच्छा करना, स्वागत करना, सराहना करना, अभिनन्दन करना।

प्रति (उपकारमानने सुनिर्वाहे च) उपकार मानना, अच्छीतरह निर्वाह करना
दुर् (अनिष्टनीतिवर्तने) बुरी नीति का व्यवहार करना
परि (विवाहे) विवाह करना
सम् (एकत्रीकरणे) इकट्ठा करना
सम्+अनु (प्रार्थनायाम्) प्रार्थना करना
सम्+आ (एकत्रीकरणे) इकट्ठा करना

४९. पटण् (पाटयति) नीचे गिरना

उत् (उन्मूलने) उखाडना

५०. पत्लृं (पतति) गिरना

उत् (उर्ध्वपतने) उडना
प्र+नि (नमस्कारे) नमस्कार करना
अनु (अनुगमने) अनुसरण करना
अति (जये श्रेष्ठभवने) आगे निकल जाना
अभि+अव (उत्तरणे) उतरना
आ (आगमने प्राप्तौ उपस्थितौ च) आना, प्राप्त करना, उपस्थित होना
नि (घटितभवने मिलने सिद्धशब्दे च) घटित होना, मिलना, शब्द का अनियमित रूप से निष्पन्न होना
निर् (पलायने आच्छादने च) पलायन करना, ढकना
परि (शीघ्रगमने मूल्यवद्भवने प्रवेशे च) शीघ्र जाना, मूल्यवान् होना, प्रवेश करना
वि+नि (प्रतिगमने) वापिस जाना
सम् (सार्द्धगमने मिलने च) साथ में जाना, मिलना
सम्+आ (शुद्धीकरणे) शुद्ध करना
सम्+उत् (पलायने उड्डयने च) पलायन करना, उडना
सम्+नि (अग्रेवा बहिर्गमने संयोगे च) आगे जाना, बाहर जाना, संयोग होना

५१. पद्लृङ्च् (पद्यते) जाना

उत् (उद्भवे) उत्पन्न होना
सम् (सम्पत्तौ) संपन्न होना
वि (नाशे) नष्ट होना
आ (आपत्तौ) आपत्ति में पडना
प्रति (ज्ञाने स्वीकारे वा) जानना, स्वीकार करना
उप (उपपत्तौ–युक्तियुक्तभवने) युक्तियुक्त होना
अभि+उप (स्वीकारे) स्वीकार करना
वि+उत् (मूलतत्वान्वेषणे मनने च) मूल रूप की खोज करना, मनन करना
समा (उपस्थितौ समाप्तौ च) उपस्थित होना, समाप्त होना
प्र (उत्पत्तौ प्रारंभे शरणं प्राप्ते च) उत्पन्न होना, प्रारंभ करना, शरण पाना

५२. बन्धंश् (बध्नाति) बांधना

अनु (अनुबन्धने योजने) पीछे बंध जाना
सम् (सम्बन्धे) सम्बन्ध करना
उत् (उद्बन्धने) स्वयं फांसी लगा लेना
प्रति (प्रतिबन्धे) प्रतिबन्ध लगाना
नि (निबन्धे–ग्रन्थ रचनायां) निबन्ध लिखना
निर् (निर्बन्धे) बन्धन रहित होना
प्र (प्रबन्धे) शोध प्रबन्ध लिखना, व्यवस्था करना
वि (मलरोधे) मल का अवरोध करना

५३. बाधृङ् (बाधते) पीडा देना

सम् (अन्योन्योत्पीडने) परस्पर में उत्पीडन करना, दबाना

५४. बुधङ्च् (बुध्यते) जानना

उत् (उद्बोधे) उद्बोधित करना

सम् (सम्बोधने-क्रियासु नियोगार्थमाभिमुख्य-सम्पादने) सम्बोधन करना
प्र (जागरणे विकासे च) प्रबुद्ध होना, बिकसित होना
अव (ज्ञाने) जानना

५५. भांक् (भाति) शोभित होना

वि+अति (परस्परभाने) परस्पर भान होना
प्रति (प्रतिभायां) आभास होना

५६. भू (भवति) होना

सम् (निश्चितप्रायविषये) संभव होना
अधि (अनुशासनकरणे) अनुशासन करना
वि+अभि (परस्परमित्रभवने) परस्पर मित्र होना
प्रादुर् (प्रकटीकरणे) प्रकट होना
आविर् (प्रकटीकरणे) प्रकट होना
तिरस् (प्रच्छन्ने) तिरोहित होना
उत् (उत्पत्तौ) उत्पन्न होना
प्रति (प्रतिरूपभवने) सदृश होना
परा (अशक्यतानिश्चये निवृत्तौ) हार जाना
परि (तिरस्कारे) तिरस्कार करना
अनु (अनुभवे) अनुभव करना
प्र—पैदा होना, समर्थ होना
अभि—हार जाना
सं+उद्—उत्पन्न होना

५७. मदीच् (माद्यति) हर्षित होना

उत् (उन्मादे) उन्माद होना
प्र (प्रमादे) प्रमाद होना

५८. मनङ्च् (मन्यते) जानना

अभि (अभिमाने) अभिमान करना
सम् (सम्माने) सम्मान करना
अप् (अपमाने) अपमान करना
अव (अपमाने) अपमान करना
वि (विमतौ) विपरीत मानना

५९. मन्त्रङ्ण् (मन्त्रयते) मन्त्रणा करना

आ (आमन्त्रणे सम्बोधने च) आमन्त्रण देना, सम्बोधन करना
नि (निमंत्रणे) निमन्त्रण देना
अभि (मन्त्रपाठेन संस्कारकरणे) मंत्र पाठ से संस्कारित करना।

६०. मस्जोंज् (मज्जति) स्नान करना, डूबना

नि (निमज्जने–अत्यन्तासक्तौ) अत्यन्त आसक्त होना, डूब जाना।
उत् (उन्मज्जने) उन्मज्जन करना, उत्प्लवन करना।

६१. मांक् (माति) समाना

प्र (प्रमाणे) प्रमाण करना
परि (परिमाणे) परिमाण करना
उत् (उन्माने) उन्मान करना
वि (विमाने) तिरस्कार करना

६२. मिनत् (मिनोति) फेंकना

अनु (अनुमाने) अनुमान करना
प्र (प्रमाणे) प्रमाण करना
उप (उपमाने) उपमित करना

६३. मिषज् (मिषति) स्पर्धा करना

उत् (उन्मेषे, प्रकाशे) प्रकाशित होना, खुलना
नि (निमेषे) निमेष होना, बंद होना

६४. मील (मीलति) संकुचित करना

प्र (प्रमीलायाम्) नींद लेना
नि (निमीलने) बंद होना
उत् (उन्मीलने) खुलना

६५. मुच्लृंन्ज् (मुञ्चति) छोडना

आ (परिधाने) पहनना

वि (त्यागे) छोडना

६६. मृशज् (मृशति) स्पर्श करना

परा (परामर्शे) परामर्श करना

वि (विमर्शे) विमर्श करना, चिन्तन करना

अभि (अभिमाने मर्दने पराभवने च) अभिमान करना, मर्दन करना, पराभव करना।

६७. यतीङ् (यतते) प्रयत्न करना

आ (वशीभवने) वशीभूत होना

६८. यमुं (यच्छति) निवृत्त होना

उत् (उद्यमे) उद्यम करना

उप (स्वीकारे, विवाहे) स्वीकार करना, विवाह करना

६९. यांक् (याति) जाना

प्र—प्रयाण करना

अप—दूर जाना

अनु—अनुसरण करना

निर्—निकलना

आ—आना

अभि—सम्मुख जाना

७०. युजंङ्च् (युज्यते) समाधि होना

अनु (प्रश्ने सावधाने दोषारोपणे व्याख्याने च) प्रश्न करना, सावधान होना, दोषारोपण करना, व्याख्या करना।

अभि (लपने पुत्कारे दोषदाने अद्भुतप्रश्ने अभियोगे च) बोलना, पुकार करना, दोष देना, अद्भुत प्रश्न करना, आरोप लगाना।

उप (भोजने कार्यानयने बलाग्रहणे च) भोजन करना, कार्य लेना, बलपूर्वक ग्रहण करना।

वि (पृथक्करणे प्रेरणायां च) पृथक् होना, प्रेरणा देना।

वि+नि (व्यये नियमितकरणे प्रेषणे ग्रंथने एकत्रीकरणे च) व्यय करना, नियमित करना, भेजना, ग्रथित करना, इकट्ठा करना।

वि+प्र (पृथक्करणे) पृथक् करना

सम् (मेलने) संयुक्त होना

७१. युजंन्र् (युनक्ति) जोडना

प्र—प्रयोग करना

उप—उपयोग करना

सम्—संयोग करना

अनु—प्रश्न करना

नि—नियुक्त करना

वि—वियोग करना

प्रति—विरोध करना

परि+अनु—प्रश्न करना

अभि—लांछन लगाना

उद्—उद्योग करना

७२. रञ्जंन्च्—रागे (रज्यति) राग करना

उप (ग्रहणे ग्रासे च) ग्रहण करना, ग्रसित करना।

अनु (प्रीतौ) प्रीति करना

वि (विरागे) विरक्त होना

७३. राधंच् (राध्यति) पूरा करना

अप—अपराध करना

वि—विराधना करना

आ—आराधना करना

७४. रमङ् (रमते) क्रीडा करना

उप (निवृत्तौ नाशे कर्म्मत्यागे च) निवृत्त होना, नाश होना, पलायन करना।

वि (विश्रामे) विश्राम करना
उप+आ (निवृत्तौ प्रत्यागतौ च) निवृत्त होना, लौटना।

७५. रिचिंर् (रिणक्ति) रेचन करना

अति (अतिशये-अतिक्रमे) अतिक्रान्त होना
वि+अति (विपरीतकरणे) विपरीत करना

७६. रुधिंर् (रुणद्धि) रोकना

प्रति (प्रतिरोधे) प्रतिरोध करना
उप (उपरोधे) उपरोध करना, रोकना
अनु (अनुरोधे) अनुरोध करना
वि (विरोधे) विरोध करना
अव—अवरोध करना

७७. रुहं (रोहते) उगना

आ (आरोहे) आरोहण करना
अव (अवरोहे) नीचे आना, उतरना
वि (उन्मूलीभवने) जड से उखाडना
प्र—अंकुरित होना, उगना
सम्—उत्पन्न होना
अधि—आश्रित करना

७८. लप (लपति) बोलना

वि (विलापे) विलाप करना
प्र (प्रलापे–अनर्थकवाक्यप्रयोगे) प्रलाप करना
सम् (संलापे–मिथो भाषणे) परस्पर में बात करना।
अनु (मुहुर्भाषणे) बार-बार बोलना
अप (अपलापे) अपलाप करना
उत् (काकुवाचि अन्योक्तौ च) व्यंग में बोलना, अन्योक्ति से कुछ कहना।
अभि—कहना
उद्—स्वर भंग कर बोलना
आ—आलाप करना

७९. लबिङ् (लम्बते) लटकना

अव (अवलम्बने आश्रयकरणे च) लटकना आश्रित होना।
वि (विलम्बकरणे) विलम्ब करना
आ (आलम्बने) आश्रय लेना
प्र—प्रलम्ब होना

८०. लभंषङ् (लभते) प्राप्त होना

आ (स्पर्शने घातने च) छूना, वध करना
वि+प्र (विप्रलम्भे) ठगना
उप+आ (उपालंभे) उपालंभ देना

८१. लस (लसति) आलिंगन करना क्रीडा करना

उद् (उल्लासे) उल्लसित होना

८२. लिखज् (लिखति) लिखना

उद् (उल्लेखे) उल्लेख करना

८३. लिपंन्ज् (लिम्पति, लिम्पते) लीपना

अव (गर्वे) अभिमान करना
अनु (चन्दनादिमर्दने) लेप करना

८४. वचंक् (वक्ति) बोलना

प्रति (प्रतिवाक्ये) प्रतिवाद करना

८५. वद (वदति) बोलना

अप—अपवाद करना
सम्—संवाद करना
अनु—अनुवाद करना
वि—विवाद करना
प्रति—खंडन करना।

८६. वदिङ् (वन्दते) प्रणाम करना

अभि (प्रणामे) प्रणाम करना

८७. वपंन् (वपति, वपते) बोना

निर् (दाने) देना

८८. वसं (वसति) रहना

उप (उपवासे) उपवास करना, निकट रहना
प्र (विदेशगमने) प्रवास करना
अनु—रहना
अधि—रहना
आ—रहना

८९. वहृंन् (वहति) वहन करना

उद् (उद्वाहे) विवाह करना

९०. विशंज् (विशति) घुसना

नि (निविशति) बैठना
आ (निविशते) व्याप्त होना
अभि+नि (बुद्धिप्रवेशने) ज्ञान पूर्वक प्रवेश करना
सम् (शयने) सोना
निर् (भृतौ भोगे च) वेतन देना, भोग करना
उप (स्थितौ) बैठना
परि (परिवेशने) घेरना

९१. वृतुङ् (वर्तते) होना

अति (जये नियोगे उल्लंघने च) जीतना, नियुक्त करना, अतिक्रमण करना
अनु (अनुकरणे) अनुकरण करना
अप (प्रतिगमने) लौटना
आ (भ्रमणे) घूमना
नि (निवृत्तौ) निवृत्त होना
निर् (करणे) करना
परि (वेष्टने परिवर्तने वर्चस्वीभवने चक्रवद् भ्रमणे च) वेष्टित करना, परिवर्तन करना, वर्चस्वी होना, चक्राकार घूमना
प्र (कार्यलग्ने प्रारंभे च) कार्य में प्रवृत्त होना, प्रारंभ करना
वि (गमने चक्रवद् भ्रमणे च) जाना, चक्राकार घूमना, अवस्था बदलना
पुनर्+आ—वापिस लौटना
वि+आ—पृथक् होना
उप—समीप होना

९२. वृनृत् (वृणोति) वरना

सम् (संकोचने) संकुचित करना
वि (विस्तारकरणे) विस्तार करना
अति (जये नियोगे उल्लंघने च) विजित होना, नियुक्त करना, प्रेरित करना
आ—ढांकना

९३. व्रज (व्रजति) जाना

परि (सन्न्यसने) संन्यास लेना
अनु (अनुगमने) अनुगमन करना
अप (अपगमने) दूर होना

९४. शमुच् (शाम्यति) शान्त होना

उप (निवृत्तौ) उपशांत होना, निवृत्त होना

९५. शासुक् (शास्ति) अनुशासन करना

आ (आशंसने-आशीर्वादप्रार्थने) आशीर्वाद की प्रार्थना करना

९६. शिष्लृं् (शिनष्टि) विशेषित करना

वि (विशेषकरणे) विशिष्ट करना

९७. शिषण् (शेषयति) अनुपयुक्त होना

वि (अतिशायने) विशिष्ट होना
अव (अवशेषे) अवशिष्ट होना

९८. शीङ्क् (शेते) सोना

अति (अतिशेते) अतिक्रमण करना
अधि (शय्यामधिशेते) सोना
सम्—संशय होना
अनु—पश्चात्ताप करना

९९. शुच (शोचति) शोक करना

अनु (किञ्चिदुद्देशेन पश्चात्तापे) शोक करना, पश्चात्ताप करना

१००. श्रिन् (श्रयति) सेवा करना

आ (आलम्बने) आलम्बन लेना
प्र (प्रागल्भ्ये) दक्ष होना, वाचाल होना
उद् (उच्चभवने) उच्च होना

१०१. श्रुंत् (शृणोति) सुनना

प्रति (स्वीकारे) स्वीकार करना
आ (स्वीकारे) स्वीकार करना
सम् (संश्रवे) स्वीकार करना
प्रति—प्रतिज्ञा करना

१०२. श्लिषंच् (श्लिष्यति) आलिंगन करना

प्र (प्रश्लेषे) आलिंगन करना

१०३. श्वसक् (श्वसिति) श्वास लेना

आ (आश्वासे) आश्वासन देना
वि (विश्वासे) विश्वास करना
प्र (प्रश्वासे) प्रश्वास लेना
नि (निश्वासे) निश्वास लेना

१०४. षञ्जं (सजति) मिलना

प्र (प्रसंगे) अनुरक्त होना
अनु (अनुसंगे) आसक्त होना
अभि (अभिषंगे-पराभवे) पराजित होना

१०५. षद्लृंज् (सीदति) नष्ट होना, जाना, विषाद करना

प्र (प्रसादे) प्रसन्न होना
वि (विषादे) खिन्न होना
अव (अवसादे) अवसाद करना, दुःख करना
उद् (उन्मूलने) उखाडना
आ (नैकट्ये) निकट होना

१०६. षहङ् (सहते) सहन करना

उद् (उत्साहे) उत्साहित होना

१०७. षिचंन्ज् (सिञ्चति) सिंचन करना

नि (निषेके—गर्भाधाने) निषेक करना, गर्भाधान करना।
अभि (अभिषेके) अभिषेक करना
उद् (गर्वे) गर्व करना

१०८. षिधु (सेधति) जाना

नि (निषेधे) निषेध करना
प्रति (निषेधे) प्रतिषेध करना
आ (आसेधे—राजाज्ञयावरोधे) राजा की आज्ञा से प्रतिबन्धित होना
उद् (उच्चतायां) ऊंचा होना

१०९. षुंन्त् (सुनोति) ऐश्वर्य होना

अभि (अभिषवे-सोमं निष्पादयति स्नाति वा) सोमरस निष्पन्न करना, स्नान करना

११०. षोंच् (स्यति) विनाश करना

वि+अव (उद्यमे बोधे च) उद्यम करना, बोध देना
अनु+वि (अवबुद्धस्य पुनर्बोधे) जाने हुए का पुनः बोध करना।

१११. ष्टुंन्क् (स्तौति, स्तवीति) स्तुति करना

प्र (प्रस्तावे) प्रस्तुत करना
सम्—परिचय करना
अभि—स्तुति करना

११२. ष्ठां (तिष्ठति) ठहरना

प्र (प्रस्थाने) प्रस्थान करना
प्रति (प्रतिष्ठायां) प्रतिष्ठा करना
अधि (अधिष्ठाने) आधारभूत होना
उद् (उत्थाने) उठना
सम्—मरना, ठहरना
अनु—अनुष्ठान करना
अव—ठहरना, रहना

११३. सृं (सरति) जाना

प्र (प्रसारे) फैलाना
अप (अपसरणे) दूर होना

अनु (अनुसरणे) अनुसरण करना
वि (विस्तारे) विस्तृत होना
अभि (अभिसारे-कान्तार्थे तया संकेतस्थाने गमने) प्रिय से मिलने के लिए संकेतित स्थान पर जाना।
उद् (उत्सरणे-दूरीभवने) दूर होना
सम्—चक्कर लगाना
निस्—निकालना
परि—आसपास घूमना
उप—निकट जाना

११४. सृप्लृं (सर्पति) जाना

उद् (उल्लंघने—उत्थाने) ऊपर चढना उत्थान करना
अप (अपयाने) दूर होना
सम् (समन्तात् गतौ व्याप्तौ च) चारों ओर से गति करना, व्याप्त होना।

११५. स्कन्दृं (स्कन्दति)

अव (अवरोधने) अवरोध करना

११६. स्तृंन्त् (स्तृणोति) ढांकना

वि (विस्तारे) विस्तार करना
सम् (संस्तरे) बिछाना

११७. स्पर्धङ् (स्पर्धते) स्पर्धा करना

आ (आस्फालने) फडफडाना

११८. स्पृशंज् (स्पृशति) छूना

उप (आचमने) आचमन करना

११९. स्मृं (स्मरति) स्मरण करना

वि (विस्मरणे) भूलना

१२०. हनंक् (हन्ति) मारना, जाना

परा (पराहतौ) आघात करना
सम् (संघाते) एकत्रित होना
वि (विघाते) चोट करना

१२१ हांङ्क् (जिहीते) जाना

उत् (उदये) उदित होना

१२२. हिंत् (हिनोति) जाना, बढना

प्र (प्रेरणे) प्रेरित करना

१२३. हृंन् (हरति) हरण करना

प्र (प्रहारे) प्रहार करना
अप (दूरीकरणे) अपहरण करना
सम् (संहारे) संहार करना
अनु (अनुकरणे) अनुकरण करना, सदृश होना
सम्+अभि—हरण करना
वि+आ (कथने) कहना
अभि+अव (भोजने) भोजन करना
अभि (कोलाहले) कोलाहल करना
अभि+आ (तर्कवितर्के शुद्धाशुद्धविचारे वादे च) तर्क करना, शुद्ध और अशुद्ध का विचार करना, वाद करना।
अभि+उत् (दाने) देना
अभि+वि+आ (उच्चारणे) उच्चारण करना
उप (दाने समीपानयने) देना, समीपलाना
उप+सम् (अदाने रक्षणे एकत्रीकरणे समाप्तौ च) नहीं देना, रक्षा करना, इकट्ठा करना, समाप्त करना।
नि (निस्तब्धीभावे शीते निष्कालने च) निस्तब्ध होना, ठंढा होना, निकालना
निर् (अपमाने) अपमान करना
निरा (उपवासे) उपवास करना
परि (गालिदाने निन्दायां त्यागे रोधे सार-तत्त्वनिष्कालने च) गालि देना, निन्दा करना, त्याग करना, रोकना, सारतत्व को निकालना।
प्रत्या (इन्द्रियदमनपूर्वकध्याने) प्रत्याहार करना-इन्द्रियों को विषयों से हटाना।
प्रति+सं (त्यागे अप्रतिष्ठायां च) छोडना,

अप्रतिष्ठा पाना ।

वि+अव (उद्योगे वादे कलहे च) उद्यम करना, वाद करना, कलह करना

सम् (मारणे नाशे एकत्रीकरणे च) मारना, नाश करना, एकत्रित करना

सम्+अभि+वि+आ=समभिव्या (एकमतेन योजनायां युक्तिनिष्काशने च) एक मत से योजना करना, युक्ति निकालना ।

सम्+उद्+आ = समुदा (कथने) कहना

सम्+उप (एकत्रीकरणे) इकट्ठा करना

वि+अति (मिथः करणे एकमतेन चौर्ये च) परस्पर मिलना, एक मत से चोरी करना

वि—विहार करना

आ—आहार करना

नि—निहार करना

अव—निकालना

अधि+आ—ऊपर से लेना

१२४ हनुंङ्क् (ह्नुते) छिपाना

अप (अपह्नुते) अपलाप करना

नि (गोपने) छिपाना

१२५ ह्वेंन् (ह्वयते) स्पर्धा करना, शब्द करना

आ (आह्वाने) बुलाना ।

परिशिष्ट ६

एकार्थ धातुएं

अर्थ — एकार्थधातवः

अधिकार करना—अधिकरोति

अनुकरण करना—अनुकरोति, अनुसरति, अनुयाति, अनुहरति, अनुविदधाति, अनुविदधते, विडम्बयति, तुलयति

अनुग्रह करना—अनुगृह्णाति

अनुज्ञा देना—अनुजानाति, अनुमनुते, अनुमन्यते

अनुताप करना—अनुशेते, अनुतप्यते

अनुभव करना—अनुभवति, आस्वादयति, उपजीवति, उपभुङ्क्ते, उपयुङ्क्ते, निर्विशति

अनुवाद करना—अनुवदति

अनुमान करना—अनुमाति, अनुमिमीते

अनुमोदन करना—अनुमन्यते, अनुमनुते, अनुजानाति

अनुसंधान करना—अभिप्रैति, अनुसन्दधाति, निरीक्षते

अपमान करना—अवमन्यते, अवमानयति, अवजानाति, अवधीरयति, अवगणयति, अवहेलयति

अपराध करना—अपराध्यति, विराध्यति, अपराध्नोति, विराध्नोति

अपहरण करना—अपहरति

अपेक्षा करना—अपेक्षते

अभिग्रह करना—अभिगृह्णाति

अभ्यास करना—अभ्यस्यति

अलंकृत करना—मण्डति, मण्डयति, भूषति, भूषयति, प्रसाधयति, अलंकरोति, परिष्करोति

अवज्ञा करना—अवजानाति

अवस्था बदलना—विवर्तते

अहंकार करना—अभिमन्यते, दृप्यति, गर्वति, अवलिप्यते, गर्वयति, गर्वायते, माद्यति

आंकना—अङ्कयति, अङ्कयते

आंजना—अनक्ति

आक्रमण करना—आक्रामति
आक्षेप करना—आक्षिपति
आग्रह करना—आगृह्णाति
आचमन करना—आचामति
आचरण करना—आचरति
आच्छादित करना—संवृणोति, आवृणोति, अपिदधाति, पिदधाति, पिधत्ते, स्तृणाति, स्तृणोति, आच्छादयति, निह्नुते, अपह्नुते, निगूहति, आवृणीते, संवृणीते, गोपयति, गोपायति, अन्तर्दधाति, तिरोदधाति, व्यवदधाति, निचुलयति, निस्तृणोति, छादयति, तिरस्यति
आज्ञा देना—आज्ञापयति, आज्ञपयति, आदिशति, शास्ति, नियोजयति, व्यापारयति, नियुङ्क्ते, निदिशति, अनुजानाति, अनुमनुते, अनुमन्यते
आदर करना—आद्रियते, सम्माति, संमन्यते
आनंदित होना—आनन्दति
आना—आगच्छति, आयाति, आपतति, उपतिष्ठति, उपनमति, उपसीदति
आपत्ति में पडना—आपद्यते
आरंभ करना—आरभते, प्रस्तौति, प्रक्रमते, उपक्रमते, परिष्वजते
आराधना करना—आराध्यति, आराधयति, भजति, उपासते
आलिंगन करना—आलिङ्गति, आश्लिष्यति, परिरभते, उपगूहते, स्वजते
आविष्कार करना—आविष्करोति
आशा करना—आशास्ते
आश्चर्य करना—विस्मयते, चित्रीयते, चमत्करोति
आश्चर्यान्वित करना—विस्मापयते, चित्रीयते, चमत्कारयति
आश्रय लेना—अधितिष्ठति
आसपास घूमना—परिसरति
आह्वान करना—आह्वयति, आकारयति
आहुति देना—जुहोति, स्वाहाकरोति, वषट्करोति
इच्छा करना—इच्छति, वाञ्छति, कामयते, काङ्क्षति, वष्टि, लिप्सते, ईप्सति, आशास्ते, आशंसते, अभिलषति, स्पृहयति, समीहते, अभिलषति, लुभ्यति, गृध्यति
ईर्ष्या करना—ईर्ष्यति, असूयति
उखडना—विरोहति
उखाडना—उत्खनति, उत्खनते, उन्मूलयति
उगलना—उद्गिरति, उद्गिलति
उघाडना—उद्घाटयति, उद्घाटयते
उछलना—उच्छलति

उठना—उत्तिष्ठति
उडना—उड्डयते, उड्डीयते
उतरना—अवतरति
उतावला होना—उत्ताम्यति
उत्तेजित करना—उत्तेजयति
उत्पन्न करना—प्रसूते, प्रसौति, प्रसवति, उत्पादयति, जनयति, आदधाति
उत्पन्न होना—उद्भवति, निष्पद्यते, जायते
उदय होना—उदेति, उदञ्चति, उज्जिहीते, उन्मिषति, उद्भवति, प्रादुर्भवति, आविर्भवति, प्रादुरस्ति, आविरस्ति, आविरास्ते, प्रादुरास्ते, उदयति, प्रकाशते, रोहति
उदास रहना—उदास्ते
उदाहरण देना—उपनयति
उद्धारना—उद्धरति
उद्यम करना—उद्युङ्क्ते, प्रयतते, उत्तिष्ठति, व्यवस्यति, उद्यच्छते, अभियुङ्क्ते
उद्विग्न होना—उद्विजते
उन्नत करना—उन्नयति
उपकार करना—उपकरोति
उपमित करना—उपमाति
उपाधि देना—उपादधाति
उपालंभ देना—उपालभते, परियुङ्क्ते, अनुयुङ्क्ते, प्रतिभिनत्ति
उपेक्षा करना—उपेक्षते
उबालना—क्वथति
उल्लंघन करना—उल्लंघयति, विलङ्घते, अतिक्रामति, अतिशेते, अत्येति, विलङ्घयति
उवासी लेना—जृम्भति
ऊंचा फेंकना—उत्क्षिपति
ऊपर खींचना—उदञ्चति
ऐंठना—एठते
कंतरना—कृन्तति
कथन करना—कथयति, प्रकीर्त्तयति, आख्याति, आवेदयति, शंसति, आलपति, उदीरयति, उच्चरति, व्याहरति, वदति, निगदति, वक्ति, ब्रवीति, आचष्टे, भाषते, अभिदधाति, भणति
कंपना—विकम्पते, प्रेङ्खते, वेपते, वेल्लति, लोलति

कम्पाना—धुनोति, धुवति, धुनाति, कम्पयति, प्रेङ्खयति, धूनयति, लुलयति, दोलयति, तरलयति
कटना—कटति
कमाना— अर्जयति, अर्जयते
करना—करोति, सृजति, प्रणयति, घटयति, अनुतिष्ठति, विदधाति, संपादयति, निष्पादयति
कल्पना करना—कल्पयति
कलह करना—कलहायते
कसना—द्रढयति
काटना—कृन्तति, छिनत्ति, तक्ष्णोति
काढना—उद्धरति
काबरापन करना—कर्बुरयति, शबलयति, किर्मीरयति
काम में लाना—उपयुज्यते, व्यवहरति
किञ्चित् हंसना—स्मयते
कुशल पूछना—सभाजयति
कूटना—कुट्टयति, कुट्टयते
कूदना—कूर्दते
क्षमा करना—सहते, मृष्यति, मर्षति, मृषयति, मर्षते, क्षमते, तितिक्षते, क्षाम्यति
क्रीडा करना—क्रीडति, विहरति, रमते, खेलति, खेलायति
क्रोध करना—क्रुध्यति, कुप्यति, रुष्यति, संरभते
कोसना—क्रोशति
खरच करना—व्ययति
खरीदना—क्रीणाति
खाज करना—कण्डूयति, कण्डूयते
खोज करना—मार्गति, मार्गयति, मृगयति, गवेषयति
खंडन करना—पराकरोति
खांसी लेना—कासते
खिलना – विकसति, परिस्फुटति, उन्मिषति, उन्मीलति
खींचना—कर्षति, कृषति
खुदाना—खञ्जति
खुरचना – आलिखति
खेती करना—कर्षति
खेदित होना—खिद्यति, क्लिद्यति, तिम्यति, स्तिम्यति, उन्नदति
खोज करना—अन्वेषयति, पर्यवेक्षते, अन्विष्यति, ढूण्ढयति

खोदना—खनति
खोलना—उद्घाटयति
खोसना (छीनना)—आछिनत्ति, लुण्ठति, लण्ठयति, लण्ठयते, आछिनत्ति, हरति
गरम करना—तपति
गर्जना—गर्जति, ध्वनति, स्वनति
गलहत्था देना—गलहस्तयति
गाडना—कीलति, निखनति
गाना—गायति
गिनना—गणयति, संचष्टे, संख्याति, संख्ययति, कलयति
गिरना—पतति
गुदगुदाना—गोदते
गूंजना—गुञ्जति
गूंथना—ग्रथ्नाति, गुम्फति, गुम्फयति, ग्रन्थति, ग्रन्थयति, सूत्रयति, संदर्भयति
गौर करना—अवदधाति, ध्यायति
ग्रहण करना—गृह्णाति, आदत्ते, लाति
घटना—अपचीयते
घसना—घषति, विलिखति, उल्लिखति, कषति, घटयति
घालना (रखना)—न्यस्यति, आरोपयति, निवेशयति, निदधाति
घिसना—घर्षति, कषति, घट्टयति
घूमना—घूर्णते
घोकना—रटति
घोटना—घोटते
घोषणा करना—उद्घोषयति
चक्कर लगाना—संसरति
चखना—चषति, चषते
चढना—आरोहति
चमकना—द्योतते, राजते
चबाना—चर्वति
चरना—चरति
चर्चा करना—चर्चति
चलना—चलति, प्रेङ्खति, विकम्पते
चाटना—लेढि
चिकना करना—स्नेहयति
चिकित्सा करना—चिकित्सति, भिषज्यते

चिन्ता करना—चिन्तयति
चिन्ह करना—अभिजानाति
चिल्लाना—क्रन्दति
चीरना—दृणाति
चुगली करना—सूचयति, अभ्याख्याति
चुनना—चिनोति, चिनुते
चुभना—तुदति
चुम्बन करना—चुम्बति
चूकना—विस्मरति
चूर्ण करना—चूर्णयति, चूर्णयते, भ्रदयति, क्षुणत्ति, पिनष्टि
चूषना—चूषति
चेताना—चेतयति
चेष्टा करना—चेष्टते
चोना—च्योतति, श्चोतति, स्रवति, क्षरति
चोरी करना—चोरयति, मुष्णाति, मुष्यति, स्तेनयति, अपहरति, लुण्ठति, लुण्ठयति
छल करना—छलयति, प्रतारयति
छिपाना—गोपयति, गोपायति, निह्नुते, अपह्नुते, रहयति
छिलना—तक्षति
छींकना—क्षौति
छूना—स्पृशति
छेद करना—छिद्रयति, छिद्रयते
छेदन करना – छिनत्ति, भिनत्ति, क्ष्यति, शकलयति, खण्डयति, लुनाति,
छोडना—मुञ्चति, त्यजति, जहाति, उज्झति, उत्सृजति, परिहरति, निरस्यति, रेचयति, रहयति, विरहयति, विघटयति, विश्लेषयति, संन्यस्यति, अपास्यति, निरस्यति, वियुङ्क्ते, विप्रयुङ्क्ते, वियौति
जपना—जपति
जलना—ज्वलति, ज्वालयति
जलाना—दहति, प्लोषति, ओषति, प्लुष्यति
जागना—जागर्ति, प्रबुध्यते
जानना—जानाति, वेत्ति, मनुते, अवधारयति, अवैति, अवयाति, अवगच्छति, अधिगच्छति, बुध्यते
जाना—गच्छति, ऋच्छति, व्रजति, याति, एति, इयर्ति, चलति, सरति, अयते, जिह्रीते, संचरति, क्रामति, विचरति, विसर्पति, अटति
जीतना—जयति

जीना—जीवति
जीमना—जेमति
जुडना—जुडति
जुवा खेलना—दीव्यति
जोडना—युनक्ति, योजयति, घटर्यति, जोडयति, जोडयते
जोतना—हलति, कृषति
झरना—क्षरति, झीर्यति, प्रपतति
झाग आना—फेनायते
झाडना—मार्जयति, मार्जयते
झंपा लेना—संपतति
टहलना—पर्यटति
टांकना—टङ्कयति, टङ्कयते
टूटना—त्रुट्यति
ठगना—वञ्चति, वञ्चयति, विप्रलभते, प्रतारयति, विप्रतारयति, द्रुह्यति, छलयति
ठहरना—तिष्ठति, विरमति, विरमते, निलीयते, निवसति
ठोकना—ताडयति, ताडयते
डरना—बिभेति, त्रस्यति, आशङ्कते
डराना—भापयते, भीषयति, त्रासयति, कम्पयति
डसना—दंशति
डालना—निक्षपति, निक्षिपते, न्यस्यति
डिगना—विचलति
डींग हाकना—कत्थते
डूबना—निमज्जति, बुडति
ढकना—आवृणोति, पिदधाति, पिदधते
ढोना—वहति, वहते, उह्यते
तपना—तपति
तपस्या करना—तपस्यति, तप्यति
तरना—तरति
तरसना—तृष्यति
तर्क करना—तर्कयति, तर्कयते, ऊहते
ताडना—ताडति, ताडयते, आहन्ति
तिरस्कार करना—तिरस्करोति, न्यक् करोति, धिक् करोति
तुलना करना—प्रतिमाति, तोलयति
तेज करना—तेजयति, तेजयते

तैयार होना—सज्जति
तोडना—भनक्ति, त्रोटयति
तोलना—तोलयति, तोलयते,माति
तृप्त करना—तर्पयति, पृणाति, प्रीणाति, प्रीणयति
तृप्त होना—तृप्यति
थकना—श्राम्यति
थमना—स्तम्भनोति
थूकना—ष्ठीवति
दण्ड देना—दण्डयति, दण्डयते
दबाना—दाम्यति, शमयति
दया करना—दयते, अनुकम्पते
दुःख करना—अनुशेते, अनुतप्यते
दुःख देना—पीडयति, पीडयते, दुःखयते, क्लिश्नाति
दुःखित होना—दुःखायते, विषीदति, तप्यते, निर्विद्यते, खिद्यते, व्यथते, क्लिश्यति, विमनी भवति, विमनायते, दूयते, दुर्मनायते, उद्विजते
दुहना—दोग्धि
देखना—पश्यति, विलोकते, विलोकयति, वीक्षते, निभालयति, विभावयति, निध्यायति, निशामयति, निरूपयति
दुरुपयोग करना—अपयुनक्ति
दूर करना—अपनयति, उत्सृजति, व्यपोहति, व्यपाकरोति
दूर होना—अपसरति, उत्सरति
दूषित करना—दूषयति, दूषयते
देना—ददाति, दत्ते, ददते, दिशति, विश्राणयति, प्रयच्छति, उत्सृजति, वितरति, समर्पयति
देर करना—विलम्बते
दौडना—धावति
धक्का देना—धक्कयति
धमना—धमति
धारण करना—धारयति, धरति, दधते, दधाति, वहति, आलम्बते, बिभर्ति, कलयति
धूप देना—धूपायति
धोना— प्रक्षालयति, प्रक्षालयते
ध्यान करना—ध्यायति
नमस्कार करना—प्रणमति, नमस्करोति, नमस्यति, वन्दते, प्रणिपतति, प्रणिदधाति

नमाना—नमयति, नामयति, आवर्जयति
नष्ट करना—नाशयति, निर्दलयति, शृणाति, ध्वंसयति
नष्ट होना—नश्यति, विशीर्यते, ध्वंसते
नाचना—नृत्यति, नटति, रङ्गति, विलसति
नाथना—नाथति
नापना—माति
निकलना—निष्क्रामति, निर्गच्छति, निरेति, निःसरति
निगलना—निगिरति, निगिलति
निचोना—गारयति, निष्पीडयति, निष्पीडयते, गालयते
निन्दा करना—निन्दति, गर्हते, गर्हयति, द्वेष्टि, आक्रोशति, आक्षिपति, अपवदति, जुगुप्सते, शपति, अवहेलयति, विगायति
निभाना—निर्वहति, निर्वहते
निमंत्रण देना—आमंत्रयति, निमंत्रयति
नियुक्त करना—नियुङ्क्ते, नियोजयति
निरर्थक करना—निरर्थयति
निर्माण करना—निर्माति
निवृत्त होना—निवर्तते, विरमति
निश्चय करना—निश्चिनोति, निर्धारयति, निर्णयति, संप्रधारयति, परिछिनत्ति प्रमाति, दृढयति, प्रमाणयति
निःश्वास लेना—निःश्वसिति
निषेध करना—निरुणद्धि. प्रत्यादिशति, निवारयति, प्रतिहन्ति, अपाकरोति, निराकरोति, निषेधति, निषेधयति, नियंत्रयति
निहार करना—निहरति
नीचे उतरना—अवतरति, अवरोहति
पढना—अभ्यस्यति, शृणाति, अधीते, शिक्षते, पठति, आमनति
पढाना—विनयति, अध्यापयति, व्युत्पादयति, शास्ति, पाठयति, शिक्षयति
पतन होना—च्यवते, पतयति, पतति, भ्रश्यति, भ्रंशते, क्षरति, विस्रंसते, विगलति, विशीर्यते
पहनना—संव्ययते, परिदधाति
पराभव करना—तर्जयति, जयति, लङ्घयति, तर्जयते, हसति, भर्त्सयति, संवदते, विडम्बते, अधरयति, व्यर्थयति, गलहस्तयति, तृणीकरोति, नीचैः करोति, पश्चात्करोति, न्यक्करोति, निकरोति, धिक्करोति, अपकरोति, अधस्करोति, तिरस्करोति, अधरीकरोति, लघूकरोति, विफली करोति, विफलयति, ह्रेपयति, त्रपयति, व्रीडयति, लज्जयति, निम्नयति,

न्यञ्जयति, नमयति, वितथीकरोति वितथयति, अभिभवति, पराभवति, परिभवति

परिचय करना—परिचिनोति, संस्तौति

परिश्रम करना—आयस्यति, ताम्यति, श्राम्यति, परिखिद्यते, प्रयस्यति, ग्लायति, म्लायति, क्रामति

परीक्षा करना—परीक्षते

परोसना—परिवेषयति

पीडा करना—पीडयति, तुदति, रुजति, व्यथयति, दुःखीकरोति, दुःखयति, अर्दयति, कदर्थयति, क्लिश्नाति, बाधते, अर्दते, अर्दति, ग्लपयति, खेदयति, तापयति, उन्मनयति, दुनोति, दुर्मनयति, विह्वलयति, विधुरयति

पीना—पिबति, धयति, आचमति, पीयते, रसति

पीने की इच्छा करना—तृष्णाति, उदन्यति, पिपासति

पुष्पों को लगाना—पुष्प्यति

पूजा करना—श्लाघते, अर्चति, अर्चयति, पूजयति, अर्हति, महति, माहयति, अञ्चति

पूर्ति करना—पूरयति, पूर्यते, व्याप्नोति, व्यश्नुते, पिपर्त्ति, भरते, विगाहते

प्रकट करना—प्रकटयति, व्यञ्जयति, व्यनक्ति, व्यञ्जते, प्रकाशयति, उद्गिरति, विवृणोति, स्फुटयति, आविष्करोति, स्फुटीकरोति, प्रकटीकरोति, व्यक्तीकरोति, वृणीते

प्रतिकार करना—प्रतिविदधाति, प्रतिकरोति

प्रतिबिम्बित होना—प्रतिफलति, स्फुरति, संक्रामति

पवित्र करना—पावयति, पवित्रयति, पवते, पुनाति

प्रवेश करना—प्रविशति

प्रतीति करना—मानयति, संभावयति, प्रत्येति, श्रद्दधाति

प्रतीक्षा करना—अनुपालयति, प्रतिपालयति, प्रतीक्षते

प्रश्न करना—अनुयुङ्क्ते, पृच्छति

प्रसन्न करना—सान्त्वयति, प्रसादयति, अनुनयति, परितुष्यति, अनुगृह्णाति, प्रसीदते

प्रमाद करना—प्रमाद्यति

प्रस्ताव लाना—प्रस्तौति

प्रहार करना—प्रहरति, विध्यति, शरव्यति

प्राण धारना—प्राणिति, उच्छ्वसिति, जीवति

प्राप्त करना—विन्दति, आसादयति, प्रपद्यते, अश्नुते, अधिगच्छति, प्रतिपद्यते, प्राप्नोति, आसीदति, लभते, नयति

प्राप्त कराना—प्रलम्भयति, प्रापयति, गमयति, नयति

प्रारम्भ करना—आरभते, प्रस्तौति, प्रक्रमते, उपक्रमते
प्रेरणा करना—प्रयुङ्क्ते, नुदति, प्रेरयति, प्रवर्तयति
फलित होना—फलति
फेंकना—विकरति, विक्षिपति
बांधना—नह्यति, बध्नाति, संयच्छति
विलम्ब करना—चिरयति, विलम्बते
बीज का बोना—वपति
बुझना—निर्वाति, विध्यायति
बैठना—निषीदति, उपविशति, निविशते, आस्ते
बोलना—आलपति, रयति, उदीरयति, उच्चरति, व्याहरति, वदति, निगदति, उदाहरति, वक्ति, ब्रवीति, आचष्टे, भाषते, अभिदधाति, अभिगृणाति, भणति
भडकना—संधुक्षयति
भय उत्पन्न करना—त्रासयति, कम्पयति, क्षोभयति, भापयति
भयभीत होना—त्रस्यति, आशङ्कते, प्रकम्पते, बिभेति, क्षुभ्यति, चकते
भांफ निकालना—वाष्पायते
भागना—विद्राति, विद्रवति, पलायते, नश्यति
भेंट चढाना—उपनयति, ढौकयति, उपहरति
भेदना—द्यति, शकलयति, भिनत्ति, कृन्तति, विदारयति, वृश्चति, लुनाति, खंडयति, छ्यति
भेदन होना—विदीर्यते, दलयति, स्फुटति, भिद्यते
भोजन करना—कवलयति, भक्षयति, ग्सति, खादति, आहरति, कवलीकरोति, अभ्यवहरति, अत्ति. भुङ्क्ते, विष्वणाति, अश्नाति, गिलति, जक्षिति, प्रत्यवस्यति, ग्रसते, अवलेढि, वल्भते, जेमति
भ्रमण करना—भ्रमति, भ्राम्यति, अटति
मर्दन करना—संवाहयति
माध्यस्थ्य भाव रखना—उदास्ते
मारना—हन्ति, हिनस्ति, निशुम्भति, हिंसयति, ध्वंसते, निगृह्णाति, नाशयति, निबर्हते, सूदते, सूदयति, संहरति, निर्दलयति, निर्वासयति, प्रवासयति, उद्वासयति, शंसति, विशसति, शमयति, दमयति, उन्मूलयति, शृणाति, लुम्पति, निर्मूलयति, उत्खनति, उद्धरति, व्यापादयति, विपादयति, उज्जासयति, मथ्नाति, मारयति, उच्छिनत्ति, तृणेति, क्षिणोति
मिलना—मिलति, श्लिष्यति, आसञ्जति, युज्यते, लगति
मुख से ऊष्मा निकालना—ऊष्मायते
मुग्ध होना—मुह्यति, मूर्च्छति

मृग को खेलाना—रजयति
मर्दन करना—संवाहयति
याचना करना—अभ्यर्थयति, नाथति, वृणोति, वृणीते, वरयति, अर्दति, मार्गयति, याचति, याचते, भिक्षते
युद्ध करना—युध्यति
युद्धार्थ सज्जित होना—संनह्यते, संवर्मयति
रक्षा करना—पाति, गोपयति, भुनक्ति, रक्षति, त्रायते, शास्ति, पालयति, अवति
रञ्जित करना—आवर्जयति, रञ्जयति
रांधना—रन्धयति, सेधयति
लज्जित होना—जिह्रेति, लज्जते, त्रपते, ह्रीणीयते, व्रीड्यति
लाड करना—लालयति
लाना—आहरति, आनयति
लिखना—लिखति
लीपना—देग्धि, लिम्पति, उद्वर्तयति
लेप करना—अभ्यनक्ति
वृद्धि करना—वर्धते, एधते, ऋध्नोति, ऋध्यति, स्फायते, उपचीयते, प्रहृष्यते, विसरति, प्रसरति, अतिरिच्यते, भृशायते, उत्सर्पति, विसर्पति
वस्त्र गांठना—वयते
वांचना—वाचयति
वापिस करना—व्यावर्तते, वलते, विवर्तते, वलयति
वापिस लेना—प्रतीच्छति
विकसित करना—प्रबोधयति, विकसयति, उन्मीलयति, उन्निद्रयति, विनिद्रयति, भिनत्ति, दलयति
विकसित होना—विकसति, प्रबुध्यते, उन्मीलयति, उन्मिषति, विजृम्भते, स्फुटति, उच्छ्वसिति, भिद्यते, विदलयति
विचार करना—विमृश्यति, आलोचते, आलोचयति, वितर्कयति, ऊहते, विचारयति, विकल्पयति, अनुमाति, मीमांसते, उन्नयति, विविनक्ति, विचिकित्सति
विपरीत कहना—व्यभिचरति, विघटते, संवदते, विपर्येति
विरक्त होना—विरमति, उपरमति, आरमति, उपैति, नश्यति, निवर्तते
विलंब करना—चिरयति, विलम्बते
विभाग करना—विभजति
विवाह करना—उपयच्छति, परिणयति, उद्वहति, विवहति
विरोध करना—विरुणद्धि, निगृह्णाति

विस्तार करना—तनोति, प्रस्तारयति, प्रपंचयति, विस्तारयति, प्रथयति, विस्फारयति, विसारयति
विश्राम करना—विश्राम्यति
विश्वास करना—विस्रम्भते, विश्वसिति
वीणा का गाना—वीणयति
वींटना—वलयति, वेष्टयति, परिवृणोति
वैर करना—वैरायते
व्याख्यान देना—व्याख्याति, व्याचष्टे, व्याकरोति, विवृणोति
व्यापार करना—व्याप्रियति
शब्द करना—शब्दायते, स्वनति, ध्वनति, रणति, रसति, ध्वनति, प्रगर्जयति, रटति, झङ्करोति, गुञ्जति, कूजति, नदति, क्वणति, विरौति
शमन करना—शमयति, हरति, अपोहति, विनयति, अपनयति, नुदति, नाशयति, विरमयति, उपरमयति, अपगमयति, अपसारयति, लुभ्यति, निवर्तयति, मार्जयति, मार्ष्टि, दूरयति, अपसर्पति, क्षपयति, अस्यति, प्रोञ्छति
शयन करना—शेते, निद्रायति, स्वपिति, निद्राति, निद्रायते
शीघ्रता करना—त्वरते
शुद्ध करना—नेनेक्ति, शोधयति, प्रक्षालयति
शोभित होना—द्योतते, शोभते, भाति, भ्राजते, विराजते दीप्यते, भासते, प्रकाशते, चकास्ति, लसति, उल्लसति, विलसति, रोचते
श्लोकों से स्तुति करना—उपश्लोकयति
संकुचित करना—मुकुलयति, मुद्रयति, संकोचयति, निमीलयति
संघर्ष करना—प्रतिगर्जति, संहृष्यति, आह्वयति, स्पर्धते, मिषति
संभावना करना—युज्यते, घटते, संभवति, उपपद्यते
संदेश कहना—संदिशति
संदेह करना—संदिग्धे, संशेते, दोलयति, भ्रमति, भ्राम्यति, विमुह्यति
समाप्त करना—अवसाययति, समापयति, निःशेषयति, अशेषयति
सरकना—रिङ्खति
सामर्थ्य रखना—प्रभवति, विभवति, उत्सहते, शक्नोति, समर्थयति, पारयति, ईष्टे, अध्यवस्यति, क्षमते, तरति, प्रगल्भते
सुगंधित करना—सुरभीकरोति, सुरभयति, वासयति
सींचना—स्नापयति, उक्षति, सिञ्चति
सुनना—आकर्णयति, निभालयति, उपवर्णयति, शृणोति, निशामयति
सूकना—शुष्यति
सूंघना—जिघ्रति
सेना सहित लडना—अभिषेणयति

सेवा करना—अनुकूलयति, आराध्नोति, आराध्यति, आराधयति, भजति, श्रयति, उपास्ते, शीलति, उपतिष्ठति, शीलयति, उपचरति, परिचरति, निषेवते, प्रासादयति, वरिवस्यति, अन्वास्ते, जुषते

सन्मुख जाना—अभिगच्छति, अभिसरति, अभिसारयति

स्तुति करना—नौति, स्तौति, प्रशंसति, श्लाघते, वर्णयति, ईट्टे, कवयति, कवते, विकत्थते, अभिनन्दति, स्तुते, अभिवदते

स्नान करना—अभिषुणोति, स्नाति, आप्लवते

स्पर्श करना—आमृशति, परामृशति, स्पृशति

स्मरण करना—स्मरति, ध्यायति, अध्येति, चिन्तयति

स्वाद लेना—स्वदते, रोचते

स्वीकार करना—परिगृह्णाति, उरीकरोति, ऊरीकरोति, उररी करोति, अङ्गीकरोति, स्वीकरोति, आद्रियते

स्नेह करना—स्निह्यति

हर्षित होना—हृष्यति, तुष्यति, रमते, प्रीयते, माद्यति, नन्दति, मोदते

हवा का चलना—प्रवहति, वाति

हवा का लेना—व्यजयति, वीजयति

हसना—हसति

हाथों का फैलाना—अतिहस्तयति

हाथी का गर्जना—वृंहते

हाथी का प्रहार करना—परिणमति

हेषारव करना—हेषते

है—अस्ति, विद्यते

होना—भवति, उत्पद्यते, जायते, सिध्यति, निष्पद्यते, उदेति

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	३३	सध्यक्षर	संध्यक्षर
३३	२३	नियम ५५	नियम ४५
३४	७	योगिनः	योगिभिः
३६	१०	णट-नृतौ	णट-नृत्तौ
४४	२३	बतलाया है	बतलाता है
४५	२५	आधा मन	आधा मण
५२	१६	आप्	डाप्, आप्
५६	१६	क्र्ता	कर्ता
६०	२१	शृणेति	शृणोति
६०	२२	वृहितोऽस्ति	वृंहितोऽस्ति
६३	२५	अस् धातु	आस् धातु
६३	२६	प्रतिभाव्यं	प्रातिभाव्यम्
६७	४	लता	लतां
७२	१५	कुशलार्थार्थं राशिषि	कुशलार्थार्थं राशिषि
७५	१२	आराणावासात् ग्रीष्मप्रकोपः	×
८१	७	रहना जाता	रहना जाना जाता
८३	१३	का उदारहण	को उदाहरण
८७	६	खानी चाहिए	खाना चाहिए
९२	१८	(खोल कर)	(खेल कर)
९२	३१	गुण विकल्प	किद् संज्ञा (न का लोप) विकल्प
९६	१५	रोती कहा	रोती हुई कहा
१०२	१७	परिराजस्थान	परिराजस्थानं
१०३	९	प्रत्यात्यमम्	प्रत्यात्मम्
१०५	५	संमाजनी	संमार्जनी
१०५	१४	द्युतङ्	द्युतङ्, भ्रंशुङ्
१०५	१४	संख्या ७१,७२	संख्या ७१,७२,७३
११३	३१	युवाजानिना	युवजानिना
११७	९	प्रच्छदपदः	प्रच्छदपटः

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२३	१२	स च	सा च
१२३	२३	शब्द रहता	शब्द शेष रहता
१२५	८	प्रच्छदपद:	प्रच्छदपट:
१२६	१०	लवणाक्षि	लवणाक्षम्
१२६	२५	पर रहस्	परे रहस्
१२९	१	सहरति	संहरति
१३३	२६	तद्धति के	तद्धित के
१३५	१५	समूहे के	समूह के
१३५	२३	नियय २३३	नियम २३३
१३६	१४	त्रल् कटयलूलम्	त्रल्कट्यलूलम्
१३८	१४	संख्या ४३	संख्या ८६
१४५	४	प्रतिनिघ्यम्	प्रातिनिघ्यम्
१४६	९	निगम २७६	नियम २७६
१४७	२१	तद्धति के	तद्धित के
१५०	२३	चान्दन:, बाल:	चान्दनबाल:
१५४	४	इकण् प्रत्यय	इकट् प्रत्यय
१५४	८	शब्दों से	शब्दों से हन्ति अर्थ में
१५९	१०	बर्षिमा	वर्षिमा
१६१	१	पुंस शब्द	पुंस् शब्द
१६१	३	पुंस शब्द	पुंस् शब्द
१६६	१५	वृनत्	वृन्त्
१६६	१६	धूनत्	धून्त्
१७०	५	इन्द्रजलिक:	इन्द्रजालिक:
१७०	१६	संख्या १०९ से ११२	संख्या १०९,४२,१११,११२
१७१	३५	व्रीहिमान	व्रीहिमान्
१७४	१२	द्दिन्ते	छिन्ते
१७५	१८	सूर्य	सूर्य:
१७७	१८	१७,	११७
१७७	१८	पून्श्	पून्श्
१८२	७	नियम ४७३	नियम ४७६
१८८	२५	गोपाल:	गोपालेन
१९१	२	त्रिन	त्रिन्
१९३	३०	नियम ४०४	नियम ५०४
१९४	२	लम्भयति	लम्भयति

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९४	२५	आगमन	आगम
१९६	१६	विभ्रक्षति, विभर्क्षति	विभ्रक्षति, बिभर्क्षति
१९७	१३	तितनिषिस्यति	तितनिषिष्यति
२०२	१०	वार २ शोभित होता	बार २ इच्छा करता है
२०३	१७	स्रंस	स्रंस्
२०६	१६	उद्वमति (निकालना)	उद्वमति (उगलना)
२०९	१७	उ,वमति	उद्वमति
२१५	२०	उण्णा	उष्णा
२१८	३	अनद्यतन	अनद्यतन परोक्ष अर्थ में
२४२	१८	नियम ६२१	नियम ६३१
२४४	१३	गृहीतवान	गृहीतवान्
२४७		नियम ५४८,५४९,५५०,५५१	नियम ६४८,६४९,६५०,६५१
२४९	६	ययिवान	ययिवान्
२५३	२	दुसरों	दूसरों
२५६	२५	आवेदकः	आदेवकः
२६६	२२	नियम ४०७	नियम ७०७
२७०	२३	बलानां	बालानां
२७६	१७	शृङ्गाटक	शृङ्गाटकं
२७६	२०	रोदं रोद	रोदं रोदं
२७७	१४	७३४ से ७३९	७३४ से ७३८
२८१	११	इद	इदं
२८४	८	चन्द्रमसु	चन्द्रमःसु
२८४	२८	हे धेन	हे धेनू
२८७	१	त्रिलिङ्गा शब्दा	त्रिलिङ्गाः शब्दाः
२९४	१६	अनयोः	अन्ययोः
२९४	१७	अनयोः	अन्ययोः
२९४	२९	अनस्याः	अन्यस्याः
२९७	८	आप्लृत्	आप्लृंत्
३१९	१७	धेट-पाने	धेंट्-पाने
३२९	३०	×	द्यादि ३
३३०	२४	अधीयस्तम्	अधीयास्तम्
३३०	२५	अध्येतास्व अध्येतास्म	अध्येतास्वः अध्येतास्मः
३३०	३०	×	चिंता करना
३३१	८	दध्विम	दध्यिम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४३	५	आस्ध्वे	आध्वे
३४३	६	आस्ध्वम्	आध्वम्
३४३	६	आस्ध्वम्	आध्वम्
३४४	२६	अस्तोष्यामः	अस्तोष्याम
३४६	२०	ब्रूस्व	ब्रूष्व
३५४	७	अमन्दध्वम्	अमन्द्ध्वम्
३५५	११	रज्येताम	रज्येयाताम्
३५५	१२	रज्येथाम्	रज्येयाथाम्
३६१	८	अभैत्सव	अभैत्स्व
३७३	१५	आर्हिष्यतम्	आर्हिष्यतम्
३७७	२	अजीवम्	अजीवन्
३७७	२०	बहुचन	बहुवचन
३७७	२६	अयजतम्	अत्यजतम्
३८६	१४	एकवचम	एकवचन
३८७	१०	भ्रंसुङ्	भ्रंशुङ्
३९०	१३	अधृक्षताम्	अधुक्षताम्
३९५	३०	ह्वयेरन	ह्वयेरन्
३९९	२४	स्वपिन्तु	स्वपन्तु
४०१	१९	चकासिष्यथः	चकासिष्यथः
४१४	१०	द्वक्ष्यते	द्वेक्ष्यते
४१४	११	द्वक्ष्यसे	द्वेक्ष्यसे
४२२	१	जायेरन्	जायन्ताम्
४२८	११	अवरिध्वम	अवरिध्वम्
४३६	१०	बुभुजतुः	बुभुजतुः
४४२	२७	क्रीयास्म	क्रीयास्म
४४७	९	स्तृणात्	स्तृणातु
४४८	५	स्तृणै	स्तृणे
४५०	१	यत्स्यादि	स्यत्यादि
४५६	५	मन्त्रध्वे	मन्त्रयध्वे
४५६	६	मन्त्रयामहे	मन्त्रयामहे
४५७	१४	स्पृहयाव स्पृहयाम	स्पृहयावः स्पृहयामः
४५९	१२	मार्ग्यास्म	मार्ग्यासम्
४६०	२६	अहिंयिष्यताम्	अहिंसयिष्यताम्
४६१	३	रचयय	रचय

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६३	२१	इदांचकार ३	इन्दांचकार ३
४६५	२६	अकृक्षत	अकृक्षत्
४६६	३४	खण्डयेत	खण्डयेत्
४६७	४	अकीर्तयिष्यत	अकीर्तयिष्यत्
४७०	३३	जृष्	जृष्
४७६	२७	प्यायते	प्यायिषीष्ट
४६०	२८	शुधच	शुधंच
४६०	२६	शुभि	शुम्भज्
४६२	२३	ष्ठिवु	ष्ठिवु
४६५	२६	स्रंसिशीष्ट	स्रंसिषीष्ट
५०६	३२	अजायध्वम्	अजप्यध्वम्
५०८	२६	अविवाञ्छिषीत	अविवाञ्छिषीत्
५०८	३१	अजिगर्जिषीत	अजिगर्जिषीत्
५१२	६	अजुगुपिसीत्	अजुगुपिषीत्
५१२	७	अजुगोपिसीत्	अजुगोपिषीत्
५१४	२२	अपुपुषत्	अपूपुषत्
५१४	२४	अबुभुषत्	अबुभूषत्
५१८	१६	चकम्पिषते	चिकम्पिषते
५२४	७	अचिचलिसीत्	अचिचलिषीत्
५४२	४	रुधृंन्र्	रुधृंन्र्
५४२	१७	अविभङ्क्षीत्	अबिभङ्क्षीत्
५४६	२५	बधि	बधङ्
५५०	२२	भृन्	भृंन्
५५०	२३	धृन्	धृंन्
५५२	२८	ऊर्णोनवीति	ऊर्णोनवीति
५६२	२४	क्षुभ्नत्	क्षुभ्यन्
५६२	३३	गामकः	गमकः
५६८	१७	णीन्	णींन्
५७०	३१	दुत्	दुंत्
५७६	१०	भिक्षितव्यम	भिक्षितव्यम्
५८०	२४	रिचृंनर्	रिचृंन्र्
५८२	१६	लुलुप्वानू	लुलुप्वान्